श्रीवीतरागाय नमः ।

वर्ष ७.] कार्तिक शुक्ला १ सं० १९६२ विक्रम । [अंक १.

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

ओं नमः सिद्धेभ्यः ।

नवीन वर्षकी बधाई !!

आशिर्वादः ।

क्षेम सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्
धार्मिको भूमिपालः ।
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा
व्याधयो यान्तु नाशम् ॥
दुर्भिक्ष्यं चौरमारी क्षणमपि जगतां
मास्मभुज्जीवलोके ।
जैनेन्द्र धर्मचक्रं प्रभवतु सतत
सर्वसौख्यप्रदायि ।

प्रध्वस्तघातिकर्म्माणः
केवलज्ञानभास्कराः ।
कुर्वन्तु जगतः शान्तिः
वृषभाद्याः जिनेश्वराः ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्रीरस्तु ! शुभमस्तु !! कल्याणमस्तु ।

प्रियपाठकमहाशय ! आज बडे हर्षका समय है कि, हम अपना छट्ठा वर्ष निर्विघ्न समाप्त करके नवीन वर्षमें चलनेके लिये प्रस्तुत हैं । महावीर भगवान्का २४३१ संवत् पूर्ण करके दीपमालिकाके महोत्सवपूर्वक नवीन वर्षमें प्रवेश करते हैं । हमारे व्यापारप्रिय जैन-समाजका दीपमालिका परमोत्कृष्ट त्योहार है । उक्त कार्तिक कृष्णा अमावस्याके प्रातःकाल-के पूर्व ही भगवान्का निर्वाण हुआ था ! उस दिन सम्पूर्ण देव और मानवोंने जो दीपोत्सव किया था, यह उसीका अनुकरण है । परमकेवलज्ञान प्रकाशकी क्षुद्र दीपादिकोंके प्रकाशपूर्वक उपासना करना यह हम लोगोंकी अन्तर्भक्तिकी कल्पना है। और उस दिन संपूर्ण व्यापारियोंके यहां जो लक्ष्मीका पूजन होता है, सो वह भी और कुछ नहीं मोक्ष-लक्ष्मीकी उपासना मात्र है । इस प्रकार विविध कल्पनायुक्त भगवान्के परमपवित्र निर्वाण महो-त्सवको पूर्ण करके हम नवीन वर्षके सम्मुख उपस्थित होकर आप लोगोंको हर्षकी बधाई देते हैं । साथ ही एक दूसरा आनन्दसमाचार सुनाते हैं, वह यह कि अब जैनमित्र आगेसे अपने मासिकरूपका परिवर्तन कर पाक्षिकरूपमें आपकी सेवा किया करेगा । जिस रूपके लिये मित्र कई वर्षोंसे तड़फ रहा था, इस वर्षमें उस रूपकी प्राप्ति हो जाना सौभाग्यकी बात है । आशा है कि, आपको इस रूपपरिवर्तनसे संतोष होगा, और इसलिये मित्रके पोषणका भी आप ध्यान रक्खेंगे । आकार जैसा था, वैसा ही रहा, मात्र मूल्यमें दूनेकी जगह २) रु० किये गये हैं । यदि इस वर्ष आपलोग कमसे कम एक २ ग्राहक

नया बनाकर देवें, तो इसकी आर्थिक दशा संतोषप्रद हो जावेगी और फिर इस मित्रको आप आकार, प्रकार, लेखन, समालोचनादि विषयोंमें निरन्तर वृद्धिगत ही देखेंगे। हमने उत्साहपूर्वक अपनी प्रतिज्ञाका पालन करके जैनमित्रको पाक्षिकरूपमें आपके समक्ष किया है, अब इसकी सहायता करना और प्रचार करना आप लोगोंका कार्य है। इत्यलम् विद्वद्वरेषु।

विगतवर्ष।

जैनमित्रकी आयव्ययकी विज्ञप्तिका परिचय पाठकोंको दि० जैन प्रा० सभा बम्बईकी रिपार्टसे मिलेगा। तथापि इतना कहना उचित समझा जाता है कि, मित्रकी आर्थिकदशा बहुत अच्छी नहीं है। सबसे बड़ा भारी खेद उन महाशयोंकी तरफसे है, जो सालभर तक ग्राहकोंकी लिष्टमें सुशोभित रहके वर्षके अन्तमें तोतेकी तरह आंखें बदलकर बी. पी. लौटा देते हैं। यद्यपि दूसरे संवादपत्रवाले अग्रिम मूल्य पाये विना किसीको भी पत्र नहीं भेजते हैं, परंतु जैनियोंमें अभी उस नीतिके अवलंबन करनेका समय नहीं आया है। अभी हमारे भाइयोंके चित्तमें उस उत्साहका सञ्चार नहीं हुआ है, जो कि, विलायतोंके धोबी और नाइयोंमें विद्यमान है। प्रिय महाशयो! स्मरण रखिये, जब तक आप लोगोंके दिलोंमें जातिधर्मके पत्रोंका आदर नहीं होगा, तब तक कदापि उन्नति नहीं हो सक्ती और जब तक ग्राहकोंकी भरमार नहीं होगी, तब तक पत्रोंकी उत्तम दशा कदापि नहीं हो सक्ती। हमारे बहुतसे भाइयोंका यह कथन है कि, यदि सम्पादककी कलममें जोर हो, तो ग्राहकोंकी कमी नहीं रह सक्ती, परंतु उनके इस कथनमें अन्योऽन्याश्रय दोष है। क्योंकि, ग्राहकोंकी संख्या तो तब बढ़ेगी, जब संपादक योग्य होगा और संपादक योग्य तब होगा जब कि, ग्राहकसंख्या बढ़ेगी। क्योंकि, वर्तमानमें जितने जैनपत्रोंके संपादक हैं, वे सब आनरेरी (अवैतनिक) हैं। इस लिये उनको अपने आजीविका संबंधी कार्योंसे जितना अवकाश मिलता है, उतने ही अवकाशमें ज्यों त्यों संपादकीका कार्य पूरा करना पड़ता है। यदि ग्राहकोंकी संख्या अच्छी हो, तो पत्रकी आर्थिकदशा सुधर सक्ती है, जिससे कि, सवैतनिक योग्य सहकारी संपादक रक्खे जा सक्ते हैं, और लेखोंकी दशा भी उचित स्वरूप धारण कर सक्ती है। इस आर्थिकदशाके अच्छी न होनेके कारणसे ही अभी तक कोई जैनपत्र ऐसा स्वरूप धारण नहीं कर सका, जो साहित्य, धर्म, समाज अथवा समाचारोंकी सृष्टिमें वर्णनीय होता। जैनसमाजके लिये यह बड़ी लज्जाकी बात है। इस विषयमें विशेष प्रमाद धनाढ्य महानुभावोंका समझा जाता है, और यह एक प्रकारसे ठीक भी है। क्योंकि ऐसा नहीं कहा जा सक्ता कि, जैनियोंमें अच्छे लेखकोंका सर्वथा अभाव ही है। नहीं, समाजकी सेवा करने योग्य दो चार अच्छे लेखक निकल सक्ते हैं, परन्तु उनको योग्य सहायता और उत्साह न मिलनेसे वे अन्यान्य जीविकाके प्रपंचोंमें पड़ जाते हैं, और फिर कुछ भी जातिसेवा नहीं कर सक्ते। इसलिये हम लोगोंको चाहिये कि, पत्रोंकी आर्थिकदशा सुधारें, क्योंकि इसके सुधरने से सब दशायें सुधर जाती हैं। सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।

संक्षिप्त रिपोर्ट दौरा-माष्टर दीपचन्दजी उपदेशक।

(ता. १२-८-०५ ई० से आगे।)

मैं ता. १२-८-०५ ई० को शामके वक्त अहमदाबाद आया और ता. १३-८-०५ को बोर्डिंगके विद्यार्थियोंकी परीक्षा धर्मविषयमें ली। ये बालक केवल दर्शनस्तोत्र, तथा भक्तामरस्तोत्र कंठाग्र सीखते हैं, सो भी केवल एक बालकके सिवाय सब अस्पष्ट उच्चारण करते हैं, और धर्मविषयसे तो बिलकुल अनभिज्ञ हैं। यदि इनको धर्मशिक्षा साथ २ न मिलती जावेगी, तो उत्तमफलकी आशा होना असंभव हैं। फिर ता. १४-८-०५ को सभा हुई, जिसमें विषय स्वाध्यायपर १ घंटे मैंने तथा १ घंटे बाबू शीतलप्रसादजी लखनौने व्याख्यान दिया, तो बहुतसे बालकोंने स्वाध्यायका नियम लिया।

ता. १६-८-०५ को कलोल आया। यहां दो सभा की और क्रमसे पंच अणुव्रत, दर्शन तथा पूजनके विषयमें व्याख्यान दिया। स्वाध्यायसे लाभ और सभाके नियम बताये, तो मंदिरमें नित्य शास्त्र सभा करना तथा मासिक सभा करना स्वीकार हुआ। दो सभासद प्रांतिक सभाके हुए और कोई २ महाशयोंने स्वाध्यायका भी नियम किया।

ता. १९-८-०५ को तारंगाजी सिद्धक्षेत्र पहुंचा। यहां १२ ग्रामके लोग इकट्ठे हुए थे। दो सभा कीं, और क्रमसे हुक्कानिषेध, संसारका दुःख और उससे छूटनेका उपाय, स्वाध्याय, व्यर्थव्यय पर व्याख्यान दिया, तो जाजमपर हुक्का पीना बंद किया गया। नवोवास ग्रामके लोगोंने मंदिरमें शास्त्र बांचना स्वीकार किया, वेश्यानृत्य, फुलवारी बंद की गई। और आतिशबाजी १) रु०से अधिक न चलानेका नियम किया गया।

ता. २३-८-०५ को फिर अहमदाबाद आया और जिनपूजनके विषयमें व्याख्यान दिया, तो लोगोंको अष्टद्रव्यसे पूजनकी रुचि उत्पन्न हुई।

ता. २४-८-०५ को रखियाल आया और रात्रिको सभा करके धर्मविषयपर व्याख्यान दिया, तो मंदिरमें नित्य शास्त्र बांचना स्वीकार किया, और एक सभासद प्रा० स० का हुआ।

ता. २५-८-०५ को उजेडिया आया। यहांके लोग धर्मसे विशेष प्रीति रखते हैं। यहां ३ सभा दिन दिनको हुई और संसारी तथा मोक्षका सुख, षटावश्यक, अप्रमाद, विषयमें व्याख्यान दिया, तो पाक्षिक सभा करना स्विकार किया और बहुतसे भाइयोंने स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा ली। एक सभासद प्रां० स० का हुआ।

ता. २८-८-०५ को तलोद आया, रात्रिको सभा की। स्वाध्याय विषयपर व्याख्यान दिया तो रात्रिको मंदिरमें नित्य शास्त्र बांचना और जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया।

ता. २९-८-०५ ई०को प्रांतिज आया। रात्रिको सभा की। स्वाध्याय विषयपर व्याख्यान दिया, तो छः भाईयोंने स्वाध्यायका नियम किया और ३)रु० उपदेशक भंडारमें आये।

ता. ३०-८-०५ को ओरण गया। रात्रिको सम्यग्दर्शनके विषयमें व्याख्यान दिया, तो १ मास तक मंदिरमें शास्त्र बांचना और जैनमित्र मंगाना स्वीकार किया। ५) रु. सरस्वती भंडारके सहायतार्थ दिये।

ता. ३१-८-०९ को लाकरोड आया- यहां रात्रिको शास्त्रसभा की। स्वाध्यायसे लाभ बताये, तो मंदिरमें शास्त्र बांचना और थोडेसे छपे शास्त्र मंगाकर रखना स्वीकार किया। यहां लिखे ग्रंथ नहीं हैं।

ता. १-९-०९ को ईडर आया। यहां तीन सभा की और मैंने तथा पं० खेमचंदजीने क्रमसे संसारका दु:ख और उससे छूटनेके उपाय वर्णन किये। दशलाक्षणी व्रत यहां ही किये। ता.२,८,१४ को क्रमसे सभा हुई थी। यहां दिगम्बरी श्वेताम्बरी एक ही जाति होनेसे दोनोंमें मानसिक विरोध रहता है। यहांके भाई शीघ्र ही इस बातका प्रबन्ध करेंगे। ता. १३ को पाठशाला देखी, परीक्षाफल अच्छा है, परंतु हाजिरी अच्छी न होनेसे संतोषजनक नहीं कहा जा सक्ता है। यहांका शास्त्रभंडारका अब भी बंद है। यहांके पंचोंको विचारना चाहिये और अपने २ बालक बालिकाओंको शाला भेजना तथा सरस्वतीभंडारको सालमें दो बार खोलकर शास्त्रोंको धूपसे सुखाकर वेष्टन लपेट कर रखना और क्रमशः जीर्णोद्धार करना चाहिये। शेषमग्रे।

हीराचन्द नेमिचन्द,

मन्त्री. उ. भ. शोलापुर।

कर्नाटकमें जैनियोंका निवास।

(४)

(बाबू जैनेन्द्रकिशोरद्वारा अनुवादित।)

श्रंगापट्टम (Seringapatam) से तीस मील उत्तर एक छोटासा ग्राम श्रवणवेलगुल Sravan-Belgola नामक है। डाक्तर बुचानन साहब इस नामका अर्थ करते हैं-"श्वेत सोलानम (Solanom)" क्योंकि, इस ग्रामके आसपास सोलानम जातिके पौधोंकी उपज अधिक है किन्तु, यह भी स्मरण रखना चाहिये कि 'श्रवण' एक कर्नाटकी मासका भी नाम है, जो ग्रीष्म अयनांतके तीस दिन बाद जुलाईसे प्रारंभ होता है। दक्षिणभारतमें यह स्थान जैनधर्मका केन्द्रस्थल है। यह स्थान जैन सन्यासियोंके लिये समर्पण कर दिया गया, जो अपने क्षणभङ्गुर जीवनको व्यतीत करनेके लिये पधारे थे। वहां एक मठम् (Matam) वा विद्यालय (कालिज) है; यह एक सन्यासीका आश्रम है, जो अपनेको कार्कल (Karkal) वाले विद्यालयका स्वत्वाधिकारी कहते हैं। ग्रामके निकट एक मनोहर पोखर बनी हुई है. जिसे श्रृंगापट्टमके एक व्यापारीने प्रदान किया है। ग्रामके पडोसमें दो शिलामयी पहाडियां हैं, एकपर तो मकानके ऐसा पटा हुआ एक जिनमंदिर है, जिसे बसादि (बस्ती) Basadi कहते हैं, और दूसरी पर एक गोमट्टरायकी विशाल मूर्ति है, जो पौराणिक जैनसाधु थे। इनका हाल पहले भी लिखा जा चुका है। मूर्तिकी उंचाई ७० फिट ३ इंच कही जाती है। डाक्तर बुचाननने इस मूर्तिका एक चित्र उतरवाया था। सर आर्थर विलेसली Sir Arthur Wellesley ने असल मूर्ति भी देखी और चित्राम भी देखा था।

---

(१) धर्म्य नामक एक जैन पंडितसे कर्नल विल्क (Colonel Wilk) साहबको पूर्ण परिचय था। उसी पंडितसे उन्हें मालूम हुआ कि,श्रवणकी उपाधि जो प्रायः जिनालय तथा साधुओंके प्रति प्रयुक्त होती है, वह श्रमणका अपभ्रंस है और यह जैन समाजका एक संज्ञावाचक शब्द है।

वह कहते हैं कि "चित्रामकी मूर्ति असली मूर्तिकी अपेक्षासे बडी ही कुढंगी है।" गोमट्टरायकी सब ही मूर्तियां पूर्णतः नग्न हैं। केवल पत्थरमें खोदी हुई लताओंकी पत्तियां उनके पग तथा भुजाओंमें लिपटी हुई हैं। शिरके अंगूठिया वालोंसे जैनधर्मका बौद्धोंसे आविष्कृत होना प्रमाणित होता है। क्योंकि बौद्धोंकी मूर्तियां इसी प्रकारकी बनती हैं और जैनी लोग मूर्तिके बालोंको चेहरेसे एकदम हटा देते हैं। जैनी लोग अपना किसी प्रकारका सम्बन्ध बौद्धोंके साथ होना स्वयम् अपने मुंहसे कभी स्विकार नहीं करेंगें और कहेंगे कि, बुद्ध प्रथम श्रेणीके सिद्धोंसे तो कालेकोसों दूर है। प्रत्युत वह द्वितीय श्रेणीका भी देव या साधु नहीं हो सकता है, वरन उसकी आत्मा मिथ्यात्वके कारण जविन मरणसे मुक्त नहीं हुई है। एक दूसरी पहाड़ी भी है, जिसपर पन्द्रह बसादियां हैं। एक शून्य शिलापर एक लेख है, जो मैसूरमें अतिप्राचीन है। इसका काल ईसासे सौ वर्ष पूर्व अनुमानित होता है। इसकी लिखावट अति प्राचीन कनाडी अक्षरोंमें है। इस लेखसे यह ज्ञात होता है कि, एक भद्रबाहु नामक जैन साधुने द्वादशवर्षीय दुर्भिक्षागमनकी बात पहले ही कह दी और अपने अनुयायियोंको लेकर दक्षिणकी ओर हट गये। इस लम्बी यात्रामें उन्हें रास्तेमें भग्नग्राम, मानवीशव, सुवर्ण, गऊ और भैंस दीख पड़े थे और कटावप्रा Katavapra नामकी ऊंची पहाडी भी पार होनी पडी थी, जिसके चारों ओर वनैले शूकर तथा चीते आदि विहार करते थे। इस शिलाके पास पहुंचते ही गोष्ठि (संघ) के प्रधान नायकने अवधिसे निज आयुकी अति अल्पता जानी, अतः उन्होंने अपने अनुचरोंसे कहा-"आप लोग अपनी यात्रामें आगे गमन करें और मुझे यहां एकाकी छोड दें और एक चेलेको मरणपर्यन्त सुश्रूषा करनेके लिये छोड जायें"। तदनन्तर वे साधु अन्तसमाधि मरणमें प्रवेश करके सुखधामको पधारे। दुर्भिक्षोपरान्त इनके उत्तराधिकारी गुरू विशाखामुनि स्वदेश जानेके इच्छुक अवशेष अनुचरोंको लेकर अपने देशमें लौट आये। श्रवण वेलगुलमें पहुंचनेपर उन्होंने सुना कि, बहुत दिन हुए भद्रबाहुकी मुक्ति हुई और उनका निकटवर्ती शिष्य चन्द्रगुप्त स्वयम् अपने मृत्युके दिन गिन रहा है। शिलालेखोंमें लिखी हुई जागीरें जो २ जैन मन्दिरोंमें दी गई हैं और जिनमेंसे आठ मैसूरके शिलालेखोंमें हैं, उनका सविस्तर वर्णन करना कठिन है। मैसूर महाराजके चार प्रतापी वंश प्राचीनसमयमें शासन करते थे, जिनके जैनी होनेके प्रमाण हैं। उत्तर पश्चिमकी ओर कदम्बा राजे वनवासी तथा वालिगामिका शासन करते थे और उत्तर कनेडा उनके राज्याधिकारका एक भाग था। इन राजाओंके लेख हैं, जो उनके शासन कालके संभाव्य समयका पता देते हैं। कोई त्रिनेत्रकदम्ब (Trinetra Kadamb) वालिगामिका शासक स० १६१ ई०में था। उसी वंशका पुरन्दरराय (Purandara Raya) जब ११२० ई० में बनवासीका शासक था, तब उसने कुदाली स्वामुलू (Kudali Swamulu) को जागीर दी थी। दूसरा कदम्बाराय स० १२०४ ई० में शासन करता था। लोग कहते हैं कि, त्रिनेत्रकदम्ब मयूरवर्माका पुत्र था, अतः उसका राज्य ईसाके पश्चात् द्वितीय

शताब्दिके मध्यकालमें होगा। यह कहा जाता है कि, मयूरवर्माने पांच हजार ब्राह्मणोंकी वस्ती गोदावरीके तटपर आहिक्षेत्र (Ahi-shetra) से मोल ली थी, और उन्हें हैजा (Haia) उत्तर कनेड़ामें बत्तीस ग्रामोंमें वमा दिया। जैनियोंके प्रभावका यह अन्त माना जा सकता है; और कदम्बवंशी जैन राजाओंके शासनका समय ईसाके पश्चात् प्रथम वर्षसे १९० वर्ष तक लिखा जा सकता है। (६) मैसूरके उत्तर तालुडागुण्डी (Taludagundi) में एक शिलालेख है, जो इसीके सम्बन्धमें कहा जा सकता है। इसमें लिखा है कि, बारह हजार ब्राह्मण जो अहिक्षेत्रसे आये वे बत्तीस वंशोंमें विभक्त थे, जिन्हें मुकन्ना कदम्बा (Mukunna Kadamba) लाया था और वे स्तनरुद्रपुर (Stanarudrapura) नामक एक ग्राममें अवस्थित हो गये थे। दूसरे राज्यवंशी जो असलमें जैनी थे, व कोंगानी राजे थे (Kongani Rajas) जो मैसूरके निकट वा अन्तर मान्यपुर (Maneyapura) और स्कन्दपुर (Skandapura) के शासनकर्त्ता थे। उनके एक ताम्रपत्र लेखका आविर्भाव मर्करा (Mercara) में हुआ था, जिसका समय ईसाके पश्चात् ४६६ वर्ष है। इस वंशके एक समकालीन व्यक्ति कदम्बा महाराजके भगिनीपुत्र कहे जाते हैं। अविनीता भदत्ता (Avinita Bhadatta) नामक पुरुष जो शासनकर्ता कोंगानी महाराजका मंत्री था, वह इसके (ताम्रपत्र) द्वारा जैनगुरुकी साक्षी देकर बादानिगुप्पी (Badaneguppe) ग्रामकी जागीर किसी विशेष जैनमन्दिरमें अर्पण करता है। दूसरे राज्य करनेवाले जैनवंशी राट्टा (Rattas) और कलाचार्य (Kalacharya) थे, जिनका हाल हम लोगोंको बहुत ही थोडा मालूम है। (शेषमग्रे।)

निरपेक्षके लेखका उत्तर।

(पं० पन्नालाल बाकलीवालद्वारा लिखित।)

पाठकमहाशय! जैनमित्र अंक १२ में किसी एक निरपेक्ष महाशयने "जैनसंप्रदायकी पठनरीति और दिगम्बर जैन परीक्षालय" का शीर्षक देकर एक लेख लिखा है, जिसमें पढाईके क्रमकी आलोचना करनेके व्याजसे श्रीयुत पं० गोपालदासजीके साथ २ हमारी भी समालोचना करके हमारे ऊपर वृथा आक्षेप किया गया है। उस ही के निरसन करनेके लिये यह लेख लिखा जाता है। पाठकमहाशय! स्याद्वाद पाठशालाके स्थापन करनेकी चर्चा बेशक मैंने या भाई गणेशप्रसादजी वर्णीने किया थी, परन्तु स्याद्वादपाठशालाकी स्थापनाके समय जो कुछ कार्य किया गया और पढाईके क्रम आदिके नियम बनाये गये, वे सब उस समयके उपस्थित जनरल सभाके सभासदोंकी सम्मतिसे बनाये गये थे, और उन्हींकी सम्मतिसे भविष्यतके कार्योंका प्रबन्ध कर-

---

राज्यवंशियोंमें जिसका हम लोगोंको किंचित् स्मरण है. वह महाराज कदम्बा चक्रवर्ती हैं; जिन्होंने त्रिनेत्र कदम्बाके १४९ वर्ष पूर्व अथात् द्वादश शताब्दमें राज्य किया था। इस वंशकी प्राचीनता शिलालेखोंके अक्षरोंसे सिद्ध होती है जो पूर्व्वहाल कनाडा अक्षरोंमें हैं। यह कनाडाका प्राचीनरूप है, जिसका ज्ञान आजकल कठिनतासे होता है।

नेके लिये १५ महाशयोंकी १ प्रबन्धकारिणी सभा भी बनाई गई। सर्वाधिकारी मंत्री बाबू देवकुमारजी बनाये गये, और तत्कालीन स्वीकृत प्रस्तावोंके अनुसार कार्य प्रारंभ किया गया। ऐसी अवस्थामें स्याद्वादपाठशालाकी पढ़ाईमें क्वीन्सकालेजके क्रमकी स्वीकारताके अपराधका भागी मैं ही अकेला बनाया गया, सो यह निरपेक्ष लेखकमहाशयकी बड़ी भारी भूल है। यद्यपि मैं अपने पूर्व अभिप्रायानुसार जैन ग्रन्थोंका ही सदासे पक्षपाती हूं, तथापि पढाईके क्रम निश्चय करते समय यदि मैं अपना पक्ष लेता, तो उस समय स्याद्वाद पाठशालाका मुहूर्त होना ही असाध्य था।

दूसरे—जिस दिन पाठशाला स्थापन हुई उस समय न तो महासभाके वर्तमान परीक्षालयका नया क्रम बना था और न बम्बई प्रान्तिकसभाके भावी परीक्षालयका क्रम बना था। और न उस समय तक किसी परीक्षालय प्रचालक महाशयकी सम्मति या प्रेरणा ही हमारे पास आई कि, जिसका सहारा पाकर मैं जैनक्रमके भरती करनेकी प्रार्थना करता, प्रत्युत उस समय महासभा और बम्बई प्रान्तिकसभाके दोनों विद्यालयोंमें अन्यमतके न्याय व्याकरण पढ़ाये जाते थे। ऐसी अवस्थामें स्याद्वादपाठशालाके प्रबंधकर्ताओंने दोनों विद्यालयोंका अनुकरण करके काशीके कालेजकी पढाईका क्रम रखना अपनी बहु सम्मतिसे अत्यावश्यकीय समझ लिया, तो इसमें कौनसा अन्याय हो गया? और इसमें मेरे अकेलेका कौनसा अपराध हुआ, जो मुझपर मिथ्याकटाक्ष किये गये ?

तीसरे—जिससमय स्याद्वाद पाठशालामें पढाईका क्रम भरती किया गया था, उस समय काशी क्वीन्सकालेजकी पढाईको पसंद करनेवाले महाशयोंने मुझे दो प्रबल हेतु दिखाये थे, इस कारणसे भी मैं उससमय कुछ भी उजर नहीं कर सका। उनमेंसे एक तो यह था कि, “यद्यपि काशीमें अध्यापकोंका टोटा नहीं है, तथापि यहांके अच्छे २ विद्वान् सहसा जैनपाठशालामें और खासकर जैनग्रन्थ पढानेमें सहमत नहीं होंगे।” दूसरे क्वीन्सकालेज सर्व साधारणकेलिये गवर्णमेंटी विद्यालय है, इसमें जैनी, हिन्दू, मुसलमान सबके पढ़नेका हक्क है। सो दो तीन वर्षपर्यन्त दशवीस लड़के परीक्षामें बिठानेसे समयपर प्रार्थना करनेसे कालेजकी पढाईमें शाकटायनादि जैन व्याकरण व न्यायके ग्रन्थ भरती हो सकते हैं, इस कारण कुछ दिन तक यह ही क्रम गौणतासे जैनग्रन्थसहित रखना उचित है। इस कारण मैंने इस विषयपर विशेष जोर नहीं दिया।

चौथे—जब स्याद्वाद पाठशालाका मुहूर्त हो गया और हमारे सभापतिसाहिब बम्बई पहुंचे, तो उस समय श्रीयुत पं० गोपालदासजी अपने नये परीक्षालय स्थापन करनेकी चर्चा कर रहे थे, उन्होंने सबसे पहिले स्याद्वादपाठशालाको ही अपना लक्ष्य बनाकर अपने बनाये क्रमको जारी करनेके लिये एक लेख जैनमित्रमें प्रकाशित किया था। उस लेखके उत्तरमें तत्काल ही मैंने एक लेख बनाकर जैनगजटमें छपनेको भेज दिया था, परन्तु खेद है कि, किसी कारणसे जैनगजटमें स्थान न पाकर वापिस आ गया। यदि वह लेख

छप जाता, तो आज निरपेक्ष महाशयको जैनमित्रके छह कालिम काले करनेकी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती। क्योंकि, उस लेखमें भी मैंने अपने पूर्व अभिप्रायानुसार जैनग्रंथोंके क्रमका पक्ष मंडनकर उपर्युक्तादि अनेक कारण काशीकी पढाईके जारी करनेमें दिये थे।

तत्पश्चात् जब उमरावसिंहजी और सभापति सेठ माणिकचंदजी आदिके जैनपढाईके बाबत प्रेरणापत्र मेरे पास आये, तो मैंने सब जवाब देनेके लिये पाठशालाके सर्वाधिकार प्राप्त मंत्री बाबू देवकुमारजीको भेज दिये। उनका उत्तर उन्होंने दिया व नहीं, सो मैं नही कह सकता। किन्तु, कुछ दिन बाद मैंने उक्त मंत्रीसाहबके-पास पाठशालासम्बन्धी कई प्रस्ताव सभासे पास करानेके लिये भेजे थे, उनमें एक प्रस्ताव यह था कि "स्याद्वाद पाठशालाकी प्रथम कक्षामें एक वंशीधर नामका जो विद्यार्थी है, उसकी बुद्धि-स्मृति न्यायके ग्रन्थ पढ़नेलायक है, सो इसको प्रथम परीक्षाके पश्चात् न्यायकी मध्यमामें पढ़ानेकी आवश्यकता है। परन्तु प्रथमामें व्याकरण लघुकौमुदी ही है, सो बहुत थोड़ा है। यदि इसके पश्चात् सिद्धान्तकौमुदी पढ़ाई जायगी, तो ३ वर्ष उसीमें व्यतीत हो जावेंगे। इसलिये इसको अभीसे न्यायका विद्यार्थी बनानेकेलिय लघुकौमुदी छुटाकर उसकी जगह शाकटायन व्याकरण पढ़ानेकी आज्ञा दें, तो इसका व्याकरण भी अच्छा रहैगा और दो वर्षके बाद न्यायमें अच्छा चल निकलेगा। परन्तु बाबूसाहिबने मेरी यह अर्ज सर्वथा अस्वीकार कर दी। तब मैंने विचार किया कि, जब एक ही विद्यार्थीको एक ही जैनग्रन्थ पढ़ानेकी आज्ञा नहीं दी, और न वह प्रस्तावसभामें ही पेश किया, तो फिर जैनग्रन्थोंकी पढ़ाईका क्रम तो स्वीकार करैंगे ही क्यों? ऐसा समझकर न तो इस विषयका प्रस्ताव किया और न जैनमित्रके लेखका उत्तर ही फिरसे जैनमित्रमें छपनेको भेजा। बल्कि, परीक्षालयके मंत्री बाबू उमरावसिंहजीको भी मैंने उनके पत्रके उत्तरमें लिख भेजा कि, स्याद्वादपाठशालाकी पढ़ाईके बदलनेका अधिकार मंत्री पाठशालाको है, सो आप उनसे ही पत्रव्यवहार करैं, मेरी इच्छा इस विषयमें कुछ नहीं चलती।

दूसरे बाबू देवकुमारजी भी इस प्रस्तावको कमेटीमें पेश करके क्या करैंगे? क्योंकि, इस समय पढाईके दो क्रम पेश हैं। एक बम्बईसभाका और एक महासभाका। अब स्याद्वादपाठशालाकी कमेटीमें यह प्रस्ताव पेश किया जायगा, तो सभासदगण किसको पास करैंगे? क्योंकि, कमेटीके सभासदगण दोनों ही दलके श्रीमान् धीमान् बनाये गये हैं। एक क्रमको पास करनेमें दूसरे क्रमके पक्षवालोंको स्याद्वाद पाठशालाके विरुद्ध खड़ा करके विरोध बढ़ाना कौनसी बुद्धिमानीका काम है? दोनों क्रमनेताओंसे प्रार्थना है कि, पहिले आप दोनों महाशय परस्पर एक मत मिलाकर दोनों क्रमोंको सुधारकर सबकी सम्मतिसे एक ही क्रम बनावें और साथ २ परीक्षालयकी व्यवस्था भी जैसी बाबू बच्चूलालजीके उपमंत्रित्वमें थी, उससे कुछ चढ़बढ़कर बनानेका प्रबन्ध करें, तब दूसरी पाठशालाओंको अपनी आज्ञानुसार चलानेकी कोशिश करैं। अन्यथा स्याद्वाद पाठशालाके ऊपर अथवा उसके सम्बन्धसे मुझ

अकेलेपर आक्रमण करना "रावणने सीताको हरी पत्थरोंसे बांधा गया बेचारा समुद्र" की कहावतको चरितार्थ करना है।

सम्पादकीय नोट—लेखकने लेखमें यह बात स्वयं स्वीकार की है कि, "स्याद्वाद पाठशालाकी पढाईमें काशीकालेजके क्रम स्वीकारताके अपराधका भागी मैं ही अकेला बनाया गया, सो यह निरपेक्ष लेखकमहाशयकी बडी भारी भूल है" परन्तु इसमें निरपेक्षकी बिलकुल भूल नहीं दीखती। क्योंकि, प्रथम तो निरपेक्षके लेखमें ऐसा कोई नियमवाचक शब्द ही नहीं है, जिससे यह सिद्ध होवे कि, इस अपराधके अपराधी केवल पं० पन्नालाल ही हैं और अगर कोई ऐसा लिखता भी कि, इसके अपराधी केवल पं. पन्नालाल ही हैं, तो भी कुछ उसकी भूल नहीं कही जा सक्ती। क्योंकि, इस पाठशालाके बीजभूत मूलकारण सूत्रधार आप ही हैं। इस पाठशालाके निमित्तसे जिन २ जैन बालकोंके चित्तमें क्वीन्सकालेजके क्रमकी अन्य धर्मसम्बन्धी पुस्तकें अभ्यास करनेसे जो मिथ्यात्वका अङ्कुर जड़ पकड़ैगा, उसके धन्यवादकी पात्रता आपको ही होगी। मिथ्यात्ववर्द्धक शास्त्रोंका अभ्यास करनेकी अपेक्षा विद्यासे वंचित रहना ही श्रेष्ठ है। किसी नीतिकारने कहा भी ठीक है:—

वरं मौनं कार्यं न च वचनमुक्तं यदनृतम्।
वरं क्लैव्यं पुंसां न च परकलत्राभिगमनम्॥
वरं प्राणत्यागो न च पिशुनवाक्येष्वभिरुचिः
वरं भिक्षाशित्वं न च परधनास्वादनसुखम्॥
वरं शून्या शाला न च खलु वरो दुष्टवृषभो।
वरं वेश्या पत्नी न पुनरविनीता कुलवधूः॥
वरं वासोऽरण्ये न पुनरविवेकाधिपपुरे॥
वरं प्राणत्यागो न पुनरधमानामुपगमः॥

फिर आपके लिखनेका सारांश यह है कि, "उस समय बम्बई और महासभाके विद्यालयोंमें भी अन्यमतके ग्रन्थ पढाये जाते थे, और कोई परीक्षालयका क्रम तय्यार न था, तथा किसीने हमसे प्रेरणा भी नहीं की थी, फिर जो सभाने अन्य मतके ग्रन्थ पढाना स्वीकार किया तो क्या अन्याय किया?" ऐसा लिखना आपका भ्रममूलक है। क्योंकि, महासभा और बम्बईके विद्यालयोंमें प्रथम तो अन्यमतके शास्त्रोंकी प्रधानता ही नहीं थी, कोई एकाध ग्रन्थ गौणतारूप पढाया जाता था, तथा बम्बईविद्यालयमें हमारे मुरैना चले आनेके कारण एकाध विद्यार्थीके हटसे कोई एक अन्यमतका ग्रन्थ रख दिया गया था। सो भी अब छह मास हुए निकाल दिया गया है। इसपरसे कुछ विद्यार्थी रुष्ट होकर विद्यालय भी छोड़ गये, परन्तु उसकी भी कुछ परवाह नहीं की गई। सिवाय इसके जब आप अपने लेखानुसार सदासे जैनग्रन्थोंके ही पक्षपाती हैं, फिर आपका यह लिखना कि "अमुक ऐसा कार्य करता है, तो हमारे करनेमें क्या अन्याय है" कदापि न्यायसङ्गत नहीं हो सक्ता। यदि कोई मनुष्य वेश्यासंसर्ग करै, तो क्या उसकी देखादेखी आपका भी उक्त कार्य करना अन्याय नहीं होगा? क्या किसी सज्जन पुरुषकी उचित प्रेरणाके अभावमें किसी अनुचित कार्यका कर्ता अन्यायका भागी नहीं होगा? फिर आपके लिखनेका अभिप्राय यह है कि, "उक्त क्रममें मेरे

सहमत होनेके दो कारण हैं, एक तो काशीके विद्वान् जैनग्रन्थ नहीं पढ़ावेंगे। दूसरे जब हमारे विद्यार्थी काशीकी परीक्षा देंगें, तो काशीकी परीक्षाके क्रममें जैनग्रन्थ भरती करानेका मौका मिलेगा" सो ये दोनों कारण भी युक्तिशून्य हैं। क्योंकि, वहांकी श्वेतांबर जैन पाठशालामें काशीके ही विद्वान् जैनग्रन्थ पढ़ाते हैं। तथा प्रथम कारण स्वबाधित भी है। क्योंकि, आपने अपने क्रममें जो गौणतारूप जैनशास्त्र रक्खे हैं, उनको भी तो वे ही काशीके अध्यापक पढावेंगे, तथा दूसरे कारणमें तो आपने अपनी सारी बुद्धि खर्च कर डाली है। क्योंकि, "जैनशास्त्र पढ़ाना अन्यमतके शास्त्र नहीं पढ़ाना" इसके तो आप पक्षपाती ही हैं, इससे स्वयं सिद्ध है कि, जैनशास्त्र पढ़ाना उचित है, अन्यमतके शास्त्र पढ़ाना अनुचित है। ऐसी अवस्थामें आपके दूसरे कारणका यही अभिप्राय हो सक्ता है कि, "एक समूह अनुचित कार्य कर रहा है, तो जो उस समूहमें मिलकर हम भी अनुचित कार्य करने लग जावें तो अनुचित कार्य करनेवालेंमें उचित कार्य भरती करानेका मौका मिलैगा" क्यों? कहिये कृपानाथ! हुआ कि, नहीं यही अभिप्राय? धन्य है आपकी विचारशीलताको।

फिर आपके लिखनेका सारांश यह है कि, "एक क्रम बम्बई सभाकी तरफसे छपा है, दूसरा महासभाकी तरफसे छपा है; तो ऐसी अवस्थामें हम कौनसे क्रमको पसंद करें? जिनके क्रमको पसंद न करेंगे, वे ही अप्रसन्न और विरुद्ध होवेंगे। इसकारण काशीकी परीक्षाका क्रम रक्खा," यह लिखना भी आपकी बुद्धिमत्ताका अच्छा परिचय देता है। कृपानाथ! आप कृपाकरके जरा नीचे लिखी हुई पंक्तियोंको ध्यान देकर अवलोकन कीजिये, तो सब हाल रोशन हो जायगा, बम्बई प्रान्तिकसभा तथा महासभाके क्रममें यद्यपि कुछ अन्तर है, तथापि दोनों ही सभावालोंने जैनशास्त्रोंको पढ़ाना स्वीकार किया है। इन दोनोंमेंसे आप चाहे जिस क्रमको स्वीकार कर लेते। इसमें नाराजी और विरोधकी कोई बात नहीं थी। यदि इनमेंसे कोई भी आपको पसंद नहीं था, तो जैनशास्त्रोंका तीसरा क्रम गढ लेते, उसमें कोई हर्ज नहीं था। चाहे रत्नकरण्डश्रावकाचार पढ़ो, चाहे पुरुषार्थसिद्ध्युपाय। दोनों ही ग्रन्थोंके पढनेवालोंको दयामय श्रावकाचारका बोध होगा। परन्तु अन्यमतके शास्त्रोंके पढ़ानेसे तो कोरी बुद्धिके बालकोंके हृदयमें सृष्टिकर्तृत्व और अश्वमेधादिक यज्ञोंकी वासना जड़ पकड़ेगी। उसके उत्तर दातृत्वका भार किसपर होगा? इसके सिवाय लेखकजीके लेखमें कोई भी ऐसी बात नहीं रही है, कि, जिसके वास्ते लेखनीको तकलीफ दी जाय। आशा है कि, अब लेखकमहाशय समझ जावेंगे। यदि फिर भी कुछ लिखनेका साहस हो, तो कुछ चिन्ता नहीं है, वह दूसरा लेख भी नोटसहित छाप दिया जायगा। अलं विस्तरेण।

चिट्ठी पत्री।

प्रेरित पत्रोंके हम उत्तरदाता नहीं हैं।

हमने एक पत्र बाबू देवकुमारजी रईस आराको प्रेरितकर प्रार्थना की थी कि, सम्मेद सिखरजीकी नीचली तेरापंथी कोठीका प्रबन्ध ठीक नहीं है। और महासभाके कायम होनेसे चित्तमें

यह ख्याल था कि, अब प्रबन्ध ठीक हो जायगा परन्तु बहुत दिन व्यतीत हो गये, अब तक भी कोई उचित प्रबन्ध न हुआ। प्रबन्ध न होनेसे ऐसा विदित होता है कि, या तो नीचली कोठी महासभाके अधिकारके बाहर है, अथवा उस कोठीके प्रबंधकर्ता महाशयोंसे डरती है। वर्तमान तक जो हजारों क्या लाखों रुपयोंका माल जाता रहा सो तो गया. परन्तु अब भी उसका उचित प्रबन्ध किया जाय तो अच्छा हो। जैनमित्रमें सम्मेदशिखरजीके यात्रियोंका हाल लिखा देखकर उनके नाम भी बतलाये थे, **तथा तकलीफ भी** बतलाई गई थी। **ऐसे उत्तम स्थानमें शूद्रका रहना** अच्छा नहीं है। एक समय जबलपूर तथा इलाका पंचानेने ऐसा विचार किया कि, अपनी तरफका एक गुमाश्ता रखकर बताया जावे कि, सिर्फ परवार जातिका रुपया कितना एकत्र होता है। परंतु महासभासे डरकर उक्त कार्य रोक दिया गया। अब आप जैसा लिखें वैसा किया जावे। हमारे बाबूसाहिबने मजेदार उत्तर दिया कि **तुम कुछ भी प्रबन्ध करो, महासभाको बहुत कार्य है। अतः वह यह कार्य नहीं कर सकती।**

अब हम श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य माणिकचंद पानाचंदजीसे प्रार्थना करते हैं, जिन्होंने इस तीर्थको दर्शन करने लायक कर दिया है। अगर उक्त सेठजी साहिब इतना प्रयत्न न करते, तो सदैवके लिये महान् तीर्थक्षेत्रके दर्शनोंसे वंचित रहते। आपने सैकड़ो धर्मकार्य किये हैं, जिनकी कीर्तिको हम अपने मुंहसे नहीं कह सकते हैं। आपहीकी बदौलत उपरैली कोठीका मुकद्दमा फतह हुआ। श्री काशीजीका स्याद्वाद पाठशाला आपहीके करकमलोंसे स्थापित हुई है। अब जिस प्रकार सर्व कार्य आपने किये हैं, वैसे ही यह **कार्य भी** आपके विना नहीं हो सक्ता। और आप **तीर्थक्षेत्रकमेटीके** भी महामंत्री हैं। आपके इस प्रबन्धके हो जानेके कारण जो द्रव्य एकत्र होगा, वह अच्छे कार्यमें ही खर्च होगा; तथा जो भाई सम्मेदशिखरजीपर जाकर रुपया देनेको हिचकते होंगे, वे धड़ाधड़ देने लगेंगे। आशा है कि, श्रीमान् सेठ माणिकचंद पानाचंदजी इस प्रार्थनाको अस्वीकार नहीं करेंगे।

आपका कृपाकांक्षी—

सुखलालमल ठेकेदार,

जबलपुर, सी. पी.

परीक्षा फल।

(गतांकसे आगे)

प्रवेशिका तृतीय खण्ड।

नं०	नाम विद्यार्थी.	पितृनाम.	स्थान.	धर्म.	व्याकरण.	काव्य.	गणित.
१२	हीराचन्द	अमीचन्द	सोलापुर	,,	,,	६०	,,
१३	मूलचन्द	किसनदास	सूरत	,,	,,	५७	,,
१४	भरमण्णा	बमण्णा	सोलापुर	,,	,,	५२	,,
१५	दादा	बावा	,,	,,	,,	३४	,,
१६	भाऊ	बाबा	,,	,,	,,	३३	,,
१७	लाभचन्द	फतहचन्द	लखनऊ	,,	,,	४७	,,

द्वितीय खण्ड।

न०	नाम विद्यार्थी	पितृनाम.	स्थान.	धर्म.	व्याकरण.	काव्य.	गणित.
१८	बाबूलाल	मनमोहन	गढाकोटा	८३	,,	,,	,,
१९	घासीराम	विहारीलाल	महरोनी	६९	,,	,,	,,
२०	करोडेलाल	विहारीलाल	,,	६१	,,	,,	६३
२१	खूबचन्द	दरयावसिंह	गढ कोटा	६२	,,	,,	५९
२२	पूरणचन्द्र	बालचन्द	टीकमगढ	३४	,,	,,	,,
					,,	,,	,,

प्रथम खण्ड।

न०	नाम विद्यार्थी	पितृनाम.	स्थान.	धर्म.	व्याकरण.	काव्य.	गणित.
२३	बट्टूलाल	मौजीलाल	भेलसा	७५	,,	६८	४१
२४	चांदप्पा	जिनप्पा	सोलापुर	७३	,,	,,	,,
२५	हजारीलाल	खांजूलाल	शाहपुरमगरोन	७१	,,	,,	५८
२६	गोविन्दप्रशाद	परसादीलाल	महरोनी	७०	,,	,,	५७
२७	लखमीचन्द	मन्नूलाल	भेलसा	६७	,,	,,	,,
२८	दामोदर	कन्हैयालाल	शाहपुरमगरोन	६५	,,	,,	४०
२९	चुन्नीलाल	मौजीलाल	भेलसा	६२	,,	,,	४२
३०	माणिकचन्द	गोविन्दप्रसाद	सोलापुर	६०	,,	,,	,,
३१	मनोहरलाल	गिरधारीलाल	महरोनी	५७	,,	,,	५०
३२	भगोलेलाल	कालूराम	शाहपुरमगरोन	५६	३४	,,	,,
३३	गणपति	भाऊकस्तूर	सोलापुर	५५	,,	,,	,,
३४	हीरालाल	चिकारीलाल	शाहपुरमगरोन	५२	,,	,,	४०
३५	शान्त	नाना	सोलापुर	५१	,,	,,	,,
३६	कन्हैयालाल	लछमनदास	शाहपुरमगरोन	४८	,,	,,	५९
३७	भगवानदास (छो.)	लोकमनदास	,,	४७	,,	,,	५१
३८	मोतीलाल	कालूराम	,,	४२	,,	,,	३७
४९	हरप्रशाद	लालमन	टीकमगढ	४०	,,	५९	,,
४०	कोण्डीबा	दत्तात्रय	सोलापुर	३९	,,	,,	,,
४१	हुकमचन्द	गणेशीलाल	शाहपुरमगरोन	३८	,,	,,	४०
४२	हरिचन्द	गुन्छूलाल	,,	३७	,,	,,	५७
४३	भगोरेलाल	बहोरेलाल	,,	३५	,,	,,	५०
४४	प्यारेलाल	लक्ष्मणदास	,,	३४	,,	,,	५७
४५	भगवानदास	उमरावसिंह	,,	३३	,,	,,	३२

सूचना—१ जो विद्यार्थी अनुत्तीर्ण (नापास) हैं, उनके नाम नहीं लिखे गये। २ विना धर्मशास्त्रके गणित, कोष, व्याकरणमें उत्तीर्ण भी अनुत्तीर्ण (नापास) हैं। ३ केवल द्रव्यसङ्ग्रहमें भी परीक्षा देनेवाले नियम विरुद्ध हैं। ४ पचास नम्बरसे अन्यून नम्बर जिन्होंनें प्राप्त किये हैं. उनमेंसे तीन ही प्रत्येक विषयमें पारितोषकके पात्र हैं।

श्रीमन्तः—प्यारेलालजी, रघुनाथदासजी, सीतलप्रसादजी, नेमीसाहजी, श्रीलालजी, यमुनादासजी, नवाहिरलालजी, गणेशीलालजी, मनीरामजी, जोखीरामजी, वंशीधरजी विद्वांसः अहमपि च परीक्षका संजाताः।

स्याद्वादप्रभावकानुचर—गौरीलाल, देहली.

विविध प्रसंग।

जैनफिलोसफी नामक एक लेख इस अंकसे प्रारंभ किया जाता है। इसकी पृष्ठसंख्या जैनमित्रसे पृथक् लगाई गई है, इसलिये कि पाठक यदि चाहें तो वर्षके अन्तमें एक उत्तम पुस्तक निकाल लेवें। अनेक मित्रोंके अनुरोधसे उन्नतिशीर्षक लेखके स्थानमें यह स्वतंत्र लेख अवतीर्ण हुआ है, आशा है कि तत्त्वज्ञानके प्रेमी सज्जन इससे संतोष लाभ करेंगे। लेखका क्रम-बनानेके लिये गत ११ वें अंकका कुछ विषय पुनः उद्धृत हुआ है, पाठकगण भ्रममें न पड़ें।

सुशीला-उपन्यास भी इसी अंकमे प्रारंभ है। प्रत्येक अंकमें ४ पृष्ठ दिय जावेंगे। जिन्हें पुस्तक पृथक् बनाना हो, वे सम्पूर्ण अंक संभालके रक्खें।

जिलासागरमें 'देवरी' एक प्रसिद्ध कस्बा है। वहांके शहरके मन्दिरके चार सौ पांच सौ रुपये दो एक महात्माओंकी कृपासे यत्र तत्र उलझ रहे थे। हर्षका विषय है कि वहांके मालगुजार "लाला भवानीप्रसादजी, आनरेरी मजिष्ट्रेट" की कोशिशसे उक्त रुपया वसूल हो गये। एक धनिक महाशयने रुपया देनेसे इंकार किया, इसलिये जातिके मुखियाओंने उनसे खानपानका सम्बन्ध तोडनेका लेख लिखा है। धनिकके लिये लज्जाकी बात है। जातिके मुखियाओंने अच्छा काम किया है।

स्वदेश-वस्तु-प्रचारका आन्दोलन देश भरमें जोर पकड रहा है। अभी वह केवल बंगालमें था, परन्तु अब महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, युक्तप्रान्त इत्यादि प्रदेशोंमें भी व्याप्त हो गया है। हम सबलोगोंका कर्तव्य है कि, देश सेवाके इस परम उत्तम कार्यमें जी जानसे सहायता पहुंचावें। देशकी उन्नति तब ही होगी, जब हम अपना व्यापार बढावेंगे, और व्यापार तभी बढैगा, जब हम स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार करना सीखेंगे। व्यापारप्रिय जैन जातिको इस कार्यमें अन्य जातियोंकी अपेक्षा विशेष प्रयत्नशील होना चाहिये, क्योंकि यह सब आन्दोलन उनके व्यापारके लिये ही है।

जैनमित्रका दफ्तर मोरेनासे उठकर शोलापुरमें आ गया है। अतएव चिट्ठीपत्री पर हमारा ठिकाना मोरेना के स्थानमें शोलापुर लिखना चाहिये।

महात्मा हर्षकीर्तिके विषयमें गतवर्षके आठवें अंकमें एक लेख निकला था, उसमें आपकी बहुतसी पोलें खोली गई थी। अब उक्त महात्माने उन्हें छुपानेके लिये एक चिट्ठी छपाकर अपने भोले भक्तों को बांटी है। उसमें हमारे लेखको झूठा सिद्ध करनेकी कोशिश की गई है, परन्तु खेद है कि, आप उसमें कृतकार्य नहीं हुए हैं। बुद्धिमान् उस चिट्ठीसे ही आपको स्पष्टतया जान सक्ता है। हमारे एक मित्रने उक्त चिट्ठी हमारे पास देखनेका भेजी है।

जैनमहासभाके वार्षिक अधिवेशनका समय बहुत निकट आगया है। परन्तु उसके नेताओंमें अभीतक कोई ऐसी स्फूर्ति नहीं दिखती, जिससे भावी अधि० की उत्तमताका अनुमान जा सके। सहारणपुरवाले भाई भी कानोंमें तैल डाले हुए बैठे दिखते हैं।

Registered No. B 288.

ॐ

जैनमित्र ।

हिन्दीभाषाका पाक्षिकपत्र ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

सप्तम वर्ष । मार्गशीर्ष कृष्णा १ श्रीवीर सं० २४३२ । द्वितीय अंक ।

विषयानुक्रमणिका ।

वार्षिक मूल्य [illegible]या ।] [एक अंकका मूल्य =)

263

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, गिरगांव-बम्बई.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है ।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है ।

३ वारतक =) पंक्ति ।

६ ,, ,, -)॥ पंक्ति ।

१२ ,, ,, -) पंक्ति

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मास तककी ३) रु. ।

६ ,, ,, ५) रु. ।

१ तोले तककी ८) रु. ।

५ विज्ञापन छपवाई व बंटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बंटेंगे, जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

गोपालदास बरैया—

संपादक जैनमित्र—शोलापुर ।

एक बार अवश्य पढिये ।

१ गत अंकसे जैनमित्र पाक्षिक कर दिया गया है । अब यह अपनी द्रुतगतिसे एक माहमें दो बार आपकी सेवामें उपस्थित हुआ करैगा । और नानाप्रकारके धर्मोपदेश सुनाकर हर्षित किया करैगा । आपको चाहिये कि, इसके बदलेमें एक २ नया ग्राहक बनाकर भेजें और इसके उत्साहको बढावें । एक ग्राहकका बनाना आपके लिये कुछ भी कठिन बात नहीं है, परन्तु उस एक २ ही ग्राहकसे इसको बहुत लाभ हो सक्ता है । आशा है कि, इस छोटीसी प्रार्थनापर आप अवश्य ही ध्यान देंगे, और इसके पढते ही किसी भाईका नाम हमारेपास लिखकर भेज देंगे, जो ग्राहकोंमें दर्ज हो जावेगा ।

२ मासिक रूपमें इस पत्रका मूल्य १।) था, अब पाक्षिकमें बढाकर २) दो रुपया किया गया है । जो महाशय मासिकके ग्राहक थे, उन सबके पास यह अंक भेजा जाता है । जिनको स्वीकार न हो, वे वापिस करके सूचना दे देवें । अन्यथा सब ग्राहक समझे जावेंगे ।

३ नये प्रबन्धके कारण एक दो अंक समय पर नहीं निकल सकेंगे । पाठकगण इसके लिये क्षमा करें ।

४ यह अंक ग्राहकोंके अतिरिक्त अन्य अनेक महाशयोंकी सेवामें भी नमूनेकी तौर पर भेजा जाता है । जिन महाशयोंको ग्राहक होने की इच्छा हो, वे कृपा करके एक कार्ड द्वारा सूचना दे देवें । अन्यथा दूसरा अंक उनके पास नहीं भेजा जावेगा ।

मेनेजर ।

श्रीवीतरागाय नमः।

वर्ष ७.] मार्गशीर्ष कृष्णा १ सं० १९६२ विक्रम। [अंक २.

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते॥ १॥

विविध प्रसंग।

दिसम्बरके बडे दिनोंकी छुट्टीमें ता० २९ से २९ तक सहारणपुरमें जैन यंगमेनस् एसोसियेशन और भारतवर्षीय दि० जै० महासभाके जल्से होंगे। सुनते हैं, सहारणपुरके सज्जनोंने खूब तयारियां की हैं।

विशेष हर्षकी बात यह है कि, उक्त जल्सेमें जानेवाले भाइयोंके लिये एन. डब्ल्यू. रेलवे (सहारणपुरसे लाहोर जानेवाली) ने तीसरे दर्जेका किराया आधा कर दिया है, और ओ.आर. रेलवे (बनारससे सहारणपुर जानेवाली) ने सब दरजोंके लिये ड्योढ़ा महसूल देनेसे जाने आनेका टिकट कर दिया है। जिन भाइयोंको इस जातिधर्महितैषी समारंभमें सम्मिलित होनेकी इच्छा हो, उन्हें चाहिये कि, महासभाके सेक्रेटरी महाशयसे सर्टिफिकिट मंगा लेवें। स्टेशनमाष्टरको उक्त सर्टिफिकिट दिखलानेसे आने जानेके टिकट मिल सकेंगे।

आजकल हमारे और हमारे समाजके मुखियाओंके उत्साहोंमें बडी विलक्षणता आ गई है। ग्यारह महीनेकी गहरी नींद लेनेके पश्चात् जब एक महिना मात्र अवशेष है, तब हमको चिन्ता हुई है कि, महासभाका अधिवेशन होना है! इसके पहिले ऐसा जान पड़ता था कि, जैनियोंको अब कुछ करना ही नहीं है, कृतकृत्य हो चुके हैं। परन्तु अब इस महीनेमें खूब तेजी नजर आ रही है। हमारे लाला और बाबूलोग महासभा और एसोसियेशनके प्लेटफार्मपर खडे होकर बतलावेंगे कि, उन्नतिका रमणीयसुधाप्लावित–समुद्र हमारे निकट ही लहरा रहा है। परन्तु स्टेजसे नीचे उतरते ही वह सब दृश्य विलयमान हो जावेगा, और हम सब अवनतिके घोर अंधकूपमें पड़के सब भूल जावेंगे।

प्यारे भाइयो। उत्साह इसको नहीं कहते हैं। इस चार दिनकी लेक्चरबाजीसे कुछ नहीं होता है। उन्नतिकी इच्छा करनेवालोंको अहोरात्रि परिश्रम करना पड़ता है। स्वार्थत्याग करना पड़ता है और करना पड़ता है बडे बडे विघ्नोंका साम्हना। इस लिये यदि कुछ करना

चाहते हो, तो सच्चे उत्साहको काममें लाओ। मौखिक चापल्य, बाहिरी चाकचक्य और निरी यशोभिलाषाको छोड़ दो।

हमारे समाजमें सभासंचालनादि कार्य करनेवालोंकी बहुत न्यूनता है; इस लिये अनेक लोगोंके सिरपर इच्छा न रहते भी कार्योंका बोझा डाला जाता है। किसीको सभापति किसीको मन्त्री और किसीको उपमंत्रीकी माला पहिना दी जाती है। इसका फल यह होता है कि, वे लोग कुछ भी नहीं करते और वर्षके अन्तमें जब उनसे पूछा जाता है कि, क्या काम किया, तो दांत दिखा देते हैं। ऐसा करनेसे न केवल कार्यकी हानि होती है, वरंच लोगोंमें असंतोष, निरुत्साहता, और अनादर-बुद्धिकी वृद्धि होती है। इसलिये जो महाशय हार्दिक उत्साह, स्नेह और महात्वाकांक्षासे कार्यको करना चाहें, तथा जिनमें कार्य करनेकी अच्छी योग्यता हो, उन्हें ही कार्य सौंपना चाहिये। अन्यथा "मारपीट करके सती" बनानेसे कुछ लाभ नहीं है। अनिच्छापूर्वक किया हुआ कार्य कदापि अच्छा नहीं होता।

कुछ दिन पहिले जैन इतिहास सुसाइटीने हमको आशा दी थी कि, जैनियोंका ऐतिहासिक अंधकार अब शीघ्र ही दूर हो जावेगा और हम अपने पूर्वपुरुषाओंका इतिहास जाननेको समर्थ हो जावेंगे। परन्तु अब उस आशापर प्रायः पानी सा फिरता जाता है। सुसाइटी एक पुस्तक नबाकर ही कृतकृत्य हो बैठी है। अब वर्षोंसे उसका नाम भी नहीं सुन पड़ता। क्या हमारे समाजसे यह प्रारंभशूरताका लांछन दूर नहीं हो सक्ता ?।

समाजमें प्रत्येक प्रकारकी उन्नति करनेके लिये उपदेशकलोग जितना प्रयत्न कर सक्ते हैं, उतना दूसरोंसे नहीं हो सक्ता। परन्तु खेद है कि, इस ओर लोगोंका ध्यान बहुत थोड़ा है। १३॥ लाख जैनियोंको उपदेश देनेके लिये इने गिने दो तीन ही उपदेशक हैं! और जो हैं, वे अपने संचालकोंकी आज्ञासे जहां तक हमको अनुभव है, ऐसे ही स्थानोंमें दौरा करते हैं, जो प्रसिद्ध हैं, तथा जहां रेलवे आदिका सुभीता है। इस नीतिसे मुख्य स्थानोंके रहनेवाले तो नित्य २ आनेके कारण उपदेशकोंसे तंग आ जाते हैं, और ग्रामवासी तथा रेलवेके दूरवर्ती स्थानवाले भाई उनके लिये तरसते रहते हैं। अतः उपदेशकभंडारके मंत्रियोंको चाहिये कि, सबपर एकसी कृपा किया करें।

सागरजिलेमें **देवरी** कस्बेके निकट **श्रीबीनाजी** नामक अतिशयक्षेत्र है। वहांपर बहुत प्राचीन मंदिर और प्रतिमा हैं। उक्त स्थानमें प्रतिवर्ष अगहन अथवा पौषमें बड़ा भारी मेला लगता है; और दो तीन हजार जैनीभाइयोंका समूह एकत्र होता है। गतवर्ष देवरीके अनेक भाइयोंकी प्रेरणासे हमने नोट किया था कि, उक्त मेलेपर महासभाको अपना उपदेशक भेजना चाहिये; परन्तु खेद है कि, किसी भी उपदेशकमहाशयने तत्रस्थ तृषित लोगोंकी प्यास नहीं बुझाई। इस वर्ष फिर भी वहांके

भाइयोंने उपदेशक बुलानेकी प्रार्थना की है। क्या उपदेशकभंडारके मंत्री अबकी बार भी कृपा नहीं करेंगे?

चीनके बादशाह जिस खेतकी चाह पीते हैं, उसकी रक्षा बड़ी शुद्धतापूर्वक की जाती है। कोई जानवर खेतमें प्रवेश करके चाहको अपवित्र न कर डाले, इस लिये खेतके आसपास एक बहुत ऊंची दीवाल उठाई गई है। जो मजदूर उस खेतकी चाहकी पत्तियां चुनते हैं, उनके सख्त हुक्म रहता है कि, कभी मांस मछली अथवा अन्य अभक्ष्य पदार्थ न खावें। नित्य तीनवार स्नान करें और हाथोंमें स्वच्छ हाथपोश पहिनके आवें। इस वैभवसम्पन्न नरनाथका ख्याल है कि, अभक्ष्य पदार्थोंका सेवन ही नहीं किन्तु स्पर्श भी रोगका कारण है।

तीनसौ वर्षके पहिले इस देशमें कैसा अमन चैन था। प्रजा कैसे सुखसे रहती थी, उसका अन्दाजा इसीसे हो सक्ता है कि, अकबरके समयमें गेहूं पौने पांच आना मन, चने सवा तीन आना मन, बढ़िया चावल २।) मन, दूसरे चावल १) मन, घीव २॥≈) मन और सफेद शक्कर ३-)॥ मन बिकती थी। वह मन अंग्रेजी तौलके हिसाबसे २६ शेर १० छटाकका होता था। परन्तु अब उसी देशमें उक्त पदार्थोंकी दर इतनी बढ़ गई है कि, लक्षावधि लोगोंको घी दूध तो दूर रहा, चने भी सवेरेसे शामतक भरपेट नहीं मिलते। प्रतिवर्ष अकाल पड़ते हैं, जिनके कारण चारों और हाहाकार सुनाई पड़ता है।

अंग्रेज सरकारके राज्यमें हमको सब प्रकारका सुख है, परन्तु यह बड़ी भारी विपत्ति है कि, लोग दिन पर दिन दरिद्र होते जाते हैं। इसका कारण यह है कि, हम लोगोंको इंग्लेंड, जर्मनी आष्ट्रिया आदिके व्यापारी चारों ओरसे लूट रहे हैं। हमारे देशमें जो अन्न पैदा होता है, उसको विदेशी लोग कपड़ा, कांचका सामान, आदि क्षणस्थायी चीजोंके बदलेमें ले जाकर आनन्द करते हैं, और हम भूखों मरते हैं। विदेशी चीजोंकी चमक दमकके मारे हमारे देशकी कारीगरीका नाश हो गया, कोट्यावधि द्रव्य दूसरी विलायतोंमें चला गया, और हम बिलकुल कंगाल हो गये।

देशकी ऐसी शोचनीय अवस्थाको दूर करनेका एक मात्र उपाय यह है कि, हम लोग अपने देशकी बनी हुई चीजोंको वर्तावमें लावें, और विदेशी चीजोंका लेना छोड देवें। आजकल देशभरमें और विशेषकर बंगालमें इस बातका घोर आन्दोलन हो रहा है। एक तो विदेशी चीजें जैसे दवाई, शक्कर आदि अत्यन्त अभक्ष्य और अशुद्ध हैं, इस लिये जैनीमात्रको उनसे परहेज करना ही चाहिये। दूसरे जितनी विदेशी चीजें हैं, वे सब हिंसाकारक हैं। क्योंकि उनके प्रचारसे हमारे देशके कारीगर जुलाहे इत्यादि शिल्पजीवी लोग भूखों मरते हैं। अर्थात् देशके ये लाखों जीव जो विना अन्नके मर जाते हैं, उनकी मारनेवाली ये ही विदेशी चीजें हैं। सो यदि हम लोग देशी चीजोंका व्यवहार करने लगेंगे, तो इन गरीबोंको भरपेट खानेको मिलने लगेगा, जो एक परम अहारदानके तुल्य होगा। इसलिये

जैनियोंका यह परमकर्त्तव्य है कि, स्वदेशी वस्तुओंके प्रचारजन्य धर्मकार्यमें सहायता पहुंचावें।

बम्बईके अधिकांश महाजनोंकी दूकानोंमें प्रायः चमड़ेके पुट्ठेवाले वही खाते रजिष्टर आदि रक्खे जाते हैं। इन महाजनोंमें हमारे जैनीभाई भी शामिल हैं। कुछ दिन हुए पी- छुट्टनलाल प्यारेलाल जैनकंपनीके आन्दोलन और उद्योगसे सैंकड़ों दूकानोंपर चमड़के स्थानमें कपड़के वहीखाते रक्खे जाने लगे हैं। परन्तु बड़े खेदकी बात है, कि प्रतिष्ठित जैनियोंकी दो तीन दूकानोंपरसे अब भी चर्मयुक्त वहीखातोंका मुंह काला नहीं हुआ है। लिखनेसे लज्जा आती है कि, ये दूकानें जैनियोंके शिरोभूषण परम शुद्धाम्नायियोंकी हैं!

महाराष्ट्र और कर्णाटकमें चतुर्थ और पंचम नामक दो जैन जातियोंकी बस्ती बहुलतासे है। इनमेंसे पंचमका आचरण चतुर्थकी अपेक्षा श्रेष्ठ और विचारयुक्त देखा जाता है। चतुर्थजैनी प्रायः खेती करनेवाले हैं; परन्तु पंचमोंमें बहुत थोड़े खेती करनेवाले हैं। इसके अतिरिक्त धर्मकार्य और विवाहादि कार्य करानेवाले उपाध्याय जिन्हें एक प्रकारसे आचार्य समझना चाहिये, पंचमोंमें ही होते हैं। इन सब बातोंसे जाना जाता है कि, इन दोनों जातियोंके नाम गुणस्थानोंकी अपेक्षासे रक्खे गये हैं। पंचम गुणस्थानवर्ती व्रती श्रावक पंचम हैं, और चतुर्थ गुणस्थानवर्ती अव्रती श्रावक चतुर्थ हैं। परन्तु चतुर्थ जातिके अनेक वृद्धपुरुषोंसे जातिके नामकरणके विषयमें ऐसा सुना है कि, जो जाति चतुर्थकालमें स्थापित हुई, वह चतुर्थ कहलाई, और जो पंचमकालमें हुई, वह पंचम। अस्तु, इस विषयमें यदि कोई महाराष्ट्रसज्जन लेख लिखनेका परिश्रम करें, तो यथार्थ बात प्रगट हो सक्ती है।

गत कार्तिक सुदी १५ रविवारको बम्बईमें शेठ हीराचन्द गुमानजी जैन बोर्डिंग स्कूलका वार्षिक समारंभ हुआ था। स्वर्गीय शेठ प्रेमचन्द मोतीचंदजीकी मातेश्रीकी ओरसे प्रतिवर्ष उक्त तिथिको यह उत्सव हुआ करता है। अबकी वार विशेष आनंद यह हुआ कि, अजमेर निवासी शेठ नेमीचन्दजी तथा इंदौरके शेठ हुकमचंद कल्याणमलजी इस समारंभमें सम्मिलित हुए थे। शेठ नेमीचंदजीने सभामें चार दानपर व्याख्यान दिया था। और इंदौरके शेठजीने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। पूजन भजनादि कार्योंमें बड़ा आनंद रहा।

बंबईकी लोकलसभाके अधिवेशन भी अब नियमानुसार होने लगे हैं। गत कार्तिक सुदी १५ को उक्त सभामें भाई नाथूराम प्रेमीने स्वदेशसेवापर अच्छा व्याख्यान दिया था। और शेठ रामचंद नाथाजीने सभापतिका आसन सुशोभित किया था।

स्वर्गीय राजा दीनदयालजी फोटोग्राफरके सुपुत्र राजा ज्ञानचन्दजी प्रिन्स आफ वेल्सकी भारतयात्रामें निरन्तर साथ रहेंगे। जैनियोंके सौभाग्यकी बात है।

समालोचकका साहस।

जैनगजटके ४२ वें अंकमें **पुरुषार्थसिद्ध्युपायकी** समालोचना की गई है। समालोचक आराके बाबू **जैनेन्द्रकिशोरजी** हैं। आप हिन्दीके अच्छे लेखक हैं। और इधर कुछ दिनोंसे जैनसमाजके पत्रोंमें भी आपके लेख निकलने लगे हैं, जिससे हमारे पाठकगण उन्हें जैनधर्मके भी अच्छे लेखक समझने लगे हैं। यही कारण है कि, आपने एक धर्मग्रन्थकी समालोचना करनेका साहस किया है। इस साहसमें यदि आप दो चार छपाई सफाईकी बातें लिखकर और दो चार भाषासम्बन्धी अशुद्धियां बताकर पार हो जाते, तो अच्छा होता। परन्तु आपकी महत्वाकांक्षा बहुत बढ गई है। उसीके चक्करमें पड़कर आप एक आर्ष धर्मग्रन्थमें सिद्धान्तके विरुद्ध बातें दिखलानेको प्रस्तुत हो गये। ऐसे विषम-साहसको मैं अच्छा नहीं समझता। क्योंकि किसी भी कार्यमें अनधिकार चर्चा करना नीतिसे विरुद्ध है।

आपने भाषानुवादक **श्रीनाथूरामप्रेमीकी** भूल बतलाई है। और उनसे भूल होना संभव भी थी, परन्तु यह नहीं देखा कि, उन्होंने भूमिकामें क्या लिखा है। भूमिकामें स्पष्ट लिखा हुआ है कि, "मैंने भाषाकार **पं० दौलतराम, पं० भूधरमिश्र, पं० टोडरमल** आदिके अभिप्रायोंके अतिरिक्त कुछ भी नहीं कहा है। सब टीकाओंको नवीन ढंगसे एकत्र किया है।" इससे पं० दौलतराम, पं० टोडरमलजी आदिके बताये हुए भाषानुवादकी आपने आलोचना की है, न कि **नाथूरामके** अनुवादकी। यही कारण है कि, मुझे विद्वानोंकी अवहेलना सहन नहीं हुई और यह लेख लिखना पड़ा। आशा है कि, बाबूसाहब इससे दुःखी न होंगे और यदि ठीक हो, तो अपनी भूल स्वीकार करेंगे।

पुरुषार्थसिद्ध्युपायमें **प्रोषधोपवासकी** विधि कहते हुए आचार्य भगवानने कहा है कि—

> **प्रातः प्रोत्थाय ततः**
> **कृत्वा तात्कालिकं क्रियाकल्पम्।**
> **निर्वर्तयेद्यथोक्तं**
> **जिनपूजां प्राशुकैर्द्रव्यैः॥**

टीकाकारने इसका अर्थ इस प्रकार किया है—

"(ततः) तदुपरान्त (प्रातः) प्रभात ही (प्रोत्थाय) उठकर (तात्कालिकं) प्रातः सम्बन्धी (क्रियाकल्पं) क्रियासमूहको (कृत्वा) करके (प्राशुकैः) प्राशुक[1] अर्थात् जीवरहित (द्रव्यैः) द्रव्योंसे (यथोक्तं) आर्षग्रन्थोंमे जिसप्रकार कही है, उस प्रकारसे (जिनपूजां) जिनेश्वर देवकी पूजाको (निर्वर्तयेत्) करै।" और प्रासुक शब्दपर अंक देकर "**सुक्कं पक्कं तत्तं**" आदि गाथाभी टिप्पणीमें छाया और अर्थसहित दी है। परन्तु खेद है कि, तौ भी समालोचकने प्रासुक शब्दका अर्थ जीवरहित करनेको मनोक्त[2] और नये मतका झगड़ा समझ लिया, और पवित्र अर्थ करनेको अच्छा समझा। इस पवित्रताके च-

१ अनेक प्राचीन तथा नवीन प्रतियोंमें यद्यपि 'प्राशुक' शब्दमे शकार ही लिखा हुआ मिलता है, परन्तु यथार्थमें यह शब्द 'प्रासुक' है। **आस्रवको आश्रव** लिखनेके समान लोग प्रासुकको भी प्राशुक लिखने लगे हैं।

२ मनोक्त शब्द व्याकरणसे अशुद्ध है। क्योंकि शब्द मनस् है, न कि मन।

करमें पडकर आपने भाषाकारको खूब औंधी सीधी सुनाई हैं और अनेक प्रश्न करके अपना सिद्धान्त इस प्रकार लिखा है कि, "शास्त्रानुसार शुद्ध-द्रव्यसे पूजा करो।"

परन्तु यथार्थमें जो अर्थ भाषाकारने किया है, वही सर्वमान्य और उत्तम है। शास्त्रमें श्रावकोंको सचित्त और अचित्त दोनों प्रकारके द्रव्योंसे पूजन करनेकी विधि है। परन्तु प्रोषधोपवासके लिये आचार्य विशेष विधान करते हैं कि, उस दिन समस्त सावद्य आरंभोंका त्यागी श्रावक प्रासुक द्रव्यसे ही यथोक्त पूजन करै। यथोक्तका अर्थ भाषाकारने जो लिखा है, वही ठीक है कि, **स्थापना, सन्निधीकरण, विसर्जनादि** सम्पूर्ण अंगों सहित पूजन जैसी ऋषियोंने कही है, प्रासुक द्रव्यसे करै।

समालोचक महाशयका सिद्धान्त यदि थोडे समयके लिये मान भी लिया जावे, तो उसमें यह प्रश्न होता है कि, जब 'शास्त्रानुसार' शब्द दे दिया है, तब शुद्ध द्रव्यके कहनेकी क्या आवश्यकता थी? क्योंकि जो शास्त्रानुसार पूजन होगी, वह शुद्ध द्रव्यसे ही होगी। इसलिये प्रासुक द्रव्यके कहनेसे यही सिद्ध होता है कि, पूजन अप्रासुक द्रव्यसे भी होती है। जिसका अर्थ आप अपवित्र समझते हैं, और जो कि सर्वथा असंभव है।

समालोचक महाशयने भाषाकारसे प्रासुकका अर्थ जीवरहित करनेके अपराधमें कोषका प्रमाण मांगा है। परन्तु खेद है कि, आपने अपने नितान्त विरुद्ध अर्थकी पुष्टिमें भी कोषकी आवश्यकता नहीं समझी है। प्रासुकका अर्थ पवित्र किसी कोषसे सिद्ध नहीं होगा, परन्तु जीवरहित सिद्ध करनेके लिये किसी भी कोषकी आवश्यकता नहीं होगी। जैनीका बच्चा भी यदि उसको धर्माचरणका कुछ संस्कार होगा, तो यही अर्थ करेगा। "**प्रगता असवो यस्मात्सः**" इसप्रकार बहुव्रीहि समासमें "**दोषाद्विभाषा**" सूत्रसे कप् प्रत्यय विकल्पसे होकर कप् पक्षमें प्रासुक शब्दकी सिद्धि है। इस प्रकार यह शब्द-व्युत्पत्तिगम्य है और आचारशास्त्रोंमें जगह २ जीवरहित अर्थमेंही प्रयुक्त होता है।

पाठकगण! थोडासा विचार करें कि, यदि कोई पुरुष गंगाका शुद्ध निर्मलजल छन्नेसे छानकर लावे, तो क्या आप उसे प्रासुक कहेंगे? और क्या उस जलको मुनिजन ग्रहण कर लेंगे? कभी नहीं। प्रासुक उसीको कहेंगे, जो उष्ण किया हुआ होगा, अथवा लवंगादि तीक्ष्ण पदार्थोंसे अचित किया होगा। कविवर द्यानतरायजीने पूजनमें कहा है— "**उज्ज्वल गंगाजल शुचि अतिशीतल प्रासुक निर्मल गुन गायो**"। यदि प्रासुकका पवित्र अर्थ होता, तो इसपाठमें शुचि शब्द पुनः देनेकी क्या आवश्यकता थी? और गोमट्टसारकी टीकाकी "**सुक्कं पक्कं तत्तं**" आदि गाथा भी क्या प्रासुकका अर्थ जीवरहित सिद्ध करनेके लिये अलम् नहीं है? क्योंकि सूखे हुए, पकाये हुए, तपाये हुए द्रव्य सम्पूर्ण ही जीवरहित होते हैं। उनमें पवित्रतासे कोई सम्बन्ध नहीं है। और जो पदार्थ भक्ष्य उपादेय तथा पवित्र हैं, उन्हींमें प्रासुककी कल्पना है, न कि अन्य अभक्ष्य पदार्थोंमें।

इसके अतिरिक्त प्रासुक तथा उष्णजलकी मर्यादा जगह २ कही गई है कि, अमुक समयके पश्चात् प्रासुक जल अप्रासुक हो जाता है। यदि वहांपर अप्रासुकका अर्थ अपवित्र करें, तो समालोचकको बतलाना चाहिये कि, समयान्तरमें उसमें अपवित्रता कहांसे आ घुसेगी? किन्तु प्रासुकजल कालान्तरमें जीवयुक्त अर्थात् अप्रासुक हो जाता है। इसलिये यही अर्थ उपादेय और संभव है।

और मुनियोंके लिये प्रासुक आहारपानकी विधि है। यदि वहां भी प्रासुकका अर्थ पवित्र मान लिया जावेगा, तो फिर मुनियोंके लिये ताजे हरे फलादिकोंके आहारमें कुछ हानि नहीं होगी। तब फिर समालोचकका इस प्रकार मानना, नये मतका झगड़ा खड़ा करना कहलावेगा कि, भाषानुवादकका जीवरहित अचित्त मानना।

दूसरी समालोचना अर्जिकाओंको अन्त सल्लेखनामें वस्त्रत्याग करनेके विषयमें है, परन्तु अब उसकी आलोचना करनेकी आवश्यकता नहीं रही है। क्योंकि बाबू **शीतलप्रसाद**जीने उसीके नीचे **सागारधर्मामृत**का प्रमाण देके आलोचकके नेत्र खोल दिये हैं। बाबू शीतलप्रसादजीने उक्त प्रमाण अच्छे मोकेपर दिया है, यदि उसमें समाधान नहीं होगा, तो ग्रन्थान्तरोंसे भी प्रमाण दिये जा सक्ते हैं। पं० भूधरमिश्रजीने अपनी टीकामें इस बातको स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है। इत्यलम् विज्ञेषु।

लालाराम विद्यार्थी।
संस्कृत जैनविद्यालय बम्बई.

चुटकले।

(१)

मेनेजर—क्यों महाशय! आप मूल्य क्यों नहीं देते?

ग्राहक—मूल्य किस चीजका?

मेनेजर—जैनमित्रका।

ग्राहक—एँ! क्या कहा जैनशत्रुका?

मेनेजर—शत्रु नहीं मित्र!

ग्राहक—मित्र तो तब जानते, जब मूल्य नहीं मांगता।

(२)

सम्पादक—कहिये पाठक! आजकलके लेख कैसे निकलते हैं?

पाठक—मूल्यादिके लिये तथा चन्दाबटोरनेके लिये जो विज्ञापन छपते हैं, उनको छोड़के बाकी सब लेख अच्छे रहते हैं।

(३)

प्रश्न—अखबारोंसे आप क्यों चिढ़ते हैं।

उत्तर—इस लिये कि, उनके द्वारा देश-समाज और मनुष्योंकी भलाई होती है।

प्रश्न—तो क्या आप ऐसा होनेमें कुछ हानि समझते हैं?

उत्तर—नहीं! परन्तु हमलोगोंके गोरख धन्धोंकी पोलें भी खोली जाती हैं॥

(४)

प्रश्न—शास्त्रसभामें आपसे लोग बहुत छेड़ छाड़ किया करते हैं?

उत्तर—हां! यों ही पंडिताई छोंकनेके लिये दो चार महात्मा आ बैठते हैं।

प्रश्न—पर आप तो किसीके प्रश्नका उत्तर भी नहीं देते। और चौदह प्रकारके श्रोताओंके लक्षणकरके उन्हें कुतर्की और छिद्रान्वेषी बना डालते हैं। ये क्यों?

उत्तर—और करूं क्या? वे प्रश्न ही ऐसे मगजपच्चीके करते हैं। कि उनसे छुट्टी पानेका इसके अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं है।

ग्रन्थावलोकन।

भूमिका।

हमारे देशमें मुद्रणकलाका प्रसार दिन पर दिन बढ़ रहा है। नाना धर्मों तथा नाना विषयोंके लक्षावधि ग्रन्थ मुद्रित हो चुके हैं और हो रहे हैं। तथा च औरोंकी देखादेखी अनेक महात्माओंकी कृपासे हमारे परम पूजनीय जैनग्रन्थ भी प्रेसोंकी हवा खाने लगे हैं। "जैनग्रन्थ छपना चाहिये या नहीं" इस जटिल प्रश्नकी मीमांसा करनेकी आज हमारी इच्छा नहीं है। परन्तु जब यह कार्य चल पड़ा है और एक प्रकारसे दुर्निवार हो गया है, तब इस विषयमें एक आवश्यकीय विचार करनेकी इच्छा हुई है।

जैनग्रन्थोंके मुद्रणपक्षमें धनवान, बुद्धिमान, निर्धन, मूर्ख और परममूर्ख सब प्रकारके मनुष्य हैं। इनमेंसे एक समूह ऐसे धर्मात्माओंका है, जो केवल जिनवाणीका प्रसार करनेकी इच्छासे निःस्वार्थ उद्योग करते हैं, दूसरा समूह ऐसे महाशयोंका है, जो धर्मप्रभावनाके अतिरिक्त अपनी जीविका भी इससे करते हैं, और तीसरा समूह ऐसे महात्माओंका है, जिन्होंने इसे अपनी जीविकाका मुख्यद्वार मान लिया है, और जिन्हें द्रव्यलाभके अतिरिक्त धर्मके हानिलाभसे कुछ प्रयोजनही नहीं है।

प्रथम और द्वितीय समूहके प्रयत्नसे जो ग्रन्थ मुद्रित होते हैं, वे प्रायः सावधानता पूर्वक होते हैं। परन्तु तीसरे समूहकेलिये "प्रथ तो गुरवेल (गिलोय) और फिर चढ़ी नीमपर" वाली कहावत चरितार्थ होती है। क्योंकि स्वार्थपरायणता और परममूर्खता तो उक्त महात्माओंमें विद्यमान है ही। रही लोगोंकी निन्दा और आलोचनाकी भीति, सो इससे भी निरंकुश हो रहे हैं। क्योंकि वे धर्मग्रन्थोंमें क्या २ अंधेर मचा रहे हैं, इसको कहनेवाला और सुननेवाला कोई भी नहीं है।

कुछ वर्ष पहिले ग्रन्थमुद्रणके विषयमें दोनों पक्षोंकी ओरसे बड़े २ विवाद उपस्थित होते थे, जिनके कारण आपसी वैमनस्य बढ़नेसे सभा पाठशालादि उन्नतिके कार्योंमें हानि होती थी। अतएव अनेक विचारवानोंने "सभाओंमें तथा जैन समाचारपत्रोंमें इस विषयको सर्वथा नहीं उठाना" ऐसा निश्चय कर लिया। इसका फल एक प्रकारसे अच्छा ही हुआ कि, वह विरोधकी आग जहां तहां शान्त हो गई। परन्तु उससे एक बड़ी भारी हानि भी हुई कि, उक्त स्वार्थी मूर्खमंडलने जैनग्रन्थोंमें छपाते समय बडे २ अनर्थ कर डाले और किसीने कुछ भी नहीं कहा।

हम नहीं चाहते कि, जैनियोंमें मुद्रणविषयका विवाद पुनः उपस्थित किया जावे, अथवा सभा सुसाइटियोंमें इसकी चरचा चलाकर विधिनिषेध किया जावे, परन्तु पत्रसम्पादकोंका कर्तव्य है कि, ऐसे अनर्थ करनेवालोंको स्पष्ट शा-

ब्दोंमें समालोचना करके रोकें। अतएव इच्छा न रहते भी आज 'ग्रन्थावलोकन, शीर्षकके नीचे इस विषयका प्रारंभ करना पड़ा है। आशा है पाठकगण इससे अप्रसन्न न होंगे।

(१)

अत्यन्तनिशितधारं
दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रं।
खण्डयति धार्यमाणं
मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्॥
(भगवदमृतचन्द्रसूरिः।)

तत्त्वार्थसूत्रवचनिका।

सबसे प्रथम उक्त ग्रन्थ हमारे अवलोकनमें आया है। और यही जैनियोंका मुख्य दर्शन-ग्रन्थ है। जैनधर्मका सम्पूर्ण रहस्य इसी ग्रन्थमें है। विस्तारमें तो यह इतना छोटा ग्रन्थ है कि, चतुर लेखक एक कार्डमात्रमें इसके दशों अध्याय लिख सक्ता है, परन्तु अर्थगांभीर्यमें इतना बड़ा है कि, सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, श्लोकवार्तिक और गन्धहस्तिमहाभाष्य सरीखे लक्षावधि--श्लोकयुक्त टीकाग्रन्थोंके होनेपर भी वह टीकाओंकी अपेक्षा रखता है। उसी तत्त्वार्थ महाशास्त्रकी यह तत्त्वार्थसूत्रवचनिका है। और इसके कर्त्ता हैं, कटनीके **मुंशी नाथूरामजी बुकसेलर**। भाषामें पं० सदासुखजी, पं० जयचन्द्रजी, पं० पन्नालालजी संघी आदि महाशयोंकी बनाई हुई टीकायें हैं, और उनमेंसे एक दो छप भी चुकी हैं, तौ भी मुंशीजीको जैनी भाइयोंके उपकारके लिये इस वचनिकाके रचनेका परिश्रम करना पड़ा, यह दुःखकी बात है।

भूमिकामें मुंशीजी इस ग्रन्थके रचनेका कारण बतलाते हैं कि, "संस्कृत विद्याके अभावके कारण लोग तत्त्वार्थसूत्रको नहीं बांच सक्ते हैं' इस लिये वे इसें पढें, समझें और जब साधारण अर्थ समझ लेवें, तब बड़ी टीकाओंको पढें।" हम नहीं कह सक्ते कि लोग इससे क्या समझ लेंगे? तथा सदासुखदासजी और संघी पन्नालालजीकी छोटी टीकाओंके होते हुए भी इससे विशेष लाभ क्या उठावेंगे।

अब यह देखना है कि, टीका कैसी सुन्दर वा असुन्दर बनी है। परन्तु इसके पहले हमको ग्रन्थकर्ताकी विद्वत्ताका भी अनुमान कर लेना चाहिये। क्योंकि वह ग्रन्थके जन्मदाता है। कर्ताके परिचयसे ग्रन्थका गौरव शीघ्र ही अभिव्यक्त हो जाता है।

यह वचनिका तत्त्वार्थसूत्र मूल संस्कृतग्रन्थकी टीका है। तब लोग स्वयं समझ लेंगे कि, इसका कर्ता संस्कृतका जाननेवाला अवश्य ही होगा। ग्रन्थके टाइटिलपर आपने लिख भी दिया है कि "मुंशी नाथूरामलमेचूने बालबुद्धि जैनी भाईयोंके पढ़नार्थ (?) संक्षेपसे मूल सूत्रोंका अर्थ और कुछ २ आवश्यक तिलक रचकर....... इत्यादि।" परन्तु प्यारे पाठको! हमको बड़े कष्टके साथ कहना पडता है कि, आप संस्कृतका अक्षर भी नहीं जानते हैं। और एक दर्शन ग्रन्थके टीकाकार बनकर "**कपडे न लत्ते बीचमें सोवेंगे**" वाली कहावत चरितार्थ करनेको चले हैं। आपने दर्शनग्रन्थोंकी टीका करना बच्चोंका खेल अथवा कलगी तुर्रेका वितंडा समझके जैनी मात्रके साथ जो बड़ा भारी अपकार किया है, हम नहीं कह सक्ते कि, तज्जनित पापका फल आपको क्या भोगना पडेगा।

यदि आपकी वचनिकाकी आलोचना पूर्णतया की जावे, तो एक बडा भारी पोथा बन सक्ता है। क्योंकि प्रायः प्रत्येक सूत्रका अर्थ सर्वथा विरुद्ध लिखा गया है। मूल सूत्रोंके अभिप्रायसे आपकी वचनिका कोसों दूर है। कहीं २ आपने मूल सूत्रकारके समान ही शब्दोंका लाघव किया है, जिसका अर्थ सविस्तर कहनेके लिये कदाचित आप दूसरा भाष्य भी रचेंगे। परन्तु खेद है कि, इन सब बातोंको लिखनेके लिये हमारे पास स्थान नहीं हैं। इस लिये कुछ थोडी सी अर्थसम्बन्धी मोटी २ भूलें लिखकर ही संतोष करना पडता है। अन्य व्याकरणादि भूलोंकी गिनती करना एक प्रकारसे असंभव है।

प्रारंभमें ही सर्वार्थसिद्धिकारके "**मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं**.........."आदि मंगलाचरणके प्रथम पादका अनुवाद मुंशीजीने चौपाईमें किया है;—"शिवमगके प्राप्ति कर्त्तार।" यदि यहां इस पदके लालित्य, ध्वनि गौरवपर ध्यान न दे करके केवल अर्थका ही विचार करें, तो **मोक्षमार्गस्यनेतारं**का अर्थ मोक्षमार्गका नेता अर्थात् प्रवर्तक होता है, न कि प्राप्ति करनेवाला। यह तो "प्रथम ग्रासे मक्षिकापात" हुआ। अब आगे चलिये—

२ "**श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्**" इसके अर्थमें आप फरमाते हैं, "श्रुत नाम विचारका है" धन्य है। 'श्रुत'का अर्थ 'विविचार' करके ही आप श्रुतकी टीका करने चले हैं।

१ यद्यपि नेतृ शब्दका अर्थ प्रापक भी है, परन्तु इस प्रकरणमें वह असम्बद्ध है।

३ "**ऋजुविपुलमतिमनःपर्ययः**" का अर्थ हुआ है—"ऋजुमति थोडा विपुल मति बहुत"। इसमें ऋजुका अर्थ थोडा किस कोषमेंसे देखके किया गया है, सो हम नहीं कह सक्ते। इस अनर्थका कुछ ठिकाना है?

४ "**सदसतोरविशेषाद्यदृच्छोपलब्धेरुन्मत्तवत्**" इसका अर्थ कैसा विलक्षण किया गया है, देखिये;—"सत् असत्के विचार विना उनमत्तवतके (?) भी कुज्ञान होता है। अर्थात् ध्यान न देनेवाले स्वइच्छाचारी (?)के मिथ्याज्ञान होता है।' आजकलके विद्वानोंमें शायद ही मुंशीजी सरीखे सुन्दर अर्थको कहनेवाले प्राप्त होंगे। धन्य है, आपकी रचनालीलाको। क्या आप इसी विलक्षण बुद्धिके द्वारा एकबार जैनग्रन्थोंकी असंभव बातोंका शोधन करनेकी डींग मारनेको चले थे? महात्मन्! उक्त सूत्रका अर्थ जैसा आप फरमाते हैं, वैसा नहीं है। इसका पहिले "**मतिश्रुतावधयो विपर्ययश्च**" सूत्रके साथ सम्बन्ध है। सो उसमें भी आपने भूल खाई है। पहिले सूत्रका अर्थ यह है कि, "मति श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञानविपर्यय अर्थात् उलटे भी होते हैं। वे किस प्रकार उलटे होते हैं, इसको स्पष्ट करनेके लिये उक्त सूत्र कह गया है कि, "सत् और असत् की अविशेषतासे और यदृच्छाकी उपलब्धिसे अर्थात् अपनी इच्छामें जैसा आया, वैसे ग्रहण करनेसे उन्मत्त पुरुषकी नाईं विपर्यय ज्ञान होता है। जैसे,—नशेसे मतवाला पुरुष कभी तो माताको स्त्री कहता है, स्त्रीको माता कहता है, पुत्रको पिता कहता है, पिताको पुत्र कहता है। और कभी माताको माता, स्त्रीको स्त्री आदि भी कहता है, परन्तु

उसका माताको माता और स्त्रीको स्त्री कहना भी अप्रमाण और विपर्यय है। इसी प्रकार मिथ्यादृष्टिके मति श्रुत और अवधिज्ञान यद्यपि पदार्थको जानते हैं, परन्तु वे सब विपर्यय अर्थात् कुमति, कुश्रुत, और विभंगावधि संज्ञक हैं। और दूर जानेकी क्या आवश्यकता है, आपने जो यह वचनिका की है, उसमें ऐसा नहीं हैं कि, सम्पूर्ण अर्थ विपर्ययही होगा, नहीं! दो चार दश सूत्र यथार्थ भी लिखे गये होंगे। परन्तु हमारी समझमें वे सब विपर्यय हैं, और इस लिये आपकी वचनिका सर्वथा अप्रमाण और हेय है।

५ "जरायुजाण्डजपोताना गर्भः" "देव नारकाणामुपपादः" और "शेषाणां सम्मूर्च्छनम्" इन तीन सूत्रोंका अर्थ इस प्रकार किया गया है;—

"जरायुज अण्डज पोतज यह तीन प्रकार गर्भज योनि है।" "देवनारकीनकी उपपाद योनि है।" "शेष स्वेदज उद्भिजको सन्मूर्च्छन कहते हैं।" आचार्य गर्भके और जन्मके प्रकार बतला रहे हैं, आप उनका अर्थ योनि कर रहे हैं। वाह! "कहें खेतकी सुनें खरियानकी"। पोत शब्दको आपने पोतज लिखकर और भी विलक्षणता दिखाई है। ऐसे सरल सूत्रोंके अर्थोंमें ही जब इस प्रकार अन्धेर है, तब गंभीर और विस्तृताशय सूत्रोंमें क्या होगा, पाठक इसका अनुमान स्वयं कर सक्ते हैं। तीनों सूत्रोंका क्रमसे इस प्रकार सीधा अर्थ था। "जरायुज अण्डज और पोत तीन प्रकारका गर्भ जन्म होता है।" "देव और नारकियोंका उपपाद जन्म होता है।" और "शेष अर्थात् जिनका गर्भ तथा उपपाद जन्म नहीं हैं, उनका सम्मूर्च्छन जन्म होता है।"

६ "रत्नशर्करा वालुका........आदि" सूत्रके अर्थमें. "रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, वालुकाप्रभा" आदि जो नरककी पृथिवियोंके नाम हैं, उन्हें आपने नरकोंके नाम बतलाये हैं। धन्य है! क्या नवीन वचनिकाके समान नवीन नरकोंकी भी रचना करनेकी आवश्यकता हुई है?

"अणवःस्कन्धाश्च" इस सूत्रका सामान्य अर्थ यों है कि "अणु और स्कन्ध दो प्रकारके पुद्गल हैं"। परन्तु अर्थ इस प्रकार किया गया है कि "अणुसे स्कन्धरूप होना स्कन्धसे अणुरूप होना यह पुद्गलकी पर्याय है।" इसके आगेका सूत्र "भेदादणुः" है। जिसका अर्थ होता है कि "पुद्गलके दो भेदोंमें से जो अणु है, वह भेद (विभाग) से ही उत्पन्न होता है।" परन्तु इसका अर्थ आपने यों गाया है कि "भेद संघात सदा होता ही रहता है अर्थात् यह नहीं कि जो भेद हो गया सो संघात न होवे अथवा संघात हो गया हो सो भेद न होवे इस अपेक्षा सदा पलटना जानो।" देखिये! कैसे महोपदेशक हैं!

९ आचार्य भगवान्‌ने गुणका लक्षण करनेके लिये "द्रव्याश्रया निर्गुणा गुणाः" सूत्र कहा है। इसका अर्थ यह है कि, "जो द्रव्यके आश्रय रहते हैं, द्रव्यके आश्रय विना नहीं ठहर सक्ते और जो स्वयं निर्गुण (गुणरहित) हैं, उन्हें गुण कहते हैं।" इसका अर्थ पृष्ट २४ में इस प्रकार किया गया है कि, "द्रव्यके आश्र (?) गुण हैं गुणके आश्रय न द्रव्य हैं न अन्य गुण हैं।" खेद है कि, आज कोई भोजसरीखे गुण-

ग्राही राजा नहीं रहे, नहीं तो गुणका ऐसा अभूतपूर्व विलक्षण लक्षण करनेवाले विद्वान् क्या कुछ पुरस्कार पाये विना ही रह जाते?

विचारशील पाठको! इस प्रकार कहां तक लिखा जावे, उक्त ग्रन्थका ग्रन्थ ही अनर्थका पिटारा बन गया है। अब आप साच सक्ते हैं, ऐसे ग्रन्थोंसे जैनसमाजका कितना बड़ा अपकार हो रहा है। क्या हम लोग उसे आंख बन्द किये हुए देखते रहेंगे! कभी नहीं। हम लोगोंका कर्तव्य हैं कि ऐसे ग्रन्थोंके प्रचारको रोकें ओर ऐसे महात्माओंकी बुद्धिके परदेको हटावें।

मुंशीजी आजके इस लेखसे अतिशय कुपित होंगे, इसमें सन्देह नहीं है। परन्तु क्या किया जावे, कर्तव्यके अनुरोधसे उनसे भी प्रार्थना करनी पड़ती है कि महात्मन्! अब आप उक्त वचनिकाका प्रचार करके पापका बंध न बढ़ावें और अपनी भूलको स्वीकार करें; तथा आगामी जैनधर्मपर इतनी कृपा रक्खें, कि उसके मुख्य अंगस्वरूप ग्रन्थोंकी वसूला लेकर इस प्रकार छीलछाल न करें। आजकल जैनधर्म वैसे ही जर्जर हो रहा है। मरे हुएको मारना दयावानोंका कार्य नहीं है।

समालोचना।

मालवा प्रान्तिकसभाकी प्रथम वार्षिक विज्ञप्ति—देखनेसे मालूम होता है कि, कार्यकर्ताओंमें उत्साह अच्छा है। नियमावली भी अच्छी है। कार्याध्यक्षोंमें धनाढ्य महाशयोंकी संख्या अधिक है। अतः हमको सन्देह है कि, श्रीमन्त कार्याध्यक्ष कार्य करनेकी शैलीके जानकार हैं या नहीं, और सभासे उनका वास्तविक प्रेम है या दिखावटी। यदि कार्याध्यक्षोंमें सभासे वास्तविक प्रेम है, तथा वे कार्य करनेकी शैलीके ज्ञाता हैं, तो आशा है कि, सभाका कार्य अच्छी तरहसे चलेगा। कार्याध्यक्षोंसे हमारी एक प्रार्थना है कि, वे अपने प्रान्तमें संस्कृतविद्याका शीघ्र ही प्रचार करें। क्योंकि मालवा प्रान्तभरमें शायद ही कोई ऐसा जैनविद्वान् होगा, जो जैनसिद्धान्तोंके गूढ रहस्योंका ज्ञाता हो। जब तक संस्कृतविद्याका प्रचार नहीं किया जावेगा, तब तक मालवेका भ्रमान्धकार दूर नहीं हो सक्ता। रिपोर्ट लेखकने रिपोर्टके अन्तके चतुर्थ प्रस्तावमें अपनी विद्वत्ताका जो परिचय दिया है, उससे हमको दुःख हुआ है। आप लिखते हैं;—"निर्मायल द्रव्य (मन्दिरों व तीर्थक्षेत्रों) का प्रबन्ध बराबर रक्खे जाने और उसका हिसाब दरसाल कार्तिक वदी ३० को सब पंचोको सुनानेका नियम चल्लू किया जाय इसके विना जातिका लक्षावधि द्रव्य व्यर्थ जाता है।"

प्रथम तो निर्मायल शब्द ही अशुद्ध है, किसी भी व्याकरणसे सिद्ध नहीं है। शुद्ध शब्द निर्माल्य है। दूसरे निर्माल्यद्रव्य उसको कहते हैं, जो मंत्रोच्चारणपूर्वक भगवत्के आगे अर्पण किया जाता है। इस निर्माल्य द्रव्यको ग्रहण करने तथा मंदिरके उपकरणादिकमें व्यय करनेका निषेध है। सभासदोंका इससे शायद पंचायती तथा देवद्रव्यका अभिप्राय होगा, परन्तु रिपोर्ट लेखक महात्माने उसको निर्माल्यमें घसीट डाला है। आशा है कि, अब रिपोर्टलेखक महाशय निर्माल्य शब्दका अपना किया हुआ अर्थ छोड़कर शास्त्रसम्मत अर्थको ग्रहण करेंगे।

समाचार।

स्वदेश-वस्तु-प्रचारका आन्दोलन खूब बढ रहा है। लोगोंमें अपने देशकी बनी हुई वस्तुओंका प्रेम भी बढ रहा है। इससे बड़े २ शहरोंम अनेक दूकानें ऐसी स्थापित हुई हैं, जिनमें सब प्रकारकी देशीय वस्तुएं सुभीतेसे मिल सक्ती हैं। कपडा, दियासलाई, मोमबत्ती, साबुन, कागज, चाकू, कैंची आदि सामान बहुत सुंदर और टिकाऊ मिलने लगे हैं।

भारतमें प्रतिवर्ष एक अरब सैंतीस करोड़ रुपयाका माल विलायतसे आता है!

गत ९ नवम्बरको श्रीमान युवराज और श्रीमती युवराज्ञीका बम्बईमें शुभागमन हुआ। और ६ दिन रहकर ता० १४ की रात्रिको कूच हो गया। अब यहांसे आगे रतलाम, इन्दौर, जयपुर बीकानेर आदि भाग्यशाली स्थानोंमें भाग्यशाली युवराजका पर्यटन होगा।

---

१८ नवम्बरको भारतके बड़े लाट कर्जन बहादुर हिन्दुस्थानसे रवाना हो गये। उनके स्थानपर लार्डमिंटो बड़े लाट होकर हिन्दुस्थानमें आये हैं।

देशी कागज बहुत अच्छा तयार होने लगा है। अब देशके प्रायः सम्पूर्ण बड़े २ समाचारपत्र देशी कागजमें ही छपने लगे हैं। ३-४ अंकोंसे जैनमित्र भी देशीकागजपर छपता है। यह कागज विलायती कागजकी अपेक्षा अच्छा है और सस्ता भी पड़ा है।

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। मार्गशीर्ष शुक्ला १ श्रीवीर सं० २४३२। तृतीय अंक।

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

भेजनेका पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापुर.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक =) पंक्ति।
६ ,, ,, –)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, –) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१ सालै तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगें जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

जैनमित्रके देरीसे निकलनेका कारण

१ जैनमित्रका आफिस मोरेनासे सोलापुरको आना.

२ मासिकसे पाक्षिकका होना.

३ क्लार्कका छुट्टीपर जाना.

४ क्लार्कके लड़केका स्वास्थय बिगड़जानेसे छुट्टीकी अवधिका बढ़ाना.

५ वी. पी. सर्व ग्राहकोंको भेजना और उनके वापिस आने तक हिसाबका तय्यार न होना.

६ सालकी आखिरी होनेसे रजिष्टर तथा एड्रेस वगैरहोंका तय्यार न हो सकना.

इन उपर्युक्त कारणोंसे जैनमित्रके अंक १ वा २ के निकलनेमें देरी हुई भविष्यतमें उसकी पूर्तिकर समयानुकूल सेवामें भेजा जायगा. ग्राहकगण क्षमा करें

मेनेजर।

शोक-प्रकाश.

प्रियपाठकगण जैनसमाजमें एसे २ सज्जनोंका अभाव हो रहा है कि, जिनके वियोगसे जैनसमाज अतिही दुःखित है कारण उसका यह है कि, भविष्यतमें एसे सज्जन जन्म नहीं लेते. एक तो प्रसिद्ध चिलकानावाले रहीस **लाला मँगलसेनजी** हैं. आप सदैव धर्मकार्योंमें अधिक लक्ष्य देते थे आपके वियोगसे उत्तर प्रान्त अधिक दुःखित है. द्वितीय वर्धा निवासी रा. रा. **बकाराम पैकाजी** हैं आपके वियोगसे दक्षिण प्रान्त शोकित है. आपभी एक सज्जन धर्मात्मा थे. हम उनके कुटम्बके साथ सहानुभूति प्रगट करते हैं, और आशा करते हैं कि, आप लोग शोकत्याग करेंगे.

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एनज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

वर्ष ७.] मार्गशीर्ष शुक्ल, श्रीवीर संवत् २४३२ [अंक ३.

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

देशमें भिन्न २ धर्मके सैकडों पुस्तकालय हैं, और दिनपर दिन नये २ स्थापित होते जाते हैं । परन्तु बड़े दुःखकी बात है कि, जैनधर्म जो ग्रन्थोंकी संख्यामें अपनी शानी नहीं रखता और जिसके सहस्रावधि ग्रन्थ यहां से ले जाकर जर्मन आदि देशोंके विद्वान, नानालाभ उठाते हैं, उसी जैनधर्मका सारे भारतवर्षमें एकभी ऐसा पुस्तकालय नहीं है, जिसमें प्राप्य ग्रन्थभी प्राप्त हो सकें, अलभ्य ग्रन्थोंका शोध करके एकत्र करना तो बहुत बडी बात है. जो जैनजाति व्यापारमें सबसे श्रेष्ठ और धनिक गिनी जाती है, उसमें क्या कोई एकभी माईका लाल नहीं है? जो इस बड़ी भारी त्रुटिको पूर्ण कर सके ।

यूरोपमें अनेक पुस्तकालय ऐसे हैं जिनमें पृथ्वीकी सम्पूर्ण भाषाओंकी पुस्तकें संग्रह की जाती है । पुस्तकालयके अध्यक्षोंको मालूम हुआ कि, अमुक पुस्तक अमुक स्थानमें मुद्रित हुई है कि, उसी समय उसको वी. पी. से मंगानेका आर्डर लिखा जाता है । भारत वर्षमें जिन २ पुस्तकोंकी रजिष्ट्री होती है, उनकी फेहिरिस्त उक्त पुस्तकालयवाले मंगा लेते हैं. और उसके द्वारा सबको मंगाकर संगृहीत कर लेते हैं । पाठक! इसेही सच्ची विद्याभिलाषा और विद्या-सेवा कहते हैं ।

आजतक पृथ्वीके पुरातत्वोंको जो कुछ ज्ञान हुआ है, उसके मूलकारण ये पुस्तकालयही हैं, जिस विद्वानको किसी विषयके शोधकी आवश्यकता हुई कि, वह पुस्तकालयके शरणमें गया वहां उसकी सब मनः

कामनायें सिद्ध हो गई। ऐसा कल्पवृक्षतुल्य पुस्तकालय हमारे जैनसमाजमें न होनेसे हम लोगोंकी कितनी दरिद्रता प्रगट होती है?

ईडर, कोल्हापुर, जैसलमेर, मूडबिद्री आदि स्थानोंके जितने प्राचीन पुस्तकालय हैं, वे सब हमारे उन भट्टारक आचार्योंके स्थापित किये हुए हैं। जिनके पास नाममात्रको परिग्रह नहीं था। आज हम लोग उन्हींके अनुयायी ऐसे उत्पन्न हुए हैं कि, लक्षापति करोड़पति होकरभी उनके समान पुरुषार्थको नहीं कर सक्ते! ओह! जिस कार्यको बनबिहारी भिक्षाजीवीपुरुष करसक्ते थे, आज उसके करनेकी शक्ति उच्च अट्टालिकाओंमें रहनेवाले और लक्षावधि द्रव्यके स्वामीभी नहीं कर सक्ते हैं!

अपने समाजकी निर्बलताको हम कहांतक कहें। नवीन सरस्वती भंडार स्थापित करना और उसमें लक्षावधि ग्रन्थ एकत्र करना तो एक बड़ा कार्य है, परन्तु इतनाभी नहीं हो सक्ता कि, भारत वर्षके जिन २ स्थानोंमें जैनग्रन्थ हैं, उन स्थानोंमें जाकर एक सुबृहत सूचीपत्रभी तो तयार कर लेवें। ताकि, हम लोग ग्रन्थोंके नामही देखकर अपने आत्माको कुछ संतोष पहुंचा सकें।

पाठकोंको विदित है कि, अबकी बार बड़े दिनोंको छुट्टियोंमें महासभाका अधिवेशन सहारनपुरमें होनेवाला है। इस अधिवेशनमेंभी प्रतिवर्षकी नाईं नवीन २ प्रस्ताव उपस्थित किये जावेंगे और तत्रस्थ सभ्योंकी सम्मतिसे तालियोंकी ध्वनिके साथ स्वीकृत हो जावेंगे। पश्चात् वे प्रस्ताव कार्यमें परिणत होते हैं, अथवा रिपोर्टके पत्रों परही लिखे रहते, हैं, इसका विचार करनेका हमको वर्ष भरमें कभी अवकाश नहीं मिलेगा। यह सदाका क्रम है। ऐसी दशामें जो लोग कहा करते हैं कि, बारह वर्ष वीत चुके, परन्तु अब तक कोई एकभी कार्य ऐसा नहीं हुआ, जो वर्णनीय होता, यह उनकी भूल है। उन्हें सोचना चाहिये कि, रिपोर्ट अथवा समाचार पत्रोंके पन्ने कुछ कार्य नहीं करते। कार्य मनुष्यही करते हैं। इस लिये हमको केवल प्रस्ताव पास करकेही नहीं बैठना चाहिये। कुछ करकेभी दिखाना चाहिये।

महासभाको क्या २ कार्य करना चाहिये इसकी तो गणना नहीं हो सक्ती। हजारों कार्य करनेको पड़े हैं। परन्तु वर्तमानमें हम सबसे मुख्य कार्य तीन चारही समझते हैं। एक तो किसी बड़े शहरमें एक सुबृहत सरस्वती भंडार स्थापित करना। दूसरे उच्च श्रेणीकी संस्कृत और अंग्रेजी शिक्षाके लिये एक बम्बई सरीखा बृहत् बोर्डिंग बनाना। तीसरे उपदेशकोंकी वृद्धि करना। और चौथे तीर्थक्षेत्रोंका सुप्रबंध करना। ये चारों कार्य ऐसे हैं कि, इनके हो जानेसे अन्य सम्पूर्ण कार्योंकी जड़ बंध जावेगी।

महासभाको स्थापित हुए, १२ वर्ष अर्थात् एक युगबीत गया। प्रारंभसेही वह इन चारों कार्योंको करना चाहती है, और थोडा बहुत करतीभी है, परन्तु क्या कारण है कि, किसीभी कार्यमें उसे अच्छी सफलता प्राप्त नहीं हुई? और देशमें उसका जैसा प्रभाव होना चाहिये, नहीं हुआ? जहां तक हम सोचते हैं, इसके दो कारण हैं एक तो उसके कार्यकर्ताओंमें एक दो के अतिरिक्त सच्चे उत्साही और परिश्रमी पुरुषोंका अभाव है, दूसरे अर्थकी न्यूनतासे उसका कोई मुख्य कार्यालय ऐसा नहीं है, जिसमें दो चार ऐसे सवैतनिक योग्य कार्यकर्ता हों, जो सभासम्बधी आन्दोलन निरन्तर किया करें। ऐसी दशामें उसके आनरेरी मंत्रियोंसे अपनी जीविका आदिके अतिरिक्त जो कुछ समय मिलता हैं, उसमें यथाशक्ति कागजी घोड़े दौड़ाया करते हैं। और हमको उसीमें संतोष करना पड़ता है। इस लिये यदि हम महासभाके द्वारा उक्त गतयुगकी अपेक्षा कुछ अधिक लाभ उठाना चाहते हैं, तो हमको चाहिये कि, पहिले महासभाकी जड़को पक्की करें। यदि महासभाके मुख्य कार्यालयकी आर्थिक दशा अच्छी हो जावेगी, तो उसके द्वारा ऊपर कहे हुए चारों कार्य शनैः २ स्वयं सिद्ध हो जावेंगे। अन्यथा "अमूलस्य कुतः शाखा"

हमारे समाजमें ऐसे अनेक निवृति—भोगी (पेन्शन याफ्ता) महाशय हैं, जो अपने जीवनके शेष दिन सुखपूर्वक बिता रहे हैं। उन्हें आजीविकादि सम्बधी कार्योंकी कोई चिन्ता नहीं है। यदि इन सज्जनोंका चित्त महासभाकी और अनुरक्त हो जावे और वे अपना शान्त जीवन इस धर्मोद्धारक कार्यमें अर्पण कर देवें, तो हमारा अभीष्ट शीघ्रही सिद्ध हो सक्ता हैं। जो परलोकको नहीं मानते ऐसे जड़वादी पाश्चात्य देशोंमें निवृत्ति भोगियोंके अतिरिक्त हजारों युवा पुरुषभी ऐसे हैं, जो अपने समान और धर्मके लिये अपना जीवन दे चुके हैं। यदि हम लोगोंमें जो परम आस्तिक और आत्मवादी हैं, ऐसे स्वार्थत्यागी निवृति—भोगीभी नहीं निकलें, तो कहना पड़ेगा कि, सच्चे स्वार्थी और जड़वादी हमही हैं, पाश्चात्य लोग नहीं।

प्यारे भाइयो! सोचो, तुम उन्हींकी संतान हो, जो क्षण भरमें चक्रवर्तीकी विभूति पर खाक डाल देते थे, तुम उन्हीं भट्टाकलंक देव और निकलंक देवके अनुयायी हो, जिन्होंने धर्म—सेवाके सम्मुख अपने जीवनको अत्यन्त क्षुद्र समझा था, और तुम्हीं उन्हींके भक्त हो, जो संसारको उपदेश देते थे—

"संसारे मानुष्यं सारं मानुष्यके च कौलीन्यम्।
कौलीन्ये सदयत्वं सदयत्वे चापि धर्म्मित्वं॥"

अतएव थोड़े समयके लिये सांसारिक सम्पूर्ण विलास वासनाओंको छोड़के जातिधर्मकी सेवा करनेको तत्पर हो जाओ। स्वार्थको छोड़ दो, आलस्यको छोड़ दो, ईर्षा--द्वेषको छोड़ दो और तन मन धनसे समाजकी सेवा करके उसे उन्नतिके शिखरपर पहुंचा दो।

समयके फेरसे जिस भारतवर्षकी कारीगरी संसारमें सर्वोत्कृष्ट समझी जाती थी, और जिसे विदेशी लोग ले जाकर अपने देशके लोगोंकी आवश्यकताओंको पूरी करते थे उसी भारतकी आज यह दशा हैं, कि, नगरसे लेकर छोटे २ गावोंमें अमीरसे लेकर गरीबके घरोंमें विदेशी वस्तुएं विद्यमान हैं । और देशकी बनी हुई चीजोंके दर्शनभी दुर्लभ हो गये हैं । इन विदेशी चीजोंके सस्तेपन और सौन्दर्यपर हम लोग इतने लुब्ध हो गये हैं कि, अपने पड़ोसमें रहनेवाले देशी लुहार, बढ़ई, कोली आदि कारीगरोंके लड़के बच्चोंको भूखे मरते देखकरभी कभी यह नहीं सोचते कि, इनके भूखे रहनेके कारण ये विदेशी पदार्थ और उनके खरीदनेवाले हमही लोग हैं । क्या हमको इन गरीबोंके साथमें दयावान होकर ऐसी निष्ठुरताका कार्य करना चाहिये ? कभी नहीं. हमको चाहिये कि, इन विदेशी हिंसक पदार्थोंको अपने घरमें न आने दें और अपने देशकी वस्तुओंको वर्तावमें लावें ।

मांस-मछलीके खानेवाले बंगालियोंकोभी देशके भिखमंगोको देखकर दया उत्पन्न हुई है अतः उन्होंने प्रतिज्ञा की है कि, हम लोग विदेशी वस्तुको चाहे वह मुफ्तमेंभी मिलै छुएंगेभी नहीं । उनकी सौभाग्यवती स्त्रियोंने अपने कोमल हाथोंकी मनोहर विदेशी चूड़ियां तोड़के फैंकदी हैं, और उनके बालकोंने स्वदेशी वस्तु प्रचारके आन्दोलनमें मत्त होकर कालेजोंका पढ़नाभी छोड़ दिया हैं हम समझते हैं कि, दयार्धमेक पालनेवाले जैनियोंको इसका आन्दोलन सबसे अधिक करना चाहिये

भारत वर्ष जिस समय उन्नातिके शिखरपर आरूढ़ था, उस समय यूरोपादि देशोंके निवासी जानवरोंके चमड़े और वृक्षोंकी छालसे अपने शरीरको ढंकते थे ! उस समय हमारे यहांके व्यापारियोंनेही उन्हें कपड़ा पहिरना सिखलाया था । भारतके व्यापारी विदेशसे इन वस्तुओंके बदलेमें कोट्यावधि रुपया लाकर अपने देशको कुबेर बनाते थे । परन्तु अब वे सब बातें उलटी होगई हैं । अब यहांके लोग विदेशी वस्तुओंसे अपनी आवश्यकताए पूरी करते हैं, और उनके बदलेमें अरबों रुपया विदेशको भेजते हैं ।

मि० **टेरी** नामक ग्रन्थकारने भारतवर्षकी तत्कालीन स्थितिके विषयमें लिखा हैं कि, जिस प्रकार सब नदियां समुद्रमें गिरती हैं, वैसेही अनेक चांदीकी नदियां इस राज्यमें आकर विश्राम करती हैं । अन्यान्य देशोंके लोग सोना चांदी लेकर यहां आते हैं, और यहांसे व्यापारकी वस्तुए ले जाते हैं हम लोगोंको अपने देशकी प्राचीन और अर्वाचीन स्थितिका मिलान करना चाहिये ।

सोलापुरमें दो जुड़ी हुई लड़कियां आई थी जो कि, अलग २ खाती, पीती, बोलती थीं परन्तु उनका दस्त तथा पेशाबका स्थान एक था.

कर्णाटकमें जैनियोंका निवास।

(लेखक-बाबू जैनेंद्र किशोरजी रहीस-आरा)

(गतांकसे आगे)

राट्टे कोंगानी राजाओंके पूर्वाधिकारी थे। और उनके गुरु जैन थे। कलाचार्य महाराजोंका राज्य ईसा पश्चात ११९० ई० और ११८० ई० के मध्यमें था * किन्तु मैसूरके जैनराजोंमें अति प्रसिद्ध विल्लाला राजे थे जो पहिले द्वारासमुद्रमें राज करते थे और पीछे श्रृंगापटामके वारहमील उत्तर तोन्नूर(Tonnur) केशासक हुए। इनका आधिपत्य पूर्ण कर्णाटकमें था अर्थात् जहां २ कनाडी भाषा बोली जाती थी उन्हीं प्रदेशोंके यह शासनकर्ता थे। इस वंशके अविष्कारक चावुन्दराय (Chavunda Raya) थे जिनका राज्य स. ७१४ ई० में था। क्रमश: एकके बाद दुसरे नव विल्लाला राजे होते गये किन्तु यह संख्या संशयप्रद है क्योंकि, हिन्दू कथकड़ोंको यही संख्या अति प्रिय है। मगधमें नन्दोंकी संख्या नव (नवानन्द) है और यहभी कहा जाता है कि, नव नायक (छोटे सरदार) विजयानगरके शासनकर्ता विघ्न कालमें नव मासतक होते गये। रामानुजाचार्यके समयमें बिट्टीदेव (Bitti Deva) स. १११७ ई. में उसका शिष्य हुआ। इसने जैनमंदिरोंका विध्वंस किया और उनके स्थानमें वैष्णव सम्प्रदायके पूजनालय बनाये। वही विष्णु वर्द्धन कहलाया। इसके धर्मपरिवर्तनकी कथा भिन्न रूपसे कही जाती है। बौद्धोंके प्रबल प्रवाहको रोकने, सनातन धर्मपर जैनियोंके अनाधिकारको हटाने और हिन्दूधर्मको पूर्व्वावस्थामें स्थापित करनेके लिये दक्षिणभारतमें दोबड़ेभारी धर्म उद्धारक खड़े हुए। इन दोनोंमें प्राचीन शङ्कराचार्य हुआ। इसकी जन्मभूमि मैसूरके पश्चिम घाटों (Ghats) के पास श्रृंगगिरी (Sringa-giri) में थी और यहां उसने एक विद्यालय (मठम्) बनाया था जो सर्वथा उसकी अविष्कृत जातिमें पूज्य समझा जाता था। उसकी जन्मतिथि अनिश्चित है। ईसाके पश्चात८०० वर्षमें उसका आगमन मलाबारमें कहा जाता है और यहभी कहा जाता है कि, श्रृंगगिरी विद्यालयमें शङ्कराचार्यके इग्यारवें उत्तराधिकारीने विजयान-

* मैसूरका शासक राजा चिकदेवराजा (Raja Chickdeva Raja) शिवाजीका समकालिक था (१६७२–१७०४) उसका एक उपदेष्टा विषलक्ष (Visha Laksha) जैनपंडित था जिसने भविष्य भाषण किया कि "आप कभी राजा होजायेंगे" और उसने अपनी चतुराईसे अपने भविष्यकथनकी सफलता प्राप्त की। राजाको इसपर बड़ा विश्वास था और लोगोंको निश्चय था कि राजा गुप्त रीतिसे जैनधर्मसे सम्बन्ध रखता है। विषलक्षने अपनेको राजाके आगे एक ईमानदार काम करनेवाला प्रमाणित कर दिया था और इसकी गणना उन्ही जैनियोंमें होसकती है जिन्होंने अपनी उन्नति हिन्दू राजोंके दर्बारमें की थी। विल्कसके (History of Mysore Vol 1 Appendix No. 5) नामक ग्रन्थमें लिखा है कि कभी कांजीवेराम (Congeveram) के पास जैनराजोंका पुरातन वंश था जिन्हें टुण्डमण्डलम् (Tondamandalam) की उपाधि प्राप्त थी।

गरके पहिले राजा हरिहरको क्षेत्रप्रदान किया (१३३६ ई. प.) अतएव हम लोग शङ्कराचार्यका काल निरूपण अष्टम शताब्दिके मध्यमें करते हैं। अट्ठारह पुराण तथा षट्शास्त्रोंके अनुयायी हिन्दुओंमें जो नास्तिकों की एक्कीस जातियां कही गयी हैं और जिन्हें वे अनिश्चित ठहराते हैं उनमेंसे दो जैन तथा बौद्धधर्मी हैं। शङ्कराचार्यने केवल जैनियोंको छोड़ दिया और बौद्धोंपर हाथ साफ किया। जैनियोंने हिन्दुओंके कई सर्व्वप्रिय सिद्धान्तोंको मानलिया जैसे गऊ तथा बैलका आदर करना, जातिविभागको स्वीकार किया और उनके कई सर्व्वप्रिय देवताओंकोभी अपने पूजनमें सम्मिलित किया अत: शङ्कराचार्यने इन्हें छोड़ दिया नहीं तो येभी बौद्धोंके सदृश आज दिन भारतवर्षसे लुप्त होगये होते।

रामानुजाचार्यने एक ग्रन्थ गुरूपारा (Guru-para) नामक शालिवाहन सम्वत ९३९ (अर्थात १०१७ ई०) में रचा है जिससे ज्ञात होता है कि, उनका जन्म मद्रासके निकट श्रीपरमातुर (Shri Parumatur) में हुआ था। इनका सम्वत् उनके समकालीन विष्णुवर्द्धनके शिलालेखसे मिलानेके लिये (शालि. १०३९; १०४९; १०५०) अर्थात् ईसापश्चात ११७ से ११२८ तक, हमलोग उनके जन्मकी तिथि तबतक कुछ पीछेकी बता सकते हैं जबतक कि, हमलोग यह नहीं मानलें कि, ये लोग चिरकालतक जीवित रहे। तानजोर (Tangore) के चोला राजा (Chola Raja) का उपद्रव असह्य होनेके कारण रामानुज द्वारासमुद्रमें विष्णुवर्द्धनके दर्बारमें भागकर चला गया निःसन्देह यह धर्मसंशोधक परम उद्योगी तथा पराक्रमी था। एवम् एक सुयोग्य व्याख्यानदाता तथा तार्किक अथवा वादाविवाद करनेवाला था। * ब्राह्मणोंके वृत्तान्तसे विदित होता है कि, राजाकी पुत्रीको भूत लगा था; वह उसे तमाम जैनियोंके मन्दिरमें इस अभिप्रायसे लेगया कि, जैनसाधु उसका कोई यथोचित उपचार करेंगे किन्तु उनमेंसे कोईभी भूत उतारनेमें समर्थ नहीं हुए। ओझाओंकेभी दांत खट्टे होगये। रामानुजाचार्यने उस बालिकापर पवित्र जल और तुलसीका रस (Basil, Ocymum sanctum) छिड़क दिया और वह चंगी होगयी अनन्तर विष्णुवर्द्धन विष्णुका सेवक (पूजक) होगया। डाक्टर बुचाननसे जैनियोंने राजाके मत परिवर्तनका कारण इस प्रकार कहा:—

"राजा एक नृत्यकारिणीपर आशक्त होगया था जिसकी शिक्षा श्रीवैष्णव धर्मानुसार हुईथी। इस धूर्त रमणीने राजासे परिहांसपूर्वक कहा कि-'तुह्मारे गुरु तुह्मारे हाथोंसे दान नहीं स्वीकार करेंगे' क्योंकि, उसके हाथोंमें एक उंगली नहीं है—इधर उस धूर्ताने राजाको उलटी पट्टी पढ़ादी उधर जैनसाधु-

* नागमंगलाके पास डाक्टर बुचाननके बालीस घराने ऐसे मिले थे जो पहले जैनी थे पीछे रामानुजाचार्यने उन्हे अपना चेला किया था। वहां एक कथा कही जाती है कि उपदेशकने जैनियोंको पराजय किया था और जैन लोगोंने जैनधर्म नहीं छोड़ा उन्हे कोल्हूमे पिरवा दिया था।

ओंमें मुखिया जनोंसे भेंट लेनेकी प्रथा नहीं थी। राजा अपनी प्रेयसीकी बातोंसे तावमें आगया और उसको झूठा ठहरानेके लिये परीक्षापर उतारू हुआ। उसने अपने गुरू या आचार्यको बुलाकर भेंट दी जिसे प्रथाविरुद्ध होनेके कारण गुरूने अस्वीकार किया। चलिये धूर्तोने पौवारहका पासा मारा। राजा क्रोधमें भूत होगया और उसीदम उसने जैनसद्धांतका तिरस्कार किया और वैष्णवधर्मको अंगीकार किया। उसने अपनी राजधानी बीलूर (Beilur) में हटादी और वहां एक विष्णुका मन्दिर बनाया या जिर्णोद्धार किया (११०७ वर्ष ईसापश्चात) मत परिवर्तन पश्चातभी राजाके प्रधान सर्दार जैनी ही रहे और अद्यावधि दान तथा अर्पण वासदियों (मन्दिरों) में होते रहे। बीलूर (Beilur) के उत्तर सिन्धगिरि (Sindhigere) में एक शिलालेख विष्णुवर्द्धनके राजकाल सं. ११३८ का है जिससे विदित होता है कि, दो भाई मारियानि (Maryane) और भारातन (Bharatana) थे। इनके पूर्वजोंका विवाह विल्लाला राज्यवंशकी पुत्रियोंसे हुआ था और उन्हें दहेजमें सिन्धगिरि मिली थी। वही पैत्रिक सम्पत्ति उन दोनों भाइयोंको मिली। उन्होंने पांचसै मोहर (सुवर्ण सिक्का) देवके चरणोंपर चढ़ाकर सिन्धगिरिमें एक जैन मन्दिर बनाया। आगे यहभी लिखा है कि, विष्णुवर्द्धनने उस मन्दिरमें अर्पणस्वरूप अन्य दानोंके साथ वहांके पुजारीको कोई जमीन अपने हाथोंसे अर्पण की थी। यह संभव है कि, वृद्धावस्थामें राजाने पुनः अपने पूर्व्वधर्म (जैन) को ग्रहणकरलिया हो। मारियानि और भारातनको धन्दनायक (Dhandunayaka) (प्रधान सेनापति - Commander-in-chief) की उपाधि थी और वे कोषाध्यक्ष, न्यायकर्ता और राजाके प्रधानमंत्री (उपदेष्टा) कहे जाते हैं। विल्लालाके राजे जिनालय या जैनमन्दिरोंके उदार दाता थे। जब विष्णुवर्द्धनने अपना धर्म परिवर्तन करदिया तब कनेडाके राजे धर्मत्यागीकी अधीनता छोड़कर स्वतंत्र हो गये। अनन्तर विल्लालावंशका पराभव मोहम्मद सरतल्ला (मलिकशाह) अल्लाह उद्दीन *खिलजीके सेनापति द्वारा १३०९-१० ईसा पश्चात हुआ प्रसिद्ध मुसलमानी फकीर (साधु) बाबाबोदीन (Baba Bodeen) जो बासवपटन -(Basavapatana) के निकट एक गढ़में रहते थे वह शासनकर्ता राजा वीर विल्लालाके अत्याचारसे बडे दुःखी हुए अतः उन्होंने मुसलमानोंको बुलाया। मुसलमानोंने आकर राजाको कैद कर लिया। उत्तराधिकारी राजाने अपनी राजधानी द्वारा समुद्रसें तोन्नूर (tonnur) में हटा दी। शेषमग्रे.

वर्तमानमें वैरंग पत्रोंकी आय अधिक है इन वैरंग पत्रोंमें टिकटें नदारत रहती हैं. क्या टिकटोंपर निशान न करनेकाही कारण है? सर्कारको इसपर विचार तो अवश्य करना चाहिये।

---

* Mohomde Sartalla (Mullick Saih) a general of Allahud-din Khilji.

महासभाके लिये दूसरा प्रस्ताव।

महासभाके सभासद व मुख्य कर्ता हर्ता कार्याध्यक्ष महाशयगण मेरा प्रथम प्रस्ताव तो "महासभाके **महाविद्यालयको मथुरा, जयपुर, देहली आदि कहींभी न लेजाकर उसका स्थान विद्योन्नतिकी अद्वितीय कारण पंडितजननी काशी नगरीमेंही स्थिर करना चाहिये**" ऐसा था और उसके लिये गतवर्ष अखबारोंमें आन्दोलन करनेके सिवाय महासभाके महामंत्री आदि कार्याध्यक्षोंकी सेवामेंभी यह प्रस्ताव प्रविष्ट किया गया था परन्तु उसका फल "**नगारोंकी आवाजमें तूतीकी कौन सुनता है**" की कहावत चरितार्थ हुई तब अनन्योपाय होकर महासभाके कार्यकर्ताओंको काशी नगरीकी विद्यामहिमाको प्रत्यक्षतया दिखानेके लिये तीन वर्षके लिये काशी नगरीमें एक छोटीसी पाठशाला खोलनेका प्रयत्न करना पड़ा और श्रीमज्जैनधर्मके प्रभावसे वह प्रयत्न सफलभी हुआ अर्थात् काशीमें "**श्रीस्याद्वाद** पाठशाला काशी" नामकी एक पाठशाला खुल गई और उसमें यथायोग्य पढाई होने लगी. १२ विद्यार्थी और तीन चार त्यागी महात्मा वहांपर विद्याध्ययन कर रहे हैं इस कारण अब उक्त प्रस्तावके करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है. दुसरे आजकल हमारे इस प्रस्तावके अनेक धीमान्, प्रभाकर महाशय विरोधीभी हैं उनको प्रखर युक्ति रूपीकिरणोंके सामने मेरा प्रस्ताव कदापि प्रबल नहीं हो सक्ता है। परन्तु इतनी प्रार्थना अवश्य कर देनी उचित है कि, "दोवर्षपर्यन्त फिरभी महाविद्यालयके स्थान परिवर्तनका प्रस्तावस्थगित रक्खें, अगर शीघ्रता करके अयोग्य स्थानमें ले जावैंगे तो फलकालमें पछताना पडेगा!

अब दूसरा प्रस्ताव महासभामें स्वीकृत करने योग्य यह है कि, हमारी जैनसमाजके धनाढ्यगण अबतक अपने पूर्वजोंकी चलाई हुई पुरानी लीकपरही चल रहे हैं. जो कि, पूर्वकालमेंही अत्यन्त लाभदायक थी. इस वर्तमान समयमें भेड़िया धसानकी ज्यों उसी लीकपर चलनेमें नानाप्रकारकी हानियोंके सिवाय किसी प्रकारभी लाभ नहीं है. यद्यपि ऐसी लीकें (कुरीतियें) बहुत हैं कि, जिनको इस समय एकदम उठा देना चाहिये परन्तु उनमेंसे आज मैं एकही पुरानी लीकका (सुरीतिका) उल्लेख करता हूं वह सुरीति यह है कि, २०–२९ हजार रुपये लगाकर एक मंदिर प्रतिष्ठा कराके रथ चलाके **संघई**की पदवी प्राप्त करना. दो प्रतिष्ठा दो रथ चलाकर **सवाई संघई**की पदवी लेना तीन प्रतिष्ठा व तीन रथ चलाकर **सेठ** और चार प्रतिष्ठा कराकर **श्रीमन्तसेठकी** पदवी लेकर अपनेको कृतार्थ मानना.

यद्यपि यह पदवी दानरीति जिस समय हमारे परवार भाइयोंके पूर्वजोंने चलाई थी तो बहुतही उत्तम अभिप्रायसे चलाई थी क्योंकि, उस समय बुंदेलखंड वा मध्यप्रदेशमें धर्मसेवनके स्थान जिनमंदिरोंकी विरलता थी और

उसका फलभी उत्तम हुआ कि, आज उक्त प्रान्तोंके छोटेसे छोटे ग्राममें जिन मंदिरोंकी और संघही सवाईसंघइयोंकी भरमार है। परन्तु अब ऐसे मंदिरप्रतिष्ठा और रथ चलानेकी आवश्यकता नहीं है इस कारण यह प्रस्ताव पेश करता हूं कि, उक्त परवार महाशय चाहे समझें चाहे न समझें परन्तु अब येही पदवियें निम्नलिखित प्रकारसे देनेका प्रस्ताव महासभासे स्वीकृत होना चाहिये।

१ संघही—जो महाशय! भारत वर्षभरमें कहीं परभी जैनधर्मसंबंधी विद्याकी उन्नतिमें, जिनवाणीके जीर्णोद्धार करनेमें कमसे कम २५००० रुपये *तीन वर्षमें खर्च करदें उन धर्मात्माओंको महासभाके वार्षिक अधिवेशनपर **संघही**की पदवी दी जावै।

२ सवाई संघही—और जो जातिहितैषी महाशय पचास हजार रुपये ‡उक्त कार्योंमें लगा देवें उनको **सवाईसंघही**की पदवी दी जावे।

३ सेठ—सेठ तो हमारे देशमें धर्मपरायणता और धनाढ्यताके चिन्हही खाचियों भरे पड़े हैं इस कारण इस पदवीका गौरव कुछ नहीं होगा।

४ श्रीमन्तसेठ—की पदवीकीभी यही गति होगी क्योंकि, आजकल पत्रोंमें हरएकको श्रीयुत, श्रीमान्, श्रीमन्त, लिखने लगे हैं इस कारण इस पदवीकी जगह मेरी समझमें जो धर्मात्मा महाशय! कमसे कम एक लाख रुपये उक्त विद्योन्नतिके कार्योंमें लगादें उनको **जाति धर्मोद्धारक, धर्मोन्नतिकारक, शिरोमणि**" इत्यादि कोईभी एक उत्तम पदवी दी जावे। सभापतिके हाथसे अर्थात् महासभाकी तरफसे तीन प्रकारके शिरोपाव प्रदानपूर्वक उक्त पदवियें दी जाया करें।

महाशय गण यही मेरा **दूसरा प्रस्ताव** है इस प्रस्तावमें संघही, सवाई संघही, वा जातिधर्मोद्धारकादि जो पदवियोंके नाम बताये गये हैं वे किसीके अभीष्ट न होतो न सही इनकी जगह सर्व सम्मतिसे दूसरे नाम कल्पना करलिये जावें इसमें मुझे कोई उजर नहीं है परन्तु धार्मिक, विद्योन्नति, और जिनवाणी जीर्णोद्धार करनेमें कमसे कम २५ हजार रुपये प्रदान करनेवालोंको उक्त प्रकारकी किसीभी पदवीसे भूषित करनेका प्रस्ताव अबके अधिवेशनपर अवश्यही स्वीकृत होना चाहिये जबतक ऐसा प्रस्ताव स्वीकृत नहीं होगा तब तक हमारे मानी धनाढ्य महाशयोंका रुख विद्याकी व धर्मकी उन्नतिकी ओर कदापि नहीं होगा ऐसा मुझे विश्वास है।

आशा है कि, महासभाके सभासद गण व मुख्य कार्याध्यक्ष गण इस प्रस्तावको महासभामें अवश्यही पेश करनेकी कृपादृष्टि करेंगे।

२५।११।०९ जैनजातिका दासानुदास
पन्नालाल बाकलीवाल
पो० गिरगांव बम्बई.

* रुपयोंकी रकम अधिक रक्खी गई है इसके बदले दश हजारसे पन्द्रह हजार तककी ठीक होगी. सम्पादक.

‡ दो, चार बार करके रुपये बीससे ३० हजार तककी रकम खर्च करनेपर दी जावे. सम्पादक.

सम्पादकीय नोटः—आपका द्वितीय प्रस्ताव वास्तवमें आवश्यक है, और हम इसका सहर्ष अनुमोदन करते हैं. परन्तु इस प्रस्तावकी भूमिका में जो आपने महाविद्यालयको काशीवासी करनेकी लालसा से उसके स्थान परिवर्तनके प्रस्तावको दो वर्षपर्यन्त अटकानेकी सम्मति दी है वह बिलकुल युक्तिशून्य है काशी पाठशालाके पठनक्रमपर अनेक वादानुवाद होनेपरभी जब अभीतक आपकी आंखें नहीं खुली हैं और न उसकी प्रबन्धकारिणी सभाने अभीतक इस ओर ध्यान दिया है. तो क्या आशा है कि, काशी में जाकर महाविद्यालयकी कुछ भलाई होयगी. आश्चर्य नहीं कि, जिस प्रकार आप पहलेसे जैनशास्त्रीय पठनक्रमके पक्षपाती थे. परन्तु काशीवासी होतेही मानो काशीक्षेत्रके संसर्गसेही आप काशीवासियोंके क्रमके पक्षपाती बन गये आश्चर्य नहीं कि, महाविद्यालयकी अवस्थाभी एसीही हो जाय. हमारे जैनियोंकी काशी जयपुर है जैसी सामग्री महाविद्यालयकेवास्ते जयपुर में है वैसी भारतवर्ष में कहीभी नहीं है काशीकी वासनासे पहले आपभी जयपुरके पक्षपाती थे (ऐसा हमको याद है) परन्तु आपके चतुर विचार में एक विलक्षण धुन समागई है. जिससे आप जयपुरके बदले काशीका स्वप्न देखने लगे हैं. आपकी उस धुनका आकार ऐसा प्रतीत होता है कि, जयपुरमें व्यभिचारका प्रचुर प्रचार है इस कारण कुसङ्गतिसे विद्यार्थियोंका संस्कार बिगड़नेकी सम्भावना है. परन्तु आपकी यह धुन भ्रममूलक है क्योंकि, सदाचारी चतुर निरीक्षकके द्वारा प्रबन्ध होनेसे इसका भय नहीं रह सक्ता. परन्तु संसर्गसे संस्कार बिगड़नेके सिद्धान्तसे तो आप बिलकुल विरुद्ध हैं. यदि आप इस सिद्धान्तके विरुद्ध न होते तो आप विद्यालयकेवास्ते काशीको कदापि पसंद नहीं करते क्योंकि, काशीमें मिथ्यात्वका प्रचुर प्रचार है और मिथ्यात्वको हमारे पूर्वाचार्योंने सबसे बड़ा पाप कहा है फिर मिथ्यात्वके संसर्गसे विद्यार्थियोंके सम्यक्तसंस्कार बिगड़नेका जो आपको कुछभी भय होता तो क्वीन्स कालेजके पठन क्रमका आप कदापि आदर नहीं करते. परन्तु इसमें आपका दोषही क्या है आप जैनसिद्धान्तोंके गूढरहस्योंके जानकार प्रौढ विद्वान् तो हैंही नहीं. इस विषयमें आपकीभी बुद्धि अपरिपक्वही है इस कारण काशीमें पहुंचतेही स्वल्पकालिकसंस्कारसेही आपकी कोमल बुद्धि में संसर्गजनितविकार आगया. फिर क्या था चट अपने पूर्व पक्षको छोड़कर उत्तर पक्षपर आरूढ हो गये. परन्तु अब हमारी प्रार्थना महासभाके सभ्य तथा अधिकारियोंसे यह है कि, कहीं इन कृपानाथकी सम्मति मानकर महाविद्यालयको काशीवासी न बना देना. नहीं तो इस महाविद्यालयको क्वीन्स कालेजके पठन क्रमके चक्करमें पड़कर अपने स्वरूपसे च्युत न होना पड़ेगा बड़े आश्चर्यकी बात तो यह है कि, हमारे जैनी भाई अपनी जैन स्याद्वाद पाठशालाओंमें अन्यमत सम्बन्धी पठनक्रम रखकर अपनी पाठशालाके "**जैन**" और "**स्याद्वाद**" इस विशेषणको निरर्थक बना रहे हैं इससे तो

उसके नाममेंसे "जैन" और "स्याद्वाद" ये पद निकाल डालें तो उन पदोंको तो लज्जित नहीं होना पड़े. आशा है कि, महासभाके सभ्य इस नोटको ध्यान देकर पढ़ेंगे और महाविद्यालयका शीघ्रही स्थान परिवर्तन करके उसको जयपुरमें विराजनेका सौभाग्य दिखावेंगे और काशीके मिथ्यात्व प्रचार तथा क्वीन्सकालेजके अन्यमत शास्त्रीय पठनक्रमके अनिष्ट संसर्गसे वंचित रक्खेंगे.

सम्पादक.

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाबम्बई जैनियोंकी उन सभाओंमेंसे एक है, जो कहनेके सिवाय कार्यभी बहुत करती है। वह अपनी कर्तव्य परायणताके कारण जैन समाजमें खूब नाम पैदा कर चुकी है। परन्तु देखते हैं कि, आजकल वहभी ध्यानस्थ है। ढाई वर्ष हो चुके, उसका वार्षिकोत्सवभी नहीं हुआ। गतवर्ष शोलापुरमें एक नैमित्तक अधिवेशन हुआ था, तबसे शान्ति है। यत्र तत्र एकहीसा शीतल समीर बह रहा है।

अहमदाबादमें एक श्राविकाशाला स्थापित हुई है। इसमें श्वेताम्बर समाजकी स्त्रियां दो प्रहरको अवकाशके समय एकत्र होती हैं और सीनापिरौना आदि स्त्रियोपयोगी कार्य तथा धर्मचर्चाका अभ्यास करती हैं। हर्षका विषय है, कि, इस शालामें अनुमान २०० स्त्रियां एकत्र होने लगी हैं।

श्रीभद्रबाहुसंहितान्तर्गतम्
श्रीदायभागम्

(३)

यदि किसी समय दत्तकपुत्र मातापितासे प्रतिकूल हो जावे तब क्या कर्त्तव्य है? सो कहते हैं;

दत्तकः प्रतिकूलःस्यात्
पितृभ्यां प्रागृदूक्तितः ॥
बोधयेत्तं पुनर्दर्पात्
तादृशो जनक स्त्वरम् ॥ ५२ ॥
तत्पित्रादीन् तदुद्वान्तं
ज्ञापयित्वा प्रबोधयेत् ॥
भूयोपि तादृशश्चैव
बंधुभूयादि कारिणाम् ॥ ५३ ॥
आज्ञामादाय गृहतो
निष्काश्योह्यर्भक स्त्वरम् ॥
न तन्नियोगं भूपाद्याः
शृण्वंतिहि कदाचन ॥ ५४ ॥

यदि दत्तक पुत्र मातापिताकी आज्ञासे प्रतिकूल हो जावे, तो उसका पिता उसको कोमल वचनोंके द्वारा समझावे. यदि नहीं समझे तो भयसे समझावे इसपरभी यदि नहीं समझे, तो उसके पूर्व मातापितासे उसका अपराध कह कर समझावे। यदि फिरभी वह जैसाका तैसाही रहे, तो अपने कुटुम्बी जनोंकी तथा राजाके अधिकारियोंकी आज्ञा लेकर उसे घरसे निकाल देना चाहिये। उसके अधिकारकी प्रार्थना राजा स्वीकार नहीं कर सकता।

किसी बिनासन्ततिवाली स्त्रीने दत्तक पुत्र

ग्रहण करके उसको अपना अधिकार दे दिया हो परन्तु कुछ कालके बादही वह अविवाहित मर गया हो, तो उस पुत्रके स्थानपर दूसरा पुत्र स्थापित करनेकी आज्ञा नहीं है, ऐसा कहते हैं.

दत्तपुत्रं गृहीत्वा या
स्वाधिकारं प्रदाय च ॥
जंगमे स्थावरे वापि
स्थातुं स्वं धर्मवर्त्मनि ॥ ५५ ॥

जिस स्त्रीने दत्तक पुत्र लेकर उसे जंगम तथा स्थावर द्रव्यमें, आप स्वयं धर्ममार्गमें स्थित होनेके लिये अपना अधिकार दिया।

पुनः सो दत्तको काल-
लब्धिं प्राप्य मृतोयदि ॥
भर्तृद्रव्यादि यत्नेन
रक्षयेत् स्तैन्य कर्मतः ॥ ५६ ॥

पुनः काललब्धिके वशतें यदि वह पुत्र-विना विवाहाही मर गया, तो भर्ताके द्रव्यकी चौरी आदिसे रक्षा करनी चाहिये ॥

न तत्पदे कुमारोन्यः
स्थापनीयो भवेत्पुनः ॥
मृतेऽनूढे न पुत्रस्या
ज्ञास्ति श्रीजिनशासने ॥ ५७ ॥

उस पुत्रके अविवाहित मरण हो जानेपर पुनः उस कुमारके पदपर दूसरे किसीको स्थापित करनेकी आज्ञा श्रीजिनशासनमें नहीं है॥

सुतासुतोसुतात्मीय-
भागिनेयेभ्य इच्छया ॥
देयाद्धर्मेऽथ जामात्रे
ऽन्यस्मै वा ज्ञाति भोजने ॥५८॥

वह द्रव्य दोहिता दोहिती भानजा जंवाई तथा किसी अन्यको देना चाहिये तथा जातिके भोजन अथवा धर्मकार्योंमें लगाना चाहिये ॥

स्वयं निजास्पदे पुत्रं
स्थापयेच्चेन्मृतप्रजाः ॥
युक्तं परमनूढस्य
पदे स्थापयितुं नहि ॥ ५९ ॥

यदि पुत्र मरगया होवै तो अपनी जगहपर पुत्रस्थापन करनेकी आज्ञा है. परन्तु अविवाहित पुत्रके स्थानपर स्थापन करना उचित नहीं है॥

स्थावर, जंगम, ग्रामादिक, रजत, सुवर्ण भूषण आदिक, मातापिताके द्रव्यके रक्षण करने बेचने आदिमें उदरसे उत्पन्न हुये तथा दत्तक पुत्रको समान अधिकार है या नहीं वह कहते हैं ॥

पित्रोः सत्वे न शक्तः स्यात्
स्थावरं जंगमं तथा ॥
विविक्रियं गृहीतुं वा
कर्तुं पैतामहं च सः ॥ ६० ॥

मातापिताके तथा पितामह (बाबा) के स्थावर जंगम द्रव्यको रखने तथा बेचनेका अधिकार उसको नहीं है ॥

सोलापूरमें सेठ वालचंद रामचंदके पुत्र **जीवराज**की लग्न अभयचंद प्रेमचंदके लड़के नेमचंदजीकी लड़की **जमनाबाई**के साथ हुई है ब्याह बड़ी धूमधामसे हो रहा है आयु वरकी १८ तथा वधूकी १२ वर्षकी है ब्याहकी अवस्था यही योग्य है. अन्य सेठ लोगोंको इससे शिक्षा ग्रहण करना योग्य है ये योग्य जोड़ा चिरकाल सुखपूर्वकर है।

मनोविनोद ।

(१)

पंडित—आप कौन हैं ?

मसखरा—और आप ?

पं०—मैं पंडित हूं !

म०—मैं खडित हूं !

पं०—खंडित किसे कहते हैं ?

म०—और पंडित किसे कहते हैं ?

पं०—मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् । आत्मवत्सर्व भूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥

म०—खातृवत्खरदारेषु खरखव्येषु खोष्टवत्। खात्मवत्खर्व खूतेषु यः खश्यति स खण्डितः ॥ समझे !

पं०—खातृ, खव्य, खोष्टादि किसे कहते हैं ?

म०—मातृ, द्रव्य, लोष्ठादि किसे कहते हैं ?

पं०—मातृमाताको, द्रव्यधनको, लोष्ट ढेलेको कहते हैं ।

म०—खातृ खाताको, खव्यखनको, खोष्ट खेलेको कहते हैं । अब समझे ?

पं०—भाई ! माफ करो, मैंने नहीं जाना कि, इस किस्मके आप मसखरे हैं ।

(२)

एकमित्र—क्यों दोस्त ! ये सिरकी जूती कब खरीदी ?

दूसरा—तुम अजब अहमक हो, सिरकीभी कहीं जूती हुआ करती है, यह तो बढ़िया इटालियन फिल्ट कैप है ।

मि०—तो क्या आप इसमें और जूतीमें कुछ ज्यादा फर्क समझते हैं ? मेरी समझमें तो कुछभी फर्क नहीं है । जूतीमें जो चमड़ा रहता है, वही इस टोपीमें मौजूद है । परन्तु इसका दर्जा अवश्यही बढ़ा है ! जूतियां बेचारी तो दरवाजेके भीतर नहीं फटकने पातीं परन्तु ये भोजनादिके समयभी सदा सिरपर सवार रहती हैं ।

दू०—ये आपने खूब कही । सारी दुनियां फिल्टकैप लगाती है, सोसब बेवकूफही ठहरी ।

मि०—सो तुम खुद सोच सके हो.

(३)

एकबार श्वेताम्बराचार्य हेमचन्द्रजी पंडितोंकी किसी बड़ीभारी सभामें पहुंचे । उक्त सभामें छहों दर्शनके बड़े २ विद्वान् उपस्थित थे । इनको आते देखकर किसी चपल पंडितने हास्यपूर्वक कहा–"आगतो हेमगोपालो दण्डकम्बलमुद्वहन्" अर्थात् देखो ! दंड (लकड़ी) और कम्बलको धारण करता हुआ हेम गोपाल (ग्वाला) आया । यह सुनतेही बुद्धिशाली हेमचन्द्रने तत्कालही उत्तर दिया कि, "षद्दर्शनपशुग्रामाश्चारयन् जैनवाटके" अर्थात् षद्दर्शनरूपी पशुओंके समूहको जैनधर्मरूपी मार्गमें चरानेके लिये । यह सुनतेही चपल पंडितजी फीके पड़ गये ।

दि. जैनप्रान्तिक सभा तथा जैनमित्र सम्बन्धी पत्रव्यवहार तथा रूपया वगैरहका कार्य कृपा कर निम्न लिखित पतेसेही की जियेगा ।

गोपालदास बरैया महामंत्री
सम्पादक जैनमित्र -शोलापुर सिटी .

विविध समाचार।

इंग्लेंडमें प्रतिलाख मनुष्योंमें १५० वैद्य हैं, जर्मनीमें ४८ स्वीटजर्लेंडमें ४२ और रूसमें १९ हैं।

कालीफोर्नियामें एक अत्यन्त पुराना वृक्ष मिला है। उसका विस्तार १९४ फुट ४ इंच है, और उसकी पीड़का व्यास ९१ फुट है।

दक्षिण आफ्रिकामें जो हीरेकी खानि हैं। उसमें पराकाष्ठाका बन्दोबस्त होनेपरभी प्रतिवर्ष चालीस लाख रुपयेके हीरे चोरी जाते हैं।

रूस राज्यपर चढ़ाई-सर्व यूरोपीय राज्योंने अपनी २ जहाजी बेड़ोंको तय्यार कर रूमपर चढ़ाई की है. बिचारे रूमपर चढाई करनेसे क्या फ़ायदा? दबेको सभी दबाते हैं॥

लीजिये अब अमेरिकाके पुरुषार्थी पुरुष बड़ी बड़ी इमारतोंको जड़से उखाड़कर दूसरे स्थानमें ले जाने लगे हैं. जब कोई स्थान उनको पसंद नहीं आता है तो अन्यत्र इच्छित स्थानमें ले जाते हैं. एक रियासतमें जिसका नाम डकोटा है वहांपर एक बैंक था कुछ दिवस हुए कि, वह स्थानान्तर किया गया. बैन्ककी इमारत प्रथमही बड़ी २ गाड़ियोंपर रक्खी गई फिर वे गाड़ियां बेलनोंपर चढ़ाई गई, गाड़ियोंमें आगे, दाहने, बायें घोड़े जोत दिये गये बस उन्होंने खींचकर बैंक कोइच्छित स्थानपर रख दिया. याद रखिये बैन्ककी इमारत खाली नहीं थी उसकी चीजवस्तु सब उसीके भीतर थी, यही नहीं बल्कि उसके कुछ कर्मचारीभी यह तमाशा देखनेको भीतर बैठे थे. कानसर रियासतकी कचहरीभी इसी प्रकार १० मील दूर हटादी गई पर इस बार घोड़ोंसे काम नहीं चला यञ्जिन लगाया गया बेलनोंके उपर गाड़ियां रखकर इमारत पहले उनपर लादी गई फिर रेलकी पटरी बिछाई गई। उस पटरीपर गाड़िया चढ़ा दी गई और यञ्जिन उन्हें खींच ले गया एक दिनमें यह सब हो गया और न कोई दुर्घटना हुई, न कुछ नुकसान, बलिहारी है अमेरीकावालोंके पुरुषार्थ की॥

प्रेरित पत्र.

श्रीयुत मुन्शी चम्पतिरायजी—

रघुनाथदासका जयजिनेन्द्र अपरञ्च भारत वर्षीय दि. जैन महासभाकी नियमावली प्राप्त हुई उसमें मेरी सम्मति इस प्रकार समझना भारतवर्षीय दि. जैन महासभाके दफह २ उद्देश्य (क) जैनियोंमें धार्मिक तथा उत्कृष्ट लौकिक विद्याका प्रचार करना एसा लिखा है. सो उत्कृष्ट शब्द धार्मिकके आगे जरूरी लगाना चाहिये क्योंकि, पहिली सम्पूर्ण नियमावली, सभा व मुख्य मनुष्यों तथा डेप्यूटेशन पार्टीका महासभाद्वारा हमारी उपस्थितीमें एसाही उद्देश प्रगट किया गया जैन गजटमेंभी विद्यारसिकके व्याजसे एक मुखियाने कहा है और दफ़ह ११ होनी चाहिये २९ की गिनती ठीक नहीं।

आपका

रघुनाथदास सभासद

म. महासभा मु. सरनौ

जि० एटा.

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। पोष बद १ श्रीवीर सं० २४३२। अंक ४

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगें जो अश्लील और राज्यनियमकोविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

उपहार! उपहार! उपहार!

जैनमित्रके अनुग्राहक ग्राहक महाशयोंको सूचना दी जाती है कि, जो महाशय जैनमित्रका मूल्य २ मार्च महिनेके प्रथम भेजकर सम्पादक जैनमित्रकी रसीद भेजेंगें उनको २॥ रु० की कीमतकी पुस्तक **दौलतविलास** उपहारमें दी जावेगी. आपका

गिरनारीलाल जैनी
रियासत टहरी जिला गढ़वाल

ग्राहकोंको सूचना.

१ आपलोगोंकी सेवामें यह पाक्षिकमित्र भेजा जाता है आपलोग इसके ग्राहक बढ़ानेका प्रयत्न कीजियेगा-

२ इसका मूल्य शीघ्र भेजकर उपहार दातासे उपहार शीघ्र लीजियेगा.

३ पत्रोत्तरमें आप सदैव ग्राहकनम्बर लिखा कीजियेगा क्योंकि, इसका कार्य बढ़जानेमे नाम निकालनेमें बड़ी अड़चन होती है आगेसे ग्राहकनम्बर न आनेसे हम पत्रकी समयानुकूल कार्यवाहीके उत्तरदाता नहीं होंगे।

४ वर्तमानमें जैनमित्रके एड्रेस छप रहे हैं इससे जो ग्राहकगण पता बदलवाना चाहें तो शीघ्र पत्रोत्तर देवें॥ मेनेजर।

पाठकमहाशय ता. २-१२-०५ को लालागिरनारीलालजीके मातेश्रीका देहान्त होगया है आप बड़ी धर्मात्मा थीं अन्तसमयमेंभी आप रु० १००० जैनसभाटहरीको वास्ते चैत्यालय बनाने तथा १०० रु० गरीब दु:खित भूखोंको दान कर गई हैं आपका देहान्त वृद्धअवस्थामें हुआ है. संसार अनित्य है कोई वस्तु स्थिर नहीं है इसकारण हम उनके कुटुम्बीजनोंसे प्रार्थना करते हैं कि, आप शोक त्यागकर संतोष धारण करेंगें.

श्रीवीतरागायनमः

पौष्य वद १ श्रीवीर संवत् २४३२. वर्ष ७. अंक ४

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते। एतज्जिनानुवर्त्तित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

विविध प्रसंग।

श्वेतांबर जैनसमाजमें आजकल अच्छी उन्नति हो रही है। उसके नेतागण चारोंओरसे जातिधर्मकी सेवा करनेके लिये सन्नद्ध दीख पड़ते हैं। सभा, पाठशाला, और समाचारपत्रादि कार्योंको वे लोग बड़ी संतोषजनकपद्धतिसे सम्पादन कर रहे हैं। जाति और धर्मके अभ्युदयके जो मुख्य कार्य हैं, उनकी ओर श्वेतांबरी भाइयोंका पूरा २ लक्ष्य है। यद्यपि श्वेताम्बरी भाइयोंकी अपेक्षा हम लोगोंकी जनसंख्या अधिक है, और आर्थिकदशाभी उनसे किसी प्रकार बुरी नहीं है. तौभी हम उनके मिलानमें कुछभी नहीं कर रहे हैं, यह परितापका विषय है।

जब हमारे समाजमें दोचारभी समाचारपत्रोंकी दुर्दशा हो रही है, तब श्वेताम्बरसमाजमें समाचारपत्रोंकी संख्या एक दर्जनसेभी अधिकपर पहुंच गई है! और सामान्यतः उनकी दशाभी जहांतक हमको विदित है, अच्छी है! अहमदाबादका साप्ताहिक जैन बड़ी सुंदरतासे सम्पादन होता है। सुनाहै, उस पत्रके तीन सवैतनिक एडीटर हैं। ग्राहकसंख्या दो हजारसे अधिक है। रायचन्द्र जैनशास्त्रमालासरीखे मूल्यवानपत्रकेभी ३९० ग्राहक है। इस (द्विमासिक पुस्तक) का मूल्य ६॥। है। जैनधर्मप्रकाश, जैनहितेच्छु, जैनभास्करोदय, श्वेताम्बर कान्फ्रेन्सहेरेल्ड, आनन्द, श्रावक, सनातनजैन, जैनविवेकप्रकाश, आत्मानन्दप्रकाश, आत्मानंद जैनपत्रिका आदि अनेक मासिकपत्रोंको प्रायः हम पढ़ते हैं। इनके सिवाय औरभी अनेक साहित्यविषयक पत्र श्वेताम्बरी भाई सम्पादन करते हैं। जिन्हें हमने नहीं देखा। यशोविजय पाठशाला बनारसकी ओरसे हालही एक संस्कृत ग्रन्थ सीरीज निकली है। श्वेताम्बरी भाइयोंमें इस प्रकार समाचारपत्रोंका प्रेम देखकर आशा होती है कि, वे शीघ्रही अपने समाजकी उन्नति कर सकेंगे। क्योंकि, आजकलके जमा-

नेमें उन्नतिके मुख्यसाधक समाचारपत्रही हैं! क्या हमारे दिगम्बर धर्माभिमानी भाई इस समाजसे कुछ शिक्षा लेवेंगे!

सभा और पाठशालाओंके कार्यमें श्वेतांबरी भाई हम लोगोंसे बहुत पीछे सचेत हुए है। परंतु पीछे चेतनेपरभी उन लोगोंने जो कुछ किया है, वह हम लोगोंके लिये लज्जा कर है। जिस दिगम्बरजैनमहासभाको स्थापित हुए १२ वर्ष होचुके, उसमें जो उत्साह और कार्य-शक्ति अबतक नहीं हुई है, उससे कई गुना उत्साह और कार्य-शक्ति तीन वर्षकी श्वेताम्बर जैनकान्फ्रेंसने अपने गत बम्बई और बड़ौदाके अधिवेशनोंमें कर दिखाई, जिसे हमारे पाठकगण जानचुके हैं! हमारे महाविद्यालयको स्थापित हुए ९ वर्ष होचुके, परंतु उसमें आजतक न तो ९० हजारसे अधिक पूंजी हुई और न २० से अधिक विद्यार्थी हुए। और इधर काशीकी यशोविजय जैनपाठशालाको स्थापित हुए दो तीन वर्षही हुए हैं, कि उसमें आज ५० विद्यार्थी पढ़ते हैं, और कई लाखके व्याजसे खर्चनिर्वाह होता है। प्यारे भाइयो! आप कभी "इसका कारण क्या है" यह जाननेकी चेष्टा करते हैं?

हम लोगोंमें पुरुष हैं, पुरुषोंके कर्तव्यको जाननेवाले हैं, धन है, धनके खर्च करनेवाले हैं, और मन है, तथा उसके लगानेवालेभी हैं। परंतु भाईयो! हम लोगोंमें उत्साह नहीं है। इसलिये अपने कर्तव्यको जानते हुएभी हम कुछ नहीं करते। लाखों रुपया खर्च करते हुएभी उससे लाभ नहीं उठाते, और मनको लगाते हुएभी जातिधर्मसेवाके कार्यमें नहीं लगाते। अतएव कुछ करना चाहतेहो, और संसारमें अपना उज्वलमुख उन्नत रखना चाहतेहो, तो सच्चे उत्साहको काममें लाओ।

समयके फेरसे मुनियोंके आचारविचारसंबंधी अनेक क्रियायें श्रावकोंमें घुस गई हैं। और इसतरह उनके हृदयमें जड़ पकड़ गई हैं, कि, उनका एकाएक निकाल डालना सहजकार्य नहीं है। मुनिओंकेलिये दंतधावन (दांतोन) करना निषिद्ध कहा है, तो उनकी देखादेखी अनेक प्रदेशोंके श्रावकोंमें यह रीति चल पड़ी है। हम देखते हैं कि, बहुतसे जैनी भाई दंतोन नहीं करते, अतः उनके दांतोंपर बेहद मैल जम जाता है। उनके मुंहसे इतनी दुर्गन्ध निकलती है कि, पास बैठनेको जी नहीं चाहता। उज्ज्वल आचार-विचारवाले जैनिओंकेलिये यह बात बड़ी लज्जाकी है।

स्वदेशी आन्दोलनके कारण देशी कपड़ेका खर्च बहुत बढ़ गया है, इसलिये उसकी पूर्तिकेलिये देशमें अनेक नवीन २ कपड़ेकी मीलोंकी स्थापना हुई है। शोलापुरमें और नड़ियादमें अभी हालही दो मील दश २ लाखकी पूंजीसे स्थापित हुए हैं। भारतवासियोंके हृदयमें देशीवस्तुओंका प्रेमको दिनपरदिन बढाता जावे हम यही चाहते हैं।

हमको यह जानके अत्यन्त हर्ष हुआ है कि, जयपुरके बाबू अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. ने जैन महाविद्यालयकी उन्नतिकेलिये अपना जीवन समर्पण करदिया है। बाबूसाहबको शतशः धन्यवाद है ! विद्या पानेका फल यही है कि, उससे परोपकारसाधन किया जाय।

इस विषयमें हम अनेकबार लिख चुके हैं कि, मथुरा महाविद्यालयकी वृद्धि होनेके योग्यस्थान नहीं है, किसी योग्यस्थानमें ले जानेसेही उसकी अवस्थाका परिवर्तन होसकता है। परंतु अनेक महात्माओंके हटसे और जैनियोंके अभाग्यसे अभीतक विद्यालयको योग्य स्थान नहीं मिला और इसीकारण वह जैसा था वैसाही बना है। आजकल इसकी दशा सुधारनेकेलिये अनेक सज्जनोंके हृदयमें पुनः स्फूर्ति हुई है, इसलिये अवसर पाकर आज हम पुनः कहते हैं कि, महाविद्यालयको यदि सच्चा महाविद्यालय बनाना है, तो उसे किसी अच्छे स्थानमें ले जानेकी व्यवस्था सबसे प्रथम करना चाहिये । हम आशा करते हैं कि, बाबू अर्जुनलालसेठीभी इस विषयपर कुछ विचार करेंगे।

स्वदेशी वस्तु प्रचारके आन्दोलनमें आजकल बंगाल सबका अगुआ बना हुआ है। वहांके वृद्ध युवा बालक आदि समस्तही नरनारी इस पवित्रकार्यमें अभूतपूर्व उत्साह दिखा रहे हैं। हजार कष्ट और विघ्न उपस्थित होनेपरभी वे अपने स्वदेश-सेवाके व्रतको नहीं छोड़ना चाहते। इस कार्यसे विलायती मालकी विक्रीमें बहुत भारी धक्का पहुंच रहा है। अतएव अपने जातिभाई अंग्रेजोंके स्वार्थमें हानि होती देखकर बंगालके नवीन छोटेलाट फुलरसाहिब स्वदेशी आन्दोलनको दबा देनेकी गरजसे बंगाली प्रजाके साथ बड़ा अन्याय करनेपर उतारू होगये हैं । बंगालियोंका "बन्दे मातरम्" यह एक जातीय गीत है। वे इस स्वदेशी आन्दोलनमें उसको बड़े चावसे गाते हैं। इसके सुनने मात्रसेही उन लोगोंमें स्वदेशसेवा-शक्तिका संचार होता है। सो फुलरसाहेब उस गीतसे बड़े नाराज हैं। किसीके मुंहसे 'बन्दे मातरम्' का शब्द निकला कि, उसपर पुलिस और गोरखा सिपाहियोंकी मार पड़ी । बरीसाल रंगपुर आदि स्थानोंमें इस स्वदेशी-व्रतका समूल नाश करनेकेलिये गोरखा पल्टने रक्खी गई हैं । परन्तु देखते है कि, बंगालियोंकी प्रतिज्ञा किसी तरह भंग नहीं होती।

फुलरसाहेबकी आज्ञानुसार स्कूल कालेजका कोईभी विद्यार्थी स्वदेशी आन्दोलनमें शामिल नहीं हो सकता। 'बन्दे मातरम्' का शब्द मुंहसे निकलतेही उसपर चाबुक चलाये जाते हैं, इससे दुःखी होकर बंगालके हजारों विद्यार्थियोंने स्कूल कालेजोंमें पढ़ना छोड़ दिया है। अब बंगाली उनकेलिये नवीन यूनीवर्सिटी शीघ्रही स्थापित करना चाहते हैं । सोलह लाखका चंदा हो चुका है । उत्साह और देशभक्ति इसीको कहते हैं।

विलायती शक्कर कितनी अपवित्र वस्तु है, इसके विषयका एक पृथक् लेख दिया गया है। उससे पाठकगण समझ सकेंगे कि, विलायती शक्कर जैनिओंके खानेयोग्य तो दूर रहै, छूनेयोग्यभी नहीं है। इस बातको जानकर अब सैकड़ो स्थानोंके अन्यधर्मी भाइओंने इस बातकी प्रतिज्ञा की है कि, हम लोग न तो किसी पंचायतीकार्यमें विलायती शक्करको आने देवेंगे, और न स्वयं वर्त्तावमें लावेंगे। अनेक स्थानोंके भाई तो विलायती शक्करमें खूनका संयोग होता है यह जानके यहांतक कुपित हुए है कि, मनों शक्करको उन्होंने पानीमें फिकवा दिया है। हमको जहांतक मालूम है, जैनिओंकी खंडेलवाल, परवार, अग्रवालादि किसीभी पंचायतमें अभीतक विलायती शक्कर काममें नहीं लाई जाती होगी, परंतु काममें आती हो यह असंभवभी नहीं हैं। और सामान्यत: तो बाजारकी मिठाई खानेवाले जैनीभाई सबही इस हत्यारीके भक्त होंगे। सो हम आशा करते हैं कि, अब इसके असली स्वरूपको जानकर हमारे धर्मात्मा भाई पंचायतीओंमेंसे तथा अपने घरोंमेंसे इस चांडालिनीका काला मुंह करेंगे। हिंसा तथा मांसादिके नामसे कम्पित होनेवाले जैनिओंके विलायती शक्कर छोड़नेमें यदि कुछ कष्ट अथवा विलम्ब करना पड़े तो बड़ी लज्जाकी बात होगी।

सद्वचनामृत।

१ कर्मके अनुसार बुद्धि होती है।

२ मुखकी चेष्टा मनके भावको कह देती है।

३ दु:खकी चिन्ता उसी क्षण रहती है। समय बीत जानेपर दु:खके समान चिन्ताभी नहीं रहती।

४ पराधीन जीवनसे मौत अच्छी है। बनमें मृगेन्द्र (सिंह) को मृगेन्द्रत्व किसने बांटा है?

५ विवेकी पुरुष सज्जनोंके वचनोंका विश्वास विपाक अर्थात् फलपानेके समय करते हैं।

६ पापियोंके मनमें और बचनमें और कर्ममें कुछ औरही रहता है। अर्थात् वे विचारते कुछ हैं, कहते कुछ हैं और करते कुछ औरही हैं।

७ सज्जनोंकी आस्था यशरूपी शरीरमें रहती है, अस्थायी शरीरमें नहीं रहती।

८ जिन पुरुषोंके चित्त विषयासक्त हैं, उनके विद्वत्ता, मनुष्यता (आदमियत), सचाई, और कुलीनता आदि कौन २ गुण नष्ट नहीं हो जाते?

९ कामी पुरुष दीनता, चुगली, निन्दा और अधिक क्या पराभवसेभी नहीं डरता!

१० कामरोगसे पीड़ित पुरुष भोजन, दान, ज्ञान, मान, धन, सबको छोड़ देता है। और तो क्या वह अपने जीवनकोभी छोड़नेमें नहीं सकुचता.

११ रागान्ध पुरुषोंकी चेष्टायें अविचारित-रम्य होती है। अर्थात् जबतक विचार नहीं किया जावे, तबहीतक वे भली जँचती हैं।

फिर कभी।

श्री काशीका कटुक फल

प्यारे पाठको आज हमारेपास स्याद्वाद पाठशाला काशीके एक सापेक्षक छात्रका लेख आया है इस लेखमें आपने १ अकमें प्रकाशित निरपेक्षके उत्तरपर कियी हुई सम्पादकीय टिप्पनीपर आक्षेप करनेका साहस किया है. क्याही अच्छा होता यदि आप शिष्टतापूर्वक युक्तिसहित उक्त टिप्पनी में दोष दिखाते परन्तु एसा न करके आपने अपने लेख में शिष्टाचारको जलांजुलि देकर अवच्छेदकावच्छिन्नरूपथोथेवाग्जालगर्भितन्याययविद्याके अभ्यासजनित अभिमानका परिचय दिया है. इतनेपरही आपको सन्तोष नहीं हुआ है किन्तु उक्तलेख में आपने व्यंगरूपसे जिनशासनकी न्यूनताभी दरसायी है जिससे कि, हमको दुःख हुआ है और विशेष दुःख इस बातका हुआ है कि, बड़े परिश्रमसे कमाये हुए जैनियोंके द्रव्यसे कुविद्याका अभ्यास करके एसे कटुकफल उत्पन्न हुए हैं और यदि इस विषयपर हमारे जैनीभाई बिचार न करैंगे तो फिरभी एसेही कटुकफलोंकी उत्पत्ति होती रहैगी हमारा बिचार नहीं था कि, इसके ऊपर कुछ लिखें परन्तु न लिखनेमे एक बडी भारी हानिकी सभावना थी अर्थात् जो हम इस विद्यार्थीके लेखका उत्तर न देते तो कदाचित वह उक्त लेखको अन्य उपायद्वारा प्रकाशित करके इम बातकी घोषणा देता कि, सम्पादक हमारे लेखका उत्तर न दे सके और अब विद्यार्थियोंको अन्यमत ग्रंथ पढाना निर्बाध सिद्ध हो गया यदि उक्त लेख शिष्टतापूर्वक लिखा होता तो उसको अक्षरशः छाप देते परन्तु एसे अशिष्ट लेख हमारे पत्रमें स्थान नहीं पासक्ते तथापि उक्त लेखके अशिष्टांशको छोड़कर विवादांशका उत्तर देना समुचित समझते हैं आपका विवादांश सारांश यों है. "क्योंकि, जिनमत अनेकान्तात्मक है इस लिये एकान्ततः जैनशास्त्रोंके पढनेसेही धर्मोन्नत्ति नहीं हो सकती और यदि ऐसा मानभी लिया जाय तो जैनशास्त्रोंका ज्ञाता कोई अध्यापक नहीं है. यदि अध्यापकभी एसा मिल जाय तो विद्यार्थी उसको समझही नहीं सकैंगे इस कारण विना कणाद गौतमन्यायके जैनग्रन्थोंमें प्रवेश होना अत्यन्त दुष्कर है" परन्तु आपका यह सब कथन भ्रममूलक है आपके इस कथनसे विदित होता है कि, यातो आप जैनमित्र पढतेही नहीं और यदि पढतेभी हैं तो आंखें बंद करके पढते हैं अस्तु जिनमत अनेकान्तात्मक है इस कारण हमारा यह कथनभी कि, जैनधर्मकी उन्नति जैनशास्त्रोंके अभ्याससे होयगी" एकान्तरूप नहीं है किन्तु अनेकान्तरूपही है और उसका आकार इस प्रकार है कि, "अव्युत्पन्नकी अपेक्षासे जैनधर्मकी उन्नति जैनशास्त्रोंके अभ्याससे होयगी" और "व्युत्पन्नकी अपेक्षामे अन्यमतशास्त्राभ्याससे होगी" इसका खुलासा इस प्रकार है कि, अव्युत्पन्न बालकोंको जैनशास्त्रही अभ्यास करने चाहिये अन्यथा अन्यमतशास्त्रोंके अभ्यास करनेसे उनका सस्कार बिगड़ जायगा और फिर उस

संस्कारका दूर होना कष्टसाध्य है. यदि फिरभी उनका सुधरना कष्टसाध्य नहीं होता तो वर्तमानकालमें अन्यमत शास्त्रोंके अनेक ज्ञाता एसे हैं कि, जिनको जैनपाठशालाओंकी अध्यापकीके निमित्तसे जैनशास्त्रावलोकनका सौभाग्य प्राप्त हुआ है परन्तु उनमेंसे एकभी जैनी नहीं हुआ तो फिर भला वे जैनबालक उस चिरसंस्कारके वशतें किस प्रकार यथार्थ जैनी हो जांयगे अथवा आजकल मनुष्य आयु बहुत स्वल्प है प्रायः १७–१८ वर्षकी वय पर्यंतही विद्याभ्यासका काल है उसके पीछे प्रायः सबको गृहस्थाश्रमका भूत लग जाता है फिर वे नानाप्रकारकी चिन्ताओंमें मग्न होकर विद्याभ्यासका स्वप्नभी नहीं देखते तो फिर वे अव्युत्पन्नबालक अपना विद्याभ्यासकाल अर्थात् १८ वर्षकी वयपर्यन्ततो अन्यमत शास्त्राभ्यासमें खो चुके पीछे उनके सिरपर गृहस्थजंजालका भूत सवार हो गया तो कहिये अब वे जैनशास्त्रोंका अभ्यास कब करेंगे. प्रत्यक्ष अनुभवमेंभी एसाही आया है कि, एक विद्यार्थी अंगरेजी विद्याका अभ्यास करता था उससे प्रार्थना की गई कि, भाई कुछ धर्मशास्त्रकाभी अभ्यास करो तो उसने उत्तर दिया कि, पहले कुछ आजीविकासाधन पूरा करलें फिर धर्मशास्त्रोंका अभ्यास करेंगे. धीरेधीरे वे विद्यार्थीराम बी. ए. पास हो गये और फिर एल. एल. बी भी हो गये इतनेमें इधर दो एक बालकभी उत्पन्न हो गये अब विद्यार्थीराम लगे करने वकालत अब साव काश किसको. धर्मशास्त्रका अभ्यास तो दूर रहा कभी उनको धर्मशास्त्रके दर्शन करनेतककीभी फुरसत नहीं मिलती दूसरे महाशय एसे थे कि, जो धनसंचय करनेमें रात्रिदिवस मग्न रहते थे उनसे प्रार्थना की गई कि, महाशय आप कुछ धर्मशास्त्रका अभ्यास करें तो अच्छा होगा आपकी तरफसे जबाब मिला कि, हां थोड़ा द्रव्य और संचय करलें फिर धर्मशास्त्रही अभ्यास करेंगे दैवयोगसे कुछ कालमें इतना धनभी संचय हो गया तो अब "बुढापे" अधर्मी "बुढापे" ने आ घेरा अब आप फरमाते हैं कि, अब तो आंखें काम नहीं देती स्मृतिशक्ति बिलकुल कूचकर गई अब तो अभ्यास लकडियोंमें होयगा. इस प्रकार इन प्राणियोंकी अवस्था हो जाती है इस कारण अव्युत्पन्न बालकोंको जैनशास्त्र अभ्यासही सर्वथा (एकान्ततः) श्रेयस्कर है और जो जैनशास्त्रोंमें व्युत्पन्न हो गये हैं उनको जैनधर्मकी विशेष प्रभावनाके अर्थ यदि उनको कालान्तरमें सावकाशकी योग्यता है तो अन्यमतके शास्त्रभी अभ्यास करने चाहिये क्योंकि, उनके शास्त्रोंका अभ्यास करके फिर उन अन्यमतावलम्बियोंको बादमें परास्त करनेसे जिनमतकी प्रभावना होयगी और यही राजमार्ग है हमारे न्यायविद्याधीश्वर श्रीमद्भट्टाकलंकदेवके समयमें बौद्धमतका प्रचार जोर शोरसे था उस समयभी आप जिनशासनमें व्युत्पन्न होकरही बौद्धोंकी पाठशालामें उनके शास्त्र अभ्यास करनेको गये थे. एक दिन बौद्धगुरु कोई जैनियोंका शास्त्र लगा रहे थे उस शास्त्रमें कुछ अशुद्धि थी इस कारण वह

लगता नहीं था गुरूजी पुस्तकको ऐसेही छोड़कर किसी कामकेवास्ते चले गये इतनेहीमें अकलंकदेव उधर आ पहुंचे उन्होंने पुस्तक देखी तो उसमें कुछ अशुद्धि थी वह इन्होंने शुद्ध कर दी और अपने स्थानपर चले गये थोडी देर बाद गुरूजी आये और उस शास्त्रको लगाने लगे अबके वह ग्रन्थ चट लगगया गुरूजीभी ताड़ गये कि, हमारी शालामें कोई विद्यार्थी जैनी है इत्यादि कथासे यह बात अच्छीतरह प्रमाणित होती है कि, अकलंकस्वामी पहले जैनशास्त्रोंमें व्युत्पन्न हो चुके थे अन्यथा जिस अशुद्धिको बौद्धगुरुभी नहीं सुधार सकेथे उस अशुद्धिको शीघ्रही वे कैसे सुधार देते और इसही प्रकार बौद्धगुरूभी पहले स्वमतके शास्त्रोंमें व्युत्पन्न हुए पीछेसे अन्यमतशास्त्र (जैनशास्त्र) का अभ्यास करते थे इत्यादि कथनसे सिद्ध होता है कि, अव्युत्पन्नकी अपेक्षासे जैनशास्त्राभ्यास इष्ट है और व्युत्पन्नकी अपेक्षासे अन्यमतशास्त्राभ्यास इष्ट है यदि हमारे विद्यार्थीराम इस नय विवक्षित कथनमेंभी पुनः अनेकान्त लगानेका स्वप्न देखते होंय तो कहना होगा कि, उनमें अभी अनेकान्तकी गन्धभी नहीं है और इसमें उनका दोषही क्या है क्योंकि, उन्होंने अभ्यास किया है **गौतम और कणाद न्यायका** और पानी पिया है **विश्वनाथपुरीका** फिर क्या है **जैसा पिये पानी वैसी बोले बानी** की कहावत चरित्रार्थ होगई. यह अपराध है हमारे उन जैनीभाईयोंका कि, जिन्होंने कष्टसे कमाये हुए अपने द्रव्यसे जैनबालकोंके ह्रदयमें विषबीज बोकर ये कटुकफल तयार किये हैं हमारे विद्यार्थीरामने दिग्गजवादि गंजनकेशरी समन्तभद्रस्वामीकी इस कारिकाको नहीं देखा है कि,

" अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः प्रमाणनयसाधनः। अनेकान्तः प्रमाणात्ते तदेकान्तोऽर्पितान्नयात् ॥ हमारे विद्यार्थीराम इस बातकाभी स्वप्न देख रहे हैं कि, जैनियोंमें जैनशास्त्रोंका मर्मज्ञ कोई नहीं है परन्तु यह उनकी बडीभारी भूल है अभी जैनियोंमें एसे विद्वानोंका अभाव नहीं है किन्तु सद्भाव है कि, जो तुमसरीखे विद्यार्थियोंको कई वर्षतक जैनसिद्धान्त पढ़ा सक्ते हैं फिर आपका यह कहना कि, बिना गौतमकणादन्यायके पढ़े जैनसिद्धांतोंका मर्म समझनेकी योग्यताही नहीं होसक्ती सो आपका एसा कहना प्रत्यक्ष बाधित है जैनियोंमें ऐसे अनेक विद्वान् होगये और हैं कि, जिन्होंने गौतमकणादन्यायका स्पर्शतक नहीं किया और जैनसिद्धान्तोंके अच्छे मर्मज्ञ थे अथवा हैं जैनसिद्धान्तनिरूपक महापुराण, सागारधर्मामृत, गोमट्टसार, त्रिलोकसार, लब्धिसार, क्षपणासार, सर्वार्थसिद्धि, राजवार्तिक, पंचाध्यायी, न्यायदीपिका, प्रमेयरत्नमाला, आप्तपरीक्षा, आप्तमीमांसा, सप्तभंगीतरंगिणी, पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह, परमात्मप्रकाश, जयधवल, महाधवल, आदि अनेक शास्त्र एसे हैं कि, जिनमें जैनसिद्धान्तोंका मर्म अच्छीतरह निरूपण किया है और इनका अभ्यास गौतमकणादन्यायका अभ्यास कियेबिना अच्छीतरह हो सकता है इतनाही नहीं

किन्तु अभी एमे विद्वान् मौजूद हैं कि, जिन्होंने गौतमकणादन्यायका अभ्यास नहीं किया है और इन उपर्युक्त ग्रन्थोंको अच्छीतरह लगा सक्ते हैं इस कारण इन ग्रंथोंका अभ्यास करनेके लिये गौतमकणादन्यायकी बिलकुल आवश्यकता नहीं है। हां अष्टसहश्री और श्लोकवार्तिक इन दो ग्रंथोंकेवास्ते गौतम और कणादन्यायके ज्ञानकी आवश्यकता पडती है क्योंकि, विद्यानंदस्वामीने इन ग्रंथोंमें गौतमकणादन्यायका खूब खंडन किया है. सो जिस प्रकार तुम गौतम और कणादन्यायका अभ्यास करके उन ग्रंथोंको लगाओगे उसही प्रकार उनही गौतम और कणादन्यायके अच्छे ज्ञाता अन्यमती अध्यापक उन ग्रंथोंको लगाकर तुमको समझा सक्ते हैं कदाचित् यह कहो कि, अध्यापक स्वयं तो समझलेंगे किन्तु विद्यार्थियोंको समझा नहीं सकेंगे सोभी ठीक नहीं है क्योंकि, किसी नीतिकारने कहा है कि, "वक्तुरेवहि तज्जाड्य श्रोता यत्र न बुद्ध्यते" कदाचित् यह कहो कि, उन विद्यार्थियोंमें इतनी योग्यताही नहीं होसक्ती कि, वे उसको समझ सकें सोभी ठीक नहीं है क्योंकि, ऊपर गिनाये हुए ग्रंथोंका ज्ञाता विद्यार्थी गुरुके समझानेपरभी उस विषयको नहीं समझ सकैगा यह बात बिलकुल असंभव दीखती है परन्तु खैर यदि तुम्हारा कहनाभी मान लिया जाय तोभी ऊपर गिनाए हुए जैनसिद्धान्तोंका ज्ञाता व्युत्पन्न है इस कारण यदि उसने इतने जैनसिद्धान्तोंका अभ्यास करके व्युत्पन्न हुए पीछे गौतमकणादन्याय पढ़कर फिर अष्टसहश्री और श्लोकवार्तिकका अभ्यास किया तो उसमें कुछ हानि नहीं है क्योंकि, व्युत्पन्नकी अपेक्षासे अन्यमतशास्त्रोंका अभ्यास ऊपर इष्ट दिखा चुके हैं आगे चलकर आप धमकी देते हैं कि, यह तो सूचना मात्र है अभी आपसे वर्षों लेखद्वारा लड़नेवाले मौजूद हैं सो विद्यार्थीरामने दूसरोंको छुईमुईकी कोंपलही समझ रक्खा है जो तर्जनी दिखाकरही डराना चाहते हैं आप अपने मनकी अच्छीतरह निकाल लीजिये हम आपकी इस धमकीसे डरनेवाले नहीं हैं आपको तथा आपके हिमायतियोंको जो कुछ लिखना होय शौकसे लिखिये आशा है कि, सत्य और जिनशासनके माहात्म्यसे आपको और आपके हिमायतियोंको मुंहतोड़ उत्तर मिलैगा.

ईष्ट इंडियन रेलवेकी वार्षिक रिपोर्टसे विदित हुआ हे कि, उक्त लाईनमें सम्पूर्ण ३९३ स्टेशन हैं और ७२४०६ मनुष्य इस लाईनमें नोकरी कर रहे हैं सन १९०४–१९०५ में इस लाइनपर २,५१,६७,१९५ यात्रीयोंने यात्राकी इस लाइनके द्वारा प्रति ट्रेनमें प्रति मील साढेतीन रुपये तथा प्रतिमाल गाडीको प्रतिमील सवा पांच रुपयेकी प्राप्ति गतवर्ष हुई थी यह लाईन भारतवर्षकी २७२२ मील में फैली हुई है इस लाईनमें खर्च प्रति मील डेढ रुपया प्रति ट्रेन पड़ता है इतना लाभ होनेपरभी इस लाइनके प्रबन्धकर्ता लोग बेचारे हिन्दुस्तानियोंको आराम देनेके बदले सदैव धक्केही दिया करते हैं नीतिही एसी है ॥

विदेशी खाँड़ और हिन्दूधर्म

(श्रीव्यङ्कटेश्वरसे उद्धृत।)

भारतवासियोंको अपना धर्म्म प्राणोंसेभी प्यारा है। आचार विचारही हिन्दूधर्म्मकी जड़ है। अपने धर्म्मकी रक्षाके लिये हमारे पुरुषाओंने अपने प्राणोंतकको तृणवत् फूंक दिया; पर अपनी आँखों, धर्म्मपर कुठार चलते, उनसे देखा नहीं गया। हाय! अब वह समय नहीं है। हिन्दुओंमें वह धर्म्मप्रेम नहीं है। आज हिन्दू अपने थोड़ेसे लोभके लिये करनी अकरनी सब करनेके लिये कमर कसे हर समय तैयार रहते हैं। ऐसे मनुष्य समझे हुए हैं कि, वे अमरत्वका परवाना "ईश्वरके घरसे" लिखा लाये हैं। याद रहे भाइयो! जितना द्रव्य बेईमानीसे पैदा करते हो, उतनाही घोर नरकके लिये प्रबन्ध कररहे हो। पर जान बूझकरभी उस अकर्म्मसे बचनेका उपाय नहीं सोचते; यह तुम्हारी भूल है।

गोवंश हिन्दुओंका परमपूज्यनीय होनेपरभी संसारमात्रका उपकारी है। पर समयके फेरसे आज हमारी हिन्दुजातिमें गोवंशपर भक्ति और पूज्यबुद्धि तो कहां; पर उनपर साधारण पशुके समानभी दया नहीं की जाती है। वैश्य लोग जिनके भागमें (ईश्वरीय आज्ञासे) पशुपालन करना आया है, वे उसका मांस और रुधिरतक जला डालना पाप नहीं समझते। बम्बई कन्द (मोरिसशकी खाँड़) हमारे समस्त हलवाई भाई, विशेषकर अगरवाले (जो मांस और मदिरासे महाघृणा करते हैं) गलाते हैं और उसकी मिठाई बनाकर बेचते हैं। यह कन्द बैलके रुधिर और मनुष्यके पेशाबसे साफ किया जाता है और ९ से २९ सैकड़ातक इसमें हड्डीका चूर्ण मिलाया जाता है। यह अंगरेजी अखबारों और समाचारपत्रोंसे जानने में आया है। इस कन्दके गलानेवाले अपना धर्म्म नष्टकर घोर नरककी सामा तो करतेही हैं; पर साथही हिन्दूमात्रकोभी (उस भ्रष्ट मिठाईको बेचकर) पापका भागी बनाते जाते हैं। कई एक तो ऐसे ईमान्दार हैं कि, बम्बईकन्दमें मन पीछे ९ सेर गुड़ मिलाकर उसके बनाये हुए मालको देशी चीनीका माल कहकर लोगोंको धोखा देते हैं और अपना स्वार्थ साधकर लोगोंमें धर्म्मेष्टी बनते हैं; इस प्रकार भारतवासी हिन्दूगण दिनपर दिन गोमांसभोजी होते जाते हैं। और बनिया लोग, जो अपनेको वैश्य होनेका दावा करते हैं वे (ऐसे हलवाई) गोहत्यारे और कसाई कहानेके योग्य हैं। प्रत्येक जातिके पंचोंको चाहिये कि, ऐसे हलवाइयोंको सदैवके लिये जातिसे पृथक् कर देवें और चातुर्वर्ण्य उनसे लेनदेनका व्यवहार छोड़ देवें, क्योंकि, संसर्गसे पातक लगता है जिससे घोर नरक भोगना सम्भव है। अतः उक्त कन्दकी मिठाई बनानेवालों, बेचनेवालों और खानेवालोंको गोहत्याके पापका भागी होना पड़ता है, क्योंकि, जितनी उक्त कन्दकी खपत अधिक होगी उतनीही गोवंशके मारेजानेकी वृद्धि होती रहेगी, जिससे इसका व्यवहार करनेवाला हिन्दू कुलकलङ्की, स्वदेशशत्रु और पा-

तकी तथा कसाईकी पदवी पानेके योग्य समझा जावेगा ।

आजकल जिसको देखो वही जाति ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य बननेके प्रयत्नमें हैं। और वैश्य लोगोंमें अनेक जातियां होनेपर आपसमें वे एक दूसरीसे अपनेको श्रेष्ठ बतलाती हैं और बड़प्पनका दावा करती हैं । अग्रवाल अपनेको राजा अगरकी सन्तान होनेका दावा करते हैं और महेश्वरी महेश (महादेव) के वरसे अपनी जातिका बड़प्पन दिखाते हैं इसी भाँति अन्य २ जातियाँभी. पर हम कहते हैं यह उनका थोथा झगड़ा है क्योंकि, पशुपालन करनेवालाही वैश्य माना गया है और जिस जातिमें पशुके रुधिरसे साफ की हुई वस्तुको कढ़ाईमें औटानेकी प्रथा प्रचलित है वह जाति मांस और रुधिरको औटानेवाली जाति कहाने योग्य होसकती है न कि, वैश्य । यदि बनियाँलोग अपनेको वैश्य कहानेकी इच्छा रखते हों, तो अपनी २ जातिके हलवाइयोंको कंद गलानेसे रोकें ।

सबसे अधिक आश्चर्यकी बात यह है कि, बनिया लोग अपने व्याह, शादी, गमीमें देशी खाँड़ गलाकर मिठाई बनाते हैं और जाति बिरादरीको खिलाते हैं । यदि कोई भूलकर वा जानकर विदेशी कन्दकी मिठाई बनावे तो उसके घर कोई जीमनेको न जावे। लेकिन आवश्यकता हो, तो बाजारसे उसी कन्दकी मिठाईको मोल लाकर भोग लगावें और अमूमन पुण्यार्थ देने लेनेके लिये तो बाजारकी उसी भ्रष्ट मिठाईको लाकर देवता और पित्रोंके नामपर ब्राह्मणको देकर अपने साथ अपने पित्रों और देवताओंकोभी अपवित्र मिठाईसे तृप्त कर उनका आशीर्वाद लेते हैं जिसके फलसे देशमें अनेक बीमारियाँ होनेके सिवाय दिन २ दिवालिया और सन्तानहीन होते जाते हैं । क्या हमारे वैश्य भाई अबभी चेतकर अपने और अपने देशवाशियोंके धर्मको बचानेका कुछ उपाय न करेंगे ?

क्षत्रिय ।

मनोविनोद ।

(१)

एक योगी मार्ग चलते २ थक गया था। रात्रिको एक कुएकी पाटपर शीतलताका संचार देखके लेट गया। थकावटके मारे लेटते देर नहीं हुई कि, निद्रादेवीके सपाटेमें आगया । आंख लगतेही योगी महाराज एक सुखस्वप्न देखने लगे । उन्हें अनुभव हुआ कि, मैं एक भाग्यशाली गृहस्थ होगयाहूं । और अपनी श्रीमतीके साथ एक शय्यापर लेटाहूं । बीचमें २-३ वर्षका बालक बालक्रीड़ा कर रहा है । थोड़ी देरमें श्रीमतीने वीणाविनिन्दितस्वरसे कहा, प्राणनाथ ! जरा उस ओरको खिसक जाइये । बालकको संकीर्णतासे कष्ट होता है । यह सुनकर योगीजी थोड़ेसे पीछेको खिसक गये। परन्तु तत्कालही प्राणेश्वरीने पुनः प्रार्थना की कि, महाराज! किंचित् औरभी खिसकिये । अबकीबार श्री-

मतीका आदेश मानके योगिराज ज्योंही पीछे हटे कि, धड़ामसे कुएमें जा पड़े ! सुखनिद्रा भंग होगई । लगे गला फाड़फाड़के पुकारने। भाग्यसे महात्माकी पुकार सुनकर एक पथिकने उन्हें कुएमेंसे निकाल लिया । कुएसे बाहर आके योगीने बड़ी कृतज्ञता प्रकाशकी और पूछा ।

योगी—आप कौन हैं ?

पथिक—मैं एक गृहस्थ हूं ।

योगी—आप कबसे गृहस्थ हैं ?

पथिक—महाराज ! मैं १२ वर्षसे गृहस्थ हुआ हूं ।

योगी—ओफ् ! और अभीतक तुम कुशलतासे हो ! मैं तो सिर्फ आध घंटेकेलियेही गृहस्थ हुआ था कि, मेरी हड्डी पसली दुरुस्त होगई । भाई ! नमस्कार है तुम्हें और तुम्हारे गृहस्थपनेको ।

---

(२)

मेरठमें कोई एक **लालाजी** रहते थे । उनकी स्त्रीका नाम **सुखिया** था । लालाजी बड़े रण्डीबाज थे, उनकेद्वारा उनकी सुखियाको कभी सुखनसीब नहीं हुआ । एकबार उन्होंने ब्राह्मणभोज कराया, उसमें एक सूरदास (अन्धे) बिनाबुलायेही आ पहुंचे । यह बात लालाजीको अच्छी नहीं लगी, इससे उन्होंने निमंत्रणकी फेहरिस्त देखके सूरदासजीसे पूछा; तुम्हारा क्या नाम है ? सूरदास उसदिन भोजनोंके लोभसे नहीं आये थे, उन्हें एक विशेष मतलब था । अतः चटसे बोले मेरा नाम **नयनसुख है** । यह सुनके सब लोग हंस पड़े । और लालाजी बोले, क्या खूब ! जन्मके अंधे नाम नयनसुख ! सूरदासने चटसे जबाव दिया–वाह, क्या खूब ! लालाजी रंडियोंके घर रात काटें ललाइनका नाम **सुखिया** ! सैकड़ों प्रतिष्ठित ब्राह्मणोंके बीचमें लालाजीको यह बात तीरसी लगी । उन्होंने उसी दिनसे रंडीके यहां जाना छोड़ दिया ! जब ललाइनजीको यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने सूरदासको बुलाके खूब सत्कार किया, और विपुल दक्षिणा देके विदा किया ।

मि. नैरो भास्कर सहस्त्रबुद्धिजी फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट जिला सतारा वालोंपर सखाराम कुशाजीने ५००) रु० की रिश्वत लेनेका अपराध लगाया, अपराध प्रमाणित हो गया और आपको एक वर्षकी साधारण कैद और ५००) रु० जुर्मानाका दण्ड हुआ. और उनके दलालकोभी २५००) रु० का जुर्माना और एक वर्षका कठोर दण्ड मिला । सहस्त्रबुद्धिजीको पेनशन मिलनेवाली थी सोभी मारी गई. अधर्मका फल बुरा होता है. परन्तु यह कहावत यहां खूब चरितार्थ हुई कि, "आखोंके अन्धे और नाम नयनसुख" नाम सहस्त्रबुद्धि और काम निर्बुद्धिके ॥

श्रीभद्रबाहुसंहितान्तर्गतम्

श्रीदायभागम्

(४)

अब श्वशुर और स्वश्रूके द्रव्यमें उस स्त्रीको (जिसका पति मरजावे) कितना अधिकार है यह कहते हैं ॥

पैतामहक्रमायाते
द्रव्येऽनधिकृतिः स्मृता।
श्वशुरस्य निजे कृत्ये
व्ययं कर्तुं च सर्वथा ॥ ६१ ॥

पितामहके क्रमायात श्वशुरके द्रव्यमें अपने निजीकार्यमें खर्च करनेका कुछ अधिकार नहीं है ॥

सुताज्ञया विना भक्ते
भक्ते तु धर्म कर्मणि।
मैत्र ज्ञातिव्रतादौ तु
व्ययं कुर्याद्यथोचितम् ॥ ६२ ॥

सुतकी आज्ञाके विनाही विभागकी हुई अथवा अविभक्तही द्रव्यका व्यय (खर्च) मित्रादि सम्बन्धी जातिव्रतआदिकोंमें यथोचित कर सकता है ॥

तन्मृतौतु स्त्रियश्चापि
व्ययं कर्तुमशक्तता।
भोजनांशुकमात्रं तु
गृह्णीयाद्वित्तमासतः ॥ ६३ ॥

और उसके मरजानेपर उसकी स्त्रीको खर्च करनेमें कुछ अधिकार नहीं है। केवल भोजन वस्त्रके वास्ते नियतमासिकके हिसावसे ले सकती है ॥

सर्वद्रव्याधिकारस्तु
व्यवहारे सुतस्य वै।
न व्ययीकरणे रिक्थ
स्याहि मातृसमक्षकम् ॥ ६४ ॥

सम्पूर्ण द्रव्यका अधिकार व्यवहार करनेमें पुत्रकोही है खर्च करनेमें नहीं। यदि किसी कारण वश बिलकुल खर्च पुत्रके पास नहीं रहा होवे (अर्थात् खाली हाथ हो) तो माताकी आज्ञासे खर्च करनेकाभी अधिकार है ॥

सुते मृते सुतवधू
भर्तृसर्वस्वहारिणी।
श्वश्र्वासह कियत्कालं
माध्यस्थेन हि स्थीयते ॥ ६५ ॥

पुत्रके मरजानेपर भर्ताके सम्पूर्ण द्रव्यकी मालिक पुत्रकी स्त्री अपनी श्वश्रू (सासू) के साथ कुछ कालपर्यन्त मध्यस्थ भावसे रहै। तत्पश्चात् ॥

रक्षन्ती शयनं भर्तुः
पालयन्ती कुटुम्बकम्।
स्वधर्मे निरता पुत्रं
भर्तृस्थाने नियोजयेत् ॥ ६६ ॥

ब्रम्हचर्यव्रतको धारण करती हुई तथा अपने धर्ममें तत्पर कुटुम्बका पालन करती हुई, अपने पुत्रको भर्ताके स्थानपर अर्थात् भर्ताके द्रव्यका अधिकारी नियुक्त करै ॥

शेषमग्रे.

महाविद्यालयकी दुर्दशा।

प्यारे पाठको! दिसम्बर सन् १९०९ के अंगरेजी जैनगजट अंक ९ पृष्ट १९३-१९४ में एक पत्र बाबू अजितपरशादजीका छपा है जिसको बांचतेही चित्तपर वज्रसदृश आघात लगा. आपके लिखनेका अभिप्राय यह है कि, "डेपुटेशन पार्टी जिस जैनकालेजके वास्ते चंदा एकत्र करनेको निकलीथी वह जैनकालेज कोई दूसरा नहीं है जैसाकि, हमारे बहुतसे भाइयोंको भ्रम होगया है किन्तु यह जैनकालेज शब्द वर्तमान दिगम्बर जैनमहाविद्यालयका पर्याय वाचक शब्द है" आगे चलकर आप लिखते हैं कि, "इस महाविद्यालयको धार्मिकविद्यालय नहीं समझना इसमें जो **दिगम्बर जैन** यह दो शब्द पड़े हुए हैं उसका अर्थ ऐसा है कि, इसके स्थापक तथा सहायक दिगम्बर जैनमतावलंबी हैं यदि इसके भंडारमें श्वेताम्बरी भाई सहायता देवें तो इसका नाम **मध्यम जैन महाविद्यालय** (Central Jain College) रखनेमें कुछ हानि नहीं है और उसका धार्मिक पठनक्रम उभयपक्ष सम्मत करदिया जाय" पाठक महाशय समझे यह अभिप्राय महाविद्यालयकी कैसी दुर्दशा करनेवाला है अर्थात् हमारे नवयुवक मानो जैनियोंमें मिसेस एनीबिझेंटकी **"सर्वमेकं भूयात्"** की घोषणा प्रचार करनेपर उतारू हुए हैं आपके वाक्यका स्पष्टार्थ यह होसकता है कि, कल श्वेताम्बरी भाई महाविद्यालयमें चंदा देकर उसमें स्वकीयपक्ष स्थापन करसकेंगे तो परसों उसमें वैष्णव, मुसलमान, क्रिश्चियन शामिल होकर उसके पठनक्रममें वेद, कुरान और बाइबलका प्रवेश करसकेंगे.

लेखक महाशयके इस वाक्य (and in devising a course of religious studies which will be acceptable to the members of both the creeds अर्थात् धार्मिक पठनक्रम उभयपक्ष सम्मत करदिया जाय) के तीन अर्थ होसकते हैं। अर्थात्

१. महाविद्यालयके पठनक्रममें धर्मशास्त्र रखनाही नहीं।

२. सब मतके धर्मशास्त्रोंमेंसे एक २ अथवा दो दो ग्रंथ चुनकर पठनक्रममें रखना।

३. अपने २ मतके विद्यार्थियोंको अपने २ धर्मशास्त्रोंकी शिक्षा देना।

इन तीनों अर्थोंमेंसे एकभी अर्थ वर्तमान महाविद्यालयको उपयोगी नहीं होसक्ता यदि पहला अर्थ ग्रहण किया जाय तो महाविद्यालयका स्थापन करनाही व्यर्थ है क्योंकि, अंगरेजी और संस्कृत भाषाके अनेक सरकारी कालेज मौजूद हैं उनमेंही जैनबालकोंको शिक्षा दिलाना चाहिये. व्यर्थ जैनियोंके लाखों रुपये खर्चनेमें कुछ सार नहीं है. दूसरा अर्थ ग्रहण करनेसे तो इसप्रकारकी शिक्षासे जात्यंतर मिश्रजातिके विद्यार्थी तयार होंगे कि, जिनकी गणना वैनयिकमिथ्यादृष्टियोंमें की जायगी और तीसरा अर्थ ग्रहण करनेसे एक महाविद्यालयके भिन्न २ कई भाग होंयगे और एसी अवस्थामें सबको मिश्रित करके

और भिन्न २ भाग करनेकी अपेक्षा पहलेही भिन्न १ रहना श्रेयस्कर है किसी नीतिकारने कहाभी है कि, "**पङ्कप्रक्षालनाद्दूरादस्पर्शनंवरं**" अर्थात् कीचड़ लगाकर धोनेकी अपेक्षा पहले कीचड़ न लगानाही अच्छा है. इस प्रकार उक्तवाक्यके तीनों अर्थोंमेंसे एकभी अर्थ महाविद्यालयको श्रेयस्कर नहीं होसक्ता. प्यारे भाइयो ! जिससमय महाविद्यालय स्थापन हुआथा उसका मूल उद्देश्य यहीथा कि, इस महाविद्यालय द्वारा दिगंबर जैनधर्म विद्याका प्रचार किया जायगा और इसही उद्देश्यसे द्रव्य दाताओंने इसमें द्रव्यसमर्पण कियाथा अब जो महाशय इस उद्देश्यको बदलते हैं वे मानो कुठार हाथमें लेकर महाविद्यालय और उसके स्थापक और सहायकोंके अभिप्रायका खून करते हैं. हाय ! शोक ! शतशोक ! हमारे जैनीभाई और महासभाके सभ्योंकी बुद्धिपर है कि, जिन्होंने धर्मनौकाके खेवटिये वे **महात्मा** नियत किये हैं कि, धर्मके विषयमें जिनको **कालाअक्षर भैंस बराबर** है हमको सन्देह होता है कि, कहीं ये महात्मा इस गोते खाती हुई धर्मनौकाको रसातलमें नहीं पहुंचादें यद्यपि हमारे यह वाक्य आपको बहुत कटुक लगते होंगे परन्तु यादरक्खो कि, यह कटुक औषधि आपके रोगको निर्मूल नाश करनेवाली है आशाहै कि, आप महाशय हमारी इस छोटीसी प्रार्थनासे रुष्ट न होकर एसा उपाय करैंगे कि, जिससे महाविद्यालय और जैनसमाजका हितसाधन होय परन्तु हमको भय है कि, "**नक्कारखानेकी आवाजमें तूतीकी कौन सुनेकी** कहावत कहीं चरितार्थ न होजाय. इसकारण द्रव्य दाताओंसे हमारी प्रार्थना है कि, जबतक यह विषय स्पष्ट अभिप्रायसे ट्रष्ट और रिजिष्टर न होजाय और जबतक इस भंडारके अभिप्राय खुलासा तौरपर सर्कारी साक्षीपूर्वक प्रसिद्ध न होजाय तबतक इसभंडारमें कदापि द्रव्य न देवें यदि देंगे तो उनको पीछे पछताना पड़ेगा इस डेपुटेशनकी पालिसीमें जो हमको संदेह था उसका सहयोगी अंगरेजी जैनगजटने आज **भंडा फोड़**कर दिया भाइयो **सावधान रहना !** इनकी गूढ पालिसीके चक्करसे बचते रहना.

जैनधर्मका हितेच्छु

सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

विचित्र संग्रह ।

स्वीटजर्लेंडके 'सायन नामक ग्राममें एक ४९० वर्षकी पुरानी घड़ी है । उसके चक्र लकड़ीके बने हुए हैं, एक कांटा मात्र लोहेका है ।

फासेट नामके एक बड़े भारी डाक्टर हैं । उनके **लियो** नामका ६ वर्षका लड़का है। उसकी स्वभावतः ऐसी चमत्कारिक दृष्टि है कि, उसे मनुष्योंके शरीरकी हड्डियां, मांस, और रक्ताभिसरण सब दिखलाई देता है ! डाक्टरसाहबको अपने व्यवसायमें इस दिव्यदृष्टिबालकसे बहुत सहायता मिलती है ।

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक =) पंक्ति।

६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।

१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।

६ ,, ,, ५) रु.।

१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बंटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

एक बार अवश्य पढिये।

१ इस अंकसे जैनमित्र पाक्षिक कर दिया गया है। अब यह अपनी द्रुतगतिसे एक माहमें दो बार आपकी सेवामें उपस्थित हुआ करैगा। और नानाप्रकारके धर्मोपदेश सुनाकर हर्षित किया करैगा। आपको चाहिये कि, इसके बदलेमें एक २ नया ग्राहक बनाकर भेजें और इसके उत्साहको बढावें। एक ग्राहकका बनाना आपके लिये कुछ भी कठिन बात नहीं है, परन्तु उस एक २ ही ग्राहकसे इसको बहुत लाभ हो सक्ता है। आशा है कि, इस छोटी सी प्रार्थनापर आप अवश्य ही ध्यान देंगे, और इसके पढते ही किसी भाईका नाम हमारेपास लिखकर भेज देंगे, जो ग्राहकोंमें दर्ज हो जावेगा।

२ मासिक रूपमें इस पत्रका मूल्य १।)था, अब पाक्षिकमें बढाकर २) दो रुपया किया गया है। जो महाशय मासिकके ग्राहक थे, उन सबके पास यह अंक भेजा जाता है। जिनको स्वीकार न हों वे वापिस करके सूचना दे देवें। अन्यथा सब ग्राहक समझे जावेंगे।

३ नये प्रबन्धके कारण एक दो अंक समय पर नहीं निकल सकेंगे। पाठकगण इसके लिये क्षमा करें।

४ यह अंक ग्राहकोंके अतिरिक्त अन्य ३००–४०० महाशयोंकी सेवामें नमूनेकी तौर पर भेजा जाता है। जिन महाशयोंको ग्राहक होने की इच्छा हो, वे कृपा करके एक कार्ड द्वारा सूचना दे देवें। अन्यथा दूसरा अंक उनके पास नहीं भेजा जावेगा।

मेनेजर।

Registered No. B 288.

ॐ

जैनमित्र।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक--गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। कार्तिक शुक्ला १ श्रीवीर सं० २४३२। प्रथम अंक।

विषयानुक्रमणिका।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

कर्नाटक प्रिंटिंग प्रेस, गिरगांव-बम्बई.

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

। पौष शुक्ल १ माह बद १ श्रीवीर स० २४३२ अंक ५–६

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

संक्षिप्त कार्यवाही श्रीमती दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभा.

अष्टम वर्ष.

ता. ८ से ११ तक इस सभाका वार्षिक अधिवेशन स्तवनिधि क्षेत्रमें आनन्दपूर्वक समाप्त हुआ. श्रीमान् अनन्तराज अय्या नैनारजी मैसूर निवासी इस सभाके सभापति हुएथे. ७०००) से अधिक जैनसंख्या दूर २ से आई थी. सभाके अधिवेशनोंमें ३०००) के लगभग समाज एकत्रित होताथा.

निम्नलिखित प्रस्ताव सभामें स्वीकृत हुए.

१ प्रिन्स और प्रिन्सेस आफ वेल्सको भारत आगमनपर धन्यवाद दिया जावे.

२ महाराज कोल्हापुर और शेठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई निवासीको धन्यवाद दिये जावें कारण कि, आप लोगोंने जैन बोर्डिंगहाउसकोल्हापुरकी स्थापनामें पूर्ण सहायता दी है.

३ स्त्री शिक्षाका प्रचार किया जाय.

४ बालविवाह रोका जावे.

५ निर्दयतासे पशुवधके विरुद्ध गवर्नमेंटसे प्रार्थना की जाय.

६ धर्मोपदेश दिया जाय.

७ विद्यावृद्धि निमित्त डेप्यूटेशन पार्टी नियत की जावे.

८ यूनीवर्सिटीमें जैनग्रन्थ भरती करानेका उद्योग किया जाय.

९ विलायती वस्तुका प्रचार रोका जाय तथा स्वदेशवस्तुका प्रचार किया जाय.

१० धर्मादेके पैसेका सद्व्यवहार किया जाय.

सभाकी ओरसे अध्यक्ष साहिबने शेठ माणिकचंद पानाचंदजीको बड़े सत्कारकेसाथ मानपत्र दिया.

ता. ११ की रात्रीको स्त्रीसभाकी बैठक हुई. २॥ हजारके अनुमान स्त्रियां थीं शेठ माणिकचंदजीकी सुपुत्री मगनबाईजीने सभापतिका आसन सुशोभित किया। कई एक स्त्रियोंने विविध विषयोंपर भाषण किये. मिस केवलकर एल. एम. एस. लेडी डाक्तर उर्फ कृष्णाबाई कोल्हापुरने माताओंका बालकोंके साथमें क्या कर्तव्य है इस विषयको वर्णन किया. स्त्री शिक्षाकी उन्नतिकेलिये अध्यक्ष महोदयाने १ घंटेतक अच्छा भाषण दिया, और एक पृथक् फंड नियत हुआ जिसमें कुछ स्कालरशिप और १५०) के अनुमान चन्दा हुआ.

सभापतीकी ओरसे भाषण देनेवाली स्त्रियोंको पारितोषक प्रदान किया गया.

सभापति अनन्तराज अय्याकाभी व्याख्यान बहुत अच्छा हुआ सभामें बड़ा आनंद रहा. ता. १२ को रथोत्सव और मेनेजिंग कमेटीकी बैठक हुई.

महासभाके महामंत्रीजी सुननेमें आया है कि, जिसवक्त "महाविद्यालयकी दुर्दशा" नामक नोटिस सहारणपुरके जल्सेमें पंडित जवाहिरलालजीशास्त्री वितीर्ण कर रहे थे. लगभग ५०० के वितीर्ण हुए होंगे कि, इतनेमें महामंत्रीजिने आनकर नोटिस बांटना बंद करवा दिया. क्यों महामंत्रीजी साहिब डरगये क्या?

श्रीवीतरागायनमः

पौष्य शुक्ल १
माह बद १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
५-६

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते। एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

समयके फेरसे हमलोग जिनसमीचीन आचारविचारोंको छोड़ बैठे हैं, उनमें सोलहसंस्कार मुख्य हैं। मनुष्यमें धर्माचारोंके पालनकी पात्रता तभी आती है, जब वह संस्कारयुक्त होता है। जो पुरुष असंस्कृत हैं, वे धर्मतत्वोंके पठनपाठनादिकेभी अधिकारी नहीं हैं, ऐसा पूर्वाचार्योंका मत है। आजकल हमलोगोंमें जो पूर्वाचार्योंके वाक्योंमें अश्रद्धा देखी जाती है, वह इससंस्कार हीनताकाही फल है। बल्कि कहना चाहिये कि, हमारे समाजकी वर्तमान शोचनीय अवस्थाकाभी यही कारण है। सो समाजकी उन्नति करनेके लिये और उसमें धर्मकी अकाट्यश्रद्धा उत्पन्न करनेके लिये हमलोगोंको चाहिये कि, सबसे पहले अपनी संतानको संस्कृत बनानेका उद्योग करें। सन्तानके सुसंस्कृत होतेही हमारे समाजमें पूर्वकालकी तरह विद्या, बुद्धि, उत्साह, व्यवसाय और आचारविचार फिर ज्योंकेत्यों दिखाई देने लगेंगे।

यद्यपि सर्वथा ऐसा नहीं कहा जासकता है, कि, हम लोगोंमें संस्कार होतेही नहीं हैं, परन्तु एक प्रकारसे वे होतेही नहीं हैं, ऐसा कहना अनुचितभी नहीं होगा। क्योंकि, न्यारे २ प्रदेशोंमें न्यारी २ जातियोंमें वे न्यारी २ पद्धतिसे अस्तव्यस्त प्रचलित हो रहे हैं। जहां जिस सम्प्रदाय और जिस जातिका अधिक जोर है, वहां उसीके रिवाज उनमें मिलगये हैं, शास्त्रानुसार प्रायः कहींभी नहीं होते। सो हमलोगोंको उचित है कि, उनका संशोधन करके उन्हें असलीरूपमें पुनः लेआवें। संस्कारोंके असलीरूपमें आतेही हमलोग शीघ्रही अपने असलीरूपमें आजावेंगे।

हर्षका विषय है कि, वर्तमानमें सोलहसंस्कारोंमेंसे एक विवाहसंस्कारकीओर लोगोंका ध्यान बहुत कुछ आकर्षित हुआ जान पड़ता है; सो प्रायः प्रत्येक प्रान्तमें जैनविवाहपद्धतिके अनुसार विवाह होनेकी चरचा सुनाई देनेलगी है। गतवर्षोंकी अपेक्षा हमारी

समझमें इसवर्ष अधिक धूम है। और आशाकी जाती है कि, आगामीवर्षोंमें क्रमशः यह धूम बढ़तीही जावेगी। **नादगांव** जिला नासिकमें दो, **टाकली** नासिकमें एक, और **इन्दोरमें** तीनचार विवाह आर्षपद्धतिसे होनेकी हमें हालही खबर मिली है। **शोलापुरके** एक विवाहकेविषय गत तीसरे अंकमें लिखा जाचुका है। और **दक्षिणप्रान्तमें** इसपद्धतिसे अनेक विवाह होनेकी खबर है। इन पुरातन आर्षविधिके परिचारकोंको हम शतशः धन्यवाद देते हैं।

"सबजगह सबप्रकारके मनुष्य देखे जाते हैं, एक प्रकृतिके कहींभी नहीं मिलते"। इस सिद्धान्तका एक उदाहरण मिला है। वह यह है कि, ऊपर जिस **नासिक**जिलेके तीनचार विवाहोंके विषय लिखा गया है, उसी जिलेके **न्यायडोंगरी** कस्बेमें शेठ श्यामलाल छोटूलालजी पाटणीकी लड़कीका विवाह था, जिसकी बरात **शाकेगांवसे** आई थी। कन्याके पितासे अनेक सज्जनोंने अतिशय प्रेरणा की कि, आप यह विवाह अपनी आर्षमांगलिकविधिसे करावें। परन्तु "**योग्यायोग्य विचारोऽयं रागान्धानां कुतो भवेत्**" अर्थात् रागसे अन्धे हुए पुरुषोंके योग्य-अयोग्य कार्यका विचार कहांसे हो? अतएव आपने आर्षविधिका आदर करना उचित नहीं समझा। बड़े खेदकी बात है!

बम्बईमें दानवीर शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीने लगभग सवालाख रुपये लगाके एक सुबृहत धर्मशाला बनवाई है, जिसका नाम शेठजीने अपने पूज्य पिता हीराचन्दजीके स्मरणार्थ **हीराबाग** रक्खा है। हर्ष है कि, गत अगहन सुदी ९ को उसका वास्तुविधान आर्षविधिके अनुसार हो गया और वह सर हरकिशुनदास नरोत्तमदासजीके हाथसे सर्वसाधारण यात्रियोंके लिये खोल दी गई। बम्बईमें एक अच्छी धर्मशालाके अभावसे यात्रियोंको और उनमें विशेषकर जैनियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता था, सो दानवीर शेठजीकी दानशीलतासे उस अभावकी पूर्ति होकर यात्रियोंके कष्टकाभी प्रतीकार हो गया। एक श्रेष्ठ कविका वचन है कि, "**अशरण्य शरण्यत्वमतो धार्मिकलक्षणम्**" अर्थात् अशरणको शरण देनाही धर्मात्माओंका लक्षण है। सो इसी बचनके अनुसार सच्चे धर्मात्मा शेठजीको हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं।

उक्त धर्मशाला सर्वसाधारण यात्रियोंके लिये खोली गई है। अतः उसके खोलनेका कार्य बम्बईके सुप्रसिद्ध शेठ सर हरकिशुनदासजीके द्वारा होना कुछ अनुचित नहीं कहा जासकता परन्तु गुजराती सहयोगी '**जैन**' इस बातसे अप्रसन्न हुआ है। वह कहता है कि, बम्बईमें जैनजातिके अनेक प्रतिष्ठित पुरुषोंके होते हुए यह कार्य सरकारकी हां में हां मिलानेवाले 'सर नाइट' के द्वारा क्यों लिया गया। इसके उतरमें हम सहयोगीको समझाते हैं कि, एकतो यह कार्य राजकीय नहीं

था, जिसमें हां में हां मिलानेवालोंका परहेज किया जावे, दूसरे साधारण धर्मकार्योंमें सरनाइट महाशय जहांतक हम जानते हैं आपके किसी जैनीसे कम नहीं है। बम्बईमें कईएक धर्मशाला और मंदिर उनकी उदारता दिखलानेवाले हैं। तीसरे जैसाकि, सहयोगीने समझा है, यह धर्मशाला केवल दिगम्बरी अथवा श्वेताम्बरियोंके लिये नहीं किन्तु सर्वसाधारणके लिये खोली गई है। और चौथे सहयोगीके मान्यप्रतिष्ठितपुरुषोंके द्वाराही यह कार्य शेठजी कराना चाहते, तो उक्त सज्जन उसे करना स्वीकार करते अथवा नहीं, इसमेंभी हमको सन्देह है।

जिससमय अहमदाबादमें **शेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द बोर्डिंगस्कूलकी** स्थापना हुई थी, उससमय वहांके सम्पूर्ण प्रतिष्ठित श्वेताम्बरी सज्जनोंकेपास जल्सेका आमंत्रण भेजा गया था। बल्कि (कुसूर माफ़ होतो) शेठ माणिकचन्दने स्वयं सहयोगीके आफिसमें जाके उसके स्वामीसे आनेका आग्रह किया था। परन्तु अत्यन्त परितापका विषय है कि, उस जल्सेमें न तो किसी श्वेताम्बरी सज्जनने शामिल होनेकी उदारता दिखलाई, और न एकताकी डींग मारनेवाले सहयोगीके स्वामीने! फिर हम नहीं कहसकते कि, सहयोगी किस मुंहसे यह आक्षेप करता है कि, श्वेताम्बरसमाजके मुखियाओंकेद्वारा यह कार्य क्यों नहीं कराया। उदार-हृदय शेठ माणिकचन्दजीके लिये आपके समाजका वह अनुदार बर्ताव क्या सदाको सचेत रहनेके लिये अलं नहीं है?

आजकल अनेक पढ़ेलिखे सज्जन दिगम्बरी और श्वेताम्बरी दोनों सम्प्रदायोंको एक करनेका सुखस्वप्न देख रहे हैं, और उसकेलिये खूब आन्दोलन मचारहे हैं, परन्तु हमारी समझमें अभी वह दिन बहुत दूर है, जिसमें उक्त दोनों सम्प्रदाय एक सभामंडपके नीचे बैठकर एकताका सम्पादन करेंगे। हालके जमानेमें जबकि, मिथ्यात्व और अविद्याका घनघोर अंधकार हो रहा है, यह बात वैसीही असंभव प्रतीत होती है, जैसे विंध्याचल और हिमालयको अपने २ स्थानोंसे घसीटकर सहारणपुरके जैन यंगमेन्सएसोसियेशनमंडफमें ला रखना!

जो सज्जन इस दीर्घव्यवसायमें दत्तचित्त हुए हैं, वे अवश्यही अभूतपूर्व उद्योगी कहे जासकते हैं, और उनका यह उद्योगभी बुरा नहीं है, परन्तु "जिसके घरमें एकता नहीं है, उसे बाहर जाके एकताका ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिये"। इसलिये उन्हें चाहिये कि, पहले अपने घरमेंही एकताका सम्पादन करें, पीछे बाहर एकता करनेके लिये कमरकसें। वे देखें कि, उनके यहां ग्राम २ नगर २ जाति २ पंचायत २ और तेरह, बीस, गुमान पंथोंमें फूट महारानीका कैसा जोर-शोर हो रहा है, और उसके स्थानमें एकताका राज्य होनेसे कितना कल्याण हो सकता है!

हमारी समझमें जो सज्जन दोहजार वर्षसे पृथक् करदिये हुए और धर्मतत्वोंमें जमीन आसमानका फरक रखनेवाले श्वेताम्बर सम्प्रदायको एकत्र करसकनेका दावा करते हैं, वे दोसौ चारसौ वर्षसे थोड़ीसी समझके फेरसे तेरहवीस और गुमानी बने हुए दिगम्बरियोंमें एकताका धर्मराज्य स्थापन करनेका धन्यवाद अवश्यही प्राप्त करनेका सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि, दिगम्बरी और श्वेताम्बरी भाइयोंमें एकताकी आवश्यकता नहीं है। नहीं हमारी तो यहांतक अभिलाषा है कि, हम समस्त भारतवर्षी जैन, हिन्दू, मुसलमान, बौद्धादि सब अविचल एकताका सुखलाभ करें, फिर श्वेताम्बरी तो हमारे बहुत नजदीकी भाई हैं! परन्तु राजकीय कार्योंके अतिरिक्त धर्मकार्योंमें इनकी एकता हमें कदापि अभीष्ट नहीं है, और न वह हो ही सकती है, जो लोग यह कहनेका साहस करते हैं कि, दिगम्बर श्वेताम्बर सम्प्रदायमें विशेष मतभेद नहीं है। हमारी समझमें उनलोगोंकी बुद्धिने धर्मके तत्वोंका स्पर्शभी नहीं किया है। और उनका एकताका साहस नितान्त अविचारित-रम्य है। उन्हें चाहिये कि, दोनों सम्प्रदायोंके ग्रन्थोंका पर्यालोचन करके अपनी भूलको सुधारें। और इस व्यर्थके कार्यको छोड़के अपने घरकाही प्रबन्ध करें। क्याही अच्छा हो, यदि धर्मकी एकताकी इच्छा रखनेवाले सज्जन अपने आर्षदिगम्बरीय ग्रन्थोंका प्रचार करके उन भूले भटके भाइयोंको मार्गमें लाके धर्मैक्यको बढ़ानेका प्रयत्न करें। बिना विद्याकी वृद्धि किये भिन्न २ धर्मकी एकता करनेवाले दोनों सम्प्रदायोंमें असंतोष फैलानेके सिवाय और कुछ नहीं कर सकेंगे।

सुनते हैं, बंगालके नवीन लेफ्टेण्ट फुलर साहब अब ठंडे होरहे हैं। उन्होंने बरीसाल आदिस्थानोंसे अपनी गोरखा पल्टनोंको हटा लिया है, इसीप्रकार वहांके अन्य अफसरोंकेभी अत्याचार कुछ कम हुए हैं। इसका कारण यही जानपड़ता है कि, देशसेवक बंगाली अपनी प्रतिज्ञापर ज्योंकेत्यों अटल हैं, और अफसरोंके अत्याचार उनकी प्रतिज्ञाको भंगकरनेके बदले दिनपरदिन दृढ कररहे हैं। सो कहना चाहिये कि, जो लोग सच्ची प्रतिज्ञा करना जानते हैं, वे उसका निवाहनाभी जानते हैं। और "**प्रारभ्यमुत्तमजनाः न परित्यजन्ति**" अर्थात् उत्तम पुरुष प्रारंभ किये हुए कार्यको बीचमें नहीं छोड़ बैठते।

विलायती शक्करके विषयमें गतांकमें बहुत कुछ लिखा जाचुका है। आज उसी विषयमें "रिसाला मुफीदुल मुजारईन" नामक अखबारसे कुछ वाक्य उद्धृत करदिये जाते हैं, जिससे विलायती शक्करकी असलियत सहजही मालूम हो सकती है। "जिन पौधोंसे मिश्री बनती है, उनमें गन्ना (सांटा) अव्वल दर्जेपर है और चौदहवीं शताब्दितक

यूरोपके प्रदेशोंमें न गन्नाथा और न गुड़-शक्कर तमाम चीनी और कन्द वगैरह हिन्दुस्थानसेही वहां जातीथी । परन्तु अफसोस है कि, वह हिंदुस्थान जो सारे यूरोपको चीनी गुड़ और मिश्री पहुंचाताथा, अब वह अपनी जरूरतोंके लिये दूसरे मुल्कोंका मुहताज है । सन १८३६ से पहले अपना खर्च निकालकर हिंदुस्थानकी दो करोड़ रुपयेकी चीनी दूसरे देशोंको जाया करतीथी, परन्तु सन १८९० में तीनकरोड़ उनतालीसलाख उन्यासीहजारआठसौइकसठ रुपयेकी चीनी और गुड़ दूसरे देशोंसे हिंदुस्थानमें आया! यह विदेशी चीनी गन्नेके सिवाय खजूर, छुहारे, मकई, ज्वारकीडंठल, चुकन्दर (Beet) नारियल, ताड़ी, मैपिल (एक अमेरिकन वृक्ष), शलगम, गाजर, गेहूं, आलू, दूध, तारकोल, आदि बहुतसी चीजोंसे निकाली जाती है । यहांतककि, अनेक कारीगर महाशयोंने मनुष्यके मूत्रसेभी चीनी निकाली है, और एक कारखानेमें सुना है कि, चौवीस घंटेके अन्दर चुकन्दरसे शक्कर सर्वथा तयार हो जाती है" बिचारनेका स्थल है कि, ऐसी २ वाहियात चीजोंसे और इतनी जल्दी बनीहुई शक्कर देशी शक्करकी बराबरी कभी करसकती है, कदापि नहीं । देशी शक्कर शीतल पुष्टिकारक, और नानाप्रकारके रोगोंका नाश करनेवाली होती है, और उसके विरुद्ध विलायती शक्कर शरीरमें असाधारण गर्मी पैदाकरनेवाली, धातुको बिगाड़नेवाली और प्रमेहादिक रोगोंको उत्पन्न करनेवाली होती है ।

सामान्यत: विलायती शक्करसे तीन नुकसान हैं, एक तो प्रतिवर्ष ५–६ करोड़ रुपया हमारे देशसे विदेशोंको चलाजाता है, जिससे देशकी दरिद्रता बढ़ती है, दूसरे शरीरमें नानाप्रकारके रोग अपना अड्डा जमालेते हैं, जैसे कि, ऊपर कहा जा चुका है और तीसरे सबसे बड़ा नुकसान यह है कि, हमारा प्राणोंसेभी प्यारा धर्म भ्रष्ट होता है । क्योंकि, यह विलायती शक्कर जानवरोंके खून और हड्डियोंसे साफ कीजाती है । जो जैनी भाई कंदमूल हरितकायादि पदार्थोंके खानेमेंभी पाप समझते हैं, उन्हें शक्करकी पवित्रतापर विचार करना चाहिये । हम आशा करते हैं कि, उपर्युक्त तीन हानियोंको जानकर हमारे धर्मात्मा भाई इसका सर्वथा परित्याग करदेंगे ।

देशी शक्करमें आजकल बहुत गड़बड़ होगई है बहुतसे लोभाविष्ट व्यापारियोंने देशीशक्करमें विदेशीशक्कर मिलाकर उसको देशीशक्करके नामसे बेच लोगोंको ठगना शुरू किया है । इसलिये स्वदेशीवस्तुप्रचारक तथा पवित्रताके इच्छुक व्यापारियोंसे प्रार्थना है कि, वे एक एसी कम्पनी या कारखाना खोलें कि, जिसमें पवित्रताके साथ देशी शक्कर तय्यार होकर सुगमतासे मिलसके । और हमारे भाईयोंको उसपर अविश्वास करनेकी जगहभी न रहे । केवल उपदेशसे कार्य नहीं चलता कार्यकरके दिखाना चाहिये ।

ग्रन्थावलोकन ।

(२)

समयके फेरसे हमारे परमश्रद्धालु जैनसमाजमेंभी अब ऐसे अनेक महात्मा दृष्टिगोचर होने लगे हैं, जिन्हें हमारे आर्षग्रन्थोंमें जगह२ विपरीत कथनकी शंका होती है। उनकी भगवती बुद्धिने कुछ ऐसा विलक्षणरूप धारण किया है कि, वह आचारसम्बन्धी दशपांच भाषा वचनिकाके ग्रन्थोंको छोड़कर सम्पूर्ण प्राचीन आर्षग्रन्थोंको पाषण्डि और भेषियोंके बनाये हुए कहनेमें तनिकभी नहीं हिचकती। वह सद्योनवद्य गद्यपद्य विद्याधर चक्रवर्ति भगवत्सोमदेवसे जयपुरीय श्रावक सदासुखजीको तथा परमभट्टारक नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्तीसे संघी पन्नालालजी दूनीवालोंको अधिक प्रामाणिक समझती है!! समय पड़नेपर ये महाशय पूर्वऋषियोंको यातो कुलिंगी बतला देते हैं, अथवा कुछ कृपा हुई, तो कह देते हैं कि, किसी पाषंडीने मूलग्रन्थमें अमुक२ अनीप्सित विषय घुसेड़ दिये हैं! परन्तु अकलके पुतले कभी यह सोचनेकी तकलीफ नहीं उठाते कि, यह बात सहस्रावधि ग्रन्थोंमें कैसे संभव हो सकती है?

कल्पना कीजिये कि, अकलंक प्रतिष्ठापाठकी एक प्रति काश्मीरमें दूसरी मूडविद्रीमें, तीसरी जयपुरमें इस प्रकार अनेक स्थानोंमें सैकड़ों वर्षकी लिखी हुई मिलती हैं, और उन सबका पाठ एकसा है। तो फिर क्या वह पाषंडी उन सम्पूर्ण प्रतियोंमें छीलछाल करता फिरा होगा? और इसके अतिरिक्त उसी प्रतिष्ठापाठके समान अन्य वसुनंदि, आशाधर, नेमिचन्द्रादि प्रतिष्ठापाठभी मिलते हैं, सो क्या उनकाभी पत्ता लगाके उसने अंधेर मचाया होगा? अस्तु यह उनलोगोंकी मति है। किसीकी मतिपर किसीका अधिकार नहीं है, "**गत्यधीनं हि मानसम्**" अतः इसविषयमें विषादकी आवश्यकता नहीं थी, परन्तु उक्त महात्माओंकी मति अब एक बड़ा अनर्थ करनेको उतारू हो गई है, सो समय देखके चुप नहीं रहा जाता है, पाठकगण हमें क्षमा करें।

पहले कह चुके हैं कि, इन महाशयोंकी निर्मलदृष्टिमें सर्वत्र मालिन्यही दिखाई देता है, परन्तु कोई ग्रन्थ ऐसाभी है, जिसमें मलिनता नहीं है, ऐसा प्रश्न होनेपर सिवाय बगलें झांकनेके अन्य उपाय नहीं था, इसलिये अब उन्होंने निर्मल ग्रन्थ बनानेकी टकसाल खोल दी है। जो कार्य पूर्वजोंने स्वप्नमेंभी नहीं किया था, उसे उनकी सुयोग्यसंतान करनेमें दत्तचित्त है, यह कैसे संतोषकी बात है?

अभी यह नहीं कहा जा सकता कि, इसप्रकारके नवीन ग्रन्थोंकी सृष्टि रचनेवाले महात्मा कितने हैं, और अभीतक कितने ग्रन्थ तयार हुए हैं, परन्तु एक दो सज्जनों और उनके ग्रन्थोंके जाननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इनमेंसे **बाबादुलीचन्दजी**को हमारे बहुतसे पाठक जानते हैं, जिन्होंने **वसुबिन्दुके**

प्रतिष्ठापाठपर कलम (छुरी) चलाई है और जिसके विषयमें कुछ समय पहले खूब आन्दोलन हो चुका हैं बाबाजीसे पूछा गया था कि, आप अपने प्रतिष्ठापाठकी मूल प्रति बतलावें, तो हमलोग उसे मान्य करेंगे, परन्तु उसके उत्तरमें आप अभीतक मौनावलम्बी हैं। अतः **मौनं अर्धसम्मतिः**के अनुसार वे इस विषयमें सर्वथा निर्दोष नहीं हैं। आपने केवल प्रतिष्ठापाठपरही यह कृपा नहीं की है, आचार्योंकी औरभी अनेक कृतियोंपर आपकी शुद्ध दृष्टि पड़ी है, जिन्हें हम यथासमय बतलावेंगे, आज **श्रीमदमितगत्याचार्यकृत सुभाषित रत्नसंदोह**के विषयमेंही कुछ कहनेकी इच्छा है।

बाबाजी स्वयं कोई विद्वान् नहीं हैं, और न उनमें विद्वत्ताकी गंध है, परन्तु त्यागी होनेके कारण हमारे समाजमें उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गई है। सुनते हैं, आपने ग्रन्थोंका संग्रह और शोध करनेमें बड़ा परिश्रम किया है। आपने अपने शोधकी एक ग्रन्थनामावलीभी छपाई है। शोध और संग्रहके अतिरिक्त बाबाजी एक दो विद्वानोंको रखके उनसे मूलग्रन्थोंकी भाषाटीकायें और अपनी इच्छानुसार नवीन छीलछालभी कराया करते हैं। सुना है कि, स्वर्गीय चौधरी पन्नालालजीने जो अनेक ग्रन्थोंकी भाषाटीकायें बनाई है, वे सब आपकीही कृपासे बनी हैं। उन्हीं ग्रथोंमें यह सुभाषित रत्नसंदोह है।

इस ग्रन्थमें सांसारिक विषय निराकरण, कोपनिराकरणादि सुन्दर ३२ बतीस विषय हैं। इनमें एक स्त्रीगुणदोष विचार नामक प्रकरण है। जिसके आदिके बारह श्लोकोंमें स्त्रीके गुणोंका विचार है, और शेष तेरह श्लोकोंमें दोषोंका विचार है। यति (मुनि) होकरभी अमितगति महाराज स्त्रीके गुणोंका वर्णन करनेको बैठ गये यह बात टीका करनेवाले अथवा करानेवाले महात्माको बड़ी बुरी लगी, इसलिये प्रारंभीय तेरह श्लोकोंको देश निकाला देदिया गया। स्त्रियोंकी प्रशंसा करनेवाले श्लोकोंकी ऐसीही गति होनी चाहिये। पाठकोंकी परीक्षाके लिये गुणविचार प्रकारणके चार श्लोकोंको हम यहां उद्धृत करना उचित समझते हैं।

उद्यद्ग्रन्थप्रबन्धां परमसुखरसां
कोमलालापजल्पां
पुष्पस्रक्सौकुमार्यां कुसुमशरवधूं
रूपतोनिर्जयन्तीम्।
सौख्यं सर्वेन्द्रियाणामभिमतमभितः
कुर्वतीं मानसेष्टं
सत्सौभाग्यालभन्ते कृतसुकृतवशाः
कामिनीं मर्त्यमुख्याम् ॥ १ ॥
यत्कामार्तिंधुनीते सुखमुपचिनुते
प्रीतिमाविष्करोति
सत्पात्राहारदानप्रभववर-
वृषस्यास्तदोषस्य हेतुः।
वंशाभ्युद्धारकर्तुर्भवति तनुभुवः
कारणं कान्तकीर्ति-
स्तत्सर्वाभीष्टदात् प्रवदत न कथं
प्रार्थ्यते स्त्रीसुरत्नम् ॥ २ ॥

भावार्थ—१ जिसकी परमसुख-रस युक्त

और कोमलवाणीमें सुगन्धिका समूह निकलता रहता है। जो अपनी सुकुमारतासे फूलोंकी मालाको तथा रूपसे कामदेवकी स्त्री रतिको जीतती है। और जो मनको प्यारे सम्पूर्ण इन्द्रियोंके अभिमत सुखोंको करनेवाली है। ऐसी उत्तम कामिनीको बड़े पुण्यवान् और सौभाग्यवान पुरुषही पाते हैं।

२ जो कामकी पीड़ाको दूर करता है, सुखको संग्रह करता है, प्रीतिका आविष्कार करता है, दोषोंसे रहित सत्पात्रोंके आहारदानसे उत्पन्न धर्मका हेतु है। वंशके उद्धार करनेवाले पुत्रके उत्पन्न करनेका कारण है। और सर्व अभीष्टोंका देनेवाला ऐसा स्त्रीरूपी सुरत्न भला कहो तो, क्यों याचनाके योग्य नहीं है।

स्त्रीतः सर्वज्ञनाथः सुरनतचरणो
जायतेऽबाधबोध
स्तस्मात्तीर्थं श्रुताख्यं जनहितकथकं
मोक्षमार्गावबोधः
तस्मात्तस्माद्विनाशोभवदुरिततेः
सौख्यमस्ताद्विबाधं
बुध्वैवं स्त्रीं पवित्रां शिवसुखकरणीं
सज्जनः स्वीकरोति ॥ ३ ॥
भृत्यो मन्त्री विपत्तौ भवति, रतिविधौ
या तु वेश्या विदग्धा
लज्जालुर्या विगीता गुरुजनविनता
गेहिनी गेहकृत्ये
भक्त्या पत्युः सखी या स्वजनपरिजने
धर्म्मकर्म्मैकदक्षा,
साल्पक्रोधाल्पपुण्यैः सकलगुणानिधिः
प्राप्यते स्त्री न मर्त्यैः ॥४॥

भावार्थ—१ स्त्रीसे सर्वज्ञनाथ (तीर्थंकर) उत्पन्न होते हैं, जिनके चरणोंमें देवता मस्तक नवाते हैं और जिनका ज्ञान सर्वथा बाधरहित है। और उन तीर्थंकर भगवानसे मोक्षमार्गका बतलानेवाला तथा मनुष्योंके हितका कहनेवाला तीर्थ—स्वरूपशास्त्र उत्पन्न होता है। शास्त्रसे संसारके पापसमूह नष्ट होते हैं और इससे पापोंके नाश होनेसे बाधारहित सुखकी प्राप्ति होती है। इसप्रकार परम्परामार्गसे मोक्षसुखकी करनेवाली स्त्रीको सज्जन पवित्र जानके स्वीकार करते हैं।

२ विपत्तिमें जो सेवक तथा मंत्रीकेसमान है। समागमविधिमें चतुरवेश्या है। लज्जालु, गुरुजनोंकी विनय करनेवाली और घरकी स्वामिनी कही गई है, पतिमें भक्ति रखनेसे उसके मित्रतुल्य है, स्वजनपरिजनमें तथा धर्मकर्ममें अत्यन्त चतुर है, और अल्पक्रोधवती है। ऐसी सम्पूर्णगुणोंकी समुद्र स्त्री मनुष्योंको थोड़े पुण्यसे प्राप्त नहीं होती है।

बेचारे शुष्क हृदय पुरुषोंकी बुद्धिमें सहृदय आचार्योंके ऐसे रसयुक्त गंभीरभावोंके समझनेकी शक्ति कहां? उन्हें इसमें पापंडही पापंड दीखने लगा, अतः सफाई कर डाली। किसी कविने ऐसे महात्माओंसे दुःखी होकरही तो विधातासे कहा है कि,

अरसिकेषुकवित्वनिवेदनं
शिरसि मालिख! मालिख!! मालिख!!!

हमारे पाठकोंमें जो साहित्यके ज्ञाता हैं, उनसे तो उक्त श्लोकोंके विषय कुछ कहनेकी आवश्यकताही नहीं है. एकबार पाठ करतेही वे सिर डुलाने लगेंगे क्योंकि,—

किं कवेः तस्य काव्येन किं काण्डेन धनुष्मता
परस्य हृदये लग्नं न घूर्णयति यच्छिरः ॥

परन्तु जो लोग केवल आचारदृष्टिवाले हैं, वे जरा विचारके देखें कि, सहृदय ग्रन्थकर्त्ताने स्त्रीगुणोंको कैसी गंभीरतासे कहा है? उन गुणोंमें गृहस्थ स्त्री और पुरुषोंके लिये कैसी२ सुन्दर शिक्षायें भरी हैं? स्त्री गृहस्थधर्मकी मूलभूता है, उसकी अवहेलनासे गृहस्थधर्मकी पालना नहीं होसकती। क्या आचार्यवर्य अमितगतिके गुणप्रकरणके श्लोकोंको कोई दुःशिक्षाकर अथवा गृहस्थोंकेलिये हेय सिद्ध करसकता है? कदापि नहीं। परन्तु समय कैसा बुरा आगया है कि, आजकलके अर्धदग्ध लोग आर्षवाक्योंको मिट्टीके खिलौने समझके यत्रतत्रसे तोड़नेके लिये कमर कस चुके हैं! स्त्रीगुण विचारमें श्रृंगारकी जरासी झलक देखके जब बाबालोग इसतरह खफा हो जाते हैं, तब **भगवद्वीरनंदि** और **हरिश्चन्द्रादिके** काव्योंको देखकर वे जैनग्रन्थोंको न मालूम किस समुद्रमें डुबानेका प्रवन्ध करेंगे, इस अनुमानसे हम बड़े भयभीत हुए हैं। विधाता, अपात्रोंके हाथमें ऐसे ग्रन्थोंके पड़नेका समय कभी न लावे।

सु० र० सं० में **चारित्रनिरूपणका** एक दूसरा प्रकरण है, उसमें चारित्रविषयके ३२ श्लोक हैं, परन्तु भाषाटीकामें निम्नलिखित चार श्लोक गायब हैं, पाठक उनके दर्शन करें, और टीकाकारोंको आशीर्वाद दें।

उष्णोदकं साधुजनाः पिबन्ति
मनोवचःकायविशुद्धिलब्धम्।
एकान्ततस्तत्पिबतां मुनीनां
षड्जीवघातं कथयन्ति सन्तः ॥ २१५ ॥
हतं घटीयन्त्रचतुष्पदादि-
सूर्येन्दुवाताग्निकरैर्मुनीन्द्राः।
प्रत्यन्तवातेन हतं वहच्च
यत्प्रासुकं तन्निगदन्ति सन्तः ॥ २१६ ॥
भवत्यवश्यायहिमांशुधूसरी-
घनाम्बुशुद्धोदकविन्दुसीकरान्।
विहाय शेषं व्यवहारकारणं
मनीषिणां वारिविशुद्धिमिच्छताम् २१७
उष्णोदकं प्रतिगृहं यदकारिलोकै-
तच्छ्रावकः पिबति नान्यजनः कदाचित्।
तत्केवलं मुनिजनाय विधीयमानं
षड्जीवसन्ततिविराधनसाधनाय ॥२१८॥

ये चारों श्लोक जलशुद्धिविषयक हैं। एक श्लोक इस विषयक औरभी है, जिसकी भाषाटीका की गई है, वह यह है

स्पर्शेनवर्णेनरसेन गन्धा-
द्यदन्यथा वारिगतं स्वभावम्।
तत्प्रासुकं साधुजनस्य योग्यं
पातुंमुनीन्द्रा निगदन्ति जैनाः ॥२१४॥

इन श्लोकोंके अर्थपर विचार करनेसे जिसे हमने आगे लिखा है, सहजही समझमें आ जाता है कि, आचार्योंके अभिप्रायोंपर हरताल फेरनेवाले महात्माओंने इन्हें लिखनेके

योग्य क्यों नहीं समझा । जिनबेचारोंकी बुद्धि "**कीटभृंगकीनाई**" हो रही है, जिन्हें अपनी करतूतोंके समान पदपदपर भगवद्वचनोंमेंभी पाखंड सूझता है, और गंभीर विचारोंसे जो सर्वथा खाली तथा कुंठितबुद्धि हैं, उन सज्जनोंकेद्वारा जैनसमाजके उपकारकी इसकेसिवाय और क्या आशा कीजा सकती है ? क्योंकि, "**अपुष्कलाहिविधास्यादवन्नैकफलाकचित्**" पर अन्तमें सत्यकी जय होती है । जो यथार्थ है, वह यथार्थ रहेगा, अयथार्थकी पोल आज नहीं तो कल अवश्य खुलेगी कोई कहांतक उसपर पर्दा डालेगा ।

आजकल बहुत थोड़े लोग ऐसे हैं, जो प्रासुकजलके विधानको अच्छीतरहसे जानते हैं । और गत दूसरे अंकमें एक विद्यार्थीका इस विषयमें एक लेखभी छपा है । अतएव इस मौकेपर उपर्युक्त श्लोकोंसे बहुत कुछ लाभ होनेकी संभावना जानकर हम उनका स्पष्टीकरण किये देते हैं;

उक्त पांच श्लोकोंमेंसे प्रथम दो श्लोकोंमें पीनेयोग्य जलका तथा तीसरे चौथे श्लोकमें शौचक्रियाके योग्य जलका निर्णय किया है और पांचवेंमें विशेष विधिका वर्णन है

२१४ जिस जलके स्पर्श, रस, गंध, वर्ण अन्यथारूप हो जाते हैं, वह जल साधुओंके पीनेके लिये प्रासुक है ।

२१५ मन वचनकायकी विशुद्धिपूर्वक प्राप्त हुए जलको साधुजन पीते हैं । परन्तु एक अंत (भंग) से प्राप्त हुए जलके पीनेसे मुनियोंके अहिंसाव्रतका घात होता है । इस श्लोकमें साधुओंके लिये उस उष्णजलके पीनेका विधान है, जो मन, वचन, कायकी कृतकारित अनुमोदना त्यागरूप विशुद्धिसे प्राप्त हुआ है । किन्तु नौ भंगोंमेंसे किसी एक भंगसे प्राप्त हुए जलको पीनेसे अहिंसाव्रतका घात होता है ।

२१६ जो जल घटीयंत्रसे, चोपायोंसे, सूरज, चन्द्रमा और वातप्रेरित अग्निकी किरणोंसे तथा आंधीसे ताड़ित हुआ हो, तथा बहता हुआ हो, उसको मुनीन्द्र अर्थात् तीर्थंकरदेव प्रासुक कहते हैं ।

२१७ पाला और वर्फके कणोंसे धूसरीभूतजल, मेघोंकाजल, और कुहराके जलको छोड़कर शेषजल व्यवहार (शौचादि) के लिये प्रासुक है ।

इन दो श्लोकोंमें पालादिकके जलको छोड़कर घटीयंत्रादिकोंसे ताड़ितजलको शौचादि व्यवहारोंके लिये प्रासुक बतलाया है ।

२१८ जिस जलको लोग घरोंमें गरम करते हैं, वह श्रावकोंकेही पीने योग्य है । केवल मुनिजनोंके लिये उष्ण किया हुआ जल उनके अहिंसाव्रतका घातक है ।

इस श्लोकका भाव यह है कि, उस जलको मुनिजन ग्रहण नहीं कर सक्ते, जो उन्हींके उद्देशसे गरम किया जाता है । क्योंकि, ऐसा करनेसे उनके व्रतमें दूषण आता है । परन्तु इसप्रकारका जलव्रती श्रावक ग्रहणकर सक्ते हैं । **इत्यलम्** ।

महाविद्यालयपर वज्रपात

प्यारे पाठको भूलाभटका एक पथिक किसी जंगलमें जा निकला वहां क्या देखता है कि, बांसोंकी झाड़ीके बीचमें एक छोटासा बाग है बागका एक छोटासा परकोटाभी बना हुआ है उस परकोटेके नीचे बागके चारोंओर एक छोटीसी नहर बहरही है जिसमें छोटी २ नालियोंद्वारा बागमें जल पहुंचकर उन छोटे छोटे पौदोंको सींचरहा है पथिक बागमें घुसगया और बागके छोटे २ पौदोंको देखकर मनमें खुशी होने लगा दैवयोगसे बांसोंके परस्पर घिसनेसे वनमें दावानल उत्पन्न होगई इधरमें पवनभी जोर २ से चलने लगी पवनका निमित्त पाकर अग्निदेवतानेभी भयानक रूप धारण किया चारों ओर अग्निही अग्नि दीखने लगी परन्तु उक्त नहर और परकोटेके निमित्तसे बागमें अग्निदेवताका प्रवेश नहीं होसका तथापि उसकी जाज्वल्यमान लपटोंने उन छोटे २ पौदोंको झुलसादिया क्रमसे अग्निका जोर घटा और धीरे धीरे शान्त होगई लपटोंकी झुलसने अभीतक उन पौदोंका पीछा नहीं छोड़ाथा कि, चारों ओरसे भयानक कालीघटाओंने बागको घेर लिया पथिक आशान्वित होकर फूलकर कुप्पा होगया मेघोंने बड़े जोरशोरसे गर्जना प्रारंभ किया दोचार बूंदेंभी टपकी परन्तु थोडीही देरमें मेघोंने विलक्षण स्वरूप धारण किया पानीकी वर्षातो दूरही रही अब मेघोंको फाड़कर चपला अपने चंचल चमत्कारसे बागको डराने लगी मालूम होता था कि, "अब बागपर वज्रपात हुआ" "अब बागपर वज्रपात हुआ" इस अवस्थाको देखकर पथिकने गद्गद स्वरसे यह काव्य पढ़ा

> एतेषु हा! तरुणमारुतधूयमान- ।
> दावानलैः कवलितेषु महीरुहेषु ॥
> अम्भोन चेज्जलद मुञ्चसि मा विमुञ्च ।
> वज्रं पुनः क्षिपसि निर्दय कस्य हेतोः ?

अर्थात्—हे निर्दय मेघ! ये बिचारे पौदे प्रबल पवनसे प्रेरित दावानलसे पहिलेही झुलस रहे हैं अब तू न बरसे तो मतबरस किन्तु वज्रपात करके क्यों अपनी निर्दयताका परिचय देता है? प्यारे पाठको आज ठीक ऐसीही अवस्था हमारे महाविद्यालयकी हुई है, जैनसमाजके कुछ परोपकारी महानुभावोंने बड़े परिश्रमसे महाविद्यालयरूपी एक छोटासा बाग लगाया था इस महाविद्यालयरूपी बागके विद्यार्थीरूपी पौदोंको सींचनेके लिये ध्रुवभंडाररूपी नहरकीभी स्थापना कीगई थी कि, जिसकी व्याजरूपी नालियोंद्वारा महाविद्यालयरूपी बागको सहायतारूपी जल पहुंचता था कुछदिन पीछे आसपासके महात्मारूपी बांसोंके परस्पर झगड़नेरूप घर्षणसे ईर्षा और द्वेषरूपी अग्नि प्रगट हुई थी परन्तु ध्रुवभंडाररूपी नहरके प्रभावसे महाविद्यालयरूपी बागका निर्मूल नाश नहीं हुआ किन्तु दुष्प्रबन्धरूपी लपटोंने महाविद्यालयरूपी बागको झुलसा दिया इतनेही में सहारनपुरके अधिवेशनरूपी घनघोर घटा उठी जिससे आशा हुई थी कि, द्रव्यरूपी

वर्षाके निमित्तसे महाविद्यालयरूपी बागको सहायता मिलेगी वक्तारूप मेघोंने लेक्चररूपी गर्जनाभी खूबकी थोड़ी सहायतारूप दोचार बूंदेंभी टपकीं परन्तु अकस्मात् अधिवेशनरूपी घटामें हाईस्कूलरूपी चपला चमकने लगी इस चपलाका चमत्कार थोड़ीही देरमें सर्व भारतव्यापी होगया इस कारण आज महासभाके नेतागणोंसे प्रार्थना है कि, महात्मन् यह महाविद्यालय पहलेहीसे आपसके ईर्षा और द्वेषसे अवनत अवस्थाको प्राप्त हो रहा है अब यदि आपसे सहायता न होसके तो न सही किन्तु हाईस्कूलकेद्वारा इस दीन हीन **महाविद्यालयपर वज्रपात** करके क्यों अपनी निर्दयताका परिचय दे रहे हो आपकी इस नीतिके प्रमाणमें हमारेपास बाबू बनारसीदासजी जौइंटजनरल सैक्रेटरीकी रिपोर्ट (जो कि, आगामी अंकमें छापी जायगी) आई है उससे प्रगट होता है कि, वसंत पंचमीके शुभमुहूर्तमेंही **महाविद्यालयपर वज्रपात** होगा अर्थात् महाविद्यालय शब्दको जैनकालेजके रूपमें परिवर्तन करके उसके दो विभाग किये जांयगे एक हाईस्कूलविभाग दूसरा संस्कृत विभाग महाविद्यालयकी सब आमदनीका अनुमान ७००) का किया गया है जिसमेंसे अनुमान ७९) संस्कृत विभागमें और अनुमान ६२१) हाईस्कूल विभागमें खर्च किये जांयगे भाईयो! सावधान हो जाओ और यथाशक्ति अपने इष्ट महाविद्यालयको इस वज्रपातसे बचानेका प्रबन्ध करो।

श्री वीतरागायनमः

भारतवर्षीय दिगम्बरजैन धर्मसंरक्षणी महासभाके

सहारनपुरके अधिवेशनपर.

सभापति दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंदजी जौहरीका

व्याख्यान.

दोहा।

जय जय जय श्री वीरजिन सकल सिद्धि करतार।
धर्मसमाज सुधारहित प्रणमों वारंवार॥

इसप्रकार इष्टदेवको नमस्कार करनेके अनन्तरही प्रथम मैं उनमहानुभावोंका आभार मानताहूं कि, जिन्होंने समाज और धर्मकी हितकामनासे इस महासभाका अंकुरारोपण कियाथा। मै राजालक्ष्मणदासजी सी. आई ई. और मुंशी चम्पतिरायजीडिपुटीमजिस्ट्रेटको विशेषत: धन्यवाद देताहूं कि, जिन्होंने अपने अलौकिक प्रेम और अतुलपरिश्रमसे महासभाका कार्य सम्पादन करके धर्म और समाजका हितसाधन किया है महासभाके सभ्योंने इसपदके योग्य नहोनेपरभी जो मुझे इस महासभाका अध्यक्षस्थान देकर अपना अनुपमप्रेम दर्शाकर मेरा गौरव बढाया है उसका मैं बड़ा आभारी हूं.॥

आज अनुमान दसवर्षसे महासभाने जो

कुछकाम किये हैं । उनको देखकर संतोष होता है और आशा होती है कि, यदि इसही प्रकार इसका कार्य बराबर चलता रहा. तो उसके उद्देश्य पूर्णरूपसे सफलताको प्राप्त होंगे. महासभाके मूल उद्देश्य दो हैं एक **धर्मोन्नति** और दूसरा **लौकिकोन्नति** यद्यपि लौकिक कार्योंमें स्थिर न होनेसे धर्मकीओर परिणामोंका झुकाव होना कठिन है. परन्तु उदरज्वाला और विषयलालसा इस प्राणीको लौकिक उन्नतिकी निरंतर प्रेरणा करती रहती है. किन्तु यह जगत अनादिसन्तानसे अज्ञान और मोह वश अपने स्वरूपको भूल विषयवासनामें तल्लीन होकर धर्ममार्गसे विमुख होरहा है । इसकारण अपने भाइयोंको धर्मके सन्मुख करना मुख्य उद्देश्य है. परन्तु इसका अर्थ ऐसा नहीं है कि, लौकिक उन्नतिसे बिलकुल अलग रहना किन्तु गौणरूपसे लौकिक उन्नतिमेंभी तत्पर होना समुचित है. मैं अपने व्याख्यानको संक्षेपरूपसे चार भागोंमें कहताहूं. अर्थात् **१ तीर्थक्षेत्रकमेटी, २ विद्याविभाग, ३ एकता,** और **४ कोष,** जिनका क्रमसे कथन करूंगा.

१ तीर्थक्षेत्र कमेटी

तीर्थक्षेत्रोंकी अवस्थाका समाचारपत्रोंमें विशेषरूपसे आंदोलन हो चुका है इसकारण इस विषयको कहकर आपका समय नष्ट करना नहीं चाहताहूं । इन तीर्थक्षेत्रोंका सुधार करनेके लिए महासभाकी ओरसे कुछ वर्ष पहिले एक तीर्थक्षेत्र कमेटी नियत कीगई थी । जहांतक होसका वहांतक कमेटीके मंत्रीयोंने तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्त्ताओंको समझाया परन्तु जिसजगह उनके इस सरलमंत्रका बल नहीं चलसका उसजगह उन्होंने किसी युक्तिपूर्वक वक्रमंत्रकाभी प्रयोग किया और उसमें नानाप्रकारके विघ्नभी आए किन्तु धर्मके प्रभावसे उसमें उचित सफलता प्राप्त हुई । और इसही प्रकार यदि इस कमेटीका कार्य बराबर चला गया तो आशा है कि, समस्त तीर्थक्षेत्रोंका सन्तोषजनक प्रबन्ध होजायगा. और इस सुधारके यशके पात्र महासभाके कार्यकर्त्ताही होंयगें । आराबालोंनेभी सुलहकरके जो इसकार्यमें सहायता पहुंचाई है उसकेवास्ते जैनसमाजकी तरफसे मैं धन्यवाद देताहूं । परन्तु यहांपर खेदकी बात यह है कि, महासभाके कार्याध्यक्ष इसविषयमें कुछभी उत्साह नहीं दिखाते. आजतक इस कमेटीका कार्य प्रान्तिक सभा बम्बईके क्लार्क द्वारा लिया गया परन्तु सदाकेवास्ते ऐसा नहीं होसकता इसकारण महासभाके बजटमें इस कमेटीकेवास्तेभी एक वर्षके खर्चको कमसेकम रु० ६००) क्लार्क और पत्रव्यवहारकेवास्ते स्वीकार होना चाहिये अन्यथा इसकार्यके चलानेकी आशा नहीं है.

२ विद्याविभाग.

जिसप्रकार शरीरके अंगोंमें नेत्र प्रधान है; उसहीप्रकार धर्मके अंगोंमें विद्याविभाग सर्व प्रधान है और हर्षका विषय यह है कि, महासभाने यह कार्यभी अपने हाथमें ले रक्खा है । इस विभागका प्रबंध अच्छा

चलानेके लिये विद्याविभागका मंत्री ऐसा होना चाहिये कि, जो जैनधर्मका मर्मज्ञ हो, प्रबंधशैलीका ज्ञाता हो, और राजविद्यासेभी अपरिचित न होय. इस विद्याविभागके दो अन्तरविभाग हैं, एक **विद्यालयविभाग** दूसरा **परीक्षालयविभाग** विद्यालयविभागमें पहले विद्यालयके स्थानविषयमें वक्तव्य है इस विद्यालयके वास्ते ऐसे स्थानकी आवश्यकता है कि, जहांपर जैनी बालक सुगमतासे आसकें, जैनग्रंथोंकी, अध्यापकोंकी, तथा प्रबंधकर्ताओंकी कमी न होय, कम खर्चीमेंभी जहां गुजारा होसके, और जहांका हवापानीभी अच्छा होय। ऐसा स्थान मेरी समझमें एक **जयपुर** जिसको किसी अपेक्षा **जैनपुर** कहना चाहिये, ही है।

बड़े उत्साहकी बात है कि, हमारे उत्साही ग्रज्युएटभाई अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. जो कि, २००) मासिककी आमदनी छोड़कर महाविद्यालयकी सेवार्थ अपने शेषजीवनको समर्पण करनेको उद्यमी हुए हैं वेभी जयपुरके निवासी हैं इसी जयपुरमें **जयचन्दजी, टोडरमल्लजी, नन्दलालजी, सदासुखजी, मन्नालालजी,** आदि बड़े २ विद्वान् होगए हैं इसवास्ते महाविद्यालयकेवास्ते जयपुर अथवा भारतवर्षके सब जैनीभाइयोंको जो स्थान अनुकूल होय वह निश्चित करना चाहिये। दूसरा यहवक्तव्य है कि, महाविद्यालयका पठनक्रम सब भाइयोंकी संमतिसे निश्चित होकर उसके अनुसार पढाई कीजावे। दूसरे परीक्षालयके विषयमें यह कहना उचित है कि, परीक्षालयका कार्य बहुतही उत्साहकेसाथ और नियमसे होना चाहिये।

परीक्षालयके मंत्रीके हाथनीचे एक इन्सपेक्टर होना चाहिये जो आठमास दौरा करता रहे और बालबोध पाठशालाओंकी परीक्षा लिया करै। तथा प्रवेशिका पाठशाला और विद्यालय, और महाविद्यालयोंकी देखरेख करै। परीक्षालयका क्रम सर्वत्र प्रचिलित करै, और अपनी मासिक रिपोर्ट जैनगजटद्वारा प्रकाशित करै आठमहिने दौरा करके चार महिने मंत्रीपरीक्षालयके निकट रहै और वार्षिक परीक्षामें उसको सहायता देवे मंत्री परीक्षालयकेपास एक छोटासा पुस्तकालयभी होना चाहिये कि, जिसमें बालबोधसे लगाकर शास्त्रीयपरीक्षा तकके सर्व ग्रंथ मिलसके। और जिसको ग्रंथ मंगानेकी आवश्यकता होय वह मंत्रीपरीक्षालयसे मंगालेवे. और इसकार्यकेवास्ते खर्चकी तजवीजभी होनी चाहिये।

एकता.

एकता एक ऐसा मंत्र है कि, जिससे बड़े बड़े कष्टसाध्य कार्यभी सुसाध्य होते हैं. बल्कि ऐसे हजारों दृष्टान्त देखनेमें आते हैं कि, एकताके निमित्तसे बड़े कठिन काम साध्य होचुके हैं। परन्तु जिनमतमें अनेकांत एक ऐसा पदार्थ है कि, जिसकेबिना लौकिक तथा पारमार्थिक कोईभी काम नहीं होसक्ते. यह एकताभी अनेकान्त शून्य नहीं है. अर्थात् जिनमें एकता होनेकी योग्यता है उनमेंही एकता करनेसे कार्यकी सिद्धि होसक्ती

है. जैसे अनेक सूतोंको बटकर उसका एक मजबूत रस्सा बनासक्ते हैं. इसही प्रकार मनुष्योंकी एकताभी समझना. इसपर ध्यान देकर हरेक कार्य आप एकतासे करके लौकिक और धार्मिक उन्नति करैं ।

कोष ४

यह कोष एक ऐसा पदार्थ है कि, जिसके विना कुछ काम नहीं होसक्ता सभाका कोष पुष्ट होगा तो सभाके समस्त कार्य पुष्ट होंगे ।

हमारे भाईयेंमें धनकी कमी नहीं है सैकड़ो बल्कि हजारों लक्षाधीश विद्यमान हैं. हममें उदारताकीभी कमी नहीं हैं क्योंकि, प्रतिवर्ष लाखों रुपये हमारे धर्मकार्योंमें खर्च होते हैं। कमी केवल इसबातकी है कि, हम यह नहीं जानते कि, इससमय धर्मके किस अंगमें रुपया खर्च करना चाहिये अथवा यदि यह बातभी किसीको माल्हम होगई तो उनको इसबातका विश्वास नहीं है कि, हमारे रुपयेका यथार्थ उपयोग हुवा. परन्तु उनको विश्वास रखना चाहिये कि, महासभा जिनजिन कार्योंको सम्पादन कररही है वह सब धर्म और समाजके हितकेवास्ते है इसलिये उसे यथार्थमेंही उपयोगी समझकर भाईयोंको द्रव्यसहाय अवश्य देना चाहिये ।

समाजोन्नतिके कार्य वर्षो चलानेसेभी पूरे नहीं होसक्ते. परन्तु सैंकड़ो वर्षतक बहुत प्रयत्न, स्वार्थत्याग और द्रव्य खर्चकरनेसे होते हैं इससे माल्हम होता है कि, महासभाने दसवर्षमें जो कुछ करके बताया है सो द्रव्य, क्षेत्र, कालकी अपेक्षासे बहुतही उत्तम किया है. तोभी यह सर्व संमत बात है कि, अभी महासभाको बहुत कुछ कार्य करना बाकी है। और मैं आशा करता हूं कि, आप इस महासभाके कार्यमें तन, मन, धनसे, पूरी सहायता देते रहेंगे तो थोडेही दिनोंमें इससे बहुत गुणाअधिककार्य होगा अब समय बहुत होगया और सभाको अभी बहुत कार्य करने हैं इसलिये मैं अपने व्याख्यानको समाप्त करनेके पहिले लाला **खूबचंदजी** रहीसको धन्यवाद देताहूं कि, जिन्होंने इतना परिश्रम उठाकर और द्रव्य खर्चकर महासभाको आमंत्रण किया. और ऐसेही रिसेपूशन् कमेटीका आभार मातना हूं कि, जिन्होंने अपने सबकेवास्ते बहुत कुछ अच्छा प्रबन्ध किया है । अन्तमें आप सब साहिबोंसे प्रार्थना करता हूं कि, यदि मेरे कहनेमें कहीं भूल होगई होय तो आप अपने उदार स्वभावसे मुझे क्षमा करे ॥

पक्षपात और खुशामद.

एक नीतिकारका वाक्य है कि,—

गुणानगृह्णन् सुजनो न निर्वृतिम्
प्रयातिदोषानवदन्न दुर्जनः

अर्थात् सज्जन गुणोंका और दुर्जन दोषोंका ग्रहण कियेविना सन्तुष्ट नहीं होता परन्तु दूसरे नीतिकार इसके विरुद्ध कहते हैं कि——

शत्रोरपि गुणावाच्या दोषावाच्या गुरोरपि

अर्थात् गुण शत्रुकेभी कहने चाहिये और दोष बड़ोंकेभी कहने चाहिये.

अब इन दोनों वाक्योंको देखकर हमारे बहुतसे भोलेभाई समझेंगे कि, इसमें विरोध है. परन्तु यह उनकी भूल है हमारे जिनमतमें अनेकान्त एक एसा मंत्र है कि, जिससे बड़े२ कष्टसाध्य वाक्यभी सुसाध्य होजाते हैं. यह उपर्युक्त विरोधाभासभी इसही अनेकान्तमंत्रसे दूर भाग जाता है अर्थात् अपने कषाय पुष्ट करनेकेवास्ते परनिन्दाके अभिप्रायसे दूसरेके दोष कहना निन्द्य है किन्तु हेयका त्याग कराने और उपादेयका ग्रहण करानेके उपदेशमें दोषोंका कहना निन्द्य नहीं है सोही अमृतचन्द्रस्वामीने सत्यव्रतका निरूपण करतेसमय कहा है कि, जो वचन सत्यभी है परन्तु अप्रिय होनेपर उसकी संज्ञा असत्यही है. किन्तु आगे चलकर एक कारिकामें कहते हैं कि,

हेतौ प्रमत्तयोगे निर्दिष्टे सकलवितथवचनानाम्।
हेयानुष्ठानादेरनुवदनं भवति नासत्यम् १

अर्थात् प्रमत्तयोगपूर्वक (कषायपूर्वक) जो अप्रिय कर्कश आदिवचन कहे जाते हैं वेही असत्य हैं। हेयोपादेयके उपदेशमें जो कर्कशादि वचन कहे जाते हैं वे असत्य नहीं हैं जैसे शिष्यके पाठ याद न करनेपर अध्यापक उसको नानाप्रकारके कर्कश अप्रियवचन कहता है तथा पिता पुत्रको सुमार्गमें लानेके लिये अत्यन्त कठोर शब्द कहता है. परन्तु उन बचनोंको असत्यसंज्ञानहीं है क्योंकि, अध्यापक और पिताका अभिप्राय खोटा नहीं है किन्तु शिष्य और पुत्रको सुमार्गमें लानेका अभिप्राय है. अकलंकस्वामीने बौद्धोंको बादमें जीतकर पैरकीठोकरसे उड़ादिया उसका स्पष्टीकरण अकलंकाष्टकमें इसप्रकार किया है कि,

नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलं।
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जने कारुण्यबुद्धया मया।
राज्ञः श्रीहिमशीतलस्य सदसि प्रायोविदग्धात्मनो।
बौद्धोघान् सकलान्विजित्य सुगतः पादेन विस्फालितः१

हमारे बहुतसे भोलेभाइयोंकी एसी समझ है जो उपर्युक्त अनेकान्तको जलांजुलि दे एकान्तका अवलम्बन कररही है वे समझते हैं कि, दोषोंके ढकनेमें कछ भलाई है परन्तु यह उनकी भूल है दोषोंके ढकनेसे दोषोंकी उन्नति होकर समाजका अहित होता है. यहां पर पाठकोंके विनोदार्थ एक दृष्टान्त लिखा जाता है कि, एक नाई किसी भलेआदमीकी हजामत बनाने गया नाईने भलेआदमीकी चांद घोंटघांटकर खूब चिकनी करदी घुटी हुई चांदको देखकर नाईके दिलमें आया कि, देखें घुटी चांदपर उंगलीका टकोरा कैसा लगता है एसा विचारकर उसने एक टकोरा जमाही दिया पहले हमेशा वे भलेआदमी उस नाईको दोपैसे दिया करते थे परन्तु अबके उसको चार पैसे दिये. नाईराम फूलकर कप्पा होगये कुछदिन पीछे हमारे नाईराम किसी सरदारकी हजामत बनाने गये. नाईरामने जो प्रयोग भलेआदमीकेसाथ कियाथा उसहीका अमल सरदारसाहबके साथभी किया. फिर क्याथा सर्दारसाहबका क्रोध उवल उठा उन्होंने नाईरामको इतना पीटा कि, उसको होशभी नहीं रहा.

पाठक समझगये होंगे कि, भले आदमीने नाईरामको दोकी जगह चारपैसे देकर उसके-

साथ मित्रताकी अथवा शत्रुता बस कहनेका प्रयोजन यह है कि, जो महाशय खुशामदके चक्करमें पड़कर पक्षपात ग्रहके वशीभूत कार्यकर्ताओंकी हां में हां मिलाते हैं वे उनके साथ भले आदमीकी तरह मित्रता नहीं करते किन्तु शत्रुता करते हैं हमारे बहुतसे भाई हमारे पत्रमें मिथ्या पक्षपातियोंके दोषोंकी कड़ी समालोचना देखकर हमपर कठोर लेखकताका मिथ्या आक्षेप करते हैं उनसे प्रार्थना है कि, वे इस लेखको बांचकर अपना भ्रम निकाल डालें. पत्रसम्पादकका मुख्य कर्तव्य यही है कि, खुशामदके चक्करमें न पड़कर पक्षपातियोंकी सच्ची समालोचना करै

महासभाको नोटिस

पाठक महाशय आप अभी भूले नहीं होंगे कि, शिखरजीकी ऊपरैली त्रीसपंथी कोठीके प्रबन्धकर्ताओंने शिखरजीके भंडारका द्रव्यदाताओंके अभिप्रायसे विरुद्ध दुरुपयोग करना चाहाथा जिसके विपक्षमें दक्षिण प्रांतके कुछ महाशयोंने अदालतमें मुकद्दमा चलाया था दक्षिणी और पुरवियोंमें कुछदिन खूब तनातनी चली दक्षिणी मुद्दई थे और पुरविये मुद्दाअले धर्मके प्रभावसे दक्षिणियोंकी जय हुई पुरविये हारे अबके सुननेमें आया है कि, महासभाके कर्ताधर्ताओंनेभी महाविद्यालय भंडारका द्रव्यदाताओंके अभिप्रायके विरुद्ध दुरुपयोगका विचार किया है यह बात आबालगोपाल प्रसिद्ध है कि, महाविद्यालय धार्मिकविद्याकी उन्नतिकेवास्ते स्थापित हुआथा अब हमारे नव शिक्षित पश्चिमी विचारासिक महाशयोंने उक्त भंडारको अँगरेजी विद्या पढ़ानेमें व्ययकरनेका बीड़ा उठाया है सो यदि यह बात सत्य है तो महासभाके मुख्य अध्यक्षोंको सूचना दीजाती है कि, आप मेहरबानी करके इसगंदी कार्रवाहीसे बाज आवें जिस अभिप्रायसे द्रव्यदाताओंने जो रु० दिया है उसका उसही अभिप्रायसे सदुपयोग कीजिये वर्ना याद रखिये कि, शिखरजीके मुकद्दमेमें जो गति पुरवियोंकी हुई वही आपकी होगी शिखरजीके मुकद्दमेमेंभी फैसलेसे पहिले विपक्षियोंका पक्ष लेकर महासभाके महा तथा जौइंट मंत्रियोंने बड़ी २ डींगें हांकीं थीं परन्तु मालूम होता है कि, फैसला होनेपरभी अभी उनकी आखें नहीं खुलीं हैं परन्तु खैर कुछ हरकत नहीं अबभी दक्षिणियोंने शस्त्र खोलकर नहीं रखदिये हैं अभीतक कमर कसे हुए हैं आशा है कि, महासभाके नेतागण इस विषयमें शीघ्रही अपना स्पष्ट अभिप्राय जैनगजटद्वारा नीचे अपने हस्ताक्षरसहित प्रगट करेंगे।

आपका वही एक दक्षिणी

कन्याओंकेलिये हितकारिणी शिक्षायें।

आजकल सभ्यताकी परिभाषा कुछ विलक्षणही कही जाती है। जो लोग अपने पूर्वजोंकी रीति नीति और विचारोंपर कुठार मारके केवल ऐहिक सुखोंकी लालसामें भटकते फिरते हैं और परलोकसे जिनका कोई सरोकार नहीं है, वेही आजकल सभ्य कहलाते हैं। सभ्यदेशों और सभ्यपुरुषोंके विचारमें स्त्री और पुरुष दोनों समान अधिकारी हैं, इसलिये स्त्रियोंको स्वतंत्रताकेसाथ विचरने देना यह उनका प्रधान लक्ष्य

है । और स्त्री तथा पुरुषोंको समान स्वतंत्रता दियेविना देशकी उन्नति नहीं होसकती यह सभ्य पुरुषोंका परमसिद्धान्त है । परन्तु देखते हैं कि, आज सभ्यशिरोमणि जापानने इन सभ्योंके सिद्धान्तोंपर सर्वथा पानी फेरदिया है । उसने अपने पूर्वजोंकी रीतिनीतिपरही चलकर तथा स्त्रियोंको मर्यादाके भीतरही रखकर अपनी ऐसी उन्नति की है, जिसे देख और सुनके लोगोंको आश्चर्यान्वित होना पड़ता है । आज बड़े २ सभ्यदेशोंके विद्यार्थी जापानमें शिक्षा लेनेके लिये जाते हैं । सो उसने संसारको सिद्धकरके बतला दिया है कि, अपने पूर्व पुरुषोंका अनुसरण करनेसेही सच्ची उन्नति होसकती है ।

जापानकी अनेक नीतिरीतियां हमारे देशकी रीतिनीतियोंसे मिलती हैं । वहां स्त्रियोंको मर्यादामें रखना यह हमारे देशके समानही मान्य है । परन्तु हमारे यहांके नये बाबूलोगोंको यह बात पसंद नहीं है । वे स्त्रियोंके हाथमें हाथ मिलाकर चलेबिना उन्नति करना असंभव बतलाते हैं । सो अब उन्हें आंखे खोलके देखना चाहिये कि, जापानने स्त्रियोंको मर्यादामें रखकेही उन्नति की है ।

जापानी स्त्रियां किसमर्यादासे रक्खी जाती हैं, यह जाननेके लिये हम "जापानी माताओंकी शिक्षायें" जो कि, वे पाणिग्रहणके समय अपनी कन्याओंको देती हैं, यहां उद्धृत करते हैं । ये शिक्षायें हमारे देशकी कन्याओंके सर्वथा सीखनेयोग्य हैं, और बड़ी सुन्दर हैं । पाठक विचारें कि, इन शिक्षाओंका जापानी कन्याओंके हृदयपर कैसा अच्छा असर पड़ता होगा और वे कैसी सुयोग्य और मर्यादाशील स्त्रियां बनती होंगी ।

१ प्यारी बेटी ! जिस मुहूर्तमें तेरा पाणिग्रहण हुआ, उसी समयसे तू पराई हो चुकी । अब तुझे चाहिये कि, जिसप्रकार हमारे आधीन रहती आई है, उसी प्रकार अपने नवीन मातापिता अर्थात् साससमुरके आधीन रहके जीवन निर्वाह कर ।

२ विवाह सम्बन्धसे जो तुझे सर्वोपरि स्वामी अर्थात् पति मिला है, उसके साथ निरन्तर नम्रता और पूज्यतासे रहना । स्त्रियोंमें सबसे उत्तम, कल्याणकारी और प्रशंसनीय गुण यदि कोई है, तो वह एक पतिसेवाही है ।

३ अपनी नवीन माता अर्थात् सासकी आज्ञाकारिणी सदा रहना और उसके सन्मुख निरन्तर प्रसन्न मुख रहना ।

४ किसी समय किसीसे ईर्षा नहीं करना । क्योंकि, ईर्षासे पतिके ऊपर स्त्रीका जो स्वाभाविक प्रेम होता है, वह नष्ट होजाता है ।

५ किसी झगड़े अथवा वादविवादके समय पतिका यदि कोई अपराधभी हो, तो उससमय क्रोधित न होकर क्षमा और धीरतासे काम लेना । पश्चात् जिससमय पति शान्त हो जाय, उससमय एकान्तमें सरलता और नम्रतासे उसकी भूल उसे समझा देना ।

६ मेरी स्यानी बेटी ! अधिक बातचीत करना और किसीके बीचमें व्यर्थही बड़बड़ करने लगजाना अच्छा नहीं है । इसलिये तू मितभाषिणी होकर समय देखके बोलनेकी वान डालना । अपने पड़ौसीसे कभी कडुवा नहीं बोलना और कदापि काल किसीसे झूठ नहीं बोलना ।

७ सबेरे सबसे पहले उठना और रात्रिको सबसे पीछे सोनेको जाना । शराब वगैरह पीनेकी बुरी आदतोंसे आप बचना और अपने प्यारेपतिको बचाये रखना । जब तक ५० वर्षकी उमर नहो जावे, तबतक

किसी आमजल्से और मेलेमें नहीं जाना, तथा मर्दोंके टोलोंमेंभी कभी नहीं जाना।

८ किसीभी ज्योतिषी अथवा भविष्यवादीसे अपने भाग्यकी बात नहीं पूछना तथा हाथकी रेखादिभी नहीं दिखाना।

९ अपनी गृहस्थीका कार्य बड़ी सावधानीसे चलाना। घरका कोईभी कार्य किसीके भरोसे नहीं छोड़ देना। फिजूल खर्ची और कोरी दिखावटसे बचे रहना।

१० यद्यपि अभी तेरी युवावस्था है, और युवावस्थामेंही तेरा विवाह हुआ है। तौभी युवाजनोंकी मंडलीमें कभी शामिल नहीं होना। गुरुजनोंकी संगति तथा सेवामें रहना।

११ अतिशय झीने, चमकते हुए तथा टामटीम वाले कपड़े कभी नहीं पहिरना। अपने वस्त्राभूषण ऐसे रखना जिनसे स्वच्छता और मर्यादाकी रक्षा होती रहै। सम्पूर्ण वेष साधा और सरल रखना।

१२ और सुशीला बेटी! अन्तिम शिक्षा यह है कि, अपने पिताकी प्रतिष्ठा और धनदौलतका घमंड कभी नहीं करना। और न कभी उस घमंडका इशारा अपने पति तथा उसके मित्रोंके सन्मुख करना।

लक्ष्मी-स्वभाव।

गुणिनं जनमालोक्य
निजबन्धनशङ्कया।
राजँल्लक्ष्मीः कुरङ्गीव
दूरं दूरं पलायते॥ १॥

भावार्थ—हे राजन्! लक्ष्मीगुणीजनोंको देखके अपने बंधजानेकी शंकासे मृगीकेसमान उससे दूर २ भागती है। अर्थात् जैसे हरिणी गुणी अर्थात् रस्सीवाले व्याधको देखके भागती है, कि, कहीं मुझे बांध न लेवे, इसी प्रकार गुणवान् पुरुषके पास लक्ष्मी नहीं जाती। उसे डर है कि, यह बुद्धिमान् किसी युक्तिसे मुझे हमेशाकेलिये बांध लेगा। मूर्ख मनुष्य लक्ष्मीको स्थिर नहीं रख सकते, वह जब चाहे तब उनके यहांसे चल देती है।

कुटिला लक्ष्मीर्यत्र
प्रभवति न सरस्वती वसति तत्र।
प्रायः श्वश्रूस्नुषयो-
र्नदृश्यते सौहृदं लोके॥ २॥

भावार्थ—सरस्वती और लक्ष्मीका सासु बहूका नाता है। इसलिये जहां कुटिला लक्ष्मी रहती है, वहां सरस्वती अर्थात् विद्या नहीं रहती। क्योंकि, संसारमें यह बात प्राय: देखी जाती है कि, सासु बहूका स्नेह नहीं रहता। सारांश यह है कि, धनवान् बुद्धिमान् नहीं होते।

समायाति यदा लक्ष्मी-
र्नारिकेल फलाम्बुवत्।
विनिर्याति यदा लक्ष्मी-
र्गजभुक्तकपित्थवत्॥ ३॥

भावार्थ—लक्ष्मी जब आती है, तब नारियलके पानीके समान आजाती है, और जब जाती है, तब हाथीके खायेहुए कैथ (कबीठ) के सारभागकी तरह लोप हो जाती

है। अर्थात् नारियलके भीतर पानी कब और कैसे आजाता है, यह जैसे माळूम नहीं पड़ता, इसी प्रकार लक्ष्मीका आना नहीं जान पड़ता। और जैसे हाथी कबीठ खाता है, और फिर उस कबीठका सारभाग न जाने कहांसे और कैसे लोप होजाता है, उसीप्रकार लक्ष्मीका जाना माळूम नहीं पड़ता कि, कहां चली गई।

शूरंत्यजामि वैधव्या-
दुदारं लज्जया पुनः।
सापात्न्यात्पण्डितमपि
तस्मात् कृपणमाश्रये॥ ४॥

भावार्थ—लक्ष्मी कहती है, कि, मैं शूरवीरको विधवा होनेके डरसे, उदार पुरुषको लज्जाके डरसे और पण्डितको सौतके डरसे छोड़ देतीहूं। क्योंकि, शूर न जाने किस लड़ाईमें मारा जावे, और मैं विधवा हो जाऊं, उदार न जाने मुझे किसको दे डाले और मेरी दूसरेके हाथ पड़नेसे लज्जा जावे, और पण्डितके एक सरस्वती स्त्री मौजूद है, वहां जानेसे वह मेरी सौत हो जावे। इन सब कारणोंसे मैं कंजूसके पासही रहती हूं। कंजूस मक्खीचूसोंकेपास लक्ष्मीजीको किसीप्रकारका डर नहीं है।

पद्मे मूढजने ददासि द्रविणं
विद्वत्सुकिं मत्सरो-
नाहं मत्सरिणी नचापि
चपला नैवास्ति मूर्खे रतिः।
मूर्खेभ्यो द्रविणं ददामि
नितरां तत्कारणं श्रूयतां
विद्वान् सर्वगुणेषु पूजित
तनुर्मूर्खस्यनान्यागतिः॥ ५॥

भावार्थ—हे लक्ष्मी! तू मूर्खजनोंको धन देती है, और विद्वानोंसे मत्सरता करती है? अर्थात् उन्हें धनहीन रखती है, सो ऐसा क्यों? (उत्तर) महाशय! नतो मैं मत्सर करनेवाली हूं, और न मेरी मूर्खोंसे प्रीति है, परन्तु मूर्खोंको धन देनेका कारण कुछ दूसराही है। सुनिये! विद्वान् तो सब गुणोंसे पूजित है, उसकी तो जहां चाहे जहां पूजा होती है, परन्तु मूर्खकी दूसरी गतिही नहीं है। अर्थात् उस बेचारेको बिनाधनके पूछेगाही कौन? इसलिये उसे धनसे पूजित बनाती हूं।

अव्यवसायिनमलसं
दैवपरं साहसाच्च परिहीनम्।
प्रमदा पतिमिव वृद्धं
नेच्छति लक्ष्मीरुपस्थातुम्॥६॥

भावार्थ—लक्ष्मीजी, अव्यवसायी (जो कोई रोजगार नहीं कर सकता) आलसी, साहसहीन, और भाग्यका भरोसा रखनेवाले पुरुषकेपास, बूढ़े पतिकेपास स्त्रीकी तरह, रहना नहीं चाहती। अर्थात् स्त्री जैसे अव्यवसायी आदि गुणोंवाले बुड्ढे मर्दको नहीं चाहती, उसी प्रकार लक्ष्मी अव्यवसायी, आलसी पुरुषोंके पास नहीं रहती।

वाक् चक्षुः श्रोत्रलयं लक्ष्मीः
कुरुते नरस्य कोदोषः।
गरलसहोदरजाता
तच्चित्रं यन्नमारयति॥ ७॥

भावार्थ—लक्ष्मीजी विषकी बहिन हैं।

पुरुषोंके साथही वे समुद्रसे निकली हैं । सो यदि मनुष्यकी आंख, कान, और वाणीको नष्ट कर देवें, तो इसमें कोई दोष नहीं है। परन्तु वे सर्वथा मारती नहीं हैं यह आश्चर्य है। सारांश यह है कि, लक्ष्मीके होतेही लोग अन्धे, बहरे (बधिर) और वाक्शक्तिहीन हो जाते हैं।

(बाकी फिर कभी।)

कर्नाटकमें जैनियोंका निवास

(बाबू जैनेन्द्र किशोरजी रहीसआरा द्वारा अनुबादित)

जैनियोंकी समानता बौद्धोंसे अधिक है। कई प्रमाणोंके अनुसार ये लोग बौद्धधर्मके कुमार्गी हैं जो लोग एक बौद्धोंकी सभासे धर्मके बाहर कर दिये गये थे किन्तु यह अधिकतर संभाव्य है कि, यह सम्प्रदाय उसी समय निकला जब बौद्धधर्म निकला था और यह जैनधर्म ईसाके पूर्व्व पंचमशताब्दिके एक तत्वज्ञानके आविर्भावका फल है। जैनी लोग दोश्रेणियोंमें विभक्त हैं अर्थात् दिगम्बरी और श्वेताम्बरी अथवा आकाशवस्त्रधारी और श्वेतवस्त्रधारी पूर्व्वशब्दका अर्थ है–' वायुमण्डलरूप वस्त्रकाधारी " नग्न। जब बड़ा सिकन्दर (Alexzander the Great) पंजाबमें पहुंचा तब उसने अनेक हिन्दूतत्वज्ञानियोंको गिरफ्तार किया जिन लोगोंने यूनानियोंके कथनानुसार सिकन्दरको असीम दुःख दिया था और स्वतंत्र जातिवालोंको तलवार खैंचनेके लिये वँहकायाथा और उन राजोंसे शत्रुता ठानी थी जिन्होंने उसकी आधीनता स्वीकार करली थी यूनानी लोग इन्हे नग्न तत्वज्ञानी कहते हैं। यह बात भलीभांति अनुमानित होती है कि, उनमेंसे कई दिगम्बरीथे। जो नग्नतत्वज्ञानी सिकन्दरकी आज्ञासे कैद किये गये थे उनमें दो तड़ थे ब्रचमान (Bratchmanes) और जर्मान (Germanes) उत्तर शब्दश्रमणका अपभ्रंश है जो जैनजातिकी एक उपाधि है। सिकन्दरने कई कठिन प्रश्नकरके उनकी परीक्षा ली थी और विरुद्ध उत्तर देनेपर मारडालनेका भयभी दिखाया था किन्तु उनके उत्तर ज्ञानगुणसम्पन्न हुए अतः वह स्वतंत्र राजा उनपर प्रसन्न हो गया। जैनशब्दका अर्थ है विजयमान" और दूसरोंकी सम्मतिके अनुसार "जिनात्माका पूजक" है। जैन अर्हत् (योग्य) और सिद्ध (पवित्र) भी कहे जाते हैं; मुनिश्रेणीवाले यति और गार्हस्थ्यवर्गी श्रावक कहे जाते हैं। जैन लोग वेद और पुराणका महत्व नहीं मानते हैं। अत्याचारके कारण लाचार होकर अपने यथार्थ विश्वासके विरुद्ध धर्मरीतियोंको स्वीकार करनेके पूर्व्व प्राचीनकालमें इनलोगोंमें जातिभेद नहीं था और इनलोगोंमें विधवाओंको बलात्कार सती करनेकीभी चाल नहीं थी। पशुपक्षीभक्षण तथा मद्यपानकी आज्ञा इन्हें नहीं है। ये जीवधारियोंके प्रति बड़े दयालु होते हैं और उन्हे अपने भोजनके लिये कभी नहीं मारने देते हैं एवम् रोगी जीवधारियोंके लिये अस्पताल (औषधालय) बनाते हैं। प्रत्येकजैनी एक पीछी (Tly-Brush)

लिये फिरते हैं जिससे वे भोजनके समय बैठनेके पहिले भूमिको बुहार लेते हैं कि, अनजानमें कोई कीड़ामकोड़ा दबकर मर नहीं जावे। अजमेर और मैड़वाड़ा (Mhairwara) के कोठीवाल रुपये देकर जानवरोंको छोड़ाते हैं। कट्टरजैनी रात्रिसमय चिराग नहीं जलाते हैं क्योंकि, बहुतसे जीव (पतंग) उसमें जलकर मरजाते हैं। अन्हलवाड़ा (Anhalwara) का अन्तिम जैनधर्मी राजा कुमारपाल अपनी सेनाको वर्षाऋतुमें जीवहिंसाके कारण गमन नहीं करने देता था जिसका परिणाम यह हुआ कि, वह अपने राज्यहीसेहाथ धो बैठा। मेवाड़राजकी आज्ञासे कोल्हू और कुम्भकारके चाकके काम वर्षमें चार महीने जब त्रसजीवोंकी अधिक उत्पति होती है बन्द रहते थे। जैनीलोग ईश्वरको कर्ता या संसारका अनुशासक नहीं मानते हैं और ईश्वरको अनादि मानते हैं अस्तु कई प्रमाणोंके अनुसार वे ईश्वरका अस्तित्व मानते हैं और सिद्ध करते हैं कि, देवताने संसारकी सृष्टि करके उसे कई प्रधान नियमोंसे बद्धकर दिया और इसमें कोई हस्ताक्षेप नहीं करता किन्तु इन्हीं नियमोंके अनुसार समस्त कार्य कर्मानुसार होते रहते हैं। एपीक्यूरस (Epicurus) का भी यही सिद्धान्त था। जैनियोंका विश्वास है कि, कोई पुन्यात्मापुरुष विषमतपसे पवित्र होकर और शारीरिक रागोंका परित्याग करके सर्वोत्कृष्टस्थान तथा अनन्तसुखको प्राप्त होता है अर्थात् मुक्ति पाकर ईश्वर हो जाता है जैनी लोग इन्हीकी उपासना और ध्यान करते हैं। उनकी संख्या ७२ है०—अतीत अनागत और वर्तमानमें चौबीस २ हुए हैं। इनमें प्रथम आदिपरमेश्वर (प्रथमसिद्धात्मा) थे और दूसरे ऋषभ, महावीर वा वर्द्धमान्, गोमट्टराजा, और पार्श्वनाथ थे। अन्तिमकी पूजा विहार और अन्यस्थलोंमें होती है। येजीव तीर्थङ्कर या सिद्धर्षि कहे जाते हैं। निम्नश्रेणीकी आत्मा जिनके अधिकारमें निम्नस्वर्ग है वे देवता कहे जाते हैं। निम्नस्वर्गमें वेही जासकते हैं जिनकी आत्मा निम्नश्रेणीके जीवोंमें परिभ्रमण करते २ शुद्ध होगयी हैं। हिन्दुओंके प्रधान कर्तव्य इसी द्वितीयश्रेणीके धर्ममें गिने गये हैं। यद्यपि जीवोंकी हिंसा विवर्जित है तथापि जैनीलोग क्षत्रीयवीरोंको खुलेमैदान शत्रु विध्वंसकी व्यवस्थाको स्वीकार करते हैं। जैनीलोग कनेड़ामें खेती करते हैं परन्तु प्रधानतः वे व्यापार और महाज़नी करनेवाले हैं अतः वे धनी होते हैं। शेरिंगसाहेब (Sherring) कहते हैं कि, "व्यापार करनेवालोंके सम्बन्धमें यह एक अनोखी बात है कि, उनमें बहुतसे लोग जैनधर्मी या बौधधर्मीके प्रभेदोंमें है"। काशीनिवासी बाबू शिवप्रसाद दावा करते हैं कि, उनके पूर्वजोंमेंसे किसीने ईसाके पश्चात् ९४९ वें वर्षमें जैपुर राज्यमें एक जैनमन्दिर बनवाया था। इन्हीके वंशमें कलकत्ताके धनीकोठीवाल जगतसेठ थे जो क्लाइव (Clive) के समकालीन थे। यह शिराजुद्दौलाको राज्यसे उतारनेकी गुद्दड़ीमें सम्मिलित थे। भारतवर्षीय व्यापारसम्बन्धी रु-

पया अधिकसे अधिक जैनश्रावकोंके हाथ जाता है। भारतके व्यापारी और महाजनोंमें $\frac{9}{10}$ (अर्थात् दशमें नौ) भाग मर्कोड (Mercode) निवासी हैं और उनमें अधिकांश जैनधर्मावलम्बीही हैं।

जैन वासदियां मन्दिर ऊपरसे पटेहुए घरके ऐसे बनते है जिनमें वेदिकाके ऊपर तीर्थङ्कर या सन्तोंकी नग्नमूर्तियां पद्मासन विराजमान रहती हैं। दूसरी विशालमूर्तियां पत्थरकी खड्गासन नग्न प्रतिमाकी बनती हैं जो पहाड़ियोंकी शिलामें गढ़ी जाती हैं। हमलोगोंने इनके उदाहरण कार्कल, येनूर और श्रवणवेलगुलमें देखे हैं। लोग कहते हैं कि, इसीप्रकारकी एक भड़कीलीमूर्ति अहमदाबादके पासभी है जो उपद्रवकेसमय गुप्त रखनेके अभिप्रायसे पृथ्वीके भीतर बनाई गयी है। जैनीलोग मन्दिरोंमें अर्पण और सर्वसाधारणके उपयोगी पदार्थोंका निर्माण करनेमें बड़े उदारशील होते हैं। लोग कहते हैं कि, अजमेरमें आबूपर्व्वतपर चार जैनमन्दिरोंका समुदाय है जो क्रास (+ चौगोशिया) के ढबसे बना है। इनमें प्रधान पश्चिमवाला मन्दिर है जो ऋषभको समर्पित है। यह वहांही बना है जहां पूर्व्वमें शैव और विष्णुके मन्दिर थे। परम्पराकथाके अनुसार इस मन्दिरको गुजरातके उत्तर अनहलवाड़ा (पट्टन) के एक व्यापारी वूनलशाह (Bunalsah) ने बनवाया था। इसने उस स्थानको सिरोकी (सिरोही) के राजासे खरीदा था और इसका दाम उतना रुपया दिया था जितनेमें वह भूमि जहां मन्दिर बना है छिपजाये। अर्थात् उतने स्थलमें रुपया बिछाकर मूल्यमें देदिया था। भूमि बराबर करने और मन्दिर बनानेमें साढेअट्ठारहकरोड़ रुपयेका व्यय होना कहा जाता है। वह मन्दिर चौदहवर्षमें तैयार हुआ था। इस मनोग्य सम्प्रदायके सिद्धान्त और प्राचीनताका यही संक्षिप्त वर्णन है। इतिश्री

जैनेन्द्र किशोर–जैनआरा

नोट–प्रिय पाठकगण आपको यह जानके अत्यंत हर्ष होगा कि, अपने पवित्र जैनधर्मके विषयमें अंग्रेज लोग खोज करते हैं परन्तु वर्तमानमें जैनीलोग इहितास विषयमें बहुत पीछे हैं।

कर्नाटकमें जैनियोंका निवास पूर्ण हो गया और उससे विदित हो गया कि, भिन्नधर्मी जैनधर्मपर कितना २ उपद्रव करते थे परन्तु बदलेमें जैनी उनका उपकारही करते थे। यह नीति जैनियोंको अभीभी धारण करना चाहिये। सिद्धान्तसम्बन्धी बहुतसी बातोंका अन्तर इस लेखमें आया है परन्तु जैनियोंको उसपर श्रद्धान न करना चाहिये कारण कि, जब जैनीही जैनधर्मके पूर्णसिद्धान्तोंके जानकर नहीं होते हैं तो भिन्नधर्मी और भिन्नदेशवाला किसप्रकार जानकार हो सकता है।

अन्तमें हम बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी आरानिवासीको धन्यवाद देते हैं कि, जिन्होंने अंग्रेजीसे हिन्दी अनुवाद कर जैनमित्रकेलिये इस लेखको अर्पण किया। **सम्पादक**

भारतवर्षीय दिगम्बर जैनधर्मसंरक्षणी महासभा और जैनयंगमेन्स एसोसियेशनका वार्षिकोत्सव।

सहारणपुर।

अबकी बार महासभाने बम्बई निवासी दानवीर श्रेष्ठि माणिकचन्द पानाचन्दजीको सभापति चुना था। मैं उन्हीकेसाथ बम्बईसे रवाने होकर अहमदाबाद, जयपुर, अजमेर, और दिल्ली देखता हुआ, ता० २९ दिसम्बरको सवेरे सात बजे सहारणपुर स्टेशनपर पहुंचा। सभापति साहबकेसाथ मेरे अतिरिक्त शेठ हीराचन्द नेमिचन्द आनरेरी माजिस्ट्रेट, रा. रा. अण्णापा बाबाजी लठ्ठे एम. ए. शेठ माणिकचन्द मोतीचन्द (आलन्द) आदि सज्जनभी थे। स्टेशनपर सभापति महाशयके स्वागतके लिये लाला खूबचन्दजी रहीस, लाला ईश्वरीप्रसादजी लाला बनारसीदास एम. ए. एल. एल. बी. मि० जैनवैद्य, लाला चन्दूलालजी प्लीडर आदि ३०० के लगभग प्रतिष्ठित २ सज्जन उपस्थित थे। गाड़ीसे उतरतेही सभापति महाशयको एक सुन्दर एड्रेस दिया गया, पश्चात् अनेक सज्जनोंके व्याख्यान हुए, जिनमें प्रायः शेठजीका उदार गुणानुवाद था। इन सबके उत्तरमें सभापति सा० ने अपना लाघव प्रगट करके सबका आभार मान्य किया।

स्टेशनके बाहर एक सुन्दर बैंडबाजा बजरहा था, और सहारणपुरके प्रसिद्ध रहीस लाला उग्रसेनजीका हाथी उपस्थित था। सभापति महाशय उसीपर आरूढ़ कराये गये, और बड़े उत्साह तथा धूमधामके साथ शहरमें घूमते हुए सभामंडपके निकटस्थ बंगलेमें उतारे गये। आपके हाथीकेसाथ लगभग डेड़सौके घोड़ागाड़ीयां चलती थीं, और सबके आगे "अहिंसा परमोधर्मो" के पवित्रवाक्यसे शोभायमान एक निशान चलता था। सहारणपुरके लोगोंने इस सवारीको बड़े चावसे देखा।

सभामंडपका स्थान शहरसे एक मीलके अन्तरपर था, वहींपर एक बंगलेमें सभापति सा० के उतरनेका प्रबन्ध किया गया था। इसके निकटही सभामें आये हुए सज्जनोंके सुभीतेके लिये एक विस्तीर्ण बाजार लगाया गया था। अनेक जातिहितैषी सत्पुरुषोंके जमावसे वह स्थान बड़ा प्यारा सुहावना जान पड़ता था।

दो प्रहरको लगभग १॥ बजे जैनयंगमेन्स एसोसियेशनकी पहली बैठक हुई। बाबू माणिकचंदजी खंडवानिवासीके प्रस्ताव और बाबू चेतनदासजीके अनुमोदनसे दानवीरशेठ माणिकचन्दजीने तालियोंकी मधुरध्वनिकेसाथ सभापतिका आसनस्वीकार किया। पश्चात् सभापति सा० ने अपना व्याख्यान पढ़के सुनाया। व्याख्यानमें "जैनग्रन्थोंका अंग्रेजी भाषान्तर होनेकी आवश्यकता अंग्रेजी शिक्षाकेसाथ धर्मशिक्षा देना चाहिये" आदि विषयोंका विवेचन किया गया था। व्याख्यानके पश्चात् बाबू चेतनदासजी जनरल सेक्रेटरीने एसोसियेशनकी १९०४–५ की

रिपोर्ट पढ़के सुनाई । रिपोर्टका सारांश इस प्रकार है ।

"सन १८०९ में एसोसियेशनकी स्थापना हुई । कुछ दिन पीछे हिन्दी जैनगजटके साथ एसोसियेशनने एक अँग्रेजी आर्गन निकाला । पश्चात् सन १९०४ में लाला जुगमन्दरलालजी एम. ए. के द्वारा अँग्रेजी जैनगजटका पृथक संपादन होने लगा । सन १९०९ की रिपोर्ट और एसोसियेशनके उद्देश्य पढ़कर बाबू गुलाबचन्दजी ढढ्ढा एम. ए. (श्वेताम्बर) ने संतोष प्रगट किया । पं० गोपालदासजी बरैयाने ट्रेक्ट कमैटीका सेक्रेटरी होना अस्वीकार किया । इस वर्षमें दो चार अंग्रेजी पुस्तकें तयार हुई हैं, आशा है कि, इन पुस्तकोंका अन्यधर्मी लोगों व श्वेताम्बरी भाइयोंपर अच्छा असर होगा । अंग्रेजीकेसाथ संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको पारितोषिक और मेडल देना अनेक सज्जनोंने स्वीकार किया है, तदनुसार सभापति सा० के द्वारा पारितोषिक और मेडल अभी वितरण किये जावेंगे । इस वर्ष एसोसियेनमें जितनी आय हुई है, उतनाही व्यय हुआ है" ।

रिपोर्ट पढ़ी जा चुकनेपर लाला जुगलकिशोरजीने बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय, वेश्यानृत्य, व्यर्थव्यय आदि कुरीतियोंके दूर करनेका प्रस्ताव उपस्थित किया, और मि० जैनवैद्यने उसका अनुमोदन किया । वधूकी अवस्था १२ और वरकी १९ वर्षसे न्यून नहीं होनी चाहिये । जिसके संतति हो उसे ४० और जिसके संतति नहीं हो, उसे ४९ वर्षकी अवस्थाके पश्चात् विवाह नहीं करना चाहिये, इस प्रकार निर्देश होकर सर्वानुमतसे उक्त प्रस्ताव पास हो गया ।

पश्चात् मि० अर्जुनलालजी सेठी बी. ए. जयपुर निवासीका अभिनन्दन किया गया । क्योंकि आपने २९०) मासिक वेतनकी नौकरी छोड़कर **महाविद्यालय**के लिये अपना जीवन देदिया है ! इसके पीछे विद्यार्थियोंको पारितोषिक और मेडल बांटे गये । विद्यार्थियोंमें दो विद्यार्थी मद्रास यूनीवर्सिटीके, एक बम्बई यूनीवर्सिटीका, कुछ अलाहाबाद, तथा पंजाब यूनीवर्सिटीके और एक दो महाविद्यालयके विद्यार्थी थे । तदनन्तर अनेक सज्जनोंने नवीन वर्षके लिये स्कालरशिप पारितोषिक और मेडल वगैरह देना स्वीकार किये । उन सबमें एक स्कालरशिप विशेष महत्वकी थी । वह पंजाबके इंजीनियर लाला रायफूलचन्दजीने, जिन्हें ८००) मासिकवेतन मिलता है, उस विद्यार्थीकेलिये देनी स्वीकार की, जो जापानको शिल्पविद्याका अभ्यास करनेके लिये जावे । रायसाहबकी स्कालर्शिप जापान जानेवाले विद्यार्थीको तीनवर्षतक १००) मासिक क्रमसे मिलेगी इस स्कालर्शिपकी घोषणा होतेही बाबू माणिकचन्दजी एफ. ए. खंडवा निवासीने जापान जाना उसीसमय स्वीकार कर लिया । इस उदारताके बदलेमें एसोसियेशनने रायसाहबको **जैनभूषण**की पदवी प्रदान की । प्रथम दिवसका कार्य समाप्त हुआ ।

ता० २६ दिसम्बर ।

दूसरे दिन दोपहरको एक बजे एसोसियेशनकी दूसरी बैठकका कार्य प्रारंभ हुआ। पहले विदुषी मगनबाई (सभापति सा० की पुत्री) ने स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकतापर हिन्दीमें एक सुन्दर व्याख्यान दिया, पश्चात् स्त्रीशिक्षाकी जैनियोंमें बड़ी आवश्यकता है, इस आशयका प्रस्ताव पास हुआ। विदुषी मगनबाईने मासिक ५) की और बाबू अजितप्रसादजीकी भाग्यवती स्त्रीने १०) मासिक की, इसप्रकार दो स्कालर्शिपें दो वर्षतक देना स्वीकार की। इसके पश्चात् औरभी कुछ स्कालर्शिपें नियत हुई। ये स्कालर्शिपें उन बालिकाओं अथवा स्त्रियोंको दी जावेगी, जो उत्तम विद्याभ्यासमें दत्तचित्त हैं।

तदनंतर मि० लट्ठे एम ए. ने सरकारी यूनीवर्सिटीमें जैनग्रन्थ भर्ती करनेके लिये प्रार्थना करनेका प्रस्ताव उपस्थित किया, जोकि, लाला बाबूलालजी बी. ए. के अनुमोदन पूर्वक सबकी सम्मतिसे पास किया गया। पश्चात् शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजी आ० मा० ने प्रस्ताव उपस्थित किया कि, गवर्णमेंटसे प्रार्थना की जावे कि, वह जेल और एडमिनिस्ट्रेटकी रिपोर्टोंमें जैनियोंके लिये पृथक् खाना रक्खे। लाला सुलतानसिंहजी मेरठके अनुमोदनसे उक्त प्रस्ताव पास हुआ। फिर बाबू चेतनदासजीने ट्रेक्टकमेटीनियत करनेका प्रस्ताव किया, सो लाला बाबूलालजी वकीलके द्वारा अनुमोदित होकर पास हो गया। ट्रेक्टकमेटीमें १४ सज्जन चुने गये। इसीप्रकार नवीन वर्षके लिये मेनेजिंग कमेटीमेंभी १४ पुरुष नियत हुए। एसोसियेशनका कार्य पूर्ण हुआ। सभापतिका आभार मानके सभाका विसर्जन हुआ।

ता० २७ दिसम्बर ।

आज हिसारके अनाथालयकी वार्षिक बैठक दोपहरको १२ बजेसे प्रारंभ हुई। लाहोरके प्रोफेसर लाला जियारामजी एम. ए. ने सभापतिका आसन सुशोभित किया। सेक्रेटरीने वर्षभरकी रिपोर्ट पढ़के सुनाई। उससे प्रगट हुआ कि, अनाथालयकेद्वारा १८ अनाथ विधवाओंको ३) माहवारी सहायता मिलती है, और १० अनाथबालकोंका पालनपोषण तथा शिक्षण होता है। रिपोर्टके पश्चात् अनाथालयको सहायता देनेकी प्रार्थना की गई। लगभग ५०००) का चन्दा उदार भाइयोंने उसीसमय कर दिया।

अनाथालयके बाद महासभाकी बारी आई। और २॥ बजेके पश्चात् उसका कार्य प्रारंभ हुआ। शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीके अध्यक्षस्थानपर विराजमान होतेही बाबू बनारसीदासजी एम. ए. ने सन १९०५ की महासभाकी रिपोर्ट पढ़के सुनाई। "महाविद्यालयके लिये इसवर्ष डेप्युटेशन पार्टीने ५०००) एकत्र किये। महाविद्यालयके फंडमें अभीतक कुल ४७०००) के अनुमान एकत्र हुए हैं। विद्यालयमें १० बालबोध कक्षाके और ८ उच्चश्रेणीके विद्यार्थी शिक्षापाते हैं। इत्यादि"। पश्चात् मुनीम किरोड़ीमलने महासभाके आयव्ययका चिट्ठा पढ़के सुनाया।

संध्याकाल आजानेसे आजका कार्य यहीं समाप्त हुआ ।

ता० २८ दिसम्बर ।

आज दोपहरके एक बजे कार्य आरंभ हुआ । पहले शा डाह्याभाई शिवलालने सम्मेदशिखरजी तथा पावापुरी सम्बन्धी दशाका वर्णन किया, जो प्रायः जैनमित्रके पाठक पढ़ चुके हैं, यहां पुनः उल्लेख करनेकी आवश्यकता नहीं है । पश्चात् मुंशी चम्पतरायजी सा० ने कहा कि, शिखरजीकी तेरापंथी कोठीकी व्यवस्था अच्छी नहीं है । वहांके द्रव्यका दुरुपयोग होता है, इसलिये मुकद्दमा चलाके बीसपंथी कोठीकी नाईं उसकाभी प्रबन्ध होना चाहिये । परन्तु सभापति महाशय बीसपंथी हैं, जान पड़ता है कि, इसीसे आपने तेरापंथी कोठीकीओर ध्यान नहीं दिया है ! तब तीर्थक्षेत्रकमेटी यह काम करना चाहती है कि, नहीं ? यह जाननेकी आवश्यकता है । इसपर सभापति सा० ने कहा कि, मुझपर वीसपंथी होनेका आक्षेप जो मुंशीजीने किया है, वह ठीक नहीं है । क्योंकि, मैं वीसपंथी नहींहूं और न तेरापंथी । तीर्थक्षेत्रकमेटीको बम्बई प्रान्तिकसभाके अभी पांच सात हजार रुपया देना है, इसलिये कमेटीको इस ओरसे द्रव्यकी सहायता मिलनी चाहिये । सहायता मिलतेही तेरापंथी कोठीके व्यवस्थापकोंपर मुकद्दमा दायर करनेके लिये तीर्थक्षेत्रकमेटी तयार है ।

इसके पश्चात् व्यर्थव्यय, बाल-वृद्धविवाह, आदि कुरीतियोंसम्बन्धी बिगतवर्षके प्रस्ताव पुनः पास किये गये । पश्चात् बाबू शीतलप्रसादजीने जैनकालेज स्थापन करनेकी आवश्यकताका प्रस्ताव किया और बाबू अर्जुनलाल सेठीने उसका अनुमोदन किया । पीछे द्रव्यकी न्यूनता दिखलाई जानेपर लगभग ९०००) का चन्दा हुआ । इतनेमें पानी बरसने लगा, अतएव आजका कार्य पूर्ण किया गया ।

ता० २९ दिसम्बर ।

आज जल्सेका अन्तिमदिन था । दोपहरको १ बजे तीसरी बैठकका आरंभ हुआ । पहले पं० चुन्नीलालजीने लालामंगलसेनजीकी मृत्युके विषय शोक प्रकाश करनेका प्रस्ताव किया । वह सर्व सम्मतिसे पास हुआ । पश्चात् पं० पाचूलालजीने परीक्षालयको योग्य पद्धतिसे चलानेका प्रस्ताव किया, और पं० उमरावसिंहजीसे अनुमोदन पाकर वहभी पास हुआ । इसके अनन्तर महाविद्यालयके दो विद्यार्थियोंका कर्ताविषयक खंडन मंडन संस्कृत और हिन्दीमें हुआ । तत्पश्चात् नुकड़निवासी पं० पन्नालालजीने जैनकालेजके लिये द्रव्यविषयक प्रार्थना की । सो उपस्थित सभ्योंने सहारणपुरमें हाईस्कूल स्थापित करनेको लगभग ३९ हजार रुपया देना स्वीकार किये ।

रातको लाला सलेखचन्दजी साहूने महाविद्यालयको मथुरासे उठाकर सहारणपुरमें लानेका प्रस्ताव पेश किया । मुंशी चम्पतरायजीद्वारा इस प्रस्तावका अनुमोदन होचुकनेपर किसीएक सज्जनने कहा कि,

"सहारणपुरसे अधिक किसी स्थानमें चन्दा हो जावे, तो वहां यह विद्यालय उठके आसकेगा कि, नहीं"! इसका उत्तर बाबू सूरजमानजीने दिया कि, "चाहेजिस स्थानपर लेजा सकते हैं, इसमें कुछ हानि नहीं है। और महाविद्यालय व हाईस्कूल ये नाम यद्यपि न्यारे २ हैं, परन्तु दोनोंका उद्देश और फंड एकही है"। इसप्रकार प्रस्ताव होचुकनेपर सभाका कार्य पूर्ण हुआ। ता० ३० को रथयात्राका महोत्सव हुआ। यात्रीगण अपने २ स्थानको रवाना होगये। हमलोगोंनेभी उनका अनुसरण किया। इत्यलम्

मुंबई ७-१-०६ } भवदीय दोशी पानाचंद रामचंद

मनोविनोद।

(१)

१—आप कौन हैं?

२—मुझे लोग तमाखू कहा करते हैं?

१—आप कहांसे तशरीफ लाये?

२—मैं समुद्रके परलेपारसे आ रहा हूं।

१—आप किसके सिपाही हैं?

२—क्या तुझे मालूम नहीं है? मैं श्रीकलिकाल महाराजका प्रबल योद्धा हूं।

१—फिर आप आये किसवास्ते हैं?

२—विधाताने जो यहांपर धर्मके हेतुसे अनेक वर्ण और जातियां बनाई हैं, उन सबको जबर्दस्ती एक करनेकेलिये और फिर सारे संसारका शासन करनेके लिये मैं आया-हूं। क्या आप मेरी खातिर नहीं करेंगे?

१—आइये! वैलकम (Welcome)

(२)

एक कविराज अपने जमाई (दामाद) की धनादिसे सेवा करते २ तंग आगये, परन्तु तौभी उनके जमाईसाहब संतुष्ट नहीं हुए, तब कविराजने दुःखी होकर एक श्लोक बनाया—

सदा वक्रः सदा क्रूरः
सदा पूजामपेक्षते।
कन्याराशिस्थितोनित्यं
जामाता दशमोग्रहः।

इसका अर्थ यह है कि, "निरन्तर टेढ़ा, क्रूर, और सदा पूजाकी अपेक्षा करनेवाला जमाई कन्याराशिपर स्थित दशवां ग्रह है"।

(३)

आजकलकी अपूर्व स्मरणशक्तिके धारण करनेवाले एक महाशय बाजारको जल्दी २ कदम बढ़ाये हुए जा रहेथे। रास्तेमें उन्हें उनके एक दोस्त मिल गये। दोनोंमें इसतरह बातचीत होने लगी:—

१—अजी आप आज जल्दी २ कहां जारहे हैं, और ये रूमालमें गांठ किसलिये लगा रक्खी है।

२—भाई! बाजारको जा रहाहूं, तुम्हारी भावजने कुछ चीज मंगाई है, उसकी यादगारीकेलिये ये गांठ लगाई है।

१—और ये रूमालकी दूसरी तरफभी तो एक गांठ लगी है, सो किसवास्ते।

२—यह उस पहली गांठकी यादगीरीके लिये है।

१—तब तो यार! कोई बहुत बढ़िया चीज भावज सा० ने मंगाई होगी, जिसके लिये दो२ गांठे लगाई गई हैं। क्या मिहरबानी करके मुझेभी उसका नाम बतलाइयेगा?

२—(बडी देरतक सोचके) यार! नामतो मैं उसका भूलही गया।

१—बलिहारी! आपकी स्मरणशक्तिकी

ग्रेजूयेट महाशयोंकी सम्मति
(महासभाकी आलोचना)

मेरा उद्देश्य यह है कि, जैनियोंमें एक एसा कालेज वा महाविद्यालय स्थापित करना जहां जैनधर्मके व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, वैद्यक आदि विद्याओंमें परमोच्चश्रेणीतककी शिक्षा दी जावे तथा इनकेसाथ इंगलिश साहित्यभी इतना पढ़ाया जावे कि, उपर्युक्त विषयोंके पंडित अपनी विद्याका इंगलिशमेंभी प्रकाश कर सकें इसहीकेसाथ विद्यार्थियोंको कुछ शिल्पमेंभी शिक्षा दिलाई जावे कि, जो हमारी देशोन्नतिका मुख्य कारण है—

मेंने जो कुछ कार्यवाही डेपुटेशनपार्टी और महासभाके दफ्तर तथा कार्यकर्तागणोंकी देखी उसको लिखते हुए मेरा जी फटा जाता है एसा अन्धाधुन्ध कार्यालय शायद किसीही सभाका होगा विद्यालयके विद्यार्थी तथा भोजनशाला व निवास स्थानको आप देखेंगें तो विदित होगा कि, भिक्षुकोंका भिक्षुकघर (Orphanage) भी इससे अच्छा होगा विद्यार्थियोंके दिल एसे कुचले हुए रक्खे जाते हैं कि, उनकी हिम्मतही नहीं बढ़ती अध्यापक जैनोन्नतिके विरोधी हैं. एक अध्यापक महाशय बाबत तो कुछ कहा नहीं जाता प्यारे सम्पादकजी मैं कहांतक लिखूं लिखा नहीं जाता और आपसे क्या छिपा होगा आप तो सब रहस्यके जानकार हो।

मेरी सम्मति यह थी कि, विद्यालय मथुरामें नहीं रखना चाहिये किन्तु एसे स्थानमें भेजना योग्य है जहां जैनियोंकी संख्या अधिक होवे और एक दो जैनी पंडित रहते होंवे तथा कुछ धर्मोत्साही कार्य करनेवाले होवें एसा स्थान जयपुरके अतिरिक्त दूसरा नहीं होसकता परन्तु मेरी महासभामें कौन सुने मथुरावाले कभी नहीं चाहते कि, विद्यालय अन्यत्र जाय. फिरभी मजा यह है कि, वे कभी खबरभी नहीं लेते कि, विद्यालय कहां है और विद्यार्थी मरते हैं या-जीते. दिसम्बर मासकी कानफरेन्समें सबजेक्ट कमेटीमें रात्रिको बहुतही वादविवाद होनेके पश्चात्भी कोई परिणाम न निकला यद्यपि निष्पक्ष विचारवालोंकी बहु सम्मति विद्यालयके स्थान परिवर्तनहीकी ओर थी. परन्तु जिन महानुभावोंको मथुरामें अपनी इकडंकी बजानेका आनन्द प्राप्त था वे झगड़तेही रहे और रात्रिके ४ बजेतक कोई बात निश्चित न हुई।

दूसरे दिन सहारणपुरवालोंने चन्दा किया जो अनुमान ३००००) रु० के वादेका चन्दा है उसमें प्रायः हाईस्कूल खोलनेकी शर्त है महासभा प्रस्तावकर चुकी है कि, विद्यालय

सहारणपुर भेजा जावे. मथुरावाले लड़रहे हैं। इस झंझटमें विद्यार्थियोंका पूर्ण हर्जा हो रहा है क्योंकि, निश्चित नहीं कि, सहारणपुर जावेंगे अथवा मथुराही रहेंगे मथुरामें यथेच्छ उन्नति नहीं हो सकती और अन्य स्थानमें परिवर्तन नहीं होता ।

एक बी. ए.

मैं सहारनपुरसे २९ दिसम्बरको दोपहर पहिले चल पड़ाथा सुना है कि, मेरे चलनेके पीछे मुन्शी बाबूलालजी वकील मुराहाबादने महासभाकी ओरसे जैनकालेजके लिये द्रव्य सहायता मागी और बहुतसे भाईयोंने बड़ी उदारताकेसाथ रुपया दिया और देनेका अभिप्राय प्रगट किया और यह निश्चिय हुवा कि, महाविद्यालय मथुरासे सहारनपुर आजाय और उसकेसाथ अँग्रेजी हाईस्कूल खोल दिया जाय. आगे ज्यों ज्यों रुपया आवेगा उच्चश्रेणीके कालेज खोलनेकाभी प्रबन्ध किया जायगा सुना है कि, बाबू अर्जुनलाल सेठीभी सहारनपुरमें महाविद्यालय और हाईस्कूलमें काम करना स्वीकार करते हैं यदि ये सब वार्ता ठीक है तो बहुत अच्छा हुआ महासभाको चाहिये कि, कालेज और स्कूलके विषयमें अपना विचार विस्तारपूर्वक प्रकाश करै. स्कूल जारी करदे और कालिंजकेवास्ते धन एकत्रित करै ।

मुझको यह विदित नहीं है कि, महासभाके धनकी संभाल किसके अधिकारमें है और महाविद्यालय और कालेजका रुपया सभाके साधारण खातेसे प्रथक है व उसीमें मिला झुला है । मेरे विचारमें महाविद्यालयका और कालेजका रुपया जुदा रहना चाहिये इस रुपयेके लेनेदेने, खर्च करनेका अधिकार किसी १ वा २ कर्मचारियोंके हाथमें न होवे वरंच १ बोर्ड आफ् ट्रस्टीज (Board of Trustees) के हाथमे होवे. बोर्ड आफ ट्रस्टीज बड़ी २ रकमोंके दाताओंकी सम्मतिसे नियत हो और उनहीकी सम्मतिसे आय व्ययकी नियमावली बनाई जाय और बोर्ड आफ ट्रस्टीज उस नियमावलीके अनुसार चले इसमें महासभाके कार्याध्यक्षोंको सुभीता रहेगा और विद्याप्रचारभी योग्य पुरुषोंके हाथसे अच्छा होता रहेगा । मैं कालेजका द्रोही नहीं हूं जैनियोंका अपना अँग्रेजी कालेज बन जाय तो उत्तम बात है. परन्तु कालेजस्थान और प्रवन्धकी अपेक्षा ऐसा होवे कि, दूर २ से आकर जैनविद्यार्थी उसमें पढ़ना अंगीकार करें जैनकालेज किसी बातमें अन्यकालेजोंसे न्यून होगा तब तो नाम कालेज होगा योग्य विद्यार्थी न होंगे और इसकी सफलताके लिये १ वा २ वा ४ लाख रुपया थोड़ा है ।

जैनजातिको संसारसम्बन्धी विद्याकी आवश्यकता हैही इसमें संदेहही क्या है? परन्तु धर्मके प्रचार और सुधारके लिये पंडितोंकीभी अति आवश्यकता है. महाविद्यालयका सुप्रबन्धभी मुख्य है इसमें केवल रटखोरे भरती करनेसे कोई सिद्धि नहीं है । वरंच एसे विद्यार्थी होवें कि, यहां शिक्षा पाकर

कुछ धर्मकामी उद्योत करैं । महासभाके कार्याध्यक्ष "जैनकालेज" (Jain College) केवास्ते द्रव्य संचयकर रहे हैं परन्तु स्पष्टरूपसे विदित नहीं होता कि, कालेजशब्दसे क्या अभिप्राय रक्खा है इस विषयमें विशेष व्याख्याकी आवश्यकता दीख पड़ती है और मैं आपकेसाथ सहमतहूं कि, जबतक महासभाकी ओरसे खोलकर कालेज शब्दकी व्याख्या न की जाय उसके अर्थ रुपया न मागा जाय नहीं तो वही झगड़ा उठेगा कि, **अँग्रेजी पढ़ाये जांय** वा **धर्मविद्या** और **जैनग्रन्थ पढ़ाय जाय** वा **अन्यान्यमतोंके ग्रन्थभी** पीछे झगड़ा उठनेसे तो यह श्रेष्ठ है कि, रुपया भेला करनेसे पहिले ये सारीवार्ता प्रगट हो जाय.

आपने बाबू अजितप्रशादजीकी अँग्रेजी चिठ्ठीपर कुछ शंका प्रगट करी है जहांतक मैं समझताहूं उनका कोई गूढ़ अभिप्राय नहीं है जिससे जैनजाति तथा दिगम्बर आम्नायकी हानि हो । ऐसा प्रतीत होता है कि, कालेज शब्दका अर्थ यथार्थ उनपर प्रगट नहीं किया गया है यदि यह त्रुटि पूरी हो जाय तो फिर किसीको किसीप्रकारकी शंका तो उत्पन्न न होगी ।

सहारनपुरका जलसा बड़ी धूमधामकेसाथ हो गया. दूर २ के भाई बड़े उत्साहसे आए थे स्त्री, पुरुष, सबही धर्मामृतपान करके हर्षित दीखते थे ।

महासभा, यङ्गमेन्सअसोसियेशन, हिसार अनाथालय और शास्त्रसभा सब धूमधामके साथ अपना २ काम कर रहीं थीं. स्त्रीयोंके समूहके समूह बाजारोंमें सौदा लेते और मर्दोंसे टकरातें फिरते थे मैंने तो कोई ऐसी अयोग्य चेष्टा अपनी आँखोंसे देखी नहीं जिससे शोक हो परन्तु हमारी जातिके कोई २ भद्रपुरुष उनके बाजारोंमें फिरनेसे कुछ लज्जित और क्लिष्ट थे और कहते थे कि, एसा नहीं होना चाहिये क्योंकि, मेलेमें सब जाति और रंग २ के मनुष्य फिरते थे । चोर उचक्के दुराचारीभी एसे २ मेलोंपर तो उधार खाए बैठे रहाही करते हैं.

एफ. एम. ए.

विविधप्रसंग ।

गत ता. २८-२९ और ३० दिसम्बरको काशीमें भारतवर्षकी राजकीय महासभा अर्थात् इंडियन नेशनेलकांग्रेसके तीन जल्से बड़ी धूमधाम और अभूतपूर्व उत्साहके साथ होगये । इस २१ वें अधिवेशनमें कांग्रेसने जो कुछ काम किया है । वह गत बीस वर्षोंमें उससे नहीं होसकाथा । उसने अब सरकारके द्वारा देशवासियोंको सहायता मिलनेकी आशा छोड़कर स्वयं प्रयत्न करनेका पक्का संकल्प कर लिया है । कांग्रेसने अबकीबार २३ प्रस्ताव पास किये, जिनमें दो बड़े लाभकारी हैं । एकतो स्वदेशमें बनीहुई वस्तुओंको काममें लाना । तथा विदेशी बनीहुई चीजोंसे परहेज करना और दूसरा १४ प्रभावशाली पुरुषोंकी स्थायी कांग्रेसकमेटी स्थापित करना । यह कमेटी बारहोंमहिनें कांग्रेसके पास कियेहुए

मन्तव्योंको प्रचार करनेके प्रयत्नमें रहेगी । कांग्रेसके प्रस्ताव अब कागजोंमें लिखे हुए ही न रक्खे रहेंगे वे काममेंभी लाये जावेंगे । अबकी कांग्रेसके सभापति माननीय पं. गोपाल कृष्ण गोखले सी. आई. ई. हुएथे । न्यारे ९ प्रान्तोंसे आये हुए प्रतिनिधिओंकी संख्या एक हजारसे अधिक थी ।

अबकीबार काशीमें कांग्रेसके साथही एक शिल्पकान्फ्रेंसकी स्थापना हुई, और उसका पहला अधिवेशन बड़े जोरशोरके साथ हुआ। इसके सभापति बड़ौदाराज्यके दीवान सर रमेशचन्द्र दत्त महाशय हुएथे । आपने एक बड़े प्रभावशाली व्याख्यानमें भारतीय और विदेशीय शिल्पकी प्राचीन और वर्तमान स्थिती-का मिलान करके श्रोताओंको रुला दिया, और फिर बतलाया कि अब यहांका शिल्प किसप्रकारसे उन्नत होसकता है । उन्नत करनेकेलिये प्रधान उपाय यही बतलाया गया कि, हम लोगोंको स्वदेशीय वस्तुओंका व्यवहार करना चाहिये और विदेशी वस्तुओंको सर्वथा छोड़देना चाहिये । हम लोगोंको अपने व्यापार और शिल्पके वृद्धि करनेकेलिये राजाका आश्रय नहीं है । इसलिये अपनी शिल्पविद्याको जीवित करनेकेलिये इसके सिवाय और कोई दूसरा अच्छा उपाय नहीं है।

बंगालके अनेक राजकर्मचारियोंने बंगालियोंके स्वदेशी आन्दोलनसे चिड़कर जब वहांके स्कूलकालेजोंके विद्यार्थियोंपर अत्याचार करना शुरू कियाथा, तब वहांके अनेक मुखियाओंने स्वदेशी यूनिवर्सिटी स्थापित करनेका आन्दोलन कियाथा, उस समय बातकी बातमें १६ लाख रुपये इकट्ठे होगये थे । वही विषय अबकी कांग्रेसके समय पुनः उठाया गया । उस समय माननीय पं. बालगंगाधर तिलकने कहा कि, स्वदेशी यूनिवर्सिटीकेलिये चन्दा एकत्र करनेमें कुछ कठिनाई नहीं होगी, यहतो जितना चाहे होसकता है, परन्तु योग्य काम करनेवालोंकी कमी है, पहले उनका अन्वेषण करना चाहिये । तिलक महाशयके इस वचनके पूरे होतेही लोगोंका स्वदेशीजोश उबल पड़ा । आनरेबिल पं० मदनमोहन मालवीयने उछलके कहा, नहीं काम करनेवालोंकी कुछ कमी नहीं है । लीजिये! मैने आजहीसे अपनी वकालत छोड़ी, स्वदेशी यूनिवर्सिटीकेलिये मैं अपना जीवन समर्पण करता हूं । उनके साथही बाबू सुरेंद्रनाथ बनर्जीनेभी यही प्रतिज्ञा की । पश्चात् पं. तिलक और मन्द्राजके सुब्रह्मण्य अय्यरने तीन वर्षतक सब काम छोड़के यूनिवर्सिटीकी सेवा करनेका बीड़ा उठाया । प्रोफेसर बीजापुरकर, तथा प्रोफेसर भानुनेभी उक्त यूनिवर्सिटीके कार्यमें प्राणान्त परिश्रम करनेका प्रण किया । और इसकेबाद चन्देकी बात उठी तो देखतेही देखते ९ लाख रुपया इकट्ठे होगये । काशीके अकेले माननीय मुंशी माधवलालजीने तीन लाख रुपया देना स्वीकार किया ! धन्य है, देशभक्ति इसीको कहते है ।

भारतवर्षकी शिल्पविद्या और व्यापारकी वृद्धिकेलिये कांग्रेसकेद्वारा एक प्रदर्शनी प्रतिवर्ष खोली जाती है । उसमें भारतके भिन्न २ प्रान्तोंकी प्राचीन और नवीन कारीगरीकी वस्तुओंका संग्रह होता है । अबकीबार काशीमें यह प्रदर्शनी ता० २३ दिसम्बरको काशी-नरेश प्रभु नारायणसिंहजीकेद्वारा खोली गई थी । गतवर्षोंकी अपेक्षा अबकी प्रदर्शनीमें देशकी बनीहुई अनेक अच्छी २ चीजें देखी गई। प्रदर्शनीका मकान डेड़लाख वर्गफुट जमीनपर खड़ा किया गयाथा ।

कांग्रेसके साथसाथ काशीमें भारतधर्मम-हामंडल, सोशलकान्फ्रेंस, आर्यसमाज आदि अनेक सभाओंकेभी जल्से हुएथे। इनमें मद्य-पाननिषेधक सभाका जल्सा जो ता० २५ दिसम्बरको हुआथा, विशेष वर्णनीय है। यह सभा चाहती है कि, भारतवर्षमें शराब पीनेका रिवाज बिलकुल न रहै । इस सभाके सभापति डा. सर भालचन्द्र कृष्णजी हुएथे । आपने सरकारकी उस नीतिको बड़ी घृणित और दूषित बतलाया जिससे जगह २ शराबकी दूकानें स्थापित कराके सरकार अपनी आम-दनी बढ़ाती है । जिस भारतवर्षमें मदिरा अत्यन्त निंद्य, अपवित्र, अव्यवहार्य, असंस्पर्श्य और पतित करनेवाली गिनी जातीथी, उस देशमें अंग्रेज राज्यसरीखे सभ्यराज्यकेद्वारा उसी मदिराका अधिकाधिक प्रचार होना बड़ी लज्जाकी बात है । मद्यनिषेधकसभा सरकारसे इस नीतिके पलटनेकेलिये आग्रह करती है।

अभी ज्योंत्यों करके महासभाका महावि-द्यालय पूर्णताको पहुंच रहाथा, और उसकी ओर लोगोंका चित्त आकर्षित हो रहाथा कि, अनेक बाबू लोगोंको एक नये हाईस्कूलके बनानेकी सूझी है । सुना है कि, सहारण-पुरमें इस विषयमें अनेक महाशयोंने अपनी यहांतक महत्वाकांक्षायें प्रगट की कि, महा-विद्यालयकोही हाईस्कूलके रूपमें परिवर्तन कर-देना चाहिये, और किसी २ ने यहांतक सोची कि, महाविद्यालय हाईस्कूल नहीं तो और क्या है । इस विषयमें हम विशेष लेख महा-सभाके सहारणपुरीय जल्सेकी पूरी २ रिपोर्ट पढ़कर पीछे लिखेंगे, परन्तु आज इतना कहेबिना नहीं रहसकते कि, अभी जैनधर्मकी उन्नतिके दिन बहुत दूर हैं । किसी कविनें सच कहा है कि, "**गत्यधीनं हि मानसम्**" अर्थात् गतिके अनुसार मति होती है । सो भाइयों ! इसमें तुम्हारा कुछभी दोष नहीं है, जैनस-माजका भविष्यही कुछ ऐसा जानपड़ता है।

गत नवम्बर मासकी ११ और १२ तारी-खको श्रीरामटेक तीर्थपर बऱ्हाड़ और मध्य-प्रान्तिक दि० जैनसमाजका तीसरा वार्षिको-त्सव बड़ी धूमधामके साथ होगया । सभाप-तिका आसन शोलापुरके प्रसिद्ध विद्वान् और धनाढ्य श्रेष्ठिवर्य्य हीराचन्द नेमिचन्दजीने सुशोभित कियाथा । आपका व्याख्यान बड़ा गंभीर और उत्साहवर्द्धक हुआ । जल्सेमें अनु-मान १४००-१५०० सज्जन एकत्र हुएथे। इस सभाके मुख्य सहायक नागपुरके धर्ममूर्ति

शेठ गुलाबसाह ऋषभसाहजी हैं आपने अधिवेशनकेलिये सभामंडपादिकी खूब तयारियां कीथी। सभाने बारह प्रस्ताव पास किये, उनमें एक प्रस्ताव "नागपुरमें **जैनबोर्डिंगस्कूल** स्थापित होगया, उसमें भाइयोंको अपने २ बालकोंको भरती कराना चाहिये" इस विषयका है। उक्त बोर्डिंगका खर्च शेठ गुलाबशाहजीने जो ५००००) धर्मार्थ दिये हैं, उनके चतुर्थांशसे चलता है। क्याही अच्छा होता, यदि शेठजी अपने धर्मार्थद्रव्यको चार भागोंमें न बांटकर केवल बोर्डिंगमेंही लगा देते। इतने द्रव्यसे एक बोर्डिंगही चिरस्थायी होजाता न्यारे २ भागोंसे कोईभी कार्य पूर्णतया नहीं चलेगा।

स्तवनिधिक्षेत्रपर 'दक्षिण महाराष्ट्र जैनसमाज' का अधिवेशन होगया अबकीबार महसूरके प्रसिद्ध शेठ अनन्तराजअय्या उक्त सभाके सभापति चुने गये थे। आपकेद्वारा विदित हुआ कि, महसूरमें आपने एक सहायता गतवर्षसे खोल रक्खी है। उसमें गतवर्ष केवल २ लड़केथे, परन्तु अबकी साल ८ लड़के हैं। विद्यार्थियोंकी संख्या संतोषयोग्य होनेपर आप इसे बोर्डिंगके रूपमें प्रसिद्ध करदेंगे। कर्णाटक प्रान्तके जैनियोंमें किसी प्रकारकी स्फूर्ति सुनाई देनेसे हमको बड़ी प्रसन्नता होती है।

शेठ अनन्तराजअय्याकेद्वारा यहभी विदित हुआ कि, महसूरमें एक राजकीय संस्कृत विद्यालय और उसकी पृथक् यूनिवर्सिटी है। उसमें अनेक जैनग्रन्थ भरती हैं। गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूड़ामणि आदि जैन काव्यग्रन्थोंके पठन पाठनका महसूर प्रान्तमें अच्छा प्रचार है। आपने यूनिवर्सिटीमें कौन २ ग्रन्थ भरती हैं। उनकी सूची महसूर जाकर भेजनेका वचन दिया है।

गत ११ वें अंकमें जो माणिकचंद लाभचंदकी पत्नी माणिकबाईनें १५०००) धर्मार्थ देना विचारा था उसमेंसे ७०००) रु. आपने ईडरकी पाठशालामें देकर "श्री माणिकबाई दि. जैनपाठशाला ईडर" इस नामकी एक पाठशाला मृगसिर सुदी १२ शुक्रवारको स्थापित करदी। नाम संस्कारोत्सवमें एक सभा ८०० पुरुषोंकी ईडरमें हुई जिसका प्रमुखपद शा डाह्याभाई नाथाभाई सेशनजजको दिया गयाथा। उस जल्सेमें अध्यापक खेमचंद आदिके व्याख्यानोंके असरसे ३०००) और चंदा होगया तथा सेठ नाथारंगजी गांधी आकलूजवाले (सेठ राघवजी नाथा) ने मकान वृद्धिके वास्ते ५०१ दिये ओर जो अन्यग्रामकी स्त्रियां पढ़नेको आवें तो उनको रसोई खर्च आदिकेलिये १०) रु. माहवारी पांच सालतक देनेका वायदा किया इस प्रकार ईडर पाठशालाका ध्रुव भंडार १००००) होगया हम माणिकबाईको इस उत्तम कार्यकेलिये धन्यवाद देते हैं यही नहीं आपने बम्बईमेंभी अपने पतिके नामकी एक पाठशाला स्थापित करनेकेलिये पांच हजार रु. पहले बम्बई प्रां.

सभाको दियाथा परन्तु ५०००) रुपयेके व्याजसे बम्बईमें पाठशाला चल न सकी इस कारण उस फंडमें ३०००) रु. और देनेका वायदा किया है अब शीघ्रही बम्बईमें एक पाठशाला जिसमेंकि, छोटेछोटे विद्यार्थी पढेंगे खुलनेवाली है और उसका निर्वाह ८०००) के व्याजसे होगा उक्त बाईको हम इस कार्यकेलिये कोटशः धन्यवाद देते हैं और आशा करते है कि अन्यभाईभी बाई साहिबका अनुकरणकर द्रव्यको विद्यावृद्धिमें खर्च करेंगे.

आवश्यक सूचना.

नूतन श्रीवीरनिर्वाण सम्वत्के प्रारंभसे दि. जैनविद्वज्जनसभाने विरोधवर्द्धक विषयोंका आन्दोलन न करके नियमानुकूल कार्य करना प्रारंभ करदिया है और इसके सभापति परमसज्जन विख्यात एवं वयोवृद्ध मुरादाबाद निवासी श्रीमान् पं. चुन्नीलालजी महाशय नियत हुए हैं। वार्षिक फीसका २) के स्थानमें १) कर दिया गया है अतः धर्मरोचक विद्वज्जनोंसे प्रार्थना है कि इस सभाकी सभासदीको अवश्यमेव स्वीकारकर लुप्तप्राय जैनमतके सिद्धान्तोंको प्रकट करें। वर्तमानमें मेरेपास निम्नलिखित सज्जनविद्वज्जनोंके स्वहस्तलिखित सभासदी स्वीकारपत्र (फार्म) मौजूद हैं।

१ श्रीमान् पं. चुन्नीलालजी मुरादाबाद.
२ ,, ,,गोपालदासजी बरैया सोलापुर.
३ ,, ,, नरसिंहदासजी अजमेर.
४ ,, ,, गौरीलालजी देहली.
५ ,, ,, ज्योतिषरत्न जियालालजी फर्रूखनगर.
६ ,, ,, हीराचंदजी नेमीचंदजी आनरेरीमजिस्ट्रेट शोलापूर सिटी.
७ ,, ,, रघुनाथदासजी रईस सरनौ.
८ ,, ,, थानसिंहजी रईस पानीपत.
९ ,, ,,धन्नालालजी कासलीवाल बंबई
१० ,, ,, दर्यावसिंहजी रतलाम.
११ ,, ,, रामभाऊजी नागपुर.
१२ ,, ,, कस्तूरचंदजी साहित्योपाध्याय जयपुर.
१३ ,, ,,कन्हैयालालजी वैद्य० शेरकोट.
१४ ,, ,, जिनेश्वरदासजी देहली.
१५ ,, ,,सोहनलालजी अग्रवाल देहली
१६ ,, ,, अमोलकचंदजी कलकत्ता.
१७ ,, ,धर्मसहायजी लमेचू करहल

इति

नोट—जो महाशय इस सभाके सभासद होंगें उनकी सेवामें मंत्रीकी जिम्मेवारीसे जैनमित्र, जैनगजट और श्वेताम्बर जैनकान्फ्रेंस हरैल्ड अर्द्धमूल्यमें उपस्थित होंगे क्योंकि मैंने महामंत्रियोंसे प्रार्थना करके स्वीकारता प्राप्त करली है। इसी भांति अन्य जैनपत्राध्यक्षोंसेभी पत्रव्यवहार हो रहा है आशा है कि वेभी विद्वानोंका कुछनकुछ सत्कार अवश्य करेंगे।

जवाहरलाल जैनशास्त्री
जयपुर.

डेप्यूटेशन पार्टी और जैनसमाज।

जैन गजटके अंक ३४ ता. १ सितम्बर सन १९०९ में उपर्युक्त शीर्षक लेख छपा है और उसमें लिखा है कि डेप्यूटेशन पार्टीने अपना अभिप्राय एसाही प्रगट किया है। मैं तथा पंडित चुन्नीलालजीभी डेप्यूटेशन पार्टीके साथ थे। अभिप्राय तो एसेही थे परन्तु उस लेखके लेखकने अपना नाम प्रगट नहीं किया है यह संदेह है। परन्तु मेरी रायमें इस लेखके लेखक महाशय डेप्यूटेशन पार्टीके मेम्बरही हैं क्योंकि एसा लिखना कि डेप्यूटेशन पार्टीने अपना अभिप्राय एसाही प्रगट किया एसा वोही लिखसकता है जो पार्टीमें शामिलहो।

महासभाके प्रबन्धकोंको इसे स्वीकार करलेना चाहिये और साफ नाम प्रगट करदेना चाहिये। नहीं तो जैसा सन १८९७ में महासभाके जल्सेमें एक प्रस्तावपर झगड़ा चलनिकलाथा वैसे वादानुवादकी सम्भावना है।

आपका हितैषी,
रघुनाथदास जैन.
मु. सरनौ पोष्ट एटा.

अवश्य पढ़िये।

हमारे बहुतसे भाईयोंकी यह शिकायत आती है कि जैनसिद्धांतका लेख अतिशय कठिन है और इसकारण समझमें नहीं आता उन महाशयोंसे यह प्रार्थना है कि, वास्तवमें सिद्धान्तका विषयही कठिन है उसको हम कहांतक सरल करैं तथापि अपनी शक्तिअनुसार सरल किया है और करनेके प्रयत्नमें हैं जहां कहीं शब्द कठिन रहगये हैं और जो हमारे भाईयोंकी समझमें नहीं आये हैं वे कृपाकर लिखें हम उनका अर्थ जैनमित्रमें छाप देंगे. सिवाय इसके हमारे भाईयोंको यहभी उचित है कि, जब ये विषय कठिन है तो उसको उपयोग लगाकर दोदो तीनतीन बार पढ़ना चाहिये तथा एक प्रार्थना औरभी है कि, बहुतसे पदार्थ भूमिकामें इशारेरूप कहे गये हैं अब मौकेमौकेपर जहां उनका कथन होगा वहां विस्तारसहित कथन किया जायगा।

जैन समाजसे आजकल अच्छे२ रत्न निकलते जाते हैं और उनके अभावसे जैन समाज शोकित है पाठकगण इसीसे शिक्षा ग्रहण करलेना चाहिये कि, आत्माके कल्याण निमित्त निरन्तर धर्म साधन करते रहें कारण न मालूम कि, इस संसारसे अपनेको कब भागजाना पड़े. मध्यप्रदेशके दमोह जिलेसे श्रीमान् शेठ नाथूरामजीके भतीजे शेठ हजारीलालजी इस संसारको ता. ११-१२-१९०९ को छोड़गये आपके शोकसे जैनसमाज अधिक दु:खी है। मरण समय आप २२९०) रु. धर्मार्थ अर्पण करगये हैं हम उनके कुटम्बी जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि, आप शोकत्याग उनके स्मरणार्थ एक पाठशाला स्थापन करदैं।

उपहार! उपहार! उपहार!

जैनमित्रके अनुग्राहक ग्राहक महाशयोंको सूचना दी जाती है कि, जो महाशय जैनमित्रका मूल्य २ मार्च महिनेके प्रथम भेजकर सम्पादक जैनमित्रकी रसीद भेजेंगें उनको ~~१॥ रु०~~ की कीमतकी पुस्तक **दौलतविलास** उपहारमें दी जावेगी. आपका

गिरनारीलाल जैनी

रियासत टहरी जिला गढ़वाल.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ बारतक ≈) पंक्ति।

६ „ „ –)॥ पंक्ति।

१२ „ „ –) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।

६ „ „ ५) रु.।

१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—

संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। माह सुद १ श्रीवीर स० २४३२ अंक ७

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापुर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक =) पंक्ति ।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति ।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु. ।
६ ,, ,, ५) रु. ।
१तोले तककी ८) रु. ।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगें जो अश्लील और राज्यनियमकोविरुद्ध न होंगे ।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकोलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्टी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर ।

श्रीवीतरागायनमः

पौष्य शुक्ल १
माह सुद १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
७

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

महाविद्यालयका विलाप ।

मुख मलीन अति छीन हुआ, जैनीयोंका विद्यालय आज ।
जम्बूस्वामीकी पवित्र वसुधापर रोता है किम काज ? ॥
उत्सवका दिन बसन्त पांचें, उसमेंभी यह क्यों बे हाल ? ।
आओ ! प्यारे पाठकवर्गो ! तुम्हें बताऊं इसका हाल ॥ १ ॥
देखो ! वह लम्बी उसास लेके सिरधुनता कहता है ।
हाय मात ! हा तात ! दिया क्यों जन्म मुझे, जीदहता है ॥
दशवत्सरके बाद हुई कुछ, आशा सुखपानेकी थी ।
सो उसपरभी पत्थर पड़ गये, हुई वही जो होनी थी ॥ २ ॥
ऐसे बुरे वक्तमें मुझको जननी ! जन्म दिया क्यों ? हाय ! ।
जिससे एक घड़ीभी सुखसे, नहीं बिताई कभी अघाय ॥
भिक्षा मांगमांगके मुझको, मां ! अबतक क्यों बड़ा किया ?
नहीं खबरथी क्या तुमको, इस क्षणकी ? जिसने दगा दिया ॥ ३ ॥
यद्यपि मैं इस नगरीको, तज देनेमें कुछ दुखी न था ।
क्योंकि यहांके लोगोंमें, मेरा न सहायक कोई था ॥
तौभी यह न जानता था, इस तरह घसीटा जाऊंगा ।
बांध उंटकी दुमसे सारणपुर पहुंचाया जाऊंगा ॥ ४ ॥
हाय मात ! अब मेरी पूरी, दुर्गति होनेवाली है ।

---

१ महासभा । २ विद्यालयके स्थापक ।

मेरे भिक्षाके टुकड़ोंमेंभी पांती कर डाली है ॥
" खानेकी दो दो " पहलेही थी, अब फाके मस्ती है ।
आगे क्या होगा सो जाने दई, बड़ी कमबख्ती है ॥ ५ ॥
कहां जगन्माता जिनवाणीकी सेवा करनेको तात ! ।
दिया जन्म था मुझको इसका,सब समाज साक्षी साक्षात ॥
और कहां ये इंग्लिश-देवीकी कोरी सिरपच्चीमें ।
अब मैं डाला जाता हूं हा ! जबरन क्यों वयकच्चीमें ॥ ६ ॥
कहां जगतमेंजैनधर्मके गूढ़तत्त्व फैलानेको ।
हिंसादिक दुर्मत तज जगको, शुभ सत्पथमें लानेको ॥
हुआ जन्म था मेरा;-और, कहां अब ये मिथ्यात्व प्रचार ।
करवाया जावेगा मुझसे, सुन छाती फट होती छार ! ॥ ७ ॥
यद्यपि इंग्लिशदेवी मेरी, शत्रु नहीं है, सच कहता ।
और न उसकी वहबूदीसे, मेरा कुछ आता जाता ॥
पै यह उचित नहीं है जननी ! मेरे सिरपर उसे चढ़ा ।
मेरी रोटी उसको देके, मुझे घटाना उसे बढ़ा ॥ ८ ॥
" आरँभ किये काजको पूरा, करते हैं " उत्तम जनजो ।
" एक अधूरा छोड़ दूसरेको, दौड़ें " निकृष्ट जनसो ॥
इस्से, मुझे पूर्णकरके यदि, करते इंग्लिशका सत्कार ।
तौ जग धन्य ! धन्य ! कह उठता, होती उन्नति विविध प्रकार ॥ ९ ॥
" खाद्य पूर्ण पाककरके जबही, पौधा प्रौढ़ हुआ सुखकार ।
फूलखिले दोचार मनोहर, लगे मधुप करने गुंजार ॥
इतनेमें निर्दयी बागके, मालीने आके तबही ।
लिया उखाड़ " हाय ! मेरी गति हुई वही माता ! अबही ॥ १० ॥
औरस पुत्र स्वामि मैं, मुझको दे करके टुकड़ दो एक ।
सौतजेका मालिक सब धनका, करते हैं सब छोड़ विवेक ॥
पापाचरण पूर्ण जगसे क्या, लोप होगया न्याय विचार ? ।
हाय जननि ! ये तेरे मंत्री, कैसे हैं निर्दयी अपार ॥ ११ ॥

नाथूराम प्रेमी ।

---

२ सौतका लड़का—हाईस्कूल ।

विविध प्रसंग।

आजसे ७ वर्ष पहले बम्बईके प्रसिद्ध जौहरी बाबू पन्नालालजी परलोककी यात्रा करतेसमय आठ लाख रुपया दान करके धन्य २ हुए थे। परन्तु उनके पश्चात् उनके पुत्रों और दानकीहुई द्रव्यके ट्रष्टियोंमें कछ वैमनस्य बढ़ जानेसे उक्त द्रव्य किसी धर्मकार्यमें नहीं लगाया जा सका था। इसकारण श्वेताम्बर जैनसमाजके नेताओंमें इसबातकी बहुत चर्चा रहा करती थी। परन्तु हर्षका विषय है कि, उस द्रव्यसे बम्बईमें एक **बाबू पन्नालाल जैनहाईस्कूल** और **औषधालय** तयार होके गत ता० ९ जनवरीको बम्बईके गवर्नर **लार्ड लेमिंगटन**के द्वारा बड़ी धूमधामके साथ खोल दिये गये। स्वर्गीय बाबू पन्नालालजीकी विशाल उदारताका डंका आज विशेष स्वरूपसे देशभरमें बजने लगा। मरनेपरभी संसारमें अचलकीर्ति छोड़जानेका उपाय एक दानही है। और विचारवानोंकी प्रवृत्ति ऐसेही कीर्तिके कार्योंमें होती है। एक कविने कहा है कि, "**आस्था सतां यशःकाये न ह्यस्थायिशरीरके**" अर्थात् सज्जनोंकी आस्था यशरूपी शरीरमें रहती है, अस्थायी शरीरमें नहीं।

बाबू पन्नालालजी जैनहाईस्कूलकी इमारत बड़ी सुन्दर और मौकेकी बनाई गई है, देखनेसे चित्त प्रसन्न होजाता है। इसके खोलते समयमें लार्ड लेमिंगटन साहबने जो वाक्य कहे थे, वे जैनियोंके लिये बड़े महत्वके हैं। उनका भावार्थ यह है कि, "यह इमारत मुख्यतासे जैनजातिमें शिक्षावृद्धिके लिये तयार हुई है, यह जानके मुझे बहुत हर्ष होता है। अन्य हिन्दुओंके बालकभी उससे शिक्षालाभ करेंगे। बाबू पन्नालालजीका नाम इस उदारतासे चिरकालके लिये अमर हो गया है। जैनियोंका इतिहास जानने योग्य है। इसीप्रकार उनका धर्मभी जीवदयाका मुख्य प्रणेता है। अतएव जैनी लोग यदि अपनी जाति और अपने बन्धुओंकी भलाईमें तत्पर रहें, तो इसमें कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। जैनी बड़े उद्योगी और उदार हृदय होते हैं, मैं उन्हें बड़ी आदरकी दृष्टिसे देखता हूं। इस विद्यालयमें शिक्षा पाकर हजारों बालक तथा आधुनिक और भविष्यकी प्रजा बाबू पन्नालालजीको अनन्त आशीर्वाद देगी। बालकोंको सामान्यशिक्षाकेसाथ धार्मिकशिक्षा देनेकी बड़ी आवश्यकता है, क्योंकि, धर्मशिक्षासे लोक और परलोक दोनों सुधरते हैं, इत्यादि"।

यह जानके हमको औरभी बड़ा हर्ष हुआ कि, स्वर्गीय बाबू पन्नालालजीके पुत्रभी अपने पिताके समान उदार हृदयके हैं। उक्त समारंभमें उन्होंने बड़े उत्साहकेसाथ हाईस्कूलके ध्रुवफंडमें ३५५००) पैंतीस हजार पांचसौ रुपये औरभी देकर द्रव्यपानेका फललाभ किया है।

बम्बईकी शेठ माणिकचन्दजीकी नवीन धर्मशालामें गतपक्षमें बड़ी घूमधाम रही। पानीपतके प्रसिद्ध बेंकर लाला बद्रीदासजीका ९०० भाइयोंका संघ, सिवनीके शेठ पूरणसाहुजीका २०० सज्जनोंका संघ और एक दिल्लीवालोंका १०० धर्मात्माओंका संघ इसप्रकार तीन संघ एकत्र हुए थे। लाला बद्रीदासजीने अपने हार्दिक उत्साहसे शोलापुरका घोड़ोंका सुन्दर रथ मंगाकर ता० २१ जनवरीको भगवान्‌की जलेब सरेबाजार होके निकलवाई थी। उक्त रथ कलकेद्वारा चलता था, दर्शकोंकी बडी भीड़ थी। स्वर्गीय राजा बहादुर दीनदयालजीके पुत्र राजा ज्ञानचन्दजीके प्रयत्नसे पुलिस वगैरहका बड़ा अच्छा प्रबन्ध था। बड़ी सड़कमें बाजे बजवानेका किसीकोभी हुक्म नहीं है, परन्तु राजा सा० ने दिगम्बर जैनियोंकी प्रभावना बढ़ानेके लिये यह आज्ञा रथयात्राके समयमें मनसूख करा दी थी।

धर्मशालाके सभाके कमरेमें भगवानके प्रतिबिम्बकी स्थापना हुई थी। वहां प्रतिदिन पूजन, शास्त्र भजन, नृत्य, गायन और व्याख्यानादि होते थे। एक दिन स्त्रीसभामें शेठ माणिकचन्दजीकी विदुषी पुत्री मगनबाईका बड़ा अच्छा व्याख्यान हुआ था। गत ता० १६ जनवरीको शेठ हीराचन्द गुमानजीजैनबोर्डिंगस्कूलका निरीक्षण करनेकेलिये सम्पूर्ण यात्री गये थे। वहां बोर्डिंगकी ओरसे एक सभा की गई थी, जिसमें सभापतिका आसन संघाधिपति लाला बद्रीदासजीने स्वीकार किया था। पं० मंगलरायजी, लाला चोखेलालजी ट्रेजरर, मि० संघवी आदि अनेक सज्जनोंके व्याख्यान हुए। सभापति महाशयने एक वर्षके लिये दो स्कालर्शिप देनेकी इच्छा प्रगट की, एक संस्कृत विद्यालयके लिये १०) मासिक और दूसरा बोर्डिंगके किसी विद्यार्थीके लिये १०) मासिक। सिवनीके धनाढ्य शेठ पूरणसाहुजीने इस विषयमें अपना कुछभी अनुराग प्रगट न किया।

बम्बईके प्रसिद्ध जवेरी देवचन्द लालभाई मृत्युके समय दश हजार रुपया धर्मकार्यमें देना स्वीकार कर गये हैं, यह रुपया शीघ्रही किसी श्वेताम्बर जैनसमाजकी उन्नतिके कार्यमें लगाया जावेगा। उक्त धर्ममूर्तिदानीकी आत्माको सुख होवे, हम यह आशीर्वाद देते हैं। जो अपनी जाति और धर्मकी उन्नतिके कार्यमें द्रव्य देता है, वह पुरुष धन्य है।

हमको यह जानके हर्ष हुआ कि, काशी स्याद्वादपाठशालाके पठनक्रममें उसके प्रबन्धकर्त्ताओंने जैनग्रन्थोंकोभी स्थान दिया है। पाठशालामें इससमय १९ विद्यार्थी हैं, अनेक विद्यार्थी आनेकी इच्छा प्रगट कर रहे हैं। बम्बई प्रान्तिकसभाके उपदेशक मास्टर दीपचन्दजी उक्त पाठशालाके सुपरिंटेंडेंट नियत हुए हैं। प्रबन्ध अच्छा सुना जाता है।

सुना है कि, महासभाका महाविद्यालय अपने पुराने वतन मथुराको छोड़के वसंतपञ्चमीको सहारणपुर चला गया है, वहां पहुंचेतेही अंग्रेजी पाठशाला (हाईस्कूल) केसाथ उसका पाणिग्रहण करा दिया जावेगा । देखें ये भावी दंपति समाजके साथ कैसा बर्ताव करते हैं।

पन्ना राज्यके अन्तर्गत **श्रीरेसन्दीगिर** (नयनागिर) नामक तीर्थपर इस वर्ष **श्री बुन्देलखण्ड दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा**की स्थापना हुई है । इसके मंत्री **सागर**निवासी संघी बालचन्दजी, सवालनवीस नियत हुए हैं । हम आशा करते हैं कि, उक्त सभा बुन्देलखंडप्रान्तमें अच्छी सफलता प्राप्त करेगी । वहां संस्कृत विद्याके प्रचारकी बड़ी भारी आवश्यकता है !

विदेशी शक्कर ।

गत अंकोमें विदेशी शक्करकी अपवित्रताके विषयमें बहुत कुछ लिखा जा चुका है, जिससे भली भांति सिद्ध हो चुका है कि, वह शुद्धाचार-विचार-शील लोगोंके छूने योग्यभी नहीं हं । परन्तु जिनलोगोंको पराये मालपर मजे उड़ानेकी चाट लगी हुई है और जो विलायती सफाई और चाकचक्यपर लट्टू हैं, वे यह बात शीघ्रतासे नहीं मानते, क्योंकि, **चिरन्तनाभ्यासनिबन्धनेरिता गुणेषु दोषेषु च जायते मतिः** अर्थात् चिरकालके अभ्याससे प्रेरित की हुई बुद्धि गुण और दोष दोनोंमें जाती है । और इधर विलायती सभ्यताके परमभक्त हमारे अनेक भाई कहते हैं कि, विदेशी शक्करकी अपवित्रताकी बात यहांके लोगोंकी मन गढ़न्त है, यथार्थमें जैसा कहा जाता है, विलायती शक्कर उसप्रकारसे नहीं बनती। अतएव आज हम "इन्साइक्लोपेडियाबृटानिका" नामक अंग्रेजी पुस्तकसे विदेशी शक्करके साफ करनेकी विधिकी नकल करते हैं । अंग्रेजी भक्त सज्जनशायद इस अंग्रेजी पुस्तककी विधिको यहांके लोगोंसरीखी मन गढ़न्त नहीं समझेंगे और चिरन्तनाभ्यास बुद्धिवाले महात्माओंको कुछ घृणा उत्पन्न होगी । उक्त पुस्तकके ६२७ पृष्टमें इसप्रकार लिखा है;—"१४० या १६८ मन शक्कर लोहेकी एक बड़ी कढ़ाईमें डालकर पहले गलाई जाती है । शक्करके चलानेके लिये कढ़ाईमें एक यंत्र लगा रहता है । साथही गर्मभापके कुछ पाइपभी लगे रहते हैं, जिनसे गर्मपानी कढ़ाईमें बराबर गिरता रहता है । यह शीरा नियमित दर्जेतक औटाया जाता है । .... जब बहुत मैली शक्कर साफकी जाती है, तो वह खून (रक्त) से साफ होती है । .... गर्मशीरा रुई और सनके जालीदार थैलोंसे छाना जाता है । .... यह थैले बीच २ में साफ किये जाते हैं । फिर यह शीरा जानवरोंकी हड्डियोंके कोयलोंकी ३० से ५० फुटतक गहरी तहसे छनकर नीचे रक्खे हुए वर्तनमें आता है । इसतरह छननेसे शीरेका

रंग बहुत साफ और सफेद हो जाता है"। आशा है कि, धर्मात्मा सज्जन अब गोरे-लोगोंकी इस गोरी शक्करकी भक्ति करना छोड़ देंगे ।

खुली चिट्ठी ।

मान्यवर **बाबू देवकुमारजी** सम्पादक जैनगजटकी सेवामें

महाशय !

आप समाजकी ओरसे उस पत्रके सम्पादक बनाये गये हैं, जो **भारतवर्षीय श्रीदिगम्बरजैनधर्मसंरक्षणीमहासभा**का मुखपत्र और दिगम्बर जैनियोंका एक मात्र साप्ताहिक पत्र है । जैनीमात्रके लिये यह अभिमानका विषय है कि, उनके धर्मकी एक महती सभा है, और उससे एक पत्र निकलता है, जिसके सम्पादक लौकिक तथा धार्मिक दोनों विद्याओंके जाननेवाले आप सरीखे एक विद्वान् और धनाढ्य महाशय हैं । परन्तु जिससमय हम **जैनगजट**के पन्ने उलटने लगते हैं, उससमय हमारा उपर्युक्त अभिमान विलीन हो जाता है । हमको बड़ा दुःख होता है, और उसकेसाथही महासभाके लम्बे चौड़े नामका गौरव हमारे जीमेंसे छूमंतर हो जाता है ।

सब लोग यही जानते हैं कि, **जैनगजट**का सम्पादन आपकेद्वाराही होता है, परन्तु क्या मेरा यह कहना ठीक नहीं होगा कि, जबसे जैनगजट आपकेद्वारा निकला है, तबसे आपने अपनी कलमसे एक दो लेख शायदही लिखे होंगे ! परन्तु क्या बाबू साहब ! इससे आपकी योग्यतामें कुछ हानि नहीं होती ? और क्या इसप्रकार अपना गौरवशालीनाम गजटके मुखपत्रपर देकर आप जैनसमाजकेसाथ प्रवंचना नहीं करते हैं ?

यह बात सच है कि, आपको अपनी जमीदारी तथा अन्यान्यकार्योंके कारण गजटके सम्पादन करनेको योग्य समय नहीं मिलसकता है, और इस हेतुसे महासभाके कार्यकर्ताओंकी गजटको जबर्दस्ती आपके गलेमें डाले रखनेकी पालिसी अविचारित-रम्य है, परन्तु जब कि, आपको अपनेद्वारा गजटकी कुछ उन्नति होनेकी आशा नहीं है, तब वृथा संकोचमें पड़के क्यों उसकी और उसकी अधिष्टात्री महासभाकी मिट्टी खराब कर रहे हैं ? महासभाके मुंशी लोगोंको चाहे इसबातका विचार न होवे कि, गजटसेही महासभाके सब कार्य यथार्थ पद्धतिपर चल सकते हैं, और उसीसे उसके गौरवका प्रसार होता है, परन्तु आप तो इसपर विचार करें । इस बातको सुनके किसे आश्चर्य नहीं होगा कि, जैनगजट जिस महासभाका मुखपत्र है, उसकी स्थूल कार्यवाहियोंसेभी वह महीनोंतक अपरिचित रहता है । न जाने कैसे २ ऊंट पटांग समाचार उसमें छपा करते हैं । गत २४ जनवरीके अंक चौथेमें सहारणपुरके चिट्ठेके विषयमें टिप्पणियोंमें लिखा गया है कि, "बम्बईके हमारे एक मित्रने शुभसंवाद भेजे हैं कि, इसवर्ष महासभाके उत्सवमें महाविद्यालयके लिये

४० हजारका चिट्ठा होगया है। इसका सविस्तर हाल पीछे लिखा जावेगा"। देखिये कितना अन्धेर है। लोग इस बातके जाननेके लिये उत्कंठित हो रहे हैं कि, जैनगजटमें सभाके मंत्री अथवा सम्पादककेद्वारा सहारणपुरकी यथार्थ बातें मालूम होंगी, परन्तु महीना वीत जानेपरभी कुछ पता नहीं लगता दीखता। ऐसी दशामें यदि लोग कुछ गोलमालकी आशंका करें, तो क्या नहीं कर सकते?

महासभाकी उन्नति और अवनतिका जैनगजटकेसाथ बड़ा भारी सम्बन्ध है। क्योंकि महासभामें क्या होता है, इसके जाननेका साधन एक जैनगजट है। उसकी कमजोरीसे महासभामें बड़ी कमजोरी बढ़ रही है। आज लोगोंके सैकड़ों आक्षेपोंको वह पानीके घूंटसे पी जाती है। यदि उसके मुखपत्रमें कुछ शक्तिकी मात्रा होती, तो वह बहुतसे निकम्मे आक्षेपोंसे महासभाको बचा सकता और कदाचित् महासभाकी ओरसे लोगोंमें जो असन्तोष फैल रहा है, उसे फैलनेभी नहीं देता। इस बातपर आपको और महासभाको विचार करना चाहिये।

जैनगजटके आयव्ययके सम्बन्धमें रोना रोया गया है, कि, "इस वर्ष घाटा है, इसलिये महासभाके मेम्बरोंको अब यह भेटस्वरूप नहीं दिया जा सकेगा, इत्यादि"। इससे साफ जाहिर है कि, जैनियोंमें कोई पत्रोंका लेनेवाला और पढ़नेवाला नहीं है, और मेरी समझमें उदारशील जैनियोंके लिये इससे बढ़के और क्या निन्दाकी बात होगी कि, वे अपनी जातिके एक मुख्य साप्ताहिक पत्रकोभी नहीं चला सकते हैं? परन्तु यथार्थमें इसमें जैनियोंका कोई अपराध नहीं है। वे अखबारोंका पढ़ना और उनका मूल्य देना दोनों जानते हैं। परन्तु खेद यही है कि, वे जैनगजटसरीखे रद्दी कागजोंका व्यर्थ ढेर करना नहीं जानते। जैनी पत्र पढ़नेका शौक रखते हैं कि, नहीं, यदि इसबातकी आपको जांच करना हो, तो हिन्दी बंगवासी, भारतमित्र, व्यंकटेश्वर प्रभृतिपत्रोंके ग्राहकोंकी फेहिरिस्तोंको देखिये, उनमें आपको सहजही हजारके लगभग जैनी ग्राहकोंके नाम मिल जावेंगे। अब जरा विचार कीजिये कि, आपका जैनगजट यदि भारतमित्रादि पत्रोंके समान व्यापारादि सम्पूर्ण विषयोंके ताजे समाचार और लेखोंसे सुसज्जित निकले, तो जैनी भाई जैनगजटको छोड़के अन्यपत्र किसलिये लेवेंगे? और तब आपको यह घाटेकी गुहार मचानेकी नौबत क्यों आवेगी? आप पत्रको अच्छा बनाइये, फिर देखिये, कैसी फुर्तीसे उसके ग्राहक जुटते हैं?

अभी कुछ दिन पहले एक मित्रकेद्वारा सुना था कि, आप जैनगजटके सुधारकी चेष्टामें हैं, और शीघ्रही उसके लिये एक स्वतंत्र प्रेस खोलकर "लखनौमें छपकर आरेसे रवाना होनेके" झगड़ेको मिटाया चाहते हैं,

१ और मजा यह है कि, उन्हीं मित्र महाशयने उक्त अंकसे पहलेके अंकोंमें सहारणपुरकी पूरी २ रिपोर्टें छपवा दी है! पर यहां उसकी खबरही नहीं।

तथा प्रसिद्ध लेखक बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी आपके सहायक सम्पादक बनना स्वीकार करते हैं, परन्तु इस आशाजनक विचारका फल क्या हुआ सो अभीतक अप्रकट है । क्या कृपाकरके आप वह दिन दिखलावेंगे, जिसमें मैं जैनगजटको एक नामी पेपर समझके पढ़ना प्रारंभ करूंगा ।

एक चिट्ठीवाला ।

जीवनसफल कैसे हो ?

१ अंग्रेज देवोंकी सेवा करके उसके प्रतिफल रूप **राय, रायबहादुर, राजा,** अथवा **सीं. आई, ई.** की उपाधि पालेनेसे।

२ अंग्रेज महात्माओंकी बूटकी ठोकड़ खाकरभी खुशामद करते रहनेसे और देशी लोगों तथा जातिभाइयोंको हिकारतकी दृष्टिसे देखनेसे ।

३ विलायती प्रोफेसरोंके वाक्योंको ऋषितुल्य माननेसे और देशके वृद्ध विद्वानोंको ओल्डफूल (Oldfool) कहकर नाकभोंह सिकोड़नेसे ।

४ कोट, पटलून, हैट, बूट, पहननेसे, मुंहमेंसे चुरटका एंजिन सरीखा धुआं उड़ानेसे, रस्ते चलते सोडावाटरकी बाटलियां खाली करनेसे और बिसकुट डबलरोटियोंका नित्य भोग लगानेसे ।

५ आसुरी आंग्लभाषाको परमोद्धारिणी और पूजनीया देव वाणी संस्कृत तथा नागरीको निकम्मी और बेडलेंग्वेज कहनेसे ।

६ बी. ए. एम. ए. की डिग्रियां हासिलकरके किसी अच्छे ओहदेको पालेनेसे और उसमें मग्न होकर जाति, धर्म और देशहितसम्बन्धी कार्योंको फिजूल, और पागलपन समझनेसे ।

७ देशकी बनी हुई वस्तुओंको अपवित्र समझनेसे और विलायती चमकीली भड़कीली चीजोंके परम उपासक बननेसे ।

८ और धर्मशिक्षासे देशकी जातिकी उन्नति कभी होनेकी नहीं, इसप्रकारके उपदेश देने तथा लेखलिखनेसे बहुत जल्दी जीवन सफल हो सकता है ।

जैनहाईस्कूल सहारणपुर ।

पंचायती मंदिरमें लाला अजितप्रशादजी रईस व खजानची देहरादूनकी अध्यक्षतामें ता० ३१ दिसम्बर सन १९०५ को एक सभा हुई । महासभाके जोंइन्ट जेनरल सेक्रेटरी बाबू बनारसीदासजी एम. ए. वकीलने पेश किया कि, जो हाईस्कूल महासभाने सहारनपुरमें खोलना स्वीकार किया है वह महासभाकी मेनेजिंग कमेटीकी सुपुर्दगीमें होगा परन्तु स्थानीय प्रबन्धकेवास्ते एक लोकल कमेटीकी आवश्यकता है जो कि, सहारनपुरकी पंचायतीसे चुनी जाना चाहिये । सिवाय इसके यहभी तजवीज करना चाहिये कि, जैनकालेजके लिये मुनासिब जगह कहां होगी और महाविद्यालय मथुरासे सहारनपुर कब आवे जैनपाठशाला सहारनपुरका जैन-

कालेजसे क्या ताल्लुक होगा इसपर निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१ जैनकालेजके लिये जैनबागकी अपेक्षा और दूसरा स्थान उत्तम नहीं है इसलिये जैनकालेज उसी स्थानमें खोलना चाहिये। और महाविद्यालय और हाईस्कूलभी उसी जगहमें होवे।

२ जैनपाठशाला सहारणपुर और नीज़दीगर पाठशालायें जैनकालिजकी शाखा होंगी यानी जैनकालिजके लिये तालिब इल्म तय्यार करैंगीं।

३ जिस तारीखको महाविद्यालय मथुरासे लाकर जैनबागमें स्थापित किया जावे या हाईस्कूल खोला जावे उसको लोकलकमेटी मुहूर्तकेसाथ मुकर्रर करैगी।

४ लोकलकमेटीमें कमसेकम २१ और ज्यादासे ज्यादा ३० मेम्बर होंगें और ६ मेम्बरोंका कोरम होगा। लाला जुगमन्दिरदासजी आदि २८ लोकलकमेटीके सभासद नियत किये जांय। बाबू हरदयालजी और अर्जुनलालजी सहायक नियत किये जांय। बाबू बनारसीदासजी सेक्रेटरी, बाबू चन्दूलालजी जोइन्ट सेक्रेटरी और ला. जुगमन्दिरदासजी खजांची, बाबू अर्जुनलालजी सुपरइन्टेन्डेन्ट नियत किये जांय।

५ इन्तजामी कमेटीका जल्सा फिलहाल जैनपाठशालामें हुआ करै और सेक्रेटरी वक्त और तारीख जल्साकी बाहरके मेम्बरोंको एक सप्ताह पहिले और यहांके मेम्बरोंको २४ घंटे पहिले सूचना दिया करैगा।

ता. ७ जनवरी सन १९०६ को जैनपाठशालामें कमेटी हुई। लाला खूबचंदजी रहीस सभापति चुने गये और निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१ वैसाखमासमें जैनबागमें जैनकालेजकी नीव रखना चाहिये और नीवकी चिनाईकेवास्ते उत्तम मुहूर्त दिखाना चाहिये।

२ लाला गंगारामका कटेहड़ और लाला माईदयाल शिवदयाल कंबलवालोंकी हवेली या दूसरा उचित मकान फिलहाल हाईस्कूल और बोर्डिंगहाउसके लिये किरायेपर लिये जावें। लाला मुकन्दलालजी व लाला बद्रीदासजी एक हफ्तेके भीतर २ मकानका किराया तय कर लेवें और जो किराया ये तय करेंगें वह सबको मंजूर होगा।

३ इस स्कूलमें निम्नलिखित विद्यार्थी पढ़ेंगें।

१—जैन।

२—वे अन्यमती जो मांस और मदिराके त्यागी हैं।

३—मान्समदिराभक्षकजातिवाले वे विद्यार्थी ग्रहण किये जांयगे कि, जिनकी उमर १० वर्षसे ज्यादा न हो तथा वे जैनबोर्डिंगमें रहना स्वीकार करैं और यावज्जीव मांस मदिरका त्याग करैं।

४ इस हाईस्कूलमें फिल हालदो डिपार्टमेन्ट होंगें। १ इंगलिश डिपार्टमेंन्ट २ संस्कृत डिपार्टमेन्ट संस्कृत डिपार्टमेन्टकी मंशा पंडित लोग पैदा करें और इंगलिश डिपार्टमेन्टकी मंशा

यूनीवरसिटीके अनुसार अंग्रेजीकी शिक्षा देना होगी लेकिन अंग्रेजी पढ़नेवाले जैनविद्यार्थियोंको धार्मिकशिक्षा अवश्य लेनी होगी ।

५ अध्यापक और उनके खर्चका अनुमान निम्नप्रकार होगा ।

इंगलिश डिपार्टमेंट

जाति अध्यापक	वर्तमानबेतन	वृद्धि सीमा
प्रधान अध्यापक	.... ८०)	.... ११०)
द्वितीय अध्यापक	.... ६०)	.... ८०)
तृतीय अध्यापक	.... ५०)	.... ६०)
चतुर्थ ,,	.... ४०)	.... ५०)
पञ्चम ,,	.... ३५)	.... ४०)
षष्ठम ,,	.... ३०)	.... ३५)
सप्तम ,,	.... २५)	.... ३०)
अष्टम ,,	.... २०)	.... २५)
नवम ,,	.... १५)	.... २०)
दशम ,,	.... १५)	... २०)
फारसी अध्यापक	.... २५)	.... २५)
संस्कृत ,,	.... २५)	.... २५)
साइन्स माष्टर	.... ४०)	.... ४०)
	४६०	* ५८०)

संस्कृत डिपार्टमेन्ट

प्रधान अध्यापक	५०)
द्वितीय अध्यापक	२५)
	७५)
नोकर	५०)
मुतफर्रिक खर्च	९५)
	८००)*

* रिपोर्ट लेखक महाशयने भूलसे ४८०) जोड़ रक्खा था

* रिपोर्ट लेखकने भूलसे ७००) रक्खे थे

६–कुरसी २५ मेज १५ बेन्च पचास डेक्स पचासके प्रबन्धके वास्ते लाला गूदड़मलजी, चौधरी खूबचन्दजी, बाबू गिरधरलालजी, बाबू प्रभुलालजी, और चौधरी उलफतरायजी नियत किये गये

७–वषंतपञ्चमीको महाविद्यालय मथुरासे लाकर शहरमें स्थापित किया जावे ।

८–चन्दा माहवारी १ ली जनवरी सन १९०६ से शुरू होना चाहिये ६ माहका पेशगी लेना चाहिये । महाविद्यालयके सहारणपुर आनेपर उगाही शुरू की जायगी

९–एक मुश्त चंदाकी उगाहीभी महाविद्यालयके सहारणपुर आनेपर होनी चाहिये

१०–लाला मित्रसेनजी और लाला उग्रसेनजीके यहां चौधरी खूबचन्द आदि २० महाशयोंका डेप्यूटेशन भेजा जाय ये महाशय ता. २८ जनवरी सन १९०६ को १२ बजे दिनके जैनपाठशालामें एकत्र होवे और १ बजे लाला मित्रसेनजी वा लाला उग्रसेनजीके यहां जावें सेक्रेटरी इन २० महाशयोंको इत्तला देवें और लाला निहालसिंह और लाला धन्नामलजीकेद्वारा लाला मित्रसेनजी व लाला उग्रसेनजीके यहां सूचना भेजी जावे ।

११–महाविद्यालयके विद्यार्थी २७ जनवरीसे पहले सहारनपुर आजावें ।

बनारसीदास सेक्रेटरी
जैनहाईस्कूल सहारणपुर

नोट।

क्यों ? समझे पाठक महाशय ! ये महासभाके कर्ताधर्ताओंकी गूढ़पालिसी-का भंडाफोड़ ! महाविद्यालयको मथुरासे सहारनपुर लाकर महाविद्यालयके नामतकको नेस्त नाबूद करडाला अब उसका नवीन नामकरणसंस्कार हुआ है "संस्कृत डिपार्टमेंट" महाविद्यालय और हाईस्कूलके भंडारकी खिचड़ी पकाकर एक दोनेमें थोडीसी खिचड़ी (७५) मासिक) महाविद्यालयको डाल क्षुत्क्रान्त महाविद्यालयके भिक्षाके टुकड़ोंकोभी उससे छीनकर हाईस्कूलका पोषण करनेमें महासभाके अधिकारियोंने जो धर्मदयाका परिचय दिया है वह आज आपके साम्हने है इनकी इस गूढ़नीतिसे अनुमान होता है कि, यह संस्कृत डिपार्टमेंटभी कुछ दिनमें सैकिंड-लेंग्वेजकी पर्याय धारण करके अपने स्वरूपसे योजनों दूर पहुंच जायगा इस प्रकारसे महाविद्यालयकी हत्याके दोषके भागी वे महासभाके सभासद होंगे कि, जो महाविद्यालयकी हत्या करनेवाले कार्याध्यक्षोंको महासभासे अलग करनेकी सामर्थ्य रखनेपरभी छह महीनेकी कुंभकर्णीनींदका मज़ा लूट रहे हैं! भाइयो, निद्राको पूरी करो आपका चिरलालित मृगशावक क्रूरसिंहके पंजोंमें फसा हुआ सिसक रहा है वह देखो, मित्रके प्रथम पेजमें करुणाजनक स्वरसे विलाप कर रहा है क्या ? है ! कोई ! जैनियोंमें माईका लाल जो इस सिसकते हुए महाविद्यालयको अकालमृत्युसे बचावै ।

सम्पादक ।

पुस्तक समालोचना ।

वलिदान मीमांसा—उक्त नामकी पुस्तक संस्कृतसे हिन्दी अर्थसहित सुन्दर भाषामें लिखी गई है । पुस्तक संग्रह करने योग्य है। इसमें वलिदानका पूर्णरूपसे खंडन किया गया है पं. तुलसीरामस्वामी यंत्रालय-मेरठसे मिलती है ।

मनमोहनी—नामका उपन्यास बाबू शीतलप्रशादजी लखनऊ निवासी द्वारा लिखा गया है भाषा और छपाई अच्छी है । ग्रन्थकर्ताके पाससे मिलता है ।

भारतेन्दु—हिन्दी मासिकपत्र काशीसे समितिद्वारा प्रकाशित होता है छपाई कागज अच्छा है वार्षिक मूल्य १) रु० है

देशोन्नतिनो सरल मार्ग—यह एक गुजरातीकी पुस्तक श्री जैनधर्म विद्याप्रसारक वर्ग पालीताणाकेद्वारा प्रकाशित हुई है पुस्तकका विषय और छपाई अच्छी है ।

सनातन जैन—इस नामका मासिक गुजराती पत्र राजकोटसे मनसुखलाल रवजीभाई श्वेताम्बरीकेद्वारा प्रसिद्ध होता है कीमत ॥।) है ।

नया इल्म शफाबल्शी—डाक्टर लुईकी बनाई हुई जल चिकित्साका अंग्रेजीसे उर्दूमें अनुवाद है । अनुवादक श्रोत्री कृष्णस्वरूप गवर्नमेन्ट प्लीडर. बी. ए. विजनोर जि० वदायूं हैं विषय बहुत अच्छा है। यह उर्दूवालोंके कामकी है ।

बुद्धधर्माचे अमूल्य नियम—कीमत १) त्र्यंबकशास्त्री खरे हेडमाष्टर व्यापारीशाला सोलापुरने बनाई है पुस्तककी शिक्षा और छपाई अच्छी है मरहटी समझनेवालोंको मगाना चाहिये ।

ज्ञानवर्धक डायरी—सन १९०६ का रोजनामचा हरएकको अपनेपास रखना चाहिये । बीचबीचमें शिक्षायेंभी अच्छी दी गई हैं की० ।) है पता सेठ केशवसा महेकालसाजी डायरी आफिस. खंडवा ।

दरिद्रतासे श्रेय (प्रथम भाग) मि. जेम्स ऐलनसाहिबकी "From Powerty to power" नामक अँग्रेजी पुस्तकका हिन्दी अनुवाद । अनुवादक–लाला मुंशीलालजी, एम. ए. लाहोर । इस पुस्तकमें १ दुःखका उपयोग २ संसार मानसिक दशाओंका एक प्रतिबिम्ब है. ३ अनभिमत दशाओंसे निकलनेका मार्ग ४ विचारकी गूढशक्ति मनुष्यकी शक्तियोंको वशमें रखना और ऋजु मार्गपर लाना ५ आरोग्यसिद्धि और सामर्थ्य प्राप्त करनेका भेद, ६ परमसुख वा आनन्दका कारण, ७ ऋद्धि वा ऐश्वर्यका अनुभव ये सात सुन्दर पाठ हैं उसीप्रकार उसका विषयभी बड़ा हृदयग्राही है । पुस्तकभरमें आप ढूंढोगें तो एक वाक्यभी निरर्थक न मिलेगा, जो कुछ कहा है बड़ी सावधानीसे कहा है. पुस्तकका विषय सर्वाभिमत है किसीके विरुद्ध एक अक्षरभी नहीं है इसलिये प्रत्येक पुरुषको इस पुस्तकका पाठ करना चाहिये और हो सके तो उसके अनुसार आचरणभी करना चाहिये यदि स्थान मिला तो, इस पुस्तकका कोई एक पाठ हम अपने पाठकोंके लिये आगामी अङ्कमें प्रकाश करैंगें आशा करते हैं कि, अनुवादक महाशय उसके अब शेष भागोंका अनुवादकर हिन्दी साहित्यका उपकार करैंगें हमको इस पुस्तकके अवलोकनसे बड़ी प्रसन्नता हुई है आपसरीखे हिन्दी लिखनेवाले विद्वानोंकी हमारी समाजमें बहुत कमी है. पुस्तकका मूल्य सिर्फ ।) है.

पत्ता–लाला मुंशीलालजी, एम. ए. गवर्नमेन्ट पेंशनर छप्परवाली गली, लाहोर.

भूल संशोधन

अंक	पेज	कालम	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
२	सिद्धान्त ८	१	१८	उसको स्वद्रव्यादि	उसको परद्रव्यादि
४	सुशीला १३	२	३०	ध्यानकी कली खुलगई	ध्यानकी ताली खुल गई
४	टाईटिल २	२	६	२॥)	॥)

आवश्यकता

तीर्थक्षेत्रकमेटीके कार्य करनेके लिये एक क्लार्ककी आवश्यकता है जो कि, अंग्रेजी और हिन्दीका जाननेवाला जैनी होवे तनख्वाह २०) से २५ तक दी जावेगी। दरख्वास्त अपनी चालचलनके सार्टीफिकट साथ नीचे लिखे पतेसे भेजना चाहिये।

सेठ चुनीलाल झवेरचंद मंत्री तीर्थक्षेत्रकमेटी झवेरी बाजार ३४० बम्बई।

बम्बई प्रान्तिकसभाके लिये एक उपदेशककी आवश्यकता है जो कि, जैनधर्मका ज्ञाता होवे और सभामें उपदेश देसके वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा विनयपत्र साथ चालचलनकी सार्टीफिकट नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये।

सेठ हीराचंद नेमिचंद आनरेरी मजिष्ट्रेट मंत्री उपदेशकभंडार सोलापुर

स्वीकृत प्रस्ताव

दिगम्बर जैनप्रान्तिक सभा बम्बईकी प्रबन्ध कारिणीसभाका निम्नलिखित प्रस्ताव परोक्ष पत्रद्वारा स्वीकृत हुआ।

१-सेठ जीवराज गौतमचंदको सहायक महामंत्री नियत किया जाय।

जैनमित्रके ग्राहकगणोंसे निवेदन।

महाशयो—गतवर्षमें बहुतसे सज्जनोंने सालभर जैनमित्रको शौकसे पढ़ा पर अंतका वी. पी. नीचा मुंहकर वापिस कर दिया जिससे खूब वी. पी. वापिस आये हमनेभी समझा कि, वादी छटी नाम अलगकर दिये गये. अब पाक्षिकपत्रके शौकीन ग्राहकोंसे निवेदन है कि, आप शीघ्र मूल्य भेजना प्रारंभ कीजियेगा अथवा वी. पीकी आज्ञा भेजियेगा. गत वर्षके अनुसार वी. पी. सालके अंतमें न की जावेगी. इसका प्रारंभ शीघ्र होनेवाला है ग्राहकोंको सचेत होना चाहिये।

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

सप्तम वर्ष । फाल्गुण कृष्ण १ श्रीवीर स० २४३२ । अंक ८

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया ।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना ।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ „ „ -)॥ पंक्ति।
१२ „ „ -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३)रु.।
६ „ „ ५)रु.।
१तोले तककी ८)रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगें जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेप नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवावी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

उपहार! उपहार! उपहार!

जैनमित्रके अनुग्राहक ग्राहक महाशयोंको सूचना दी जाती है कि, जो महाशय जैनमित्रका मूल्य मार्च महिनेके प्रथम भेजकर सम्पादक जैनमित्रकी रसीद भेजेंगें उनको ।।) आठ आनाकी कीमतकी पुस्तक **दौलतविलास** उपहारमें दी जावेगी. आपका

गिरनारीलाल जैनी
रियासत टहरी जिला गढ़वाल.

विना मूल्य सुभाषित शतक

जो भाई एक कार्डपर अपने यहांके हिन्दी पढे स्वाध्याय करनेवाले १० भाईयोंके नाम और पते लिखकर भेजेंगें अथवा अपने आसपासके १० जैनमन्दिरोंके नाम ठिकाने लिखकर भेजेंगे उनको यह विनामूल्य भेजी जायगी

गिरगांव } **जैनीभाईयोंका दास**
बम्बई } **पन्नालाल जैन**

आवश्यकता

तीर्थक्षेत्रकमेटीके कार्य करनेके लिये एक क्लार्ककी आवश्यकता है जो कि, अंग्रेजी और हिन्दीका जाननेवाला जैनी होवे तनख्वाह २०) से २५ तक दी जावेगी। दरख्वास्त अपनी चालचलनके सार्टीफिकट साथ नीचे लिखे पतेसे भेजना चाहिये।

सेठ चुनीलाल झवेरचंद मंत्री
तीर्थक्षेत्रकमेटी झवेरी वाजार३४० बम्बई।

बम्बई प्रान्तिकसभाके लिये एक उपदेशककी आवश्यकता है जो कि, जैनधर्मका ज्ञाता होवे और सभामें उपदेश देसके वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा विनयपत्र साथ चालचलनकी सार्टीफिकट नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये।

सेठ हीराचंद नेमिचंद आनरेरी मजिष्ट्रेट मंत्री उपदेशकभंडार सोलापुर

श्रीवीतरागायनमः

फागुण वद १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
८

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

हमारी दशा ।

अहो ! तत्त्वविज्ञान विशारद, आर्यखंडके अधिवासी ।
आजकालकी उच्चसभ्यताकेभी शिक्षक इतिहासी ॥
क्षमाशील संतोष प्रभृति, सद्धर्मोंके पालन हारे ।
सुनलीजे कहता हूं क्या मैं, जरा चित्त देके प्यारे ॥ १ ॥
परमपवित्र पूजनीया यह, वसुधावही तुम्हारी है ।
जहां कभी न अकाल पड़ा था, प्लेग और महामारी है ॥
धनजनसे परिपूर्ण जहां, नरनारी सुखसे रहते थे ।
साध चार पुरुषारथ, स्वारथत्याग मोक्षपद लहते थे ॥ २ ॥
जहां नृपति निज सुखी प्रजाका, सब प्रकारसे था स्वामी ।
प्रजा जहांकी अपने नरपति, की रहती थी अनुगामी ॥
भक्ष्य और भक्षकके ऐसा, जहां कभी नहिं हुआ प्रबन्ध ।
दोनोंके दोनों सच्चे थे, शुभचिन्तक प्रेमी अनुबंध ॥ ३ ॥
जहां मुनीजन विचर सदा, उपदेशधर्मका देते थे ।
श्रावक और श्राविका मिलकर, तत्वमर्म गह लेते थे ॥
निज सामर्थ्य विचार चार परकार दान नित देते थे ।
यों संसार असाररूपको, सारभूत कर लेते थे ॥ ४ ॥
जहां हरी हलधरसे बलधर, चक्रीसे वैभववाले ।
जगतसेठसे दानी श्रीमद्, बाहूबलिसे व्रतवाले ॥

श्रेठ सुदर्शनसे इन्द्रियजित, अकलंकादिकसे ज्ञानी।
होते थे नितही यशशाली, समदृष्टि सम्यग्ज्ञानी ॥ ५ ॥
वही परमपावन स्वदेश अब, महामेवसे छार हुआ।
पारतंत्र्यके पंजेमें पड़, दुःखोंका आगार हुआ ॥
पृथ्वीका पालक होके खुद, टुकड़ोंको मुहताज हुआ।
ताजतख्त सब गया हाय, परसेवाका अब साज हुआ ॥ ६ ॥
अनावृष्टि अति वर्षा होती, ओले खूब वरसते हैं।
पड़ते हैं अकाल जिससे प्लेगादिक होते ससते हैं ॥
दीन हीन लाखों जन हाहा, अन्न अन्न चिल्लाते हैं।
त्राहि त्राहि करके कराल उदरानलमें जल जाते हैं ॥ ७ ॥
हुआ अभाव सर्वथा सच्चे, उपदेशक गुरु मुनियोंका।
श्रावक श्रद्धावान रहे नहिं, आदर रहा न गुनियोंका ॥
स्वारथ निंद्य वासनाओंने, घर घर डेरा जमालिया।
धनवल विद्या बुद्धि और, पुरुषारथ सारा गमा दिया ॥ ८ ॥
धर्म कर्म उठ गया साथही, पाप निशाचर आधमका।
ढोंगी भेषी पाखंडी ठग लोगोंका, तारा चमका ॥
पढ़े एक अक्षरभी नाहीं, भट्टारक कहलाते हैं।
अथवा वावा वर्णी वनके, कोरी क्रिया पुजाते हैं ॥ ९ ॥
नये नये पंथोंकी रचना, होती हैं अब इस मतमें।
ऋषिप्रणीत ग्रन्थोंपरसे, उठ श्रद्धा गई विलायतमें ॥
क्रियाकांड निज कपोल कल्पित, गढ़ वतलाया जाता है।
अथवा तोड़फोड़के ग्रन्थोंसे, सिखलाया जाता है ॥ १० ॥
इस प्रकार जो अधोदशा हो रही दिनोंदिन भारतकी।
सामाजिक आर्थिक धार्मिक सब, कामोंमें अति आरतकी ॥
प्यारे भाई! उसका कारण सोचो समझो मनन करो।
एक चित्त फिर होके सवही, प्रतीकारका यतन करो ॥ ११ ॥

नाथूराम प्रेमी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

पवित्र तीर्थोंकी यात्रा करनेके लिये बड़े २ संघ निकालनेसे जातिमें एकता, नीरोगता धर्मोत्साह, परोपकारबुद्धि, सद्भाव और ज्ञानकी वृद्धि होती है। धर्मकी प्रभावना, चिरकालकी धर्मसम्बन्धी शंकाओंका निराकरण होना और एक दूसरेके दुःखमें दुःखी और सुखमें सुखी होनेकी वान पड़ना, इत्यादि अनेक लाभ इस संघयात्रासे होते हैं। हमलोगोंमें यह संघयात्राकी प्रथा बहुत प्राचीनकालसे चली आ रही है। और अबभी हमारे समाजके प्रतिवर्ष सैकड़ों संघ तीर्थोंकी बन्दनाको निकलते हैं। यद्यपि आजकल रेल तार और सड़कोंके कारण तीर्थयात्रा एक सहज बात हो गई है, परन्तु यथार्थमें पूर्वकालके समान आजकलकी संघयात्राओंमें न तो आनन्द प्राप्त होता है और न लाभ होता है। इस वर्ष जो दो तीन बड़े २ संघ निकले, उन्हें देखकर हमारा उपर्युक्त विचार बहुत दृढ़ हो गया है। द्रव्य खर्चकरकेभी हमारी जाति संघोंसे वे लाभ नहीं उठा सकती जो पहले उठाती थी। यह बड़े खेदकी बात है।

पूर्वकालके संघोंका आजकलके संघोंसे मिलान करनेमें जमीन आसमानका अन्तर जान पड़ता है। पहले जो संघ निकाले जाते थे, उनमें अधिकांश पढ़े लिखे विद्वान् श्रावकश्राविकाओंका होता था। आजकल जो संघ निकलते हैं, उनमें शायद एक विद्वान्भी ऐसा नहीं होता, जो संघको सामान्यतः शास्त्र तो पढ़के सुना दिया करे! अथवा धर्मोपदेश दिया करै। पहले जब संघ तीर्थोंपर पहुंचता था, तो वहांपर अच्छे २ विद्वान् ऋषिमुनियोंके दर्शन होते थे, शास्त्रसम्बन्धी संशय उनकेद्वारा निरसन होते थे, शास्त्र और मन्दिरोंके जीर्णोद्धार करनेकेलिये लोग जीखोलके द्रव्य देते थे। आजकल जब संघ तीर्थोंपर पहुंचता है, तो वहांके पंडे पुजारी चींथना शुरू करते हैं, मुनीम गुमास्ते लूटके अपना और अपने प्रबन्धकर्त्ता मालिकोंका घर भरना शुरू करते हैं, और लोग आंखें बन्दकरके उन्हें देना शुरू करते हैं। जिनवाणी और जिनमन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें एक कौड़ीभी नहीं लगती! पहलेके संघ पुण्यवृद्धिके लिये निकलते थे; आजकलके नामकी वृद्धिके लिये निकलते हैं। इसप्रकार पहले और आजकलके संघमें अन्तर देखे जाते हैं, तब यह कहना कुछ अनुचित नहीं है कि, जाति और धर्मको जो लाभ पहलेके संघ पहुंचाते थे, वह आजकलके नहीं पहुंचाते! सो हमलोगोंको ऐसा उपाय करना चाहिये, जिसमें हमारी यह पूर्व प्रथा पूर्वकी नाईं फिरभी लाभदायक हो जावे।

जो लोग यात्रा करनेको निकलते हैं, अथवा जो संघ निकालते हैं, उन्हें जानना चाहिये कि, यात्राका अभिप्राय केवल इतनाही नहीं है कि, भगवान्की पुण्यभूमियोंकी वन्दना

कर आना, और सौ पचास रुपया वहांके भंडारोंमें दे आना, नहीं! हमको चाहिये कि, जिससमय घरसे निकलें, इस बातका विचार करें कि, हमारे साथ धर्मवृद्धिका कोई साधन है कि, नहीं? जबतक एक अच्छा विद्वान् धर्मोपदेष्टा साथ न होगा, तबतक यात्रा करनेका यथार्थ लाभ नहीं प्राप्त हो सकता। तीर्थक्षेत्रोंमें जो अप्रबन्ध और अत्याचार होते हैं, उन्हें रोकना, वहांके द्रव्यका सद्व्यय होनेका प्रयत्न करना, वहां पुस्तकालय आदि धर्मवृद्धिके साधन बनाना, और यदि होसके, तो निरन्तर किसी उपदेशदाताको वहां रखनेकी योजना करना आदि अनेक कार्य ऐसे हैं, जिन्हें करना यात्रियोंका तथा संघाधिपतियोंका परमकर्तव्य है। इन कार्योंके करनेसे धर्मकी सच्ची प्रभावना तथा उन्नति हो सकती है, जो कि, तीर्थयात्राका असली उद्देश है। हम आशा करते हैं कि, यात्रीगण अपनी यात्रामें इस उद्देशको निरन्तर स्मरण रक्खेगें।

गताङ्कमें ईडरकी जैनपाठशालाके चिरस्थायी होनेके समाचार लिखे जा चुके हैं, आज हम नांदगांव जिला नासिकमेंभी इसीप्रकारकी एक अच्छी पाठशालाके कायम होनेका शुभसम्बाद पाठकोंको देते हैं। नांदगांवके चौधरी ताराचन्द साहिबरामजीकी ओरसे एक विज्ञापन पत्र प्रकाशित हुआ है कि, नांदगांवकी पाठशालामें जो कोई असमर्थ विद्यार्थी आकर पढ़ना चाहे उन्हें भोजनवस्त्रादि हमारी पाठशालाकी ओरसे दिया जावेगा। इसप्रकारके २०—२५ विद्यार्थियोंको उक्त पाठशाला रख सकती है। नांदगांवके धर्मोत्साही पंचोंको हम इस विषयमें कोटिशः धन्यवाद देते हैं, और प्रेरणा करते हैं कि, वे इस कार्यको खूब उत्साहके साथ चलावें। जैनजातिमें विद्याकी बड़ी न्यूनता हो रही है, जिसकी पूर्ति करनेका उपाय पाठशालाओंका स्थापन करना है। जो लोग पाठशालायें स्थापित करके असमर्थ बालकोंको विद्या पढ़ाते हैं, वे आजकल सबसे अधिक पुण्यका बंध करते हैं।

जैनियोंकी ८४ जातियोंमें **पद्मावतीपुरवार**नामकीभी एक जाति है। इसका मुख्य निवास युक्त प्रान्तके **आगरा** तथा **एटा** आदि दो तीन जिलोंमें है। इस जातिमें मनुष्य संख्या अधिक होनेसे अन्य छोटी २ जातियोंकी तरह वर तथा कन्याओंका अभाव नहीं है, इससे विवाहसम्बन्धमें उक्त जाति कुछ कष्ट नहीं पाती। इस जातिके कुछ लोग सौ दोसौ वर्षके पहले व्यापारादिके निमित्तसे दक्षिणकी ओर आबसे थे। मध्यप्रदेशके वर्धा जिलेमें ऐसे भाइयोंके ५०—६० घर हैं। पहले इनकी संख्या इस ओर अधिक थी, इसकारण आगरा प्रान्तके पद्मावती पुरवारोंके समान इन्हेंभी विवाहसम्बन्धमें कुछ कष्ट नहीं होता था, और इसकारण उत्तरीय प्रान्तके भाइयोंसे वे एक तरहसे सम्बन्धही छोड़ बैठे थे। परन्तु

कालके प्रभावसे संख्या अत्यन्त थोडी रह-जानेसे अब वे बड़ी विपत्तिमें फँस गये हैं। उन्हें कन्यायें नहीं मिलती हैं। अविवाहितोंकी संख्या बढ़ रही है। बेचारोंपर बड़े कष्टका समय उपस्थित है।

इस विपत्तिका निवारण करनेके लिये उन्होंने अब अपने उत्तरीय प्रान्तके भाइयोंकी शरण लेनेका विचार किया है। वर्धाके प्रसिद्ध धर्मात्मा सज्जन रा. रा. बकाराम पैकाजी रोडे दो वर्षसे इस प्रयत्नमें लगे हुए थे। परन्तु खेद है कि, वे अपनी इच्छाको पूर्ण कियेविनाही कालके गालमें जा फसे। अब उनके पुत्र तथा औरभी कई भाई इस प्रयत्नमें है। उत्तरीय प्रान्तके अनेक सज्जनोंकी रायसे अबकी बार वे पद्मावती पुरवारोंके फरिहाके मेलेमें बहुतसे सज्जनोंको लेकर जानेवाले हैं। हम आशा करते हैं कि, उत्तरीय पद्मावती पुरवारोंके मुखिया सज्जन इन वेचारोंकी रक्षा करना स्वीकार करेंगे। कुछदिनके बिछुड़े हुए भाइयोंको मिलाना कोई दो जातियोंके मिलाने सरीखा कठिन और विचारणीय कार्य नहीं है। उन्हें शीघ्रही मिला लेना चाहिये। यदि दक्षिणके पद्मावती पुरवार भाइयोंसे विवाहसम्बन्ध नहीं किया जावेगा, तो थोडेही दिनोंमें उक्त ५०-६० घर नष्ट हो जावेंगे, और उसके कारणभूत उत्तरीय सज्जन समझे जावेंगे।

एसोसिएशन और जैनसमाज।

प्यारे पाठको गत दिसंबर मासमें सहारनपुरमें एसोसिएशन और महासभाका बड़ा जल्सा हुआ था जिनकी सविस्तर रिपोर्टे जैनमित्र और जैनगजटद्वारा प्रकाशित हो चुकी हैं आज उसहीके विषयमें कुछ लिखनेका विचार है

जैनयंगमैन्सके जल्सेमें जो सभापतिका व्याख्यान हुआ उसमें उन्होंने दो बातोंका मुख्य उल्लेख किया था अर्थात् १ अंगरेजी शिक्षाकेसाथ धर्मशिक्षा देना २ जैनग्रंथोंका अंगरेजी भाषान्तर होना इन दोनोंबातोंमेंसे पहली बात बहुतही महत्वकी है क्योंकि, एसोसिएशनकी स्थापनाका प्रधानहेतु यही था परन्तु खेदकेसाथ कहना पड़ता है कि, एसोसिएशनने अभीतक अपने प्रधानहेतुपर बिलकुल लक्ष्य नहीं दिया है. उसकी रिपोर्ट और प्रस्तावोंमें धर्मशिक्षाका नामतक नहीं है जिससमय यह एसोसिएशन स्थापित हुई थी उससमय इसका अभिप्राय एसा प्रगट किया गया था कि, हमारे जैनीभाई अंगरेजी पढ़ोंकी अक्सर शिकायत किया करते हैं कि, अंगरेजी पढ़ोंमें धर्मज्ञता और सदाचारता नहीं है इसही शिकायतके मेटनेकेवास्ते यह सभा कायमकी जाती है परन्तु अब उसबातका कहीं पताभी नहीं है यह सभा प्रतिवर्ष अपने अधिवेशनके अमूल्य समयको व्यर्थव्यय और बालविवाहादिक प्रस्तावोंका पिष्टपेषण करके खोदेती है, बहुत हुआ तो

अंगरेजीकेसाथ २ संस्कृत पढ़नेवालोंको मेडल वगैरा देदिये और तालियां बजादीनी. बस इतनेहीमें यह एसोसिएशन अपने कर्तव्यकी समाप्ति समझती है. परन्तु यह उसकी भूलकी बात है उसको सभापति साहबके इशारेकी तरफ झुकना चाहिये और अंगरेजी पढ़ोंमें धर्मशिक्षा तथा सदाचारका प्रचार करना चाहिये। अंगरेजी पढ़े दो विभागोंमें विभाजित हैं अर्थात् प्रथमतो वे जो स्कूल तथा कालेजोंमें विद्याभ्यास कर रहे हैं और दूसरे वे जो कि, अपना विद्याभ्यास समाप्त करके रोजगार कर रहे हैं एसी अवस्थामें उसके धर्मशिक्षा और सदाचारके प्रचारके उपायभी दो प्रकारके होंगे अर्थात् १ जो विद्याभ्यास समाप्त करके अपने रोजगारमें लगे हुए हैं उन सबको अपना सभासद बनावे और उन सभासदोंका यह लाज़िमी फर्ज रक्खै कि, प्रतिमास अपनी स्वाध्याय तथा नवीन २ प्रतिज्ञाओंकी रिपोर्ट मंत्रीकेपास भेजै तथा जो विद्यार्थी स्कूल और कालेजोंमें पढ़ते हैं उनकेवास्ते धर्मशास्त्रोंका एक कोर्स (पठनक्रम) नियत कर देय और प्रतिवर्ष उसकी परीक्षा लिया करै जो विद्यार्थी इस परीक्षामें उत्तीर्ण होंय उनको पारितोषिक तथा मेडल आदिक देकर उनका उत्साह बढ़ावै अंगरेजी पढ़ोंमें धर्मशिक्षा और सदाचार प्रचार करनेका सबसे उत्तम उपाय यह होगा कि, बड़े २ शहरोंमें जहां सरकारी कालेज हैं एक एक बोर्डिंगहौस बनावै तथा एक धर्मज्ञ सदाचारी उसका सुपरिंटेंडैन्ट नियत किया जाय जो कि, विद्यार्थियोंको धर्म तथा सदाचारकी शिक्षा दिया करै एसा होनेसे शीघ्रही अंगरेजी पढ़ोंमें धर्म और सदाचारका डंका बजने लगैगा यह सब कुछ है, परन्तु इधर एसोसिएशनका ध्यान होयजब न! उसका उपयोग तो लगा है दूसरी तरफ! अर्थात् उसके मस्तिष्कमें यह बात समाई हुई है कि, जबतक जैनियोंके कमसेकम आठ दस लाख रुपया एक पश्चिमी विद्याका जैनकालेज बनाकर मिट्टीमें न मिला दिये जांय तबतक जैनियोंकी उन्नति होही नहीं सक्ती अर्थात् जो विद्या उनको सरकारी कालेजोंसे स्वल्प व्ययमें मिलसक्ती है उसके लिये वे दसलाख रुपये व्यर्थ खर्च कियेविना सन्तुष्ट नहीं होते, एक बोर्डिंगहौसमें थोड़ासा खर्च करके विद्यार्थियोंको धर्मज्ञ तथा सदाचारी बनाना उनको इष्ट नहीं है, उनको इष्ट है केवल जैनियोंके दसलाख रुपये पानीमें वहाना! इस इच्छाको पूरी करनेके लिये जब इन्होंने अपनी सभासे इस उद्योगकी सफलता दुष्कर समझी तब इन महाशयोंने महासभापर अपनी इसनीतिका गूढ़ प्रयोग किया क्योंकि, आजकल महासभामें जो कुछ असंतोष फैल रहा है वह सब इनही महाशयोंकी गूढ़नीतिका फल है ये महाशय आजकल एसोसिएशन और महासभा इन दोनोंहीके कर्ताकर्ता हैं दिखावटी स्वरूप कुछ और गूढ़नीतिका प्रसार दूसरी तरहसे चल रहा है परंतु इसका फल कुछ विपरीत होता दिखाई देता है।

सभापति साहबका दूसरा इशारा था जैनग्रंथोंका अंगरेजीमें अनुवाद करनेका; परन्तु इसविषयमें सभापति साहब और एसोसिएशन दोनोंहीकी भूल है यहांपर यह सवाल उठता है कि, यह अनुवाद अंगरेजोंके उद्देशसे किया जाता है कि, जैनियोंके यदि अंगरेजोंके उद्देशसे है तो अभी अपने जैनीभाइयोंको तो सुधार लो तब अंगरेजोंके सुधारनेकी कोशिश करना और यदि कहोगे कि, जैनियोंके उद्देशसे है तो जैनियोंकी मातृभाषा हिन्दी है वह जब हिन्दीसेही समझ सक्ते हैं तो उनकेवास्ते अनुवाद करनेका क्या प्रयोजन खैर मानभी लिया जाय कि, अनुबाद होनाही चाहिये परंतु हमको एसा कोई अंगरेजी पढ़ा दीखताही नहीं कि, जो जैनसिद्धान्तोंका मर्मज्ञ होय तो फिर कहिये अनुवाद किसप्रकार हो सक्ता है। अंतमें उक्त सभासे प्रार्थना है कि व्यर्थके झगड़ोंको छोड़कर मूल उद्देश्यकी तरफ झुके।

---

*केशर

केशरका खर्च जितना जैनियोंमें है, उतना शायद किसीभी जाति और धर्ममें नहीं होगा। जैनियोंका ऐसा कोईभी मन्दिर न होगा, जिसमें केशर न चढ़ती हो। पूजाकी सामग्रीमें यह सबसे मुख्य वस्तु है। केशर देव पूजा और तिलकके अतिरिक्त अंगमर्दन और खानेके काममेंभी आती है। बहुतसे स्वादिष्ट पक्वान्नों और मिठाइयोंमें केशर डाली जाती है। परन्तु केशर किसप्रकार और कहां बनती है, यह बहुत थोड़े लोग जानते हैं, इसलिये आज हम अपने पाठकोंको इसका थोड़ासा परिचय देना उचित समझते हैं।

भारतवर्षमें केशरका उपयोग बहुत प्राचीनकालसे होता है। और यहांके अतिशय प्राचीन ग्रन्थोंमें इसका नामभी मिलता है, परन्तु कहते हैं कि, पहले पहिल इसकी उत्पत्ति **शिलीसिया** प्रान्तमें हुईथी। जो महाशय अंग्रेजीके जाननेवाले हैं, वे जानते हैं कि, **होमर**का काव्य कितना प्राचीन है। इस ग्रन्थमें केशरका उल्लेख मिलता है। चीनदेशपर मुगल सम्राटोंने जब पहिली चढ़ाई कीथी, उससमय यह चीनमें गई, और सन ९६१ ई० में अरबलोगोंने **स्पेन**में इसका प्रसार किया। क्रूसेडके धर्मयुद्धकेसमय एक यात्री अपनी एक पोलीलकड़ीमें छुपाके **ट्रिपोली**से केशरको **इग्लर्ड** लेगया। इग्लेंडने सन १७६८ तक केशरके व्यापारसे खूब लाभ उठाया! **ग्रीस** और **आयर्लेंड**के प्राचीन राजे अपनी पोशाक केशरियारंगकी पहिना करते थे, और रोमन लोग स्नानके समय उबटनमें तथा किसी बड़ीभारी लडाई जीतनेके समय राजमार्गोंपर गुलालकी नाईं उड़ानेमें केशरको काममें लाते थे। पन्द्रहवीं शताव्दीमें केशर अनेक पदार्थोंकेसाथ मिलकर बाजारमें बिकने लगी। पापी धनके लोलुपीजनोंनें इस पवित्र और आदरणीय चीजकोभी अनेक अपवित्र ची-

*एक मराठी लेखके आधारसे।

जोंकेसाथ मिलाकर अपवित्र बना डाली ।

' अर्थी दोषो न पश्यति '

आजकल स्पेन, फ्रान्स, सिसली, ईराण और काश्मीर प्रान्तमें केशर तयार होती है। इनमेंसे यूरोपियन केशर किसप्रकार तयार होती है? इसके विषयमें **एनस्याक्लोपेडिया** नामक पुस्तकमें इसप्रकार लिखा है कि, "केशरमें **चर्बी** और मक्खन बहुतायतसे मिलाते हैं । कभी २ **गोमांस**के बारीक २ धागे निकालकर उन्हें पानीमें भिगोके केशरमें डाल देते हैं" । उत्तम और शुद्ध केशरका रंग तेज नारंगी-लाल होता है । जिस केशरका रंग कालिख लिये हुए अथवा पीलासा हो, उसे अतिशय निकृष्ट समझना चाहिये । अच्छी शुद्ध केशरकी सुगंधि तीक्ष्ण और कुछ विलक्षणही प्रकारकी होती है। उसका स्वाद कषायला तथा चिरपरासा होता है । जो केशर चमकती हुई तथा तेलियारंगकी हो, उसमें चर्बी अथवा मक्खनका मेल समझना चाहिये ।

जो धर्मको अपने प्राणोंकी अपेक्षा कीमती समझते हैं, उन्हें केशरका उपर्युक्त परिचय पाकर सचेत रहना चाहिये और यूरोपियन केशर जो अत्यन्त अपवित्र है, सस्तेपनमें लुभाकर कभी नहीं लेना चाहिये। ईराणी केशर कुछ मँहगी मिलती है, परन्तु शुद्ध और असली होती है, इसलिये उसेही लेना चाहिये। हम आशा करते हैं कि, अहिंसाधर्मके पालनेवाले जैनी केशरको अब बहुत सावधानीसे परीक्षापूर्वक खरीदेंगे। **इत्यलम् ।**

मनोविनोद ।

प्रश्न—क्यों जी! तुम तो उसदिन कहते थे कि, मैंने अष्टमीचतुर्दशीको हरीखानेका त्याग कर दिया ।

उत्तर—वाह! तो मैंने इंकार कब कर दिया? मेरे तो अबभी हरीका त्याग है ।

प्रश्न—और आज अष्टमीको अनार (दाड़िम) उड़ा रहे हो, सो क्या है?

उत्तर—तो क्या दाड़िमभी हरीमें है? अजी भाई! यह तो लालसुर्ख रक्खा है, हरियालीका इसमें नामभी नहीं है, फिर हरी क्यों?

एकबार एक चित्रकार किसी बड़े आदमीकी चिट्ठी लेकर फ्रांसके राजा नेपोलियनकेपास गया । चित्रकार मैलेकुचेले कपड़े पहने हुए गरीब हालतमें था, इसलिये नेपोलियनने उसका कुछ आदर नहीं किया और दूर बैठनेको जगह दी । परन्तु जब वातचीत करने और उसके चित्रादि देखनेसे मालूम हुआ कि, यह बड़ा गुणी पुरुष है, तब नेपोलियन उसके पहुंचानेके लिये उठकर फाटकतक गया । उससमय चित्रकारने पूछा कि, महाराज! यह क्या बात है कि, जब मैं आया, तब तो आपने बैठनेको आसनभी नहीं दिया और अब जब मैं जाता हूं, तब पहुंचानेको आये हैं! नेपोलियनने कहा कि, "मनुष्यका जो आतेसमय आदर किया जाता है, वह उसके कपड़ेलत्तोंका किया जाता है, परन्तु जो जा-

ते समय किया जाता है, वह उसके गुणोंका किया जाता है"!

एकबार अमरकोषके कर्त्ता **अमरसिंह** काशी गये। और वहां अपने अनेक मित्रोंकेसाथ **व्यासजी**की मूर्त्ति देखनेको गये। व्यासजीकी मूर्ति बड़ी तोंदवाली है, और उसमें गहरीनाभि है। सो अमरसिंहने नाभिमें अंगुली डालके कहा; "**चकारकुक्षये-नमः**" अर्थात् जिनकी कुक्षिमें हजारों चकार भरे हुए हैं, ऐसे व्यासजीको नमस्कार है! चकारकुक्षि कहके हास्य करनेका यह कारण था, कि, व्यासजीके महाभारत आदि ग्रन्थोंमें चकारकी खूब भरमार है।

श्रीभद्रबाहुसंहितान्तर्गतम्
श्रीदायभागम्
(५)

न तत्र श्वश्र्वर्यत्किञ्चि-
द्वदेदनधिकारतः।
नापि पित्रादिलोकाना-
मधिकारोस्ति सर्वथा॥ ६७॥

पुत्रको भर्ताकी जगहमें नियोजित करनेमें उस स्त्रीकी सासको रोकनेका कुछ अधिकार नहीं है, और उसके मातापितादिकोंकोभी कुछ अधिकार नहीं है॥

दत्तं चतुर्विधं द्रव्यं
नैव गृह्णन्ति चोत्तमाः।
अन्यथा सकुटुंम्बास्ते
प्रयान्ति नरकं ततः॥६८॥

यदि कोई शंका करे कि, जो उनकाही द्रव्य है, तो उसमें वे लोग (मातापिता सासूआदि) क्यों नहीं रोक सकते हैं? उसका उत्तर यह है कि, उत्तम पुरुष चारोंप्रकारके दिये हुए द्रव्यको फिर ग्रहण नहीं करते, ऐसा करनेसे वे नरकके पात्र होते हैं। (इसलिये यद्यपि उनकाही दिया हुआ है, तोभी उनको देने पश्चात् उसमें अधिकार नहीं रहता है)

(शंका) यदि कोई बहुत पुत्र छोड़कर माराहो, और सब पुत्रोंकेवास्ते द्रव्यका विभाग किया जाय, और उनमें कोई पुत्र-क्लीवता (नपुंसकता) आदि दोषोंवाला होवे तो, उसका कैसे विभाग करना चाहिये? इसका उत्तर कहते हैं कि,

बहुपुत्रयुते प्रेते
भ्रातृषु क्लीवतादियुक्।
स्याच्चेत्सर्वे समानभागा-
नदद्युः पैतृकाद्धनात्॥६९॥

बहुत पुत्रोंको छोड़कर पिताके मरजाने पश्चात् यदि उन भाइयोंमेंसे कोई नपुंसकता आदि दोष सहित होवे; तो उसको पिताके द्रव्यमेंसे समान भाग नहीं मिलसकता है।

पंगुरुन्मत्तक्लीबान्ध-
खलकुब्जजडास्तथा।
एतेपि भ्रातृभिःपोष्या
न च पुत्रांशभागिनः॥७०॥

इसीप्रकार यदि भाईयोंमेंसे कोई पागल, तथा उन्मत्त, क्लीव, अन्ध, खल, (दुष्ट) कुबडा तथा जडभी होवे, तो उन भाइयोंको

अन्नवस्त्रसे पोषण करना चाहिये । परन्तु वे पुत्रभागके मालिक नहीं होसकते ।

(शङ्का) कोई मनुष्य जिसके निजपुत्र वर्तमान हैं, अथवा दत्तकपुत्र लिया है । और अपने जीवनमें जिसको सशय है । वह अपने बालकको असमर्थ समझकर रोगकी शान्तिपर्यन्त अपनी दूकान आदिका कार्य चलानेकेवास्ते किसी पुरुषको अपना अधिकार देकर परलोकगमन कर जावे, और समय देखकर वह अधिकारी लोभके वश होकर उस द्रव्यको इधर उधर करके नष्ट कर देवे, अथवा खाजावे तो, उसकी स्त्रीको क्या करना चाहिये ? इसका उत्तर आगेके श्लोकोंमें कहते हैं कि,

मृतबध्वाधिकारीशो
बोधितव्योमृदूक्तितः ।
न मन्येत पुरा भूपा
मात्यादिभ्यः प्रबोधयेत् ॥७१॥
भूयोपि तादृशःस्याच्चे
दमात्याज्ञानुसारतः ।
पुरातनोनूतनोवा
निष्कास्योगृहतःस्फुटम् ॥७२॥

वह मृतपतिकी विधवा स्त्री अपने द्रव्यके अधिकारीको कोमलवचनसे समझावे यदि नहीं माने तो, राजा मंत्री आदिकोंके समक्ष उसको समझावे । यदि फिरभी नहीं समझे तो मंत्रीकी आज्ञा लेकर पुराना हो वा नवीन हो, उसे घरसे निकाल देवे ।

रक्षणीयं प्रयत्नेन
भर्त्रेव स्वं कुलस्त्रिया
कार्यतेन्यजनैर्योग्यै-
र्व्यवहारःकुलागतः ॥७३॥

अपने पतिकेसमान उस कुलीनस्त्रीकोभी अपने द्रव्यका यत्नपूर्वक रक्षण करना चाहिये और कुलक्रमसे आये हुए व्यवहारोंकोभी दूसरे योग्य पुरुषोंद्वारा करावै ।

कुर्यात्कुटुम्बनिर्वाहं
तन्मिषेण च सर्वथा
येन लोके प्रशंसा स्या-
द्धनवृद्धिश्च जायते ॥७४॥

इसीप्रकारसे सर्वथा कुटुम्बका निर्वाह करै; जिससे लोकमें कीर्ति और धनकी वृद्धि हो ।

(शङ्का) माता और स्त्री दोनोंही जिसके वर्तमान हैं, ऐसे किसी विनापुत्रवाले पुरुषके मरजानेपर पुत्रग्रहण करनेका अधिकार माता तथा स्त्रीमेंसे किसको होसकता है ? इसका उत्तर कहते हैं कि;

ग्राह्यः सद्गोत्रजः पुत्रः
भर्त्रा इव कुलस्त्रिया ।
भर्तृस्थाने नियोक्तव्यो
न श्वश्र्वा स्वपतेःपदे ॥ ७५ ॥

भर्ताकेसमान वह कुलीन स्त्री किसी श्रेष्टगोत्रमें पैदा होनेवालेको लेकर भर्तृस्थानपर (पतिकी गद्दीपर) नियुक्त करै । उसकी सासूकी गोद रखनेकी आज्ञा नहीं है ।

शक्ता पुत्रवधूरेव
व्ययं कर्तुं च सर्वथा ।
न श्वश्र्वाश्चाधिकारोत्र
जैनशास्त्रानुसारतः ॥ ७६ ॥

इसीप्रकार दूसरे खर्च करनेका अधिकार-

भी सर्वथा पुत्रकी वधूकोही है। जैनसिद्धान्तके अनुसार उसकी सासूको नहीं है।

कुर्यात्पुत्रवधूः सेवां-
श्वश्र्वोः पतिरिव स्वयम्।
सापि धर्मे व्ययं त्विच्छे-
द्द्यात्पुत्रवधूर्वसु॥ ७७॥

पुत्रकी बहू जिसप्रकार पति करता था, उसीप्रकार श्वश्रु (सासू) की सेवा करै। यदि सासूको धर्मकार्य करनेकी इच्छा हो तो धन देवै। अब आगेपुत्रोंके दायभागके प्रसङ्गसे मुख्य गौण भेदरूपसे पुत्रभेद कहते हैं;

औरसोदत्तकोमुख्यौ
क्रीतसौतसहोदराः
तथैवोपनतश्चैव
इमेगौणा जिनागमे॥ ७८॥
दायादाः पिण्डदाश्चैव
इतरेऽनधिऽकारिणः॥

औरस तथा दत्तक ये दोनों मुख्य हैं, और क्रीत सौत सहोदर तथा अकस्मात् आया हुआ, ये सब गौण (अमुख्य) हैं। और येही उत्तराधिकारी हैं तथा पिण्डदान करसक्ते हैं, दूसरे अधिकारी नहीं हैं। अब मुख्य गौण तथा इतर इनके संक्षेपसे स्वरूप कहते हैं।

औरसः स्वस्त्रिया जातः
प्रीत्यादत्तश्च दत्तकः॥
द्रव्यं दत्वा गृहीतो यः
सः क्रीतः प्रोच्यते बुधैः॥७९॥

जो अपनी स्त्रीसे उत्पन्न हुआ होवे वह औरस कहा जाता है। जो प्रीतिपूर्वक ग्रहण किया हो वह दत्तक, तथा जो द्रव्य देकर खरीदा होवे, वह क्रीत कहा जाता है।

सौतश्च पुत्रतनुजो
लघुभ्राता सहोदरः।
मातृ-पितृ-परित्यक्तो
दुःखितोस्मि तरां तव॥ ८०॥
पुत्रोभवामीतिवद-
न्विद्वैरुपनतः स्मृतः।
मृतपित्रादिकः पुत्र
समः कृत्रिम ईरितः॥ ८१॥

जो पुत्रकापुत्र अर्थात् पौत्र हो उसका नाम सौत है! छोटे भाईका नाम सहोदर है और मातापिताने छोड दिया हो तथा दुःखित भ्रमता फिरता हुआ, " मैं पुत्र होता हूं " ऐसा जो कहै, उसको विद्वानोंने उपनत कहा है जिसके मातापिता मरगये हों, ऐसा पुत्रके समान जो हो, वह कृत्रिम है।

पुत्र भेदा इमे प्रोक्ता
मुख्यगौणेतरादिकाः।
तत्राद्यौहि स्मृतौ मुख्यौ
गौणाः क्रीतादयस्त्रयः॥
तथैवोपनताद्यश्च
पुत्रकल्पा न पिण्डदाः॥८२-८३॥

इसप्रकार पुत्रोंके मुख्य गौण इतर इत्यादि भेद कहे। इनमेंसे आदिके औरस तथा दत्तक ये दोनों मुख्य हैं, तथा क्रीत, सौत, सहोदर, ये तीन गौण हैं, और तथैवोपनत आदिक जे पुत्र सदृश माने हैं वे पिण्डदान नहीं कर सकते।

(शेषमग्रे)

सद्वचनामृत ।

१२ पित्तज्वरवाले पुरुषको दूधभी कडुआ लगता है ।

१३ अर्थी (मतलबी) दोषोंको नहीं देखता ।

१४ दुःख आनेपरभी बुद्धिमानोंका तत्वज्ञान जागृत रहता है ।

१५ यौवन (जवानी), शरीर और संपतिके नाश होनेमें आश्चर्य क्या है? क्यों कि, पानीके बुदबुदोंके बने रहनेमें आश्चर्य है, उनके नष्ट होनेमें नहीं ।

१६ जिनका आज संयोग है, उनका कल वियोगभी अवश्य होगा । और तो क्या अंगीसे अंगभी अलग हो जाता है ।

१७ पुण्यहीनोंके शोककरनेसे क्या? शोककरनेसे क्या पाप अपना फल नहीं देगा? दीपकके बुझनेपर अंधकार क्या आह्वानकी अपेक्षा करता है? अर्थात् क्या वह चाहता है कि, जब कोई बुलावै, तब मैं आऊं । पुण्य क्षीणहोनेपर पाप तुरन्तही फल देने लगता हैं।

१८ आपत्तिके आनेपर या तो उसे सहलेना चाहिये, अथवा प्रयत्नसे उसका निवारण करना चाहिये । मुखस्थित पानीकी दोही गति हैं, या तो पीजाना या थूक देना ।

१९ स्वामीकी सच्ची भक्ति अपने प्राणोंकी परवाह नहीं करती ।

२० मतलबी मित्र गली २ में घूमते नजर आते हैं, परन्तु सच्चे मित्र बड़ी कठिनतासे मिलते हैं ।

२१ बुरे कामोंके करनेके लिये रोकते २ भी हमारी बुद्धि तत्पर होती है, परन्तु अच्छे कामोंकी ओर प्रयत्न करनेपरभी नहीं जाती । इसका कारण खोजना चाहिये ।

२२ आत्मन्! पापोंका कारण जानकेभी जो तुम अपने बुरे विचारोंको रोक नहीं सकते, इसे और कुछ नहीं बुरेकर्मोंका प्रभाव समझना चाहिये ।

२३ जिस धनसे कुटुम्बकी, जातिकी, देशकी और धर्मकी उन्नति होती है, वही धन यथार्थ धन है । अन्यथा विस्तृत पृथिवीमें ऐसे असंख्य धातुपाषाणोंके ढेले पड़े हैं।

२४ मै कौन हूं? मेरे यथार्थ गुण क्या हैं? मैं कहांका रहनेवाला हूं; मेरे प्राप्त करनेके योग्य क्या है; और मैं क्या कर सकता हूं? इसप्रकारके विचार हमको प्रतिदिन करने चाहिये । ऐसे विचारोंसे बुद्धि सुमार्गगामिनी बनती है।

२५ तूने किसकार्यके करनेका आरंभ किया था, और अब ये क्या करने लगा? बड़े दुःखकी बात है कि, प्रारंभ किये हुए कार्यको छोड़के तू बाह्यकार्योंमें मोहित होता है ।

२६ जो प्रारंभ किये हुए कार्यको पूरा करके छोड़ते हैं, वेही पुरुष हैं । एकको अधूरा छोड़के जो दूसरेमें हाथ डालता है, वह दोनोंको नष्ट करता है ।

फिरकभी ।

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई.

कामिनी किलोल ।

(प्रमेहनाशक और अपूर्वताकतकी दवा)

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातु क्षीणता बीसों प्रकारके प्रमेह, दिसा होते मूत्रके साथ धातुका गिरना शिरका घूमना प्रसंगकी इच्छा न होना और होभी तो शीघ्र बीर्य्यपात, आनन्द न आना नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोड़ा चलनेसे थकावट आना भूख कम लगना चेहरेकी खुशकी वा जर्दी बदनमें फुर्ती न रहना शरीरकी दुर्ब्बलता, रगोंकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी आदि सब रोग जड़से नष्ट कर नया वीर्य पैदा करती है जिससे उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आंखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढ़ाती और नई जवानीका मजा दिखाती है । मूल्य १ डिब्बा २॥) २ डिब्बा ५) ३ डिब्बा ७) ६ डिब्बा १३) खर्च माफ

श्रीमदनानंद मोदक ।

जाड़ेकी बहार! ताकतकी दवा! अपूर्व आनंद!!

इसको २१ दिन खानेसे वीर्य बढ़ता और मदोन्मत्त हस्तीसा पराक्रम होता है कामदेवसारूप कोयलसास्वर और गरुड़सी दृष्टि होती है शरीरमें ताकत आकर हृष्टपुष्ट होजाता है की० १।) डां० ख० ।) और स्त्रियोंके सर्व रोग नष्ट करता है ।

बृहल्लक्ष्मीविलासरस ।

इससे धातुक्षीण धातुशोष राजयक्ष्मा कमजोरी मंदाग्नि इनको नाश करता है और वृद्धकोभी युवा करता बाल सफेद नहीं होते हैं स्तम्भनकर्ता और ताकतकेवास्ते संसारमें इससे बढ़कर दवा नहीं है। फी शीशी १) डां. ख. ≈)

मनरञ्जन तैल ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीयग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूरकर लहू और ताकत बढ़ती है फी शीशी ॥≈) डां. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूंख खूब लगती है बदहजमी हैजा खट्टी डकार छातीजलन कब्ज पेचिश वायु शूल पिचरोग बवासीर प्रमेहनाशक है स्वादवगुणकी ज्यादा तारीफ़ वृथा है। फी शीशी ।।) डां. ख. अ.

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतका हिलना मसूड़ोंका फूलना खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ़ बने रहेंगे । फी डिब्बी ।)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आंखोंका जाला धुन्ध फुली पानी वहना सुर्खी पखर आदिनेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढ़ाता ठंडक रखता और पढ़ते २ आंखें नहीं थकती हैं फी तोला १) लगानेकी सलाई ।)

दवादादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है । फी डिब्बी ।)

मंगानेका पत्ता—हजारीलाल जैन,
वैद्य, पंसारीटोला–इटावा (यू० पी०)

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। फाल्गुण शुक्ल १ श्रीवीर स० २४३२ । अंक ९

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ ,, ,, –)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, –) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

श्रीवीतरागायनमः

फाल्गुण शुक्ल १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
९

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

सहयोगी जैनगजट ता० १६-२-०६ के अंक ७ में दि. जै. प्रा. स. बम्बई शीर्षक एक लेख निकला है जिसमें सहयोगीने प्रान्तिकसभाको चेताकर अपने कर्त्तव्यका पालन किया है. हकीकतमें प्रांतिकसभा कुछ थोड़ेदिनोंतक चपलाकासा चमत्कार दिखाकर किसी समाधिमें लीन होगई है परन्तु यह उसकी समाधिभी निष्कारण नहीं है अनेक विघ्नोंके उपस्थित होनेसे उसको इससमाधिका आश्रय लेना पड़ा है, पाठकोंको प्रांतिकसभाने जैसे बालक्रीड़ा करके रंजायमान किया था उससेभी कुछ अधिक तर सन्तोष पहुंचानेकी फिक्रमें लगी हुई है उसकी समाधिकी ताली बहुत जल्द खुलनेवाली है ।

प्रांतिकसभाके आफिसका उसके स्वामीसे चिरकाल वियोग रहा, स्वामीकी विरहज्वालामें उसके अंगोपांग बेतरह क्षीण होगये एक मुद्दतकेबाद उसको स्वामीके संयोगका सौभाग्य प्राप्त हुआ और धीरे २ जिस दुर्बलताने उसके शरीरमें डेरा जमा रखा था वह ज्यों त्यों करके उसका पीछा छोड़ने लगी है परंतु इस अशक्त अवस्थामें वह एक कटीली भूमिमें गिर पड़ा था जिससे उसके शरीरमें अनेक कांटे लगगये थे अब उसके स्वामीने छोटे २ कांटोंको तो निकालकर फेंक दिया, परंतु अभी एक जबर्दस्त कांटेने उसका पीछा नहीं छोड़ा है, उसकांटेको निकालनेका उसका स्वामी शक्तिभर परिश्रम कर रहा है जिससे आशा होती है कि, शीघ्रही उससे पिंड छूट जायगा; परंतु पिंड छूटनेपरभी अभी उसके शरीरमें इतनी शक्तिका संचार नहीं हुआ है कि, शीघ्रही आपको दो एक कलाका खेल दिखा सके परंतु उसे अपने प्रयत्नसे गाफिल न समझना

प्रांतिकसभा बम्बईमें कई विभाग हैं अ-

र्थात् प्रबंधविभाग १ उपदेशकभंडार २ तीर्थक्षेत्रभंडार ३ विद्या विभाग ४ जैनमित्र ५ हिसावकिताब ६ इतने कामकेवास्ते पाठक समझसक्ते हैं कि, कितने क्लर्कोंकी आवश्यक्ता है परंतु अबतक क्लर्ककी संख्या एकही है उसपरभी तुर्रा यह है कि, उसी क्लर्कसे भारतवर्षीयतीर्थक्षेत्रकमेटीकाभी काम लिया गया इतना होनेपरभी आफिसको अपने स्वामीका वियोग. फिर एसी अवस्थामें पाठक समझसक्ते हैं कि, काम कितना पीछे पड़ जायगा परन्तु इतनेहीमें अलं नहीं है नये वर्षसे जैनमित्रका कार्य द्विगुणित होगया क्लर्ककी खोज हो रही है आशा है कि, अब शीघ्रही प्रांतिकसभा इस विलंबकी शिकायतको रफा करेगी

दक्षिणप्रान्तमें एक रिवाज एसा है कि, जब कोई महाशय प्रतिष्ठादिक उत्सव कराता है उससमय वह आगतदर्शकोंकी उत्सवके आदिसे अंतपर्यन्त मिज़मानी करता है, प्रांतिकसभाके वार्षिकोत्सवका स्थान गतवर्ष अहमदाबाद नियत हुआ था परंतु इस मिजमानीके प्रश्नने उत्सव होनेमें विघ्न डाल दिया कि, दर्शकोंकी मिजमानी कौन करै, यद्यपि एक अधिवेशनकेवास्ते हमारे सेठजी मिजमानी करनेसे मुंह नहीं मोड़ते थे परंतु इससवालका हल होना था हमेशाकेवास्ते, जो नहीं होसका और उत्सव तथा उक्त सवाल अबतक ज्योंके त्यों खटाईमें पड़े हुए हैं ।

उपर्युक्त सवालको हल करनेके लिये गतवर्ष जैनमित्र अंक १० में अहमदाबाद और प्रान्तिक सभा बम्बई शीर्षक एक लेखभी निकाला गया था परन्तु उसलेखको दक्षिणी और गुजराती पानीके घूंट पी गये उनके सिरमें जूतक नहीं रेंगी । किसीने आजतक इस विषयमें अपनी सम्मति तक प्रगट नहीं की. धन्य है ! गुजरात और दक्षिणकी निद्राको ? क्या ? कभी दक्षिणी और गुजरातीचेत कर इस सवालको हल करेंगे कि, जिसके हल कियेविना प्रांतिकसभा अपने वार्षिकोत्सवसे बचित हो रही है नहीं ! नहीं ! दक्षिण और गुजरात प्रांत अपनी उन्नतिसे हाथ धोबैठे हैं ।

दक्षिणप्रांतमें एक औरभी रिवाज है कि, जिस तीर्थक्षेत्रपर वार्षिकमेला भरता है वहांपर आगत भाइयोंकी मिजमानी करनेका भार किसीएक महाशयके सिरपर नहीं है जैसे कि स्तवनिधि क्षेत्रपर प्रतिवर्ष हजारों आदमी एकत्र होते हैं और अपनी २ गांठका खाकर उत्सव देख अपने घरको चले जाते हैं इसही स्थानको दक्षिणमहाराष्ट्र जैनसमाजके चतुर कार्यकर्ताओंनें अपने वार्षिकोत्सवके लिये पसंद किया है क्या ! ही अच्छा होय जो प्रांतिकसभाके कर्ताधर्ताभी दक्षिणमहाराष्ट्र जैनसमाजकी तरह गिरिनार, पावागढ़, गजपंथा, तारंगा, सतरंजा, कुंथलगिरि श्रवणबेलगुल, मूडविद्री आदि तीर्थक्षेत्रोंमें फिरता २ अपना वार्षिकोत्सव करैं

और सब भाइयोंको सूचना दे देवें कि, भोजनादिकका प्रबन्ध सबको स्वतंत्र करना चाहिये. तीर्थक्षेत्रोंकी भक्तिसे आशा है कि, जनसंख्याकी कमी नहीं रहेगी.

श्रीमती **निस्तारिणीदासी**नामक एक बंगाली महिलाने बंगालकी सरकारकेपास ६१॥ हजार रुपये इस अभिप्रायसे जमा किये हैं कि, उनके सूदसे संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियोंका पालनपोषण किया जाय । संस्कृत विद्याकी ओर स्त्रीजातिका इतना लक्ष्य होना, भारतवर्षके सौभाग्यका विषय है ।

शेठ गोकुलभाई मूलचन्दनामक श्वेताम्बर सज्जनने मुम्बईमें एक जैनबोर्डिंगस्कूल खोलनेके लिये ७५ हजार रुपया प्रदान किया है, और श्री जैनश्वेताम्बर कान्फरेंसने पचीस हजार रुपया अपने फंडमेंसे उक्तकार्यके साहाय्यमें देना स्वीकार किया है, बोर्डिंग खोलनेका प्रबंध बहुत शीघ्रतासे किया जावेगा। हर्षका विषय है ।

प्रसिद्ध प्रोफेसर **मेक्समूलर**ने अपने जीवनचरित्र (my antoleiography) नामक पुस्तकमें लिखा है कि, "जब मैं बारहवर्षका था, तब एकबार मैं अपने पितामहके साथ उनकी छोटीसी गाड़ीमें बैठके जा रहा था । पितामहकी दृष्टि कुछ मन्द थी, इसलिये वे देख नहीं सके, और उनके हाथसे दो छोटे २ बच्चोंकी माता बतक मारी गई। प्राणोत्सर्गके पहले उस बतककी विलबिलाहट और उनबच्चोंका विलाप देखके मैं रोमांचित होगया । मैंने उसीदिनसे प्रतिज्ञा करली, कि, इस जिन्दगीमें मैं कभी शिकार नहीं करूंगा । उसदिनके पीछे मैंने कभी शिकार नहीं की" । ऐसी स्वाभाविक घटनाओंसे शिक्षा लेकर यदि यूरोपदेश जैसा विद्वान् है, वैसा दयावान्भी हो जावे, तो सोनेमें सुगंधकी कहावत सिद्ध हो जावे ।

कुछदिन पहले **जिनविजय** मासिकपत्रके कनड़ी संस्करणकी बात चली थी । परन्तु अबके महाराष्ट्र सभाके अधिवेशनमें वह बात पक्की हो चुकी है । श्रीयुक्त रावसाहब अंकले लेट डिपुटीइन्स्पेक्टर आफस्कूल्स **कनारीजिनविजय**के सम्पादक नियत हुए हैं।

शान्तचित्त और निष्कपट महाराष्ट्री भाइयोंकेद्वारा दक्षिणमहाराष्ट्रसभाका कार्य बड़ी नियमबद्धता और सरलतासे चलता है, और लोगोंमें उसका प्रभावभी क्रमशः बढ़ता जाता है । हमारी महासभाकी आलोचनामें जब हमको प्रतिवर्ष बीसों पेज रंगने पड़ते हैं, तब महाराष्ट्र भाईयोंकी कार्यवाहियोंके विषय सिवाय प्रशंसा करनेके हमको अथवा किसीपत्र सम्पादकको चूंभी नहीं करना पड़ता। पाठक महाशय! क्या आप विचारेंगे कि, हमको ऐसा क्यों करना पड़ता है?

दक्षिणमहाराष्ट्रजैनसमाजके अष्टम अधिवेशनकी कार्यवाही संक्षिप्तरूपमें पहले प्रगट की जा चुकी है। उसमें जो दश प्रस्ताव प्रकाशित किये गये हैं, पीछेसे जान पड़ा कि, उनके अतिरिक्त चार प्रस्ताव औरभी हुए थे। पाठकोंके जाननेके लिये उन्हें हम यहां दिये देते हैं; (१) विद्यावृद्धि तथा तीर्थक्षेत्रोंकी सहायतार्थ एक लाख रुपयेकी एक लाटरी (Lottery) खोली जावे। (२) स्तवनिधिक्षेत्रकी दुरुस्तीके लिये यदि रुपयेकी आवश्यकता हो, तो सर्वसम्मतिसे दिया जा सकता है। (३) सभाकी नियमानुसार रजिष्ट्री कराई जावे। (४) और नवीन वर्षके लिये प्रबन्धकारिणीकमेटी नियत की जावे। इसके अतिरिक्त सभाके फंड़में ५०००) के अनुमान चन्दा एकत्र हुआ था, यह बातभी पहले नहीं कही गई थी।

बंगालमें स्वदेशी आन्दोलनका जोर यद्यपि घटा नहीं था, परन्तु बीचमें कुछ शिथिल हो गया था। अब सुना है कि, वहां फिरसे खूब आन्दोलन होना शुरू हुआ है। नित्य बड़ी २ भारी सभायें होती हैं, जिनमें हजारों लोग स्वदेशसेवाका व्रत धारण करके व्रती बन रहे हैं। जबतक देशकी बनी हुई चीजोंपर लोगोंका यथार्थ प्रेम न होगा, और विदेशी वस्तुव्यवहारसे घृणा न होगी, तबतक देशका कल्याण नहीं हो सकता।

विदेशी शक्करसे लोगोंको बड़ी घृणा होने लगी है, सैकड़ों स्थानोंसे खबरें मिल रही हैं कि, हमारे यहां विदेशीशक्करका बर्ताव सर्वथा बन्द कर दिया गया है।

उन्नतिका आशक।

मैं उन्नतिपर मरता हूं। उन्नतिका नाम सुनतेही मेरा जी पानीपानी हो जाता है। उन्नतिकी सुन्दरताके आगे मैं दुनियांको तुच्छ समझताहूं। सोते जागते उठते बैठते चलते फिरते मैं अपनी आंखोंके साम्हने उन्नतिकोही देखता हूं। इस अवस्थामें लोग मुझसे अकसर प्रश्न किया करते हैं कि, क्योंजी; तुम्हेंभी वह चाहती हैं कि, नहीं? परन्तु मैं ऐसी वेबकूफीके सवालका कुछ जबाब नहीं देना चाहता; घृणाकेसाथ हँस देता हूं। भला! यहभी कोई अकलमन्दीकी बात है कि, जिसको मैं चाहूं, वह मुझे नहीं चाहै और फिर मैं क्या ऐसावैसा आदमी हूं। आंख कान नाक चेहरा मुहरा आदिसे सब तरह दुरुस्त हूं। मुझमें इल्मकी कमी नहीं है, प्रभावकी कमी नहीं है, और प्रयत्नशीलताकीभी कमी नहीं है। फिर, रीझनेमें देरीही किसबातकी है? पर हरेक बातके लिये समयकी जरूरत है। मुहव्वतमें जल्दी अच्छी नहीं होती।

पाठकगण! रात्रिके १२ बजे विस्तरोंपर लेटे हुए मेरे हृदयमें इसीप्रकारके विचार

उछलकूद मचा रहे थे। मैं प्रतिदिन ९॥ बजे सो जाया करता हूं, पर आज १२ बज चुके, विचारोंका सिलसिला नहीं टूटा। आखिर निद्राभगवतीकी तकिया, सिराना आदि कोमल २ पदार्थोंसे अभ्यर्थना की गई! बस अर्चाकी देर थी कि, श्रीमती आ पहुंचीं मैं उनमें तल्लीन होगया।

स्वप्नमेंभी वही बात! उन्नतिके दर्शनके लिये चित्त विकल होने लगा। सोचा चलो, क्या हर्ज है, उस ओरसे मिलनेका कोई जरिया नहीं निकलसक्ता, तो जाने दो, बंदा तो मर्द है। एकबार जाके मुलाकात करे। दिलने जबाब दिया, अच्छा तशरीफ ले चलिये। ऐसाही हुआ, उसीसमय बंदा उन्नतिके मकानकी गलीमें जा धमका, और ताक झांकमें मशगूल हुआ। परन्तु हाय! वे धुएंके बादल बातकी बातमें विखर गये; लोगोंसे सुना, कि, अभी कुछ दिन हुए उन्नति महाराणी इस गगनस्पर्शी हवेलीको खालीकर गई! उनके एक नौकरसे सुना था, कि, वे बम्बईको गई हैं, और ज्यादा किसीको मालूम नहीं। तो क्या वे मुझे सचमुच नहीं चाहतीं? बहु बचनके प्रयोगसे पाठक हँसें नहीं, मैं उन्हें एक वचनसे नहीं पुकार सकता!

चारपाईपर अबतबकी हालतमें पड़े हुए बुड्ढेकोभी जीनेकी आशा रहती है, फिर जनाब! मैं तो एक हट्टाकट्टा जवान आदमी हूं। दुनियांके सारे हवस अभी मेरे दिलके बाक्समें ज्योंके त्यों बन्द हैं। मैं अपनी आशा क्यों छोड़ देता। उसीसमय अनुसंधान करनेकी ठान ली, घरमें कदम रक्खा था कि, बाम्बेमेलकी घंटी हुई। अपने सोनेके कमरेमेंसे कुछ मुसाफिरी सामान लेके और पाकट गरम करके मैं चट स्टेशनपर आया। गाड़ी तयार थी। सेकिन्डक्लासका टिकट कटाके मैं एक कमरेमें जाडटा। घंटीके होतेही एंजिन फक २ धुआं निकालता हुआ दौड़ने लगा मैंनेभी जेबमेंसे चुरुट और माचिस-बाक्स निकालके अपने मुखशरीफको एंजिन बनाया।

हजारोंमील रास्ता तयकरके मैं बम्बईमें आ पहुंचा और अपनी श्रीमतीकी खोजमें घूमने लगा। पहले पहल प्रान्तिकसभाके दफ्तरमें गया, जाना था कि, दर्शन होंगे, परन्तु वहां तो सब प्रकारसे सन्नाटा देखा, एक गद्दी और एक पेटीके सिवाय कुछ नहीं देखा। साम्हने दो आलमारियां कागजोंसे भरी देखीं। मंदिरके व्यासजीसे पूछा क्यों, भाई यह क्या बात है? उसने कहा, प्रान्तिकसभा और जैनमित्रका दफ्तर शोलापुरमें जा पहुंचा है, अब यहां कुछ नहीं है। एक पाठशाला मात्र है, सो पंडितजीकी पाठशाला है। पढ़नेवालोंका और पढ़ना कैसीवस्तु है, ऐसा समझनेवालोंका सर्वथा अभाव है। दशपांच स्वाध्याय करनेवाले भाई आते हैं, सो योंही ग्रन्थोंके पन्ने उलटपलटके रख जाते हैं। शास्त्रसभामेंभी दशही पांच मूर्तियां विराजमान रहती हैं। मैं बड़े चक्करमें पड़ा, जिस बम्बईका इतना नाम

सुनता था, जिसकी महिमामें अखबारोंके पन्नोंपर आफत आती थी, और जिसकी तारीफ सुनते २ कानोंकी कमबख्ती आती थी, वहां ऐसी शान्ति? अस्तु, शहरमें फिरते २ थक गया था, मन्दिरके नीचे धर्मशालामें डेरा लगा दिया। आवश्यकीय कार्योंसे छुट्टीपाकर और भोजनादिकरके ज्योंही चुरुटमेंसे धुआँ निकाला कि, उनके दोस्त अंधकार महाशय आधमके रात्रि हो गई।

मन्दिरमें आनेजानेवालोंकी गड़बड़ शुरू हुई। मैं अपने डेरेसे उठके ऊपर गया, तो मालूम हुआ कि, आज यहांकी लोकलसभामें किसी भाईका व्याख्यान है। सभाके कमरेमें गया, दशवीस मूर्तियां बैठी थीं, एक भाई खड़े हुए स्पीच दे रहे थे, मंत्री, उपमंत्री, सभापति सब नदारद। मैं स्तंभित हो गया, "दियातले अंधेरा" वाली कहावतको यहीं कार्यमें परिणत देखी। थोड़ी देरमें सभा विसर्जन हुई, पूछनेसे जान पड़ा कि, ये जो थोड़ीसी मूर्तियां थीं, उनमेंभी अधिकांश नवागन्तुक विदेशी भाईयोंकी थीं। सभासम्बन्धी कार्योंमें यहांके सज्जनोंमें ऐसाही उत्साह है! यह जानके मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, अपना संदेह निवारण करनेके लिये मैंने एक शुभ्रवस्त्रधारी (सफेदपोश) सज्जनसे पूछा कि, यह क्या बात है। उन्होंने बड़े स्नेहसे बम्बईकी कथा कह सुनाई। जिसके सुननेसे मेरी आशापर पानी फिर गया। उन्होंने कहा यहां हम लोगोंमें दो धड़े हैं, एक मारवाड़ी और दूसरा गुजराती। दोनों धड़ोंके एक २ दो २ महाशय उन्नतिपर मरते हैं और उसकी अभ्यर्थनाके लिये जी तोड़ परिश्रम करते हैं, परन्तु कहीं भाई! "अकेले चनेसेभी भाड़ फूटता है"? उनकी दशा देखके हमारे मुखियालोग कहते हैं, इनलोगोंकी अकल खफ्त होगई है, जो इन्हें उन्नतिही उन्नति सूझा करती है। भला, कहीं पंचमकालमेंभी उन्नतिका समागम हो सकता है? कभी नहीं। परन्तु मुखियाओंकी इन बातोंपर उक्त सज्जन कुछ ख्यालही नहीं करते और अपनी कुछ न कुछ टेंटें लगायेही रहते हैं। यद्यपि वे जो कुछ करते हैं, वह है सब "भूसेपर का लीपना" अथवा "भैंसके आगे वीण बजाना" परन्तु उससे आप सब लोगोंको मालूम हुआ करता है कि, बम्बईवाले बड़ा काम करते हैं, वड़े उद्यमी हैं। किन्तु यथार्थमें है यहांभी बड़ीभारी पोल। देखो न, अबकी बार तीनवर्ष होचुके प्रान्तिकसभाका अधिवेशनभी नहीं हुआ। बस, इसीसे सब कुछ समझलीजिये और अब मैं अपने घरके अधिक छिद्र आपको नहीं दिखलाना चाहता। एक बात कहके अपने सिलसिलेको पूरा किये देता हूं।

कुछ दिन पहले सुना था, कि, उन्नतिदेवी इस ओरको आनेवाली हैं, अतएव उन्हीं तीन चार सज्जनोंने दौड़धूप करके बोर्डिंगस्कूल, विद्यालय, तथा लोकलपाठशालादि कईस्थान उनके स्वागतके लिये तयार कराये थे, और तबसे उक्त तीनचार सज्जनही उक्त

स्थानोंपर कभी २ उन्नतिकी फरमाबरदारीके लिये पहुंच जाया करते हैं, अन्य सब लोग यहभी नहीं देखते हैं, कि, वहां क्या होता है, और किसलिये उक्त स्थान तयार हुए हैं! कभी काम पड़ता है, और संकोचमें पड़के जाना पड़ता है, तो राम २ करके वापिस आना होता है।

इधर हालहीमें ख़बर लगी है कि, उन्नति महाराणी अब यहां नहीं आवेंगी। सुनते हैं, उनसे किसीने जाके यह चुगली खाई है, कि, यहांका मारवाड़ी समूह तो फूट और अहंमन्यताके पंजेमें फंसा हुआ है, और गुजराती समाज अविद्या और नवीन सभ्यतापर आशक्त है। फिर भला, आपही कहें, ऐसे घरमें बेचारी उन्नति आके क्या करे। और यथार्थमें यहांपर उसके असली सत्कार करनेवाले दो चारही महाभाग्य हैं, अन्य सब तो आप २ में मस्त हो रहे हैं। सो बहुत करके अभी वे यहां नहीं आवेगीं।

शुभ्रवस्त्रधारीके चलेजानेपर मैं शय्याका आश्रय लेता था कि, मेरे एक मित्रका तार आया, उसमें लिखाथा, "उन्नतिदेवी यहां **सहारणपुरमें** आनेवाली हैं, तुम फौरन मेलट्रेनसे आओ"। तार पढ़तेही मैं उछल पड़ा और घड़ीसे टाइम पूछके दूसरेदिन विक्टोरियाटर्मिनस जाकर पंजाब मेलट्रेनमें जा डंटा। रेलगाड़ीने मुझे बहुत जल्द सहारणपुरके विस्तृत प्लेटफार्मपर जा उतारा इस उपकारके बदले मैं थेंक्स देके उन्नतिदेवीके स्वागतमें जो केम्प तयार हुआ था, उसमें जा पहुंचा और अपने मित्रसे जा मिला। बड़ी उत्कंठासे मैंने पूछा, कहो भाई! क्या ख़बर है? उन्होंने कहा खैरियत है। आपकी माशूकाके आनेमें अब बहुत देर नहीं है। यह सब ठाठ उन्हींकेलिये रचे गये हैं। इसमें यदि किसी बातकी त्रुटि हो, तो आप कहिये उसकी पूर्ति की जावे। मैंने कहा, आपने जो कुछ किया, उसकेलिये मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं, परन्तु देशकालके अनुसार आपके सब ठाठोंमें अभी त्रुटियां हैं। क्या आपको यह नहीं माळूम है कि, वे अब पूर्वकालकी नाईं सीधीसाधी पुरानी लकीरकी फकीर नहीं रही हैं। कुछ जेंटलमेनोंने मिलकर अब उन्हें घांघरेकी जगह गौन (Gown), साड़ी दुपट्टेकी जगह जाकेट (Jacket) हेन्डकरचीफ (Handkerchief) और घूंघटकी जगह हैट (Hat) धारण (स्वीकार) करा लेडीसाहिबाके स्वरूपमें परिवर्तन कर दिया है। अत: उनके स्वागतका ठाठभी उसीप्रकारका होना चाहिये। और देखो, जो यहां दशपांच ओल्डमेन (Oldmen) दिखलाई देते हैं, उन्हें इस स्वागतकार्यमें शामिल होनेकी आवश्यकता नहीं है, बल्कि कोई पुराने सड़ियल विचारोंके आनेवाले हों, तो उन्हें जहांतक बने न आनेदेनेकी कोशिश करनी चाहिये। नहीं तो याद रक्खो, ये लोग सब गुड़ मिट्टी करदेंगे। स्वागत कार्यमें केवल यङ्गमेन् (Youngmen) लोगोंकी अधिक भरती होनी चाहिये। इसपर

मित्रवर्यने कहा, तब तो आपके कहनेके अनुसार हम जो यहांतक महाविद्यालय, मथुरासे लाके, उनके स्वागतमें खड़ा करनेका विचार कर रहे हैं, सो उन्हें पसन्द नहीं आवेगा । क्योंकि, उसमेंभी उसी पुराने ढर्रेके चर्खे चलानेका और उनसे उन्हीं बिढंगे विचारोंके अजीब पुरुषोंके तयार करनेका सिलसिला जारी होगा । अतएव मेरी समझमें संस्कृतके बजाय एक आंग्लभाषा विद्यालय खोलना चाहिये । और छिः छिः "विद्यालय" क्या बिढंगा नाम है, इसेभी बदल डालना चाहिये, अहा ! जैनकालिज (JaiN college) कैसा अच्छा नाम होगा । अस्तु, तो अब बैठनेका समय नहीं है, तुम थकेहुए आये हो, कुछ थोड़ासा नाश्ता वगैरह करके विश्राम करलो, तबतक हम इसी विषयकी खटपटमें लगते हैं, परन्तु भाई, इसमें बड़ी २ गुप्त पालिसियोंसे काम लेना होगा और आगे उन ओल्डमेनोंसे साम्हना करना होगा, जो हमारे इसकार्यके सर्वथा विरुद्ध हो जावेंगे । अस्तु, अब उनकी परवाह करना ठीक नहीं है, हम "अवच्छेकावच्छिन्न" के बाग्जालसरीखी ऐसी चाल चलें, कि, महीनोंतक उनके पुरखाओंकोभी खबर नहीं पड़े कि, जैनकालिज, महाविद्यालय, जैनहाईस्कूल, इंग्लिश डिपार्टमेंट, संस्कृत डिपार्टमेंट, के बाग्जालके भीतर क्या गुप्त रहस्य भरा हुआ है । हमारे प्रत्येक लेख और प्रत्येक व्याख्यानमें इन शब्दोंकी गोलमाल रहेगी, समझे ! ! और सुनो, हमारे यंगमेन् समूहका जोरभी अभी कुछ कम नहीं है । तथा इस स्वागतकार्यके कर्त्ताहर्त्ता विधाताभी हमही सब लोग हैं देखो ! **श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैनधर्मसंरक्षणी महासभाकोभी** हमने **जैनकान्फ्रेंस** ऐसा सामान्य लिवास पहिना दिया कि, नहीं । उस लम्बे चौड़े नामके अर्थमें बहुत अड़चने माल्रम पड़ती थीं, वे अब सब रफा हो जावेगीं । अच्छा तो अब आप जाइये । ऐसा कहकर मेरे फ्रेंड साहब ते अपनी उधेड़बुनके लिये चले और मैंने बिस्कुट, डबलरोटियोंकी दूकानका आश्रय लिया । बहुत दिनोंके पीछे भरपेट खाना खाया और होटलमेंही एक कोचपर लम्बा होगया ।

बाकी फिर

एक आशक

मनोविनोद ।

(१)

एक शेठजी बड़े कंजूस थे । आप पैसेका काम बातोंसे निकाला करते थे । अपने मतलबके लिये हरएकसे पहचान करलेनेमें आप बड़े सिद्धहस्त थे । एकबार यात्रामें इन्हें एक लालाजी मिले, उनसे आपका कुछ मतलब था, इसलिये आपने चटसे पूछा भाईसाहब ! ऐसा याद आता है कि, मैंने कभी आपको देखा है । आपका इस्म शरीफ ?

लालाजी—मुझे लोग असुरकुमार कहा करते हैं ।

शेठजी—(आकाशकी ओर देखके) हां शायद आपको—ओ....ओ ।

लालाजी—हां ! हां ! कहिये ! कहिये ! मुझे आपने तीसरे नरकमें देखा होगा, उसवक्त मेरी तैनाती वहांही थी । वहांपर आपकी सेवा मैंही करता था । क्यों ! याद है न ! पर शेठजी हमने सुना है कि, कंजूसीकी आदत आपने इस जन्ममें भी नहीं छोड़ी ?

(२)

एक मथुरिया चौबे किसी यजमानके यहांसे भोजन करके आये थे, कि, इतनेमें एक दूसरे यजमान निमंत्रण देनेको आये, साथमें अच्छी दक्षिणा मिलनेकी बातभी मालूम हुई । परन्तु पेटमें जगह नहीं थी, इसलिये उन्होंने बड़े चिन्तित होके अपने गुरूजीसे पूछा

" ऊर्द्धवायुसहस्राणि
अधोवायुशतानि च ।
निमन्त्रणं समायातं
भो गुरो किं करोम्यहम् " ।

अर्थात् गुरुमहाराज ! हजारों ऊर्द्धवायु और सैकडों अधोवायु निकल रहे हैं, और इतनेपर निमंत्रण आया है, कहिये क्या करूं ? गुरूजी बोले,

भोजनं प्राप्य दुर्बुद्धे
शरीरे मा दयां कुरु ।
दुर्लभानि परान्नानि
शरीराणि पुनः पुनः ।

अर्थात् अरे मूर्ख ! जाके भोजनकर, शरीरपर दया करनेकी जरूरत नहीं है । संसारमें पराया माल दुर्लभ है, शरीर तो बार २ मिलताही रहता है !

कर्तृत्ववादके पूर्वपक्षका खण्डन

(२)

यदि द्वितीयपक्ष अर्थात् प्रागसतः स्वकारणसत्तासमवाय (प्रथम असत् पदार्थके स्वकारणसत्ताका समूह) ऐसा कार्यत्वशब्दका अर्थ माना जावै तो हेतु (कार्यत्व) प्रसिद्ध हो जायगा, क्योंकि, तादृशकार्य विशेषका अभाव है अर्थात् प्रथम असद्भूत पदार्थके स्वकारणसत्ताका समूह असम्भव है, यदि सद्भाव माना जाय तो जीर्णमकान आदि देखनेसे जिसप्रकार उसकी क्रिया नहीं देखनेवालेकोभी " कृत " इसप्रकार बुद्धि हो जाती है तथैव यावत्कार्योंके देखनेसे कार्योंमें " कृत " ऐसी बुद्धि होनी चाहिये परन्तु होती नहीं है इसलिये यावत्कार्यही प्राग् असत्के स्वकारणसत्ताके समूहरूप नहीं हैं यदि कहा जाय कि, समारोप अर्थात् संशयादि दोषसे " कृत " ऐसी बुद्धि नहीं होती तो दोनोंही जगह अविशेष है अर्थात् " कृत " ऐसी बुद्धिके विषय जीर्णमकानादि तथा जिनके देखनेसे " कृत " बुद्धि नहीं होती ऐसे पर्वतादिक ये दोनोंही कार्योंके कर्त्ता अप्रत्यक्ष हैं फिर एक जगह (पर्वतादिमें) संशयादिसे " कृत " बुद्धि नहीं होती तथा जीर्णप्रासादादिमें " कृत " बुद्धि हो जाती है यह कहना नहीं बनसकता है क्योंकि,

कार्यत्वरूपसे दोनोंही समान हैं । यदि कहो कि, प्रामाणिक पुरुषोंको तो इसमें (पर्वतादिमें) भी "कृत" बुद्धि है ही, तो पूछना चाहिये कि, इसी अनुमानसे "कृत" बुद्धि हुई है अथवा अनुमानान्तरसे, यदि इसीसे हुई है ऐसा कहो तो अन्योन्याश्रय दोष होगा, क्योंकि, जब कार्यत्व यावत् पदार्थोंमें सिद्ध हो जावे तब कृतबुद्धि सिद्ध हो तथा कृतबुद्धि सिद्ध होनेपर कार्यत्वहेतु सिद्ध हो इसप्रकार अन्योन्याश्रय दोष है. (अन्योऽन्याश्रय दोषवाले पदार्थ यथार्थ नहीं माने जाते) यदि दूसरे अनुमानसे मानी जाय तो उस अनुमानकीभी सिद्धि कृतबुद्धिके उत्पादकत्वरूप विशेषण विशिष्ट हेतु सिद्ध होनेसेही हो सकती है तथा कृतबुद्ध्युत्पादकत्वरूप विशेषण उससेभी अन्य अनुमानद्वारा सिद्ध होगा इसप्रकार फिरभी अनवस्था दोष आपड़ता है. इसलिये कृतबुद्ध्युत्पादकत्वरूप विशेषण सिद्ध नहीं हो सकता. विशेषण नहीं सिद्ध होनेसे विशेषणासिद्धत्व दोष हेतुमें अपड़ता है.

कचडे मट्टी आदिसे भरादिये गये खड्डेके देखनेसे जिसप्रकार कृतक पुरुषोंके हृदयमें कृतबुद्धिका उत्पाद नहीं होता इसीप्रकार पर्वतादिकोंमेंभी कार्य होनेपरभी कृतबुद्धि नहीं होती, ऐसा जो कहाथा सोभी युक्त नहीं है क्योंकि, वहांपर (खड्डे आदिकोंमें) इधर उधर अकृत्रिम जो भूभाग कृतबुद्धिके उत्पन्न होनेमें बाधक मोजूद है उसके रोकनेसे वहांपर कृतबुद्धि नहीं होती, परन्तु इसप्रकार पृथिवी पर्वतादिकोंमें तुम अपने सिद्धान्तानुसार कोई बाधक नहीं बतला सकते इसलिये स्वमतकी अपेक्षा तुम्हारे ऊपर दोष सवारही है अर्थात् पूर्वोक्त दृष्टान्तसे आप निर्वचन नहीं कर सकते, क्योंकि, आपके मतानुसार सम्पूर्ण पदार्थ कृत्रिमही हैं फिर किसप्रकार तथा कौन बाधा कर सकता है । यदि च भूधरादिकोंको अकृत्रिमही मानलिये जाय तो सिद्धान्तका अर्थात् आपके मतका विघात होता है । इसप्रकार कृतिबुद्धिकी किसी प्रकारभी उत्पत्ति नहीं होसकनेसे हेतुमें विशेषणासिद्धत्व दोषका आपात होता है अर्थात् कृतबुद्ध्युत्पादकत्वरूप जो विशेषण कार्यत्व हेतुका होना चाहिये सो नहीं बनसकता इसीलिये विशेषणासिद्धि दोष है । अथवा किसीप्रकार थोड़ी देरकेवास्ते विशेषणकी सिद्धिभी मानली जाय तोभी यह हेतु, जिसप्रकार उदाहरणरूप घटमें शरीरादि सहितही कर्ता होता है इसीप्रकार क्षित्यादिकोंका भी कर्ता शरीर आदि विशिष्टही सिद्ध हो सकेगा इसलिये अशरीर और सर्वज्ञ ऐसे ईश्वरके सिद्ध करनेके बदले सशरीर तथा असर्वज्ञकी सिद्धि करनेसे साध्यसे विरुद्धके साधक होनेसे विरुद्ध है ।

(शङ्का) इसप्रकार दृष्टान्त तथा दार्ष्टान्तमें परस्पर यदि समानता देखी जावे तो सर्वत्रही हेतु नहीं बनसकते इसलिये कार्यकारणभावमात्रसेही व्याप्ति करनी चाहिये तथा इसीमें दृष्टान्तभी है यावद्धर्मोंसे समानता नहीं ।

(उत्तर) ऐसा कहना सर्वथा ठीक नहीं है क्योंकि, धूमसे अनुमान करतेसमय महानस (रसोईगृह) तथा इतर सर्वत्रकी अग्निकेसाथ सामान्यहीरूप व्याप्तिकी जाती है।

(शङ्का) इसीप्रकार सामान्यरूप बुद्धिमत्कर्तृत्वमात्रसेही लिया जाय तो काम चलसकता है अतः हेतु विरुद्ध नहीं है।

(उत्तर) जिनजिन दृश्यआधार विशेषोंमें हेतु दृष्ट हो उन्हीं उन्हीं आधार विशेषोंकी सामान्यरूपतामें कार्यत्वहेतु माना जा सकता है जो आधार विशेष अदृश्य है वह आधार हेतुके आधारसामान्यमें नहीं गर्भित होसकता यदि ऐसाभी किया जाय तो अतिप्रसङ्ग होगा अथवा खरविषाणकीभी सिद्धि महिषविषाणवत् हो जायगी। जिसप्रकार यहांपर अदृश्यविशेषाधार होनेसे खरविषाण नहीं माने जाते इसीप्रकार ईश्वरभी अदृश्य विशेषाधार होनेसे ईश्वरकी सिद्धि नहीं मानी जा सक्ती किंवा यह हेतु ईश्वरमें नहीं जासकता। (फलित) यादृशकारणसे जिसप्रकारके कार्यकी उत्पत्ति दीखती है वैसेही कार्यसे वैसेही कारणकी उत्पत्ति अनुमानद्वारा अनुमित करनी चाहिये। जिसप्रकार यावद्धर्मात्म वन्हिसे जितने धर्मविशिष्ट धूमकी उत्पत्ति दीखती है दृढ प्रमाणसे तादृश धूमसे तादृशही वन्हिकी अनुमिति करनी चाहिये इस कहनेसे, विशेषरूपसे व्याप्तिग्रह नहीं किया जाता क्योंकि, ऐसा करनेसे कोईभी अनुमान नहीं बन सकता ऐसा एकान्तरूपसे कहनेवाला निराकृत किया जाता है (फलित) दृश्यविशेषाधारोंमें हेतुको सामान्यरूपसेही माननेपरभी अदृश्यविशेषाधारमें हेतुकी सत्ता नहीं मानी जा सकती इसलिये ईश्वर अदृश्यविशेषाधार है ततः अशरीर तथा सर्वज्ञानमय ऐसे सर्व दृश्याधारोंसे विलक्षण ईश्वरकी कर्तृता बन नहीं सकती, किन्तु कार्योंकी कर्तृता दृश्यविशेषाधार तथा सशरीर असर्वज्ञ ऐसे कुम्भकारादिमेंही बन सकती है। जगतमें कार्य दो प्रकारके देखे जाते हैं। कुछ तो बुद्धिमत् कर्ताओंद्वारा किये हुये यथा घटादिक तथा कुछ कार्य तद्विपरीत अर्थात् स्वतः प्रभव, जिसप्रकार स्वतउत्पन्न तरुतृणआदि, कार्यत्वहेतु दोनोंही कार्योंको पक्ष करनेसे व्यभिचारी है। यदि व्यभिचार नहीं माना जाय तो दूसरे पुत्रोंकेसमान मित्राका गर्भस्थ पुत्रभी श्याम होगा उसीका पुत्र होनेसे इस अनुमानकोभी सच्चा मानना पडैगा तथा इसका हेतुभी गमक कहा जा सकता है इसीप्रकार कोईभी हेतु व्यभिचारी नहीं होगा क्योंकि, जहां जहां हेतुमें व्यभिचार है वे सभी हेतु पक्षीभूत हो सकते हैं। यदि ईश्वरसे अन्य कोई बुद्धिमान् कर्ता कल्पित किया जाय तो अनवस्था आती है। इसीप्रकार कालात्ययापदिष्टनामक दोषभी आवैगा क्योंकि, स्वतउत्पन्नतरुतृणादिकोंमें कर्ताका अभाव प्रत्यक्षही है, जिसप्रकार अग्निमें अनुष्णता सिद्ध करतेसमय द्रव्यत्वादि हेतु प्रत्यक्षसे बाधित हो जाते हैं क्योंकि, प्रत्यक्ष ज्ञान अनुमानकी अपेक्षा विशेष प्रमाण है, इसीप्रकार स्वतउत्पन्न तरुआदिकोंमें

कर्त्ताका अभाव प्रत्यक्ष होनेसे प्रबल प्रत्यक्षद्वारा कार्यत्वरूप हेतु बाधित होनेसे ईश्वरमें तरुतृणादिका कर्तृत्व नहीं सिद्ध होसकता। यदि तृणादिकार्योंमें अदृश्य ईश्वरही कर्त्ता माना जाय तो क्या हर्ज है ऐसा कहना ठीक नहीं क्योंकि, उसकी सत्ताही सिद्ध नहीं है तो कर्त्ता है या नहीं यह कल्पना तो दूरही रहो। उस ईश्वरका सद्भाव इसीद्वारा मानते हो अथवा अन्यप्रमाणसे? यदि इसी द्वारा माना जाय तो चक्रक नामक दोष आता है। (यह दोषभी अन्योन्याश्रयकेसमान है, अन्योन्याश्रय दो अन्योन्योंमें रहता है यह तीनपर स्थित रहता है) वह दोष इसप्रकार है इस अनुमानसे सिद्ध हुऐ ईश्वरके सद्भावमें ईश्वरके अदृश्यपनेकर अनुपलंभ (अप्रत्यक्ष) सिद्ध हो तथा इसके अदृश्यत्व सिद्ध होनेपर "कालात्ययापदिष्ट" हेतुदोष (तरुतृणादिमें कर्तृत्वाभाव प्रत्यक्ष होनेसे कार्यत्वहेतुमें जो दोष बतलाया गया है वह) का निवारण होसके और कालात्ययापदिष्ट दोष दूर होनेपर ईश्वरसद्भाव सिद्ध हो इसप्रकार ईश्वरसद्भाव सिद्धि होनेपर इसका अनुपलंभ अदृश्यत्वद्वारा सिद्ध हो इत्यादि पुनः वह उसके अधीन इसप्रकार एककी सिद्धिमें परस्परकी अपेक्षा रहनेसे इसीप्रमाणसे ईश्वरकी सत्ता सिद्धि नहीं हो सकती यदि प्रमाणान्तरसे सत्ता सिद्ध की जाय सोभी बन नहीं सकता क्योंकि, उसकी सत्ताका आवेदक दूसरा प्रमाणही नहीं है अथवा आग्रहसे मानाभी जाय तो सिद्धान्तका विघात होगा।

अपूर्ण

जैनमित्रके ग्राहकगणोंसे

प्रथम प्रार्थना—आपको जो पोष्टकार्ड अंक ७ के साथ छपे हुए भेजे गये थे वे एक २ नवीन ग्राहक बनानेके लिये थे कि, हमारे ग्राहकगण एक २ नवीन ग्राहक बनाकर ग्राहकोंका नम्बर द्विगुणित कर देवेंगे परन्तु हमारे ग्राहकगणोंने उसका यथार्थ मतलबभी न समझा और अपने २ नाम लिखके भेजना आरंभ कर दिया जिससे हमको बहुत असुविधा हुई. अब प्रार्थना है कि, जिनकेपास दो अंक पहुंचते होवें वे इत्तला देवें और अब अवश्य एक २ नवीन ग्राहक बनाकर भेजें।

द्वितीय प्रार्थना—ग्राहकगण नम्बर लिखना भूल जाते हैं और लिखते हैं तो २८८ B. लिखदेते हैं सो यह नम्बर ग्राहकोंका नहीं है। ग्राहकोंका नम्बर नामके पास लिखा रहता है वह नं० भेजना चाहिये यदि एसा न किया जायगा तो पत्रकी यथोचित कार्यवाही न होवेगी तथा हम विलम्बके उत्तर दाताभी नहीं होंगे।

तृतीय प्रार्थना—वही पुरानी मूल्यवाबत है अब ग्राहकगण शीघ्रही मूल्य भेजें वरना अंक वी. पी. से भेजना प्रारंभ किया जावेगा। इसकारण वी. पी. स्वीकारताका पत्र शीघ्र आना चाहिये।

मौजीलाल क्लार्क

एक प्रार्थना ।

हर्षका स्थान है कि, स्याद्वाद पाठशाला काशीमें चैत्रमहीनेसे तीन विद्यार्थी प्रमेयकमलमार्त्तण्ड न्यायका महान ग्रंथ पढ़नेके लिये समर्थ हुये हैं परन्तु स्याद्वाद पाठशालाकी तरफसे लिखाये जानेका प्रबंध नहीं हो सक्ता । एक प्रति तो पाठशालामें मौजूद है परन्तु तीन प्रति और चाहिये सो प्राचीन शास्त्रभंडारोंके प्रबंधकर्त्ताओंसे प्रार्थना है कि, दया करके अपने अपने भंडारोंको संभालें और शीघ्रही प्रमेयकमलमार्त्तण्डकी प्राचीन व शुद्ध प्रति हो भेजनेका प्रबंध करके इस ग्रंथका पाठन कराकर शीघ्रही स्याद्वादविद्याका जीर्णोद्धार करावें । जो भाई प्रति भेजैंगे वह यत्नसे रक्खी जायगी पाठपूरा होनेबाद यत्नकेसाथ वापिस भेजी जायगी ।

दूसरे दो विद्यार्थी जैनेन्द्र व्याकरण पढ़ना प्रारंभ करैंगे सोइसकीभी तीन प्रति स्याद्वाद पाठशालामें भेजनेकी दया करैंगे ।

यदि किन्हीं महाशयोंको प्रति जानेका भय हो तो प्रत्येक प्रतिके लिये सौ सौ पचास २ रुपया डिपाजिट रखदिये जांयगे ।

आशा है कि, प्राचीन भंडारोंके मालिक और परीक्षालयके मंत्री महाशय शीघ्रही उक्त ग्रंथोंके भेजनेका प्रबंध करैंगे ।

प्रार्थी
पन्नालाल जैन
पो० गिरगांव मुम्बई

जैनधर्मसंबंधी तस्बीरें ।

विदित हो कि, यहांपर कर्णाटक देशवासी पंचप्पा नामके एक जैनी चित्रकार आये हैं हरप्रकारके रंगीन चित्र लिखनेमें सिद्धहस्त हैं सो जिनभाइयोंको अपने यहांके मंदिरजीमें आदिनाथके आहारदान, रामलक्ष्मणके आहारदान, षड्लेश्यावृक्ष, मधुबिंदुके कूप बड़का चित्र वगैरह जिनधर्मसंबंधी जिसप्रकारके रंगीन सुंदर चित्र बनवाकर मगाने हों वे हमें लिखैंगे तो उनकी फरमायसके अनुसार बनवाकर काचमें जड़वाकर रेलपारसलद्वारा भेज देंगे चित्र १।) १॥) २) २॥) रु० तकके बनते हैं जिनको जितने जिस मूल्यके और जिसप्रकारके चित्र बनवाने हों, उनको ब्योरेवार फेहरिस्तकेसाथ आधे रुपये पाहिले भेजने चाहिये ।

जैनीभाइयोंका दास
पन्नालाल जैन पो० गिरगांव मुम्बई

सूचना

"हुकमचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंगस्कूल" इन्दौरमें ७ विद्यार्थियोंके भरती होनेकी औरभी गुंजायश है अतएव जो विद्यार्थी बालबोध तृतीयखंडकी पढ़ाई जानते हों और जिनकी उम्र १४ वर्षसे अधिक न हो भरती होनेके लिये शीघ्रही दरख्वास्त भेजें इन्दौरमें प्लेगकी नाममात्र शिकायत होतेही बोर्डिंग वडनगर लाया गया है इतना विद्यार्थियोंकी हिफाजतका ख्याल रक्खा जाता है अतएव विद्याभिलाषियोंको यह अवसर हाथसे न खोकर शीघ्रही नीचे लिखे पतेपर दरख्वास्त भेजनी चाहिये.

पत्ता—सुपरिंटेन्डेन्ट हुकमचंद दि० जैन बो० स्कूल वड़नगर (मालवा)

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। चैत्र वद्य १ श्रीवीर स० २४३२। अंक १०

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

खेदपर खाक.

सहयोगी जैनगजटमें आजकल "खेद खेद खेद!" शीर्षक एक लेख निकलता है, खेद प्रकाशित करनेवाले हैं सहारनपुर कमेटीकी ओरसे बाबू बनारसीदास, और खेद प्रकाशित किया है जैनमित्रके लेखोंपर, इस खेदके प्रकाशित करनेका हेतु दिखाया है कि इस कमेटीका अभिप्राय महाविद्यालयके रुपये हाईस्कूलमें खर्च करनेका कदापि नहीं था! परन्तु बाबूसाहबसे यह सवाल है कि जब कमेटीका अभिप्राय ऐसा नहीं था तो उसने जो ८००) का एस्टीमेट बनाया था वह किस बुन्यादपर, उसमें ७११॥) इंगलिश डिपार्टमेंटको और ८८॥) संस्कृत डिपार्टमेंटको किस हेतुसे, तथा जब कमेटीका ऐसा अभिप्रायही नहीं था और उसने इस विषयमें कुछ कार्रवाहीही नहीं की थी तो फिर पहले प्रस्तावको रद करके संस्कृत डिपार्टमेंटका २५०) मासिक और इंगलिश डिपार्टमेंटका १००) मासिकका एस्टीमेट क्यों बनाया. क्या कमेटी अपनी इस कार्रवाहीमें अपनेही प्रकाशित किये हुए खेदपर खाक नहीं डाल रही है! शोक! शत शोक! ऐसी कार्रवाही और ऐसे खेद प्रकाशित करनेपर.

भूल-संशोधन

अंक	पेज	लाईन	विषय	अशुद्ध	शुद्ध
५-६	२०	८-९	सुशीला	सुवर्नपुर	सूर्यपुर
१	४	१८	सिद्धान्त	समक्ष	सपक्ष
७-८	१८	१७	,,	भेद है	अभेद है।

श्रीवीतरागायनमः

चैत्र वद्य १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
१०

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

हर्षका विषय है कि, हमारी पुकार महासभाके मुखियाओंके कानोंतक पहुंची है, जैनगजट अंक ८ तारीख २४-२-०६ में मुंशी चम्पतरायजीकी तरफसे एक सूचना निकली है कि, (१) महाविद्यालयका फंड पृथक रहेगा और संस्कृतकी उच्च शिक्षामें उसका व्याज व्यय होगा और आगेकोभी जो भाई इस फंडमें दान करैगा वह इसीकी तरक्कीमें खर्च होगा । (२) हाईस्कूलका फंड पृथक रहेगा जिन महाशयोंने हाईस्कूलके नामसे देना किया है वह उसीमें व्यय होगा, और उसमें जैनीबालकोंके वास्ते धार्मिक शिक्षा लाजमी होगी ।

सबेराका भूला यदि शामतकभी घर पहुंच जाय तो उसको भूला नहीं कहते हैं यद्यपि यह सूचना प्रकाशित हो चुकी है परन्तु इसमें कई तरहके सन्देह बाकी हैं सूचनाके नीचे केवल "चम्पतराय" के हस्ताक्षर हैं, झगडेके समय महासभाके अन्य अधिकारी कहसक्ते हैं कि, यह सूचना चम्पतरायजीकी प्राइवेट है आफिशल नहीं है क्योंकि, जो आफिशल होती तो उसके साथमें "महामंत्री महासभा" ये दो शब्द अवश्य होते, इन शब्दोंके न रहनेसे सूचना केवल प्राइवेट है इसलिये महासभा इसकी जिम्मेवार नहीं है इसलिये महामंत्री साहबको चाहिये कि, सब त्रुटियोंको निकालकर संशोधित सूचना प्रकाशित करैं ।

जिसप्रकार महाविद्यालयके फंडसे अंगरेजी शिक्षा दिलाना अन्याय है उसही प्रकार अन्यमतसंबंधी संस्कृतकी उच्चशिक्षा दिलानाभी अन्याय है क्योंकि, जैसेही नागनाथ वैसेही सांपनाथ, द्रव्यदाताओंका अभिप्राय जैनधर्मसंबंधी संस्कृतकी उच्चशिक्षासे था परन्तु मुंशीजीकी सूचनामें संस्कृत सामान्य शब्द है जिससे अन्यमतसंबंधी संस्कृत शिक्षाका निषेध नहीं होता इसलिये, आगामी संशोधित

सूचनामें "जैनधर्मसंबंधी" पदका निवेश और होना चाहिये.

जैनगजटके उपर्युक्त अंकमेंही एक रिपोर्ट निकली है जिसके नीचे हस्ताक्षर हैं "बनारसीदास सेक्रटरी जैनहाईस्कूल सहारनपुर" के, उसमें प्रकाशित हुआ है कि, "५ अंगरेजी विभागमें १० अध्यापक अंगरेजीके, एक फारसीका, एक संस्कृतका और एक विज्ञानका इसप्रकार १३ होंगे तथा संस्कृत विभागमें दो अध्यापक रहेंगे" बाबूसाहबकी यही रिपोर्ट जैनमित्रके गत सातवें अंकमें छप चुकी है उसमें इन अध्यापकोंकी तनखाका तखमीनाभी है उस सबका जोड़ है ८००) परन्तु बाबूसाहबने असली रिपोर्टमें जोड़की भूलसे ७००) ही रक्खे हैं इसलिये बाबूसाहबके अभिप्रायसे वह तखमीना ७००) काही है, इसही अंकमें मुंशी चम्पतरायजीकी सूचनामें लिखा है कि, "जो ७००) मासिक खर्चका तखमीना बांधा गया था वह तखमीना पुख्ता नहीं था अतएव मैंने ऐतराजकेसाथ वापिस कर दिया था" पाठक समझगये होंगे कि, दोनो मंत्रियोंके दोनो लेख कैसे परस्पर विरुद्ध हैं, जिसविषयकी सहायक मंत्रीसाहब रिपोर्टद्वारा विधि करते हैं उसहीका महामंत्री साहब अपनी सूचनामें निषेध करते हैं। अब यहां सवाल उठता है कि, बाबूसाहबने मुंशीजीसे यह रिपोर्ट मंजूर कराई थी कि, नहीं? यदि कराई थी तो अब मुंशीजी साहब क्यों उससे इंकार करते हैं यदि जैनमित्रकी चिछ्ठाइटसे एसा किया है तो अपनी भूल क्यों नहीं प्रकाशित की और जो बाबूसाहबने महामंत्री और सभापतिसे वह रिपोर्ट मंजूर नहीं कराई थी तो अखबारोंमें प्रकाशित क्यों कर दी. यह नियम विरुद्ध कार्रवाही क्यों? यहांपर एक दूसरा सवाल और उठता है कि, जैनगजट महासभाका मुखपत्र है उसके एकही अंकमें सहायक और महामंत्रियोंकी विरुद्ध कार्रवाही कैसे प्रकाशित हुई? सम्पादक महाशयकी देखरेखमें क्या इतनी पोल? सिवाय इसके चंपतरायजीका दर्जा बनारसीदासजीसे ऊंचा तो बनारसीदासजीके लेखका बाधक हुआ चंपतरायजीका लेख, परन्तु बनारसीदासजीका लेख आफिशियल, और चंपतरायजीका प्राइवेट, कहिये पाठक महाशय! कैसी भूलभुलैयां हैं।

एक रिपोर्ट बाबू बनारसीदासजीकी आई है जो अन्यत्र मुद्रित है, उसमें आपने दिखाया है कि, २७ दिसंबरसे पहले २ जो चंदा हो गया है वह सब महाविद्यालयका है, और २७ दिसम्बरसे जो आमदनी हुई है सो हाईस्कूलकी है, खेद है कि, इतनी धूमधाम होनेपरभी अभी बाबूसाहब अपनी गूढ़पालिसीको नहीं छोड़ते, २७ दिसंबरको जो अनुमान ९०००) की आमदनी हुई है, वह महाविद्यालयकी है हाईस्कूल शब्दका जन्मही जब २८ दिसंबरको हुआ था तो २७ दिसंबरकी आमदनी हाईस्कूलकी किसप्रकार होसक्ती है.

हाईस्कूलकी नियमावलीमें एक नियम

रक्खा है कि, जैनविद्यार्थियोंको धार्मिकशिक्षा लाजमी होगी" अर्थात् अन्यमती विद्यार्थियोंको धार्मिकशिक्षा लाजमी नहीं है । क्या खूब ! जैनियोंने द्रव्य दिया इस अभिप्रायसे कि, हमारे बालक सरकारी कालेजोंमें धर्मशिक्षासे वंचित रह जाते हैं इसलिये यह हाईस्कूल खोला जाय, जब आपके हाईस्कूलमें फीसभी नहीं ली जायगी और धर्मशिक्षाकी कैदभी नहीं है, फिर भला अन्यमती लड़के सरकारी कालेजमें क्यों जाने लगे, इसप्रकार अन्यमतियोंकी भरती की हो जायगी खूब भरमार, जैनियोंकी हो जायगी गौणता, कदाचित् उनकेवास्ते धर्मशिक्षा लाजमी रक्खी जाती तोभी कुछ हर्ज नहीं था, जो धर्मशिक्षा लाजमी नहीं रखते तो भला ! हाईस्कूलके साथमें "जैन" शब्दका फजीता क्यों करते हो.

महाविद्यालयमें बालबोधकक्षाओंकीभी पढ़ाई होती है, तथा स्थानीप पाठशाला सहारनपुरकी भिन्न है फिर नहीं मालूम महाविद्यालयमें बालबोध कक्षा खोलनेका क्या प्रयोजन, जब कि, स्थानीय पाठशालाको महाविद्यालयकी शाखा करारदी है तथा वह महाविद्यालयकेवास्ते विद्यार्थी तयार करैगी एसा प्रगट किया गया है, तो क्या जरूर है कि, महाविद्यालयमें बालबोध और प्रवेशिकाकी पढ़ाई रक्खी जाय फिर स्थानीय पाठशाला क्या करैगी, स्थानीय पाठशालाका कर्त्तव्य है कि, प्रवेशिका पास कराकर विद्यार्थियोंको महाविद्यालयमें भेजै, महाविद्यालयमें केवल पंडित परीक्षासे पढ़ाईका प्रारंभ होना चाहिये, और जो विद्यार्थी बालबोध तथा प्रवेशिका परीक्षाके हैं उन्हें स्थानीयपाठशालामें भेज देवै, यदि एसे विद्यार्थियोंमें कोई विद्यार्थी अनाथ होय तो उसका प्रबन्ध स्थानीय पाठशालावालेही करैं यदि स्थानीयपाठशालामें इतनी शक्ति नहीं होय तो उस विद्यार्थीका नाम खारिज करैं परन्तु महाविद्यालयमें वेही विद्यार्थी भरती किये जांय जो प्रवेशिका पास कर चुके हैं. अथवा उतनी योग्यता रखते होंय

महाविद्यालयमें जो अनुमान २९०) मासिककी आमदनी है उसका बजट इसप्रकार होना चाहिये.

७९) प्रधान अध्यापक नैयायिक.
५०) वैयाकरण तथा साहित्याचार्य.
२९) अंगरेजी अध्यापक.
२०) गणित तथा महाजनी अध्यापक.
८) रसोइया नग १
७) खिदमतगार नग १
५) चपरासी १
९) मकान भाड़ा.
५) खैरीज खर्च.
५०) वजीफे नग १० दर ५)

———

२९०) कुलजोड़

भोजनका प्रबन्ध विद्यार्थियोंके आधीन किया जाय और रसोइया तथा खिदमतगारको दाखिल खारिज करनेका अधिकार विद्यार्थियोंको दिया जाय, तथा देखरेख

सुपरिंटेंडेंटकी रहैं और गणिताध्यापककोही सुपरिंटेंडेंटका काम सुपुर्द किया जाय.

ता० २५ फरवरीको बम्बईकी शेठ एच. जी. धर्मशालामें **कविराज घेलाभाईकी** अपूर्व स्मरणशक्तिका परिचय पानेके लिये एक महती सभा हुई थी, जिसका विवरण कभी फिर दिया जायगा उसदिन सभा विसर्जनके समय श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचन्दजीने एक विलायती जूतोंका जोड़ा सब भाइयोंको दिखलाया था, जो कि, केवल कपड़ेका बना हुआ था, और बनावट, रंग, तथा पालिशमें विलायती चमड़ेके जूतेसे किसी बातमें कम नहीं था। उसे एकाएक देखनेसे एकाएक कोई नहीं कह सकता कि, यह कपड़ेका है। विलायतमें एक विजीटेरियनसुसाइटी नामकी सभा है, जिसके सभ्य केवल वनस्पतिभोजी और मदिरा, मांस, चर्बीसे अत्यन्त परहेज करनेवाले हैं। कहते हैं, इस सुसाइटीके सभ्य मांसादि तो दूर रहा, परन्तु दूध और घीकोभी काममें नहीं लाते!! क्योंकि, वह गाय भैंसके मांस रक्तमेंसे होकर आता है। सो इसी सुसाइटीके सभ्योंके लिये विलायतमें यह वस्त्रका जूता तयार हुआ है। और शेठजीने उसे इसलिये दिखलाया था कि, हमारा अहिंसा धर्म ऐसा शक्तिशाली और असरकारक है कि, उसका अधिकार यूरोपसरीखे मांसभोजी और परमहिंसक देशमेंभी बड़ी शीघ्रतासे हो रहा है, और इस उत्कृष्टतासे कि, हमारे देशवासीभी जो सदासे अहिंसाधर्मके भक्त हैं, आश्चर्य करते हैं। लंदनमें विजेटेरियन सुसाइटीके ९०–१० क्लब ऐसे हैं, जिनमें मद्य, मांसके स्पर्शवर्जित केवल वनस्पति जन्य पदार्थही भोजनार्थ प्रस्तुत रहते हैं, और प्रत्येक क्लबमें ४००–९०० सज्जन भोजन करते हैं!

जब विदेशी अनार्य लोगभी अहिंसाधर्मके दास बनते जाते हैं, और पैरके जूतोंमेंभी चमड़ा नहीं रखना चाहते हैं, तब इस पवित्र भारतवर्षके आर्य कहलानेवाले महाजनोंकी सैकड़ों दूकानोंमें हम देखते हैं कि, निरन्तर हाथोंमें रहनेवाले वही खाते और रजिष्टर चमड़ेके पुट्ठोंसे अपनी शोभा बढ़ाते रहते हैं। और सबसे बड़े खेदकी बात यह है कि, हमारे बहुतसे जैनीभाइयोंकी दूकानोंमेंभी अबतक यह चमड़ेका खर्च कम नहीं हुआ है। क्या वे कभी यह सोचते हैं कि, हमारे वहीखातोंके लिये बेचारे कितने निरपराधी पशुओंके गलोंपर छुरियां चलाई जाती हैं?

दि. जै. प्रां. सभा बंबईने प्रस्ताव द्वारा निश्चय किया है कि, दक्षिणप्रान्तके वास्ते एक परीक्षालय स्थापन किया जाय, परीक्षालयके नियम और क्रम बनानेको छह महाशयोंकी एक सबकमेटी नियत हुई, क्रम नियम बन चुके हैं आगामी अंकमें प्रकाशित होंगे।

अक़लके दुश्मन

जैनगजट अंक ८ तारीख २१-२-०१ में "समझका फेर" शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआ है उक्त लेखमें अकलके दुश्मनने अपनी सारी अकल खर्च डाली है मालूम होता है विकालत करते २ हजरतके मगजमें कुछ खलल हो गया है आपके लेखसे विदित होता है कि, आप जैनमित्र तथा जैनगजटको आंखें बन्द करके बांचते हैं अथवा आश्चर्य नहीं कि, विपक्षी मवक्कलोंको धमकी देनेकी आदतका यहांभी प्रयोग कर डाला होय! परन्तु वकील साहब! यहां कोरी धमकीसे काम नहीं चलता, एसी ऊटपटांग दलीलोंकी यहां दाल नहीं गलनेकी! यद्यपि आपने लेखमें कई जगह अनुचित शब्दोंका व्यवहार करके अपनी पश्चिमी सभ्यताका परिचय दिया है परन्तु हम आपकी दलीलोंका दलीलोंसेही उत्तर देना समुचित समझते हैं और उसके निर्णयका भार विचारशील पाठकोंकी बुद्धिपरही छोड़ते हैं। प्रथमही आपके लेखका सारांश इसप्रकार है "डेपुटेशनपार्टीपरभी पहले आप आक्षेप कर चुके हैं कि, डेपुटेशन प्रायः अंगरेजीके वास्तेही द्रव्य एकत्रित करता है दातारोंको समझकर देना चाहिये परन्तु आपने डेपुटेशनकी खबर न मंगाकर वृथा आक्षेप किया, भला, जहां बड़े २ परोपकारी महाशय मौजूद थे उस डेपुटेशनका द्रव्य केवल अंगरेजीमें कैसे लगता" (समीक्षा) धन्य है आपकी बुद्धिको जरा इतना तो विचारिये कि, डेपुटेशनपार्टी थी महासभाकी, और साप्ताहिक जैनगजट है महासभाका मुखपत्र, भला फिर डेपुटेशनपार्टीने अपना उद्देश्य जैनगजटमें क्यों प्रकाशित नहीं किया, सिवाय इसके जैनमित्रमें कदापि यह नहीं लिखा गया कि, "डेपुटेशन प्रायः अंगरेजीकेवास्ते द्रव्य एकत्रित करता है" किन्तु यह लिखा गया था कि, डेपुटेशनवालोंको उचित है कि, वे अपना अभिप्राय द्रव्यदाताओंपर प्रकाशित करें, यदि अंगरेजी और धार्मिक दोनों विषयोंके लिये द्रव्य एकत्र करना होय तो द्रव्यदाताओंसे यह लिखालेवें कि, हम अपना द्रव्य अमुक विषयमें देते हैं परन्तु आश्चर्य है कि, उसका खुलासा करनेके वास्ते जैनगजटमें एक लेख विद्यारसिक महाशयके नामसे प्रकाशित हुआ, डेपुटेशन तथा महासभाके मंत्रीमंडलने अबतक उक्त विषयमें मौनही धारण कर रखा है, जैनमित्रमें इतनी चिल्लाहट मचनेपरभी अभी उनके कानोंकी डाटें नहीं खुली हैं. वकीलसाहबनेभी इस लेखमें गुल तो खूब मचाया है परन्तु महासभाके मंत्रीके हस्ताक्षरसहित अबतक यह प्रगट नहीं किया कि, डेपुटेशनने जो द्रव्यसंचय किया है वह धार्मिकविद्याके लिये है अथवा अंगरेजीविद्याके लिये, अथवा दोनों विद्याओंके लिये है तो किस २ विभागमें कितना २ तथा आजतक जो भंडार विद्याविभागका महासभामें एकत्र हुआ है उसमें धार्मिकविभागका कितना है और अंगरेजी

विभागका कितना है तथा अंगरेजी विभागमें जो रुपये वसूल हुए हैं वे किन २ महाशयोंने दिये हैं. जबतक इस तौरसे खुलासावार मंत्रियोंके हस्ताक्षरपूर्वक जैनगजटमें प्रकाशित नहीं हो जायगा तबतक कोईभी उत्तर सन्तोषजनक नहीं हो सक्ता, जैनगजटके उपर्युक्त इसही अंकमें जो चंपतरायजी और बनारसीदासजीके हस्ताक्षरसे दो लेख छपे हैं वे पाठकोंको उल्टेभ्रममें डालनेवाले हैं आगे चलकर आप लिखते हैं कि, "सम्पादकमित्रने बा. बनारसीदासके पत्रका अर्थ अन्यथा कैसे समझ लिया" पाठक महाशय बाबू बनारसीदासजीकी रिपोर्ट जैनमित्र अंक ७ में छप चुकी है और उसके अर्थकोभी सब पाठक अच्छी तरह समझ चुके हैं परन्तु विशालबुद्धिसम्पन्न वकील साहब हमारे समझे हुए अर्थको अन्यथा बताते हैं इसलिये अब वकीलसाहबको उसका अर्थ समझाया जाता है सुनिये! बा. बनारसीदासजीने विद्याविभागकी कुल आमदनी करीब ८००) माहवारीके करार दी है परन्तु उसमें उन्होंने यह खुलासा नहीं दिया है कि, इसमें धार्मिकविभागकी आमदनी इतनी, और अंगरेजी विभागकी इतनी है ये देनेही क्यों लगे, उनको तो इसका गोलमालही इष्ट था अस्तु उन्होंने नहीं बताई तो क्या हर्ज है यह बात किसीसे अपरिचित नहीं है विद्याविभागके ध्रुवभंडारमें अनुमान ८००००) रुपये हैं जिसमें अनुमान ५५०००) धार्मिकविभागके हैं और अनुमान २५०००) अंगरेजी विभागके हैं कुलद्रव्यका व्याज ।।) सैकडेसे ४००) मासिक होता है जिसमेंसे २७५) धार्मिकविभागके और १२५) अंगरेजीविभागके हुए, जब बाबूसाहबने आमदनीका तखमीना ८००) मासिक किया है और व्याजकी आमदनी ४००) मासिक है तो इससे सिद्ध होता है कि, मासिक सहायताकी आमदनी ४००) होयगी और उसकाभी विभाग ध्रुवभंडारके अनुसार करनेसे कुल ८००) मेंसे ५५०) धार्मिकविभाग और २५०) अंगरेजी विभागकी आमदनी हुई यदि न्यायपूर्वक खर्चका विभाग करना था तो आमदनीके अनुसारही खर्चका विभाग करना था परन्तु एसा न करके बाबूसाहबने अन्यथाही किया है अर्थात् आपने ८००) के विभाग इसप्रकार किये हैं.

इंगलिश डिपार्टमेंट	५८०)
संस्कृत डिपार्टमेंट	७५)
नोकर तथा मुतफर्रीक	१४५)
जोड	८००

नौकर और मुतफर्रीकके १४५) मूलानुसार डालनेसे इंगलिश विभागके १३१।।) और धार्मिकविभागके १३।। होते हैं उसको दोनोभागोंमें शामिल करनेसे इंगलिशविभागका खर्च ७११।।) और धार्मिकविभागका ८८।।) मासिक हुआ भावार्थ धार्मिकविभागकी आमदनी ५५०) मासिकमेंसे केवल ८८।।) मासिक धार्मिकविभागमें खर्च किये जांयगे अर्थात् महाविद्यालयके मिक्षाके टुकडोंमेंसे ४६१।।) मासिक अंगरेजीविभागमें

खर्च किये जांयगे, कहिये वकीलसाहब अभी समझे कि, नहीं! जिस विचारे महाविद्यालयने भिक्षा मांगमांगकर अपनी आमदनी ५९०) मासिककी करी उसमेंसे ४११॥) मासिक छीनकर अंगरेजीविभागमें देदिये जांय तो कहिये उसपर वज्रपात हुआ कि, नहीं! परन्तु आप तो अकलके दुश्मनही ठहरे आपको यह क्यों सूझने लगी। फिर आगे चलकर आपके लिखनेका सारांश इसप्रकार है.

"सहारनपुरमें मेनेजिंगकमेटीमें यह बात स्पष्टतया निश्चित हो चुकी है कि, स्कूलके व महाविद्यालयके कोष पृथक् पृथक् रक्खे जावेंगे और न महाविद्यालयका नाम लुप्त किया जायगा" (समीक्षा) परन्तु खेद है कि, जो रिपोर्ट बाबूसाहबकी जैनमित्र और जैनगजटमें अक्षरशः छपी है उसमें इसबातका जिक्रतक नहीं है और महाविद्यालयका नामकरणसंस्कारभी "संस्कृत डिपार्टमेंट कर दिया, धन्य है! फिर आप लिखते हैं कि, महासभाने विद्याके तीन विभाग, कालेजकी क्रमावली और उद्देश्य सुनाये वे इसप्रकार थे अर्थात् (१) मुख्यधार्मिक गौणअंगरेजी (२) मुख्यअंगरेजी गौणधार्मिक (३) वैद्यक, ज्योतिष और विज्ञान (समीक्षा) परन्तु जैनगजटमें महासभाकी रिपोर्टभी छप चुकी और महामंत्रीका निवेश और अनुमोदनभी प्रकाशित हो चुका परन्तु कहींभी उपर्युक्त तीन विभागोंका जिक्रतक नहीं, तथा बाबू बनारसीदासने जो रिपोर्ट भेजी उसमें अंगरेजीका तो स्कीम बनाकर प्रगट कर दिया और उसके खर्चके वास्ते ४११॥) मासिक महाविद्यालयसेभी छीन किया तो फिर यह तो बताइये कि, सहारनपुरकी कमेटीने उपर्युक्त दोनों विभागोंको कौनसे गढ़ेमें पटक दिया धन्य है आपकी गूढ़पालिसीको! पाठक महाशय महासभाके नेताओंकी यह गूढ़पालिसी महासभाके नामको कलंकित कर रही है, वकीलसाहबने जो तीन विभागोंका उद्देश्य किया है इसमें सन्देह नहीं कि, तीनोंही प्रकारके विद्यार्थियोंकी जैनियोंमें आवश्यकता है परन्तु एसे कालेजकेवास्ते कमसेकम वीसलाख रुपयेकी आवश्यकता है जिनका एकत्र होना जैनियोंके लिये कष्टसाध्यही नहीं किन्तु असंभव है कदाचित् यह बात संभवभी मानली जाय कि, कोशिश करनेसे इतना रुपया इकट्ठा होसक्ता है तो इसतरह जैनियोंके गाढ़ी कमाईके रुपयोंको व्यर्थ खर्च करना कदापि समुचित नहीं होसक्ता, जब कि, तुमको सरकारी यूनिवर्सिटीके अनुसारही विद्या पढ़ाना है तो क्यों नहीं इसप्रकारका प्रबन्ध करते.

१ जहां सरकारी कालेज होय वहांपर महाविद्यालय खोलना.

२ वैद्यक और ज्योतिषकी क्लास महाविद्यालयमें खोलनी और साइन्स कालेजमें पढ़ाना.

३ महाविद्यालयकेही हातेमें एक बोर्डिंग खोलना.

४ महाविद्यालय सरकारी कालेजके निकट होना.

५ बोर्डिंगमें महाविद्यालय और कालेज दोनोंके विद्यार्थी रखना.

६ कालेजके विद्यार्थियोंको धार्मिकविद्या और सदाचारकी शिक्षा देना.

७ महाविद्यालयमें चार घंटे धार्मिक संस्कृत शिक्षा देना और एक घंटे अंगरेजी तथा एक गणित और वाणिज्यविद्या सिखाना.

इसप्रकारका प्रबन्ध पांच लाखके व्याजसे अच्छीतरह चलसक्ता है और जैनियोंकेवास्ते इसही प्रकारका बोर्डिंग और महाविद्यालय बहुत लाभकारी होयगा और जैसे विद्यार्थी आप वीसलाखके स्कीमसे तयार करेंगे उससे अच्छे विद्यार्थी हम पांचलाखके स्कीमसे तयार करा सक्ते हैं फिर क्या ज़रूर है कि, जैनियोंका पंद्रहलाख रुपया व्यर्थ खोया जाय, उन पंद्रहलाखसे यदि आपके पास होसकें तो भिन्न २ देशोंमें एसेही तीन महाविद्यालय और बोर्डिंग और खोल देना कि, जिससे जैनियोंको बड़ाभारी सुभीता होयगा क्योंकि, एकही स्थानमें समस्त भारतके विद्यार्थी नहीं आसक्ते और इसप्रकारसे जैनियोंके सब अभीष्टफलोंकी सिद्धि हो जायगी, जिसप्रकार कोई २ एकान्ती पंडितव्यवहारसे अरुचि करके केवल संस्कृतका अभ्यास करके राज्य और वाणिज्यविद्यासे वंचित होकर पश्चात्ताप कर रहे हैं उसहीप्रकार बीए. एम. ए. की. डिगरियां हासिल करकेभी पश्चिमी विद्यारसिकोंने धार्मिकविद्यासे वंचित रहकर अपना जन्म नष्ट कर दिया है उपर्युक्तक्रमके विद्यालयसे दोनोंही त्रुटियोंका अभाव होकर जैनियोंमें उन्नतिकी विजयपताका फहराने लगेगी.

हम नहीं समझते कि, वकीलसाहबने मित्रसम्पादकका कोनसा लेख और किस स्थानमें बांचा था कि, जिसमें लौकिकविद्याका सर्वथा निषेध किया होय आश्चर्य नहीं कि, उन्होंने कभी एसा स्वप्न देखा होय और मिरगीके रोगकी तरह अबभी उनको उसकी सनकने घर दबाया होय हमारे लेख तथा व्याख्यान हमेशा इसविषयके होते रहे हैं परन्तु लौकिकविद्याका कभीभी सर्वथा निषेध नहीं किया यदि निषेध किया तो सिर्फ इसबातका कि, जिनपुस्तकोंके तत्व जैनसिद्धान्तसे विरुद्ध हैं वे पुस्तकें वालकोंको तबतक नहीं पढाई जावें जबतक कि, वे जैनसिद्धान्तमें प्रौढ़ न हो जावें परन्तु वकीलसाहब तो अकलके दुश्मनही ठहरे उनसे खेतकी कहोगे तो वे खलिहानकीही सुनेंगे, यह महिमा है शुष्क पश्चिमीविद्याकी ! आजकल जो एकाध पंडिताभाससे वकीलसाहबका पाला पड़ा है और उसके प्रलापको वकीलसाहबने ब्रह्मवाक्य मानलिया है सो वकीलसाहबका भ्रम है, एसा प्रलाप करनेवाले पंडित नहीं हैं किन्तु, विद्याके बैल हैं, धर्ममर्मज्ञ और सदाचारी पंडित कभीभी नादारीके फंदेमें नहीं फंसते, और न कभी वे धनाढ्योंके मुखकी ओर ताकते, प्रत्युत धनाढ्यही सदा उनकी खातिर किया करते हैं और जो धनाढ्य सच्चे पंडितोंकी खातिर करना नहीं जानते उनकेपास कभी सच्चे पंडित

फटकतेभी नहीं, मालूम होता है कि, आपको सच्चे पंडितोंके कभी दर्शनभी नसीव नहीं हुए दो एक खुशामदी टट्टू विद्याके बैलोंसेही आपका पाला पड़ा है, जो सच्चे पंडित बड़े २ ऋषिवाक्योंका मर्म समझनेमें समर्थ हुए हैं भला कभी यह होसक्ता है कि, वे आजीविकाके उपायसे अनभिज्ञ रहें, सिवाय इसके धनकी प्राप्तिमें प्रधान कारण पुण्यकर्मका उदय और लाभान्तरायका क्षयोपशम है, जिनके यह प्रधान कारण मौजूद है वे थोड़ासा प्रयत्न करनेपरभी विपुल धनके स्वामी हो जाते हैं और जिनके प्रधान कारण नहीं है वे बी. ए, एम. ए. तथा बारिस्टरी पास करनेपरभी जूतियां चटकाते फिरते हैं, किसी २ विद्याके बैलको असदाचारी देखकर पंडितोंके नामको धव्वा लगानेमें वकीलसाहबने सारी विकालत खर्च कर डाली है, यदि ये दोष पांडित्यका होता तो उत्कृष्टपांडित्यसम्पन्न सर्वज्ञदेव सर्वोत्कृष्ट असदाचारी होते, परन्तु वकीलसाहब तो अकलके पीछे लाठी लिये फिरते हैं, क्या किसीएक वकीलके भ्रष्ट होकर मद्यमांस भक्षण करनेसे वकीलसाहब यह दोष विकालतका समझेंगे? छिः छिः धिक्कार है एसी बुद्धिको! आगे चलकर आप फरमाते हैं कि, "यावत् इस पेट पापीका कूप न भरे तावत् सर्व धर्मकर्म कर्पूरवत् उड़जाते हैं—सत्य कहा है—ना कुछ देखा ज्ञानध्यानमें नाकुछ देखा पोथीमें, कहै कबीर सुनो भाई सावो जो देखा सो रोटीमें" पाठक महाशय! यहांपर तो वकीलसाहबने हद्द कर डाली आपके दिलका असली गुवार निकल आया आपकी जितनी क्रिया हैं सब रोटीकेहीवास्ते हैं ज्ञानध्यानमें कुछ नहीं रखा है. एक कविके वाक्यकोभी आपने खूबही घसीट डाला है कविका वाक्य है स्तुति निन्दा अलंकारमें, परन्तु वकीलसाहब क्या समझें कि, स्तुति निन्दा अलंकार किस चिड़ियाका नाम है आप तो अपने अभिप्रायमें घसीटना समझते हैं. इसविषयमें एक कविने स्फुटरूपसे कहा है कि, "सद्विद्या यदि काचिन्ता वराकोदरपूरणे। शुकोऽपि लभते भोज्यं हरे राम इति ब्रुवन्॥१॥ अर्थात् जो सच्ची विद्या है तो इस रंकपेटकी क्या चिन्ता है केवल "हरे राम" कहनेवाला तोताभी पेटभर लेता है, परन्तु आपकी दृष्टि इसवाक्यपर क्यों जाने लगी जोंकको स्तनसे लगाओगे तोभी वह दूधको छोड़कर केवल रुधिरकोही ग्रहण करेगी वही हालत वकीलसाहबकी है। प्यारे वकीलसाहब जरा ज्ञानांजनकी सलाई लगाइये कि, जिससे आपके चक्षुकी पक्षपातरूपी धुंध मिटकर साफ हो जाय, मुंसिफ और कलेक्टर बननेका जमाना गया अंगरेजी पढ़पढ़के आजकल वहुतसे महाशय रोजगारके वास्ते तरसते फिरते हैं अंगरेजोंसे नोकरीकी भिक्षा मांगते फिरते हैं एक जगह खाली होनेपर सैकड़ों अर्जियां आकर पड़ती हैं अंगरेजी पढ़कर फिर बाबूसाहब तराजू उठानेमें अपनी हतक समझते हैं कदाचित् दैवयोगसे किसीको सिगनेलरी वगैरा मिलभी

गई तो कोल्हूके बैलकी तरह किसी जंगली स्टेशनपर अपनी मौतके दिन पूरेकर धर्म-शून्य कुमरणवश दुर्गतिके पात्र होते हैं, बिचारे अज्ञानी जीवोंके अनादिकालसे विषसमान विषयोंका संस्कार लग रहा है वे धर्मके स्वादसे बिलकुल अपरिचित हैं उनको जबरन् धर्मामृत पिलाना धर्मात्माओंका मुख्य कर्त्तव्य है, इसही धर्मविद्याके साथ पहले कहे अनुसार दो घंटे राज्य, गणित, और वाणिज्यविद्याभी पढ़ाइये तो वे विद्यार्थी कदापि काल आजीविका वंचित नहीं रह सक्ते उन बिचारोंको जजी और मुंसिफीकी मृगतृष्णामें फसाकर क्यों उनके जन्मको नष्ट करते हो, आजीविकाके उपायोंमेंभी वाणिज्यको सर्वोत्कृष्ट कहा है नौकरीके चक्करकी उपेक्षा यदि वाणिज्यकी उन्नतिकी तरफ झुकोगे तो वाणिज्यप्रिय जैनसमाजका बहुत कुछ उपकार होगा, उनको धर्म और वाणिज्यकी उन्नतिमें लगाओ केवल नौकरीकी घानीमें चलाकर उनके उभयलोक नष्टमत करो, महासभाने भारतवर्षके जैनियोंकी उन्नति करनेका बीड़ा उठाया है, सो प्यारे वकीलसाहब उनकी असली उन्नति जबही होयगी जब उनके धर्म और उनके कर्मकी उन्नति करोगे, उनका धर्म है जैनधर्म, और उनका कर्म है वाणिज्य, बस वाणिज्यमें जितनी राजविद्याकी आवश्यकता है उतनी विद्यासे चिठी और तारका मतलब समझनेसेही वाणिज्यका काम चलसक्ता है पश्चिमीविद्यासे जैनियोंकी उन्नति नहीं होगी किन्तु पश्चिमियोंकी होगी, यदि उनके पदार्थ विज्ञान जानेविना उन्नतिका मार्ग आपकी समझसे रुक रहा है तो अभी वर्तमानमें जो जैनियोंमें बड़े २ प्रोफेसर मौजूद हैं उनको चाहिये कि, उनके पदार्थ विज्ञानके सारांशको सरल देशभाषामें अनुवाद करके प्रकाशित करदें और उस पुस्तकको महाविद्यालयकी किसी उच्चकक्षाके पठनक्रममें रखदें तो बस है जरा ज्ञानचक्षुको खोलकर जापानियोंकी तरफ देखिये उन्होंने स्वल्पकालमें जो इतनी उन्नति करी है उसका कारण केवल यही है कि, वे विज्ञानको अपनी देशभाषामें विद्यार्थियोंको सिखाते हैं जिससे बहुत जल्दी विद्यार्थी तयार हो जाते हैं, कृपानाथ! पहले विद्यार्थियोंको महाविद्यालयकी उस कक्षातक पढाओ जहांपर वह धार्मिकविद्यामें व्युत्पन्न होकर आगे किसी विषय विशेषमें प्रवेश करनेके योग्य हो जांय इतनी विद्या पढ़नेपर उसकी रुचिके अनुसार किसी विषयविशेषका अभ्यास कराओ, जिसको अंगरेजोंकी डिगरी का सार्टिफिकट लियेविना उन्नतिका मार्ग नहीं सूझता है उसको अपने बोर्डिंगमें रखकर सरकारी कालेजमें पढाओ, परन्तु व्यर्थही सरकारी कालेजकी नकलरूप जैनकालेज बनाकर जैनियोंके लाखों रुपये पानीमें मत वहाओ, इतना होनेपरभी अगर अकलके दुश्मनोंको नहीं सूझै तो जाने दो, और उनको अंगरेजी जैनकालेज बनाने दो, परन्तु महाविद्यालयके फंडकी तरफ कृपादृष्टि रखिये तथा जो भाई अपना द्रव्य

जिसफंडमें देवै उसही फंडमें जमा कीजिये तथा महासभाकी तरफसे जो रसीद दी जाय उसमें एक कालम इस बातकाभी छपै कि, आपका रुपया इसफंडमें जमा किया गया है और महासभाकी जो रिपोर्ट निकलै उसमें साफ तौरसे यह दिखाया जाय कि, अमुक २ फंडमें अमुक २ महाशयोंने इतना २ रुपया दिया है अंगरेजी फंडका खाता और उसका हिसाब आमदनी और खर्चका बिलकुल जुदा रक्खा जाय जबतक एसी कार्रवाही नहीं होयगी तबतक यह हलचल कदापि नहीं मिटसकती. आप महाविद्यालयके नामपर अंगरेजी कालेज शब्दकी साया डालनेसे जैनियोंको माफ कीजिये, उसका जो नाम उसके मातापिताओंने रक्खा है उसको उसही नामसे प्रसिद्ध रहने दीजिये, अन्तमें वकीलसाहबसे प्रार्थना है कि, कर्त्तव्यके अनुरोधसे हमको यह उत्तर लिखना पड़ा है यदि प्रमादवश इसमें कोई कठोर शब्द आगया होय तो हमको मन्दबुद्धिबालक समझकर आप अपनी स्वाभाविक उदारतासे क्षमा करना. अलंविस्तरेण.

जैनहाईस्कूल सहारनपुर

लाला बद्रीदासजीके सभापतित्वमें ता. २२ फरवरी सन १९०६ को एक सभा हुई जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

१. ७ जनवरी सन १९०६ का स्वीकार किया हुआ **प्रस्ताव नं० चौथा** " इस हाईस्कूलमें फिलहाल दो डिपार्टमेन्ट होंगे १ इंगलिश डिपार्टमेन्ट २ संस्कृत डिपार्टमेन्ट, संस्कृतडिपार्टमेन्टकी मंशा पंडितलोग पैदा करै और इंगलिश डिपार्टमेन्टकी मन्शा यूनीवरसिटीके अनुसार अंगरेजीकी शिक्षा देना होगी लेकिन अंग्रेजी पढ़नेवाले जैनविद्यार्थियोंको धार्मिक शिक्षा अवश्य लेनी होगी " । **इसप्रकार बदला जाता है** ।

जैनमहाविद्यालयके दो डिपार्टमेन्ट होंगे एक अंग्रेजीडिपार्टमेन्ट और दूसरा संस्कृत डिपार्टमेन्ट, अंग्रेजीडिपार्टमेन्टका नाम जैन ऐंगलोसंस्कृतहाईस्कूलसहारनपुर होगा और इसकी पढ़ाई यूनीवरसिटीके अनुसार होगी लेकिन संस्कृत पढ़ना आवश्यकीय होगा तथा एक घंटा मजहवी तालीमभी पढ़ना होगी जैनमहाविद्यालयके संस्कृतडिपार्टमेन्टकी पढ़ाई दिगम्बरीय परीक्षालयके क्रमके अनुसार होगी ।

२. तारीख ३१ दिसम्बरको कमेटीमें यह **प्रस्ताव नम्बर २** " कि, जैनपाठशाला सहारणपुर और नीजदीगर पाठशालायें जैनकालिजकी शाखा होंगी यानी जैनकालिजके लिये तालिब इल्म तयार करैंगी " । **इसप्रकार तवदील किया जाता है.** कि, जैनपाठशाला सहारनपुर और दीगर पाठशालायें जैनमहाविद्यालयके संस्कृत डिपार्टमेन्टकी शाखें होंगी और लड़के तय्यार करके जैनमहाविद्यालयके संस्कृत डिपार्टमेन्टको आलातालीमके लिये भेजेंगी ।

३. जैनमहासभाकी तरफसे जैनमहाविद्यालयका इंतजाम उस लोकलकमेटीके सुपुर्द होगा जो जैन बिरादरी सहारणपुरने

सहारणपुरमें कायमकी है उस लोकलकमेटीका नाम जैनमहाविद्यालय मेनेजिंगकमेटीसहारनपुर होगा. अलबत्ता महासभाकी मेनेजिंग कमेटीको हरवख्त इख्तयार होगा कि, जैनमहाविद्यालयमेनेजिंगकमेटीसहारनपुरकी किसीभी तजवीजको घटा बढ़ा सकेगी।

४. इसबातके किसी सबूत देनेकी आवश्यकता नहीं है कि, जो रुपये २७ दि० सन १९०९ से प्रथम जैनमहाविद्यालय फंडमें जमा हुवा था वह जैनकालेजके नाम और मन्शासे हुवा था. यानी अंग्रेजी और संस्कृत दोनोंकी आला दरजेकी तालीमके लिये हुवा था लेकिन उस रुपयेका सूद फिलहाल इतना नहीं है कि, उससे दोनो तालीम हो सके तथा यहभी जरूरी है कि, अव्वल संस्कृत और मजहवी तालीमका इंतजाम किया जाय इसलिये यह मुनासिब है कि, वह सूद सिर्फ महाविद्यालयके संस्कृतडिपार्टमेन्टमें खरच किया जावे और जो रुपया २७ दिसम्बर सन १९०५ के पश्चात् एकत्र हुवा है या होवेगा वह महाविद्यालयके अंग्रेजी डिपार्टमेन्ट जैनऐंगलोसंस्कृतहाईस्कूलसहारनपुरके लिये जमा किया जावे जबतककि वह स्कूलकी अंग्रेजी संस्कृत मजहवी तालीमके लिये काफी न हो, इसके अलावा दातारकी इच्छापर निर्भर है।

५. चूंकि लाला जुगमंदिरदासजी साहिब बेंकर व रहीस खजांची इस महाविद्यालयके किये गये हैं सो उनके यहां अलग २ दो खाते होना चाहिये यानी एक जैनमहाविद्यालय फंडका और दूसरा जैन ऐंगलोसंस्कृत हाईस्कूलसहारनपुरफंडका और जो रुपया २७ दिसम्बर सन १९०५ से प्रथम हुवा है वह जैनमहाविद्यालय फंडके नामसेही जमा रहे और आयन्दा जो रुपया खास मजहवी तालीमके लिये आवे वहभी इसी फंडमें जमा होना चाहिये बाकी सब रुपया जैनऐंगलोसंस्कृतहाईस्कूलसहारनपुरके नामसे जमा हो।

६. जैन ऐंगलोसंस्कृतहाईस्कूलसहारनपुरका खाता दो भागोंमें तकसीम होगा एक मुस्तकिल जिसका सिर्फ सूद खर्च होगा दूसरा गैरमुस्तकिल यानी चालू जिसका असल खर्च होगा लेकिन समयानुसार मुस्तकिल खातेसे कर्ज लेकरभी खर्च किया जा सकता है और इस गरजसे गैरमुस्तकिल खातेमें मुस्तकिल खातेका रुपया जमा कराया जा सकता है। मुस्तकिल खातेमें रकमें निम्नलिखित होगीं.

(अ.) डिप्यूटेशनका रुपया. (ब) सालाना चंदा देनेवालोंका रुपया (स) एक मुश्त रुपया, बाकी कुल आमद चालूखातेमें होगी

७. महाविद्यालयके खर्चकेवास्ते बजट मंजूर शुदाके अनुसार खजांचीके यहांसे २५०) रुपये माहवार तक खर्च करनेका अधिकार सेक्रेटरीको होगा. और वर्तमानमें हाईस्कूल फंडसे १००) रु० माहवारतकका इख्तयार सेक्रेटरीको हो, जबतक कि, स्कूल खुले अगर किसी खास जरूरतके लिये अधिक रकमकी आवश्यकता हो तो कमेटीकी मंजूरीसे खरच करना होगा।

२६-२-०६ } बाबू बनारसीदास. एम. ए. एल. एल. बी. वकील व मंत्री मेनेजिंग कमेटी सहारनपुर

(प्रेरित पत्रोंके हम उत्तरदाता नहीं हैं)

श्रीक्षेत्र दहिगांव येथील अव्यवस्था

रा. रा. जैनमित्रचे संपादक यांस.

वि. वि. श्रीक्षेत्र दहिगांव जिल्हा सोलापूर येथील जैनमंदिरातील पुस्तकें पूर्वी जितकी होती त्यांतून बरींच पुस्तकें नाहींशी झालीं आहेत. कित्येक तर वाळवी लागून कुजून गेलीं आहेत. फंडाची रक्कम फलटण, म्हसवड, बारामती वगैरे गांवच्या पंचापासी जमा आहे असें ह्मणतात परंतु त्याचा हिशेब प्रसिद्ध होत नसल्यामुळें काय आहे हें समजण्यास मार्ग नाहीं. पंचापैकीं कोणाचेही ह्या गोष्टीकडे लक्ष आहेसें दिसत नाहीं. ह्यामुळें बरीच अव्यवस्था दिसून येते. हल्लीं तथें नाहलचंद मोदी नावचे दहिगावचे ग्रहस्थ ज्यांच्यापाशीं किल्या कुलपें आहेत व व्यवस्था ठेवतात. ते अगदी वृद्ध झाले आहेत त्याच्या हातून कांहीं काम होत नाहीं तेव्हां दुसऱ्याच्या स्वाधीन व्यवस्था करणे जरूर दिसते व देवळांत काय काय शिल्लक आहे हें पंचांनीं जाऊन स्वतः डोळ्यांनीं पाहावें व मोजदाद करून सह्या कराव्या. ह्मणजे कांहीं व्यवस्था लागेल. नाहींतर कांहीं दिवस गेल्यानें शिखरजीसारखा मामला होऊन जाईल असें भय वाटतें. इकडे पंचमंडळींनीं व तीर्थक्षेत्र कमेटीने लक्ष द्यावें कळावें ता० १७ फेब्रुवारी सन १९०६.

एक दक्षिणी जैन हूमड़

हर्ष हर्ष महाहर्ष!

पाठकों आज हमारी न्यायशीला गवर्नमेंन्टने दि. जैनप्रांतिकसभाके सभापति दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंदजीको J. P. जस्टिस आफ पीसकी पदवी प्रदान् की है। इसकेलिये हम गवर्नमेंन्टको हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

विद्वज्जन सभाके सभ्योंकी सेवामें पत्र।

सुभाषित रत्नसंदोहके बाबत जो एक लेख जैनमित्र अंक ५–६ के पृष्ट ९४ में छपा है कि, सुभाषित रत्नसंदोह जिसकी, बाबा-दुलीचंदजीने वचनिका बनवाई है उसमें मूलग्रन्थके बहुतसे श्लोक निकाल दिये हैं. इसीके निर्णयार्थ विद्वज्जन सभाके सभासदोंसे प्रार्थना है कि, आप उपर्युक्त लेखके विषयमें अपने २ अभिप्राय हस्ताक्षर सहित प्रसिद्ध करैं। भवदीय

हीराचंद नेमचंद

महाविद्यालयका अंतिम परिणाम

न्याय दिवाकर पंडित पन्नालालजी जारखी निवासी सहारनपुरसे लिखते है कि, सहमा समानीत महाविद्यालय इस समय छात्रगणोंसे निःशेष शून्य हो गया है व्यवस्थापकोंकी राजविद्या स्वराज नष्ट करेगी संरक्षण करना एसे समयमें आवश्यक है।

एक विना नामका पत्र सहारनपुरसे आया है जिसपर डाकखानेकी मोहर सहारनपुरकी ता. १५।३।०६ की है लिखा है कि, ता. १० मार्चमें महाविद्यालयपर वज्रपात सत्यही पड़ गया महाविद्यालयके सब विद्यार्थी चले गये और अपने निजस्थानपर पहुंच गये। विद्यार्थियोंके कथनसे प्रतीत होता था कि. वापिस न लौटेंगे यह दशा देखकर छाती फटती है।

शोकाकुल कोई एक जैनी.

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

[illegible]ौर सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम [illegible] शुक्ल १ श्रीवीर सं० २४३२। अंक ११

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक =) पंक्ति।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकोलिये जबावी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

भूलसंशोधन

जैनसिद्धान्त पृष्ठ ५ कालम २ पंक्ति १२ ज्ञान दो प्रकारका है......................
पृष्ठ ६ कालम १ पंक्ति ८ में "वाचकशब्दको द्रव्यनय कहते हैं" यहांपर्यंतके स्थानमें इसप्रकार होना चाहिये

उस अनेकान्तात्मक वस्तुके अधिगमका हेतु पूर्वाचार्योंने दो प्रकार वर्णन किया है १ स्वाधिगमहेतु २ पराधिगमहेतु, स्वाधिगमहेतु ज्ञानस्वरूप है उसके दो भेद हैं १ प्रमाण २ नय, पराधिगमहेतु वचनस्वरूप है. वह वचनस्वरूप वाक्यभी दो प्रकारका है १ प्रमाणात्मक २ नयात्मक, जिस वाक्यसे एक गुणद्वारा अभिन्नरूप समस्त वस्तुका निरूपण किया जाता है उस वाक्यको प्रमाणवाक्य कहते हैं इसहीका नाम सकलादेश है. और जो वाक्य अभेदवृत्ति और अभेदोपचारके आश्रयविना वस्तुके किसीएक धर्मविशेषका बोधजनक है उसको नयवाक्य कहते हैं इसहीका नाम विकलादेश है यहां इतना विशेष जानना कि, उस धर्म विशेषके बोधजनक शब्द और उस धर्मको द्रव्यनय कहते हैं और उस धर्म विशेषके ज्ञानको भावनय कहते हैं

उपदेशककी आवश्यकता

दि. जैन. प्रा. सभा बम्बईके लिये एक जैनी उपदेशक जो कि, हिन्दी मराहटी, गुजराती आदिका ज्ञाता होकर जैनधर्म सिद्धान्तोंकाभी जानकार होवे चाहिये, वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा. विनयपत्र इस पतेसे आवे।

सेठ हीराचंद नेमीचंद शोलापूर

श्रीवीतरागायनमः

चैत्र शुक्ल १ श्रीवीर संवत् २४३२. | वर्ष ७. अंक ११

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते । एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सभापतिको जे. पी.

हमारे सभापति दानवीर शेठ माणिकचंदजी हीराचंद जवेरी बम्बई निवासीको सरकारकी ओरसे जे. पी. की पदवी मिलनेके हर्ष समाचार गतांकमें प्रकाशित हो चुके हैं, आज संस्कृत विद्यालय बंबईके लालाराम विद्यार्थी रचित संस्कृत कविता आपकी भेटकी जाती है. हमारे जातिहितैषी सेठजीको सरकारने जे. पी. की पदवी प्रदान करके अपनी गुणज्ञता, निष्पक्षता और उदारताका परिचय दिया है. सहयोगी जैनने उक्त विषयपर हर्ष प्रकाशित करते हुए व्यंगरूपसे कुछ कटाक्ष करके अपनी संकुचित नीतिका परिचय दिया है. हमको सहयोगीके एसे वर्तावपर खेद होता है. धर्मशालाके संबंधमेंभी एकवार एसा होचुका है. आशा है कि, वह आगेसे एसे मौकेपर सावधानीसे लिखा करैगा.

॥ श्री ॥

श्रुत्वार्पितां भूपवरैरुपाधिं
माणिक्यचान्द्रीं नरभूपमान्याम् ।
नद्योदिशोवारिधराः सुरम्याः
दिक्स्थायिनोजैनजनाः प्रहृष्टाः ॥१॥

माणिक्यरोचिः स्वयमेव रम्या
चन्द्रस्य कान्तिः सुखदा सुशुभ्रा ।
भास्येव तभ्यामनिशं ततोऽद्य
जैनैर्नृपैर्मान्यतयाधिकस्त्वम् ॥ २ ॥

विद्याप्रदानादिबहुप्रकारै
रुपग्रहैश्चोपकृता हि जैनाः ।
सर्वोपकारं परमद्य वीक्ष्य
सम्राडपि त्वां स्मरति प्रहृष्टः ॥ ३ ॥

कीर्त्तिस्त्वदीया जगति प्रसिद्धा
श्रुता न चेत्कर्जनसर्पराजैः ।
तथापि तां कर्णसुधाप्रदात्रीं
कथं न श्रूयात्समनस्कोपिन्टो ॥ ४ ॥

वदान्यशूरोजिनधर्मनेमिः
विद्यार्थिवर्गैकसहायभूतः ।
चिरायुषं धर्मपरायणं त्वं
धर्मप्रसादेन लभस्व पुत्रम् ॥ ५ ॥

प्रमुदितो विनीतश्च लालाराम श्छात्रः।

बम्बईमें श्रीमान् शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीकी पुत्री विदुषीमगनबाईने एक श्राविकाश्रम खोलनेका विचार किया है। उसमें विधवा वा सधवा कुलीन जैनस्त्रियां रहकर विद्याभ्यास कर सकेंगी, और उक्त बाईकी ओरसे भोजनादिककी परवरिश पा सकेंगी। बाईसाहेबका विचार है कि, ऐसी स्त्रियोंको ३ वर्ष धर्मशास्त्रादि पढ़ाकर जैनियोंकी कन्या पाठशालायोंकेलिये दश पांच अध्यापिका तयार कर दी जावें। आजकल जैनियोंमें स्त्री शिक्षाकी आवश्यकता अधिक है, जिसकी पूर्ति धर्मशिक्षा पाई हुई कुलीन स्त्री अध्यापिकाओंकेविना नहीं हो सकती, यदि अध्यापिका तयार हो जावेंगी, तो सहजही दो चार कन्या पाठशालायें स्थापित हो जावेंगीं, और फिर एक प्रकारसे स्त्रीशिक्षाका मार्ग खुल जावेगा। सो विदुषीबाईका यह विचार सर्वथा श्लाघनीय है! आशा हैं कि, श्राविकाश्रम बहुत जल्दी खुल जावेगा।

दक्षिणमहाराष्ट्रसभाकी ओरसे **जिनविजय** नामक एक मराठी मासिकपत्र निकलता है, जिसके सम्पादक श्रीयुत अण्णाजी बाबाजी लठ्ठे एम. ए. हैं। इस वर्षके महासभाके सहारणपुरवाले अधिवेशनको स्वयं आंखोंसे देखकर आपने जिनविजयमें एक नोट किया है, उसको हम अपनी भाषामें पाठकोंको सुनाते हैं, और यह बतलाना चाहते हैं कि, महासभाके आधुनिक प्राबन्धिक पालिसीके विषयमें एक निष्पक्ष ग्रेज्युएटकी क्या सम्मति है। "उत्तरहिंदुस्थानके जैनीभाई भाविकपनेमें "अति" कर डालते हैं, इसका एक उदाहरण मथुरा महासभाकी वर्तमान व्यवस्था देखनेसे मिलसकता है। महासभासे वस्तुतः सम्पूर्ण जैनियोंका सम्बन्ध है, परन्तु उसके संचालक लोग निकम्मे बाग्जालके छलसे कार्य आरंभ करके अन्तमें उसका विपर्यय कैसी विलक्षणतासे कर देते हैं, यह देखकर कहना पड़ता है कि, भारतवर्षीय जैनसमाज गाढ़ निद्रामें पड़ा हुआ है। "**मथुरा महाविद्यालय**" जैसा कि सब लोग समझते हैं, जैनधर्मके पुनरुज्जीवनका आदिस्थान व जैनविद्याका मुख्य सिंहासन था, परन्तु इस विद्यालयके कुछेक फंडको कितनेही लोगोंने **जैनकालेज** ऐसा नाम देकर इस नामपरसे उक्त विद्यालयके फंडको उन्होंने जैनकालेज फंड बनाया है! पीछे **कालेज** शब्दका अर्थ अंग्रेजी विद्याका मुख्य सिंहासन ऐसा होने लगा और अब उस कालेज फंडसे अनुमान ५०) सैकड़े एक हाईस्कूलमें खर्च करनेका प्रस्ताव हुआ! अर्थात् महाविद्यालयके फंडमेंसे अब केवल आधा रुपया संस्कृत विद्याकेलिये खर्च किया जावेगा, बाबू बनारसीदासजीके पत्रसे ऐसाही प्रतीत होता है! इस प्रकार इस फंडका विपर्यय होनेसे यह सिद्ध होता है कि, महासभाके सभासद घोर निद्रामें मूर्छित हो रहे हैं। हमको अंग्रेजी शिक्षाकी आवश्यकता है, परन्तु उसकेलिये हाईस्कूल खोलनेकी आवश्यकता क्यों बतलाई जाती है, यह स-

मझमें नहीं आता। सरकारने हमारेही द्रव्यसे जो स्कूल व कालेज खोले हैं, उनसे अंग्रेजी पढ़ना यह हमारा हक्क है, फिर उस हक्कको छोड़ देनेकी क्या जरूरत है? सरकारी स्कूलोंमें जैनधर्मके विरुद्ध कुछ विषय जैसे कि, अंग्रेजी शिक्षाक्रमकी पुस्तकोंमें ईश्वरने संसारको उत्पन्न किया, आदि पढ़ाये जाते हैं, कदाचित् इस हेतुपर जोर देकर महासभाके मुखिया लोग हाईस्कूलकी आवश्यकता सिद्ध करते हैं, परन्तु बेचारोंके नवीन जैनहाईस्कूलमेंभी सरकारी यूनिवर्सिटीके क्रमानुकूलही शिक्षा दी जावेगी, इसपर उनका ध्यानही नहीं है! वास्तवमें देखा जावे, तो ऐसा स्वतंत्र हाईस्कूल व कालेज खोलना व्यर्थ खर्चमूलक है, इसमें शंका नहीं है। परन्तु यदि किसीको उसीमेंही लाभ सूझता हो, तो वह उसकेलिये खुशीसे द्रव्य एकठ्ठा करे, परन्तु लोगोंके भोलेपनाका लाभ लेकर अर्थात् भोले लोगोंको फंसाकर महाविद्यालयको हाईस्कूलका स्वरूप देना हमारे मतसे अनुचित है। इस हाईस्कूलसे "**दिग्गज जैन पंडित**" तयार करनेकी हमारे तरुण हिंदुस्थानी भाइयोंकी कल्पना अत्यन्त भोली व विवेकशून्य है, यह सहजही दिखलाया जा सकता है। अलीगढ़ मुहम्मदन कालेजसे आजतक जितने मुल्ला व काजी निकले हैं, उतनेही इस जैनहाईस्कूलसे पंडित व आचार्य तयार होनेवाले हैं।

जिन्हें संस्कृतभाषाकी हवाभी नहीं लगी है, उन्हें धर्मके कोरे नामसे भोले भाइयोंके आगे गुहार मचाकर फंड खोलना, विद्यालयके संस्कृत पढ़नेवाले बालकोंको आगे करके द्रव्य एकत्र करना और "**धर्म! धर्म!**" कहके कंठ सुखाकर निकाले हुए द्रव्यका व्यय आखिर हाईस्कूल खोलनेमें करना, यह न्यायका, सत्यताका अथवा नेकीका काम है, ऐसा निष्पक्षपाती मनुष्य कभी स्वीकार नहीं करेगा! जान पड़ता है कि, विद्यालयके उद्देशोंमें धर्मशिक्षणको पहले स्थान देकर महासभावालोंने अब लोगोंकी चोटीपर हाथ फेरा है। गत सहारणपुरके अधिवेशनमें अंग्रेजी व संस्कृतका फंड पृथक् २ रखना प्रस्तावमें नहीं, तोभी जबानी निश्चय हुआ था, व अखीरमें यह भरोसा दिया गया था कि, दोनों फंडोंके खर्चका अन्दाजा मैनेजिंग कमेटी निश्चित करेगी। इतनाही नहीं, किन्तु हाईस्कूलकी व्यवस्था महासभाकी व्यवस्थापक कमेटीके स्वाधीन है, यह अभीतक कहा जाता है। परन्तु वर्तमानमें प्रगट किया हुआ बजट महासभाकी व्यवस्थापक कमेटीमें पेश किया गया है क्या?"

जिनविजयके उक्त नोटसे एक बात औरभी विचित्र विदित हुई कि, उन्हें बाबू बनारसीदासजीने ऐसा पत्र लिखमारा है कि, ९०) सैकड़ा इंग्रेजी शिक्षामें खर्च किया जावेगा! जैनमित्रमें जो बजट छपाया गया है, वह कुछ कहता है, जैनगजटमें जैन एंग्लो ओरियण्टल हाईस्कूलके प्रस्ताव छपे हैं, वे अपनी तान अलग लगाते हैं, "**खेद!**

खेद!" का नोटिस कुछ तीसरीही बात कहकर रोता है, और छट्ठे महाशयको यों "अर्घ अर्घ" की बात लिखी जाती है, सो यह ज्याइंटजनरलसैक्रेटरी साहबकी पालिसी शेक्सपियरके **भूलभुलैया** नाटककी तरह बड़े २ विचित्र रंग दिखलाकर हम लोगोंको आश्चर्यमें डाल रही है।

विलायती शक्करका उपयोग करनेसे अनेक प्रकारकी बीमारियां पैदा होती हैं। इस विषयमें एक यूरोपियन सज्जन कहते हैं कि, "यह खून और हड्डियोंके कोयलोंसे साफ की हुई शक्कर मिट्टीसेभी सस्ती बिकने लगे अथवा मोतीसेभी महगी हो जावे, परन्तु मैं अपनी जिन्दगीमें उसे कभी नहीं खाऊंगा।" क्या हमारे जैनीभाई देशकी बढियासे बढ़िया पौष्टिक और खूनको बढ़ानेवाली शक्करके मिलते हुए इस चांडालिनी विलायती चीनीका खाना अबभी नहीं छोड़ेंगे?

श्रीम्मेदशिखरजीकी बीस पंथी कोठीका झगड़ा अब प्रायः सब प्रकारसे निर्मूल हो चुका है, और थोड़ेही दिनोंमें वहां जो सरकारकी ओरसे रिसीवरका प्रबन्ध है, वह एक सर्व देशीय जैनी ट्रस्टियोंके हाथमें आ जावेगा। और तब जैनियोंकी सच्ची कमाईके द्रव्यका सदुपयोग होने लगेगा। यह बड़े हर्षकी बात है।

सम्मेदशिखरजीके मुकद्दमोंमें द्रव्य पानीकी तरह बहाया गया है, यह सब भाई जानते हैं, इसलिये इस खातेके नामें बहुत कुछ रुपया पड़ा हुआ है। तीर्थक्षेत्र कमेटीके मंत्री जवेरी चुन्नीलालजी महाशयने हमको लिखा है कि, इंदौर, भावनगर, आदि अनेक स्थानोंकी पंचायतियोंमें शिखरजीकी सहायताकेलिये बहुत कुछ रुपया जमा किया गया था, जो उस समय आवश्यकता न होनेसे नहीं मंगाया गया। परन्तु अब वह रुपया जहां जहां एकट्ठा हो, वहांके भाइयोंको कृपाकरके भेज देना चाहिये, जिसमें यह नामेंका रुपया बराबर हो जावे। अनुमान ९,०००) इस खातेमें पड़ा हुआ है। भाइयोंको इस ओर ध्यान देकर उसे पूरा कर देना चाहिये, और सम्मेद शिखरजीकी नाईं अन्य तीर्थस्थानोंकाभी प्रबन्ध सुधारनेकी कोशिश करनी चाहिये।

महासभाके मुखिया सज्जनोंने बड़ी कठिन चुपकी साधी है। इतना आन्दोलन होनेपरभी महाविद्यालयके मूल द्रव्यके विषयमें उनकी ओरसे कुछ प्रकाशित नहीं किया गया। सारे समाजकी इस प्रकार अवहेलना करना और उसकी शंकाओंको निवारण न करके "कुल्हियामें गुड़ फोड़ना" इस नीतिका अवलम्बन करके हम नहीं समझते कि, उन्होंने क्या लाभ सोचा है। हम लोगोंको इसका अर्थ क्या समझना चाहिये? क्या यही कि, जो कुछ हम करते हैं, वही ठीक है, अन्य सब बकनेवाले मूर्ख हैं!

महासभा और विद्याविभाग

प्यारे पाठको! अवनतिके समुद्रमें गोते खाती हुई जैनजातिने उन्नतिद्वीपमें जानेकी अभिलाषासे महासभारूपी नौकाका आश्रय लिया था और चतुर खेवटियोंकी चतुराईसे आशा थी कि शीघ्रही अपने अभीष्ट स्थानपर पहुंच जायगी, परन्तु कुछ दिनसे वायुके वेगने प्रतिकूलता धारण कर उक्त नौकाको उन्नतिद्वीपके मार्गसे च्युत करके एक म्लेच्छद्वीपके पथपर पटक दिया है. उक्त वायुकी एक विलक्षण शक्तिने खेवटियोंकी बुद्धिपर एसा असर डाला है कि, वे इस म्लेच्छद्वीपके पथको ही उन्नतिद्वीपका मार्ग और म्लेच्छद्वीपको उन्नतिद्वीप समझने लगे हैं. इस नौकाके प्रारंभकालमें जो खेवटिये नियत किये गये थे उनमेंसे कितनोंहीने तो अपना पद त्याग दिया और कितनोंहीने उपेक्षा धारण कर ली है और आजकल खेवटियोंका बहुभाग उन महाशयोंमेंसे है जो स्वयं एकबार म्लेच्छद्वीपकी हवा खा आए हैं और वहांकी हवा उनके मगजमें अच्छी तरह समा गई है, अब वे लाख समझानेपरभी नहीं समझते हैं और जबरन् उक्त नौकाको म्लेच्छद्वीपकी ओर घसीटे लिये जाते हैं. यदि शीघ्रही यह जैनजाति वर्तमान खेवटियोंकी जगह दूसरे खेवटिये नियत नहीं करैगी तो संभव है कि, उसकी नौका अभीष्टस्थानसे वंचित रहकर म्लेच्छद्वीपमें जा फसै और किसी नई आपत्तिके चक्करमें पड़जाय.

यह जीव चिरकालसे विकराल कालके चक्रमें फंसकर अनंतानंत पंचपरावर्तन पूरे करता हुआ चतुर्गतिमें परिभ्रमण कर रहा है अनेक योनियोंमें भ्रमण करते २ दैवयोगसे मोक्षके अद्वितीय उपाय, चिंतामणिरत्न सदृश, दुर्लभ नरभवको पाकर मनुष्यका मुख्य कर्त्तव्य यही है कि, स्वयं मोक्षमार्गका साधन करै तथा दूसरोंको मोक्षमार्गमें लगावै. जो महानुभाव इस गार्हस्थ्य जंजालको जलांजुलि देकर इतर तीन आश्रम तथा मुनिपदका शरण ग्रहण करते हैं वे अपने कर्त्तव्यका पालन सुगमतासे कर सक्ते हैं, परन्तु आजकल इन तीन आश्रम और मुनिपदकी इतनी विकलता (कमी) हो गई है कि, उसको अभावसदृश कहनेमें कोई अत्युक्ति नहीं होगी इसलिये इनके विषयको गौण करके आज गृहस्थाश्रमियोंकेही विषयमें कुछ लिखनेका विचार है.

गृहस्थाश्रममें मोक्षमार्गका साधन इतर तीन आश्रम तथा मुनिपदकी तरह नहीं हो सक्ता क्योंकि, गृहस्थके पीछे कुटुम्ब पोषणका प्रबल ग्रह लगा हुआ है, इसलिये इसको मोक्षमार्गरूप धर्मसाधनके साथ २ अर्थ और कामकाभी साधन करना पड़ता है अतएव पूर्वाचार्योंने धर्म, अर्थ और काम इन तीन पुरुषार्थोंका साधनही ग्रहस्थका मुख्य कर्त्तव्य कहा है. यद्यपि इन तीन पुरुषार्थोंका साधन गृहस्थका मुख्य कर्त्तव्य है तथापि जो इनका साधन यद्वातद्वा स्वच्छन्दवृत्तिसे करते हैं वे अभीष्टफलको प्राप्त नहीं होसक्ते और इसही

कारण आचार्योंने इनके साधनकी विधि प्रतिपादन करनेके लिये लक्षावधि ग्रन्थ रच-डाले हैं. वादीभसिंहस्वामीने इस विधिके सारका प्रतिपादक एक श्लोक रचा है जो पाठकोंके अवलोकनार्थ यहां लिखा जाता है

श्लोकः—परस्पराविरोधेन
त्रिवर्गो यदि सेव्यते
अनर्गलमदःसौख्यम-
पवर्गो ह्यनुक्रमात्

अर्थात् जो गृहस्थ धर्म अर्थ कामके त्रिवर्गका परस्पर अविरुद्धतासे सेवन करता है वह साक्षात् ऐहिक सुखको और अनुक्रमसे मोक्षसुखको प्राप्त होता है भावार्थ अर्थका साधन धर्म और कामकी रक्षापूर्वक, कामका साधन अर्थ और धर्मकी रक्षापूर्वक, और धर्मका साधन अर्थ और कामकी रक्षापूर्वक करना चाहिये जो एकका साधन दूसरेका घात करके करते हैं वे कदापि इष्टफलकी सिद्धिको नहीं पहुंचते. जिस समाजके गृहस्थ इन तीन पुरुषार्थोंके सेवनमें भलेप्रकार दत्तचित्त हैं वही समाज इस संसारमें उन्नत है और जिस समाजके गृहस्थ तीन पुरुषार्थोंके साधनसे विमुख हैं वही समाज इस संसारमें अवनत गिना जाता है, राजमान्यता और लोकमान्यता कोई भिन्न पदार्थ नहीं है जो इनही तीन पुरुषार्थोंका सम्यक् साधन करता है वही लोकमान्य और राजमान्य होता है और जो इन तीन पुरुषार्थोंसे विमुख है वही लोक निन्द्य और राजनिन्द्य होता है. बस अब सिद्ध हुआ कि, महासभा प्रांतिकसभा, लोकलसभा, एसोसियेशन, सोसाइटी, पार्लिमेंट आदि जितनी सभा सुसाइटी पंचायत वगैरा हैं उन सबका मुख्य उद्देश्य यही है कि, अपने २ वर्गमें त्रिवर्गसाधनकी सम्यक् प्रवृत्ति होय, हां इतना अवश्य है कि, कोई एककी मुख्यतासे कोई दोकी मुख्यता और कोई तीनोंकी मुख्यतासे अपने उद्देश्य नियत करती हैं, यहां इतना विशेष और समझना कि, धर्मसाधनको परमार्थिक उन्नति और अर्थ तथा काम साधनको लौकिक उन्नति कहते हैं.

प्यारे पाठको! हमारी महासभाकी स्थापनाका मुख्य उद्देश्य परमार्थिक उन्नति और गौण उद्देश्य लौकिक उन्नति था अतएव उसके नाममें "जिनधर्म संरक्षणी" एसा विशेषण लगाया गया था, परन्तु अब नवीन विश्वकर्माओंने उस विशेषणको छीलछाल कर दि. जै. महासभा कर डाला है और पश्चिमी सभ्योंने तो उसको उलट पलटकर "जैनकानफरैंस" का लिवास पहना दिया और धीरे २ जैनकालेज, इंगलिश डिपार्टमेंट, संस्कृत डिपार्टमेंट, महाविद्यालय और हाईस्कूलकी भूलभूलैयोंमें पटककर महासभाके उद्देश्यको बिलकुल विपरीत कर डाला है अर्थात् महासभाका उद्देश्य था मुख्यतासे धर्मोन्नति और गौणतासे लौकिकोन्नति करना, उसको नवयुवक बाबुओंने, "मुख्यतासे लौकिकोन्नति और गौणतासे धर्मोन्नति करना" कर डाला है. अस्तु दोनोंही प्रकारकी उन्नतिके यद्यपि अनेक कारण हैं तथापि उन सब कारणोंका

जीवभूत विद्या है इसलिये महासभाके अन्य विभागोंकी उपेक्षा करके आज विद्याविभागपरही कुछ लिखनेका विचार है

कार्यके भेदसे कारणमेंभी भेद होता है इस न्यायसे दो प्रकारकी उन्नतिको कारणभूत विद्याकेभी दो भेद हैं एक धर्मविद्या और दूसरी लौकिकविद्या गृहस्थाश्रमके पूर्वाचार्योंने चार भेद किये हैं अर्थात् १ ब्राम्हण २ क्षत्रिय ३ वैश्य और ४ शूद्र. आजकल जैनियोंमें वैश्यवर्णकीही बहुलता है ब्राम्हण, क्षत्रिय और शूद्र कहीं २ विरले पाये जाते हैं. यद्यपि आदिनाथस्वामीने वैश्य क्षत्रिय और शूद्र ये तीनही वर्ण स्थापन किये थे, और इन तीन वर्णोंकी आजीविकाके उपायभूत असिमसि आदि षट्कर्म बताये थे अर्थात् क्षत्रियोंका असिकर्म (खड्गादिद्वारा प्रजाकी रक्षा करना) वैश्योंका कृषि (खेती) वाणिज्य (व्यापार) और मसि (मुनीमी) और शूद्रोंका शिल्प (धोबी, सुनार, लुहार, जुलाहे आदिक शिल्पकर्म हैं) और विद्या (नृत्यसंगीतादि ७२ कला) आजीविकाके उपाय कहे थे, परन्तु भरत चक्रवर्तीने इनहीमेंसे ब्राम्हणनामक चौथा वर्ण स्थापन किया था, ये ब्राम्हण किसीभी उपायमें न लगकर निरन्तर धर्मसाधनमें तत्पर रहते थे, ये ब्राम्हण ज्योतिष, वैद्यक, मंत्रशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, न्यायशास्त्र, नीति, न्याय, व्याकरण, काव्यादि अनेक विद्याओंमें व्युत्पन्न होते थे. इनकी इन विद्याओंद्वारा इतर तीन वर्णोंको पूजन, अध्ययन, चिकित्सा आदि अनेक कार्योंमें बहुत कुछ सहायता मिलती थी, और इतर तीन वर्ण भक्तिपूर्वक इन ब्राम्हणोंकी आर्थिक सहायता करते थे, परन्तु वे सन्तोषी ब्राम्हण नतो किसीसे याचना करते थे और न असमर्थोंसे द्वेष करते थे, किन्तु जो कोई भक्तिपूर्वक देता तो उसे सन्तोषपूर्वक ग्रहण करते थे. ये ब्राम्हण जिनमतके स्तम्भ थे और इनके निमित्तसे धर्मकी बड़ी भारी उन्नति थी. आजकल उत्तरदेशमें तो जैनब्राम्हणोंका अभावही सा है, और दक्षिणमें जो कुछ जैनब्राम्हण पाये जाते हैं वे प्रायः विद्यासे वंचित हैं. इसलिये वर्तमानकालकी स्थितिके अनुकूल हमारी महासभाको विद्याविभागका प्रबन्ध किसप्रकार करना चाहिये उसहीका संक्षेपसे वर्णन किया जाता है.

महासभाको सौ सवासौ एसे विद्यार्थी तैयार करनेकी आवश्यकता है कि, जो अन्य आजीविकासे प्रयोजन न रखकर, उचित वेतनपर जैनपाठशालाओंकी अध्यापकी स्वीकार करैं इन विद्यार्थियोंको अंगरेजी और वाणिज्यविद्या न सिखाकर जैनधर्मसंबन्धी उच्च श्रेणीकी संस्कृत विद्या पढाई जाय, और एसे विद्यार्थी जैनियोंमें बहुत मिल सक्ते हैं इन विद्यार्थियोंको, नानाप्रकारके पारितोषिकोंसे उत्साहितकर उच्च विद्यामें इनको व्युत्पन्न बनाओ, कच्ची अवस्थामेंही उनसे फलकी आशामत करो, कुछ धैर्य रक्खो और फलकाल आने दो, फलकालमें इनही विद्यार्थियोंसे महासभाके मुख्य उद्देश्यरूपी धर्मोन्नत्तिकी सिद्धि होयगी और इनही विद्यार्थियोंसे फलकालमें

वैसी प्रभावना होगी जैसी कि, चतुर्थकालमें जैनब्राह्मणोंसे होती थी. और इसप्रकार हमारे गृहस्थाश्रमके एक भागरूप 'ब्राह्मण वर्ण-साध्य उन्नतिमें सफलता प्राप्त होयगी।

हमारे समाजमें क्षत्रिय और शूद्रोंकी संख्या अभाव सदृशही है इस कारण तद्विषयिक आन्दोलनकी उपेक्षा करके अब वैश्योंकी ओर झुकते हैं। पहले कह आये हैं कि गृहस्थका मुख्य कर्तव्य धर्म, अर्थ और कामका सम्यक्साधन है और इनके साधनका मुख्य उपाय विद्या है. इस विद्याकेभी यद्यपि धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, और कामशास्त्र ये तीन भेद हैं परन्तु यहां कामशास्त्रको गौण करके केवल धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्रही विवक्षित है. धर्मशास्त्रका पूर्णतया अभ्यास चिरकाल साध्य है और वर्तमानमें मनुष्यकी आयु बहुत स्वल्प है और उसमेंभी उसको (वैश्यको) बहुतसे कार्य करने हैं इस कारण बृहत् और गंभीर शास्त्रोंकी उपेक्षाकर कुछ थोड़ेसे करण शास्त्र पढाना परमावश्यक है. हमारे बहुतसे वर्तमान नेताओंका एसा विचार है कि सरकारी कालेजके क्रमानुसार एक जैनकालेज बनावें और उसमें द्वितीय भाषाकी जगह एक घंटे संस्कृत और धर्मशास्त्र पढावें, परन्तु यह उनकी भूल है इस प्रकार एक घंटेकी पढ़ाईसे जैनधर्मसम्बन्धी आवश्यक विद्यामें व्युत्पन्न नहीं हो सक्ता, उसको बम्बई परीक्षालयके क्रमानुसार पंडित परीक्षाके अन्तपर्यन्त समस्त ग्रन्थ अवश्य पढने चाहिये, हां! पंडित परीक्षाका व्याकरण विषय विद्यार्थीकी इच्छापर छोड़ा जायतो कुछ हानि नहीं. अब आगे अर्थशास्त्रपर विचार किया जाता है।

पूर्वाचार्योंने वैश्योंकेवास्ते अर्थ साधनके उपायभूत तीन आजीविका कही हैं, अर्थात १ मसि, २ कृषि और ३ वाणिज्य, इनमें कृषि और वाणिज्य ये दो तो स्वतंत्र उपाय हैं और मसि यह परतन्त्र उपाय हैं. आजीविकाके जितने उपाय हैं उन सबमें नीतिकारोंने वाणिज्यको प्रधान कहा है क्योंकि अन्य आजीविकाओंमें अर्थकी आय (आमदनी) परिमित है किन्तु वाणिज्यमें अपरिमित है और इसही कारणसे संसारमें वाणिज्य करनेवाले वणिकही विपुल धनके स्वामी हैं। वाणिज्यसे दूसरे दर्जेपर कृषिकर्म और तीसरे दर्जेपर मसिकर्म है। मसिकर्ममेंभी दो भेद हैं एक स्वदेशी वणिकोंका मसिकर्म करना और दूसरा विदेशियोंका मसिकर्म करना। वाणिज्य और कृषिका स्वदेशीसेही सम्बन्ध है, इस प्रकार वैश्यकी आजीविकाके तीन उपायोंमेंसे ढाई उपाय स्वदेशी सम्बन्धी और आधा उपाय विदेशी सम्बन्धी है.

इस बातसे पाठक अपरिचित नहीं होंगे कि कुछ अंगरेजोंके पक्षपात वश अन्याय करनेसे भारतवासियोंमें स्वदेशाभिमानका जोश उबल पड़ा है, उनको विदेशी वस्तुओंसे अत्यंत घृणा हो गई है और अब वे अंगरेजोंसे भिक्षा मांगकर राजकीय हक्क संपादन करनेमें अपनी हतक समझने लगे हैं, उनको विदेशियोंकी नौकरी करनेसेभी अब घृणा

होने लगी है वे अब स्वदेशी शिल्प और वाणिज्यकी ओर झुके हैं और अपने पौरुषसेही कुछ कर दिखानेको कमर कसके खड़े हुए हैं, परन्तु हमारे जैनीभाई इसके विपरीत अपने स्वरूपको भूल रहे हैं वे अपनी आजीविकाके तीन उपायोंमेंसे ढाई उपायको लात मारकर आधे उपायकी लकीरपर फकीर हो रहे हैं, उनको सरकारी युनिवर्सिटीकी परीक्षा देकर, अंगरेजी वर्णमालाकी उपाधि संपादनपूर्वक विदेशियोंकी गुलामी करनेके सिवाय आजीविकाका कोई दूसरा उपाय सूझताही नहीं है. अस्तु यदि उन्हें कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता तो मत सूझो और खुशीसे विदेशियोंकी गुलामी करो हमको उससे कुछ प्रयोजन नहीं परन्तु समाजके भोले जीवोंको धर्मकी कलईका चमत्कार दिखाकर उनके लाखों रुपये, सरकारी कालेजोंकी नकलरूप जैनकालेज बनाकर, व्यर्थ पानीमें क्यों बहाते हो.

सरकारी बड़े २ ओहदे खास अंगरेजोंकोही दिये जाते हैं, और बड़े ओहदोंमेंभी कदाचित् कोई देशियोंको मिलताभी है, परन्तु पहले कीसी उदारतासे दिनपरदिन गवर्नमेंट हाथ खींचती जाती है. कुछ दिन पहले पाठकोंने सुनाहोगा कि रेलवेकानफरेंसने ३०) मासिकसे ऊपरकी नौकरियां देशियोंको न देनेका विचार कियाथा, परन्तु समाचार पत्रोंमें उसकी कड़ी समालोचना होनेके कारण वह प्रस्ताव ज्योंका त्यों दबगया, इसपरसे सुज्ञ पाठक समझ सक्तेहैं कि अंगरेजोंका देशियोंकी ओर कैसा कूट पालिसी गर्भित बर्तावहै. देशी आन्दोलनसे चिड़कर सरकारी कालेजमें पढनेवाले विद्यार्थियोंके साथ कालेजके प्रिंसिपैलोंने जो कूटनीतिका वर्ताव कियाथा वहभी पाठकोंसे छुपानहीं है, उनके इस वर्तावको देख भारतवासियोंका स्वदेशप्रेम उबल उठा और उन्होंने सरकारी डिगरियोंके परतंत्र जालको निकम्मा समझकर स्वदेशी यूनिवर्सिटी स्थापन करनेका बीड़ा उठाया है. सुननेमें आया है कि इस यूनिवर्सिटीका क्रम सरकारी क्रमके अनुसार नहीं होगा किन्तु एक विलक्षण ढंगसे होगा. अब वे अंगरेजोंसे नौकरीकी भीख मांगना अच्छा नहीं समझते किन्तु शिल्प, वाणिज्य, कृषि और विज्ञानके तत्वोंका देशभाषामें अनुवाद करके स्वल्प कालमें विद्यार्थी तयार कर स्वतंत्र आजीविकाका उपाय कररहेहैं, परन्तु हमारे जैनी भाइयोंकी आंखोंके आगेपर्दा पड़रहाहै, हमारे मुखिया भोले भाइयोंको उलटी पट्टी पढ़ारहे हैं. शोक! शतशोक! इनकी इसभोली, नहीं! नहीं! कूटनीतिपर!

हमारे महाविद्यालयमें प्रतिदिन छह घंटेकी पढाई होनी चाहिये जिसमेंसे चार घंटे जैनधर्म संबंधी न्याय, व्याकरण, काव्य, और धर्मशास्त्र अर्थात् धर्मोन्नतिकारक विद्याका अभ्यास कराया जाय और दो घंटे अर्थ साधनकी विद्या सिखाई जाय. यहां पर कदाचित कोई एसी शंका करै कि धर्मोन्नतिके वास्ते ४ घंटे और आजीविकाकी विद्याके वास्ते दो घंटे रखनेसे आजीविकाकी विद्या पूरे तौरसे नहीं आसकैगी, एसा सम-

झना भ्रम है क्योंकि इस प्रक्रियासे महासभाका धर्मोन्नतिकी प्रधानता रूप मुख्य उद्देश्यका साधन होता है अथवा न्याय, व्याकरण, काव्य और धर्मशास्त्रकी विद्या यद्यपि मुख्यतासे धर्मोन्नतिका कारण है तथापि यह विद्या आजीविकाकी विद्यामेंभी बहुत कुछ सहायता देती है जिसकी प्रमाणता अनुभव सिद्ध है. अर्थ साधनके वास्ते जो दो घंटे हैं उनमेंसे एक घंटा राजविद्या अर्थात् अंगरेजी पढाई जाय, क्योंकि राज्यविद्याके विना वाणिज्यादिकके साधनमें बहुत कठिनता पड़ती है. शेषका बचा जो एक घंटा उसमें जो विद्यार्थी कृषिविद्या सीखनाचाहें उनको कृषिविद्या सिखाई जाय और जो मासि और वाणिज्य सीखनाचाहें उनको मासि और वाणिज्यविद्या सिखाई जाय. मासि और वाणिज्य इनदोनोंको साथ रखनेका यह कारण है कि इनदोनोंमें परस्पर घनिष्ट संबन्ध है. इस प्रकार अपने महाविद्यालयसे धर्मसाधन और अर्थसाधन इन दोनों विद्याओंकी प्राप्ति होसक्ती है अब इसमें कमी है तो केवल इतनी है कि इस महा विद्यालयके विद्यार्थी सरकारी वे नौकरियां नहीं पासक्ते जो कि सरकारी यूनिवर्सिटीकी डिगरियोंके सार्टिफिकटकी मोहताज हैं. इन नौकरियोंकी हकीकत ऊपर लिख आएहैं जिससे आशा है कि हमारे जैनीभाइयोंको विदेशी नौकरीसे अरूचि हुई होगी परंतु जिनको विदेशी नौकरीके सिवाय आजीविकाका मार्ग सूझता ही नहीं उनकेवास्तेही हमारे मुखियाओंने एक जैनकालेजकी रचनाका बीड़ा उठाया है, इसमें आपका मुख्य हेतु यही है कि यद्यपि सरकारी कालेजोंमें अभ्यास करनेसे हमको डिगरियोंके सार्टीफिकेट मिलसक्ते हैं. परंतु सरकारी कालेजोंमें धर्मविद्याका अभ्यास नहीं होसक्ता इस कारण हमको अपना निजी जैनकालेज बनानेकी आवश्यकता है. परन्तु जो गंभीर दृष्टिसे विचार किया जाय तो इनकी यह समझ बिलकुल भ्रममूलक है इसमें सन्देह नहीं कि उन बालकोंको धर्मविद्याकी पूरी २ आवश्यकता है परन्तु जब हमारी यह अवश्यकता विना कौड़ी पैसा खर्च किये हमारे महा विद्यालयसे ही मिटसक्ती है तो उसकेवास्ते जैनियोंका लाखों रुपया वरवाद करना क्या बुद्धिमानीका काम हो सक्ता है? कदापि नहीं! अबलीजिये आपको वह तरकीब बताई जाती है कि जिससे जैनकालेजकी आवश्यकता महाविद्यालयसे सहजमेंही पूरी होसक्ती है.

बम्बई परीक्षालयके क्रमानुसार वर्णमालाके आरंभसे शास्त्रीय परीक्षाके अन्तपर्यंत विद्याभ्यासका काल १८ वर्ष करार दिया गया है अर्थात् छठे वर्षके प्रारंभसे यदि बालकको विद्याभ्यास कराया जाय तो २३ वर्षकी वयमें वह शास्त्रीय परीक्षाके अंतिम खंडमें पास होसक्ता है अर्थात् ५ वर्षमें बालबोध, तीन वर्षमें प्रवेशिका, ५ वर्षमें पंडित, और पांच वर्षमें शास्त्रीय परीक्षाकी शिक्षा इस क्रमके अनुसार प्रवेशिकाके प्रथमखंडसे पंडित परीक्षाके अंतिमखंडपर्यंत अंगरेजी और गणितके

विषयमें मिडिलतककी पढाई खतम करा दी जायगी, और अंगरेजी कालेजमें शुरूसे लगाकर एम्. ए. पर्यंतका काल अनुमान १० वर्षके होगा. अंगरेजी कालेजमें धार्मिक शिक्षा गौणतासे और अंगरेजी शिक्षा मुख्यतासे पढाई जायगी, किन्तु महाविद्यालयमें धार्मिक शिक्षा मुख्यतासे और अंगरेजी शिक्षा गौणतासे पढाई जायगी. मुख्यतासे गौणताका प्रमाण कुछ हीन होगा इसलिये अंगरेजी कालेजमें जो धार्मिक शिक्षा १२ वर्षमें प्राप्त होगी वह धार्मिक शिक्षा महाविद्यालयमें ८ वर्षमें प्राप्त होसक्ती है, और इसही तरह जो अंगरेजी शिक्षा महाविद्यालयमें ८ वर्षमें प्राप्त होगी वही अंगरेजी कालेजमें ६ वर्षमें प्राप्त होसक्ती है. अंगरेजी कालेजमें जो १२ वर्षका काल है उसमें ७ वर्ष हाईस्कूलके और पांच वर्ष कालेजके हैं. यद्यपि कालेज क्लासमें भरती होनेकेवास्ते यह कैद (शर्त) है कि जबतक ऐंट्रेंस (मेट्रिक) परीक्षा पास न करलेय तबतक कालेजमें भरती नहीं होसक्ता परन्तु ऐंट्रेंसकेवास्ते ऐसी कैद नहीं है कि नीचेकी कक्षाओंके सर्टिफिकेटविना ऐंट्रेंसमें भरती न किया जाय अर्थात् अन्यत्र अभ्यास (प्राइवेट स्टडी) करकेभी उतनी योग्यता रखनेपर ऐंट्रेंसमें भरती किया जासक्ता है. अब जरा स्वस्थ चित्त होकर विचारिये कि जिन लड़कोंको सरकारी डिग्रियोंके सार्टीफिकट दिलानेकेवास्ते आप जैनियोंके लाखों रुपये बरबाद करके एक जैनकालेज बनाना चाहते हो, उन लड़कोंको पंडित परीक्षाकी अंतिम कक्षातक महाविद्यालयमें पढाइये, पंडित परीक्षामें जो व्याकरण विषय है वह यदि इस विद्यार्थीसे छुड़ा दिया जाय तो शेष विषयोंको आठ वर्षके बदले छह वर्षमें अच्छीतरह पूर्ण करसक्ता है. इन छह वर्षोंमें यह विद्यार्थी इतनी धार्मिक विद्या पढ़ जायगा कि जितनी अंगरेजी कालेजमें गौणरूपसे द्वितीयभाषाके रूपमें १२ वर्षमेंभी नहीं पढ़सक्ता और इतनी धार्मिक विद्या पढ़नेपर उसको चाहे जहां भेजदो, उसके श्रद्धानके शिथिल होनेका बिलकुल भय नहीं है. इस विद्यार्थीको इन छह वर्षोंमें मिडिल तककी अंगरेजी और गणितकी अच्छी लियाकत हो जायगी और संस्कृत विषयमें ऐंट्रेंससेभी बहुत दूरतककी लियाकत हो जायगी. इसके पीछे उस विद्यार्थीको सरकारी कालेजकी ऐंट्रेंस क्लासमें भरती कराकर निर्द्वन्द हो जाइये और उसको चाहे जैसी विकट विज्ञान विद्या पढने दीजिये उसके श्रद्धानमें कदापि धब्बा नहीं लगैगा, और इस तरकीबसे इस वर्त्तमान महाविद्यालयसेही आपका सब काम चल जायगा और जैनियोंके दस लाख रुपयेभी बरबाद नहीं होंगे. अब अन्तमें समस्त जैनीभाइयोंसे हमारी प्रार्थना है कि अब आप विद्याविभागके असली तत्वको पहुंचगये होगे, जैनकालेजकी गुहार मचानेवालोंकी पोल अब आपसे छुपी नहीं होगी आशा है कि अब आप जैनकालेजके चक्करसे बचकर महाविद्यालयकी सहायता करनेमें किसी प्रकारकी त्रुटी नहीं करोगे. इतना होनेपरभी यदि किसीके पास

फाजिल रुपया है और वह उसको खारी कुएमें पटकनेसेही उस धन पानेकी सफलता समझता है तो हमारा कुछ चारा नहीं उसकी जैसी इच्छा होय उस प्रकार वह अपने धनको बरबाद करै. अंतमें थोडीसी प्रार्थना महासभाके मुखियाओंसे है कि आप इस अवनत दशा प्राप्त जैनसमाजपर कृपादृष्टि रखिये, भोले भाइयोंको धर्मकी आड़में भूलभुलैयोंमें फसाकर उनके धनको व्यर्थ बर्बाद मत कराओ महाविद्यालयमें अभी धनकी बहुत त्रुटी है उसको पूरी होनेदो, महासभाके असली उद्देश्यको विपरीत करनेमें अन्यायपर कमर मत कसो, इतनी प्रार्थना करनेपरभी यदि आप अन्यायसे मुंह नहीं मोड़ोगे तो याद रक्खो, अनादिकालसे जो फल अन्यायियोंको मिलता आया है वह आपकेवास्तेभी उपस्थित है. महासभा जैनियोंकी रानी है और जैनी उसकी प्रजा हैं, राजाके अन्यायी होनेसे प्रजामें असन्तोष फैलता है, उसके अधीन छोटे २ राजा उससे विरुद्ध हो जाते हैं और समय पाकर उस राज्यपर अपना अधिकार जमालेते हैं. आश्चर्य नहीं कि कहीं महासभाकीभी एसीही गति न हो जाय, महासभाकी ओरसे जैनियोंमें बहुत कुछ असन्तोष फैल गया है महासभाकी कार्रवाहियोंसे उनको घृणा होने लगी है, सो कृपाकरके अपनी पालिसीको बदल दीजिये, महासभाके धर्मोन्नतिरूप असली उद्देश्यपर लौट आइये अन्यथा आश्चर्य नहीं कि कोई प्रबलशक्ति समय पाकर महासभापर चढ़ाई कर देय, और महासभाको अपने राज्यसे हाथ धोने पड़े.

मनोविनोद.

मुंशी नाथूरामजी लमेचूने अपनी तत्वार्थ वचनिकामें जो "द्रव्याश्रयानिर्गुणा गुणाः" सूत्रका अर्थ लिखा है कि, "द्रव्यके आश्रय गुण है, गुणके आश्रय न द्रव्य है, न अन्य गुण है." उसे बांचकर एक दूसरे दिग्गज विद्वान, जो "नाथूरामादि विद्वानोंको .... आप बताते हैं" के आदि शब्दमें गिने गये हैं, बोले, नहीं जी! वह अर्थ महज़ ग़लत है। उसका असली मतलब यों है कि, द्रव्य (धन) का आसरा पाके निर्गुण याने बेवकूफभी गुणी बन जाते हैं। हमने कहा कि, बेशक आप ठीक फरमाते हैं,। आजकलके जमानेमें लोग आपके मतलबको खूब पसन्द करेंगे। धन ऐसीही चीज है।

बाप—बेटा! यह सुनके मुझे बड़ा दुःख हुआ कि, तुम अपनी मासे झूठ बोले। झूठ बोलना बहुत बुरी बात है, देखो फिर कभी ऐसा न करना।

बेटा-फिर ऐसा न करूंगा।

बाप—अच्छा ज़रा बाहर जाके तो देख, कौन बुलाता है। मकानवाला किराया मांगने आया हो, तो कह देना, कोई घरमें नहीं है।

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। वैशाख वद्य १ श्रीवीर स० २४३२। अंक १२

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक =) पंक्ति।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ ,, ,, ५) रु.।
१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

आर्यमित्रका भ्रम

सहयोगी आर्यमित्र अंक १२ ता. २४ मार्चके पेज ९ में जैनियोंकी रथयात्राका हेडिंग देकर लिखता है "कि, फीरोजाबादके मेलेमें १२ या १३ तीर्थकरोंकी प्रतिमां आई थीं और यह बात जैनशास्त्रानुसार विरुद्ध है हमारे यहां किसीभी शास्त्रमें एसा नहीं लिखा है प्रत्युत कई मंदिरोंमें २४ तीर्थकरों तककी प्रतिमां विराजमान हैं क्या सहयोगी किसी जैनशास्त्रका प्रमाण देकर अपने वचनको सिद्ध कर सकता है?

वी. पी. लौटानेवाले वहादुर

हमारे जैनी भाई आजकल समाचार पत्र मगानेका शौक करने लगे हैं और चट अपना नाम ग्राहकश्रेणीमें लिखवाकर पत्र मंगाने लगते हैं और जब वी. पी. की बारी आती है तो चट दुमदवाकर चुप हो जाते हैं और वी. पी. वापिस कर देते हैं जिससे कि, समाचार पत्रोंको वहुत कुछ हानि उठानी पड़ती है इसलिये अब आगेसे कोईभी ग्राहक अग्रिम मूल्य दियेविना जैनमित्र नहीं पा सकेंगे.

भूल-संशोधन

अंक	पेज	टाईटिल	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
१०		१	१९	सर्प राजैः	सर्व राजैः

श्रीवीतरागायनमः

वैशाख वद १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
१२

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते। एतज्जिनानुवन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

श्रुतदशाष्टकम्।

श्रीमज्जिनेन्द्रमुखचन्द्रविनिर्गताया
त्रैलोक्यभव्यजनकैरवसेवितायाः।
वाचःप्रदर्श्य खलु साम्प्रतिकीमवस्थां
कांचित्तनोमि परिरक्षणसुव्यवस्थाम् ॥१॥
या तीर्थकृद्भिरुदिता किल दिव्यवाचा
सङ्घाधिपैश्चग्रथितातिमनोज्ञवर्णैः
सा द्वादशाङ्गरुचिरा सुरमर्त्यमान्या
जाताद्य हा सुलघुकीटकभक्षणार्हा ॥ २ ॥
आचार्यकैश्चसुधिभिश्चगृहस्थरत्नै-
र्या निर्मिता स्वपरबोधनमात्रकार्यैः।
पत्राङ्किताक्षरचणैरपि भक्तिभावात्
सैवाद्य हा विदलिता पतति प्रवार्धौ ।३।
या साधुभिर्निखिलसंपदि त्यक्तरागै
रप्यात्मबोधनिरतैर्न हि जातु मुक्ता।
सा सर्वजीवहितशिक्षिकमातृरूपा
हा त्यज्यते जिनकुलोत्थगृहस्थपुत्रैः ॥४॥
यां पूर्वपुण्यपुरुषा हृदये दधानाः
शोभामवापुरखिलेऽपि विदग्धवर्गे।
भूषाद्य सैव परितापविशीर्णिताङ्गा
हो उन्दुरोदरदरीशरणं प्रयाति ॥ ५ ॥
दुष्टाधिपत्यसमयोद्गतदुर्नयेभ्यो
या रक्षिता सुकृतिभिर्विविधैरुपायैः।
सौराज्यकेऽपि न हि सा परिरक्ष्यते हा
युष्माभिरित्यनुचितं सुजनैरसह्यम् ॥ ६ ॥
तस्माद्विहाय निखिलानपि कार्यजाता-
नेतां जिनेन्द्रसदृशीं परिभाव्य चित्ते।
शीघ्रं हि पालयत जीवहितैकदक्षाः
सद्धर्मरत्नपरिवर्द्धनगाढपक्षाः ॥ ७ ॥
यत्रास्ति कुत्रचिदपीह सुमातृसद्म
दीर्घं तथालघुतरं बहुजीर्णशास्त्रम्।
तद्रक्षणीयमधुनेति निवेदनं मे
दग्धे गृहे हि विफलोऽस्त्युदकाय यत्नः ८

भावार्थ—श्रीजिनेन्द्रके मुखरूप चंद्रमासे निकली हुई और जगत्के भव्यजीवरूपी कुमुदोंकर सेवित सरस्वतीकी वर्त्तमानदशाका प्रदर्शन कर उसकी रक्षाके लिये कुछ व्यवस्था कहता हूं १। जिसको तीर्थकरोंने दिव्यध्वनिसे कही और गणधरोंने अत्यन्त मनोहर अक्षरोंमें गूंथी वह देव तथा मनुष्योंसे

पूज्य, द्वादश १२ अङ्गोंसे शोभनीया जिनवाणी, खेद है? कि, आज छोटे २ कीडोंके अर्थात् दीमक आदिके खाने योग्य हो गई २। अपने और परके ज्ञान करनाही है मुख्य कार्य जिनके ऐसे आचार्योंने तथा विद्वान् गृहस्थोंनेभी जिसकी रचनाकी और चतुर लेखकोंने ताड़पत्रादिमें लिखी वही जिनवाणी खेद है? कि, आज चूरमूर होकर समुद्रमें गिर रही है ३। समस्त संपदामें रागका परित्याग करनेवाले और आत्मज्ञानमें तत्पर मुनियोंनेभी जिसको कदाचित् नहीं छोड़ी वह सब जीवोंको हितोपदेश देनेवाली माता जिनवाणी जैनी ग्रहस्थोंसे छोड़ी जा रही है यह बड़े खेदका विषय है ४। वृद्ध (बुजुर्ग) पुण्यात्माओंने जिसको हृदयमें धारण कर समस्त बड़े २ विद्वानोंमें प्रतिष्ठा प्राप्त की वही जिनवाणीरूप भूषा (गहना) आज अपनी रक्षाके अभावसे उत्पन्नसे जीर्ण (दुर्वल) होकर चूहोंके उदररूपी गुफाका शरण ग्रहण कर रही है अर्थात् चूहोंसे खाई जा रही है यह आश्चर्य है ५। दुष्ट राजा व बादशाहोंके समयमें उत्पन्न हुये अन्यायोंसे जिस जिनबाणीको पुण्यवानोंने अनेक उपायोंसे बचाई थी खेद है कि, तुमसे वह जिनबाणी इस अंग्रेजोंके सुराज्यमेंभी नहीं बचाई जाती यह तुम्हारा माताके साथ अनुचित व्यवहार है सज्जन पुरुष इस अनुचित व्यवहारको नहीं सह सकते हैं ६। इस लिये हे जीवोंके कल्याण करनेमें चतुर तथा सच्चे धर्मरूपी रत्नकी उन्नतिके लिये गाढ पक्षको धारण करनेवाले भाइयो सब कामोंको छोड़कर इस श्रीजिनेन्द्र समान जिनवाणीकी शीघ्र रक्षा करो ७। इस क्षेत्रमें जहां कहींभी बड़ा व छोटेसे छोटा अतिजीर्ण शास्त्रोंका धारक सरस्वती भंडार हो उसीकी इस समय रक्षा करनी चाहिये ये मेरी प्रार्थना है क्योंकि घरके भस्म होनेपर जल लानेका उद्योग करना निष्फल है ८।

निवेदकोजयपुरस्थः

जवाहरलालः साहित्यशास्त्री

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

सहयोगी जैनगजट जैनमित्रको चेताता हुआ कहता है कि, अब लेखोंका रंग बदलना चाहिये सबेरेका भूला श्यामतकभी घर आ जाय तो उसे भूला नहीं कहते. एसी चेतावनी देकर सहयोगी "पादै आप लगावै लड़केको शाबास बीबी तेरे चरखेको" वाली कहावतको चरितार्थ कर रहा है. महासभाके कार्याध्यक्ष अपनी करतूतोंको बदल रहे हैं, उनके प्रस्ताव रद्दी किये जा रहे हैं, महाविद्यालय शून्य हो गया है, सब लड़के और अध्यापक अपने २ घरको भाग गये हैं, और महासभाके सभापति व इन चार्ज जनरल सैक्रटरी भागे हुए विद्यार्थी और अध्यापकोंको मथुरा बुलानेका प्रयत्न कर रहे हैं, परन्तु जैनगजटको अभी हराही हरा दीख रहा है उसकी निर्मल दृष्टिमें अभी जैनमित्रके लेख असत्यही दीख रहे हैं, क्या निष्पक्षता इसहीको कहते हैं?

जैनगजटके सम्पादक बाबू देवकुमारजी एक बड़े रहीस और योग्य पुरुष हैं, आपको जमींदारीके कामसे बिलकुल सावकाश नहीं मिलता, इसलिये सम्पादकीका कार्य किसी एसे मनुष्यसे लिया जाता है कि, जो सम्पादकीके कार्यसे बिलकुल अपरिचित है, यदि जैनगजटपर कुछ आक्षेपभी किया जाता है तो उसका उत्तरभी अंडवंड परभाराही दे दिया जाता है, खेद है कि, बाबू साहब इस तरह अपने नामको सम्पादकीमें घसीटे जानेसे कुछभी हानि नहीं समझते.

पश्चिमोत्तर कोनेकी एक मैंडकीकोभी अब कुछ दिनसे जुकामने सता रखा है, उसने वहकी हुई ध्वनिमें तान अलापना प्रारंभ किया है और संपादक जैनमित्रपर बहुतसे कटुक आक्षेप किये हैं, इसलिये उसके जुकामको दूर करनेका नुस्खा नीचे लिखा जाता है

हमने राजविद्याका कभीभी निषेध नहीं किया है, निषेध किया है केवल इस बातका कि, सरकारी कालेजकी नकल बनानेमें कुछभी लाभ नहीं है किन्तु महाविद्यालयमें अंगरेजीके साहित्यको सैकिंडलेंग्वेजकी तरह पढ़ाना और साथ साथ धर्म, गणित और वाणिज्य विद्या सिखानाही जैनजातिको हितकर होगा, यदि वह जैनमित्रके गतअंकोंके लेखोंको चश्मा लगाकर बांचै तो बहुत जल्द उसका जुकाम दूर हो सक्ता है।

महाविद्यालयके विलापसे उसने जैनियोंको भिखमंगे समझ लेनेमें सारी अकल खर्च कर डाली है, परन्तु अब उसको समझ लेना चाहिये कि, जगत्में वही भीख निन्द्य कहलाती है कि, जिसमें मांगनेवालेका कुछ स्वार्थ होय, परोपकारकेवास्ते भीख मांगनेवालोंकी जगत्में निन्दा नहीं किंतु प्रशंसा होती है, किसी कविने कहाभी है कि, "मर जाऊं मांगूं नहीं अपने तनके काज। पर उपकार निमित्त वश तनक न आवै लाज"।

जैनमित्रमें कभीभी यह नहीं लिखा गया कि, महाविद्यालय केवल गरीवोंकेहीवास्तै है, महाविद्यालय न गरीवोंकेवास्तै है और न अमीरोंके लिये, वह है उनके लिये जो विद्याके अभिलाषी हैं. सहारनपुर स्थानका हमने किसीभी अंकमें खंडन नहीं किया, परन्तु, सदा हमारी यही राय थी कि, जहांतक होसकै महाविद्यालय एसे स्थानमें होना चाहिये कि, जहां स्थानीय विद्यार्थी अधिक मिल सकैं. विद्यार्थियोंकी अपेक्षासे सहारनपुर कुछ खराब स्थान नहीं था किंतु प्रबन्धकर्त्ताओंकी भूलसे सब गड़बड़ हो गई और उसका नतीजा यह हुआ कि, महाविद्यालय शून्य हो गया, अब एसी अवस्थामें सेठ **द्वारकादासजी** सभापति व इन चार्ज जनरलसैक्रटरीके प्रस्तावानुसार महासभाके आगामी जलसेतक महाविद्यालयको चौरासीपरही जारी किया जाय तो अति उत्तम होगा, परन्तु प्रबन्धकर्त्ताओंकी स्टष्टि करनेसे महासभाके सभासदोंको गाफिल नहीं रहना चाहिये. म-

हाविद्यालय भंडारका ट्रूस्ट होना चाहिये, और ट्रूस्टियोंमें बड़ी रकमके दाताओंके नाम होने चाहिये, तथा ट्रूस्टियोंकी तरफसे महाविद्यालयका प्रवन्ध करनेके लिये एक कमेटी नियत होनी चाहिये जिसके ११ सभासद होंय उनमेंभी चार पंडित, चार धनाढ्य और तीन एसे महाशय जो अंगरेजी और जैनसिद्धान्तके मर्मज्ञ होंय नियत किये जांय, और ट्रूस्टके उद्दश्योंमें यह मूल उद्देश्य अवश्य रक्खा जाय कि, इस भंडारसे मुख्यतासे जैनधर्मसंबंधी विद्या और गौणतासे लौकिकविद्या सिखाई जायगी.

गत १ फरवरीको कोल्हापुरके प्रोफेसर मि० वीजापुरकरने बम्बईके **शेठ हीराचंद गुमानजी जैनबोर्डिंगस्कूल** और **संस्कृत विद्यालय**का अवलोकन किया था । उस समय आपने उक्त दोनों संस्थाओंकी प्रशंसा करके एक बहुत अच्छी सलाह दी थी, कि, "देशके सम्पूर्ण प्रजासम्बन्धी कार्योंमें जहांतक हो सके, नागरीलिपीका प्रचार करना चाहिये"। इस बोर्डिंगका कार्य अंगेजीमें होता है, मेरी समझमें वह नागरीमें हुआ करै, तो बहुत अच्छा हो । हम लोगोंको ऐसा प्रयत्न करना चाहिये, जिससे यह लिपि शीघ्रही हमारे देशभरकी सामान्य लिपि बन जावे। बोर्डिंगके प्रबन्धकर्त्ताओंको इस ओर ध्यान देना चाहिये ।

कलकत्तेके प्रसिद्ध जौहरी शेठ लाभचन्द्र मोतीचन्दजीने एक बड़ी उदारताका कार्य किया है । जैनियोंमें आप पहले पुरुषरत्न हैं, जो देशकी शिल्पविद्याकी उन्नतिके लिये अग्रसर हुए हैं । आपने अभी हालहीमें कलकत्तेमें एक शिल्प विद्यालय खोला है, और उसके लिये एक सुयोग्य प्रबंधकारिणी कमेटी नियत कर दी है । इस विद्यालयमें कुलीन हिन्दू और जैनियोंके बालकोंको विनाफीस लिये शिक्षा शिल्प (जवाहिरातकी) और व्यापारके योग्य अंग्रेजीकी शिक्षा दी जावेगी। साथही संस्कृत, बंगला, हिन्दीका साहित्य और गणित सिखलाया जावेगा । हम सच्चे हृदयसे उक्त स्वदेश हितैषी शेठजीको धन्यवाद देते हैं ।

मद्रासके चिन्नास्वामी न्यादू नामक नवयुवकने बुननेकी एक ऐसी कल तयार की है, जिससे पायजामा अंगरखा कुर्ता आदि सब प्रकारके वनेबनाये कपड़े तयार हो जाते हैं। अलग कपड़ेका थान लेकर अब दर्जीसे सिलानेकी जरूरत नहीं रहेगी । जो कुछ सिले हुए कपड़े लोगोंके काममें आते हैं, वे सब हूबहू एकबार ही कलसे बनकर निकलते हैं। आजकल जब लोगोंका ध्यान स्वदेशी वस्त्रोंके व्यवहार करनेकी ओर आकर्षित हुआ है, तब इस कलसे देशको बहुत कुछ लाभ होनेकी आशा है । इस कलके निर्माता चिन्नास्वामी देशका बड़ा उपकार करेंगे ।

अपूर्व स्मरणशक्ति ।

"एक एव मनोरोधः सर्वाभ्युदय साधकः।"
(ज्ञानार्णवे।)

आत्माकी अनन्त शक्तियां हैं, परन्तु कर्मोंके आवरणके कारण वे सबके सर्वतः प्रगट नहीं होती। आवरणके अनुसार किसीके कम और किसीके अधिक व्यक्त होती रहती हैं। संसारमें जो मनुष्योंका ज्ञान न्यूनाधिक देखा जाता है, उसका कारण यही आवरण है। जिस आत्मापरसे यह आवरण सर्वथा पृथक् हो जाता है, वह आत्मा अनन्तज्ञान, अनन्तवीर्य, अनन्तसुख, और अनन्तदर्शनवान् हो जाता है, जिसे सर्वज्ञ कहते हैं। सर्वज्ञात्मा भूत, भविष्य और वर्तमानकालके सम्पूर्ण पदार्थोंको हस्तरेखाकी नाई भलीभांति देखते और जानते हैं।

इस भारतवर्षकी पुण्यभूमिमें ऐसे अनन्त आत्मा सर्वज्ञ हो चुके हैं, और आगामी कालमें होवेंगे, एसा हम लोगोंका विश्वास है। परन्तु समयके फेरसे आज हम लोगोंके पास ऐसे साधन बहुत थोड़े हैं, जिनसे आत्माकी ऐसी विशुद्धताकी आजकलके संसारको विश्वास दिला सकें। क्योंकि जिस योगाभ्याससे जिस उत्कृष्ट तपश्चर्यासे और जिस अन्तर्बाह्य शुद्धतासे आत्मा विशुद्ध होता है, और जिससे उसकी छुपी हुई शक्तियां प्रगट होती हैं, उस योगाभ्यास, उस तपस्या और उस अन्तर्वाह्य शुद्धताके रखनेवाले योगियोंका—मुनियोंका प्रायः अभाव हो गया है। तौभी जैनधर्मके सिद्धान्तके अनुसार कर्मोंका आवरण किंचित् हटनेसे अर्थात् उपशम होनेसे गृहस्थ जीवनमेंभी आत्माकी शक्तियोंका जो कभी २ परिचय मिलता है, उससे संसारको मानना पड़ता है कि, आत्माकी अनन्त शक्तियां है।

आज हम आत्माकी अनन्त शक्तियोंमेंसे केवल एक स्मरणशक्तिके विषयमें कुछ लिखना चाहते हैं। स्मरण अथवा स्मृति यह एक ज्ञानका भेद है। **तदित्याकारा भागनुभूतवस्तुविषयास्मृतिः** अर्थात् "पूर्वमें जो पदार्थ जाना हो, उसके स्मरण (याद) करनेको स्मृति कहते हैं"। आजकल हम लोगोंको सबेरेकी बात दोपहरको याद रखनेके लिये नोटबुक और पेंसिलका सहारा लेना पड़ता है, परन्तु एक समय ऐसा था कि, बड़े २ सिद्धान्तग्रन्थभी कंठस्थ रक्खे जाते थे। श्री अकलंक देव, तथा जिनसेनसूरि (पार्श्वाभ्युदय काव्यके कर्त्ता) आदि अनेक महापुरुषोंकी कथायें हमारे ग्रन्थोंमें मिलती हैं, कि, वे एक संस्थ थे; अर्थात् बड़ २ ग्रन्थभी एकबार सुननेसे उन्हें कंठ हो जाते थे। और यह सब उनकी स्मरणशक्तिकीही प्रखरता थी, कोई जादू टोना मंत्रयंत्रादिकी शक्ति नहीं थी।

कुछ दिन पहले यहां स्वर्गीय कविराज रायचन्द्रजी स्मरणशक्तिकी प्रखरतामें अद्वितीय हो गये हैं। आप एक श्वेताम्बरी (स्थानकवासी) सज्जन थे, परन्तु श्रद्धा आपको दिगम्बर सम्प्रदायमेंही अधिक थी। आपके

स्मारकमें एक शास्त्रमाला बम्बईसे निकलती है, जिसमें प्रति दो महीनेमें दिगम्बरीय और श्वेताम्बरी ग्रन्थ प्रकाशित होते हैं । आप सौ अवधानतक कर सकते थे ।

अवधान किस तरह किये जाते हैं, यह बात हमारे पाठकोंमेंसे बहुत कम जानते होंगे इसलिये हम उसका विवरण लिख देना उचित समझते हैं ।

जितने अवधान करना हो, उतने आदमी एक एक कागज और पेंसिल लेके बैठते हैं, और अपने २ कागजपर जुदी २ भाषाओंके श्लोक तथा गणितादिके प्रश्न लिखके उनके एक २ शब्द अथवा अक्षरोंपर नम्बर लगा लेते हैं। श्लोकोंके सिवाय कोई २ लोग जोड़, वाकी, गुणा, भाग त्रैराशिक आदिकी संख्यायें लेते हैं, तो उन संख्याओंपरभी नम्बर वा चिन्ह लगा लेते हैं । और कुछ लोग जिस विषयका प्रश्न करना होता है, अथवा जिस विषयपर कविता बनवानी होती है, तो उसे पहलेसे सोचके लिख रखते हैं। अवधानकर्त्ता बीचमें बैठ जाता है और इस तरह अवधान करनेकी सब तयारी हो जाती है ।

इसके पश्चात् एक एक आदमी उठता है, और अपने कागजपर लिखे हुए अक्षर, शब्द अथवा संख्याके अंकको वेसिलसिले नम्बर बोलकर बतलाता है, अर्थात् कोई अपने चौथे नम्बरका अक्षर बतलाता है, कोई दशवेंका, कोई आठवेंका, इस प्रकार सब लोग एक वारमें अपने २ एक २ अक्षर संख्या अथवा प्रश्नोंको बतला जाते हैं । फिर दूसरी बार दूसरे किसी नम्बरके अक्षर अथवा संख्याको बतलाते हैं, इसप्रकार कई बारमें लोग अपने २ श्लोक अथवा गणितकी संख्याओंको बतला जाते हैं, अवधान कर्त्ता उन सम्पूर्ण शब्दोंको ध्यानसे सुनता जाता है। मध्य २ में वह शतरंज अथवा तास खेलता जाता है । और जिन लोगोंने किसी विषयके प्रश्न अथवा काव्य बनवाये हों, उनके उत्तर अथवा नवीन काव्य बनाके लिखवाता जाता है । इतनाही नहीं किन्तु बीच २ में जो घंटेके शब्द किये जाते हैं, उन्हेंभी गिनता जाता है । इसप्रकार तीन चार घंटेमें अवधान क्रिया सम्पूर्ण होती है, और फिर लोगोंको विस्मित करनेवाला उसका फल प्रगट होता है ।

अवधान कर्त्ता क्रमसे प्रत्येक पुरुपका श्लोक जिसके कि, अक्षर उसने बारी २ से वेसिलसिले बतलाये थे, पूर्ण और क्रमयुक्त करके सुनाते जाते हैं, और पूछते जाते हैं क्यों आपका यही श्लोक था? ध्यान रहे कि, ये श्लोक जुदी २ भाषाओंके होते हैं, जिनका ज्ञान अवधान कर्त्ताको सर्वथा नहीं रहता, केवल अक्षर शब्द जैसे कि, वे उच्चारण किये जाते हैं उसे स्मरण रखना पड़ता है! इसके पश्चात् जिनके गणितके सवाल थे, उनकी संख्या और फिर उनके फल गुणा भाग आदि करके सुनाते हैं, तथा जिन्होंने जिस विषयमें कविता चाही थी, उन्हें उसी विषयकी कविता बनाके सुना देते

हैं। पीछे घंटेके शब्दोंकी संख्याभी बतला देते हैं, कि, इतने सब शब्द हुए थे! पाठक! यही अवधानके चमत्कारिक प्रयोगोंका स्वरूप है।

कविराज रायचन्द्रजी तथा भारत मार्तण्ड पंडित गट्टूलालजीकी मृत्युके पश्चात् इस ओर कोई महात्मा ऐसा सुननेमें नहीं आया जो अवधान करता हो परन्तु हर्षका विषय है, कि, गत ता० २५ फरवरीको शेठ हीराचंद गुमानजी धर्मशालामें मोरवी निवासी कविराज घेलाभाई महाशयके अवधानोंको देखनेका बम्बई निवासियोंको फिरसे सौभाग्य प्राप्त हुआ। ४-५ वर्ष पहले उक्त महाशय बम्बईमेंही रहकर व्यापार करते थे, परन्तु आजकल करांचीमें रहते हैं। आपकी वय अभी केवल २५ वर्षकी है। आप ५० अवधानोंके करनेकी शक्ति रखते हैं। स्थानकवासी जैनसम्प्रदायके आप उपासक हैं। बड़े सीधे और सरल स्वभावी जीव हैं।

आपके अवधानोंका प्रयोग देखनेके लिये जो सभा हुई थी, उसके प्रेसीडेंट मि० लखमसी हीरजी बी. ए. एल. एल. बी. वकील हाईकोर्ट बनाये गये थे। आपने बड़ी उत्तमतासे सभाका कार्य पूर्ण किया। कविराज महाशय यद्यपि ५० अवधान करनेकी शक्ति रखते हैं, परन्तु उस दिन समय थोड़ा मिलनेके कारण केवल ३० अवधानही किये जा सके। और इतनेमेंभी ३॥ घंटेसे अधिक काल लग गया।

अवधान किसप्रकार होते हैं, यह ऊपर बतला दिया गया है। अब यहां पुनः लिखनेकी आवश्यकता नहीं है, उसीप्रकार उक्त सभामेंभी उनके प्रयोग हुए। संस्कृत, हिन्दी, गुजराती, मराठी, कानडी, बंगला, लैटिन, और इंग्रेजी आदि नव दश भाषाओंके गद्य तथा पद्यवाक्योंको आपने क्रमसे स्पष्टतापूर्वक पढ़कर सुनाया और इसीप्रकार गणित विज्ञान, धर्मादि विषयोंके प्रश्नोंके यथोचित उत्तर देकर आपने लोगोंको आश्चर्यमें डाल दिया। चारों ओर हर्षोद्गार प्रगट करनेवाली तालियोंकी आवाजसे सभाभवन गूंज उठा। पश्चात् सभापतिका आभार मानके सभा विसर्जन हुई।

प्यारे पाठको! यह सब और कुछ नहीं, आत्माकी शक्तियोंका विकाश है। यदि आपकोभी इन शक्तियोंके प्राप्त करनेका उत्साह है, तो योगकेद्वारा कर्मोंके आवरणोंके टालनेका उपाय कीजिये। बुरे विचार और बुरी वासनाओंको हृदयमें स्थानमत दो, और अखंड ब्रम्हचर्य्यका पालनकर वीर्यकी रक्षा करो। इस जन्ममें नहीं तो अगले जन्ममें अवश्यही आप इससेभी अधिक शक्तिशाली बनेंगे, इसमें सन्देह नहीं है।

चंदावाड़ी पो० गिरगांव } सज्जनोंका सेवक
बम्बई ता० ४-३-०९ } **नाथूराम प्रेमी।**

श्री कुंडलपुर अतिशय क्षेत्रका मेला

मध्यप्रदेशके दमोह जिलेसे अनुमान २०

मील ईशानकी ओर श्रीकुंडलपुर अतिशय क्षेत्र है वहांके पर्वतका आकार कुंडलरूप है और इसी कारण उस स्थानका नाम कुंडलपुर पड़ा होगा ऐसा प्रतीत होता है. उक्त पर्वतपर २१ तथा तलैटीमें २१ एसे कुल ४२ जैनमंदिर हैं । पर्वतपर महावीरस्वामीका मुख्य मंदिर है जिसमें वीरभगवानकी एक विशाल, और प्राचीन प्रतिमा है, शिलालेखसे उक्त प्रतिमा प्राचीन विदित नहीं होती परन्तु प्रतिमाकी उंचाई ४–४।। गज और विस्तार तीन गजके होनेसे एसा प्रतीत होता है कि, प्रतिमा प्राचीनकालकी है और मंदिरका निर्माण समय पीछेका है । वीर भगवानकी प्रतिमाके पास दो सुन्दर प्रतिमा औरभी खड़गासन विराजमान हैं इस क्षेत्रके अतिशयके विषयमें एक किंवदन्ती ऐसी प्रसिद्ध है कि, बादशाह महमूद गजनबी प्रतिमा पूजाका पूर्ण विरोधी तथा भारतवासियोंके धर्मका कट्टर शत्रु इस क्षेत्रपर आकर मन्दिरों और प्रतिमाओंको तोड़नेके लिये उद्युक्त हुआ उस समय अनेक प्रतिमाओंके दर्शनीय पावन शरीरपर उस अविचारी, पापी बादशाहकी टांकी और हथौड़ा चलना प्रारम्भ हो गया यह देख जैनी लोग त्राहि त्राहि करने लगे । वीरभगवानकी मूर्तिपर ज्योंही टांकी चलाई गई कि, उसमेंसे क्षर १ दूधकी धारा वहने लगी । यह दृश्य देखकर बादशाह स्तंभित हो गया. इस प्रकार शासन देवताके अतिशयसे रक्षा पाकर यह तीर्थ बहुत प्रसिद्ध हो गया । वर्तमान समयमें फूटी हुई प्रतिमाओंके अवलोकनसे हृदयमें बड़ाभारी आघात पहुंचता है.

कई एक सज्जनोंका कहना है कि, श्रीवर्द्धमान भगवानका जन्मस्थान यही कुंडलपुर है और इसी कारण चैत्र बदी १३ भगवानकी जन्मतिथिको मेला भरता है। परन्तु इस विषयका इतिहास प्रमाण न मिलनेसे हमको विश्वास नहीं होता. हां उनकी जन्मतिथीकी यादगारमें यह मेला चला आता होगा. वीरभगवानका जन्मस्थान मगधदेशके राजग्रहीके निकट कुंदनपुर प्रसिद्ध है । इस क्षेत्रमें एक बात विशेष देखनेमें यह आती है कि, बहु भाग प्राचीन वीरभगवानकी प्रतिमाओंका ही है ।

प्रथम यहांपर एक बड़ा भारी मेला चैत्र बदी १ से १५ तक रहता था. जिसमें ५०–६० हजार जनसंख्या जमा होती थी और व्यापारी पूर्ण लाभ उठाते थे परन्तु अब यहां विलायती मालके चमकने और रेलगाड़ीके चलनेसे व्यापारका एक दम न्हास हो गया. सम्वत् १९२८ में बीमारीके कारण मेला सरकारकी ओरसे बंदकर दिया था जो कि, अनुमान २८ सालतक बंद रहा.

इस क्षेत्रके प्रबन्धकर्ता दमोहके शेठ वृन्दावन नाथूरामजी हैं । आपके प्रयत्नसे सम्वत १९५७ से मेला फिरसे जारी हुआ और हरसाल नियमानुसार चला जाता है. पूर्वसमयकी अपेक्षा मनुष्य संख्या अब बहुत कम एकत्र होती है. यहांपरभी अन्य मेलोंके अनुसार पांच छह दिन पूजा कर लोग चले जाते थे परन्तु इससाल हमारे प्रसि

विचित्र नुस्खे

आजकल हमारे जैनीभाई सब जातियोंसे संख्यामें अधिक मरते हैं. कारण आजकल हमारी जातिमें रोगभी नये २ (जो कि, चरक, सुश्रुत वाग्भटादि ग्रंथकारोंके पूर्वजोंकोभी मालूम नहीं थे.) फैल गये और फैलते जाते हैं, जिनका इलाज प्राचीन वैद्यकशास्त्रोंमें कहींभी नहीं है. हमने एक सिद्धमहात्माकी कृपासे उन नये रोगोंके लिये नुस्खे प्राप्त किये हैं. यदि चाहे तो हम इन नुस्खोंसे दवाइयां बनाकर एक पवित्र औषधालय खोलकर हजारों रुपये पैदाकर सक्ते हैं परन्तु **परोपकाराय सतां विभूतयः** की नीतिके पक्षपाती होनेसे सब साधारणके लिये वे अपूर्व औषधियें आज प्रकाशित कर देते हैं आशा है कि, हमारे जैनी भाई इनसे लाभ उठावेंगें।

असभ्यतानाशक बटी—इतिहासज्ञताका सत ५ तोले, लेकचरबाजीकी जड़ ३ तोले, सहायकमहामन्त्रित्वका पुंछल्ला ५ तोले, नियमविरुद्ध मनमानी कार्रवाईके फलोंका चूर्ण २५ तोले, खुदमुखतियारीके पत्ते १० तोले, इन सबको कूटपीसकर अश्रद्धाके कपड़ेसे छानकर बाहिरी हितैषिताके रसमें खरल करके चने २ भर गोली बनाकर पश्चिमी सभ्यताकी छायामें सुखालो फिर पाश्चिमात्य विद्याके रसके साथ दोनों बख्त सेवन करनेसे जन्म २ की असभ्यता नष्ट होकर नव्यसभ्यताकी शतसहस्रगुणी प्राप्ति हो जायगी। परन्तु याद रहै कि, संस्कृतज्ञ जैनधर्मके जानकार वृक्षोंकी हवासे परहेज रखना नहीं तो बढ़ी हुई सभ्यताका (नीरोगताका) बमन हो जायगा,

मूर्खतानाशक चूर्ण—लखनवी जासूसीका बुक्का ५ तोले, धर्माचरणके ढोंगका चूर्ण १५ तोले, बातोंमें बहकानेकी जड़ ३ तोले, सभापाठशालादि धर्मकार्योंमें पांचवें सवार बननेकी पत्ती ४ तोले, धर्मकार्यके प्रबंधकर्त्ताओंमें विरोध फैलानेके बीज १ तोला इन सब दवाइयोंको कूटपीसकर ६ मासे चूर्ण खाकर ऊपरसे घाटीके हाथका कूएका गरम २ जल पी लेना इसप्रकार सेवन करनेसे महामूर्ख निरक्षर भट्टाचार्यभी दो महीनेमें विना पढ़ेही महापंडित (शास्त्री) हो जायगा। परंतु रोजगारके समय बाजारमें न जाकर घरमेंही पड़े २ रोजगार करना जहांतक बनै एकान्तमें रहना। अपना जीवन धर्मार्थ उत्सर्ग कर देना परंतु रोजगार कभी नहीं छोड़ना। सभापाठशालाओंके सभापति मंत्री आदिके विश्वासपात्र वनकर इन कामोंको मिट्टीमें मिलाना इत्यादि परहेजीकेसाथ यदि इस चूर्णको दो महीने सेवन किया जाय तो महामहोपाध्यायकी पदवी प्राप्त होसक्ती है।

विनापढे सम्पादक बननेका उपाय—धर्मशास्त्रोंके मर्मज्ञ तथा न्यायशास्त्रके जानकार न्यायदिवाकर सदृश विद्वानोंको कलयुगी, मूर्ख पापी आदि कहकर गालियां देना, और अंगरेजी पढ़े असदाचारी धर्मशून्य अल्पज्ञोंको धर्म और जातिके उन्नतिकर्त्ता व संरक्षक मानना, पुराने कविओंकी बनाई हुई कविताको नष्ट भ्रष्ट करके मनमाना पाठ बनाकर

नानाप्रकारकी अशुद्ध पुस्तकें छाप २ कर भोले भाइयोंको बहकाना, संस्कृत और धर्मविद्याके पढ़ानेवाले विद्यालयोंको भुक्कड़खाना वा दरिद्रखाना बताना और सनातन पवित्र जैनविद्याके पढ़नेवालोंको भिख मंगे दरिद्री कहकर उनको विद्यासे अनुत्साहित करना, अंगरेजी विद्याके पढ़नेसेही धर्म अर्थ काम मोक्ष इन ४ पुरुषार्थोंकी सिद्धि मानना महाअन्यायी अशास्त्रज्ञ भेषधारी पाखंडीको मुनि बनाकर उसकी महिमा व माहात्म्य गाकर जैनसमाजको धोकेमें डालना जैनधर्मका एक अक्षरभी न पढ़ा हो तोभी जैनग्रंथोके कर्त्ता बन जाना इत्यादि २ उत्तमोत्तम विषयोंका अभ्यास करनेसे विना पढ़े लिखे ओल्डफूलभी बड़ेभारी रिफारमर एडीटर (सम्पादक) बन सक्ते हैं।

। एक मस्खरा

कारंजावाले सेठ देवीदास चवरेके भाई अम्बादासने ५०) जैनपाठशाला शोलापुर २९) चर्तुविधि दानशाला ९०) जैनमंदिरोंके लिये कुलजोड़ १२९) सोलापुरमें दिया. फलटणवाले मोतीचंद मल्लुकचंद काल्लसकरने यहांकी पाठशालामें ३) रु० मासिका वजीफा १ वर्षके लिये दो विद्यार्थियोंको देना स्वीकार किया। सेठ कल्याणमल तिकोकचंदने ७१) जैनपाठशाला शोलापुर ३१) चर्तुविधि दानशाला ४) चर्तुविधि दानशालाके वैद्यको ४) पाठशालाके शास्त्रीको दिया खूबचंदजी मन्नालालजी झवेरचंदजी इन तीनों भाईयोंने ५) पांच मंदिरोंको दिया. और श्रीमान् सेठ पूरणसाहजी सिवनीवालोंने जैनमंदिरको २१ जैनपाठशालाके विद्यार्थियोंको ९) की पुस्तके और ३) रु० की मिठाई बांटी। हम सर्व महाशयोंको धन्यवाद देते हैं।

नं० १४६८ पुना ता. १९-२-०६

मी. रावजी सखाराम दोशी शोलापूर

जत तमारो कागळ पुगो तमोए खांड बीशे माहिती पुछी माटे जनावुछु के अमारा तीहां बेउ प्रकारनी खांड बनेछे एटले सफेत खांडने अशुद्ध पदारथ लागे छे अने भ्राउनने ते पदार्थ लागतो नथी. **इ. ए. घासवाला**

हिंदी अनुबाद **म्यानेजर**

नं० १४९८ पुना ता. १९-२-०६

मी रावजी सखाराम दोशी सोलापुर

आपका कागज आया आपने स्वदेशी सक्कर बाबत समाचार पूछें सो हमारे यहां दो प्रकारकी खांड़ बनती है सफेद सक्करमें अशुद्ध वस्तु लगती है तथा बदामी शक्करमें नहीं लगती है। **ए. ए. घासवाल**

म्यानेजर.

उपर्युक्त पत्रसे मालुम होता है कि, स्वदेशी शक्कर शुद्ध और अशुद्ध दो प्रकारकी तय्यार होती है इसलिये पाठक शुद्ध स्वदेशी शक्करको व्यवहारमें लावें और अशुद्ध स्वदेशीको त्यागें तथा विलायती अशुद्ध शक्करका तो सर्वथा त्यागही कर देवें। आपका

रावजी सखाराम दोशी सोलापुर

मुंबईमें औषधालय

पाठक महाशय आज एक आपको परमहर्षकी सूचना दी जाती है कि, जगत्प्रसिद्ध दानवीर शेठ माणिकचंद पानाचंदजी जोहरी जे. पी. (शान्तिरक्षक जज) की आज्ञा व सहायतासे **वैद्यराज** व **वैद्यरत्न** उपाधिप्राप्त श्रीयुत कन्हैयालालजी जैनने मुम्बईमें एक **पवित्र जैन औषधालय** खोला है. जिससे असमर्थोंको विनामूल्य व समर्थोंको उचित मूल्यसे समस्त प्रकारकी दवाइयें वितरण कर समस्त प्रकारके रोगोंकी चिकित्सा करना प्रारंभ कर दिया है।

बडे हर्षका स्थान है बल्के जैनजातिका गौरव है कि, पीलीभीत निवासी श्रेष्ठिवर्य ललिताप्रसादजी हरिप्रसादजी रायबहादुर आनरेरी मजिष्ट्रेटद्वारा स्थापित ललितहरि संस्कृत वैद्यक विद्यालयमें (संस्कृत मेडिकल कालेजमें) सबसे प्रथम वैद्य, वैद्यवर और वैद्यराज इन तीनों परीक्षाओंमें प्रथम उत्तीर्ण होनेके कारण दो जगहसे सुवर्णपदक, कलकत्तेसे वैद्यरत्नकी पदवी तथा नकदरूपयोंका पारितोषिक आपहीने पाया है. आप उक्त विद्यालयमें पांच वर्ष पर्यन्त चरक-सुश्रुत बाग्भाट्टादि बड़े २ ग्रंथ पढ़कर तथा गुरुकेद्वारा बताई हुई औषधि क्रिया व चिकित्सामें निपुणता प्राप्त कर अपने नगर व मुरादाबादमें बड़े २ रोगोंकी चिकित्सा करके प्रशंसापत्र प्राप्त किये हैं. सो जैनसमाजको ऐसे महाशयके कारण बड़ा गौरव है ओर खासकर मुम्बईकी जैनसमाजको तो इनकी संगतिका अपूर्व लाभ हुआ है। परन्तु अन्यान्य जगहोंकी जैनसमाजकोभी इनकी चमत्कारी चिकित्सा व दवाइयोंसे लाभ पहुचानेकी इच्छासे हमलोगोंकी प्रेरणासे उन्होंने आप लोगोंके हितार्थभी प्रत्येक रोगकी व्यवस्थापूर्वक उत्तम अनुभवित औषधियें भेजनेका प्रबन्ध किया है. अब आपको अन्यमती अनपढ़ वैद्योंकी बनाई हुई अपवित्र दवाइयें मंगा २ कर अपने पवित्राचरणको नष्ट करने वा व्यर्थही पैसा बरबाद करनेकी जरूरत नहीं हैं. आप बेखटके अपने रोगकी व्यवस्था इनकेपास भेजिये आप बड़े ध्यानसे सब रोगोंकी व्यवस्था लिखकर उसमें कौन २ सी औषध खानी होगी उसकी सूचना करैंगे वा आपकी आज्ञा होगी तो दवाईभी त्वरितही खानेकी विधिसहित औरोंकी अपेक्षा बहुत कम मूल्यपर रवाना करदेंगे। मैं विश्वास दिलाता हूं और आशा करताहूं कि, आप इन सज्जनोत्तम वैद्यराज महाशयकी शरण लेंगे तो अवश्यही नीरोगी होकर परमहर्षको प्राप्त होंगे।

वैद्यराजजीके पास पत्र भेजनेका पत्ता—श्रीयुत **वैद्यराज कन्हैयालालजी जैन, पवित्र जैन औषधालय** पो० गिरगांव बंबई है इसी पतेसे हमेशह पत्रव्यवहार करते रहैं. वैद्यराजजीके पास नानाप्रकारके रस, धातु वगैरह समस्त प्रकारकी औषधियें तैयार हैं उनका सूचीपत्र मय अनुपानविधि सहित तैयार हो रहा है. छपनेपर आपलोगोंको प्राप्त होगा।

निवेदक जैनसमाजका हितैषीदास

पन्नालाल जैन

विविध प्रसंग।

महासभाकी वार्षिक रिपोर्टमें भूल—सिवनीसे हुलासीलाल लिखते हैं कि, हमारे यहां चिरस्थाई पाठशाला स्थापित नहीं हुई महासभाकी रिपोर्टमें असत्य जाहिर किया गया है. महासभाकी क्या यह थोड़ी गलती है।

दस रु० जुर्माना—नत्थूमल पंसारी मु. छपरौली जिला मेरठसे लिखते हैं कि, यहांपर बहुतसे भाईयोंने विदेशी खांडको खाने बेचने आदिकी प्रतिज्ञा की है और जो इस प्रतिज्ञाको उलंघन करेगा उसपर दश रुपया जुर्माना किया जायगा। धन्य है।

जबलपुरमें जैनबोर्डिंग—बा. दयालचंद अकौन्टेन्ट डिवीजनल जज्ज जबलपुर लिखते हैं कि, श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंद जे. पी. के. पधारनेसे यहां बोर्डिंगकी स्थापना हुई जिसके खुलनेका मुहूर्त २१ अप्रेल नियत हुआ. बोर्डिंगसम्बन्धी पत्रोत्तर उपर्युक्त पतेसे किया जावे। आप बोर्डिंगके मंत्री नियत हुए हैं। मध्यप्रान्तमें यह तो अच्छा हुआ परन्तु जबलपुरमें संस्कृत पाठशालाके बाबत?

विरोधका नाश—जुगराजसाहूजी सिवनीसे लिखते हैं कि, दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंदके पधारनेसे परस्पर वैरविरोध जो कि, बहुत दिनसे चला आता था और बहुत प्रयत्न करनेपरभी नहीं हटा था दूर हो गया. बड़े आनंदकी बात है। पाठको! यह वही सिवनी है जहां प्रान्तिक सभाका स्थापन होचुका था परंतु अब निद्रामें लीन है यहांपर श्रीमान् सेठ पूरणसाह, श्रीमान् सेठ रम्मासाह आदि बड़े २ धनाढ्य निवास करते हैं परन्तु वहां एक छोटीसी संस्कृत पाठशालाका प्रबन्ध नहीं है हम आशा करते हैं और विरोधका नाश उसीसमय सार्थक समझेंगे जब कि, वहां एक चिरस्थाई संस्कृत पाठशाला स्थापित हो जावेगी.

बाबू बनारसीदासजी एम. ए. सहारनपुरसे लिखते हैं कि, ता. १३ मार्च तक जैनहाईस्कूलके लिये ३३९।) का चंदा हो गया—चलो आनंदके समाचार हैं।

अपूर्व मेल—लाला जगरूपसहाय मुंसिफ शिरोहाबादजी लिखते हैं कि, मिती फागुण कृष्ण ९ सं १९६२ को मरसलगंजके निकट फरहाग्राममें मेलेके समय दक्खिनके पद्मावती पुरवारोंसे सर्व उत्तरके पद्मावती पुरवारोंने विवाह सम्बन्ध करना स्वीकार किया। अच्छा हुआ।

गर्भाधान संस्कार—लक्ष्मणलाल सेठी कारकून अदालत शेरगढ़ लिखते हैं कि, यहांपर पन्नालालजी खजांनचीने अपने दोनों पुत्रोंकी स्त्रियोंका एक सभामंडप बनाकर जैनशास्त्रानुसार गर्भाधान संस्कार किया इस संस्कारमें जैन तथा अन्यमतावलम्बी सर्व एकत्र होते थे। बड़ा हर्ष हुवा.

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। वैशाख शुक्ल १ श्रीवीर सं० २४३२। अंक १३

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ „ „ ‒)॥ पंक्ति।
१२ „ „ ‒) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ „ „ ५) रु.।
१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगें जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

जैनमित्रके ग्राहक गणोंको सूचना

हरएक पत्रवालोंका नियम है कि, अग्रिम मूल्य पाये विना पत्र नहीं भेजते परन्तु हम जैनी भाईयोंकी उदारताके कारण इस नियमका अनुकरण नहीं करते थे परन्तु एसा नियम हमारा चल नहीं सका और यह कृपा वी. पी. वापिस करनेवालोंकी है. इससे हमको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है और इसी कारण इस वर्षमें वी. पी. से रुपया मगाना अभीसे प्रारम्भ कर दिया गया है. ग्राहकगणोंसे यह रुपया पूरे सालका मगाया जाता है अतएव वे यह न समझे कि, यह ६ माहकाही रुपया मगाया जा रहा है उनको सालभरतक जैनमित्र भेजा जायगा। इस सालके आखीर याने कातिक वदी १५ तकका ग्राहकोंसे इसका मूल्य अदा कर लिया जायगा। और आगेसे अष्टम वर्षका मूल्य प्रथम अंकसेही मगाया जायगा।

मेनेजर

भूल—संशोधन

विषय	पेज	लाईन	अशुद्ध	शुद्ध
जैन सिद्धान्त	२१	४४	अग्नि सामान्य कैसा है.	अग्नि सामान्यके साथ है।

श्रीवीतरागायनमः

वैशाख शुक्ल १ श्रीवीर संवत् २४३२. वर्ष ७. अंक ११

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते। एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सच्चा–शौच।

(सुभाषित रत्नसन्दोहके " शौचनिरू-
पण " की छाया।)

यदि होना चाहो प्यारे!
संसार अपार-उदधिके पार।
सारभूत सुखकार अतिन्द्रिय,
मोक्ष सौख्यका चाहो सार ॥
तो तज सलिल-स्नान परम-
पावन प्रशान्ति-कर शीतल अच्छ।
सम्यग्ज्ञान नीर निर्मलसे,
करो नित्यप्रति निजको स्वच्छ १
नाना पापमलोंमें लिपटा,
है अन्तर्गत चित्त–विचित्र।
वह तीर्थोंमें जानेसे घिसने-
सेभी क्यों होय पवित्र? ॥
यों विचारके विज्ञानी जन,
निश्चय-पथ समझाते हैं।
पावन सम्यग्ज्ञान सलिलसे,
निजस्नान बतलाते हैं ॥ २ ॥

यद्यपि तीर्थस्नान बाह्यमल,
सकल देहका करता दूर।
अत्यन्तर्गतका तथापि उससे,
नहिं होता किंचित् दूर ॥
यों विचार करके ज्ञानी नहिं,
कहीं भटकने जाते हैं।
चारितके शीतल जलमें,
घर ही–, नित गोते खाते हैं ॥३॥
स्नान कियेसे तीर्थोंमें यदि,
सकल पाप धुल जावेंगे।
तौ फिर पुण्य पूर्व–संचितभी,
क्यों करके रह जावेंगे? ॥
एक देहमें लगे हुए मल औ,
मलयागिर मलिन-पवित्र।
जलके धोनेसे दोनों धुल
जाते हैं देखो! सन्मित्र! ॥ ४ ॥
अथवा विना पुण्यकेही
वैकुंठ-धाम यदि मिलता है।
गंगा यमुना रेवामें गोता
खानेसे सस्ता है ॥

तो फिर ये सब जलचर प्रानी,
जो पानीमें रहते हैं ।
प्यारे भाई ! सोचो, समझो,
क्यों नहिं शिवपद लहते हैं ? ॥५॥
नानाविधि कृमिकुलमें आकुल,
मलिन मैलसे भरा हुआ ।
रज-वीरजसे बना हुआ,
नानारोगोंसे घिरा हुआ ॥
निन्दनीय अपवित्र देह यह,
इसको घिसघिसके जलमें ।
जो करना चाहें विशुद्ध वे,
भूले हैं जगके छलमें ॥ ६ ॥
घृणित अपावन गर्भवासमें,
नौ महिने जो रहा विकल ॥
लज्जाकर अकथ्य न्यूनोन्नत,
मारगसे जो पड़ा निकल ॥
वह तेरा तन कृमिकुल-आकुल,
चर्ममात्रसे ढका समल ।
वार सैकड़ो शतसमुद्र जलसे,
भी होगा नहीं विमल ॥ ७ ॥

(शेष आगे ।)

नाथूराम प्रेमी ।

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

फाल्गुण शुक्ला १४ को बम्बईकी दिगम्बर जैन (लोकल) सभामें लखनौ निवासी बाबू शीतलप्रसादजीका "धार्मिकभाव और उसकी प्राप्ति करनेका उपाय" इस विषयमें एक बहुत अच्छा व्याख्यान हुआ । आपने उसमें यह बतलाया कि, हमारे भारतवर्षका खोया हुआ रत्न यही धार्मिक भाव है । इसी धार्मिकभावके कम होनेसे अथवा नष्टप्राय हो जानेसे हमारे देशकी यह दशा हो रही है । धार्मिकभाव और कुछ नहीं किंतु सम्यग्ज्ञानही है, क्योंकि यह जीवका स्वभाव है, और स्वभावकोही धर्म कहते हैं। सम्पूर्ण सुखोंकी जड़ ज्ञान है, ज्ञानकेविना सुखका होना असंभव है । ऐहिक पारलौकिक सम्पूर्ण कार्य ज्ञान अर्थात् इसी धार्मिकभावसे सिद्ध होते हैं । जापानादि देशोंने जो कुछ उन्नति की है, वह इसी धार्मिकभावके प्रभावसे की है । धार्मिकभावकी प्राप्ति करनेके मुख्य दो उपाय हैं, एक विद्याभ्यास और दूसरी सज्जनोंकी संगति । सो हमको यदि अपनी तथा अपनी जातिधर्मसम्बन्धी कुछभी उन्नति करनी इष्ट है, तो चाहिये कि, आप स्वतः विद्याभ्यास करें और अपनी प्यारी होनहार सतानको विद्याभ्यास करानेके सम्मुख करे, साथही सत्संगतिका ख्याल रक्खें । क्योंकि अच्छा विद्याभ्यास विना सत्संगतिके नहीं हो सकता।" अष्टान्हिका पर्वके कारण उस दिन श्रोताओंकी संख्या संतोषजनक थी, विदेशी भाईभी बहुतसे शामिल थे ।

लाला शीतलप्रसादजीका व्याख्यान हो चुकनेपर पं० सोहनलालजी नामक एक सज्जनका व्याख्यान हुआ । आप अमृतसरके रहनेवाले एक ब्राह्मण हैं । पहले आप वै-

ष्णव तथा आर्यसमाजमें रह चुके हैं, पीछे जैनधर्मकी उत्कृष्टता देखकर आपने जैनधर्म अंगीकार कर लिया है। व्याख्यानके अन्तमें आपने अपने बनाये हुए दो तीन पद बड़े ललितस्वरसे सुनाये, जिन्हें सुनकर श्रोताओंको बड़ा हर्ष हुआ। आप स्थानकवासी जैन (ढूंढिया) सम्प्रदायके माननेवाले हैं, इसलिये आप मोरवीकी कान्फ्रेंसके जल्सेमें शरीक होनेको आये थे और उसी निमित्तसे बम्बई आ निकले थे।

श्री श्वेताम्बर जैनकान्फ्रेंसका चौथा अधिवेशन पाटन (गुजरात) में गत २६-२७-२८ फरवरीको बड़ी धूमधामके साथ हो गया। सभापतिका स्थान शेठ वीरचन्द दीपचन्दजी सी. आई. ई. ने सुशोभित किया था। अनुमान १० हजार जैनी भाई जल्सेमें शामिल हुए थे। सभाका मंडफ बड़ा प्रभावशाली तयार किया गया था, और प्रबन्ध ऐसा उत्तम था कि, उसके कार्यकर्ताओंको विना धन्यवाद दिये नहीं रहा जाता। विशेष वर्णनीय बात यह हुई कि, अबकी बार जो इस सभाके साथ प्रदर्शनी खोली गई थी, वह बड़ी अच्छी थी। उसके दर्शनसे जाना जाता था कि, देशकी कारीगरी सब प्रकारसे नष्ट हो जानेपरभी यदि हम प्रयत्न करें तो इसे अबभी जीवित रख सकते हैं। इस प्रदर्शनीको बड़ौदा राज्यके दीवान बाबू रमेशचन्द्रदत्त सी. आई. ई. ने खोली थी।

श्रीमान् बाबू रमेशचन्द्रदत्तने प्रदर्शनी खोलते समय समझाया कि, देशकी दुर्दशाका मूल कारण देशके व्यापारका उठ जाना है। जबसे इष्टइंडियाकम्पनी इस देशसे कच्चा माल रुई, लाख, आदि ले जाकर उससे भांति २ की वस्तुएं बनाकर इस देशमें मंगाने लगी, तबसे इस देशकी कारीगरीका सत्यानाश हुआ। आप जैनी लोग धनवान हैं। अपने धनको आप बैंकोंमें भरकर न रखिये, किन्तु उससे कल कारखाने खोलकर देशकी दुर्दशाको मिटानेमें दत्तचित्त हूजिये। कल कारखानोंसे जो आमदनी होगी, वह आपके पड़े २ व्याज खानेके निकम्मे व्यापारसे अधिक होगी और अच्छी होगी। इसके सिवाय देशके लाखों भूखे अपने पेट भरकर आपको आशीर्वाद देंगे। विलायतवालोंसे मुकाबिला करनेके लिये कपड़े आदिकी कलें जारी करना जैसा जरूरी है, हाथके करघोंसे कपड़ा वनवानेके कारखाने खोलनाभी वैसाही जरूरी है। बड़ौदा राज्यमें शीघ्रही बारह कलें खड़ी होनेवाली हैं। आप लोगभी निश्चिन्त न रहिये। बड़ौदा राज्य आप लोगोंकीभी इस प्रकार प्रयत्न करनेसे सब प्रकारसे सहायता देनेको प्रस्तुत है।

पाटनकी जैनकान्फ्रेंसमें इस वर्ष विद्याके विषयमें निम्नलिखित छह प्रस्ताव पास हुए, १ प्रत्येक जैनी मातापिता अपने पुत्र और पुत्रियोंको विद्याकी शिक्षा देवें। २ जैनियोंको धार्मिक शिक्षा देनेके लिये धार्मिक पाठशालायें

खोली जावें। ३ धार्मिक शिक्षा यथार्थ रूपसे मिलनेका प्रबन्ध किया जावे। ४ जैनविद्यार्थियोंको उच्च शिक्षा देनेके लिये वजीफा वगैरह मुकर्रर हों। ५ स्थान २ में ऐसे जैनपुस्तकालय खोले जावें, जिनमें सब प्रकारकी पुस्तकें रक्खी जावें। और ६ प्रत्येक अच्छे शहरमें श्राविकाओंको विद्याभ्यास करानेका प्रबन्ध किया जावे।

श्वेताम्बरी भाईयोंकी उपर्युक्त कान्फ्रेंसकी नाई इस वर्ष स्थानकवासियों (ढूंढियों) कीभी एक नवीन कान्फ्रेंस स्थापित हुई और उसका पहला अधिवेशन मोरवी (काठियावाड़) में उक्त २६-२७-२८ फरवरीकोही हुआ। यहभी बड़ी धूमधाम और उत्साहसे हुआ। अनुमान ९ हजार सज्जन इस जल्सेमें एकत्र हुए थे। अजमेरके प्रसिद्ध रायबहादुर शेठ चान्दमलजी इस सभाके सभापति हुए थे। और मोरवीके महाराज सर बाघजी बहादुरजी सी. आई. ई. के हाथसे कान्फ्रेंस खोली गई थी। इस सभामेंभी अच्छे २ प्रस्ताव पास किये गये। स्थानकवासी भाइयोंकी यह पहली कान्फ्रेंस है, आगे उन्नति करनेकी इसे बहुत जगह पड़ी है।

सहयोगी जैनगजटने अपने १६ मार्चके अंकमें विद्वजन सभामें श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों धर्मोंके विद्वानोंको सम्मिलित करनेकी रायदी है, परन्तु ऐसा क्यों करना चाहिये, इस विषयमें उसने कोई हेतु नहीं दिया है। यदि सहयोगी अपना अभिप्राय कुछ स्पष्ट शब्दोंमें प्रगट करे, तो अच्छा हो। "मंत्री महाशय जो प्रश्नका उत्तर देवें, उसपर कमसे कम पांच सभासदोंकी सम्मति लेनी चाहिये सहयोगीकी यह सम्मति माननीय है।

जैनसमाजमें **जयजिनेन्द्र** शब्दका प्रयोग कुछ दिनोंसे चल पड़ा है। और जान पड़ता है कि, यह भिन्नधर्मी लोगोंकी जयगोपाल, जयराधाकृष्ण, जयरामादिका अनुकरण अथवा देखादेखी मात्र है। इसके चलानेवाले समाजके कुछ अर्द्धशिक्षित लोग हैं, जिन्हें नित्यकर्मादिके आर्ष ग्रन्थ देखनेको नहीं मिले हैं। यथार्थमें हमलोगोंके व्यवहार-सत्कारका शब्द जुहारु है, और इसीका हमको सदा प्रयोग करना चाहिये। जयजिनेन्द्रके व्यवहारसे एक दूसरेका सत्कार अथवा शिष्टाचार कुछभी सूचित नहीं होता और न जिनेन्द्र भगवानको जयकी आवश्यकता है, क्योंकि वे स्वयं "**जयतीतिजिनः**" हैं। आदि पुराणमें स्पष्ट लिखा है कि, "**श्रावकाः परस्परं कुर्युर्जुहारुरिति संश्रयम्**" अर्थात् श्रावकोंको परस्पर जुहारु ही करना चाहिये। इसलिये पढ़े लिखे भाइयोंको ऋषियोंकी आज्ञानुसार प्रवृत्ति करनेकीही कोशिश करना चाहिये। अपढ़ लोगोंमें अभीतक जुहारुकाही प्रयोग होता है, यह हर्षकी बात है।

सुभाषित श्लोक।

असम्भृतं मण्डनमङ्गयष्टे
नष्टं क मे यौवनरत्नमेतत्।
इतीव वृद्धोनतपूर्वकायः
पश्यन्नधोऽधोभुविवम्भ्रमीति ॥

भावार्थ—एक बुड्ढेको कमर झुकाये हुए चलते देखकर एक कविने कैसी अच्छी उत्प्रेक्षा की है; "मेरी अङ्ग यष्टि अर्थात् शरीररूपी लकड़ीका असाधारण मंडनरूप यौवनरत्न कहां खो गया, इसी लिये मानो यह बुड्ढा कमर झुकाये हुए नीचेको देखता हुआ भ्रमणकर रहा है कि, शायद कहीं जमीनपर पड़ गया होगा, तो मिल जावेगा?

न भवति सभवति न चिरं
भवति चिरं चेत्फलं विसंवादि।
कोपः सत्पुरुषाणाम्
तुल्यस्नेहे न नीचानाम् ॥

भावार्थ—सत्पुरुषोंके क्रोध और नीचोंके स्नेह प्रथम तो होतेही नहीं हैं, जो होते हैं, तो बहुत समयतक नहीं रहते और कदाचित् बहुत समयतक रहते हैं, तो उनका फल बहुत बुरा होता है। इस प्रकारसे सत्पुरुषोंका क्रोध और नीचपुरुषोंका स्नेह, दोनों समान होते हैं।

कुठारमालिकां दृष्ट्वा
कम्पिताः सकला द्रुमाः।
वृद्धस्तरुरुवाचेदं
स्वजातिर्नैव दृश्यते ॥

भावार्थ—एक लुहार अनेक कुल्हाड़ियोंको एक रस्सीमें लटकाये हुए चला आरहा था, उसे देख जंगलके सम्पूर्ण वृक्ष कांप उठे और सोचने लगे कि, न जानें अब हमारी क्या गति होगी। तब एक बूढ़े वृक्षने कहा, कि, भाइयो! घबड़ाओ मत। इन कुल्हाड़ियोंमें कोई हमारी जातिका (लकड़ीका बेंट) दिखलाई नहीं देता, इससे कोई डरकी बात नहीं है। जबतक अपनी जातिका कोई शत्रुमें जाकर न मिल जावे, तबतक शत्रु अपना कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

विविध प्रसंग।

सिवनी मालवासे ओंकारलाल माणिकचंदजी लिखते हैं कि, मु. सुसनेरमें एक सुनारको जैनमंदिरके कलशापर सोनेके पतरे चढ़ानेके लिये २७ तोला सोना दिया सुनार महाशयने ९) तोला सोना लगाकर १८) तोला उड़ा दिया और चम्पत हुए. रास्तेमें जाते २ अंधे हो गये दूसरे मनुष्योंकी सहायतासे घर पहुंचे, परन्तु अंधे बने रहे। जैनियोंको जांच करनेसे मालुम हुआ कि, सोना तो ९) तोला है बाकी १८) तोला सुनार महाशय ले गये उनके घर जातेही समाचार मिले कि, वह जबसे आया तबसे अंधा हो गया है तब बहुतसे महाशयोंने उसको समझाया कि, भाई तू हमारा सोना दे देगा तो आखें खुल जायगी। सुनाररामके मनमें आ गई, सोना १८) तोला दे दिया चट आखें खुल गई। अद्भुत समाचार है

मालुम होता है कि, अवश्य यह शासन देवका चमत्कार होगा ।

रघुनाथदासजी रहीस लिखते हैं कि, तारंगाजीके जानेके रास्तेमें खेराळु शहरमें जहांसे बैलगाड़ीमें जाते हैं २ घर जैनियोंके हैं. वहांपर जैनमंदिर नहीं था इससे यात्रियोंको बड़ा कष्ट होता था जिसे देखकर उन्हीं दो महाशयोंने वहांपर मंदिर बनवाना प्रारंभ किया है. परन्तु वे धनी नहीं हैं इसलिये समस्त यात्रियोंको उचित है कि, अवश्य कुछ न कुछ सहायता देवें श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्रमेंभी धर्मशाला अधूरी बनी पड़ी है जिसको पूरी करनेकेवास्ते भाईयोंको सहायता करनी चाहिये ।

परोपकारार्थ जैन औषधालय—इन्द्रप्रस्थ दिल्लीके मोहल्ले वैद्यवाड़ेमें उपर्युक्त नामका औषधालय स्थापित हुआ है इस औषधालयमें सर्व प्रकारकी औषधियां तयार रहती हैं और शाम सवेरे आनेवालोंको विनामूल्य दी जाती हैं ।

पंचमवर्षका द्वितीय अंक नीचे लिखे पतेपर भेजनेवालेको ।) भेज दिया जायगा ।

किरोड़ीमल मुनीम दि. जैन.
मथुरा महासभा

हमारा जाना श्री गिरनारजी तीर्थपर हुआ वहांपर धर्मशाला अधूरी बनी हुई है इससे यात्रियोंको अधिक कष्ट होता है वृक्षोंके नीचे पड़े रहते हैं. उससमय एक जैनी भाईका ४००) या ५००) का नुकसानभी हो गया था । गिरनारजी तीर्थपर पद्मावती पुरवार खूब आये और खूबही ज्योनारोंकी छनी । रात्रिको मैंने शास्त्रसभामें सर्व भाईयोंसे कहा कि, महाशयों लड्डू खिलानेकी अपेक्षा यहां धर्मशाला बना दीजिये जिससे लाभ हो. इसपर भाईयोंने इस आवश्यकतापर ध्यान दे चंदा इस प्रकार किया ।

२०१) लाला कंपिलादास थरौआ
२०१) श्रीपाल राजकुमार सर्राफ एटा
२०१) तोताराम पन्नालाल रीवां
१०१) मथुरादास नगरा ल्याली
१०१) भगवानदास सोभाराम
११) पंच गयेथू
५१) रुद्दापरशाद बावसा
४८४) फुटकर चंदा हुआ
१४००

महाशयों ज्योनारोंकी अपेक्षा यह काम कैसा उत्तम हुआ ।

रघुनाथदास सहायक
स. मंत्री. भा. व. तीर्थक्षेत्र कमेटी

सेठ हीराचंद गुमानजी जैन धर्मशाला बम्बई—में ३ माहमें जैन तथा अन्य उच्च जातिवालोंने आश्रय लिया । जिसकी संख्या इस प्रकार है ।

धर्म	यात्रा निमित्त	अन्यकार्य नौकरी व्यापार निमित्त	कुल संख्या
दिगम्बर	२२२७	१००	२३२७
श्वेताम्बर	१४७	५६	२०३
जैन			
वैष्णव	५१३	१८१	६९४
	२८८७	३३७	३२२४

२००० के उपर दिगम्बरी और १०० के उपर श्वेताम्बरी यात्रियोंकी संख्या थी. यात्राके लिये यात्री दिल्ली, आगरा, पानीपत, मंदसोर, सागर सिवनी, गुहाना वगैरह ग्रामोंसे गंजपंथ, गिरनार और जैनबद्रीके जानेको आये थे और वरार प्रान्तसे ३०० के उपर द्वारकाजी जानेके लिये वैष्णव आये थे ।

सेठजीको मान

चैत्र सुदी १४ की रात्रिको मुम्बई लोकलसभाका मासिक अधिवेशन मिष्टर लल्लूभाई प्रेमानंद एल सी-की अध्यक्षतामें हुआ जिसमें मुम्बई जैनसमाजके मुख्य २ सभासद प्रायःसभी उपस्थित थे ।

प्रथमही मंगळाचरण पूर्वक सभापतिके आसनग्रहणके अनन्तर शेरकोट निवासी वैद्यराज कन्हैयालालजी साहबने संसर्गके (सदसत्संगतिके) विषयमें सारगर्भित व्याख्यान दिया तत्पश्चात् लखनऊ निवासी बाबू शीतलप्रसादजीने श्रेष्ठिवर्य माणिकचंदजी जौहरीके दानधर्मादि कार्योंके उल्लेखपूर्वक गवर्नमेंटसे जे. पी के खिताब मिलनेका सभाकी तरफसे अभिनन्दन (हर्षप्रकाशन) किया तत्पश्चात् पंडित धन्नालालजी काशलीवालनेभी सेठजीकी दानवीरता की प्रशंसापूर्वक अनुमोदन किया जिसमें यहभी उल्लेख किया गया कि, जे. पी. पदवीका अर्थ है कि, **"शान्ति स्थापन करनेवाले जज्ज"** सो जिस दिन आपको यह पदवी मिली उसी दिनही आप समस्त गृहकार्य छोड़कर श्रीकुंडलपुर तीर्थपर यात्राके लिये गये वहांपर भाइयोंको कुछ अशान्तिथी वह दूर कियी वहांसे फिर जबलपुर गये. जबलपुरमें एक बोर्डिंग स्थापन करनेका प्रबन्ध किया और २९ विद्यार्थियोंके लिये बोर्डिंग खर्च आपने देना स्वीकृत किया । वहांसे फिर सिवनीछपारा गये. सिवनीके जैनीभाइयोंमें तीन तड़ थे जिससे पाठशाला सभा आदि कार्य प्रायः बंद थे सो वहां जाकर आपने सब भाइयोंको एकत्र करके जिनका अपराध उन्हें दंड दे कर सबको एकताके सूत्रमें बांध दिया अर्थात् सर्वत्र शान्तिस्थापन कर दी इस प्रकार आप यत्रतत्र शान्ति चाहते हैं तो फिर सर्कार गवर्नमेंटने जे. पी. का पदप्रदान किया सो अतिशय योग्यही है. और बंबईकी दिगम्बर जैनसमाजका अहोभाग्य है जो आपके कारण यह समाज व सभा धन्य हुई । आशा है कि, आप इसीप्रकार शान्ति और धर्मके कार्योंमे निरन्तर कटिबद्ध रहैंगें. तत्पश्चात् काशीकी स्याद्वाद पाठशालाके विद्यार्थियोंने संस्कृत श्लोकोंमें सेठजीको जे. पी. के पद प्राप्तिकी खुशीमें १ अभिनंदन पत्र भेजा था सो. वैद्यराज

कन्हैयालालजीने बांचकर सुनाया तत्पश्चात् सभापति साहबने अपने व्याख्यानपूर्वक वह मानपत्र सेठजीको बड़ी खुशीकेसाथ अतिशय आदरपूर्वक समर्पण किया जिसके उत्तरमें सेठजी साहब कुछ कहना चाहते थे परन्तु सभापति साहबको बाहरगांव जानेके लिये रेलगाड़ीका समय होगया था इस कारण तत्कालही सभा विसर्जन कर दी ।

पन्नालाल जैन

हर्ष है कि, ईडरप्रांतके कडियादरा ग्रामनिवासी अमथाराम पदमसी भाईने ईडर वगेरहके जैनीभाईयोंको बीमार अवस्था होनेके कारण क्षमा प्रार्थना करानेको पत्र भेजा था सो ईडर आदि कई जगहेंके २०० भाई एकत्र होगये पं. खेमचंदजीभी वहां गये थे उन्होंने सभा करके जीमनवार और कन्याविक्रयकी हानियें बताकर विद्यार्थियोंको भोजन वस्त्र देकर पांच वर्षतक पढ़ानेमें बड़े २ लाभ दिखाये जिससे सब भाईयोंने मिलकर ईडर जैनपाठशालामें बाहरके असमर्थ विद्यार्थियोंको ३) रु० माहवारी भोजन खर्चके लिये नीचे लिखे भाईयोंने बड़े उत्साहके साथ १७२१) रूप्योंका चंदा कर दिया जिसके लिये उक्त भाईयोंको हम कोटिशः धन्यवाद देते हैं. आशा है कि, अब ईडरप्रांतकी उन्नति शीघ्रही होनेवाली है

नामावली

१०१) शा- मूलचंद कामराज मुलेठी
१००) दो. परताप आशा ,,
१००) दो. पानाचंद आशा ,,
१००) कोठारी हीराचंद देवचंद गोरोल
१००) दोसी साकलचंद जवरे कुकड़िया
१००) तंबोली झवेर लालचंद चित्रोड़ा
१०१) शाह. जेठा ताराचंद ईडर
२५) बादर सूरचंद गोरोलना
२५) बाई खेमाबाई कोठारी हीराचंदनी दीकरी सावरीना
२५) कोठारी जादवजी बेचर मुलेठी
२५) शा. हरीचंद जयाचंद कड़पादरा
५१) शा. पानाचंद अमरचंद ,,
२५) पदमसी बादर ,,
२५) कस्तूर अमरचंद ,,
२५) दो. उगरचंद कुबेर टाकाटूका
२५) शा. छगन लखमीचंद गरोड़ाना
२५) हीराचंद नारायणजी पोसीना
२५) शा. सखमल उगरचंदनी दीकरी बाई जीवी कड़यादरा
२०) हीराचंद उगरचंद कड़यादरा
२०) शा. रेवचंद मूलचंद कोटड़ा
२०) शा. फतेचंद सखमल बसाईना
१५) शा. गोतम डूंगरसी जामड़ाना
११) शा. पानाचंद गणेश छोटासण
११) वीरचंद दलुचंद मुलेठी
११) फूलचंद खेमचंद पोसीना ह: उजली वाई
५) शा. रामचंद साकलचंद मुनाई
५) शा. नानचंद पदमसी चोटा सन

१७२१

श्री कुंडलपुर अतिशय क्षेत्रका मेला

(गतांकसे आगे)

परन्तु इस साल हमारे **प्रसिद्ध दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंद जे. पी.** के पधारनेसे नवीन प्रकारकी स्फूर्ति हो गई और सामाजिक, धार्मिक उन्नतिका जोश आ गया ।

सभासम्बन्धी कार्य ता. १९ मार्चसे २१ मार्चतक होते रहे और प्रतिदिन दोपहर और संध्याको दो २ अधिवेशन हुए. दिनकी सभामें प्रबन्ध और प्रस्तावादि सम्बन्धी कार्य और रात्रिको विद्योन्नति आदि विषयोंके उपदेश होते थे। श्रीमान श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद पानाचंद जे. पी. शेठ वृन्दावनजी दमोह. शेठ जगतलालजी आनरेरी मजिस्ट्रेट छिंदवाडा ये तीन सज्जन क्रमानुसार तीनों दिन सभापतिके आसनपर विराजमान हुए ।

निम्नलिखित प्रस्ताव इस सभामें स्वीकृत हुए.

१ प्रस्ताव—कुंडलपुर क्षेत्रके लिये एक सात महाशयोंकी प्रबन्ध कारिणी कमेटी बनाई जाय.

२ प्रस्ताव—मेलेकी तिथि बदलकर माह सुदी ११ से १४ तक नियत की जावे.

३ प्रबन्धकारिणी सभाकी आज्ञाविना कोई नवीन मंदिर इस क्षेत्रपर न बनाया जावे ।

४ कन्याविक्रयका रिवाज जो कहीं २ होता है बंद किया जाय.

५ असमर्थ पशुओंकी रक्षाके लिये प्रत्येक नगरमें पांजरापोल खोली जावे ।

६ सभायें स्थापित करके व्यर्थ व्यय और कुरीतिका निवारण किया जाय.

७ विलायती शक्करका त्याग किया जाय.

८ जैनविवाहपद्धतिके अनुसार विवाह संस्कार किये जांय इस प्रकार ८ प्रस्ताव स्वीकृत हुए. विद्योन्नतिके बाबत खूब उपदेश दिये गये पर कोई पाठशालाका प्रबन्ध नहीं हुवा. अनुमान २००० सज्जन एकत्र थे। आसपासकी पाठशालाओंके विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर पारितोषिक दिया गया. इस रंगढंगसे मालुम होता है कि, अगर बुंदेलखंडी लोगोंके चित्तमें आ गई तो कुछ उन्नति कर सकेंगे ।

नाथूराम प्रेमी

श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वयी दिगम्बरी पंढरपूर जैन पाठशाला.

ह्या पाठशाळेची स्थापना वीर संवत २४३१ श्रावण व॥ ९ रोजी सुरू झाली. त्या मित्तीपासून चैत्र शु॥ १ पर्यंत प्रत्येक वर्गांतील अभ्यास किती झाला त्याचा अनुक्रम पुढें लिहिल्याप्रमाणें.

संस्कृत क्लास २:—मुलें ४. पैकीं २ दोन मुलांचा अभ्यास. संस्कृत प्रथम पुस्तकाचें

३२ धडे पूर्ण, अमरकोश द्वितीय कांड मनुष्य वर्गाचे ७५ श्लोक.

संस्कृत क्लास १:—संस्कृत प्रथम पुस्तकाचे १६ धडे पूर्ण अमरकोषाचे ४९ श्लोक.

धर्म शिक्षण:—इ. पांचवीच्या मुलाप्रमाणें.

इ० पांचवी

संस्कृत:—रूपावली, समासचक्र, अमरकोष प्रथम कांड स्वर्गवर्ग संपूर्ण.

धर्म शि०:—रत्नकरंडकाचे चार अधिकार अन्वय अर्थासह व फक्त पाठ पांच अधिकार. पंचपरमेष्ठी गुण पुस्तक संपूर्ण. महावीर चरित्र वाचन संपूर्ण . जैन धर्म सुधासागरामधील निवडक वेंचे तोंडपाठ.

मराठी:—वाचन पृष्ठ ८०, मो. वाचनसार १४ पाने. पंचस्तोत्रांतील भक्तामरस्तोत्र अन्वय अर्थासह पाठ. श्रावक प्रतिक्रमण २९ कविता पाठ. व्याकरण प्रयोगापर्यंत.

गणीत:—सरळव्याज, चक्रवाढव्याज, वर्गमूळ, घनमूळ पंचराशीक व तोंडचे हिशेब लिमयाच्या अंकगणितांतील सर्व चाली पाठ.

इतिहास भूगोल:—मार्सिडनचा इतिहास, पानें १ ते २९ व ११० ते १४० पर्यंतची माहिती. भूगोल हिंदुस्थानच्या भूगोलाच्या ६ सहा पानांची माहिती. व एशिया खंडांतील तुर्कस्थान ते सीलोनपर्यंत पांच देश.

इ० तिसरी.

मराठी बालबोध वाचन १०२ पानें, मोडी वाचन ८७ पानापर्यंत.

श्रावकप्रतिक्रमणांतील कविता २६ फक्त पाठ. व क्रियामंजरींतील कविता १६ सान्वयार्थ.

व्याकरण:—११ रुळ.

संस्कृत—रूपावली नपुंसकलिंगें संपूर्ण.

भूगोलपत्रक—मुंबई इलाख्याचें पूर्ण.

गणीत:—उतरती व चढती भांजणी, विविध बेरीज, वजाबाकी, गुणाकार, भागाकार, रेघांची बेरीज, वजाबाकी, गुणाकार.

धर्म शि०:—महावीर चरित्र फक्त वाचन संपूर्ण. पंचपरमेष्ठी गुण पुस्तक पानें ७ जैन धर्म सुधासागरांतील कांहीं वेचें तोंडपाठ. तीन चोविसी, चक्रवर्ती, कुलंकर, नारायण, प्रति नारायण, बलिभद्र, विहरमान तीर्थंकर, पंच परमेष्टीचीं नांवें, सप्तव्यसन, दश धर्म, कामदेव.

इ० दुसरी.

मराठी बालबोध वाचन:—पानें २९, मोडी वाचन. १९ पानें.

कविता:—बालबोध पुस्तकांतील २४ व मोडींतील ४ कविता.

भूगोल:—१६ पानें.

गणीत:—बेरीज, वजाबाकी, गुणाकार.

धर्म शि०:-पंचपरमेष्ठीनाम, विहरमान तीर्थंकर, तीन चोवीसी, कुलंकर, नारायण, प्रतिनारायण, बलिभद्र, चक्रवर्ती, सप्तव्यसनें, दशधर्म.

इ० पहिली.

बालबोध वाचनः-पानें २९

धर्म शि०-तीन चोविसी, नारायण प्रतिनारायण, बलिभद्र.

उजळणीः-पाडे, पाव, निम्मे, सव्वे, दीडे, अडचे इन्फन्ट.

उजळणीः-अंक १०० व दहा पाडे.

धर्म शि०?-पंचपरमेष्ठीनाम, वर्तमान चोविसी.

या शाळेंत एकंदर मुलें ४२ आहेत पैकीं ३७ चें दररोजचें अॅव्हरेज पडतें.

मिती चैत्र शु॥ १ वीर संवत् २४४२ रोज रविवार.

कस्तुरचंद गुलाबचंद शाहा.
पंढरपूर.

श्रीः

कर्तृवाद (पूर्वमुद्रितावशिष्ट)

"तुष्यतुदुर्जनः" न्यायसे किसी प्रकार क्षणमात्रके वास्ते अदृश्य पदार्थोंमें ईश्वरका सद्भावही मान लिया जाय तोभी इसमें अदृश्यपना क्यों है? क्या उसके अदृश्य होनेमें शरीराभाव (अर्थात् शरीर नहीं होनेसे) किंवा विद्याका वल (सामर्थ्य) अथवा जातिविशेष कारण है? अर्थात् कोईजातिही ईश्वरीकी ऐसी है कि, दृष्टिगत नहीं हो सके। यदि ईश्वर के अदृश्य होनेमें शरीराभावही कारण माना जाय तो ईश्वरमें कर्तृता युक्तिगत नहीं हो सकती क्योंकि मुक्तात्माओंके सदृश शरीर रहित होनेसे अर्थात् जिस प्रकार मुक्तात्मजीव अशरीर होनेसे वे कर्त्ता नहीं हो सकते इसी प्रकार अशरीरईश्वरमेंभी कर्तृता नहीं बन सकती। यदि कहा जाय कि, अपने शरीर बनानेमें ज्ञान इच्छा प्रयत्नके आश्रयपनेसेही कर्तृता जिस प्रकार देखी जाती है तथैव ईश्वरमेंभी शरीर नहीं होनेपर कर्तृता, केवल ज्ञानेच्छाप्रयत्नाधारतासेही सिद्ध हो सकती है सो यह कहना असङ्गत है क्योंकि शरीर सम्बन्ध होनेपरही ज्ञानेच्छादिमें शरीर करनेकी प्रेरणा है शरीराभावमें नहीं यदि शरीराभावमेंभी प्रेरणा मानी जाय तो मुक्तात्माओंकेभी प्रेरणा होनी चाहिये। फलित, शरीर सम्बन्धवालेही ज्ञानादिकोंके साथ कार्य कारणत्व व्याप्ति है शरीरको अन्यथा सिद्ध माननेपरभी प्रतिज्ञातसिद्धि नहीं हो सकती क्योंकि शरीराभावमें ज्ञानादिकी उत्पत्तिही सिद्ध नहीं है ज्ञानादिकी उत्पत्तिमें शरीर कारण है। यदि शरीराभावमेंभी ज्ञान माना जाय तो मुक्तात्माओंकोभी ज्ञान हो जायगा ऐसा होनेपर सिद्ध नष्ट होता है। इसलिये शरीर होनेपरही ज्ञानादि होते हैं तभी शरीरादिकी कर्तृता हो सकती है ततः अशरीरमें कर्तृता नहीं बनसकती विद्यावल आदि अदृश्यतामें हेतु माना जाय तो कभी तो दिखाई पडनीही चाहिये क्योंकि विद्याधरोंके अदृश्य

होनेपरभी सर्वदा अदृश्यता नहीं पाई जाती कभी २ दृश्यभी होते हैं । जिस प्रकार पिशाचादि विद्यावलसे अदृश्य होनेपरभी कभी कभी दीखतेभी हैं । जातिविशेषभी अदृश्यतामें कारण नहीं हो सकता क्योंकि, जाति अनेकोंमें रहनेवाली होनेसे एकमें जातिविशेष संभवही नहीं हो सकता (तदुक्तमीश्वरत्वं न जातिरिति) । अस्तु थोड़े समयके वास्ते अदृश्यभी मान लिया जाय तोभी क्या सत्वमात्रसेही क्षित्यादि कर्तृता ईश्वरमें है किंवा ज्ञानवान् होनेसे किंवा ज्ञानाश्रय होनेसे अथवा ज्ञानपूर्वक व्यापार होनेसे अथवा ईश्वरता होनेसे? सत्वमात्ररूपसे कर्त्ता माननेमें कुलालादिभी जगतके कर्त्ता हो सकते हैं क्योंकि सत्तामात्र समानही है । ज्ञानवान् होनेसे जगत्कर्त्ता माना जाय तो योगीभी जगत्कर्त्ता हो सकते हैं क्योंकि वे भी ज्ञानवान् हैं । ज्ञानका आश्रय होनेसे ईश्वरमें कर्तृता मानी जाय तोभी बन नहीं सकती क्योंकि ज्ञानाश्रयताही नहीं है तो उस हेतुसे कर्तृता सिद्धि कैसी, विनाशरीर ज्ञानाश्रयता नहीं हो सकती यह पूर्वमें कह चुके हैं । ज्ञानपूर्वक व्यापार होनेसे कर्तृता माननाभी उचित नहीं क्योंकि व्यापार, काय, मन, वचनके आश्रय है तथा काय मन वचन अशरीरके सम्भव नहीं अतएव ज्ञानपूर्वक व्यापारभी नहीं बन सकता । ऐश्वर्य होनेसे कर्त्ता माना जाय तो क्या ऐश्वर्य अर्थात् ज्ञातापना अथवा कर्तापना किंवा दूसराही कुछ? यदि ज्ञातापना तोभी क्या सामान्य ज्ञातापनाही किंवा कुछ विशेष ? यदि सामान्य ज्ञातापनाही कर्तृत्वमें हेतु माना जाय तो हमभी होसकते हैं । यदि ज्ञानविशेषभी माना जाय तो ज्ञानविशेषसे उसमें सर्वज्ञता आसकती है ईश्वरता कार्यकर्तृत्वमें क्या इससे होसकती है । यदि कर्तापनाही ऐश्वर्य माना जाय तो ऐसा ऐश्वर्य कुम्भकारोंमेंभी समान है ईश्वरमेंही क्या विशेष जो उसको जगत्कर्ता मानना कुम्भकारको नहीं । अन्यभी कोई ऐश्वर्य हेतु नहीं हो सकता क्योंकि इच्छा प्रयत्नको छोड़कर अन्य कोई ऐश्वर्य साधन ईश्वरमें हैही नहीं ! इच्छा प्रयत्नभी निम्नकथनसे बन नहीं सकते । तथाहि इन दोषोंपर दृष्टिमन्द करनेपरभी अन्य प्रश्न उपस्थित होते हैं वे ये क्या ईश्वरकी जगत् निर्माण करनेमें यथारुचि प्रवृत्ति होती है ? या मनुष्योंके शुभाशुभ कर्मोंके परवशपनेसे किंवा करुणासे या क्रीडासे अथवा निग्रह अनुग्रह करनेके वास्ते या स्वभावसेही ? यदि विनाइच्छाके यथारुचिही प्रवृत्ति मानी जाय तो कदाचित् दूसरे प्रकारभी (अन्यथाभी) बननी चाहिये । कर्मपरवशतासे मानी जाय तो ईश्वरकी स्वतन्त्रता पलायमान होती है । करुणासे मानी जाय तो ईश्वर सर्व शक्तिमान् होनेसे सर्वदा सर्व जीव सुखीही रक्खे दुःखी क्यों देखे जाते हैं ? यदि कहा जाय कि, ईश्वर इसमें क्या करै प्राणी पूर्वोपार्जित कर्मोंके परिपाकसे दुःखका अनुभवन करते हैं।" तो मनुष्योंके पूर्वोपार्जित कर्मोंसेही कार्यकी सिद्धि होते हुएभी ईश्वरको कर्त्ताकल्पित करना निष्प्रयोजन है ।

अपूर्ण

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। ज्येष्ट वद्य १ श्रीवीर स० २४३२। अंक १४

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है ।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति ।

६ ,, ,, -)॥ पंक्ति ।

१२ ,, ,, -) पंक्ति ।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु. ।

६ ,, ,, ५) रु. ।

१ तोले तककी ८) रु. ।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे ।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये ।

८ चिट्टी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर ।

सूचना

१ हरएक पत्रवालोंका नियम है कि, अग्रिम मूल्य पाये विना पत्र नहीं भेजते परन्तु हम जैनी भाईयोंकी उदारताके कारण इस नियमका अनुकरण नहीं करते थे परन्तु एसा नियम हमारा चल नहीं सका और यह कृपा वी. पी. वापिस करनेवालोंकी है. इससे हमको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है और इसी कारण इस वर्षमें वी. पी. से रुपया मगाना अभीसे प्रारम्भ कर दिया गया है. ग्राहकगणोंसे यह रुपया पूरे सालका मगाया जाता है अतएव वे यह न समझे कि, यह ६ माहकाही रुपया मगाया जा रहा है उनको सालभरतक जैनमित्र भेजा जायगा । इस सालके आखीर याने कातिक वदी १५ तकका ग्राहकोंसे इसका मूल्य अदा कर लिया जायगा । और आगेसे अष्टम वर्षका मूल्य प्रथम अंकसेही मगाया जायगा ।

२ हमारे बहुतसे भाई ऐसे पोष्टकार्ड भेजते हैं कि, जिनपर ठिकानेकी तरफ दाहिनी ओरके अर्धभागमें जो कि, सर्कारकी तरफसे सिर्फ ठिकाना लिखनेके लिये नियत किया गया है, कार्ड बेचनेवालोंके ठिकाने वगैरह छपे रहते हैं जिससे वैरंग हो जाते हैं इसलिये ऐसे पोष्टकार्ड न भेजें अन्यथा वापिस कर दिये जांयगे ।

श्रीवीतरागायनमः

ज्येष्ठ वद्य १
श्रीवीर संवत्
२४३२.

वर्ष ७.
अंक
१४

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते। एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥१॥

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

एक रोगी किसी कष्टसाध्य रोगसे ग्रसित था. किसी दयालु वैद्यने कटुक अनोपानके साथ कोई रस विशेष उक्तरोगीको दिया, रोगीने औषधि ग्रहण तो कर ली किन्तु मुंह कडुआ हो गया, फिर क्या था लगे रोगीराम वैद्यजीको गालियां देने, वैद्यजीने कहा कि, महाशय! यह तो बताइये कि, आपके रोगको कुछ शान्ति है या नहीं! रोगीराम बोले और तो सब कुछ ठीक है आपकी दवाभी अच्छी है और रोगकोभी शान्ति है परन्तु आपने कटुक अनोपानमें क्यों दीनी आपकी ऐसी क्रियासे आपकी सभ्यतामें बट्टा लगता है. वैद्यजी बोले महाशय! क्षमा कीजिये! कटुक अनोपानमें औषधि देनेका केवल यही प्रयोजन था कि, आपका रोग शीघ्रही उपशम हो जाय, मिष्ट अनोपानसे अधिक दिन लगनेकी संभावना थी. खैर जो हुआ सो हुआ लेकिन आगेसे फिर एसा न करना. "बहुत अच्छा"! कहकर वैद्यजीने घरका रास्ता लिया।

आजकल ठीक ऐसीही अवस्था हमारे जैनसमाजकी हो रही है. हमारे कितनेही अंगरेजीख्वाहोंको जैनियोंमें अंगरेजी कालेज बनानेका रोग होगया था. जैनमित्रद्वारा कटुक अनोपानमें उनको औषधि दी गई, हर्षका विषय है कि, उन्होंने औषधि ग्रहण कर ली और अब उनका रोगभी धीरे धीरे उपशम हो रहा है, आशा है कि, अब वे शीघ्रही स्वास्थ्यलाभ करेंगे, परन्तु हमारे नवयुवक कटुक अनोपानकी कटुकतासे वे तरह बिगड़े हैं, परन्तु हम उन दीर्घदर्शी महाशयोंसे क्षमा मांगते हैं और प्रार्थना करते हैं कि, महाशयजी! यह उसही कटुक अनोपानका माहात्म्य है कि, आपका रोग इतनी शीघ्रतासे पलायमान हो रहा है, अन्यथा मिष्ट अनोपानद्वारा स्वास्थ्यलाभ करनेके लिये वर्षोंकी आवश्यकता थी.

सहयोगी जैनगजट अंक ८ में बाबू चंदूलालजी वकीलने "समझका फेर" शीर्षकलेखमें सम्पादक जैनमित्रपर बड़े कठोर शब्दोंमें कटाक्ष किया था, और संस्कृतज्ञ पंडितोंको खुल्लमखुल्ला गालियां सुनाई थीं, उस समय अंगरेजी जैनगजट आनन्द मौनमें मग्न हुए थे, किन्तु जब जैनमित्र अंक १० में "अकलके दुश्मन" शीर्षक लेखद्वारा उनको जैसेका तैसा उत्तर दिया गया उससमय सहयोगी अंगरेजी जैनगजट जामेसे बाहर निकल पड़ा. क्या न्याय इसकोही कहते हैं? न्याय तो तवथा जब पहले "समझका फेर" की समालोचना करता और पीछे "अकलके दुश्मन" की

सहयोगी हिन्दी और अंगरेजी जैनगजट एसोसियेशनकी हिमायत करते हुए लिखते हैं कि, वह अंगरेजी पढ़ोंमें धार्मिक शिक्षाके प्रचारसे गाफिल नहीं है, क्या सहयोगी बतासक्ते हैं कि, एसोसियेशनने कौन २ से अंगरेजी पढ़े नवयुवकोंको कौन २ से धर्मशास्त्र पढ़ाकर किस विद्वान्द्वारा उनकी परीक्षा ली, और यह विषय उसकी कौनसी रिपोर्टमें प्रकाशित हुआ है.

सहयोगी अंगरेजी जैनगजट लिखता है कि, "जैनगजटमें अंगरेजीमें जैनसिद्धान्तपर लेख निकलते हैं तथा जैनग्रंथोंका अंगरेजीमें अनुवाद हो रहा है, क्या यह धार्मिक शिक्षा नहीं है"? क्या खूब! जैनियोंकी मातृभाषा तो हिन्दी और उनको धर्मशिक्षा दी जाय अंगरेजीमें, परन्तु हमको अभी जैनियोंमें एसे अनुवादक विद्वानोंके सद्भावमेंही सन्देह है कि, जो जैनसिद्धान्तके पूरे मर्मज्ञ होकर अंगरेजीके अच्छे विद्वान् होंय? आश्चर्य तो इस बातका है कि, अनेक जैनशास्त्रोंका हिन्दी अनुवाद मौजूद है और जैनियोंकी मातृभाषाभी हिन्दी है, तथा अंगरेजी पढ़ोंमें आधेसे ज्यादे ऐसे निकलेंगे कि, जो हिन्दी लिपीभी जानते हैं, अब रहे कुछ थोड़ेसे एसे महाशय जो हिन्दी लिपि नहीं जानते, किन्तु यदि वे हिन्दी लिपि सीखना चाहें तो हिन्दी लिपि इतनी सुगम है कि, जो तीन दिनमें अच्छी तरह सीखी जा सक्ती है। परन्तु इस छोटेसे परिश्रमको गवारा न करके हमारे भाइयोंने जैनग्रंथोंको अंगरेजीमें अनुवाद करनेका साहस किया है कि, जिसमें कितनीही जोखमकी संभावना है. आजकल भारतवासी विलायती ग्रंथोंका देशभाषामें अनुवाद करके अपनी सन्तानको विज्ञानादिक विद्या सिखानेका प्रयत्न कर रहे हैं परन्तु हमारे जैनीभाई अपने नवयुवकोंको अपनी मातृभाषाके धर्मशास्त्रोंका विलायती भाषामें अनुवाद करके अभ्यास कराकर धर्मज्ञ बनाना चाहते हैं! हां! अंगरेजोंमें अपने धर्मका प्रचार करनेके लिये किसी अपेक्षासे जैनग्रंथोंका अंगरेजीमें अनुवाद करना अच्छा होसक्ता है परन्तु वह समय अभी बहुत दूर है पहले अपने सोते हुए भारतीय जैनियोंको जगा

लीजिये, अभी अपने अंगरेजी पढ़े भाइयोंको जैनसिद्धान्तोंसे अनुवासित कर लीजिये पश्चात् आपका वह परिश्रम **प्रशंसनीय** होगा.

सहारनपुरसे महाविद्यालयके विद्यार्थी भाग गये थे उसका प्रबन्ध करनेकेवास्ते मथुरामें प्रबन्धकारिणी सभाका अधिवेशन हुआ था जिसमें महाविद्यालयका स्थान सहारनपुरही कायम रहा. बहुतसे महाशयोंकी एसी समझ है कि, चाहे विद्यार्थी रहें या न रहें परन्तु विद्यालय सहारनपुरही रहना चाहिये. महाविद्यालयके सहारनपुर जानेका कारण है सहारनपुरवालोंका चन्दा देना, और चन्दा देनेवालोंकी शर्त है सहारनपुरमें जैनकालेज और हाइस्कूलका खुलना कैसे अच्छे प्रस्ताव हैं ?

सुननेमें आया है कि, मथुराकी प्रबन्धकारिणी सभामें बाबू बनारसीदासजी महाविद्यालयके दुष्प्रबन्धके कारण जॉइन्ट जनरल सैक्रेटरीके पदसे अलग कर दिये गये हैं. क्या यह बात सत्य है ? यदि सत्य है तो इनके स्थानपर कौनसे महाशय नियत हुए.

महाविद्यालय भंडारका ट्रस्ट होने तथा उसका प्रबन्ध करनेके लिये एक प्रबन्धकारिणी सभा नियत करनेकी बड़ीभारी आवश्यकता है. क्या मथुराकी प्रबन्धकारिणी सभाके अधिवेशनपर इस विषयमें कुछ विचार हुआ है ?

बहुत पहले बंबई सभाकी तरफसे एक परीक्षालय स्थापित हुआ था जिसको बंबई सभाने महासभाके सुप्रबन्धपर मोहित होकर उसको अर्पण कर दिया था, और जबतक उसका प्रबन्ध बाबू बच्चूलालजीके हाथमें रहा तबतक वह ठीक ठीक चलता रहा किंतु बाबू बच्चूलालजीसे वियोग होतेही परीक्षालय डंबाडोल होगया. महासभा परीक्षालयके प्रबन्धसे कुछ उपेक्षित सी रही और इसही कारणसे वह अबतक अवनत दशामेंही पड़ा हुआ है. बंबई सभाने महासभाकी इस प्रकार उपेक्षा देखकर अपना स्वतन्त्र परीक्षालय स्थापन किया है जिसके कि क्रम और नियम पाठकोंको जैनमित्रद्वारा पहुंच चुके हैं.

बंबई सभाने अपने परीक्षालयके प्रबन्धकेवास्ते आठ महाशयोंकी एक सब कमेटी बनाई है तथा प्रान्तभरकी पाठशालाओंमें दौरा करनेके लिये एक निरीक्षक (इंस्पेक्टर) शीघ्रही नियत होनेवाला है जिसके द्वारा बालबोध पाठशालाओंकी मौखिक परीक्षा ली जायगी तथा प्रवेशिका पाठशाला, विद्यालय और महाविद्यालयोंमें परीक्षालयका क्रम जारी कराया जायगा, और जहांपर पाठशाला नहीं हैं वहां पाठशाला स्थापन करानेका उद्योग किया जायगा.

परीक्षालयका क्रम समस्त पाठशालाओंके वास्ते प्रायः नवीन है उसमेंभी कितनीही पुस्तकें अभी तैयार करानी है इस कारण इस वर्ष परीक्षा नहीं ली जा सक्ती किन्तु इस वर्ष निरीक्षकद्वारा समस्त पाठशालाओंका समुचित प्रबन्ध कराया जायगा.

प्रांतिकसभा बंबईका वार्षिक अधिवेशन कईकारणोंसे तीन वर्षसे रूक रहा है परन्तु यह रुकावट अब शीघ्रही समाप्त होनेवाली है, इस बार प्रांतिकसभाका वार्षिक अधिवेशन आगामी माघ शुक्ला १३–१४–१५ को श्रीगजपंथाजीके मेलेपर होयगा. यह अधिवेशन किसी महाशय विशेषके निमंत्रणसे नहीं होगा किन्तु अधिवेशनका प्रबन्ध सभाकी ओरसेही किया जायगा.

महामंत्री मुंशी चम्पतिरायजी सेठ हीराचंद नेमिचंदजीको लिखते हैं कि, सहारणपुरसे सिर्फ चंदूलालजी वकील मथुराकी प्रबन्धकारिणी सभामें आये थे । झगड़े सब तय हो गये हैं परन्तु वहांकी नाइत्तफाकीके कारण कार्य होनेकी बहुत कम आशा है । चंदेका रुपया इकठ्ठा न होनेके मूल कारण बाबू बनारसीदासही हैं. आप खुदही सेक्रेटरी बन गये और लोगोंको बुराभला कहने लगे । समझदार मीटिंगमें आते नहीं भोले आदमियोंसे जिसप्रकार चाहा पास करा लिया । उनके प्रस्ताव फजूल और अख्तयारसे बाहर थे । हमने सोचा था कि, नये अंग्रेजी दाँ कुछ करके दिखावेंगे परन्तु यहां तो सिवाय झगड़ेके काम कुछ नहीं है । मेरे उपर ईलजाम आता है और अधिवेशनके समय मेरी कुछ चलती नहीं. मेरा दिल टूटता जाता है और अब उत्साहभी नहीं रहा ।

अर्जुनलालजी बी. ए. महाविद्यालयकी मेनेजरीको प्रायः छोड़ चुके हैं इस कारण वे कहते हैं कि, मैं जैनमित्रकी संमत्यनुसार महाविद्यालय चाहता हूं और अंग्रेजी वाज दो चार .... जो कि, महासभाके मुखियासे बने हुए हैं वे ऐसा नहीं चाहते, मेरी रायमें एक महासभाके विरुद्ध महासभा खड़ी हो और वह अंग्रेजीबाजों, विद्वानों व श्रीमानोंकी बहु सम्मति इकठ्ठी करके इस विषयमें कृतार्थ होवे. और वर्तमान महासभाकी प्रबंधकारिणी कमेटीको एकदम रद्द रक्खे, कमेटीका दूसरा संघटन करै इत्यादि । एसा जवाहिरलालशास्त्री जयपुरके पत्रसे मालुम हुआ ।

सहयोगिनी लाहौरी पत्रिकाको अब चश्मा लगाकर देखना चाहिये कि, जैनमित्रके मगजको गर्मी चढी है या अंगरेजी दाँ नवीन प्रबन्धकोंके, तथा उल्टे लेख जैनमित्रके थे या महाविद्यालयके नवीन प्रबन्धकोंका प्रबन्ध उल्टा था ?

कर्तृवाद (पूर्वमुद्रितावशिष्ट)

क्योंकि कर्मके वशीभूतही माननेसे जगतकी उत्पत्ति प्रलय सुखदुःख आदि धर्मोका विकार द्रव्योंमें उत्पन्न होना सम्भव है। इसलिये करुणासे ईश्वरका जगत् निर्माण करना कदापि प्रमाण संगत नहीं हो सकता। यदि चतुर्थ पञ्चमपक्ष अर्थात् क्रीडाकारित्व तथा निग्रहानुग्रह करनेका प्रयोजन ये दो पक्ष उसको उत्पत्तिमें कर्त्ता बननेके हेतु माने जाय तो वीतरागता तथा द्वेषाभाव ये दोनों धर्मोका मानना ईश्वरमें नहीं बन सकता क्योंकि क्रीडा करनेवाला होनेसे ईश्वरमें रागका सद्भाव मानना पडैगा जिस प्रकार बालक क्रीडा करता है इसलिये वह उस समय राग सहित समझा जाता है। एवं अनुग्रह करनेवाले राजाके समान अनुग्रह कर्त्ता होनेसेभी रागवान् हो सकता है। तथा निग्रहका विधाता होनेसे द्वेषवान्भी ईश्वर मानना पडैगा यथा राजा, इसलिये पूर्वोक्त दोषग्रामका आराम बन जानेसे कर्तृता निर्दोषईश्वरको सदोष बनानेवाली समझ कोईभी अङ्गीकार नहीं कर सकता। यदि ईश्वरका स्वभावही कर्तृरूप माना जाय तो क्या दोष है? इस प्रश्नका उत्तर यदि स्वभावतःही कर्त्ता माना जाय तो जगत्मेंभी स्वभाव माननेसे उत्पत्ति आदि जगत्की सम्भव होनेपरभी असम्भव तथा अदृष्ट ईश्वरकी कल्पना कहांतक सत्य है यह पाठकोंकी बुद्धिपर निर्भर करते हैं। ऐसा नहीं हो सकता कि, जगत्में यह स्वभाव नहीं हो सकै और ईश्वरमें सम्भव हो सकै। यदि यह स्वभावही है तो कौन किसमें रोक सकता है (तदुक्तं स्वभावोऽतर्कगोचरः)। इस प्रकार कार्यत्व हेतुको सर्वतः विचारनेपर भी बुद्धिमान् ईश्वरको कर्त्ता मना नहीं सकता। इसीप्रकार सन्निवेष विशेष अचेतनोपादानत्व, अभूतभावित्व, इत्यादिक अन्यभी हेतु आक्षेपसमाधान समान होनेसे ईश्वरको कर्त्ता सिद्ध नहीं कर सकते हैं॥

क्षित्यादिकोंको बुद्धिमत्कर्तासे जन्य बनानेके लिये बतलाये पूर्वोक्त हेतुओंमें पूर्वोक्त दोषोंके अतिरिक्त अन्य प्रकारभी दोषोंकी उद्‌घटना हो सकती है तथाहि, पूर्वोक्त हेतु कुलालादि दृष्टान्तोंसे शरीर असर्वज्ञ असर्वकर्तृत्व आदि विरुद्धसाधक होनेसे विरुद्ध हैं। यदि वन्हिके अनुमानमेंभी कहा जाय कि, इतने विशेष धर्मोकी समानता मिलानेपर वन्हिकाभी अनुमान नहीं बन सकेगा सो यह कहना वन्हिके अनुमानमें दोषोत्पादक नहीं क्योंकि वन्हि विशेष महानसीय पर्वतीय वनोत्पन्न तृणोत्पन्न तथा पर्णोत्पन्न आदि सभी वन्हि कहींपर प्रत्यक्ष होनेसे सर्व वन्हिमात्रमें धूमको व्याप्त निश्चय करनेसे धूम सामान्यही सामान्यवन्हिका अनुमापक हो सकता है तथा सर्व कार्योंमें बुद्धिमत्कर्तृता उपलब्ध नहीं होती जिससे कि, कार्यत्वहेतुको यावत्कार्यविशेषसे व्याप्त मानकर कार्यत्वहेतुकी बुद्धिमत्कर्तृजन्यत्वके साथ व्याप्ति मान सकै। यदि कहो कि, सर्व जगत्‌ही उपलब्ध नहीं है तो

उसका बुद्धिमत्कर्तासे उत्पन्न होना कैसे उपलब्ध कर सकते हैं अतएव विना अवधारण कियेभी कहींपर कार्यको कर्तासे जन्य देखकर सर्वत्र कार्यत्वहेतुकी बुद्धिमत्कर्तृजन्यताके साथ व्याप्ति मान लेते हैं। इसका उत्तर। उपलब्धभी क्षितिपर्वत आदि अनेक कार्योंमें कर्तृविशेषका अभाव देखते हुए कार्यमात्रके दो विभाग कल्पना करने चाहिये एक तो बुद्धिमत्कर्ताओंसे जन्य यथा घटादि दूसरे वृक्ष वन पर्वत आदि—जो किसी अन्यसे उत्पन्न नहीं हुए किन्तु स्वतःही उत्पन्न तथा विलीन होते हैं। इस प्रकार यदि सर्व दृश्य पदार्थोंमें कर्तृजन्यता उपलब्ध होती तो अदृश्य पदार्थोंमेंभी कल्पना करना कदाचित् सम्भव होता परन्तु दृश्यकार्योंमेंही दो विभाग देखते हुए एक विभाग लेकर व्याप्ति बनाना मान्य नहीं हो सकता है॥ ये हेतु व्यभिचारीभी हैं क्योंकि विद्युत् आदि कार्योंका प्रादुर्भाव बुद्धिमत्कर्ताके विनाही होता है। जो हेतु लक्ष्यसे अधिक देशमें निकल जाता है वह व्यभिचारी कहा जाता है। यहांपरभी यह कार्यत्वहेतु अपने लक्ष्यमात्र जो बुद्धि मत्कर्तृ जन्य पदार्थ उनसे बहिर्भूत जो विनाकर्त्ताके जन्य विद्युत् आदि कार्य उनमें फैल जाता है। तथा स्वप्नादि अवस्थामें बुद्धिमत्कर्ताके विनाही जो कार्य उत्पन्न होते हैं उनमें व्याप्त होनेसेभी अलक्ष्यमें गमन करनेसे व्यभिचारी है। एवम् प्रत्यक्ष आगम बाधित विषयमें प्रवृत्त होनेसे **कालात्ययापदिष्ट** नामक दोषसेभी ये हेतु दुष्ट हैं। एवं प्रकरणगतचिन्ता उत्पादक हेत्वन्तर दीखनेसे **प्रकरणसम** नामक दोषसहितभी ये हेतु हो सकते हैं। तथाहि। ईश्वर जगत्का कर्ता नहीं हो सकता क्योंकि उपकरण (सामग्री) रहित होनेसे यथा चक्रदण्ड सूत्र आदि उपकरण रहित कुलाल घटादि कार्योंका कर्ता नहीं हो सकता। उपकरणका अभाव ईश्वरके प्रसिद्धही है। एवं व्यापक होनेसेभी तथा एक होनेसेभी कार्यकर्ता नहीं हो सकता। आकाशादि जिस तरह व्यापक तथा एक होनेसे कार्योंके कर्ता नहीं हो सकते एवं ईश्वरमें भी एकत्व तथा व्यापकता है अत एव कार्योंका कर्ता नहीं हो सकता। नित्य होनेसे ईश्वरको उपकरण आदिकी आवश्यकता नहीं है ऐसा कहनाभी ठीक नहीं क्योंकि ईश्वरमें नित्यताही नहीं वन सकती है यह आगे दिखाया जाता है।

यदि कहा जाय कि, ईश्वरको नित्य होनेसे कुलालवत् दृष्टान्त नहीं हो सकता, सोभी ठीक नहीं क्योंकि ईश्वरमें नित्यता सिद्ध नहीं हो सकती तथाहि क्षित्यादि कार्योंके करनेके समयमें स्वभावका भेद संभव होनेसे ईश्वर नित्य नहीं हो सकता क्योंकि जो प्रच्युत न हो तथा उत्पन्न नहो स्थिर हो एक स्वभावही सदा रहै और कूटस्थ हो अर्थात् सर्वदा अविनाशी रहै उसको नित्य कहते हैं। ईश्वर ऐसा कदापि सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि जो सर्वदा सृष्टिके संहार तथा उत्पत्ति आदि विरुद्ध कार्योंका करनेवाला है वह एक स्वभाववाला कैसे रह सकता है। यदि सदा एक

स्वभाववालाही माना जाय तो उत्पत्ति तथा नाश आदि विरुद्ध कार्योंका कर्त्ता नहीं बन सकता। यदि ईश्वरके ज्ञानादि गुणही नित्य माने जांय सोभी ठीक नहीं क्योंकि ज्ञानभी हमारे समान होनेसे नित्य नहीं माना जा सकता नित्य माननेमें प्रतीति नहीं बनती तथा ईश्वर ज्ञान नित्य नहीं है ज्ञानत्व होनेसे अस्मदादिज्ञानवत् इस अनुमानसेभी विरोध है इस कथनसे ईश्वर ज्ञान नित्य है ऐसा जो वादीने प्रथम कहा था वह परास्त हुआ। ऐसाही श्लोकवार्तिकालङ्कारमें कहा है "बोधो न वेधसो नित्यो बोधत्वादन्य बोधवत्। इति हेतोरसिद्धत्वान्न वेधाभारणं भुव इति॥ ईश्वरको कर्त्ता माननेवालोंके मतमें ईश्वरको सर्वज्ञता सिद्धिभी नहीं होती यदि प्रत्यक्ष प्रमाणसे मानी जाय तो प्रत्यक्ष इन्द्रियोंसे सम्बद्ध पदार्थकाही ग्रहण करता है यदि अनुमानसे मानी जाय सोभी ठीक नहीं क्योंकि अनुमानमें अव्यभिचारी लिङ्गकी जरूरत होती है यहांपर कोई अव्यभिचारी हेतुही उपलब्ध नहीं है जिससे अनुमान होसके। जगत्की विचित्रताही हेतु माना जाय अर्थात् ईश्वर सर्वज्ञ है जगत्की विचित्रता अन्यथा असम्भव होनेसे इस प्रकार सिद्धि सर्वज्ञकी मानी जाय सोभी ठीक नहीं क्योंकि यदि सर्वज्ञके विना जगत्की विचित्रता नहीं हो सके तो ईश्वर सर्वज्ञकी कल्पना करना उचित है परन्तु जगत्की विचित्र उत्पत्ति तो जीवोंके शुभाऽशुभ कर्मके परिपाकसे हो सकती है फिरभी ईश्वरके विना जगत्की उत्पत्ति क्यों नहीं मानी जाय, भावार्थ, उसके विनाही जगत्की उत्पत्ति होनेसे अविनाभावी हेतु सर्वज्ञसाधक कोई नहीं हुआ जिससे कि, सर्वज्ञसिद्धि हो। तथा यदि ईश्वर सर्वज्ञ है तो जिनका पीछेसे विनाश करना पडता है तथा ईश्वरकाभी अपमान करनेवाले ऐसे असुरोंको तथा हमलोगोको जिनका पीछेसे विनाश करना पड़ता है किसलिये वारवार बनाता है इस पूर्वापरविरोधसे जाना जाता है कि, परकल्पित ईश्वर सर्वज्ञ नहीं है। एवं ईश्वर सर्वज्ञ है तथा सृष्टिका कर्त्ता है तो यावत्कार्योंके अन्तर्गत यावत् शास्त्रोंकीभी रचना उसकी आज्ञासेही होती है अतः विरुद्ध आचरण करनेवाला कोईभी शास्त्र नहीं हो सकता तथापि ईश्वर कर्तृत्वके विरुद्ध बोलनेवाले प्रतिपक्षी खडे होते हैं। क्या उत्पत्तिकालमें ऐसा नहीं ज्ञान था कि, यह रचना हमारेही स्वरूपके टुकडे २ करनेवाली होगी। यदि कर्मपारवश्यसे रचना मानी जाय तो कर्मपरवशतासेही हो सकती है फिरभी ईश्वरमें कर्तापनेका पुंछल्ला क्यों लगाया जाता है। स्वभावोऽतर्कगोचरः॥ स्वभाव वस्तुका तर्कगोचर नहीं है परन्तु प्रवल प्रमाणसे जो बाधित हो जाता है वह स्वभाव नहीं माना जा सकता॥ तदुक्तम्।

वक्तर्यनाप्ते यद्धेतोः
साध्यं तद्धेतुसाधितम्।
आप्ते वक्तरि तद्वाक्यात्
साध्यमागमसाधितम्॥

(आप्त मीमांसा)

इस कथनसे सृष्टिकर्ता ईश्वरकी किसी प्रकारभी सिद्धि नहीं होसकी । इसलिये सत्यार्थ प्रकाशक वीतराग सृष्टिकर्तृत्वधर्मशून्यही देवदेवत्वस्वरूपसे आदरणीय हैं अन्य कोईभी नहीं ऐसा सिद्ध हुआ ।

न्यक्षेणाप्तपरीक्षा
प्रतिपक्षं क्षपयितुं क्षमा साक्षात् ।
प्रेक्षावतामभीक्ष्णं
विमोक्षलक्ष्मीः क्षणाय संलक्ष्या ॥

(इत्याप्त परीक्षा)

समाप्त ॥

इस लेखके पूर्वापर पक्षोंके वाचकवृन्दोंको कोई शङ्का नहीं रहैगी यदि हो तो सूचना आनेपर उत्तर अवश्य दिया जायगा ॥

इति प्रार्थना ॥

महासभासे प्रार्थना

दोहा ।

एक अचंभो मैं सुनो जलमें लागी लाय
जैनधर्मको पायकर वरतै मान कषाय

अर्थात् पूर्वजोंने कहा है कि, जैनधर्मको जो प्राप्त हो जाय उसके मान कषाय नहीं रहती है अर कदाचित् मान कषाय होय तो जलमें आग लगनेके समान आश्चर्य है परन्तु वर्तमानकालमें देखा जाता है तो इससेभी अधिक आश्चर्य है कि, सांसारिक कार्यमें मान करना तो दूर रहा परन्तु धर्मके आश्रयसे अपनी मान कषाय पोषण करते हैं यह कितना बड़ा आश्चर्य और अनर्थ है । धर्मके आश्रय जो विषयकषाय अपने पोषण करता है उसको जैनशास्त्रमें बड़ा निन्द्य कहा है । इसी विषयका एक लेख जैनगजट अंक १५ वर्ष ११ की सम्पादकीय टिप्पणीयांके पेज ४ में प्रकाशित है उसका आशय यह है कि, महाविद्यालय मथुराजीसे उठकर सहारनपुरमें गया जिस कारण महाविद्यालयके सर्व विद्यार्थी विद्यालयको छोड़कर चले गये अब कोई २ महाशय यह चाहते हैं कि, महाविद्यालय पीछा मथुरामेंही बुलाया जाय तो अच्छा हो । इस बाबत प्रयत्न करते हैं सो कदाचित् एसा होय तो क्या सहारनपुरके भाईयोंको लज्जाकी बात नहीं है । क्या महासभाको बट्टा न लगैगा । इससे तुम्हारी प्रतिष्ठा इसीमें है कि, चाहे किसी प्रकारसे हो परन्तु महाविद्यालय सहारनपुरहीमें रहे । यद्दि महाविद्यालय सहारनपुरसे चला गया तो जैन इतिहासमें तुम्हारा नाम सर्वथाके लिये कलंकित हो जायगा इत्यादि ।

अब पाठकगण विचार कीजियेगा कि, इन वर्तमान महाशयोंके क्या अभिप्राय हैं जिससे महाविद्यालयको चलाते हैं । हमको स्पष्ट विदित होता है कि, धर्मकी विद्याकी उन्नति होय या न होय । विद्यार्थियोंको आराम हो या तकलीफ, विद्या सीखे या मूर्ख रहैं । विद्यालयमें विद्यार्थी थोड़े रहें या बहोत चाहे कुछभी न रहैं परन्तु विद्यालय हमारे हाथमें रहे कि, जिससे हमारी मान कषाय पुष्ट हो यही कारण है कि, महासभाके सर्व कार्य

अधोदशामें हैं । जो कदाचित् महासभा मान पुष्ट करनेका अभिप्राय न रखती और केवल धर्मबुद्धिसे कार्य करती तो सम्पूर्ण भारतवर्षके जैनी इस महासभामें शामिल होकर तन मन धनसे सभाके उदेशोंकी पूर्णतामें कटिबद्ध होते तो आज सम्पूर्ण भारतवर्षमें जितने प्रकारकी जितनी सभा सोसाईटी हैं यह जैनदिगम्बर महासभा उनके शिरोरत्न गिनी जाती क्योंकि सभाका अर्थ है एकता सो यह महासभा इसके विरुद्ध हुई अर्थात् जिस समय यह सभा स्थापित हुई उसी समयसे इसने फूटका बीज वोया है ।

जिस दिन मथुराके मेलेमें महासभा स्थापित हुई उसी दिन एक महाविद्यालय भंडार मथुरामें स्थापित हुआ था, परन्तु इसके पूर्व दो तीन वर्ष पहलेका सम्पूर्ण भारत वर्षके जैनियोंकी तरफसे एक विद्यालय भंडार अजमेरमें स्थापित हो चुका था. सो महासभाके लिये लाजिम था कि, आप न्यारा भंडार स्थापन न कर अजमेरके विद्यालयको महाविद्यालयकी पदवीसे विभूषित करती और अपनी सहानुभूति दिखलाती और उसकी उन्नतिके उपायमें लगती परन्तु जब एसा विचार है कि, वह तो अजमेरवालोंका स्थापित किया हुआ है इससे हमारी नामवरी नहीं होगी इसवास्ते हम दूसरा भंडार कायम करें तबही हमारी नामवरी होगी ऐसा अभिप्राय रखकर जुदा भंडार कायम किया, बस फिर क्या था उसी दिनसे विरोधाग्निने अपना अड्डा जमा लिया और जो जैनी विद्यालयको धड़ाधड़ रुप्या दे रहे थे सो देनेसे रुक गये और किसीका पक्ष विद्यालयके तरफ और किसीका महाविद्यालय तरफ और बहुतसे महाशयोंने उदासीनवृत्ति धारण कर ली ।

१ अगर महासभा अजमेरके विद्यालयकोही महाविद्यालय कर लेती तो जैनजातिका चित्त इतनी उदारता पकड़ता कि, आज दिन महाविद्यालयके फंडमें कई लाख रुपये हो जाते।

२ इसी तरह जब महासभाने महाविद्यालय स्थापित किया तो महासभाको वाजिब था कि, वह जयपुरकी पाठशालाको जो कि, महाविद्यालयका दावा रखती है तथा जैनियोंके केन्द्रस्थानमेंभी है महाविद्यालय बनाती, और कदाचित् जयपुरवाले उस बातको स्वीकार नहीं करते तो उसी स्थानमेंही एक दो उच्च श्रेणीके अध्यापक रखकर महाविद्यालय अलग स्थापन करते और विद्यार्थियोंके भोजन आदिका प्रबन्ध करते तो आजतक वेही विद्यार्थी पंडित शिरोमणी होकर महाविद्यालयसे निकलते सो एसा न कर अपनी नामवरी बढ़ानेको मथुराजीमेंही महाविद्यालय कायम किया जिससे कि, आज आठ नौ वर्षमें एकभी विद्यार्थी पंडित नहीं हुवा और महाविद्यालयका नाम धारण करकेभी जिसमें एक छोटीसी पाठशालाके बराबरभी विद्यार्थी नहीं हैं. जो महासभाके कार्य कर्तागणोंकी केवल विद्यावृद्धिके लिये ही इच्छा होती और अपनी मान बड़ाई नहीं चाहते तो जयपुरमें महाविद्यालय स्थापन करते.

३ बाजे बाजे कार्यकर्ताओंकी ऐसी इच्छा रही है कि, चाहे जो कुछ हो परन्तु महासभाका वार्षिकोत्सव तथा महाविद्यालय मथुरामेंही रहै दूसरी जगह न जाने पावे क्योंकि एक महाशयने एक वख्त कहा था कि, जो महाविद्यालय खुरजामें रहे तो हम १५०) माहवार देंगे परन्तु मंजूर नहीं हुवा.

४ जो महाशय १५०) रुपया माहवार देकर महाविद्यालयको खुरजामें रखने चाहते थे तो उन्होंकेभी अपने मान बड़ाईका आशय था क्योंकि जो धर्मबुद्धि और जैनजातिमें विद्योन्नति चाहते तो अबतक वह अपने १५०) रुपया माहवारको नहीं बचाते और जैसे विद्योन्नति होती तैसे प्रयत्न करते. परन्तु करै कैसे हृदयस्थानमें तो मान महाराजने डेरा जमा रक्खा है.

५ इसही तरह अबकी सालमें सहारनपुरवाले भाईयोंने सबसे ऊंचा अपना मान बढ़ानेकेवास्ते महाविद्यालयको अपने यहां लानेका प्रयत्न किया और उसकी काया पलटभी करनी चाही.

इत्यादिक अपने अपने मान बढ़ानेकी कोशिसमें सब लगे हुए हैं अब कहिये कैसे विद्योन्नति होवे, यही सबब है कि, इस महासभासे सर्वही जैनी उदासीनवृत्ति धारण कर रहे हैं. इतना बड़ा जैपूर जिला है कि, सारे भारतवर्षमें जितने दिगम्बर जैनी होंगे उनसे थोड़ेही बहुत कम इस जिलेमें दिगम्बर जैनी होंगे परन्तु महासभामें एकभी सम्मिलत हुवा मालूम नहीं देता है. इसी तरहसे मारवाड़ मालवा, बुंदेलखंड, गुजरात, दक्खिन, कर्नाटक, आदिके अच्छे २ सज्जन इसमें शामिल नहीं होते ।

कहा है । जैसे पुरुष चढ़ै पहाड़पर भूचर पुरुषनिकों लघुलागै, भूचर पुरुष लगै ताकूं लघु उतर मिलै दुहुको भ्रमभागै. तैसे अभिमानी उन्नत गल और जीवको लघुपद दागै, अभिमानीको कहै तुच्छ सब ज्ञान जगै समता रस पागै ॥ इस प्रकार अभिमानी जगत्को तुच्छ समझता है और जगत् अभिमानीको तुच्छ समझता है इसी तरहसे महासभाका हाल है तो कहो कैसे कुशल हो, इसवास्ते सुधारक जनोंसे प्रार्थना है कि, यदि आप सच्चे दिलसे जैनजातिका सुधार चाहते हो तो इस मान बड़ाईको दूर करो और मायाचारी छोड़ सरलभाव करके कोमलता ग्रहण कर कर्त्तव्यशूर हूजिए ॥ मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि, महाविद्यालय फिर मथुरामें जावे बल्कि इसे जैपुर पाठशालामें शामिल करें अथवा काशी स्याद्वादपाठशालामें शामिलकर काशी ले जावें परन्तु काशीमें रहे तो जो झूठा नाम पाठशालाने स्याद्वाद बनाया है उसको सार्थक करैं इन दो स्थान सिवाय दूसरी जगह महाविद्यालय रहैगा तो विद्याकी उन्नति होना असंभव है. इत्यलम्

पन्नालाल गोधा
शेरगढ़ (कोटा)

श्रुतपंचमी आगई है ।

विदित हो कि, गतवर्ष इनही दिनोंमें मैंने आपलोगोंकी सेवामें श्रुतपंचमी नामक महा-

न् पर्वके मनाने बाबत प्रार्थना कियी थी उसपरसे अनेक जगहके पंच महाशयोंने जिनवाणी माताको भंडारोंमेंसे निकालकर धूपमें सुखाकर नये वेष्टनादिसे विनय करके श्रुतस्कंधविधान अर्थात् जिनवाणी माताकी पूजा स्तुति कियी थी, व उस दिन व्रत धारण किया था आशा है कि, अबकी बारभी जेष्ठ सुदी ५ सोमवारके दिन उक्त पर्वका विधान सब जगहके जैनी भाई करेंगे

अंगज्ञानकी व्युच्छित्ति होनेके समय हमारे पूर्वाचार्योंने सिद्धान्त ग्रंथोंको इसी दिनसे लिखना प्रारंभ किया था. और इसी दिनको प्रतिवर्ष पर्व मनानेके लिये इस तिथिको **श्रुतपंचमी** नामसे प्रसिद्ध करके जगतभरमें प्रचार किया था जिसका रिवाज दक्षिण कर्नाटक प्रदेशमें अबभी चला आता है परन्तु इस हमारे उत्तरहिंदुस्थानमें अविद्या और आलस्यके कारण इस पर्वका नामतक हमारे जैनी भाई भूल गये। अस्तु आजतक जो कुछ हुआ सो हुआ. अब प्रतिवर्ष सब जगहके पंचमहाशयोंको इस पर्वके दिन यथा नियम **श्रुतस्कन्धविधानका** उत्सव करना चाहिये।

इस उत्सवके करनेवालोंको पंचमीसे कई दिन पहिले सावधान होना चाहिये अर्थात् जहांजहांके भंडारमें जितने जैनग्रंथ पूजापाठ विधान हों सबको बाहर निकालकर मंदिरजीके चौकमें वा छतपर धूपमें सुखावें. तथा जो जो ग्रंथ स्वाध्यायके लिये किसी भाईको दिये हों तो उन सबकोभी मंदिरजीमें मंगाकर उनकोभी धूपमें सुखावें और सबके एक एक पत्र गिन २ करके लगावें. किसी ग्रंथका कोई पत्र कम हो तो लेखकसे लिखवाकर पूरण कर दें. किसी ग्रंथका कोई पत्र फट गया हो तो उसे सुधार दें फिर सब ग्रंथोंके नाम, कर्त्ताके नाम, विषय, क्या हैं इत्यादि लिखकर मंदिरजीकी बहीमें फेहरिस्त (सूचीपत्र) बनावें. और जो जो भाई मंदिरजीके भंडारमें नये शास्त्रजी दान करना चाहैं अथवा शास्त्रजीके लिये वेष्टन गत्ते अलमारी संदूक वगैरह दान करना चाहैं वे इसी दिन दान कर दें. और पंचमीके दिन उपवास वा प्रोषध करके समस्त भाइयोंको दिनभर जिनवाणी माताकी यथाशक्ति भक्ति सेवा संभाल करना चाहिये. दुपहरके बाद समस्त ग्रंथोंको नये पुठे वेष्टनोंसे सुशोभित करके मंदिरजीके चौकमें उच्चासनपर विराजमान करके उनके सामने सब भाई बैठकर "श्रुतस्कंधावतार" (शास्त्रोंके बननेका इतिहास) जोकि संस्कृतमें पूर्वाचार्योंका बनाया हुआ है मूल तथा अर्थसहित पढ़कर सबको सुनाया जाय अथवा जिनवाणी जीर्णोद्धार व प्रचारके विषयमें व्याख्यान दिया जाय अथवा जो कुछ दान करना हो इसीसमय देकर सबको जिनवाणी की भक्ति स्वाध्यायादिकमें तत्पर करें, और सबको स्वाध्याय करने वा शास्त्रजी सुननेकी

---

१ यह ग्रंथ =॥) की टिकट भेजनेसे कोल्हापुरके पंडित कलापा भरमापा निटवेके पास तथा बद्रीप्रसाद जैन पो० बनारस सिटीके पास मिल सकता है।

यथाशक्ति एक वर्षके लिये प्रतिज्ञा करावें. तत्पश्चात् **श्रुतस्कंधविधान** (शास्त्रजीकी पूजा) अष्टद्रव्यसे करैं तथा जयमालास्तुतिका पाठ पढ़कर जयजयकार मनावै। उसीवक्त जो भाई १ वर्षतक जिनवाणी माताकी सेवा संभालमें तत्पर हों वह फेहरिस्त उनके सुपुर्द करके उनको सब ग्रंथ संभलवा देवैं और वर्त्तमान वर्षमें जो जो भाई स्वाध्यायार्थ ग्रंथ मांगै उन्हें रजिष्टरमें उनके नाम लिखकर दिया करैं और जो भाई स्वाध्याय करके वापिस दे उनका जमा कर लें इस प्रकार एक वर्षतक उन ग्रंथोंकी संभाल उस भाईके जुम्मे रहै। अगली साल श्रुतपंचमी तक कितने भाइयोंने कितने और कौन २ से ग्रंथकी स्वाध्याय कियी और किसने कौन २ सा ग्रंथ चढाया इन सबका वार्षिक हिसाब रखकर रिपोर्ट अगली श्रुतपंचमीके दिन सुनावैं।

इस प्रकार प्रतिवर्ष श्रुतपंचमीका उत्सव करने और स्वाध्यायादिककी प्रतिज्ञा करनेसेही हमारे धर्मकी स्थिति होगी और प्राचीन जैनग्रंथोंकी रक्षा होगी जब प्राचीन भंडारोंमें ग्रंथ सड़ते रहैंगे, नये ग्रंथ लिखाये नहीं जांयगें और उनकी स्वाध्यायका प्रचार नहीं किया जायगा तो यह बूढ़ा जैनधर्म शीघ्रही इस भारतवर्षसे लोप हो जायगा।

भाइयो! धर्मरूपी वृक्षकी जड़ शास्त्र है यदि शास्त्रोंकी रक्षा नहीं करोगे तो फिर धर्म किस प्रकार स्थिर रह सक्ता है। हमारे अनेक दानवीर धर्मात्मा हैं वे धर्मरूपी वृक्षकी जड़को तो सिंचन नहीं करते और इस धर्मरूपी वृक्षकी रक्षाके लिये रथयात्राके मेले प्रतिष्ठादिकमें लाखों रुपये पानीकी तरह बहाकर नकली प्रभावना करते हैं भाइयों! हमारे यहां मंदिरजी हजारों हैं प्रतिमाजीभी लाखों हैं. दैवयोगसे यदि आप जिनमंदिररहित क्षेत्रमें पहुंच जाओ तो आप लोग फिरभी लाखों रुपये लगाकर नये मंदिरजी व नये प्रतिबिंब पहिलेसेभी दुगुणे चौगुणे प्रतिष्ठित करा सक्ते हो परन्तु जो ग्रंथ हमारे परमहितैषी पूर्वाचार्य सिर्फ हमारेही लिये मोक्षफलदायिनी तपस्याको गौण करके रचकर (लिखकर) रख गये हैं वे यदि आपकी विना संभालके नष्ट हो जांयगे तो करोड़ों अरबों रुपये खर्च करनेपरभी किसी ग्रंथकी प्राप्ति होनी असंभव है क्योंकि न तो आजकल आचार्य रहे और न कोई विद्वान्ही हैं अत: मेरी तो हमेशासे यही प्रार्थना है कि, जैन पाठशाला, जैन कालेज, मंदिरप्रतिष्ठा बिंबप्रतिष्ठादि जैन बोर्डिंग, समस्त धर्मकार्योंको गौण करके सबसे पहिले प्राचीन भंडारोंमें जीर्णशीर्ण अवस्थामें सड़ती नष्ट होती अपनी माताकी (जैनधर्मकी जननीकी) रक्षा करनेमें तन मन और सबसे अधिक धन लगाइये जिससे ऊपरके सब कार्य शीघ्रही सिद्ध हो जांयगे अन्यथा "**मूले नष्टे कुतः शाखाः**" की कहावतको चरितार्थ करैंगे.

प्रार्थी

पन्नालाल जैन

पो० गिरगांव मुम्बई

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया

सप्तम वर्ष। ज्येष्ठ शुक्ल १ श्रीवीर सं० २४३२। अंक १५

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापुर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।
६ „ „ –)॥ पंक्ति।
१२ „ „ –) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ „ „ ५) रु.।
१तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर।

सूचना

१ हरएक पत्रवालोंका नियम है कि, अग्रिम मूल्य पाये विना पत्र नहीं भेजते परन्तु हम जैनी भाईयोंकी उदारताके कारण इस नियमका अनुकरण नहीं करते थे परन्तु एसा नियम हमारा चल नहीं सका और यह कृपा वी. पी. वापिस करनेवालोंकी है. इससे हमको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है और इसी कारण इस वर्षमें वी. पी. से रुपया मगाना अभीसे प्रारम्भ कर दिया गया है. ग्राहकगणोंसे यह रुपया पूरे सालका मगाया जाता है अतएव वे यह न समझे कि, यह ६ माहकाही रुपया मगाया जा रहा है उनको सालभरतक जैनमित्र भेजा जायगा। इस सालके आखीर याने कातिक वदी १५ तकका ग्राहकोंसे इसका मूल्य अदा कर लिया जायगा। और आगेसे अष्टम वर्षका मूल्य प्रथम अंकसेही मगाया जायगा।

आवश्यकीय सूचना।

सोलापुरमें सेठ सखाराम नेमिचंदकी तरफसे मिती जेठ सुदी ९ से १४ पर्यन्त पंचकल्याणिक बिम्बप्रतिष्ठाका महोत्सव बड़ी धूमधामसे होनेवाला है। सर्व महाशयोंसे प्रार्थना है कि, इस अवसरपर अवश्य पधारैं। आपका

हीराचंद सखाराम

श्रीवीतरागायनमः

ज्येष्ठ शुक्र १ श्रीवीर संवत् २४३२. | वर्ष ७. अंक १५

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

महासभा और महाविद्यालयके सम्बन्धमें आजकल हमारे जैनसमाजमें बहुत कुछ हलचल मच रही है समाचार पत्रोंमें खूब आन्दोलन चल रहा है. इस अवस्थाको देखकर हमारे बहुतसे जातिहितैषियोंके चित्त विचलित हुए हैं और उनको नानाप्रकारके भय उपस्थित हुए हैं, किन्तु इसमें भयकी कोई बात नहीं है, जो विषय नानाप्रकारके वादविवादोंसे सिद्ध हो जाता है वह दृढतर होता है और उससेही कुछ समाजकी भलाईकी आशा होती है. किसीने ठीक कहा है कि, "**उन्नतिका मार्ग विरोधके दांतोंमें होकर है.**"

मार्ग दो प्रकारके हैं एक निवृत्ति मार्ग और दूसरा प्रवृत्ति मार्ग निवृत्ति मार्ग संवर और निर्जरातत्वमें है और प्रवृत्ति मार्ग आश्रव और बन्धतत्वमें है. निवृत्ति मार्गका पद प्रवृत्ति मार्गसे बहुत ऊंचा है. जिनमहाशयोंने निवृत्ति मार्गका अवलम्बन किया है वे शीघ्रही अपनी आत्माका कल्याण कर लेते हैं और वेही संसारमें परमधन्य हैं, परन्तु वह निवृत्ति मार्ग जितना उत्तम है उतनाही दुर्लभभी है, कोई विरलेही महात्मा उस निवृत्ति मार्गको प्राप्त होते हैं.

गृहस्थ तथा मुनि दोनोंही धर्मोंमें निवृत्ति तथा प्रवृत्ति दोनोंही मार्गोंपर चलनेवाले सज्जन हैं किन्तु दोनोंही समूहवालोंमें बहुभाग प्रवृत्ति मार्गावलम्बियोंका है. प्रवृत्ति मार्ग यद्यपि बन्धका कारण है अतएव कथंचित् हेय है किन्तु परम्परा निवृत्ति मार्गका साधक है इसलिये कथंचित् उपादेयभी है.

वर्त्तमानमें जैनसभाओंने जिस लौकिक तथा पारमार्थिक उन्नति करनेका बीड़ा

उठाया है वह प्रवृत्ति मार्गावलम्बियोंद्वाराही साध्य है, निवृत्ति मार्गावलम्बी इस कार्यको नहीं कर सकते वे आत्मकल्याण कर सकते हैं, क्योंकि उनके भावोंमें सन्तोषकी मात्रा अधिक बढ़ गई है और सन्तोषको नीतिकारोंने उन्नतिका प्रतिबन्धक कहा है, तदुक्तं "आलस्यं स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यं सन्तोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्वस्य ?" अर्थात् आलस्य, स्त्रीसेवन, सरोगता, जन्मभूमिमें प्रीति, सन्तोष, और भयभीतपना ये छह बातें उन्नतिकी घातक हैं.

उन्नतिका कार्य एकजन साध्य नहीं है किन्तु अनेक जनसाध्य है, और अनेक मनुष्योंके एकसे परिणाम नहीं होते अतएव अनेक जनसाध्य कार्योंमें प्रायः परस्पर विरोध हो जाता है, इस विरोधके आधारभूत अनेक जन प्रवृत्ति मार्गावलम्बी हैं, और प्रवृत्ति मार्गावलम्बी आश्रव और बन्धतत्वमें हैं और जहां आश्रव और बन्धतत्व हैं वहां कषाय अवश्य है इसलिये उन्नतिके करनेवालोंमें परस्पर विरोध होतेही कषायरामभी चट आधमकते हैं और इनके आतेही वाक् प्रहारकी धूम होने लगती है.

यहांपर यह बातभी भूलनेकी नहीं है कि, कषायके दो भेद हैं एक शुभकषाय और दूसरा अशुभकषाय, जो कषाय धर्मका साधक और धर्मविपक्षियोंका बाधक होय उसे शुभ कषाय कहते हैं और जिस कषायसे स्वार्थसाधन, अभिमान पोषण, और धर्म तथा धर्मके साधनोंका विध्वन्स किया जाय वह कषाय अशुभ है. शुभकषायसे पुण्यबन्ध और अशुभ कषायसे पापबन्ध होता है इसलिये उन्नतिके विषयमें अशुभकषाय हेय (त्यागने योग्य) और शुभकषाय उपादेय (ग्रहण करने योग्य) है.

जिस प्रकार लौकिक प्रयोजनोंकी सिद्धिकेवास्ते राज्यकी स्थापना है उसही प्रकार धार्मिक प्रयोजनोंकी सिद्धिकेवास्तेभी धार्मिक राज्यकी आवश्यकता है. धार्मिक राज्यभी दो प्रकारका है एक यतिसम्बन्धी और दूसरा गृहस्थसम्बन्धी, यतिसम्बन्धी धार्मिकराज्यके राजा आचार्य हैं और मुनि उनकी प्रजा हैं तथा गृहस्थसम्बन्धी धार्मिक राज्यमें महासभा आदिक राजा है, सभाके कार्याध्यक्षादिक राजकर्मचारी हैं और जैनसमाज उनकी प्रजा है. राज्यकार्य जैसे राजनीतिकेविना नहीं चल सकता उसही प्रकार इन धार्मिकराज्योंमेंभी राजनीतिकी आवश्यकता है. राजनीतिका स्वरूप नीतिकारोंने इस प्रकार कहा है कि—

सत्यानृता च परुषा प्रियवादिनी च
हिंस्रा दयालुरपि चार्थपरा वदान्या
नित्यव्यया प्रचुरनित्यधनागमा च
वेश्याङ्गनेव नृपनीतिरनेकरूपा

अर्थात् सत्य, मृषा, कठोर, प्रियवादिनी, हिंसक, दयालु, अर्थपरा, दानशीला, नित्य खर्चकरनेवाली, नित्य पैदाकरनेवाली इत्यादि

वेश्याकी तरह राजनीति अनेकरूप है. इसही राजनीतिको यथा सम्भव धर्म अविरुद्ध धार्मिक विषयमेंभी लगा लेना.

जैनमित्रमें धर्मविपक्षियोंकी कड़ी समालोचना हमारे कितनेही भाइयोंको रुचिकर नहीं हुई है, उनसे प्रार्थना है कि, जैनमित्रमें जिनशब्दोंका प्रयोग हुआ है वे शुभकषाय प्रेरित हैं, सम्पादकीका कार्य निवृत्ति मार्गमें नहीं है किन्तु प्रवृत्ति मार्गमें है. वर्त्तमान-कार्योंकी आलोचना करना सम्पादकका कर्त्तव्य है इसलिये जो कुछ हमने किया है उसमें कर्त्तव्यका पालन किया है, यदि फिरभी हमारे भाई हमको इस विषयमें अपराधी समझते हैं तो हम उनसे क्षमा मांगते हैं आशा है कि, हमारे उदार भाई अपनी स्वाभाविक उदारतासे क्षमा करेंगे.

जैनगजट अंक १३ में स्याद्वाद पाठशालाकी रिपोर्टके अन्तर्गत "जैनमित्र और स्याद्वाद पाठशाला" शीर्षक एक लेख छपा है जिसका सारांश इस प्रकार है "सम्पादक जैममित्र प्रेरणा करनेपरभी स्याद्वाद पाठशालाकी प्रबन्धकारिणी सभाके सभासद नहीं हुए प्रत्युत पाठशालाकी जड़ काटनेवाले लेख लिखते रहे जिनको कि, शेषसभासद धीरतासे सहते रहे" लेखके नीचे "नवेत्तियोयस्य गुणप्रकर्षं" इत्यादि एक नीतिका श्लोकभी छपा है, रिपोर्टके नीचे दीपचंदजी, जैनेन्द्र किशोरजी और देवकुमारजीके हस्ताक्षर हैं.

स्याद्वाद पाठशालाका खुलासा हाल इस प्रकार है कि, जिससमय पाठशालाका मुहूर्त्त हुआ था उससमय इसके प्रबन्धके लिये एक प्रबन्धकारिणी सभाभी नियत हुई थी और प्रबन्धकारिणी सभाकी नामावलीमें हमारी मंजूरीके विनाही हमारा नाम प्रकाशित कर दिया गया. कुछ दिन पीछे हमारेपास सभासदी स्वीकार करानेके लिये पत्र आया जिसके उत्तरमें सभासद होनेसे हमने साफ इंकार लिख दिया और उसमें यह कारण दिखाया कि, आपकी पाठशालामें अन्यमतके ग्रंथ पढ़ाये जाते हैं और इस विषयसे हम सहमत नहीं हैं इस कारण जबतक आपकी पाठशालामें पठनक्रम जैनशास्त्र घटित नहीं होगा तबतक हम इसके सभासद नहीं हो सक्ते इसके पीछे जैनमित्रमें कई लेखोंद्वारा स्याद्वाद पाठशालामें जैनशास्त्र पढ़ानेकी प्रेरणा की गई और हर्षका विषय है कि, अब पठनक्रममें जैनशास्त्रोंकीही बहुलता है, थोड़े बहुत अन्यमतशास्त्र रहे हैं वेभी शीघ्रही दूर किये जानेवाले हैं. हमारे लेखोंसे यद्यपि पहले कोई २ विद्यार्थी तथा सभासद रुष्ट हुए थे परन्तु "काशीका कटुकफल" शीर्षक लेख बांचनेसे उनका भ्रम निकल गया, और उनहीकी प्रेरणासे पाठशालामें जैनग्रंथोंका आदर हुआ. इन महाशयोंके कृतज्ञता प्रदर्शक कई पत्र हमारेपास आये हैं जोकि,

आवश्यकता पड़नेपर प्रकाशित किये जा सक्ते हैं.

अब जरा पाठकोंको विचारना चाहिये कि, स्याद्वाद पाठशालामें जैनशास्त्र पढ़ाये जानेकी प्रेरणा करनेवालोंको जब जैनगजट पाठशालाकी जड़काटनेवाला बताता है तो इससे स्पष्ट सिद्ध है कि, सहयोगी जैनशास्त्रोंके ज्ञानको पाठशालाका घातक समझता है और पाठशालाका उद्देश्य बताता है जैनधर्मकी विद्यावृद्धि, और नीचे छपे नीतिके श्लोकसे आप ध्वनित करते हैं कि, स्याद्वाद पाठशालामें जैनशास्त्र न पढ़ानेरूप गुणको जो नहीं जानता है वह उसकी निन्दा करै तो इसमें आश्चर्यही क्या है? धन्य! जैनगजट! तेरे एसेही गुणोंपर मोहित होकर महासभाने तुझे अपना मुखपत्र बनाया है!

परन्तु इतनेहीमें अलं नहीं है, माष्टर दीपचंदजी सुपरिंटेंडेंट स्याद्वाद पाठशाला इस सम्बन्धमें लिखते हैं कि,

श्रीमान् सर्वोपरि श्रीपंडितजी सा० सविनय जुहार स्वीकृत हो उभयत्रशम्? अपरञ्च मेरे सिर जो झूठा कलंक पड़ रहा है और एक दो स्थानोंसे मेरे को एसा पत्र आया है कि, तुमने एसी रिपोर्ट क्यों छपाई सो मैं बहुत लाचार हो रहा हूं अब आप जैसे बने (वैसे) मेरे सिरसे यह कलंक दूर कर संतोष देकर क्षमा दीजिये। मैं यहां आकर धूर्त .... के कारण अपवादको प्राप्त हुवा सो जबतक आप मुझे संतोषित न करेंगें कदापि शान्ति न होगी और आप मुझे कलंक रहितभी ऐसा करेंगें जिसमें कि, मुझे यहांसेभी और वहांसेभी बुराई न आवे ज्यादा क्या लिखूं! आप लेख पढ़तेही समझ गये होंगे कि, इस आज्ञापालकका कार्य यह नहीं है मैं आपके साम्हने खड़ाभी नहीं हो सक्ता हूं लिखने बोलनेकी क्या बात है.

दास दीपचंद

मास्टर दीपचंदजीके पत्रसे विदित होता है कि, उन्होंने अपनी रिपोर्टमें यह पैराही नहीं लिखा था अतः उस पैराके निवेश करनेवाले मंत्री और उपमंत्री साहबही हैं. पाठक महाशय समझ सकते हैं कि, जिस जैनसमाजकी पाठशालाके अधिकारी एसे धर्मप्रेमी हैं उनके हाथसे जैनसमाजके हितकी कहांतक संभावना है.

आर्यमित्र और जैन

सहयोगी आर्यमित्र १ मई सन् हालके अंकमें देववन निवासी लाला ज्योतिः प्रसादजीसे पूछता है कि, जैनसिद्धान्तके अनुसार यदि इस प्रपञ्चका रचक ईश्वर नहीं है तो कौन है? और ईश्वरका क्या लक्षण है? इन दोनों प्रश्नोंका संक्षेपमें उत्तर इस प्रकार हो सकता है.

अनन्त शक्तियोंके अविष्वग्भावको द्रव्य कहते हैं. वे अनन्त शक्तियां नित्य हैं किन्तु समय समयमें उनकी अवस्था बदलती रहती है, इस अवस्था विशेषको पर्याय कहते हैं और उन अनन्त शक्तियोंको गुण कहते हैं,

गुणका लक्षण "यावद्द्रव्य भावित्वेसति सकल पर्यायानुवर्तित्वं गुणत्वं" किया है अर्थात् द्रव्यके समस्त देशमें रहकर उसकी समस्त पर्यायोंमें रहनेवाली शक्तिको गुण कहते हैं, द्रव्यका लक्षण पूर्वाचार्योंने 'गुणपर्ययवद्द्रव्यं' भी किया है जिसका अभिप्राय पहले लक्षणसे बिलकुल मिलता हुआ है. द्रव्यके दो भेद हैं एक जीव और दूसरा अजीव. चेतना विशिष्टको जीव कहते हैं और चेतना रहितको अजीव कहते हैं अजीवके पांच भेद हैं १ पुद्गल, २ धर्म, ३ अधर्म, ४ आकाश, और ५ काल, आकाश सर्वव्यापी है उसके बहुमध्यभागमें लोक है भावार्थ जितने आकाशमें जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, और काल हैं उतने आकाशको लोकाकाश कहते हैं और शेषके आकाशको अलोकाकाश कहते हैं 'लोक्यन्तेजीवादयः पदार्था यस्मिन् सलोकः' यह लोकशब्दकी व्युत्पत्ति है. स्पर्श, रस, गन्ध, और वर्ण जिसमें पाये जांय उसको पुद्गल कहते हैं. पुद्गलके दो भेद हैं एक अणु, और दूसरा स्कन्ध, स्कन्धके अनेक भेद हैं उनमें एक स्कन्ध विशेषको कार्माणवर्गणा कहते हैं. जीव अनन्त हैं, उनके तीन भेद हैं १ बहिरात्मा २ अन्तरात्मा और ३ परमात्मा. बहिरात्मा जीव, और पुद्गलद्रव्यके कार्माण वर्गणारूप स्कन्ध इन दोनोंका इस संसारमें अनादि कालसे सुवर्णपाषाणकी तरह सम्बन्ध हो रहा है. कार्माणवर्गणाके स्कन्ध लोकमें अनन्त भरे हुए हैं, जो स्कन्ध आत्मासे बन्धरूप नहीं हैं उनको कार्माणवर्गणा कहते हैं और वेही स्कन्ध जब आत्माके साथ बन्धको प्राप्त हो जाते हैं तब उनहीको कर्म कहते हैं. कर्मके निमित्तसे आत्माके रागद्वेष होते हैं और रागद्वेषके निमित्तसे आत्मा कार्माणवर्गणाओंका बन्ध करता है, सो यह अवस्था अनादिकालसे एसीही चली आ रही है. कर्मके अनेक भेद हैं जिनके निमित्तसे संसारमें इस आत्माकी सुखदुःखादिरूप अनेक अवस्था होती हैं, इन कर्मोंकेही निमित्तसे यह आत्मा नरक, पशु, मनुष्य और देवरूप चतुर्गतिमें भ्रमण करता है, इन कर्मोंमेंही एक कर्म विशेष है जिसके निमित्तसे बुद्धि विपरीत होती है, उस विपरीतताके निमित्तसे यह आत्मा किसी पदार्थको इष्ट मानता है और किसीको अनिष्ट मानता है, एसेही आत्माको बहिरात्मा कहते हैं. जब यही बहिरात्मा सद्गुरूके उपदेशसे वस्तुके यथार्थ स्वरूपको समझ जाता है और कर्मके उदयसे जो रागद्वेष होते हैं उनके घटानेके प्रयत्नमें लगता है तब उसही आत्माको अन्तरात्मा कहते हैं. जब इस अन्तरात्माके नानाप्रकारके उपायोंसे रागद्वेष घटते हैं तब नवीन कर्मका आना घटता जाता है और जो सत्ताके कर्म हैं वे आत्मासे सम्बन्ध छोड़ते जाते हैं, धीरे २ यह आत्मा रागद्वेषका बिल्कुल अभाव कर देता है और रागद्वेषका अभाव होतेही आठ कर्मोंमेंसे चार कर्मोंका सर्वथा क्षय हो जाता है. इन चार कर्मोंका नाश होतेही ये आत्मा सर्वज्ञ, क्षुधातृषादिक दोषरहित निर्दोष और मोक्षमार्गका उपदेशक इस प्रकार तीन गुण

विशिष्ट अर्हन् होता है इसहीको परमात्माके दो भेदोंमेंसे प्रथम भेदरूप सकल (शरीर सहित) परमात्मा कहते हैं. यही सकल परमात्मा कुछ कालमें शेषके चार कर्मोंकाभी नाश करके निकल (शरीररहित) परमात्मा हो जाते हैं इनकोही सिद्ध कहते हैं आजतक एसे अनन्त सिद्ध हो गये और अनन्त होंयगे. ये सबही अर्हन् और सिद्ध जैनियोंके ईश्वर, परमेश्वर और परमात्मा हैं. लोकके तीन भाग हैं ऊर्द्धभागमें स्वर्ग है जहां देव रहते हैं, अधोभागमें नरक हैं जहां नारकी रहते हैं, और मध्यलोकमें मनुष्य और पशु रहते हैं. ये तीनों लोक पवनके सहारेसे ठहरे हुए हैं यह लोक अनादि निधन है, न इसको किसीने बनाया और न कोई इसका नाश करनेवाला है. छह द्रव्योंका समूह है सोई लोक है, छहों द्रव्य अनादि निधन हैं इसलिये लोकभी अनादि निधन (नित्य) है. छहो द्रव्य नित्य होनेपरभी अनेक अवस्थारूप पलटती रहती हैं अतएव अनित्य हैं इसलिये लोकभी अनित्य है, लोकका कर्ता ईश्वर माननेमें अनेक दोष आते हैं जिसका सविस्तर विवरण जैनमित्रमें स्वतन्त्र लेखद्वारा प्रकाशित हो चुका है वहांसे जानना. आशा है कि, इस संक्षिप्त उत्तरसे हमारे सहयोगीको सन्तोष होगा, यदि जैनसिद्धान्तका सविस्तर स्वरूप जाननेकी इच्छा होय तो सहयोगीको उचित है कि, जैनमित्रमें जो जैनसिद्धान्तदर्पणनामक ग्रंथ प्रकाशित होता है उसका परिशीलन करै.

उक्त अंकमें सहयोगीने तीर्थंकर और उनकी प्रतिमाओंके विषयमें कुछ आक्षेप किये हैं जिसका खुलासा इस प्रकार है कि, फीरोजाबादके मेलेमें अनेक तीर्थंकरोंकी प्रतिमाओंके आनेके समाचार पाकर हमारे सहयोगीने बैठेबिठाये लिखमारा था कि, "यह कार्य जैनियोंका उनके शास्त्रविरुद्ध हुआ" उसके इस प्रकार लिखनेपर जब जैनमित्र और जैनगजटने उससे पूछा कि, "एसा वाक्य जैनियोंके कौनसे शास्त्रमें लिखा है, जैनशास्त्रोंमें अनेक तीर्थंकरोंके एक क्षेत्रमें मिलनेका निषेध है न कि, प्रतिमाओंका" इसपरसे सहयोगी लिखता है कि, "तुम्हारी आम्नाय कौनसी है और तुम किन २ शास्त्रोंको मानते हो, तथा तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकर हैं, या तीर्थंकरोंके सदृश है वा कोरा पाषाण है? यदि तीर्थंकर हैं तब तो आपके कथनानुसार एक क्षेत्रमें उनकी भेट होना निषिद्ध हुआ, यदि तीर्थंकरोंके सदृश हैं तो किनगुणोंमें उनका सादृश्य है, यदि कोरा पाषाण हैं तो उनका पूजनाही भ्रम है"

सहयोगीके प्रथम प्रश्नके उत्तरमें निवेदन है कि, जैनमित्र और जैनगजट दोनोंकेही सम्पादक दिगम्बरीय सम्प्रदायके माननेवाले हैं, हमारी सम्प्रदायमें दो प्रकारके ग्रन्थ हैं एक तो ऋषिप्रणीत, और दूसरे गृहस्थप्रणीत, ऋषिप्रणीत ग्रंथ प्रमाणभूत हैं और मान्य हैं तथा गृहस्थप्रणीत ग्रंथोंका ऋषिप्रणीत ग्रंथोंसे अविरूद्धअंश मान्य है और विरुद्धअंश मान्य नहीं है हमारी सम्प्रदायमें तेरहपंथ और

-वीसपंथ कल्पना मात्र हैं क्योंकि ऋषिप्रणीत ग्रंथोंको दोनोंही पंथवाले प्रमाणभूत मानते हैं. हमारी सम्प्रदायके अनेक ग्रन्थ हैं उनमेंसे थोड़ेसे ग्रंथोंके नाम यहां लिखे जाते हैं. १ पंचास्तिकाय २ समयसार ३ प्रवचनसार ४ गोमटसार ५ त्रिलोकसार ६ लब्धिसार ७ क्षपणासार ८ मूलाचार ९ रत्नकरंड श्रावकाचार १० पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय ११ ज्ञानार्णव १२ भगवती आराधनासार १३ पद्मनन्दि पंचविंशति १४ सर्वार्थसिद्धि १५ राजवार्तिक १६ श्लोकवार्त्तिक १७ अष्टसहस्री १८ अष्टशती १९ आप्तपरीक्षा २० द्रव्यसंग्रह २१ नेमिचन्द्रसंहिता २२ न्यायदीपिका २३ परीक्षामुख २४ प्रमेयकमलमार्त्तंड २५ न्यायकुमुदचन्द्रोदय २६ न्यायविनिश्चयालङ्कार २७ आदिपुराण २८ उत्तरपुराण २९ पद्मपुराण ३० हरिवंशपुराण ३१ पांडवपुराण इत्यादि.

सहयोगीके दूसरे प्रश्नके उत्तरमें निवेदन है कि, तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकर नहीं हैं क्योंकि जो तीर्थंकरोंकी प्रतिमाही तीर्थंकर होतीं तो तीर्थंकर और तीर्थंकरोंकी प्रतिमा इन दोनोंमेंसे एक पद व्यर्थ होता. दूसरे तीर्थंकरोंकी प्रतिमा कोरा पाषाणभी नहीं हैं क्योंकि जो कोरा पाषाणही होतीं तो संसारमें अनेक कोरे पाषाण हैं वेभी सब पूज्य हो जाते, परन्तु समस्त पाषाणोंको जैनी नहीं पूजते इसलिये प्रतिमा कोरा पाषाण नहीं हैं. तब आपका तीसरा पक्ष स्वीकार हुआ अर्थात् तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकरोंके सदृश हैं. जो पदार्थ किसी दूसरे पदार्थसे भिन्न होनेपर तद्गत किसी धर्म विशेष सहित होय उसे सदृश कहते हैं जैसे मनुष्य और घट द्रव्यत्वेन सदृश हैं, मनुष्य और पशु जीवत्वेन सदृश हैं, और ब्राह्मण और क्षत्रिय मनुष्यत्वेन सदृश हैं, उसही प्रकार तीर्थंकर और तीर्थंकरोंकी प्रतिमा किसी धर्म विशेषकी अपेक्षासे सदृश हैं भावार्थ जिससमय साक्षात् तीर्थंकर मौजूद थे उससमय उन तीर्थंकरोंमें तीन बातें थीं अर्थात् एक तो तीर्थंकरोंका आत्मा दूसरे तीर्थंकरोंका उपदेश और तीसरे उनका शरीर. तीर्थंकरोंका आत्मा तो अमूर्त्तथा इसलिये हमारे इन्द्रियज्ञानका विषयही नहीं था हम उसको देखही नहीं सकते थे, हम केवल श्रोत्रइन्द्रियद्वारा उनका उपदेश सुनते थे और नेत्रइन्द्रियद्वारा उनके शरीरको देखते थे. वेही दोनों बातें हमारे मन्दिरोंमें मौजूद हैं अर्थात् जैसा धर्मोपदेश हमको तीर्थंकरोंसे मिलता था वैसाही धर्मोपदेश हमको शास्त्रद्वारा मिलता है क्योंकि उनकाही उपदेश ऋषियोंद्वारा शास्त्रोंमें लिखा गया है, और जो आनन्द उनके राग चेष्टा विवर्जित शरीराकारके दर्शनसे प्राप्त होता था वैसाही आनन्द उनकी रागचेष्टा विवर्जित प्रतिमाकारके दर्शनसे होता है क्योंकि जैसा आकार उनके शरीरका था वैसाही आकार इन प्रतिमाओंका है, इसलिये उपदेश दातृत्वेन (उपदेश दातापनेसे) जैनशास्त्र तीर्थंकर सदृश हैं और आकारत्वेन तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकर सदृश हैं. यह सहयोगीके

प्रश्नोंका संक्षेपसे उत्तर दिया गया है आशा है कि, इससे उसको सन्तोष होगा, यदि इस विषयमें सहयोगीकी आगे और कुछ लिखनेकी इच्छा होय तो हर्षपूर्वक लिखै हमभी सहर्ष उत्तर देनेको तैयार हैं किन्तु इतनी प्रार्थना है कि, जैनमत समीक्षाकी तरह सम्यताकी सीमाको उलंघन न करें.

दमोह जिलेके अन्तर्गत श्री कुंडलपुर अतिशय क्षेत्रके मुख्य मंदिरका शिलालेख[1]।

ओंनमः सिद्धेभ्यः ॥

संवत् १७५७ वर्षे माघ सुदि (?)
१५ सोमवासरे ॥

संवत्सरे पर्वतवान (ण) युक्ते
(सप्तेशते) चैव सहस्रमेके ॥
श्रीमाघमासे सित पूर्णिमायां
श्रीचन्द्रवारे च मघा नक्षत्रे ॥ १ ॥
याते यदा विक्रमराज्यकाले
तदान्वये श्री जिनमन्दिरे वै ॥
कृतं समाप्तं बहुपुण्यहेतुं
श्रीवर्द्धमानस्य जगद्गुरो हि ॥ २ ॥
मूलसंघे बलात्कारे गणे
गच्छे सरस्वत्याः (?) ॥
यो बभूव मुनिर्धीमान्
कुन्दकुन्दमुनीश्वरः ॥ ३ ॥
तस्यान्वये संजातो
ज्ञानवान् गुणसागरः ॥
मनस्वी संघसंपूज्यो
यस (शः) कीर्तिर्महामुनिः ॥४॥
पट्टे तदीये ललितादिकीर्तिः
ध्यानी सुधी श्रीजिनतत्ववेदी ॥
संसारभीतो जिनमार्गदेसी (शी)
सुराहि (धि) पैः पूजितपादपद्मः ५
तत्पट्टधारी जिनधर्मनिष्ठः
श्रीधर्मकीर्तिः सु (शु) भज्ञानमूर्तिः॥
श्रीरामदेवस्य पुराणकर्ता
ज्ञानी विवेकी च हितोपदेसी (शी)६
तत्पट्टपंकेरुहभानुमूर्तिः
पद्मालयः श्रीमुनिपद्मकीर्तिः ॥
दमी व्रती सत्वहितोपदेसी (शी)
संसारवारां निर्वारसेतुः ॥ ७ ॥
तत्पट्टभोक्ता गुणवान् सुधीसः (शः)
श्रीशब्दशास्त्रार्णवपारमाप्तः ॥
सुधी तपस्वी सुसु····(रेन्द्र) कीर्तिः
दयावगाहीच····(क्ष)मी मनस्वी ७[2]
तच्छिष्य यातो सु (शु) चि ब्रह्म····रा
दमी क्षमी ········ गुरो यः ॥
श्री (?) सुरें····(द्र) कीर्तिः स्वगुरो (रू)प
देशा दादाय भिक्षाटणद्रव्यभारं ८
कसुअनंतम (?) जिनेश्वरस्य
श्रीसन्मतेः मंगलकारणस्य ॥
जीर्णं समालोक्य महामनोज्ञं
श्रीनूतनं (?) पुण्यविवर्द्धनीयं ॥ ९

---

१ श्रीवीर भगवानके मुख्य मन्दिरके द्वारसे भीतरकी ओर चौखटकी बगलमें यह लेख एक पत्थर पर खुदा हुआ जड़ा है।

२ यहां श्लोकोंकी संख्यामें एककी भूल हुई है।

धर्मसागरोयं.... (य) दा दीक्षा (?) ग्रामे स्वायुत्तयं (?) कृत्वा किंचिद्वेदिकादिकन्यूनं चैत्यालयं विहाय स्वमतिं तदात्वागत्य नेमिसागरेण ब्रह्मचारिणा विदुषा तस्य धर्मस्य गुरुवे (?) धुना वेदिकादिकसर्वपूर्णं कारायित्वेदं सवत्सरं लिखित्वास्थापितं ॥ श्रीमहाराजाधिराजः कासी (शी) स्व (श्व) रगहिरवारान्वये (य) स्य प्रचंडसा (शा) सकस्य अरिवगा (र्गा) ननी(नि)भृतस(श)तखंडकरणासतिद्वत्यमूनदंडमंडितस्य सकल प्रवलानीपन (?) समूहमस्तकालिमालाचुंवितचरणारविंदस्य जिनधर्ममहिमायां रतिभूतचेतसः प्रबलतर कठोरभुजदंडविशिष्टनिजविग्रहस्य षट्दर्शनविशिष्टाभ्यागतसंभाषणकरणप्रवीणस्य स्वधर्मरुपाषण (?) समर्थस्य दानिनः सूरवीरस्य देवगुरुशास्त्रपूजनतत्परस्य श्रीमहाराजाधिराजः श्रीछत्रसालस्य महाराज्ये सकलसुंपत्स (संपत् ?) युक्तप्रज्ञानिवा....सेस्य चैत्यालयस्य निर्मापनं जातः ॥

(शुभं भवतु मंगलं भवतु)

नाथूराम प्रेमी।

श्रीभद्रबाहुसंहितायाम्
दायभागप्रकारः
(४)

किसी भाईने विवाहके बाद पुत्रोत्पत्तिके पूर्वही यदि मोक्षके उपायमें दत्तचित होनेसे दीक्षा ग्रहण कर ली तो उसकी स्त्रीका विभागसमयमें कैसा विभाग करना चाहिये?

इसका उत्तर

मुक्त्युपायोद्यतश्चैकोऽ-
विभक्तेषु च भ्रातृषु ॥
स्त्रीधनं तु परित्यज्य
विभजेरन् समं धनम् ॥ ८४ ॥

मुक्ति उपायमें संलग्नचित्त यदि कोई भाई विभागकालसे पूर्वही दीक्षा ले गया हो तो विभागकालमें स्त्रीधनको छोड़कर समान भाग करना चाहिये अर्थात् उस भाईकाभी भाग उसकी पत्नीको मिलना चाहिये ॥

प्रसङ्गवश स्त्रीधन कहते हैं ॥

विवाहकाले पितृभ्यां
दत्तं यद्भूषणादिकम् ॥
तदध्यग्निकृतं प्रोक्त-
मग्निब्राह्मणसाक्षिकम् ॥ ८५ ॥

विवाह समयमें जो मातापिताने भूषणादिक द्रव्य दिया हो वह अग्नि और ब्राह्मणोके साक्षिक अध्यग्निकृत ऐसे नामसे कहा जाता है ॥

यत्कन्यया पितुर्गेहा-
दानीतं भूषणादिकम् ॥
अध्याहवनिकं प्रोक्तं
पितृभ्रातृसमक्षकम् ॥ ८६ ॥

जो धन पिताके घरसे कन्या पिताभाईयोंके प्रत्यक्षमें लावै उसको अध्याहवनिक अर्थात् लाया हुआ कहते हैं ॥

प्रीत्या यद्दीयते भूषा श्वश्वा
वा श्वशुरेण वा ॥
मुखेक्षणाङ्घ्रिग्रहणे
प्रीतिदानं स्मृतं बुधैः ॥ ८७ ॥

जो धन श्वशुर तथा श्वश्रूने मुख दिखाई तथा पादग्रहण समयमें प्रीतिपूर्वक दिया वह प्रीतिदान कहा जाता है ॥

आनीतमूढकन्याभिर्द्रव्यं
भूषांशुकादिकम् ॥
पितृभ्रातृपतिभ्यश्च
स्मृतमौदयिकं बुधैः ॥ ८८ ॥

विवाहके बाद पिता भाई पतिसे जो धन भूषणवस्त्रादि लिया हो वह औदयिक ऐसा कह जाता है ॥

परिक्रमणकालेय-
द्धेमरत्नांशुकादिकम् ॥
दम्पतीकुलवामाभि-
रन्वाधेयं स्मृतं बुधैः ॥८९॥

विवाह समयमें अपने तथा पतिके कुलकी स्त्रियों (कुटुम्बी स्त्रियों) से आया जो धन वह अन्वाधेय अर्थात् इधर उधरसे मिला हुआ कहा जाता है ॥

एवं पञ्चविधं प्रोक्तं
स्त्रीधनं सर्वसम्मतम् ॥
न केनापि कदा ग्राह्यं
दुर्भिक्षाऽऽपद्वृषादृते ॥९०॥

इस प्रकार पञ्चप्रकार संक्षेपसे कहा हुआ स्त्रीधन दुर्भिक्ष, आपत्ति अथवा धर्मको छोड़कर किसीकोभी लेना उचित नहीं है ॥

(शङ्का) कोई पुरुष पुत्रादि सहित अथवा रहित भ्रातृजपुत्रसंयुक्त अलग हुआ हो अथवा नहीं हुआ हो. ऐसा पुरुष बाबाके द्रव्यमेंसे कुछ लेकर बहन, बेटी, स्त्री, भाई आदिकोंको दे सकता है अथवा नहीं?

पैतामहधनात्किञ्चिद्दातुं
वाञ्छति सप्रजाः ॥
भगिनीभागिनेयादिभ्यः
पुत्रस्तं निषेधति ॥ ९१ ॥

बाबाके द्रव्यमेंसे यदि वह (सपुत्र) भानजे आदिकोंको कुछ देना चाहे तो उसका पुत्र निषेध कर सकता है ॥

विनापुत्रानुमत्या वै
दातुं शक्तो न वै पिता ॥
मृते पितरि पुत्रस्तु
ददत्केन निरुध्यते ॥ ९२ ॥

पुत्रकी संमतिके विना पिता (जो शङ्कापक्षमें देना चाहता था) कुछ नहीं दे सकता और पिताके मरनेपर पुत्र देता हुआ किससे रुक सकता है ॥

(शङ्का) किसी स्त्रीके पुत्रके स्थानपर दत्तक नियत करनेके बाद पुत्र उत्पन्न हो जावै तो किस प्रकार करना? इसका उत्तर

गृहीते दत्तके पुत्रो
धर्मपत्न्यां प्रजायते ॥
स एवोष्णीशबंधस्य
योग्यः स्याद्दत्तकस्तु सः ॥९३
चतुर्थांशं प्रदाप्यैव भिन्नः
कार्यो(ऽत्र)न सांशितः ॥
प्रागेवोष्णीशबन्धे तु
जातोपि समभागभवेत् ॥९४॥

दत्तक पुत्र लेने बाद जो पुत्र पैदा होय तो वही शिरोपाह बंधनके योग्य है. दत्तकको चतुर्थ

भाग देकर विना गवाहियोंके अथवा अन्न-साक्षि देकर अलग कर देना चाहिये. यदि उत्पन्न होनेसे पूर्वही शिरोपाह बंधगया हो तो समान भागका भोक्ता हो सकता है ॥

(शङ्का) सम्पूर्ण पुत्रों सहित पिताके मरनेपर उन पुत्रोंकी माता स्वामिनी होती है. स्वामिनी होनेपर दत्तक लेनेका उसे अधिकार होनेपरभी यदि अपनी पुत्रीमें प्रेम अधिक होनेसे दत्तक नहीं ग्रहण किया तथा जेठ देवर आदिभी दायभागके स्वामी नहीं हैं, तो उसके मरनेपर उसकी पुत्री सर्व धनकी मालिक हो, उसकेभी निपुत्रही मरजानेपर उसके पितामाताके कुलसे आगत द्रव्यका स्वामी कोन हो सकता है?

सो स्पष्ट कहते हैं ॥

पतेरञ्जसो मृत्यौ
तद्द्रव्याधिपतिर्वधूः ॥
दुहितृप्रेमतः पुत्रं न
गृह्णीयात्कदाचन ॥ ९५ ॥

विनासन्तानके पतिके मरनेपर यदि उसकी वधूका स्नेह पुत्रीके ऊपर अधिक होनेसे पुत्र (दत्तक) ग्रहण नहीं करे तो ॥

न ज्येष्ठदेवरसुता
दायभागाधिकारिणः ॥
तन्मृतौ तत्सुता मुख्या
सर्वद्रव्याधिकारिणी ॥ ९६ ॥

उसके मरनेपर उसके जेठ देवरोंके पुत्र उसके मालिक नहीं हो सकते किन्तु उसकी मुख्य पुत्रीही अधिकारिणी हो सकती है.

तन्मृतौ तत्पतिः स्वामी
तन्मृतौ तत्सुतादिकाः ॥
न पितृभ्रातृतज्जाना-
मधिकारोत्र सर्वथा ॥ ९७ ॥

उस पुत्रीके मरनेपर उसका पति उसका मालिक होवै. उसकेभी मरनेपर उसके पुत्रादि मालिक होवै. लेकिन दूसरे भाईबन्धुओंका उसमे कुछ अधिकार नहीं है ॥

बहुत पुत्रवाले ब्राह्मणोके भागमें कुछ विशेष कहते हैं ॥

प्रेते पितरि यत्किञ्चि-
द्धनं ज्येष्ठकरागतम् ॥
विद्याध्ययनशीलानां
भागस्तत्र यवीयसाम् ॥ ९८ ॥

पिताके मरनेपर बड़े भाई आदिकोंके हाथ आया जो द्रव्य उसमें विद्याके पठनमें संलग्न छोटे भाइयोंकाभी भाग (अधिकार) है.

अविद्यानां तु भ्रातृणां
व्यापारेण धनार्जनम् ॥
पैत्र्यं धनं परित्यज्याऽ-
न्यत्र सर्वे समांशिनः ॥ ९९ ॥

विद्यारहित भाइयोंको व्यापारसे धनको उपार्जन करना चाहिये, और पिताके धनको छोड़कर बाकी द्रव्यमें सर्वका समान भाग होना चाहिये ॥

जो द्रव्य विभागके लायक नहीं है उसे बतलाते हैं ।

पितृद्रव्यं न गृह्णीया-
त्पुत्रेष्वेक उपार्जयेत् ॥
भुजाभ्यां यन्नभाज्यं
स्यादागतं गुणवत्तया ॥१००॥

गुणोंसे एकत्रित किया हुआ अविभाज्य जो पिताका द्रव्य है, उसे ग्रहण नहीं करना, तथा सर्व पुत्रोंमेंसे एकको अपने भुजाद्वारा उपार्जन करना चाहिये ॥

पत्यांगनायै यद्दत्त-
मलङ्कारादि वा धनम् ॥
तद्विभाज्यं न दायादैः
प्रान्तेनरकभीरुभिः ॥ १०१ ॥

पतिने स्त्रीको जो अलंकारादि अथवा धनादि दिया हो उसका, नरकसे भयभीत ऐसे दायादो (विभाग लेनेवाले) को विभाग नहीं करना चाहिये ॥

येन यत्स्वं खनेर्लब्धं
विद्यया लब्धमेव च ॥
मैत्रं स्त्रीपक्षलोकाद्वा-
गतं तद्भज्यते न कैः ॥ १०२॥

किसीको कुछ द्रव्य खानेसे मिला हो, अथवा विद्याकर मिला हो, मित्रसे मिला हो, अथवा स्त्रीपक्षके मनुष्योंसे मिला हो, वह भागके योग्य नहीं है ॥ औरभी

बहुपुत्रेष्वशक्तेषु
प्रेते पितरि यद्धनम् ॥
येन प्राप्तं स्वशक्त्या नो
तत्र स्याद्भागकल्पना ॥१०३॥

बहुतसे पुत्र अशक्त अर्थात् छोटी अवस्थाके होते हुए, पिताके मरजानेपर जो किसीने अपने पौरुषसे धन एकत्रित किया हो उसमें भाग कल्पना नहीं है ॥

पित्रा सर्वे यथाद्रव्यं
विभक्तास्ते निजेच्छया ॥
एकत्रीकृत्य तद्द्रव्यं
सहकुर्वन्ति जीविकाम् १०४
विभजेरन् पुनर्द्रव्यं
समांशैर्भ्रातरः स्वयम् ॥
न तत्र ज्येष्ठाङ्ग (क) स्यापि
भागः स्याद्विषमोयतः ॥१०५॥

जो पुत्र पिताने कुछ कुछ द्रव्य देकर अपनी इच्छासे जुदे कर दिये तथा सर्व द्रव्यको इकट्ठा कर साथ मिलकरही जीविका करते हैं, वे अपने आप समान भागसे द्रव्यका विभाग करैं उसमें बड़े पुत्रको अधिक भाग नहीं मिल सकता ॥

पिताके जीते हुए जो पुत्र अलग हो गये उनमेंसे एक कोई मर गया हो तो उसके द्रव्यको भगिनी और भाई समान भाग ग्रहण करैं. यह कहते हैं ॥

जाते विभागे बहुषु
पुत्रेष्वेको मृतो यदि ॥
विभजेरन् समं रिक्थं ?
सभगिन्यः सहोदराः ॥१०६॥

विभाग हो जानेपर बहुत पुत्रोंमेंसे एकका मरण यदि हो गया हो तो भाई और बहन उसका समान भाग कर सकते हैं ॥

यदि विभाग समयमें लोभके वश होकर बड़ा भाई छोटे भाइयोको ठगै तो वह अपने भागकोभी नहीं पासकता है ऐसा बतलाते हैं ॥

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई.

कामिनी किलोल ।

(प्रमेहनाशक और अपूर्वताकतकी दवा)

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातु क्षीणता बीसों प्रकारके प्रमेह, दिसा होते मूतके साथ धातुका गिरना शिरका घूमना प्रसंगकी इच्छा न होना और होभी तो शीघ्र वीर्य्यपात, आनन्द न आना नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोड़ा चलनेसे थकावट आना भूख कम लगना चेहरेकी खुशकी वा जर्दी बदनमें फुर्ती न रहना शरीरकी दुर्ब्बलता, रगोंकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी आदि सब रोग जड़से नष्ट कर नया वीर्य पैदा करती है जिससे उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आंखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढ़ाती और नई जवानीका मजा दिखाती है । मूल्य १ ड़िब्बा २॥।) २ ड़िब्बा ५) ३ ड़िब्बा ७) ६ ड़िब्बा १३) खर्च माफ

बवासीरकी दवा ।

इस दवासे खूनीवादी नईपुरानी सब तरहकी दुखदायी बवासीर दूर होती है । की० १।) खर्च माफ ।

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसको गुप्तभागपर लगानेसे उससंबंधी सर्व रोग दूर होते हैं । फी सीसी १।) खर्च माफ.

बृहल्लक्ष्मीविलासरस ।

इससे धातुक्षीण धातुशोष राजयक्ष्मा कमजोरी मंदाग्नि इनको नाश करता है और वृद्धकोभी युवा करता वाल सफेद नहीं होते हैं स्तम्भनकर्ता और ताकतकेवास्ते संसारमें इससे बढ़कर दवा नहीं है। फी शीशी १) डां. ख. ≈)

मनरञ्जन तैल ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीयग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित आर लाभदायक बनाया है इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है वदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूरकर लहू और ताकत बढ़ती है फी शीशी ॥≈) डां. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूंख खूब लगती है वदहजमी हैजा खट्टी डकार छातीजलन कब्ज पेचिश वायु शूल पित्तरोग ववासीर प्रमेहनाशक है स्वादवगुणकी ज्यादा तारीफ़ वृथा है। फी शीशी ॥) डां. ख. अ.

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतका हिलना मसूड़ोंका फूलना खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ़ बने रहेंगे । फी डिब्बी ।)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आंखोंका जाला धुन्ध फुली पानी बहना सुर्खी पखर आदिनेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढ़ाता ठंडक रखता और पढ़ते २ आंखें नहीं थकती हैं फी तोला १) लगानेकी सलाई ।)

दवादादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादोंको तगादाकर भगाती है । फी डिब्बी ।)

मंगानेका पत्ता—हजारीलाल जैन, वैद्य, पंसारीटोला–इटावा (यू०)०पी

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

अत्यंतनिषितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम्।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्॥

अमृतचन्द सूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया

सप्तम वर्ष। आषाढ कृष्ण १ श्रीवीर सं० २४३२। अंक १६

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

"श्रीदत्तप्रसाद" प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति ।
६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।
१२ ,, ,, -) पंक्ति ।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु. ।
६ ,, ,, ५) रु. ।
१तोले तककी ८) रु. ।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकोविरुद्ध न होंगे ।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

गोपालदास बरैया—
संपादक जैनमित्र—शोलापुर ।

सूचना

१ हरएक पत्रवालोंका नियम है कि, अग्रिम मूल्य पाये विना पत्र नहीं भेजते परन्तु हम जैनी भाईयोंकी उदारताके कारण इस नियमका अनुकरण नहीं करते थे परन्तु एसा नियम हमारा चल नहीं सका और यह कृपा वी. पी. वापिस करनेवालोंकी है. इससे हमको बड़ा नुकसान उठाना पड़ा है और इसी कारण इस वर्षमें वी. पी. से रुपया मगाना अभीसे प्रारम्भ कर दिया गया है. ग्राहकगणोंसे यह रुपया पूरे सालका मगाया जाता है अतएव वे यह न समझे कि, यह ६ माहकाही रुपया मगाया जा रहा है उनको सालभरतक जैनमित्र भेजा जायगा । इस सालके आखीर याने कातिक बदी १५ तकका ग्राहकोंसे इसका मूल्य अदा कर लिया जायगा । और आगेसे अष्टम वर्षका मूल्य प्रथम अंकसेही मगाया जायगा।

२ हमारे बहुतसे भाई ऐसे पोष्टकार्ड भेजते हैं कि, जिनपर ठिकानेकी तरफ दाहिनी ओरके अर्धभागमें जो कि, सर्कारकी तरफसे सिर्फ ठिकाना लिखनेके लिये नियत किया गया है, कार्ड बेचनेवालोंके ठिकाने वगैरह छपे रहते हैं जिससे वैरंग हो जाते हैं इसलिये ऐसे पोष्टकार्ड न भेजें अन्यथा वापिस कर दिये जायगे ।

श्रीवीतरागायनमः

आषाढ़ कृष्ण १ श्रीवीर संवत् २४३२.

वर्ष ७. अंक १६

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियाँ

इसही अंकमें मुंशी "चंपतरायजीकी करतूत" शीर्षक एक लेख अन्यत्र प्रकाशित है. पाठकोंसे प्रार्थना है कि, उस लेखको खूब ध्यान देकर पढ़ें, क्योंकि उस लेखने महासभाके कर्ता धर्ताओंकी गूढ़ पालिसीका अच्छी तरह **भंडा फोड़** कर दिया है किसीने ठीक कहा है कि, "**पानीका मैला ऊपरही आवेगा चाहे जितना कोई छुपकर काम करै खोटा काम अवश्यही प्रगट होगा.**"

जैनमित्रमें कई अंकोंसे महाविद्यालय संबंधी आन्दोलन चल रहा है. उस आन्दोलनमें कुटिल नीतिपर चलने वालोंकी कड़ी समालोचना बांच कर हमारे बहुतसे भाई हमपर रुष्ट होरहे हैं और हमारे लेखोंको सभ्यतासे च्युत बता रहे हैं, परन्तु यह उनकी भूल है, सभ्यतासे च्युतित वही होती है जब अभिप्रायमें दुष्टता होती है सोही अमृतचन्द्र सूरिने कहा है कि, "**हेतौ प्रमत्तयोगे निर्दिष्टे सकलवितथवचनानाम् हेयानुष्ठानादेरनुवदनं भवति नासत्यम्**"

कहिये ! महासभाके सभासदो ! अबभी आपकी आंखें खुलेंगीं या नहीं ! अब तो महामंत्रीजीकी करतूतभी देख ली ! क्या ! फिरभी अभी घोर निद्रामेंही सोते रहोगे ! यदि जैनसमाजके हितकी थोड़ीसीभी मात्रा आपके हृदयमें है तो शीघ्रही महासभाकी प्रबन्धकारिणी सभाकी काया पलट कर दीजिये और महासभाको सच्ची महासभा बनाइये.

पाठक महाशयो ! इस अंकमें सुशीला और जैनसिद्धान्त कारण वश नहीं दिया गया है अतएव क्षमा करैं ।

श्री यशोविजय जैन पाठशाला काशीमें महामहोपध्याय श्री स्वामी राममिश्रजी शास्त्रीका जैन धर्मपर व्याख्यान।

श्री मते रामानुजायनमः

सज्जन महाशय!

आज बड़ा सुदिन और माङ्गलिक समय है कि, हम भारतवर्षीय जिनके यहां सृष्टिके आदिकालहीसे सभ्यता, आत्मज्ञान, परार्थे आत्मसमर्पण, आत्माकी अनाद्यन्तताका ज्ञान चला आया है बल्कि समयके फेरसे कुछ पुरानी प्रतिष्ठा पुरानीसी पड़गयी है, वे इस स्थानमें एकत्र हुये हैं अवश्यही इसे सौभाग्य मानना और कहना चाहिये, क्योंकि वैदिक मत और जैन मत सृष्टिकी आदिसे बराबर अविछिन्न चले आये हैं और इन दोनों मजहबोंके सिद्धान्त विशेष घनिष्ठ (समीप) संबन्ध रखते हैं जैसा कि, पूर्वमें मैं कह चुका हूं अर्थात् सत्कार्यवाद, सत्कारणवाद, परलोकास्तित्व, आत्माका निर्विकारत्व, मोक्षका होना और उस्का नित्यत्व, जन्मान्तरके पुण्य पापसे जन्मान्तरमें फल भोग, व्रतोपवासादिव्यवस्था, प्रायश्चित्तव्यवस्था, महाजनपूजन, शब्दप्रामाण्य इत्यादि समान हैं, बस तो इसी हेतु यहां यह कहते हुए मेरा शरीर पुलकित होता है कि, आजका यह हमारा जैनोंके सङ्ग एक स्थानमें उपस्थित होकर संभाषण वह है कि, जो चिरकालके बिछुड़े भाई भाईका होता है। सज्जनों! यहभी याद रखना जहां भाई भाईका रिश्ता है वहां कभी कभी लड़ाईकीभी लीला लग जाती है परन्तु याद रहे उस्का कारण केवल अज्ञानही होता है।

इस देशमें आजकल अनेक अल्पज्ञ जन बौद्धमत और जैनमतको एक जानते हैं और यह महाभ्रम है। जैन और बौद्धोंके सिद्धान्तको एक जानना ऐसी भूल है कि, जैसे वैदिक सिद्धान्तको मान कर यह कहना कि, वेदोंमें वर्णाश्रमव्यवस्था अथवा जातिव्यवस्था नहीं है, अथवा यह कहना कि, द्विजोंने शूद्रोंको झूठमूठ छोटा बनाकर उन्हें बड़े क्लेश दिये अब हम उन्हें क्लेशमुक्त करेंगे. सज्जनों! आप जानते हैं दुनियांमें रुपया बहुतही आवश्यक वस्तु है और वह बड़ेही कष्टसे मिलता है यदि कोई उस्का सीधा और उत्तम द्वार है तो शिल्प और सेवा, तो अब ध्यानसे विचारिये कि, द्विजोंमें ब्राह्मण और क्षत्रिय सबसे बड़े समझे गये हैं उन्होंने अपने हाथमें आवश्यक बात कोई न रक्खी। ब्राह्मणोंने अपने हाथमें केवल कुश मुष्टि रक्खी और क्षत्रियोंने खड्ग कोशमुष्टि रक्खी। तब भला देखो तो जिन्होंने अपने हाथमें निकम्मी चीजें रख कर वैश्योंको कृषिवाणिज्य दे डाला और शूद्रोंको उससेभी बढ़ कर शिल्प और सेवा दे डाली। सज्जनों! जानते हो शिल्प कौन चीज है? शिल्प वह है कि, जिसके कारण इंगलेंड जगत्का बादशाह है नहीं २ कहो शाहनशाह है और जिसके अभावहीसे हमारा देश, देश इसे क्या कहें, जन्मभूमि, जननी,

भारतभूमि रसातलको जा रही है। विचारका स्थान है जब शिल्प शूद्रोंके हाथमें दे डाला तब तो वैश्यभी बिचारे शूद्रोंके पीछे पड़ गये, क्योंकि कृषिमें दैवी आपत्का भय रहता है और वाणिज्यमें तो औरभी अधिक आपत्ति है, सबसे अच्छी शूद्रोंकी जीविका है। शिल्प, और सेवा, जिसके न कोई आपत है नतो नुकसान। तब ही तो कहा गया है—

स्वर्णपुष्पमयीं पृथ्वीं
चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः।
शूराश्च कृतविद्याश्च ये
च जानन्ति सेवितुम्॥

तब तो देखनेका स्थान है कि, क्षत्रियकी जीविका तो हथेलीमें जान रख कर है और ब्राह्मणकी तो उससेभी कठिन है। जब वह बारह और बारह चौबीस वर्ष विद्यार्जन करेगा तब वह जीविका करेगा परन्तु शूद्रका जीवन कैसा सुलभ है। जहांपर देखो वहांपर सर्वत्र शूद्रोंपर अनुग्रह है—

न शूद्रे पातकं किंचिन्नच संस्कारमर्हति।

द्विजोंके लिये मनुने नियम किया है कि, वे फलां फलां देशमें निवास करें। परन्तु शूद्रोंके लिये वे कहते हैं—

एतान् द्विजातयो दे-
शान् संश्रयेरन् प्रयत्नतः।
शूद्रस्तु यत्र कुत्रापि
निवसेद् वृत्तिकर्षितः॥

तब तो शूद्रोंके लिये मनुने देशकी यथेच्छ आज्ञा देदी अब क्या चाहिये।

बस तो इस रीतिपर यहभी अज्ञोंकी दन्तकथा है कि, जैन और बौद्ध एक समान हैं। सज्जनों! बुरा न मानो और बुरा माननेकी बातही कौनसी है जब कि, खाद्यखण्डनकार श्रीहर्षने स्वयं अपने ग्रन्थमें बौद्धके साथ अपनी तुलना की है और कहा है कि, हम लोगोंसे (याने निर्विशेषाद्वैत सिद्धान्तियोंसे) और बौद्धोंसे यही भेद है कि, हम ब्रह्मकी सत्ता मानते हैं और सब मिथ्या कहते हैं, परन्तु बौद्धशिरोमणि माध्यमिक सर्व शून्य कहता है तब तो जिन जैनोंने सब कुछ माना उनसे नफरत करनेवाले कुछ जानतेही नहीं और मिथ्या द्वेष मात्र करते हैं यह कहना होगा।

सज्जनों! जैन मतसे और बौद्ध सिद्धान्तमें जमीन आसमानका अन्तर है। उसे एक जान कर द्वेष करना यह अज्ञजनोंका कार्य है। सबसे अधिक वे अज्ञ हैं कि, जो जैन सम्प्रदायसिद्ध मेलोंमे विघ्न डाल कर पाप भागी होते हैं।

सज्जनों! आप जानते हैं जैनोंमें जब रथयात्रा होती है तब किनकी मूर्त्ति रथमें बिराजती है? सज्जनों! देव गन्धर्वोंसे लेकर पशु पक्षि पर्यन्त जो पूजाकी जाती है वह किसी मूर्तिकी! अथवा मट्टी पत्थरकी! नहीं की जाती है जो ऐसा जानते हैं वे ऐसे अज्ञ हैं कि, उन्हें जगत्में डेढ़ अकल मालुम होती है याने एक में आप स्वयं, आधीमें सब जगत्। क्या मूर्त्तिपूजक मूर्त्ति निन्दकोंसेभी कम अकल हैं!

सज्जनों! मूर्त्तिपूजा वह है कि, जिसे मू-

तिनिन्दक नित्य करते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि, इसमें हमारीही निन्दा होती है। देखिये ऐसा कौन देश, नगर, ग्राम, वन, उपवन है कि, जहां पूज्य महारानी विक्टोरियाकी मूर्ति नहीं है और लोग उसे पवित्र भावसे पूजन नहीं करते । ठीक ही है ।

गुणाः सर्वत्र पूज्यन्ते !
पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।

जब उनमें ऐसे गुण थे तो उनकी पूजा कौन न करे । बस तो अब आपको ढोलकी पोल अवश्य ज्ञात हुई होगी, मिशनरी लोगोंकी मूर्त्ति पूजन निन्दा देख करही हमारे (मजहबी न सही देशभाई ब्रह्मसमाजी आर्य्यसमाजी) देशवासी मूर्त्ति निन्दा करने लगे हैं ।

सज्जनों ! बुद्धिमान् लोग जब गुणकी पूजा करते हैं तब जैसी हमारी पूज्य मूर्तियोंमें पूज्यता बुद्धि है वैसेही जहां पूजायोग्य गुण है वहां सर्वत्र पूजा करनी चाहिये। सज्जनों! ज्ञान, वैराग्य, शान्ति, क्षान्ति, अदम्भ, अनीर्ष्या, अक्रोध, अमात्सर्य, अलोलुपता, शम, दम, अहिंसा, समदृष्टिता इत्यादि गुणोंमें एक एक गुण ऐसा है कि, जहां वह पाया जाय वहांपर बुद्धिमान् पूजा करने लगते हैं तब तो जहां ये पूर्वोक्त सब गुण निरतिशयसीम होकर विराजमान हैं उनकी पूजा न करना अथवा गुण पूजकोंकी पूजामें बाधा डालना क्या इनसानियतका कार्य है? महाशय ! वैदिक जन ! अथवा मूर्तिपूजा विद्वेषि नूतन मजहबी सुजन जन ! जैनोंमें जिनका रथ प्रायः निकलता है वह किनका निकलता है? आप जानते हैं? वे महानुभाव हैं पारस नाथ स्वामी, महावीर स्वामी जिनदेव और ऐसेही ऐसे तीर्थङ्कर, तब तो उनकी पूजाका विरोध करना अथवा निन्दा करना यह अज्ञका कार्य नहीं है? सुजनों! आपने कभी यह श्लोक सुना है जिनमें पार्श्वनाथ स्वामीके विषयमें काम देव और उनकी पत्नीका सम्वाद है ।

कोऽयं नाथ ! जिनो भवे-
त्तव वशी हूँ हूँ प्रतापी प्रिये ।
हूँ हूँ तर्हि विमुञ्च कात-
रमते शौर्यावलेपक्रियाम् ॥
मोहोऽनेन विनिर्जितः
प्रभुरसौ तत्किंकराः के वयम् ।
इत्येवं रतिकामजल्पविषयः
पार्श्वः प्रभुः पातु नः ॥

सज्जनों ! जिनके ब्रह्मचर्यकी स्तुति काम और रति करते हैं वे कैसे हैं जिनकी हुशयारीको चोर सराहै वेही तो हुशयार हैं ! पूरा विश्वास है कि, अब आप जान गये होंगे कि, वैदिक सिद्धान्तियोंके साथ जैनोंके विरोधका मूल केवल अज्ञोंकी अज्ञता है। और वह ऐसी अज्ञता है कि, अनेक बार पूर्वमें उस अज्ञताके कारण अदालत हो चुकी है । सज्जनों ! अज्ञता ऐसी चीज है उस्के कारण अनेक बेर अनेक लोग बिना जाने बूझे दूसरेकी निन्दा कर बैठते हैं । थोड़ ही दिनकी बात है कि, किसीने नये मजहबी जोशमें आकर जैन मतमें मिथ्या आरोप

किये और अन्तमें हानि उठाई । मैं आप को कहां तक कहूं बड़े २ नामी आचार्योंने अपने ग्रन्थोंमें जो जैनमत खण्डन किया है वह ऐसा किया है कि, जिसे सुन देख कर हँसी आती है ।

मैं आपके संमुख आगे चल कर स्याद्वादका रहस्य कहूंगा तब आप अवश्य जानजांयगे कि, वह एक अभेद्य किला है उस्के अंदर मायामय गोले नहीं प्रवेश कर सकते । परंतु साथही खेदके साथ कहा जाता है कि, अब जैनमतका बुढ़ापा आगया है अब इसमें इने गिने साधु, गृहस्थ, विद्यावान रहगये हैं । जैसे कि, साधुवर्य परमोदासीनस्वभाव, आत्मविज्ञानपरायण, ज्ञानविज्ञानसंपन्न श्री धर्म विजयजी साधुसंप्रदायमें हैं और गृहस्थोंमें तो विद्वानोंकी संख्या औरभी कम है जहां तक मुझे यादगारी और जानकारी है पण्डितशिरोमणि पन्नालालजी न्यायदिवाकर इस मतके अच्छे जानकार हैं और उनके कारण जैन संप्रदायकी बड़ी प्रतिष्ठा है और नाम है । और नवीन गृहस्थमण्डलीमें होनहार और जैन संप्रदायको लाभ पहुंचानेकी योग्यतावाले खुरजाके सेठ मेवारामजी हैं, वे शास्त्रानुरागी हैं और शास्त्रज्ञानुरागी हैं उन्होंने अपने यहां एक स्वरूपानुरूपा संस्कृतपाठशाला स्थापित की है और उस पाठशालामें विविधविद्या विशारद प्रसिद्धनामा श्रीमान् पण्डित चण्डीप्रसादजी सुकुल जैसे धुरन्धर अध्यापक हैं । देखा जाता है कि, इस पाठशालाका फल उत्तम है । पण्डित श्यामसुन्दर वैश्य इसी पाठशालाके फलस्वरूप हैं जिनका शास्त्रमें अच्छा अभिनिवेश है । आशा है कि, यह पाठशाला जैन लोगोंमें विद्या प्रचारकी मूलभूत होगी । सज्जनों ! एक दिन वह था कि, जैन संप्रदायके आचार्योंके हुङ्कारसे दसों दिशाएँ गूँज उठती थीं, एक समयकी वार्ता है कि, हमारेही (याने वैदिक संप्रदायी वैष्णवने) किसी सांप्रदायिकने हेमचन्द्राचार्यजीको देख कर (जोकि संन्यासवेषके थे) कहा ।

आगतो हेमगोपालो दण्डकम्बलमुद्वहन् ।

बस तो फिर क्या था उन्होंने मन्दमुसुकानके साथ उत्तर दिया कि ।

षड्दर्शनपशुग्रामांश्चारयञ्जैनवाटके ॥

सज्जनों ! इस श्लोकके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्धको सुन कर आप लोग खूब जानगये होंगे कि, पूर्व समयपर आपसमें विद्वानोंके हँसी ठठोलभी कैसे होते थे । ये महानुभाव हेमचन्द्राचार्य व्याकरणसे लेकर दर्शनशास्त्रपर्यन्त सर्व विषयमें अप्रतिम आचार्य थे । सज्जनों ! जैसे काल चक्रने जैनमतके महत्व को ढांक दिया है वैसेही उस्के महत्वको जाननेवाले लोगभी, अब नहीं रहगये । **रज्जब सांचे सूरको बैरी करे बखान** । यह किसी भाषा कविने बहुतही ठीक कहा है । सज्जनों ! आप जानते हो मैं वैष्णव संप्रदायका आचार्य हूँ यही नहीं है मैं उस संप्रदायका सर्वतोभावसे रक्षक हूँ और साथही उस्की तरफ कड़ी नजरसे देखनेवालेका दीक्षकभी

हूँ तौभी भरी मजलिसमें मुझे यह कहना सत्यके कारण आवश्यक हुआ है कि, जैनोंका ग्रंथसमुदाय, सारस्वत महासागर है। उस्की ग्रन्थ संख्या इतनी अधिक है कि, उन ग्रन्थोंका सूचीपत्रभी एक महानिबन्ध हो जायगा। जिन्होंने जैन पुस्तक भण्डार देखे हैं उन्हें यह कहना आवश्यक न होगा कि, जैनोंकी ग्रन्थ संख्या जितनी सुदीर्घ है उतनी (वैदिक संप्रदाय छोड़ कर) अन्यकी नहीं है। और उस पुस्तक समुदायका लेख और लेख्य कैसा गम्भीर, युक्तिपूर्ण, भावपूरित विशद और अगाध है! इस्के विषयमें इतनाही कह देना उचित है कि, जिन्होंने सारस्वत समुद्रमें अपने मति मन्थानको डाल कर चिरान्दोलन किया है वेही जानते हैं। तबही तो कहागया है कि।

देवीं वाचमुपासते हि
बहवः सारं तु सारस्वतम्।
जानीते नितरामसौ
गुरुकुलक्लिष्टो मुरारिः कविः॥
अब्धिर्लंघित एव
वानरभटैः किन्तस्य।
गम्भीरतामापातालनिमग्न-
पीवरतनुर्जानाति मन्थाचलः॥

सज्जनों! जैनमतका प्रचार कबसे हुआ इस बारेमें लोगोंने नाना प्रकारकी उछल कूद किई है और अपने मनोनीत कल्पना किई है। और यह बात ठीकभी है जिस्का जितना ज्ञान होगा वह उस वस्तुको उतनाही और वैसाही समझेगा। किसी अन्धेने हाथी के पूँछको धरा और कहने लगा कि, हाथी लाठी जैसा लंबा होता है। परन्तु दूसरे अन्धेने जब उस्की पीठ छुई तो कहने लगा कि, वह छात जैसा होता है। परन्तु हाथीके कान स्पर्श करनेवालेने तो कहा कि, वह सूप जैसा होता है।

तो बस यही हाल संसारका है जिस्के यहां जब सभ्यताका प्रचार हुआ तो उसने उसी तारीखसे दुनियाकी सब बात मान ली। जो छः हजार वर्षसे सृष्टिको मान बैठे हैं उन्हें हम यदि अपना नित्य स्नानका संकल्प सुनावें तो वे हंस देंगे और कहेंगे कि, कृष्ण बाहर कल्प, श्वेत बाहर कल्प, ब्रह्माका द्वितीय परार्द्ध और मनु, मन्वतर, चतुर्युग व्यवस्था यह सब कल्पित है।

तब उन्हें जैनमत प्रचारकी तारीखभी अवश्य ईस्वी समयके अनुसारही कहनी होगी। और कह देंगे कि, अधिकभी यदि जैनमत के प्रचारका काल कहा जाय तो छठीं सदी होगी। परंतु सज्जनों! हम आपको ऐसी कच्ची मनमानी बात न कहनी चाहिये। ईश्वरकी सृष्टि अनाद्यनन्त है और कल्पकेभी पूर्वमें कल्प है जब ऐसी स्थिति है तब तो इस कल्पकी इस सृष्टिकोभी इतना समय बीत चुका है कि, जिस्के अङ्कोंकी शून्य सूचक बिन्दुमाला देख कर बुद्धिमान् गणककी बुद्धिमें भी चक्कर आ जायगा।

सज्जनों! यह सृष्टि बहुतही प्राचीन कालसे चली आती है और आप यहभी जानते हैं कि, सृष्टिकी आदिहीमें सर्जन करनेवालेने

आवश्यक वस्तुओंका ज्ञान देदिया था, उसका निरूपण मेरे जैसा अज्ञ कहां तक कर सकता है परन्तु यह अवश्य कहा जा सकता है कि, परमेश्वरने अपनी सृष्टिमें लौकिक उन्नतिकी सीढ़ी पर्यन्त सबही विषय सृष्टिके आदिमें जीवोंको दिखा दिया था तो अब आप ऐसा जानिये कि, जैसे उन्हें आदि कालमें खाने पीने न्याय, नीति और कानूनका ज्ञान मिला, वैसेही अध्यात्म शास्त्रका ज्ञानभी जीवोंने पाया। और वे अध्यात्म शास्त्रमें सब हैं जैसे सांख्य योगादि दर्शन और जैनादि दर्शन।

तब तो सज्जनों! आप अवश्य जान गये होंगे कि, जैनमत जबसे प्रचलित हुआ है। जबसे संसारमें सृष्टिका आरम्भ हुआ तबसे यही इसका सत्य उत्तर है।

जिनकी सभ्यता आधुनिक है वे जो चाहेंसो कहें परन्तु मुझे तो (जिसे अपौरुषेय वेद माननेमें किसी प्रकारका असंतोष और अनङ्गीकार नहीं है यही नहीं, परन्तु सर्वथा तृप्ति, विश्वास, और चेतः प्रसत्ति है) इसमें किसी प्रकारका उज्र नहीं है कि, जैन दर्शन वेदान्तादि दर्शनोंसेभी पूर्वका है। तबही तो भगवान् वेदव्यास महर्षि ब्रह्मसूत्रोंमें कहते हैं:—नैकस्मिन्नसंभवात्। सज्जनों! जब वेदव्यासके ब्रह्मसूत्र प्रणयनके समयपर जैनमत था। तब तो उसके खण्डनार्थ उद्योग किया गया, यदि वह पूर्वमें नहीं था तो वह खण्डन कैसा और किसका? सज्जनों! समय अल्प है और कहना बहुत है इससे छोड़ दिया जाता है नहीं तो बात यह है कि, वेदोंमें अनेकान्त वादका मूल मिलता है। सज्जनों! मैं आपको वेदान्तादि दर्शन शास्त्रोंका और जैनादि दर्शनोंका कौन मूल है यह कह कर सुनाताहूँ। उच्च श्रेणीके बुद्धिमान् लोगोंके मानस निगूढ विचारही दर्शन हैं। जैसे—अजातवाद, विवर्तवाद, दृष्टिसृष्टिवाद, परिणामवाद, आरम्भवाद, शून्यवाद, इत्यादि दार्शनिकोंके निगूढ विचारही दर्शन हैं। बस तब तो कहना होगा कि, सृष्टिकी आदिसे जैनमत प्रचलित है सज्जनों! अनेकान्तवाद तो एक ऐसी चीज है कि, उसे सबको मानना होगा, और लोगोंने मानाभी है। देखिये विष्णु पुराणमें लिखा है—

नरकस्वर्गसंज्ञे वै
पुण्यपापे द्विजोत्तम।
वस्त्वेकमेव दुःखाय
सुखायेर्ष्यागमाय च।
कोपाय च यतस्तस्मा-
द्वस्तु वस्त्वात्मकं कुतः?

यहांपर जो पराशर महर्षि कहते हैं कि, वस्तु वस्त्वात्मक नहीं है, इसका अर्थ यही है कि, कोईभी वस्तु एकान्ततः एक रूप नहीं है, जो वस्तु एक समय सुख हेतु है वह दूसरे क्षणमें दुःखकी कारण हो जाती है, और जो वस्तु किसी क्षणमें दुःखकी कारण होती है वह क्षणभरमें सुखकी कारण हो जाती है। सज्जनों! आपने जाना होगा कि, यहांपर स्पष्टही अनेकान्तवाद कहा गया है। सज्जनों! एक बातपर औरभी ध्यान

देना जो—सदसद्भ्यामनिर्वचनीयं जगत् कहते हैं उनकोभी विचार दृष्टिसे देखा जाय तो अनेकान्तवाद माननेमें उज्र नहीं है क्योंकि जब वस्तु सत्‌भी नहीं कही जाती और असत्‌भी नहीं कही जाती तो कहना होगा कि, किसी प्रकारसे सत् होकरभी वह किसी प्रकारसे असत् है, इस हेतु न वह सत् कही जा सकती है और नतो असत् कही जा सकती है, तो अब अनेकान्तता मानना सिद्ध होगया ।

सज्जनों ! नैयायिक तमको तेजोऽभावस्वरूप कहते हैं और मीमांसक और वैदान्तिक बड़ी आरभटीसे उस्को खण्डन करके उसे भावस्वरूप कहते हैं तो देखनेकी बात है कि, आजतक इसका कोई फैसला नहीं हुआ कि, कौन ठीक कहता है, तो अब क्या निर्णय होगा कि, कौन बात ठीक है, तब तो दोकी लड़ाईमें तीसरेकी पौंबारा है याने जैनसिद्धान्त सिद्ध हो गया, क्योंकि वे कहते हैं कि, वस्तु अनेकान्त है उसे किसी प्रकारसे भावस्वरूप कहते हैं, और किसी रीतिपर अभावस्वरूपभी कह सकते हैं । इसी रीतिपर कोई आत्माको ज्ञानस्वरूप कहते हैं और कोई ज्ञानाधारस्वरूप बोलते हैं तो बस अब कहनाहीं क्या अनेकान्तवादने पद पाया। इसी रीतिपर कोई ज्ञानको द्रव्यस्वरूप मानते हैं और कोई वादी गुणस्वरूप । इसी रीतिपर कोई जगत्‌को भावस्वरूप कहते हैं और कोई शून्यस्वरूप तब तो अनेकान्तवाद अनायास सिद्ध हो गया ।

कोई कहते हैं कि, घटादि द्रव्य हैं और उनमें रूपस्पर्शादि गुण हैं । परन्तु दूसरी तरफके वादी कहते हैं कि, द्रव्य कोई चीज नहीं है वह तो गुण समुदायस्वरूप है । रूप, स्पर्श, संख्या, परिमाण इत्यादिका समुदायही तो घट है इसे छोड़कर घट कौन वस्तु है । कोई कहते हैं आकाश नामक शब्दजनक एक निरवयव द्रव्य है । परन्तु अन्यवादी कहते हैं कि, वह तो शून्य है।

सज्जनों ! कहांतक कहा जाय कुछ वादियोंका कहना है कि, गुणत्व गुण है । परन्तु दूसरी तरफ वादी लोगोंका कहना है कि, गुरुत्व कोई चीज नहीं है पृथ्वीमें जो आकर्षण शक्ति है उसे न जान कर लोगोंने गुरुत्व नामक गुण मान लिया है ।

मित हित वाक्य पथ्य हैं; उसीसे ज्ञान होता है वाग्जालका कोई प्रयोजन नहीं है इस हेतु यह विषय यहांही छोड़ दिया जाता है और आशा की जाती है कि, जैनमतके क्रमिक व्याख्यान दिये जांयगे ।

शुभानि भूयासुर्वर्द्धमानानि ।

शम्

स्वामी राममिश्र शास्त्री

अगस्त्याश्रमाश्रम

काशी

मि० पौष शुक्ल प्रतिपत्—

बुधवार सं० १९६२

श्रीभद्रबाहुसंहितायाम्

दायभागप्रकारः

निन्हुते लोभतो ज्येष्ठो
द्रव्यं भ्रातॄन् यवीयसः ॥
वञ्चते राजदण्ड्यः स्यात्
स भागार्हो न जातुचित् १०७

लोभके वश होकर ज्येष्ठभाई द्रव्यको छिपावै और यदि छोटे भाईयोंको ठगे तो राजद्वारा दण्ड करने योग्य है तथा अपना भाग कदापि नहीं पासकता ॥

द्यूतादिव्यसनासक्ताः
सर्वे ते भ्रातरो धनम् ॥
न प्राप्नुवन्ति दण्ड्याश्च
प्रत्युतो धर्मविच्युताः ॥ १०८

धर्मको छोड़कर द्यूतादि व्यसनोंमें यदि संपूर्ण भाई आसक्त हो जावें तो उनको धन नहीं मिलसकता प्रत्युत दण्ड करनेके योग्य हैं ॥

(शङ्का) यदि पुत्रोंको अलग करनेके बाद अन्यपुत्र पैदा हो तो उसके भोजनादिका प्रबन्ध किसे करना चाहिये ?

उत्तर ।

विभागोत्तरजातस्तु
पित्र्यमेव लभेद्धनम् ॥
तदल्पं चेद्विवाहं तु
कारयन्ति सहोदराः ॥१०९॥

विभागके बाद उत्पन्न हुआ जो पुत्र वह पिताके भागका द्रव्यही ले सकता है अधिक नहीं यदि बहुत कम हो तो उसका विवाह उसके भाईयोंको कराना चाहिये ॥

यदि माता और पुत्रको भिन्न प्रकृतिवाले देखकर विभागपूर्वक विभक्त करके पिता परलोकगमन कर गया हो. पश्चात् विना पुत्रोत्पत्तिकेही पुत्रभी मर जाय तो पुत्रके भागको कोन लेवै ? यह कहते हैं ॥

पुत्रस्याप्रजसो द्रव्यं
गृह्णीयात्तद्वधूः स्वयम् ॥
तस्यामपि मृतायां तु
सुतमाता धनं हरेत् ॥११०॥

स्वपुत्रोत्पत्तिके विनाही यदि पुत्र मर जाय तो उसके द्रव्यको उसकी स्त्री लेवै. उसकेभी मरजानेपर पुत्रकी माता लेवै ॥

जिसके शिरपर कर्जा हो रहा है ऐसे बहुत पुत्रवालेकी विभागविधि कहते हैं ॥

ऋणं दत्त्वाऽवशिष्टं तु
विभजेरन् यथाविधि ॥
अन्यथोपार्ज्यते द्रव्यं
पितृपुत्रैः ससाहसैः ॥१११॥

ऋण देकर जो बचा हो उसका यथाविधि विभाग कर्तव्य है. यदि नहीं हो तो पिता और पुत्रोंको साहस पूर्वक कमाना चाहिये ॥

कूपालंकारवासांसि
न विभाज्यानि कोविदैः ॥
गोधनं विषमं चैव
मन्त्रिदूतपुरोहिताः ॥ ११२ ॥

कूप अलङ्कार वस्त्र गोधन तथा अन्यभी मन्त्रीदूत पुरोहितादि विषम द्रव्योंका विभाग विद्वानोंको करना नहीं चाहिये ॥

यदि मातापिताकी मोजूदगीमेंही विवाहित पुत्र मर जाय तो उसकी स्त्रीका गृहमें कैसा अधिकार है यह कहते हैं ॥

पुत्रश्चेज्जीवतोः पित्रो-
मृतस्तन्महिला वसौ ॥
पैतामहे नाधिकृता
भर्त्तृवच्च पतिव्रता ॥ ११३ ॥
भर्तृमञ्चकरक्षार्या
नियता धर्मतत्परा ॥
सुतं याचेत श्वश्रूं हि
विनयानतमस्तका ॥ ११४ ॥

पितामाताके जीतेही यदि पुत्र मर गया हो तो उसकी स्त्रीका पैतामह धनपर भर्त्ताके समान अधिकार नहीं हो सकता किन्तु पतिव्रता भर्त्ताके शयनका रक्षण करती, धर्ममें तत्पर, विनयसे मस्तक नीचा कर श्वश्रूसे पुत्रकी याचना करै ॥

यदि भर्त्ताका उपार्जित द्रव्यभी श्वश्रूश्वशुरके हस्तगत हो जाय तो विधवा ले सकती है या नहीं ऐसा कहते हैं ॥

स्वभर्तृद्रव्यं श्वशुर
श्वश्रूभ्यां स्वकरे यदा ॥
स्थापितं चेन्न शक्ताप्तुं
पतिदत्तेऽधिकारिणी ॥११५॥

अपने पतिका द्रव्यभी जो श्वशुर और श्वश्रूके हस्तगत होगया है उसे नहीं ले सकती केवल पतिसे लब्धद्रव्यकी ही अधिकारिणी है॥

प्राप्नुयाद्विधवा पुत्रं
चेद्गृह्णीयात्तदाज्ञया ॥
तद्वंशजं च स्वलघुं
सर्वलक्षणसंयुतम् ॥ ११६ ॥

विधवा स्त्री यदि श्वश्रूश्वशुरकी आज्ञासे लेवै तो उसके वंशका अपनेसे छोटे, सर्व लक्षण संयुक्त, ऐसे पुत्रको ले सकती है ॥

श्वश्रूके होते सन्ते पति मरजानेपर उसकी स्त्री पतिके उपार्जित स्थावर तथा जंगम द्रव्यको व्यय कर सकती है या नहीं ? उत्तर

जिनोत्सवे प्रतिष्ठादौ
सौहृदे धर्मकर्मणि ॥
कुटुम्बपालने शक्ता
नान्यथा साधिकारिणी ॥११७

जिनेन्द्रके उत्सव प्रतिष्ठादि जातिसंबंधी धर्मकर्मादि कुटुम्बपालन आदि कार्योंमें व्यय कर सकती है दूसरे प्रकारमें अधिकार नहीं है ॥

इति संक्षेपतः प्रोक्तो
दायभागविधिर्मयो-
पासकाध्ययनात्सार-
मुद्धृत्य क्लेशहानये ॥ ११८ ॥
एवंपठित्वा राज्यादि
कर्म यो वा करिष्यति ॥
लोके प्राप्स्यति सत्कीर्त्तिं
परत्राऽऽप्स्यति सद्गतिम् ११९

इस प्रकार संक्षेपसे उपासकाध्ययनसे सार लेकर क्लेशकी हानिके लिये दायभाग मैंने कहा है इसे पढ़कर यदि कोई राज्यादि कार्योंको करैगा तो इस लोकमें कीर्ति तथा परलोकमें सद्गतिको प्राप्त होगा ॥

इस प्रकार दायभाग विषयक अष्टमाध्याय पूर्ण हुआ ॥

विविध प्रसंग।

मिती चैत्र सुदी १ को सूरतमें शा हरगोवनदास देवचंदकी अध्यक्षतामें एक सभा हुई जिसमें व्याख्यान आदि होकर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंदजी बम्बई निवासीको जे. पी. पदवी सरकारकी ओरसे मिलनेकी खुशीमें अभिनन्दन पत्र भेजा गया।

चैत्र सुदी ११ को फलटणमें श्री आदिनाथ स्वामीके मन्दिरमें एक सभा हुई जिसमें श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंदको सरकारकी ओरसे जे. पी. पदवी मिलनेकी खुशी मनाई गई तथा उनके धर्मौदार्यका वर्णन किया गया।

श्रीयुत हुकमचंद दारोगा परवार वर्तमान मुकाम विलासपुर लिखते हैं कि, अगर जिला सिवनीमें पाठशालाका चिरस्थाई प्रवन्ध छह महिनेकी अवधिमें होवे तो हम अपनी शक्ति अनुसार ६०) रु० देंगें।

श्रीयुत वद्रीदासजी वकील सेक्रेटरी—हस्तनापुर तीर्थक्षेत्र कमेटी सूचित करते हैं कि, हस्तनापुर तीर्थस्थानमें जो नवीन धर्मशाला बनाई गई थी उसके उखड़वानेकी नालिश वहांके जमीदारने मुंसफी मेरठमें की थी. परन्तु श्रीजीकी कृपासे नालिश खारिज हो गई। इस नालिशके साथमेंही एक फकीरनेभी नालिश की थी कि, उक्त स्थानमें एक फकीरकी समाधिके निशान बने हुए है अतएव उसकी नालिशभी खारिज हो गई। अन्यमतावलम्बी सदैव एसे झगड़े उठाया करते हैं जिससे दोनों तरफका पैसा वरबाद होता है हम सर्व महाशयोंसे प्रार्थना करते हैं कि, एसे व्यर्थ झगड़े उठानेसे लाभ नहीं हानिही है।

ला. छज्जूमल मित्रसेनजी मुजप्फर नगरसे लिखते हैं कि, यहांपर हीरालालने अपने पोतेके विवाहमें वेश्या नहीं बुलाई। यह हमारे यहांका प्रथमही अवसर है आशा है कि, भविष्यतमें यहांके अन्य भाई इस अमंगलामुखीको नहीं बुलावेंगे।

भाई खुशालचंदजी नांदगांवसे लिखते हैं कि, मु. कन्नड जिला औरंगाबादमें एक पाठशालाके खुलनेका मुहुर्त मीती वैशाख शुक्ल तृतीया गुरुवारको बड़ी धूमधामसे हुवा पाठशालाके स्थापनकर्ता सेठ सालिग्राम गिरधरलालजी हैं॥

विद्वानोंका परलोकवास

हमको यह लिखते अधिक खेद उत्पन्न होता है कि, **पंडित शान्तिलालजी** जो कि, संस्कृत, प्राकृत आदि ग्रन्थोंके मर्मज्ञ थे इस असार संसारसे वैशाख सुदी १५ को कूच कर गये। आपके वियोगसे जैनसमाज शोकित है।

महामहोपध्याय स्वामी राममिश्रजी शास्त्री जो कि, अच्छे निष्पक्ष विद्वान् थे ता. ७ मई सोमवार सन १९०६ को परलोकवासी हुए. आपके वियोगसे सर्व समाज शोकित है । आपने एक व्याख्यान जैनधर्मपर निष्पक्षतासे काशीकी यशोविजय पाठशालमें दिया था और आपका विचार कई एक व्याख्यान देनेका था परन्तु वह दिन ही नहीं आने पाया और आप इस संसारसे चले गये । कालकी गतिही विचित्र है । आपका व्याख्यान अन्यत्र प्रकाशित है ।

तयार होरही है

श्रीवीर संवत २४३३ (वि० सं० व ई० सन सहित) की ज्ञानवर्द्धक डायरी

अबकी बार डायरी छपानेके लिये सेठ हजारीलालजी नीमच आदि कई धर्मोत्साही सज्जनोंने अभीसे सौ सौ प्रति खरीदकर उत्साह दिलाया है अतः धन्यवाद है अन्य महाशयभी इसी प्रकार अभीसे ग्राहक बनकर मेरा उत्साह बढावेंगे । अबके छोटे आकारकी सुंदर जिल्दसंयुक्त गुटकानुमा अश्विन शु. तकही तयार हो जायगी विषयभी नूतन रखे जांयगे व कीमतभी घटाकर ।) ही रखेंगे जो अभीसे ग्राहक बनेंगे उनसे डा० म० माफ, जो ५ ग्राहक एक साथ बनाके भेजेंगे उनको १ प्रति एक साथ भेजेंगे विज्ञापन छपानेवाले व बुकसेलरोंको अभीसे नियम मगानेमें विशेष फाइदा रहैगा ।

हमारे यहांकी नीली काली स्याही (अंगरेजी स्याहीसमान) ।) वाली पुडीमें १० तोले ~) वालीमें १२ तो०)। वालीमें एक दो दवात उत्तम स्याही तयार होती है स्याहीकी बाटली कई किस्मकी तयार होती हैं

सिवाय दशांगधूप, दशांगवटी. सुगंधित उवटन. ताम्बूलविलासचूर्ण (२ रत्तीपानमें रखनेसे कथाचूनाकी जरूरत नहीं) दंतमंजन (कईप्रकार) खाज. दाद. आदिमलहम हरप्रकार गुप्तरोगोंपर चमत्कारिक चूर्ण. अवलेह आदि तत्काल गुणदायक पवित्र और शुद्ध हमारे यहां तयार होते हैं ग्राहकोंको उचित मूल्यपर भेजते हैं गरीबोंको दवा मुफत व अर्द्ध कीमतपरभी भेजते हैं विशेष हाल मालूम करनेको)।। का टिकट भेजो

पत्ता—आर. के जैन.
स्व० का० खंडवा (सी. पी.)

वी. पी. लौटानेवाले महाशयोंसे प्रार्थना ।

आपके पास जैनमित्र नियमानुसार जाता रहा परन्तु जिससमय आपको वी. पी. रुपया मागनेके लिये भेजा उस समय आप लोगोंने वापिस कर दिया । अब आपसे अंतिम प्रार्थना है कि, हमको मूल्य भेज दीजियेगा वरना आप लोगोंके नाम न देनेवालोंकी संख्यामें लिखकर जैनमित्रद्वारा प्रकाशित किये जांयगे.

मेनेजर ।

मुन्शी चम्पतरायजीकी करतूत

जैनमित्र सप्तम वर्षके अंक १४ के सफे १७२ में सम्पादकीय टिप्पणियोंमें महामंत्री मुन्शी चम्पतरायजीकी वह चिट्ठी जोकि सेठ हीराचन्द नेमीचन्दजीको लिखी है छपी है उसमें लिखा है कि, चन्देका रुपया इकठा न होनेके मूल कारण बाबू बनारसीदासही हैं आप खुदही सेक्रेटरी बन गये इत्यादि.

एकतर्फी बात गुड़से मीठी होती है, सहारनपुरवाले भाइयोंके ज्यादा कहनेपर मैंने मंत्री बनना कबूल किया था मैं खुद धींगाधींगी नहीं बनगया. मैं अबभी इस पदसे अलग होना चाहताहूं परन्तु यहांवाले नहीं छोड़ते, मीटिंगमें जो प्रस्ताव पास होते थे वह महामंत्रीजीके पास भेजे जाते थे कभी किसी प्रस्तावको फजूल और अख्तयार बाहर नहीं बताया यह बात उनकी चिट्ठियोंसे आगे जाहिर होगी.

बहुत जल्दी एक लेख महाविद्यालयके विषयका मैं प्रकाश करनेवालाहूं उससे भाइयोंपर सब प्रगट हो जायगा. मनमें और लेखमें और जाहिरमें और यह पालिसी महामंत्रीजीकी उन्हींके पत्रोंसे जाहिर है, यहां तो जो मनमें है वही लिखते और कहते हैं। आदमियोंको धोखा देकर काम करनेकी गूढ़ पालिसीको हमारे अनुभवी महामंत्रीजीही जानते हैं जो चिट्ठियोंमें कुछ औरही लिखते हैं. जाहिरमें कुछ और ।

महाविद्यालयके सहारनपुर लानेमें मुन्शीजी २२ जनवरीके खतमें लिखते हैं कि, हमको यहांतक तय्यार होना होगा कि, अगर मथुरासे कोईभी न आवे तो आसरे नौ विद्यालय जारी करेंगे.

समाजके मतभेदको महामंत्रीजी हिकमत अमलीसे झट सफा कर देते हैं यह ११ फरवरीके खतसे जाहिर है.

(नकल १२ जनवरी १९०६ के खतकी)

डियर बाबू साहब जयजिनेन्द्र

चूंकि सेठीजी जयपुरसे मथुरा आगये बई वजह मैंने उनको लिखा है कि, सहारनपुर जावें और महाविद्यालयके बारेमें जो आपने लिखा है और मैंने जबाब दिया है उसके बारेमें आपसे बातचीत करें, **उनकी राय है कि विद्यालय फौरन तबदील किया जावे.** मुन्शी मूलचन्दसे और सेठीजीसे अब मुखालफत बहुत होगई है ।

चूंकि सेठजीभी नाराज वेतरह हैं पस आप सेठजीसे खत कितावत करें और सब नशेव व फराज उनको समझावें. दर असल ये पौधा उन्हींके घरानेका लगाया हुआ है, अगर राजा लक्ष्मणदासजी इस कदर सरपरस्ती न करते तो न यह सभाही कायम रह सकती थी और न यह महाविद्यालय. आपकी तहरीरसे वह खुश व मुतमय्यन हो जावेंगे । मैं यह चाहता हूं कि, सेठीजीके आनेपर एक

कमेटी साहबान बिरादरीकी की जावे और उसमें सब लोग शरीकहों, वहां महाविद्यालयके तवादलेका सवाल उठाया जावै और जो रिजोल्यूशन पंचायतसे पास हो उसमें आप सब नशेव व फराज समझा देवें कि, साहबान बिरादरीको हर तरहकी सरपरस्ती करनी होगी। हमारा ठिकाना जो मथुरामें है कि, जब कोई नहीं बुलावैगा तो मथुरामें सभा करेंगे वोभी महाविद्यालयके तवादलेसे जाता रहैगा। जब रिजोल्यूशन बिरादरीसे मंजूर हो जावे तो प्रेसीडेन्ट जल्सेके दस्तखतसे एक नकल सेठजीको और एक मुझको भेजी जावे, ऐसा होनेपर बिरादरीपर जोर रहेगा और उनको पास होगा। ये सब कार्रवाई नेमीदास, जम्बूपरशाद या लाला बद्रीदासके हाथसे होवै. आप अपनी चिठ्ठी रवाना न करैं।

अगर वसन्तपंचमीतक मुमकिन न हो तो आइन्दा कोई तारीख मुकर्रर कर ली जावे, काम पुख्तगीसे होना चाहिये

चम्पतराय १२–१–०६

(नकल १७ जनवरी सन १९०६ के खतकी)

डियर बाबू साहब जयजिनेन्द्र

आज मुझे आपके दो खत और कापी * रिजोल्यूशन मिली आपको इस कार्रवाहीकी एक नकल मुझको, एक सेठजीको और एक मूलचन्दको रवाना करनी थी, अगर ये कार्रवाई मेरेपास आजाती तो मुझको जिस कदर तरद्दुद पेश हुआ हरगिज पेश नहीं आता। गोकि मुन्शी मूलचन्द मय पण्डितोंके मुखालफत कर रहे हैं, मुझको कई एक चिट्ठियां कानूनी रवाना करी है मगरमैं जोरके साथ कार्रवाई करुंगा और देखूंगा कि, कौन रोकता है.

सेठीजीके काबूके लड़के हैं बड़े पण्डित चुन्नीलालजीके नौकर कराये हुये हैं, मैंने चुन्नीलालजीको कलही लिख दिया है कि, बड़े पण्डितजीको लिख देवैं कि, वो जानेमें उज्र न करै, मैंनेभी उनको चिट्ठी लिख दी है कि, वो तय्यार रहैं और मेरी दूसरी चिठ्ठी पर फौरन रवाना हो जावें।

किरोड़ीमल और मूलचन्दजीकोभी लिख दिया है कि अब विद्यालय नहीं रुक सकता है सब तय्यार रहैं।

अर्जुनलाल वड़े कामका आदमी है, **किरोड़ीमल खुद अलग होना चाहता है,** सेठीजी एक आदमी जयपुरका रख लेवें जो अंगरेजी और नागरीका कार आजमूदा हौवे. बाबूलाल मेरे ख्यालमें उनका दोस्त है और अच्छा आदमी है २०) रु० तनख्वाह फिलहाल दी जावैगी. सोडावाटरका उबाल मैंने सहारनपुर वालोंको नहीं कहा बल्कि आपको कहा कि, जब कामकी धुन लगती है तो मिस्ल सोडावाटरके करते हैं नहीं तो कुंभकर्णकी नींद सोते हैं, यह अलफाज गैरके वास्ते नहीं बल्कि एक अपने अजीजके वास्ते

---

* (नोट) कापी रिजोल्यूशन वही है कि, जिसमें बजटका जिक्र है।

थे, मगर मेरी उस फिकरेसे तसल्ली हुई है जो आपने लिखा है कि, मेरी वकालतको फरोग होगा कमी न होगी।

डिपुटेशनमें तुलवाभी मय सेठीजीके जावें और लाला उग्रसेनजीके यहां दिखलाया जावे कि, यह फल हम लाये हैं जिसका दरख्त लाला साहबने अपने हाथोंसे लगाया था, कुछ श्लोक वगैरह संस्कृतके या भाषाके बनाये जावें जो भीख मांगनेके मजमूनके हों

क्या बेहतर हो कि, जो लाला मित्रसेनके यहांसे मंजूरी इमारत कालेजके बनानेकी हो जावे और लाला मित्रसेन जैनकालिज-बिलडिङ्ग नाम रक्खा जावे।

मुझे जैनबागमें कालेजकी इमारत तामीर होनेमें कोई उज्र नहीं है बल्कि वह जगह बोर्डिङ्गके वास्ते बहुतही मुनासिब है।

चूंकि महाविद्यालयके आनेपर मथुरामें महासभाका दफ्तरभी नहीं रह सकता है बईवजह आइस्ता २ उसकोभी हटाया जावेगा. पण्डितोंके वास्ते उनके रहनेको मकान उनके किरायेसे तलाश कराये जावें. महाविद्यालयके तुलबा धूमधामसे रेलपरसे बाजेके साथ शहरमें लाये जावैं।

सेठीजी मालूम नहीं कहां हैं, उनके नामकी चिट्ठी मैं मथुरा रवाने करताहूं कि, विद्यालय २६ तक वहां पहुंच जावैं

चम्पतराय १७–१–०६

(नकल १८ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

बखिदमत बाबू बनारसीदास व बाबू चन्दूलालजी !

आपकी कमेटीकी * कार्रवाहीकी नकल मैंने खुद मथुराको सेठजीके मुलाहजेको रवाना कर दी है, और सख्त चिट्ठियां पण्डितों, किरोडीमल, मूलचन्द, नीज तुलबा और सेठीजीको भेजी है कि, २७ से कब्ल सब लोग सहारनपुर पहुंच जावैं मैं यकीन करता हूं कि, तामील होगी और सेठीजीने हिकमतसे काम लिया तो गड़बड़भी नहीं होगी. अब मुन्शी मूलचन्दने चन्द इतराज किये हैं उनकी रफेदादके वास्ते मैंने आपके रेज्यूलेशनमें एक दफा बतौर जमीमे नम्बर ८ बढ़ाई है आप उसको देख लेवें और उसी तरहपर जैन गजटमें शाये करावें उसमें कोई इतराजका मुकाम नहीं है और चन्दा देनेवालोंको कोई उज्र नहीं रहेगा जिसका दिल जिस मदमें चाहे देवे। मेरे दिलपर उस फिकरेने बहुत असर किया है जो बाबू बनारसीदासने लिखा है कि, बाबू चन्दूलालके वालिदकी राय है कि, वसन्तपंचमीसे पहिले विद्यालय मथुरासे आ जावें, पस उन्हींकी सरपरस्ती मुझे काफी है और भगवानने चाहा तो सहारनपुरमें जरूर तरक्की होगी।

---

* (नोट) यह कमेटीकी कार्रवाही वो है जिसमें बजट है।

बजटमें खर्च महाविद्यालयका ज्यादा होना चाहिये क्योंकि संस्कृतके तुलवाकी बहुत खातिर की जाती है, अलावा खुराकके हाथ खर्चभी दिया जाता है. एक मुनीमके रखनेकीभी जरूरत होगी. अब वह सिर्फ वो चाल सोच रहे हैं कि, खुर्जेमें जो २६०००) **रुपया जमा है उसका सूद रोक दिया जावे, मगर ये चालभी उनकी नहीं चलेगी रुपया मेरे नामसे जमा है मैंही सूद वसूल करताहूं.** अगर जैन गजटमें कापी रिजोल्यूशन भेज दी होवे तौभी व जरिये तार रोकी जावै और इस फिक्रेके शामिल करनेकी ताकीद की जावे

चम्पतराय १८-१-०६

दफा जमीमा नम्बर ८ की यह है कि, फंडभी तीन प्रकारके होंगे एक महाविद्यालय फंड दूसरा हाईस्कूल फंड तीसरा इमारत फंड. महाविद्यालय फंडमें जो द्रव्य जमा है वह सब संस्कृतकी मजहवी आलादर्जेकी तालीममें जैसा कि, अब खर्च हो रहा है किया जायगा. सहारनपुरकी जैन पाठशाला मय उसके सरमायेके महाविद्यालयकी शाख होगी और जो रुपया एक मुश्त या माहवारी या सालाना वायदोंका वसूल होगा या आइन्दा इस मदमें जमा हो या फीस आदिसे आमदनी हो वो हाईस्कूलमें जमा होगी. इसी प्रकार इमारत फन्डका रुपया तामीर इमारत हाईस्कूल और महाविद्यालयमें खर्च होगा ।

(नकल २२ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

ये दो + चिठ्ठियां पण्डितोंकी मुलाहजेके वास्ते रवाना करताहूं । ये दुनियांमें जरूर है कि, जो काम करता है वह हर शख्स पूरी २ आजादी चाहता है, मगर बड़े २ मुलाजिमोंकी तकर्रुरी मौकूफी वगैरह पूरी कमेटीके अखत्यारमें रखना. माॡम होता है कि, सेठीजीसे और पण्डितोंसे कुछ बिगाड़ है. मैंने पण्डितोंको मुलामीसे चिठ्ठी लिखी है कि, वो फौरन आजावै. तुलवाभी गड़बड़ कर रहे हैं, सेठीजीका जयपुर जाना गजब हो गया उनको इस वख्त मथुराही रहना था. मैंने जयपुरमें उनको चिठ्ठी और तार भेजा है कि, जल्द आकर विद्यालय ले जाओ. फिहाहाल पण्डितों और तुलवाकी दिलजोई करना मुनासिब है. यह चिठ्ठियां मुझको वापिस कर देना हमको यहांतक तय्यार होना होगा कि, अगर मथुरासे कोईभी न आवे तो आसरे नौ विद्यालय जारी करेगें उस वख्त कामयाबी होगी. मुन्शी मूलचन्दका खतभी मुलाहिजा कीजिये २२-१-०६

(नकल २६ जनवरी १९०६ के खतकी)

डियर बनारसी दासजी !

मै सख्त अफसोसके साथ इत्तला देताहूं

+ (नोट) यह चिठ्ठियां पं० मुकुन्दराम पं० यमुनादत्तजीकी सेठीजीके खिलाफ है ।

कि, मुझे महाविद्यालयके बारेमें खुदगर्ज लोगोंने इसकदर तकलीफ पहुचाई है कि, मुझे कल रातभर चैन न पड़ा १ मिनटकोभी नींद नहीं आई. आज खबर आई कि २ तुलवा बनारस चले गये. सेठसाहबको वह काया है और अब वो मुखालफतपर चले हैं। मैं सबको देखलुंगा अफसोस! ये खुदगर्ज हमारे कैसे दुश्मन हुये हैं तमाम जोशका खून करते हैं मगर सहारनपुरका जोश हरगिज २ कम न किया जाय, बल्कि नये सिरेसे हम विद्यालय खोलेंगे और बहुत तुलवा आजायंगे फिर देखेंगे वहां कौन तनख्वाह देता है. सेठसाहबकी जो चिट्ठी आई है मैं रवाना करुं तो आपको रंज होगा बईवजह रोकी है. अगर सेठीजी सहारनपुरसे होकर मथुरा जाते तो कोई किस्सा न होता उनकी अदम मौजूदगीसे फतूर बरपा होगया इस कार्रवाहीसे और जोश सहारनपुरमें होना चाहिये।

चम्पतराय २६-१-०६

(नकल २७ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

डियर बाबूसाहब जयजिनेन्द्र

अफसोस है कि, आजके रोज मथुरासे २ तार किरोड़ीमल और सेठीजीके पहुंचे जिनसे जाहिर हुआ कि, मुन्शी मूलचन्दने सख्त मुखालफत विद्यालयके जानेमें करी और सेठजी इलाहाबाद गये हुये थे यकीन है कि, साहवान सहारनपुर नाकाम वापिस हुये होंगे, बस अब तदवीर यह है कि, हम चन्द अशखास मथुराको चलैं और इस मामलेको तय करके लावें. चम्पतराय बनारसीदास पं० चुन्नीलाल बाबूलाल और जुगमन्दिरदास यह अश्खास् वहां पहुचने चाहिये फिर जैसा कुछ होगा फैशला करके आंयगे. मेरी रायमें इतवार ४ तारीख फरवरीको यह सब लोग मथुरामें पहुच जावें मैं रुखसतका इन्तजाम इस दरमियानमें कर लूंगा. आप पं० चुन्नीलाल बाबूलाल जुगमन्दिरदाससे खत किताबत करके तय कर लें। मैं सेठीजीको तार देताहूं कि, वह मथुरामें हमारा इन्तजार करैं और मुझे मंजूरीसे इत्तला दो ता कि, मैं तय्यार रहूं मैंनेभी सबको खत लिखे हैं।

चम्पतराय २७-१-०६

(नकल ११ फरवरी १९०६ के पत्रकी)

(इस पत्रको ध्यानसे पढियेगा)

डियर बाबूसाहब! जयजिनेन्द्र

खत आपका मिला अहवाल मालूम हुआ, मैं खुद इस बातको तसलीम करताहूं कि, जब महाविद्यालयका मुहूरत हुआ उस वख्तभी जैनकालिज खोला जाना करार दिया था और उसके उसूल हमेशासे ऐसेही रक्खे गये थे

कि, जिसमें संस्कृत और इंगलिशकी तालीम हो. डेपुटेशन पार्टीभी कालिजकेही वास्ते अपील पढ़ २ कर रुपया लाई है। मगर आप अपनी कौमकी हालतको नहीं देखते क्या हालत है, लोग मजहबकी आड़में शिकार खेल रहे हैं इस वख्त आपको मालूम नहीं है कि, क्या २ चेमेगोइयां होरही हैं इसका इन्तजाम भी तो सरेदस्त हिकमत अमलीसे करना जरूरी है. अव्वल तो यह शिगोफा है कि, बाज साहबानने जो अपने वायदेमें यह शर्त लगाई है कि अगर सहारनपुरमें कालिज या हाईस्कूल जारी हो तो हम इस कदर रकम देंगे इसकी बाबत् खुद सेठ माणिकचन्दके यहां कमेटी हुई थी, मुखालिफ लोगोंने कहा कि यह महासभा नहीं है प्रान्तिक सभा है जो सहारनपुरको मखसूस करती है, क्योंकि अभीतक जो रुपया जमा हुआ उसमें किसीकी शर्त नहीं थी कि अगर फलां मुकाम पर जैनकालिज होगा या हाईस्कूल या महाविद्यालय होगा तो हम इस कदर देवेंगे मगर मैं खूब जानताहूं कि ये रोड़ा अटकानेवालोंके ख्यालात हैं. मुझे करीब २ तमाम हिन्दके जैनियोंका तजुर्बा है. सहारनपुरके जिलेके मुआफिक न अंगरेजी तालीम कहीं जैनियोंमें है न इस कदर तालीमकी शायक है और न इस कदर काम करनेवाले और दातार हैं फिर इससे उमदा मुकाम और कौन हो सकता है. दूसरी बात उस आपके ७००) रु० के बजटसे उठी है जिसमें महाविद्यालयकेवास्ते सिर्फ ७५) रुपया माहवारीका मुकर्रिर किया था, उससे लोगोंको यह मौका मिला कि, साहब महावि० की तालीम तो खतम हुई अब सिर्फ इंगलिश तालीम होगी और सरमायेका रुपया सब इंगलिश तालीममें खर्च होगा. इस असूलको पकड़कर गोपाल दासने ऐतराज मैंनेभी सुना है कि, छापा है. पस इन लोगोंके मुंह बन्द करनेके वास्ते जरूरी है कि इस वख्त आलान किया जावे कि जो रुपया इस वख्त तक जमा है उसका सूद महाविद्यालयकी तालीममें वदस्तूर सर्फ होगा वो रुपयाही क्या है उसका सूद तो उसको किफायतभी नहीं करेगा और न उस कदर रुपयासे हाईस्कूल जारी हो सकता है, फिर हमको उस आलानमें क्या हर्ज मालूम होता है. यह जरूर है कि, दो फन्ड नहीं रह सकते और न रहेंगे चाहे जब रिजोल्यूशन पास करके मिला देना अपना अखत्यार होगा मगर सरेदस्त जबान बन्द करनेको यह हिकमत जरूर अमलमें लाने लायक है कि, जिसका मैंने * नोटिशभी भेज दिया है।

चम्पतराय ११-२-०६

प्रकाश करनेवाला

बनारसीदास एम. ए. वकील

सहारनपुर

---

* क्या वही नोटिस है जो जैनगजट अंक ८ वर्ष ११ में छपा था?

नोट—पाठक महाशय समझे! हमारे एक मित्रने महामंत्रीजीकी असली पोल खोलकर उनकी कूटनीतिसे जैन समाजको सचेत कर दिया है, यद्यपि इस लेखके प्रत्येक अक्षर की समालोचना करनी आवश्यक थी परन्तु स्थानाभावसे हमको मौनावलम्बन करना पड़ा है, किसी आगामी अंकमें इसकी समालोचना उचित समयपर की जायगी.

सम्पादक

श्रीवीतरागायनमः

जैनमित्र अंक १२ से हमारे औषधालय खुलनेका तथा हमारे परिचयका लेख पाठक पढ़ चुके हैं यद्यपि हमारा विचार नोटिस देनेका न था परन्तु उस लेखको पढ़कर बहुतसी मांग आई और बहुतसे पत्र आये कि, तुम प्रसिद्ध २ औषधि लिखो सूचीपत्रमें जो पवित्र औषधालय खुलनेसे हमको बड़ा हर्ष है बड़े सूचीपत्रके तय्यार होनेमें कुछ देर है अतः हम उत्तम २ अनुभवकी ५-७ औषधियोंको लिखते हैं जिनको आवश्यक्ता हो मंगावें सेवनविधि साथमें भेजी जायगी सब शुद्धतासे बनाई गई हैं इनके अतिरिक्त बहुतसे रस-भस्म-चूर्ण-वटी-कूपीस्थ रसायन आदि औषधियां तय्यार हैं जो अपने रोगके लक्षण लिखेंगे उनका निदानकर हम औषधि नियत कर उत्तर देंगे यदि वह लिखेंगे तो औषधि भेज दी जायगी।

१ उपदंशघ्नघृत—ये दस दिन खाया जाता है उपदंशको सर्वथा नाश करता है न मुंह आता है न दस्त आते हैं न वमन होता है एक रोगीको आराम होनेयोग्य घृतका मूल्य १।)

२ सिक्थक तैल—ये नई और अद्भुत औषधि है देशी यंत्रद्वारा खेंचा गया है छातीके दरद को मलनेसे तत्काल फल दिखाता है कमरके बंशके दरदपर इसकी १ फुरैरी मल देनेसे आराम होजाता है वर्त्तमानकी घोर वेदनाको हर लेता है फिर व्याधिको निर्मूल करनेके लिये नारायण तैल उपयोगी है १ तो० का मूल्य २)

३ नारायण तैल—इसहीको महानारायण तैल करके बहुतसे लिखते हैं इसके मर्दनसे सब वातरोग नष्ट होते हैं वातको नाशकर-रक्त-मांस नसोंको बल देता है शरीरकी कांति बढ़ाता है लकवा फालिज अर्दित-पक्षाघात आदि नष्ट करता है मूल्य १ शीशी १० तो० का १)

४ लाक्षादि तैल—ये शीतवीर्यका उत्तम तैल है इसके मर्दनसे शरीरका दाह जीर्णज्वरका सन्ताप नष्ट होता है और कांति बढ़ाता है विशेष कर राजयक्ष्मामें मालतीवसन्तके सेवनके साथ ये मला जाता है तो लाभ करता है मूल्य १० तो० का १)

५ प्रमेहारि चूर्ण और वटी—ये अनुभवसिद्ध हैं और शास्त्रसंमत है कि नया प्रमेह जाता रहता है पुराना दवाई आदिके उपचारसे दबा रहता है निर्मूल नहीं होता इस औषधिसे नया प्रमेह बिल्कुल नष्ट होजाता है पुरानेको यदि ये सात्म्य पड़ी गई और बराबरसे बन रहा तो बल नष्ट नहीं होता है और न रोगकी वृद्धि होती है शरीर सबल रहता है मूल्य १५ दिनकी औषधिका १।)

६ उष्णवातारि अर्कववटी—इससे सूजाकको बहुत शीघ्र लाभ होता है यदि नया हुआ तो ७ दिनमें बिलकुल जाता रहता है पुराना होनेपर १ मास औषधि खानी पड़ती है गरमी पीव खून वगैरहको रोक देता है मूत्र साफ आता है ७ दिवसकी औषधिका मूल्य १।)

पाचनअर्क—ये हैजा अजीर्ण आदि उदर रोगोंको लाभ करता है हाथके बने हुए अर्क कपूर के साथ सेवन करनेसे हैजेके प्रतिशत ८० मनुष्य बचते हैं बोतल १ का मूल्य मय शीशी अर्ककपूरी ॥) जिनको अर्कका या कपूरका त्याग है उनके लियेवटी तय्यार है मूल्य १)

अर्कक्षार—ये अजीर्ण गुल्म प्लीहा शूल आदि रोगोंको नष्ट करता है वायुके सब रोग नष्ट होते हैं

भूखको बढ़ाकर कासश्वासकोभी नष्ट करता है मूल्य ॥) तो०

दन्तमंजन नं० १ इससे दांत साफ होकर मुंह साफ और सुगंधित होता है जायका सुधरता है १ मास मलनेयोग्यका मूल्य ।)

दन्तमंजन नं० २ ये बूढ़ोंके लिये अच्छा है दांतका हिलना मसूड़ा सूजना कीड़ा खून पीवगिरना बंद होता है दांत दृढ़ और साफ होते हैं १ मासके योग्यका मूल्य ॥)

दादकी दवा इससे दाद खुजली नष्ट होती है फुंसी फोड़ा आदि जाता है मूल्य १ डबी ।) इसके अतिरिक्त--ज्वर--अतिसार--ग्रहणी--अर्श आदिके लिये बहुतसे रसादिक तय्यार हैं जिनको जो आवश्यक्ता हो मंगाकर १ बार परीक्षा करो तो और लाभ उठाओ जो लोग मुफ्त दवाई बाटनेके लिये मंगावैं अथवा बेचनेके लिये अधिक माल मंगावै पत्रव्यवहार करैं उनको किफायतसे भेजा जायगा अलम्

वैद्यराज व वैद्यरत्न उपाधि प्राप्त

पत्ता--स्वदेशी पवित्र औषधालय
पो० गिरगांव ठि० हीराबाग
मुम्बई.

जयधवल ग्रन्थकी जो बालबोध लिपिमें पुरानी कनाड़ीसे प्रति लिखी जा रही है उसकी जेठ सुदी १ तक खरडा प्रतिकें ११७८२ श्लोक और बालबोध लिपिके ९९८८० हो गये इसमें १०१९६।।।)।। अभीतक जमा हुवे और ५०००) रु० और आनेवाले हैं तथा कार्तिक तक १८१४)।।। खर्च हो चुके और अभीतक अनुमान ६००) और खर्च हुए होंगे.

समालोचना

अग्रवाल--उक्त नामका मासिकपत्र अजमेरसे प्रकाशित होता है। इसमें लेख समयोपयोगी होते हैं. कीमत वार्षिक १।) है "मेनेजर अग्रवाल" अजमेरके पाससे ग्राहक मंगा सकते हैं।

कान्य कुब्ज--उक्त नामका मासिकपत्र हालहीमें कानपुरसे पंडित देवीप्रशाद शुक्ल बी. ए. द्वारा सम्पादित होकर निकला है। इस पत्रका मुख्य उद्देश्य कान्यकुब्ज जातिकी उन्नति करना है. वार्षिक कीमत १।) है।

जैन समाचार--उक्त नामका साप्ताहिक पत्र गुजरातीमें निकला है लेख उपयोगी हैं। आशा हैं कि, इसमें अच्छे २ लेख निकलेंगे। सम्पादक जैनहितेच्छु सारंगपुर अहमदाबादकी तरफसे निकाला गया है और इन्हींके पाससे ३) सालपर मिल सकता है।

वर्तमान भारत--श्री नित्यानंद मिश्र नं० ६ लुकसलेन कलकत्ता द्वारा सम्पादित, कीमत ।।). इसमें भारतके शासन आदिका अच्छा फोटो है। पुस्तक देखने योग्य है।

सोलापुरकी श्री जैन चतुर्विध दानशालकी रिपोर्ट--सं० १९६१ की आई है। हिसाब साफ है। इसमें सर्व धर्मवालोंको दवाई, भोजन आदि दिया जाता है। यह जैनियोंका कार्य स्तुतियोग्य है।

ॐ

सैंकड़ों शास्त्रदान करनेका—
सरल उपाय.

विदित हो कि पूर्वकालमें छापेका प्रचार न होनेके कारण समस्त दानोंमें उत्कृष्ट शास्त्रदान कोई विरला ही धर्मात्मा धनाढ्य कर सक्ता था. परन्तु इस समय छापेके प्रभावसे शास्त्रदान करनेका (ज्ञानविस्तारका) वह साधन हो गया है कि जिसको साधारण भाई भी इस दानके पुण्यको प्राप्त कर सक्ता है। भाइयो! आज हमारे भारतवर्षमें जो लाखों ईशाई हो गये हैं वे एकमात्र शास्त्रदानके प्रभावसे ही हो गये हैं। यदि इसीप्रकार हमारे समीचीन उद्देशपूर्ण अहिंसाधर्मके प्रतिपादन करनेवाले शास्त्रोंका प्रचार होता तो क्या यह पवित्र धर्म ऐसी अवनतदशाको पहुंचता?

खैर जो कुछ हुआ सो हुआ—अब उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है—इसकारण हम शास्त्रदान करनेका एक सरल उपाय बताते हैं कि, आप नीचें लिखे जैन ग्रंथोंमेसे किसी एककी छपाईकी लागतके रुपये हमारे-पास भेज देंगे तो हम आपके रुपयोंसे उस ग्रंथकी १००० प्रति छापकर तैयार करेंगे उनमेसे २५० प्रति तो हम रुपयोंके व्याजमे दान करनेके लिये आपको भेज देंगे. और शेष ७५० प्रति बेंचकर आपके रुपये आपको भेज देंगे. अथवा आपकी आज्ञा होगी तो प्रतिवर्ष दूसरा तीसरा ग्रंथ छपाकर उनकी भी अढाइसौ २ प्रति आपको शास्त्रदानार्थ भेजी जाया करेंगी.

इस विषयमें कुछ पूछना हो तो पत्रद्वारा पूछ सक्ते हैं.

छपनेके लिये तैयार ग्रंथ ये हैं:—

नामग्रन्थ.	अनुमानसे छपाई खर्च.
मनोरमा उपन्यास जैनेन्द्रकिशोरकृत	२००)
वृंदावनविलास कविवर वृंदावनकृत	३००)
वृंदावनकृत चौवीसीपाठ अतिशुद्ध	३५०)
वृंदावनकृत तीसचौवीसीपाठ अतिशुद्ध	५००)
तत्त्वार्थसूत्र-बालबोधिनी पदपदकी भाषाटीकासहित विद्यार्थिओंमें पढाने व भादोंमे बांचनेलायक	२५०)
जैनबालबोधक दूसरा भाग	२५०)
जैनबालबोधक तीसरा भाग	३५०)
शाकटायनव्याकरण प्रक्रियासंग्रह	६००)
जैनस्त्रीशिक्षा प्रथम भाग	६०)
जैनस्त्रीशिक्षा द्वितीय भाग	१००)

पत्र भेजनेका पता—पन्नालाल जैन,
पो. गिरगांव-मुंबई.

ओंनमःसिद्धेभ्यः

अध्यात्म तथा भक्तिरसका भंडार.
भाषासाहित्यका शृंगार.

बनारसीविलास।

और

ग्रंथकर्ता कविवर बनारसीदासजीका वृहत्

जीवनचरित्र।

छपगया! सुन्दर जिल्दसहित तैयार हो गया!!

बहुत थोडे लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने आगरा निवासी स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजीका नाम न सुना हो आपकी कविता ऐसी मनोरम और चित्ताकर्षक है कि, एकवार पढकर फिर छोडनेको जी नहीं चाहता, निरंतर पढते रहना ही सुहाता है। भाषासाहित्यमें आपसरीखी सुंदर रसालंकारादि काव्यके अंगोंसे परिपूर्ण कविता बहुत थोडी है। जिन्होने नाटकसमयसारग्रंथकी अध्यात्मरससे सराबोर कविताका पाठ किया है, वे जानते है कि, आप कैसे प्रतिभाशाली कवि थे। आपके बनाये हुए कई ग्रन्थ हैं, उनमेंसे अभीतक नाटकसमयसारके सिवाय और कोई भी ग्रंथ मुद्रित नहीं हुआ था। इसलिये हमने बडे परिश्रम और अर्थव्ययसे आपका यह दूसरा ग्रंथ **बनारसीविलास** छपाके तैयार किया है। यह ग्रन्थ बनारसीदासजीकृत जिनसहस्रनाम, सूक्तमुक्तावली (संस्कृत सहित), ज्ञानबावनी, वेदनिर्णयपंचासिका, अध्यात्मफाग, परमार्थवचनिका, उपादान निमित्तकी चिट्ठी, अध्यातमपदसंग्रह आदि—

५९ ग्रंथरत्नोंका—

संग्रह है। इस संग्रहसमूहको ही **बनारसीविलास** कहते है। बनारसीदासजी सरीखे प्रसिद्ध कविवरकी कविताकी प्रशंसा करना एक प्रकारसे व्यर्थ ही है, परन्तु हम अपने ग्राहकोंसे इस विषयमें इतना कहे विना नहीं रह सक्ते कि, यदि आपको अध्यात्म, भक्ति और विविधप्रकार उपदेशयुक्त वैराग्यादि रसोंके अपूर्व

आनंदका अनुभव करना है, तो एक बार इस ग्रन्थसरोवरमें अवश्य ही गोता लगाइये। कदाचित आपने **ब्रह्मविलास** मगाकर पढा होगा. परन्तु इसके पढनेसे जो आनंद होगा वह एक भिन्न ही प्रकारका होगा।

इस ग्रन्थके प्रारंभमें ११३ पृष्ठोंमें ग्रन्थकर्ता कविवर बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र दिया गया है। हिन्दीमें इतना बडा और इतना विश्वस्त जीवनचरित्र आजतक किसी भी कविका प्रकाशित नहीं हुआ है। इसे पढकर पाठक अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इससे ग्रन्थकर्ता और उनके समयका इतिहास ही नहीं विदित होता है, परन्तु अनेक अनुकरणीय शिक्षायें भी प्राप्त होती हैं। प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायनिरत जैनीभाइयोंको इस ग्रन्थका संग्रह अवश्य करना चाहिये। जगत्प्रसिद्ध निर्णयसागरके सुंदर टाईपमें चारों तरफ बेल लगाकर बडी सुंदरतासे इसकी तयारी हुई है, लगभग ४०० पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ १॥) रक्खा है. डांकखर्च ≶) जुदा पड़ैगा।

ब्रह्मविलास।

इसमें ६७ उत्तमोत्तम रत्न(विषय) हैं, इसको भैया भगवतीदासजीने विद्वानोंके कंठमें धारण करने योग्य एक मोहनमाला बनाई (गुंथी) है. जिसका नाम उन्होंने **ब्रह्मविलास** रक्खा है। अनेक महाशय इसे **भगवतीविलास** भी कहते हैं। यह ग्रन्थ दोहे चौपाई पद्धरिछन्द, छप्पय, सवैया, कवित्त आदिमे ऐसा उत्तम है कि, इसके प्रत्येक अक्षरसे जिनमतका रहस्य व उत्तमोत्तम उपदेश प्रगट होते हैं। इसको हमने जैनकवि भाई नाथूराम प्रेमीसे शुधवाकर जहांतक हमसे बना शुद्धतापूर्वक छपाकर तैयार किया है. यह ग्रन्थ चिकने कागजोंपर सुन्दर टाइपमें चारोंतरफ बेल लगाकर बहुत ही सुन्दर छपवाया गया है। पृष्ठसंख्या ३०६ है। मूल्य रेशमी कपडे और क्याट्रिशकी जिल्द सहित १॥) रु० रक्खा है. वी. पी. मंगानेसे डांकव्यय ≶) जुदा पडैगा. जो महाशय एकसाथ ५ प्रति लेंगे, उनको १ प्रति विनामूल्य मिलैगी।

सनातनजैनग्रन्थमाला।

प्रथम गुच्छक।

अर्थात्

जैनधर्मके उत्तमोत्तम १४ संस्कृत ग्रन्थोंका रेशमी गुटका।

मूल्य सिर्फ १) रुपया।

इस गुटकेमें रत्नकरंडश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, आत्मानुशासन, समाधिशतक, नयविवरण, युक्त्यनुशासन, तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसार. अध्यात्मतरंगणी (समयसारकलशे) बृहत्स्वयंभूस्तोत्र, आप्तपरीक्षा, परीक्षामुख, आलापपद्धति ये १३ मूल ग्रन्थ और आप्तमीमांसा (देवागमस्तोत्र) सटीक इस प्रकार १४ ग्रन्थ छपाये हैं। यह गुटका पाठ करनेवालोंके सुभीतेके लिये बडा उपयोगी है। परदेशमें इस एक ही गुटकेसे बडे२ काम निकल सक्ते हैं.

स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

विद्वद्वर्य पं० जयचंद्रजीकृत मनोहर भाषा टीका और संस्कृत छायासहित।

यह ग्रंथ अतिशय प्राचीन है. इसमें बालक, वृद्ध, युवा स्त्री जैन अजैन सबके पढने सुनने मनन करनेयोग्य जिनधर्मसंबधी समस्त विषय है। परंतु मुख्यतासे वैराग्यका उपदेश है जिसमें बारह भावना (अनुप्रेक्षा) का बडे विस्तारसे वर्णन है श्रावकधर्म और मुनिधर्मका वर्णन अपूर्व है। इस ग्रन्थकी मूल गाथा अतिशय प्रिय और सरल है. तिसपर भी गाथाके नीचे संस्कृतमें पदपदका अनुवाद (छाया) है. फिर वचनिका (भाषाटीका) है. निर्णयसागरकी टाईप और छापा तो जगत्प्रसिद्ध है ही मूल्य रेशमी कपडेकी पक्की और पक्की जिल्दका १॥) रु० और कच्ची जिल्दका १) है. डांकव्यय ।) पडैगा. ये ग्रन्थ बहुतसे छपनेसे पहिले ही बिक गये हैं हमारेपास थोड़ीसी प्रति रही हैं जिनको चाहिये मँगालेवें. विलम्ब करैंगे वे पछतावैंगे।

सुकुमाल उपन्यास।

सुकुमाल चरित्रको प्रायः सब ही जैनी जानते हैं, यह एकबार जैनबोधक मासिकपत्रमें छपकर पृथक् भी प्रकाशित हो चुका है, परन्तु इसकी कथा इतनी मनोहर है कि, वह १) रु. मूल्य होने पर भी हाथों हाथ विक गया।

उसकी भाषा ढूंढाडी थी; जिसको सब देशके जैनी भाई नहीं समझ सक्ते थे। इसकारण हमने प्रसिद्ध लेखक आरानिवासी श्रीयुत बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी मन्त्री आरानागरी प्रचारिणी सभासे उपन्यासके ढंगमें उपन्यासकी मनोहर भाषामें लिखवाकर छपाया है मूल्य ।≈) डांकखर्च जुदा।

सूक्तमुक्तावली।

संस्कृत और भाषा कवित्त सहित।

इसको सिंदूरप्रकर भी कहते हैं. यह सोमप्रभाचार्यविरचित सस्कृतके उत्तमोत्तम छंदोंमें उपदेशमय काव्यग्रंथ है, इसमें धर्माधिकार, पूजाधिकार, गुरुअधिकार, जिनमताधिकार, संघाधिकार, अहिंसाधिकार, सत्यवचनाधिकार, अदत्तादानाधिकार, शीलाधिकार, परिग्रहाधिकार, क्रोधाधिकार, मानाधिकार, मायाधिकार, लोभाधिकार, सज्जनाधिकार, गुणिसंगाधिकार, इन्द्रियाधिकार, कमलाधिकार, दाताधिकार, तपप्रभावाधिकार, भावनाधिकार, वैराग्याधिकार, उपदेशगाथा इसप्रकार २३ विषयोंके चार २ काव्य हैं. और उसपर चार २ कवित्त वा सवैया कविवर बनारसीदासजीने बनाये हैं. इसके सौ कवित्त और श्लोक कंठाग्र करनेवाले सभामें बहुत ही सुदर व्याख्यान दे सक्ते है। मूल्य ।) डांकखर्च जुदा.

उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला.

यह सचमुच उपदेशरूपी रत्नोंकी माला ही है। इसके कर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्रजी भंडारीने बड़ी सुन्दरतासे इस मालाकी रचना की है। मूल गाथा और मराठी तथा हिन्दी भाषाटीकासहित इस पुस्तकका मूल्य ॥) मे घटाकर ।≈) कर दिया है। इसमें सग्रंथगुरुका खंडन बहुत ही उत्तम रीतिसे किया गया है।

नित्यनियम पूजा बडी।

संस्कृत और भाषा।

जिसमें सिद्धोंकी द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनों हैं, तथा द्यानतरायजीकृत देवगुरुशास्त्रकी भाषा पूजा तथा वीस बिहरमानकी भाषा पूजा और लघु अभिषेक, शान्तिपाठ, विसर्जन, अन्तकी स्तुति भी संग्रहीत हैं. बडे २ अक्षरोंमें बेलदार निर्णयसागरमें पुष्ट कागजोंपर बहुत शुद्ध छपाया हैं. मूल्य ।≡)

क्यों साहब ?

क्या आपको अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करनी है! यदि करनी हो तो नीचे लिखे सुरमोंमेंसे एक दो शीशी अवश्य मंगाइये, और एक महीने लगाकर देखिये.

काला सुरमा नं० १ यह सुरमा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है. मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥)

काला सुरमा नं० २ इस सुरमेको प्रातःकाल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १)

सफेद सुरमा नं० ४ इस सुरमेंको सबेरे और शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठंडा सुरमा लगाया जावे, तो धुंद नजला दृष्टिमन्दता रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा सुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षनकका फूला शीघ्र ही कट जाता है. परतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिला हुवा होगा तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) रुपया. जिनकी आंखे गर्मीसे लाल रहती हैं उनको यह लाभदायक नहीं है।

नयनामृत अर्क नं० ८ इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है. मूल्य एक शीशीका... ... ।)

तरल सुरमा (अर्क) नं० ९ यह अर्क दिनमें दो बार लगानेसे नं. २ के समान गुण करता है. दुखती आंखोंकेलिये तो यह रामबाण ही है. खासकर यह सुरमा विधवा स्त्रियों और वृद्ध पुरुषोंकेलिये बनाया गया है. मूल्य १ शीशीका ... ... ॥)

इनके सिवाय नीचें लिखे जैनग्रंथ भी हमारेपास मिलते हैं.

संस्कृत जैनग्रंथ.

पंचाध्यायी (अलभ्य ग्रंथ) ॥)
क्षत्रचूडामणि काव्य (अर्थन्यास-नीतिका अपूर्व ग्रन्थ) १)
गद्यचिन्तामणि काव्य, (वादीभसिंह सूरिविरचित कादंबरीको मात करनेवाला अपूर्व गद्य ग्रंथ) २)
जीवन्धरचम्पू महाकवि हरिचंद्र-विरचित (गद्यपद्यमय) १)
नीतिवाक्यामृत (गद्य) सोमदेवकृत १)
न्यायदीपिका मूल ॥।)
परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला टीकासह॥)
कातन्त्ररूपमाला व्याकरण १)
सर्वार्थसिद्धि पूज्यपादस्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्रकी संस्कृत टीका २॥)
सूक्तमुक्तावली (सिंदूरप्रकर) बनारसीदासजीकृत कवित्तोंसहित ।)
धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य मूल १)
चन्द्रप्रभचरित ,, ,, ॥।)
वाग्भट्टालंकार सटीक ॥)
द्विसंधान महाकाव्य सटीक महाकवि धनंजयकृत
नेमनिर्वाण महाकाव्य मूल ॥=)
यशस्तिलकचंपू सटीक पूर्वखंड ३॥।)
यशस्तिलकचंपू सटीक उत्तरखंड२॥।)
सुभाषितरत्नसंदोह अमितगत्याचार्य-विरचित ॥।)
स्याद्वादमंजरी मूल (न्याय) २)
ताजिकसार हरिभद्रसूरिकृत सटीक॥।)
अमरकोषमूल अनुक्रमणिकासहित ।-)
गणरत्नमहोदधि वर्धमानकविकृत स्वकृत टीकासहित (व्याकरण) १॥)
शृंगारवैराग्यतरंगिणी सटीक ≡)

भाषाटीकासहित जैनग्रंथ.

जैनविवाहपद्धति भाषाटीकासहित ॥।)
भक्तामरमूल हिंदी अर्थ और गुजराती पद्यसहित कपड़ेकी जिल्द ।)
आत्मानुशासन टोडरमलजीकृत ३)
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला हिंदी मराठी अर्थसहित ।≈)
द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह दूसरीवार छपा≈)
रत्नकरंडश्रावकाचार अन्वयार्थसहित दूसरी बार नई तर्जका छपा है ।-)
धनंजयनाममाला संस्कृतका जैनकोष भाषाटीकासहित ।)
जैनधर्मामृतसार दूसरा भाग हिंदी मराठी अर्थसहित १)
धर्मपरीक्षा भाषाटीकासहित १॥)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित १)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नाथूराम प्रेमीकृत अन्वय और भाषाटीकासहित १।)
पंचास्तिकाय संस्कृत छाया, अन्वय तथा संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित १॥)
द्वादशानुप्रेक्षा शुभचन्द्राचार्यकृत संस्कृत और जयचंद्रजीकृत भाषाटीकासहित ।≈)
वर्षप्रबोध ज्योतिष भाषाटीकासह ॥।)
अमरकोष भाषाटीकासहित १॥)
अष्टांगहृदय वैद्यक जैनाचार्य वाग्भट्टकृत, भाषाटीकासहित ८)

केवल हिन्दीभाषा वचनिकामय ग्रन्थ.

सुकुमाल उपन्यास ।≈)
मोक्षमार्गप्रकाशजी ३)
जैनबालगुटका ≡)

जैनबालबोधक प्रथमभाग पन्नालालकृत ।)
जैनबालबोधक पूर्वार्ध ,, -)॥
हिंदीकी पहिली पुस्तक ,, ≈)॥
हिंदीकी दूसरी पुस्तक ,, ।)
हिंदीकी तीसरी पुस्तक ,, ।≈)
स्त्रीशिक्षा प्रथम भाग ,, ≈)
स्त्रीशिक्षा दूसरा भाग ,, ≡)
नारीधर्मप्रकाश ,, ≡)
अंकगणित प्रथम भाग ,, ।)
कातंत्रपंचसन्धी भाषाटीकासहित,,≈)
बालबोध व्याकरण संस्कृतका हिंदीमें प्रथमभाग ,, ।≈)
बालबोधव्याकरण दूसराभाग (छपता है) ,, ।≈)
दंपतिसुखसाधन प्रथमभाग ≈)
जैनतीर्थयात्रादर्पण जिल्दबंधा ॥।)
पद्मपुराण बड़ा २३००० श्लोक ६)

छन्दोबद्ध जैनग्रन्थ.

बनारसीविलास और बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र१॥)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास) १॥)
श्रीपालचरित्र जिल्दसहित १॥)
जिनदत्तचरित्र जिल्दबंध १।)
पार्श्वपुराणजी जिल्दसहित १।)
नाटक समयसार बनारसीदासकृत॥≈)
सहस्रनाम भाषा ,, -)
इष्टछत्तीसी बम्बईकी छपी सार्थ)॥
दर्शनपाठ संस्कृत दौलतदर्शन व बुधजनकृतस्तुतिसहित -)
छहढाला दौलतरामजीकृत -)
भक्तामरभाषा और संस्कृत -)॥
पंचमंगल रूपचंदजीकृत बंबईका छपा असली शुद्धपाठ-।॥

दौलतविलास अब नहीं मिलता.

सूचना—ये सब ग्रंथ—भाई बद्रीप्रसाद जैन पोष्ट बनारससिटीके पास भी मिलते हैं ।

मिलनेका पता—**पन्नालाल जैन,**
मालिक—**जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय,**
पो० गिरगांव-बंबई.

जैनमित्र का कोड़पत्र आषाढ़ वदी संवत् १९६३।

श्रुत पंचमी, अष्टाह्निका पर्व की खुशी में बहुत कम मूल्य कर दिया है।

नवीन जैन पुस्तकों का--सूचीपत्र ॥

॥।) में ५० पुस्तकें अर्थात्

जैन ग्रंथ संग्रह।

इसमें छोटी२ पचास पुस्तकोंका संग्रह है यहाँ एक पुस्तक पास रखना काफी है और सुंदर टायपसे पुष्टकागज पर छपी है जल्दी मगाओ नहींतो बिक जाने पर पछताओगे ऊपर से सुंदर जिल्द बंधी है। की० ॥।) खर्च माफ

स्तोत्र शतक।

इसमें २४ तीर्थंकरों की १०० स्तुतिअनेक राग रागिनियां तथा नौटंकीकी चालमें वर्णित हैं। की० =)

सांगीत मनोरमा।

यह पुस्तक नौटंकी की राह में तथा विख्यातकवि जैनेन्द्र किशोर आरा कृत अनेक राग रागिनी भी हैं की० =)

प्रश्नोत्तर माला।

इसमें तत्वार्थसूत्र और अनेक नीति के ग्रन्थों का सार कूट२ कर भराहै। चर्चाकी पुस्तक है। की० -)

जैन भजन संग्रह।

इसमें कई अनेक२ कवियों के पद इकट्ठे किये गये हैं और सब पदों के ऊपर चालें भी लिखीहैं। कीमत =)

अध्यात्मपचासा	)।
शीलकथा	।=)
दर्शनकथा	।=)
जैनव्रत कथा संग्रह	।=)
हुक्का निषेध	)।
रक्षा बंधन कथा	=)
रविव्रत कथा बड़ी	=)
सप्त ऋषि पूजा	)॥।
दुःखहरण विनती	)।
छः ढाला मूल	-)॥
तत्वार्थ सूत्र मूल	-)
पंच मंगल	)॥
बाईस परीसह	-)
बा० राजुल	)॥
बा० सीता	)।
संकट हरण विनती	)।
वैराग्य भावना	)।
धर्म पच्चीसी	)।
दश आरती	)।
निर्वाण कांड भाषा	)।
जिनेन्द्र मत दर्पण	)॥
बा० मुनि जी	)।

मिलनेका पता--बाबू चन्द्रसेन जैनी इटावा [सिटी]

वेद प्रकाश प्रेस इटावा में छपा ॥

☞चार आने ।) से कम की पुस्तकें नहीं भेजी जाती हैं ।

नवीन पुस्तक ! अवश्य देखिये ! !

विचित्र उपन्यास ।

अर्थात्

[बुढ़ापे का विवाह]

वर्त्तमान में वृद्ध विवाह से जो २ खराबियां सब समाजो में होरहीं हैं उसका इस पुस्तकमें भली भांति फोटो खींचा गया है और शिक्षा से पूर्ण होने परभी हंसी दिल्लगी तथा दिल लगावका भी पूर्ण साधन है शुरू करके फिर छोड़ने को तबियत नहीं चाहती है । जाति धन धर्म विद्या हितैषियों को एकवार अवश्य पढ़ना चाहिये। कीमत)॥ आधआना

मुफ़ बांटने वालों को २) रु० सैकड़ा

* विदेशी शक्कर निषेध *

प्रचलित मोरिस की चीनी में जो२ खराबियां हैं वह बड़े २ अखवारोंतथा अंग्रेजी की पुस्तकों से इसमें साबित कीगई हैं अहिंसा परमो धर्मः केमानने वाले जैनियों को एक दफा जरूर२ पढ़ना चाहिये की० सिर्फ)॥

मुफ़ बांटने वालों को २) रु० सैकड़ा

समाचार ।

इटावामेंभीबम्बईचीनीनिषेधक सभा हुई और हलवाइयों ने शक्कर न गलाने और वहुत से महाशयों ने न खाने की प्रतिज्ञा की ।

जवलपुर में जैन वोर्डिंग हाउस खुलने वाला है ।

महाविद्यालय मथुरा से उठकर सहारनपुर आगया। आगामी उत्सव के वास्ते महासभा को आजतक न्योता नहीं मिला है भाइयोंको कोशिस करनी चाहिये ।

फीरोजपुर छावनी की प्रतिष्ठा का मेला वड़ी धूम धाम से निर्विघ्न समाप्त हो गया ॥

मिलनेका पता--बाबू चन्द्रसेन जैनी इटावा [सिटी]

Registered NO. B 288.

ॐ

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

अत्यंतनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम् ।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम् ॥
अमृतचन्द्र सूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया

सप्तम वर्ष । आषाढ शुक्ल १ श्रीवीर म० २४३२ । अंक १७

विषयानुक्रमणिका.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

पत्ता—गोपालदास बरैया सम्पादक जैनमित्र सोलापुर सिटी.

" श्रीवत्सप्रसाद " प्रिंटिंग प्रेस, सोलापूर.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ बारतक =) पंक्ति।

६ ,, ,, -)॥ पंक्ति।

१२ ,, ,, -) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इसप्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।

६ ,, ,, ५) रु.।

१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमकेविरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरकेलिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
संपादक **जैनमित्र—शोलापुर।**

श्रीवीतरागायनमः

आषाढ़ शुक्ल १ श्रीवीर संवत् २४३२. | वर्ष ७. अंक १७

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

विविध प्रसंग ।

मलकापुर, होसूर, नांदगांव, अंजनगांव, आदि अनेक स्थानोंसे श्रुतपंचमी उत्सवके समाचार आ रहे हैं। यदि इस विषयमें कुछ दिनों उद्योग चलता रहा तो इस महत्पर्वका डंका चारों-ओर सुनाई पड़ने लगेगा ।

गुना छावनी (ग्वालियर) में विदेशी चीनीको काममें न लानेके लिये लिखित नियम हो गये हैं । वहां पर न तो दूकानदार विदेशी खांड बेंचेंगें और न हलवाई मिठाई बनावेंगें । यदि कोई भाई इस नियमके विरुद्ध चलेगा, तो उस पर पंचायतकी तरफसे ५१) रु० दंड किया जायगा।

श्रीयुत श्रेष्ठिवर्य बापू सिंगई हीरासिंगईको बाल-ज्ञान-संवर्धक जैनसभा अंजनगांव सूर्जीकी तरफसे ज्येष्ट शुक्ला ५ श्रुतपंचमीके उत्सवमें एक मानपत्र दिया गया है ।

सहारनपुरमें एक सुनहरी छत्र चोरीका वहांकी पुलिसके आधीन है । वह जैनियोंका मालूम होता है । यदि कहींके जैनमंदिरका चोरी गया होवे, तो सहारनपुर पुलिसको सूचना देनेसे पता लग सकता है।

अद्भुत लेखक—मेलवर्नमें एक क्लार्कने पोष्टकार्डके ऊपर १०१६० शब्द लोहेकी कलमसे लिखे हैं ।

धूलवृष्टि—११ जूनको आगरे में धूलकी वृष्टि हुई । प्रथम इसका रंग लाल मालूम हुआ, पश्चात् काला तथा पीला हो गया, और फिर सामान्यवृष्टि हुई ।

समाचार पत्र—जापानदेशमें इस स-

मय ४००० समाचार पत्र निकलते हैं। पहिला समाचार पत्र १८९२ में प्रगट हुआ था। सिर्फ टोकियो शहरमें १२० पत्र निकलते हैं। एक प्रसिद्ध पत्र "लिसिस कीम्पो न्यू राइस्स" नामका है, जिसकी ग्राहकसंख्या चार लाख है।

थरोन—उक्त नामका पत्र लन्डनसे हमारे राजराजेश्वरकी बहन प्रिन्सेस क्रिश्चियनद्वारा सम्पादित होकर निकला है, इसकी कीमत ४१) रु० है और ग्राहक १००० हैं।

टंडा—जिला **सागरमें** ता० १७ और १८ अप्रैलको दो सभायें हुई। एक वहांके जैनमंदिरमें और दूसरी सेठ वंशीलाल अबीरचंदजीकी कोठीपर। पहली सभामें देवरी निवासी श्री नाथूराम प्रेमीने **विदेशी शक्करके** त्यागके विषयमें अनुमान १॥ घंटे व्याख्यान दिया, जिसका असर उपस्थित जैनी भाइयोंपर इतना हुआ कि, उन्होंने उसी समय यह प्रतिज्ञाकी कि, इस ग्रामका कोई भी जैनी विदेशी शक्करको न खावेगा और न उसका व्यापार करेगा। जो भाई इस नियमका उल्लंघन करेंगे, उन्हें ५) दंड देना होगा। इस विषयका एक लेख होकर उस पर सबके हस्ताक्षर हो गये। दूसरी सभा सर्व सामान्य लोगोंकी हुई, उसका भी यही विषय था। व्याख्याताके उत्तेजक भाषणसे उसका फल भी पूर्वानुसार हुआ, अर्थात् सब जातिके लोगोंने हस्ताक्षर पूर्वक विलायती शक्करके व्यवहार न करनेकी प्रतिज्ञा कर ली। टंडा निवासी सम्पूर्ण भाई धन्यवादके पात्र हैं। (यह समाचार बहुत दिनका पड़ा था।)

खोज।

उत्तरी ध्रुवकी सैर करनेके लिये अनेक पुरुषार्थी लोगोंने अनेक वार प्रयत्न किये हैं। परन्तु सुफलता किसीको भी प्राप्त नहीं हुई। अब वाल्टर व्यलनेम अगस्त मासमें एक पवन नौका पर विराजमान होकर उड़ने वाले हैं आप के पवन-मानमें "मोटर के पुर्जे रहेंगे। उनमें गैस भरी रहेगी। मोटरमें ४०,५० घोड़ोंकी ताकत रहेगी। उसी ताकत से नौका आकाशमें उड़ेगी। स्पिट्जबर्गेनसे आप रवाना होंगे। और पन्द्रह वीस मील फी घंटे उड़कर आप १२०० मीलकी यात्रा करेंगे, यदि बीचमें ही कोई विघ्न उपस्थित होगा, तो आप जमीनपर उतर कर बर्फ पर स्लेजनामकी गाड़ीसे जायगें। बिना तारकी तारवर्कीका सामान भी आपके साथ रहेगा, जिससे प्रतिदिन यात्रा सम्बन्धी खबरें आया करेंगी।

वैज्ञानिक अनुसन्धानने लोगोंका यह विश्वास बढ़ा दिया है कि, इस दुनिया के अतिरिक्त (जिसमें हम लोग रहते हैं) दूसरे संसारोंमें भी जीव हैं। वैज्ञानिक अनुसन्धानकर्त्ता कहते हैं कि, ग्रहोंमें प्राणी हैं। प्रोफेसर मारकनी आशा दिलाते हैं कि,

"We shall have, within the next ten years, or sooner, at least a speaking acquaintance with them." अर्थात् "दस वर्ष अथवा इससे भी कम समयमें हमलोग कमसे कम उनसे (ग्रहोंके प्राणियोंसे) बातें कर सकेंगे।" बिजलीका सबसे बड़ा आविष्कर्त्ता निकोला टेस्ला दस लाख घोड़ोंकी शक्तिका एक बिजलीका बेतारका यन्त्र अपने गुम्बदपरवार्डेनक्लिफनामक स्थानमें ग्रहोंको सङ्केत करनेके लिये लगा रहा है। परन्तु ये ग्रहोंवाले प्राणी कैसे होंगे? फ्लैमेरियन, प्रोफेसर लावेल, सर राबर्टबाल आदि जगत्प्रसिद्ध विज्ञानविदोंने तो इनकी अनुमानिक सूरतें तक बना डाली हैं। फ्रान्सके प्रोफेसर फ्लोरनायनने एक विलक्षण पुस्तक लिखी है, उसमें उन्होंने वहांके निवासियों जानवरों यहांतक कि, लिपिप्रणालीकी भी खयाली तस्वीरें खींच डाली हैं। १२ अप्रैलको "अमृतबाजारपत्रिका" ने इस विषयमें मारकीनी टेस्ला और फ्लैमेरियन आदि विद्वानोंकी विस्तृत राय छापी हैं।

(भारतजीवन)

शोलापुरकी बिम्बप्रतिष्ठा

सौभाग्यवती उमाबाई अपने अंत समय १२३४ व्रतका उद्यापन करनेके लिये अपने पति सखाराम नेमिचंदजीसे कह गई थीं। इसलिये उक्त व्रतका उद्यापन कराया गया और उसी समय बिम्बप्रतिष्ठाका मुहूर्त भी निर्विघ्नतासे निम्नप्रकार हुआ। मिती ज्येष्ठ शुक्ला ९ को गर्भकल्याणिक महोत्सव होकर १० को जन्मकल्याणिक उत्सव किया गया, पश्चात् ११ को दीक्षाकल्याणिकका व्रत तथा १२ को केवल कल्याणिक होकर, १४ को समवसरण पूजा हुई। और १५ को मोक्षकल्याणिक हुआ।

इस उत्सवमें पंडितोंके जमावसे अतीव आनंद हुआ. उनके व्याख्यानोंसे श्रोताओंको अच्छा उपदेश मिलता था। पंडित धन्नालाल, पंडित गोपालदास, पं० शिवशंकर शर्मा वड़नगर, बाबू शीतलप्रसाद लखनऊ, और नाना रामचन्द्र नाग आदि विद्वान् मंडली उपस्थित थी, जिनके व्याख्यान निम्न प्रकार होकर पश्चात् व्याख्यानके अंतमें परस्पर शंका समाधान होता था, जिनसे एक विशेष प्रकारका आनंद और ज्ञान प्राप्त होता था।

पं० गोपालदासका व्याख्यान-११-१२ १४ को अध्रुव, अशरण, संसार, एकत्व, अन्यत्व, और अशुचित्व और आस्रव इन सात भावनाओंपर हुआ तथा परीक्षालयके ध्रुवभंडारके लिये भी सारगर्भित व्याख्यान दिया गया।

पं० शिवशंकर शर्माने ज्येष्ठ शुक्ल १४ को संवर और निर्जरा भावनापर व्याख्यान दिया और फिर१९ को पं० धन्नालालजीने लोक, और बोध दुर्लभ इन दो भावनाओंपर और बाबू शीतलप्रसादने धर्मभावना पर दिया। तथा १९ को दिनके समय विदुषी मगनबाईने स्त्रियोंकी

सभा करके "आत्महित" पर सारगर्भित व्याख्यान दिया ।

इस प्रतिष्ठामें प्रतिष्ठाकारकने स्वदेशीवस्तु व्यवहार पर पूर्ण लक्ष दिया । धर्मभ्रष्ट करनेवाली विलायती शक्करका काला मुंह करके पवित्र बनारसी शक्करका व्यवहार किया था । विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उन को दुपट्टा, धोती, कोट आदि दिये ।

उपासकाचारकी पुस्तकें सर्व उपस्थित महाशयोंको वितीर्ण की गई ।

रा. रा. रामचंद अभयचंद बाबीकरने षोड़शकारणभावना की अमूल्य पुस्तकें वितरण कीं ।

एक दर्शक ।

एक सुयोग विद्यार्थीकी अकाल मृत्यु ।

खेदकी बात है कि, आषाढ़ वदी १३ को श्रीस्याद्वादपाठशालाका एक श्रेष्ठ और होनहार विद्यार्थी पार्श्वनाथ हैजेके रोगसे पीड़ित होकर देखते २ चार छह घंटेहीमें उठ गया । यह विद्यार्थी कर्णाटकका था । पहले बम्बई विद्यालयमें पढ़कर यह जयपुरकी महापाठशालामें पढ़ने लगा था । अभी कुछ दिन हुए कि, वह न्यायशास्त्र पढ़नेके लिये काशी जाकर स्याद्वाद पाठशालामें पढ़ने लगा था । काशीहीमें उसका परलोक हुआ । जहां तक हमको मालूम है, पार्श्वनाथ योग्यता और सदाचारसे परिपूर्ण था । यह सुनकर किसी जैनीकी आंखोंमें आंसू न आवेंगे कि, वह न्यायशास्त्रके उत्कृष्ट ग्रन्थ प्रमेयकमलमार्तंड और जैनेन्द्रव्याकरणादि आर्षसिद्धान्तोंका अध्ययन कर रहा था ! हमारे समाजके विद्याकी ओरसे कुछ भाग्यही ऐसे हैं कि, हजार प्रयत्न करनेपर भी उनमें ऐसी २ विषमबाधायें उपस्थित होती हैं, जिनसे पार पाजाना अत्यन्त कठिन सूझता है । हाय ! आज पार्श्वनाथकी अकाल मृत्युके समाचार जानकर बम्बई पाठशालाके पुराने विद्यार्थी स्तवनेशदेवेन्द्रका वियोग दुःख फिरसे नया हो गया । यदि आज वह विद्यार्थी संसारमें होता तो, जैनियोंका वर्तमान विद्यादारिद्य बहुत कुछ न्यून हो जाता, परन्तु सो न हुआ, उलटी "मरेको मारे-शाह मदार" की कहावत पूरी हुई । हीरालाल, पार्श्वनाथ जैसे विद्यार्थी भी उठ जाने लगे । प्रिय स्तवनेश कहा करता था कि, पंडितजी ! कर्नाटक देशमें अविद्याका जो घोर अंधकार फैल रहा है, धर्मके प्रसादसे हो सका, तो मैं बहुत शीघ्र उसे दूर करनेके प्रयत्नमें लगूंगा । परन्तु स्तवनेशकी इच्छा पूरी न हुई । उसके पश्चात् पार्श्वनाथ भी कर्णाटकमें जैनधर्मका उद्योत करनेकी अभिलाषासे उत्तर भारतकी शरणमें ज्ञानार्जनके लिये आया था, परन्तु वह भी अपने मनोरथ अपने साथ ले गया । कर्णाटकी भाइयो ! जान पड़ता है, तुम्हारा भाग्य धर्म—विद्याकी ओरसे विशेष शोचकर है ।

तीर्थयात्रा विवरण।

(लेखक—लाला शम्भुदयालजी मंत्री जैनसभा कानपुर)

अजुध्या

यहांपर सूरजवली पंडि मुलाजिम हैं, जो मंदिरकी देखभाल कम करता है। बेदीमें और मंदिरमें बहुत कूड़ा रहता है। श्रीजीका प्रक्षाल और पूजन भी ठीक नहीं होता धोती जोड़े दुपट्टे पूजनके वर्तन बहुत ही कम हैं। यहांपर जात्री केशर बहुत लगाते हैं। पुजारीने कहा कि, अगर लखनऊ सभा २१) माहवारीका खर्चेका प्रबंध कर दे, तो फिर केशर नहीं लगाने दें। धर्मशालामें भी सफाई नहीं है। बंदर बहुतदिक करते हैं। मुशकिलसे जात्रीलोग रोटी कर सकते हैं। अगर दालानोंमें जंगला लग जावें, तो अच्छा हो। शास्त्र बांचनेके वास्ते कोई चौकी मंदिरमें नहीं है। कमसे कम २ चौकी होना चाहिये। शास्त्रोंमें वेठन पुराने होगये थे, नये लगा दिये गये। ये तीर्थ लखनऊ प्रांतिकसभाके आधीन है, इसलिये १ पत्र फागुन बदी ८ को लखनऊ सभाको उचित प्रबंध करनेके लिये लिखा गया, पीछेसे दो खत औरभी भेजे परन्तु कोई जबाब नहीं आया।

फैजाबाद।

यहांपर शहरसे अलग गलीमें मंदिर है, जिसमें जगह बहुत है परन्तु मंदिर बहुत गिराऊ होगया है। मंदिरके दरबाजेमें बहुत हलका दो पैसेका ताला लगा रहता है। नौकर जैनी है, परन्तु बिलकुल अंधा है। पुजारी मौजूद नहीं रहता। यहांकी मरम्मतके लिये लखनऊकी सभासे १ चिट्ठी भादोंके महीनेमें लाला गुलजारीमलके नामसे आई थी, सो उक्त लाला साहब २००) का प्रबंध मंदिरजीकी मरम्मतके लिये कर गये हैं। ये तीर्थ लखनऊ प्रांतिक सभाके आधीन है, इसलिये १ पत्र फागुन बदी ८ को लखनऊ सभाको लिखा गया है कि, अगर वह मरम्मत करावें तो यहांसे २००) मरम्मतके वास्ते दिया जा सकता है परन्तु जबाब कोई नहीं आया।

पावापुर।

यहांपर ठहरनेका बंदोबस्त अच्छा है। शास्त्रोंमें बंधन नये लगाये गये। बहुतसे शास्त्रोंमें तख्ती और फीते नहीं थे, मुनीम रतीरामने लगानेका बादा किया है। यहांपर जो पुजारी है, सो पूजन वगैरःका काम ठीक नहीं करता है। पूजनके वर्तन माली जो चढ़ी सामग्री लेता है मांजता है। पुजारीसे पूजनके वर्तन साफ करनेको कहा गया परन्तु उसने स्वीकार नहीं किया। ये तीर्थस्थान सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी बम्बईके प्रबंधमें हैं। इसलिये १ पत्र यहांके प्रबंधके लिये उक्त सेठजीको फागुन बदी १ को लिखा है कोई जबाब नहीं आया।

कुंडलपुर

यहांपर एकही जगहपर दिगम्बरी और श्वेताम्बरी प्रतिमा हैं। मंदिरके सामने एक मघवानामादुसाधका घर है सो उसने एक सुअरको जात्रियोंके सामने मारा और उसके

भूना ऐसा अनर्थ देखकर कानपुरके भाई मंदिरके पुजारीको लेकर जमीदारके पास गये और उससे सब हाल कहा। उसने उसी वक्त अपना आदमी भेजा और सुअरको मैदानमेंसे उठाकर भीतर उसके घरमें डलवा दिया। कुंडलपुरसे वापिस आकर विहारमें बाबू गोविंदचंदजी श्वेतांबरी जो उसके प्रबंधकर्ता हैं, उनसे मिले और सब हाल कहा। उन्होंने कहा कि, मुझको ये हाल मालूम नहीं था अब मैं जमीदारके नाम खत लिखूंगा और जहां तक हो सकेगा, उसका घर मंदिरके सामनेसे हटवा दूंगा। एक पत्र बाबू गोविंदचंदजीको फागुन बदी २ को लिखा गया है कि, उन्होंने इस मामलेकी कोई कारवाई कि या नहीं। जबाब नहीं आया।

श्री सम्मेदशिखरजी।

यहां पर सब मुनीम कायस्थ हैं। इससाल जात्रियोंकी बहुत ही भीड़ है। जात्रियोंके ठहरनेको जगह बहुत कम है। कोठीमें २ तंबू थे, वह भी लगा दिये गये। तौ भी बहुत दिक्कत रही। धर्मशालाके कुछ मकान गिर गये हैं उनकी मरम्मत होनी चाहिये। शास्त्रोंकी सम्हाल की। शास्त्रोंको धूप नहीं दी जाती। बहुतसे शास्त्रोंमें तखती फीते नहीं हैं। तखतियोंकी नाप मुनीमको दे दी गई थी। मुनीमने तखातियें बनवाकर लगानेका वादा भी किया है। १ पत्र फागुन बदी २ को सरजूप्रसाद मुनीमके नाम कानपुरसे भेजा गया है कि, शास्त्रोंमें तखती लगी या नहीं? यहांपर पंडित कल्याणरायजी उपदेशक, पंडित गुलजारीलालजी कलकत्ता निवासी, पंडित हीरालालजी रियासत बिचौलियान, पंडित रामधनजी सुजानगढ़वाले इत्यादिक पधारे थे, जिससे सभा शास्त्र और तत्वविचारमें बहुत आनन्द रहा। पंडित कल्याणरायने कई सभायें कीं, जिसमें बहुत धर्मोपदेश हुए। हुक्मचन्द विद्यार्थी जैन पाठशाला कानपुरने भी दो सभाओंमें व्याख्यान दिये, १ शास्त्रस्वाध्यायका दूसरे निशभोजनत्यागका रात्रि भोजनत्यागका उपदेश ऐसा पुरजोश हुआ कि, उपदेश देते हुए विद्यार्थीके आंसू आ गये। जिसको देखकर बहुतसे महाशयोंने रात्रि भोजनका त्याग कर दिया। लाला हुलासराय सहारनपुर निवासीने उक्त विद्यार्थीको ५) पारितोषिकमें दिये और विद्यार्थीने वह रुपये हर्षपूर्वक पाठशाला काशीको अर्पण कर दिये। सुजानगढ़के पाठशालाके २ विद्यार्थियोंने जो कि पंडित रामधनजीके पुत्र और भाई थे, अच्छी विद्या पढ़े हुए हैं बहुतसी गाथा, श्लोक और चर्चा शास्त्र सभामें सुनाई और धर्मोपदेश भी दिये। एक सभामें विद्यार्थियोंकी परीक्षा भी हुई और उनको पारितोषिक भी शायद पीछे दिया गया हो। माघ सुदी ४ की रात्रिको स्त्रियोंकी सभा हुई, जिसमें दोनों कोठियोंकी स्त्रियां एकत्र हुई। प्रथम ही मेरी पुत्री जसकरीने मिथ्यात्वके विषयमें व्याख्यान दिया, फिर उसकी माताने शीलके विषयमें व्याख्यान दिया। फिर लाला होतीलालजी खजानची कानपुर निवासीकी पत्नीने मुंशी नाथूरामजीकी बनाई हुई स्त्रीपर्यायके दुःखोंकी लावनी बहुतही मिष्ट स्वरसे पढ़ी। फिर सुजानगढकी

दो स्त्रियोंने (सुकौरी मंचनी) आस्त्रवके विषयमें बहुत ही मनोज्ञ व्याख्यान दिया और वीसपंथी तेरापंथी आम्नायका खूब अच्छी तरह स्वरूप दिखाया । प्रतिमाजीपर केसर लगाना, फूल चढ़ाना, रात्रिको पूजन करना, भैरों क्षेत्रपालकी पूजा इत्यादिकका अच्छी तरह निषेध किया । इनको बहुतसी गाथा और चर्चा भी याद थी सो पढ़कर सुनाई । फिर लाला हुलासराय सहारनपुर निवासीकी पत्नी चंद्रवतीने पंडित दौलतरामजी कृत छहढालेकी दूसरी ढाल पढ़कर उसका अर्थ खूब समझाया । जिस कमरेमें स्त्रियोंकी सभा हुई थी, उसके बाहरके दालान तमाम पुरुषोंसे भरे हुए थे, जो स्त्रियोंके मनोहर उपदेश और चर्चा सुनकर अंगमें फूले नहीं समाते थे और अपने मुखसे धन्य धन्य शब्द कहते थे । जैसा आनंद स्त्रीसभामें आया, वह वचन अगोचर है । मैंने अपनी अवस्थामें ये अवसर प्रथम ही देखा । फिर बड़े आनंदसे सभा विसर्जन हुई । लाला उलफतराय कानपुरवालेके भजन भी रथयात्रामें और शास्त्रसभामें बड़े आनंदसे होते थे । यहांपर शिखरमाहात्म्य पुराणकी एक ही प्रति है सो भी बड़ी जीर्ण हो गई है दूसरी प्रतिकी बहुत आवश्यकता है । यहांसे भी खतका जबाब नहीं आया ।

शेष आगे

आवश्यकीय सूचना.

दि. जैन. प्रा. सभा सम्बन्धी हिसाबके पत्र और जैनमित्र सम्बन्धी लेख निम्नलिखित पतेसे भेजे जावें.

गोपालदास बरैया, मोरेना. (ग्वालियर)

खुली चिट्ठी

श्रीमान्—

पं० पन्नालालजी गोधा
शेरगढ़ (कोटा)

महाशय ! जुहार

श्रीमान्‌का एक लेख "महासभासे प्रार्थना" शीर्षक ज्येष्ठ शुक्ला १ श्रीवीर स० २४३२ के 'जैनमित्र' अङ्क १४ में छपा है उसकी निम्नपंक्तियां काशी स्याद्वादपाठशालेसे सम्बन्ध रखती हैं:—

"मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि, महाविद्यालय फिर मथुरामें जावे, वल्कि इसे जयपुर पाठशालामें शामिल करें अथवा **काशी स्याद्वाद पाठशालामें शामिल कर काशी ले जावें परन्तु काशीमे रहे तो जो झूठा नाम पाठशालाने स्याद्वाद बनाया है उसको सार्थक करैं** आदि"

मुझे यह ज्ञात नहीं होता है कि, श्रीमान्‌की समझमें यह बात कैसे आई कि, काशी पाठशालेका नाम स्याद्वाद झूठा है और वह अपने नामको सार्थक नहीं करती है । यदि ऐसा लिखनेका कारण 'जैनमित्र' के लेख हैं, तो कृपाकर जै० मि० अंक ७ पृष्ठ ८८ देखिये । इसके अतिरिक्त जैनगजट अङ्क १३ में पाठशालाकी रिपोर्ट (९ मासकी) छपी है, जिसमें स्पष्ठ लिखा है कि, पाठक्रम बदल दिया गया और प्रवेशिका तथा मध्यमाका कोर्स तैयार हो गया, एवम् उत्तम परीक्षाके पाठक्रमपर विचार हो रहा है । इसी रिपोर्टका उपसंहार जैनगजट अङ्क १९ में छपा

है। इसमेंभी साफ लिखा गया है कि, "आवश्यक जानकर पाठशालेका पाठक्रम परिवर्तित कर दिया गया और जैनशास्त्रोंकी मुख्यता कर दी गई। चैत्रमाससे नूतन क्रमानुसार पढ़ाई भी होने लगी है और इसके पहले जो क्वीन्स कालेजकी पढ़ाई होती थी, उस समय भी विद्यार्थियोंको धर्मशास्त्र पढ़ाये जाते थे और उसमें परीक्षा भी ली जाती थी। इसके अतिरिक्त काशीकी पाठशालामें एक बातकी यह विशेषता है कि, अन्य जैन पाठशालाओंमें प्राय: व्याकरण अन्यमतके पढ़ाये जाते है परन्तु काशीकी पाठशालामें जैनेन्द्र व्याकरण आदि पढ़ाये जाते हैं। नूतन पाठक्रम सर्व श्रेणियोंका तैयार नहीं है, अत: प्रकाशित नहीं किया गया। शोक है कि, आपने व्यर्थ ही पाठशालापर दोषारोपण किया हैं। पाठशालेकी रिपोर्टके अन्तमें मैंने नोट भी दिया है कि, हितैषीगण इसपर सम्मति देकर पाठशालाकी त्रुटियोंको सुधारनेका प्रयत्न करें परन्तु आपने इसके सुधारनेकी चेष्टा करनेके बदले इसके राहमें कांटे बोये! आप स्वयम् विचारिये कि, जो लोग अपनी थैली निचोड़कर पाठशालाकी सहायता करते हैं, उनपर आपके लेखका क्या प्रभाव पड़ेगा? यदि आपके ध्यानमें कोई दूसरी त्रुटियां हैं तो शीघ्र सूचित करिये जो उसके संशोधनका उपाय किया जाय।

आपका सेवक—

जैनेन्द्रकिशोर–उपमंत्री

स्याद्वाद पाठशाला

ओम्

"कुसया जिला एटामें आहारदान।"

मिती ज्येष्ट कृष्ण १३ से ज्येष्ट शुक्ल पंचमी तक तेरहद्वीपविधान हुआ और शास्त्रसभा बड़े आनंदके साथ हुई। चतुर्थीकी शास्त्रसभामें ये दो बातें बहुत अच्छी हुईं (१ कि, कुसयेके सर्व भाईयोंने "बम्बई कंद' बेचना और खाना छोड़ दिया, जो कोई बेचेगा उसपर १।) रु० जुर्माना होगा (२) और उस दिन जितने महाशय उपस्थित थे, सबोंने परस्त्रीका त्याग किया। किसीने उम्रपर्यंतका, किसीने १० वर्षका, किसीने ६ वर्षका, किसीने १ वर्षका और किसीने छह माहका त्याग किया और उमरावसिंह जो कि जातिके लुहार थे,आपने परस्त्री और चोरीका सर्वथा त्याग किया। आपको धन्यवाद है। हमारे भाइयोंको इनसे उपदेश लेना चाहिये और सब प्रकारसे आनंद रहा। करीब डेढ़ हजारकी भीड़ हुई थी। आये हुए भाइयोंकी यहांके भाइयोंने सब तरहसे खातिर की। पंचमीके दिन **ला० छदामीलालकी** तरफसे ज्योनार हुई, आपकी गाढ़ी कमाई अच्छे काममें लगी। आपको और यहांके सर्व भाइयोंको धन्यवाद है।

दर्शक—

अमोलकचन्द्र जैन

उड़ेसर जि० मैनपुरी

श्रवणबेलगुलका इतिहास।

(लेखक—नाथूराम प्रेमी, देवरी निवासी)

महसूर प्रदेशके **हसन** प्रान्तमें **चेनराईपट्टण** गांवसे ९ मीलकी दूरीपर एक **श्रवणबेलगुल** नामका छोटासा शहर है। वहां जैनधर्मानुयायियोंकी **गोमटेश्वर** नामकी एक अद्भुत मूर्ति है। इसलिये उक्त नगर बहुत प्रसिद्ध है। नगरके दोनों तरफ दो ऊंची पहाड़ियां हैं। इसलिये वहांके मकानात बेसिलसिले और ऊंचे नीचे हैं। वहांके रहनेवाले मनुष्योंका साधारण व्यापार प्रायः पीतल तांबेके वर्तन वगैरह बनाना है। ऊपर कही हुई दो पहाड़ियोंमेंसे बड़ी तथा ऊंची पहाड़ीपर गोमटेश्वरकी साढ़े छप्पन फीट ऊंची मूर्ति स्थित है! और वह नखसे शिखपर्यन्त एक ही पाषाणकी बनाई हुई है। मूर्ति अत्यन्त प्रेक्षणीय तथा अतिशय ऊंची होनेसे कई मीलकी दूरीसे दृग्गोचर होती है। मूर्तिकी उंचाईके परिमाणसे यद्यपि उसके बांहु, नासिका, ओष्ठ, कटि (कमर) ये अवयव कुछ बड़े दिखाई देते हैं, परन्तु उसकी सुघराई और सुन्दरतामें शिल्पविद्याकी (कारीगरीकी) पराकाष्ठा दिखलाई देती है। और मूर्तिशीर्षस्थ घुंघरारेवालोंसे तो दर्शकोंका विश्वास इस विषयमें और भी सुदृढ़ हो जाता है। उक्त गोमटेश्वर महात्माकी ही अनेक छोटी आकारकी मूर्तियां नगरमें अनेक दिखाई पड़ती हैं। प्रत्येक वीसवें वर्षमें इस गोमटेश्वरकी मूर्तिका पंचामृतस्नान—समारंभ बड़े ठाठवाटसे होता है। तदनुसार सन १८७१ में पंचामृतस्नान—महोत्सव हुआ था, ऐसा एक यूरोपियन इतिहासज्ञने लिखा है।

गोमटेश्वरकी मूर्तिके कुछ अवयवोंकी लम्बाईका माप एक **स्कॅडन** नामक यूरोपियन महाशयने प्रत्यक्ष किया था। परन्तु अनेक अवयवोंका माप ले चुकनेपर, जब वह शेष अवयवोंका ले रहे थे, तो वहांके पुजारियोंने आपत्ति की। इसलिये माप—कार्य पूर्ण नहीं हुआ। तथापि अवशेष अवयवोंका माप स्कॅडन साहबने समीप खड़े होकर अनुमानसे ले लिया था।

मूर्तिकी समग्र उंचाई ५६॥ फुट है। कानके निम्नभागसे मुकुटके अन्तपर्यन्त लम्बाई ६ फुट ६ इंच, केवल चरणोंकी लम्बाई ९ फुट, चरणोंके दृश्यभागकी चौड़ाई ४ फुट ६ इंच, चरणोंके अगूठोंकी २ फुट ९ इंच, गुल्फोंका आधा घेर ६ फुट ४ इंच, जंघाओंकी आधी मुटाई १० फुट, कटितटसे कानोंतककी लम्बाई २४ फुट ९ इंच, उदर (पेट) के नीचे दृश्यभागकी चौड़ाई १३ फुट, कटिके दृश्यभागकी चौड़ाई

---

१ मराठी **तत्वप्रसारक**के एक लेखका अनुवाद।

२ प्रतापी तथा चरमशरीरी महात्माओंके "आजानुलम्बबाहु" होते हैं। यह शिल्पविद्याकी परिपूर्णता है, जिसे आजकलके वीर्यहीन निःसत्व जीव त्रुटि समझते हैं। भला! वर्तमानमें ऐसे शरीरोंके दर्शन कहां, जो लोग जान सकें।

१० फुट, कटिसे कानोंतककी लम्बाई १७ फुट, कांखसे कानतककी लम्बाई ७ फुट, बक्षःस्थलकी चौड़ाई २६ फुट, कंधोंसे कानोंतक लम्बाई २ फुट ६ इंच, तर्जनीकी लम्बाई ३ फुट ६ इंच, मध्यमा ५ फुट ३ इंच, अनामिका ४ फुट ७ इंच, कनिष्ठिका २ फुट ८ इंच, इस प्रकार उक्त मूर्तिकी लम्बाई चौड़ाईका परिमाण है ।

आसपास व साम्हने छोटी मोटी इमारतोंके होनेके कारण दूरसे साम्रमूर्तिके दर्शन नहीं होते हैं । साम्हनेकी दूसरी पहाड़ी परसे देखनेमें मूर्तिका मस्तक और बाहु आदि अवयव मात्र ही दृग्गोचर होते हैं, इसलिये एक प्रकारका भयसा उत्पन्न होता है । परन्तु पीछे समीप जाकर उस भव्यमूर्तिको एकाग्र चित्तसे अवलोकन करते ही दर्शकके अन्तःकरणकी स्थकित होकर क्या दशा होती है, इसकी कल्पना उसके अतिरिक्त दूसरा नहीं कर सकता है । तत्रस्थ लोगोंका ऐसा ख्याल है कि, यह मूर्ति रावणकी प्रार्थनासे मय नामके किसी राक्षस शिल्पकारने तयार की थी !

(शेष आगे ।)

रावण जैनी था ।

१९ जूनके श्रीव्यंकटेश्वरसमाचारमें "रावण जैनी था ।" इस विषयका एक पैरा लिखा गया है । उसमें जो बात लिखी गई है, उसे पढ़कर लेखककी तर्कबुद्धिपर हँसी आती है । बड़ी असावधानी और युक्तिकी अवहेलनासे उस नोटका जन्म हुआ है । यदि लेखक महाशय धर्मके पक्षमें न पड़कर कुछ छानबीन करके युक्तिपूर्वक उस विषयको लिखते, तो बहुत कुछ लिख सकते थे, और वह उसके पाठकोंको रुचिकर भी होता । अस्तु, उसमें जैनियोंसे पूछा गया है;—" यदि जैनियोंके कथनानुसार रावण जैनी रहा हो और मेघनाद कुंभकर्ण उनके धर्मवाले रहे हों, तो नहीं समझ सकते कि, जैनी भाई उसके सुरापायी, गौब्राह्मण संतापी, और हिंसाप्रिय होनेके कलंकको किन प्रमाणोंसे दूर करेंगे । यह भी प्रसिद्ध है कि, रावण और उसके वंशवाले शैव थे । शिवकी असामान्य पूजा करके रावणने वर प्राप्त किया था । क्या जैनी भाई यह भी कबूल करेंगे कि, उस समयके जैनी ब्रह्मा शिव आदिकी पूजा भी किया करते थे । " इसका उत्तर जैनियोंसे न पूछकर यदि लेखक स्वयं कुछ विचार करते, तो उन्हें मिल जाता कि, जो जैनी रावणको जैनी मानते हैं, उन्हें क्या आवश्यकता है कि, वे उसे राक्षस, सुरापायी और हिंसाप्रिय माने ! अथवा उससे शिवजीकी पूजा कराते फिरें । जैनियोंके राम–चरित्र (पद्मपुराण) को निकालके देखिये कि, उसमें रावणको कैसा बतलाया है । जैनी उसे अहिंसाधर्म–निरत परम जिनभक्त, आसाधारण शक्तिशाली नीतिज्ञ और वीरश्रेष्ठ विद्याधर–क्षत्रिय नरेश मानते हैं । वे उसे जैनी कहकर कुकर्मरत नीच निशाचर नहीं मानते हैं । जैसा

कि, शिवभक्त बनाकर भी आप उसे निंद्यकर्मा कह रहे हैं। यदि आप कौतूहलवश ही जैनियोंके पद्मपुराण महाकाव्यको देखेंगे, तो उसके सच्चे चरित्रोंकी उत्कृष्टतासे आप मोहित हो जावेंगे। उस ग्रन्थसे आप यह भी नई बात जानेंगे कि, आपके रघुकुलतिलक रामचन्द्रको जैनी लोग सिद्धावस्थामें हमेशासे पूजते हैं। और बाल, सुग्रीव, और हनुमानादि पूज्य महात्माओंको मर्कटादि न मानकर पुरुषोत्तम और उच्चत्तम क्षत्रियवंशज मानते हैं। सो श्रीरामचन्द्रका विशद और विस्तृत जीवनचरित्र जो जैनियोंके पद्मपुराणमें अंकित है, वह लोकोत्तर प्रशंसाके योग्य है। लेखक महाशयसे हम आग्रह करते हैं, कि, वे उसे एक बार अवश्य अवलोकन करें। अन्यथा जैनियोंकी अपरिचत बातोंमें इस तरह हाथ डालनेका साहस न किया करें।

विविध समाचार।

परीक्षाफल—इस वर्षका बनारस संस्कृत यूनीवर्सिटीकी परीक्षाका फल प्रगट हो चुका। जैनियोंके निम्नलिखित ७ विद्यार्थी उसकी पृथक् २ परीक्षाओंमें पास हुए हैं। न्यायशास्त्रकी पूर्ण मध्यमापरीक्षामें माणिक्यचन्द्र गुप्त स्याद्वाद पाठशाला काशी, चौथे खंडमें मनोहरलाल गुप्त जैन पाठशाला खुर्जा, तीसरे खंडमें गणेशप्रसाद वर्णी स्या० पा० का०, दूसरे खंडमें बुद्धसेन गुप्त जै० पा० खुर्जा, और प्रथमा परीक्षामें बृजलाल गुप्त—मालथौन (सागर), निद्धामल गुप्त—सहारणपुर, बनारसीदास जैन श्रीललितहरिविद्यालय, पीलीभीति। बनारसी दासको छोड़कर शेष छह विद्यार्थी वर्तमानमें काशी स्याद्वाद पाठशालामें ही अध्ययन करते हैं।

प्राचीन प्रतिमा—ईडरके निकट वणियादकोकापुर ग्रामके एक कुएमें एक प्राचीन प्रतिमा निकली है।

एक नयी खबर।

पाठक महाशय! इस समय पाणिनीयादि जितने प्रचलित व्याकरण हैं, सबका दादागुरु अर्थात् समस्त व्याकरणोंसे प्राचीन **शाकटायनव्याकरण** प्राचीन टिप्पनी सहित है। इसके कर्त्ता दिगम्बर जैनाचार्यवर्य श्रुतदेशीय शाकटायनाचार्य हैं। इस व्याकरणपर हमारे दिगम्बर जैनाचार्योंने अनेक टीका और भाष्य बनाये हैं, जिनके साम्हने पाणिनि व्याकरण व उसपरकी टीका व भाष्य कुछ भी नहीं हैं। इसके सिवाय तत्वार्थसूत्रकी सर्वार्थसिद्धि टीकाके कर्त्ता पूज्यपादस्वामीकृत जैनेन्द्रव्याकरण व उसपरकी लघुवृत्ति महावृत्ति आदि भी पाणिनिव्याकरणकी टीकाओंसे कम नहीं है। परन्तु खेद है कि, पूर्वकालमें विधर्मी राजाओंके राज्यमें विधर्मी विद्वानोंके पक्षपातसे इन महारत्नोंका विद्वत्समाजमें प्रचार न होनेसे ये सब जैनियोंके

भंडारोंमें पड़े २ ही सड़ते रहे और अब भी जहांके तहां पड़े २ सड़ रहे हैं। कुछ वर्ष हुए कि एक अंगरेजी विद्वान्ने इनमेंसे आचार्यवर्य अभयचन्द्रकृत **शाकटायनप्रक्रियासंग्रह**को बड़े परिश्रम और अर्थव्ययसे छपाकर जीर्णोद्धार किया था, और १०) रुपये मूल्य रखनेपर भी विद्वानोंने हाथों हाथ ले लिया। तबसे आजतक किसीभी जैनी धनाढ्यने इसका पुनरुद्धार करके आचार्य महाराजके परिश्रमको सफल नहीं किया। कुछ वर्ष पहिले हमने इसके पुनरुद्धारार्थ एक विज्ञापन निकाला था, परन्तु किसीकी भी सहायता न होनेसे हमारा विचार जहांका तहां लय होगया। पीछे बम्बईके प्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता पंडित ज्येष्ठाराम मुकुंदजी वालोंसे छपानेकी प्रार्थना की, तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया कि, इसके जीर्णोद्धारमें यदि १०००) रुपयेसे अधिक खर्च न पड़ैंगे, तो ५००) रु० लगाकर ५०० पुस्तकोंके ग्राहक (सांझी) हम हो सक्ते हैं। परन्तु शेष ५००) का हमारे पास ठिकाना न होनेसे २५०) रु० देनेपर २५० प्रतिके एक हिस्सेदार बनानेके लिये कई एक महाशयोंको लिखा। परन्तु किसी भी भाईके लालका हृदय आर्द्रीभूत नहीं हुआ, लाचार हम दोनोंने २००) रु० का कागज और नये टाईपके लिये कोल्हापुरके जैनेन्द्रप्रेसमें भेज कर, कार्य प्रारंभ करा दिया। सो पूर्वार्द्ध तो छपकर तैयार है, आगेको हमारे हिस्सेके ४००) रुपया हो तो काम चलाया जाय। संपूर्ण ग्रंथ मय टिप्पणी और सूत्रपाठादिके १० फारम अर्थात् अनुमान ५०० पृष्ठमें पूरा होगा, जिसकी न्योछावर कमसे कम ३।) रु० रक्खैंगे। यदि हमारे ग्राहक महाशय छपनेसे पहिले ही ग्राहक बनकर हमारी सहायता करैं, तो हम उन्हें डांकव्ययादि माफ करके २॥) में ही दे सक्ते हैं. अर्थात् इस समय फरमायस आते ही हम २॥) के वी. पी. में पूर्वार्द्ध भेज देंगे और उत्तरार्ध तय्यार होनेपर उसे भी हम अपनी तरफसे डांक खर्च लगा कर भेज देंगे। यह रियायत हम १०० ग्राहकोंके लिये ही कर सक्ते हैं। आशा है कि, इस एक पंथ दो काजके लिये अर्थात् आपको तो १) रुपयेका लाभ है, और हम दो ढाई सौ रुपये पहिले मिलनेसे उत्तरार्द्ध शीघ्र ही छपा लेंगे। यह ग्रंथ ऐसा वैसा नहीं है। प्रत्येक जैनपाठशालाके सिवाय प्रत्येक मंदिरजीमें एक २ प्रति रखनेसे जब कोई अन्यमती वैयाकरणी विद्वान् आवे, तो उसके सामने रखनेसे वह अपनेको धन्य समझेगा कि, एक प्राचीन व्याकरणके पवित्र दर्शन हुये। और जैनाचार्योंकी बड़ाई भी करैगा। जैनधर्मका प्रभावभी बढेगा। अतएव सबको एक एक प्रति लेकर सरस्वती भंडारमें संग्रह करनी चाहिये।

प्रार्थी—भाइयोंका दास

पन्नालाल जैन।

पो० गिरगांव मुम्बई।

Registered No. 288

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम् ।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम् ॥

अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

सप्तम वर्ष। श्रा० कृ० १ और श्रा० शु० १ श्रीवीर सं. २४३२। अंक १८-१९

विषयानुक्रमणिका ।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया ।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना ।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ बारतक ≈) पंक्ति।
६ " " ↗)॥ पंक्ति।
१२ " " –) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इस प्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।
६ " " ५) रु.।
१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—
जैनमित्र—शोलापुर।

विज्ञापन।

हमारेपास इस समय दो तीन जैनी पंडित मौजूद हैं, जहांकी पाठशालाओंके लिये जरूरत हो, वहांके प्रबन्धकर्ताओंको हमसे पत्रव्यवहार करना चाहिये। वेतनके विषयमें पत्रद्वारा निश्चय करना चाहिये।

धन्नालाल काशलीवाल—
ठि० चंदाबाड़ी पो० गिरगांव, बम्बई

विदित हो कि, यहांपर स्वर्गवासी पंडित बालाबकसजीके उद्योगसे शास्त्रजीके बंधने अर्थात् वेष्टन बनवाये गये थे और ५०० तथा ६०० वेष्टन जहांके भाइयोंने मंगाये थे, वहां भेजे गये थे। परंतु प्लेग आदिकके कारण काम बंद रहा था, सो अब फिर जारी हो गया है। सो सर्व महाशयोंको सूचना दी जाती है कि, जहां कहीं शास्त्रोंमें वेष्टन न हों या जीर्ण हो गये हों, वह कानपुरसे विला कीमत मंगा सकते हैं। जो भाई वेष्टन मँगावें, उनको नीचे लिखे हुए नियम पूर्ण करने होंगे।

(१) मुखिया भाइयोंकी दस्तखती चिट्ठी भेजें (२) नाम पता डांकखाना सर्व देवनागरी अक्षरोंमें स्पष्ट और पूरा २ लिखें (३) वेष्टन पहुंचनेपर एक चिट्ठी लिखनी होगी कि, वेष्टन ठीक पहुंचे और शास्त्रोंमें लगा दिये गये। (४) वेष्टन यहांसे वेल्यूपेबल भेज जांयगे। अर्थात् जितना डांकमहसूल भेजनेमें लगेगा, उतना ही वेल्यूपेबल किया जायगा। खाली डांकमहसूल मंगानेवालेको देना होगा। वेष्टनोंकी कीमत नहीं ली जायगी। (५) चिट्ठी भेजनेका पता,—

जौहरीलाल मंत्री—सरस्वतीभंडार,
पुराना जरनैलगंज, कानपुर.

श्रीवीतरागाय नमः

श्रावण कृष्णा १
श्रावण शुक्ला १
श्रीवीर संवत्
२४३२।

वर्ष ७.
अंक-
१८ और १९।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

बालविवाहका भयानक परिणाम सुननेसे रोम खड़े हो उठते हैं । यह बालविवाहका ही प्रसाद है, जो आज भारतवर्षके हिन्दुओंमें दशवर्षके भीतरकी ९४१०३ विधवायें अपने हत्यारे मातापिताओंके अन्यायसे तड़फ रही हैं । सन १९०१ की सरकारी मर्दुमशुमारीके अनुसार विधवाओंकी संख्याका कोष्टक इसप्रकार है।

एक वर्षके भीतरकी	८९९
१ वर्षसे २ वर्षतककी	१०३९
२ „ ३ „ „	१८८६
३ „ ४ „ „	३७३०
४ „ ५ „ „	८१८२
५ से १० पर्यन्तकी....	७८४०७

दशवर्षसे अधिक उमरवाली विधवाओंकी संख्या और भी अधिक है ।

कन्याविक्रयकी घृणित-पृथा हमारे समाजसे अभी तक दूर नहीं होती । प्रतिवर्ष ऐसे सैकड़ों विवाह होते हैं, जिनमें रुपयोंके लोभमें फँसकर पातकी मातापिता अपनी कन्याओंको जैसे तैसे बूढ़े जर्जर वरके गलेसे बांध देते हैं । जहां तक सोचा जाता है, इसका कारण समाजके मुखियाओंकी मूर्खता और असावधानी ही प्रतीत होती है । वे चाहें तो आज ही इस दुष्प्रथाका काला मुंह कर सकते हैं। यदि आज वे लोग इस बातकी प्रतिज्ञा कर लें, कि जिसके यहां इस प्रकार धन ले देकर विवाह होगा, उसके यहां हम भोजनपान नहीं करेंगे, तो किसीका साहस नहीं हो सकता कि, उन्हें छोड़के वह ऐसा विवाह करना स्वीकार करे । अनेक स्थानोंमें इस प्रकारकी प्रतिज्ञासे सफलता हुई है । कन्याविक्रय बन्द हो गया है।

जो मातापिता द्रव्य लेकर अपनी कन्याका विवाह करते हैं, उनसे पूछनेपर उत्तर मिलता है कि, बिरादरीके लोगोंका भोजनादिसे सत्कार

करनेके लिये हमें द्रव्यकी आवश्यकता होती है। और ऐसा है भी, क्योंकि उस मिले हुए द्रव्यको प्रायः पंचलोग ही खा जाते हैं। इस हिसाबसे यदि विचार किया जावे, तो कन्याविक्रयके महापापके भागी बिरादरीके पंच ही होते हैं! यदि वे लोग ऐसे निर्धनपुरुषोंके यहां भोजनादि करना छोड़ देवें, और कन्यावालेको यह समझावें, कि किसीसे धनकी याचना मत कर, सूखी हल्दी मात्रसे टीका कर दे, हम तेरी कन्याका विवाह आनंदके साथ विना कुछ खर्च्च कराये करा देंगे, तो शीघ्र ही यह दुष्प्रथा बन्द हो सकती है।

कन्याविक्रयके बन्द होनेसे समाजका एक बड़ा भारी उपकार यह होगा कि, गहरी रकमोंके लोभमें फँसाकर जो बुड्ढे चांडाल मरते दम तक अपना विवाह करके निरपराध अबोध कन्याओंका गला काटते हैं और उन्हे वैधव्यके घोर दुःखमें पटककर समाजमें भ्रूणहत्यादि पापोंका प्रचार करते हैं, वे शान्त हो जावेंगे। वृद्धविवाह और अयोग्य-विवाह एकदम बन्द हो जावेगा।

गत जेष्ठमहीनेमें पालीतानेमें एक १४ वर्षकी तरुणकन्याका विवाह एक ६० वर्षके बुड्ढे बाबाके साथ हुआ था! कन्याके पिताने बुड्ढेके साथ यह सौदा बारह सौ रुपया लेकर पक्का किया था। कहते हैं, कि उक्त बुड्ढे बाबाका मुखविवर दांतोंकी तरफसे बिलकुल साफ था, और सिरके बाल चांदीसे चमकते थे। पालीतानाके पंचमहाजनोंने पहले बाबाको ज्यादा उमर बतलाकर बीबी मिलनेमें बाधा डाली थी, परन्तु बाबा भी कम नहीं थे, उन्होंने चट एक जन्मपत्रिका बनाकर पंचोंमें पेशकर दी कि, मैं तो अभी सिर्फ ५० वर्षके भीतरका नवीन युवा ही हूं! आखिर पंच कुछ न कर सके, बेचारी बकरीको बाबा अपने घर घसीट लाये। हाय! बुड्ढे! तूने यह क्या किया? दो चार दिनमें तू तो अपनी राह लग जावेगा, पर वह बेचारी क्या करेगी? इसका तूने कुछ भी विचार न किया। अफसोस! भगवद्भजनकी अमूल्य बेला इस आसुरी, निंद्यवासनाके चक्करमें पड़कर तूने बरबाद कर दी। "अंग उपंग पुराने परे, तिसना दिन दूनी नवीन भई है।" कविकी इस पुरानी उक्तिको तूने नवीन कर दी।

गुजरातके बीसा औसवालोंमें कन्याविक्रयका खूब जोर शोर था। एक २ कन्यारत्नका मूल्य उनमें पांच पांच सात सात हजार रुपया तक पहुंच जाता था। परन्तु अब सुनते हैं कि, वहांके जातिभाइयोंने इस बुरे रिवाजको एकदम उठा देना चाहा है। हाल ही बोरसद (खेड़ा) के किसी एक महात्माने तीन हजार रुपया देकर अपना विवाह किया था और एक अबोध कन्याके भाग्यपर छुरी चलाई थी। पंच सज्जनोंसे यह दुष्कर्म देखा नहीं गया, इसलिये उन्होंने रुपया देनेवाले महात्मा और कन्या बेचनेवाले पुण्यात्माको जातिसे खारिज कर दिया है। और आगेके लिये नियम कर दिया है कि, जो कोई यह कार्य करेगा, इसी तरह दंडनीय

होगा । बोरसदके धर्मात्मापंचोंको हम इस नियमके बदलेमें सहस्र २ धन्यवाद देते हैं, और अपने पाठकोंसे प्रार्थना करते हैं कि, आप लोग भी प्रयत्न करके अपनी २ जातिमें इस पुण्यकार्यका बीजारोपण करें ।

उपर्युक्त दो समाचार बम्बई हीराबाग धर्मशालाके सुप्रिटेंडेंट रा. रा. माणिकचन्द रावजी दोसीने हमारे पास भेजे हैं ।

सहयोगी अंग्रेजी जैन गजटने श्वेताम्बर कान्फरन्सको सलाह दी थी कि, यदि कान्फरन्स पृथक् अनाथालय खोलनेके बदले **हिसारके** जैन अनाथालयमें शामिल हो जावे, तो हम बहुत प्रसन्न होंगे । इसके उत्तरमें कान्फरन्सके मुखपत्र हेरैल्डने एक मीठा उत्तर देकर जैनगजटसे पीछा छुड़ाया है । हेरैल्डकी राय है कि, हिसारके आसपास दिगम्बरियोंकी ही मनुष्यसंख्या अधिक है, इसलिये हम लोगोंको वहां सुभीता न होगा, हम कहीं जुदा ही करेंगे ।

"श्रीयुत शेठ हरलाल चुन्नीलालजी गंगवाल–**कोकमठाण** (अहमदनगर) की लड़कीका विवाह, गत जेठ महीनेमें हुआ था । आप जैनधर्मके जानकार और धर्मात्मा हैं, इसलिये आपने नांदगांवसे धर्मानुरागी भाई खुशालचन्द नथमलजी पहाड़्याको जैनविवाहपद्धतिके अनुसार विवाह करानेकेलिये बुलवाया था । भाई खुशालचन्दजी बड़े सज्जन हैं, यदि कोई भाई जैनविधिके अनुसार विवाह करानेको बुलावै, तो आप विना किसी प्रकारका खर्च लिये हुए स्वयं गांठका द्रव्य लगाकर जाते हैं, और उत्साहपूर्वक कार्य कराते हैं । तदनुसार आपने कोकमठाण पहुंचकर और वेदी वगैरह बनाकर हवनपूजनादिकी सामग्री एकत्र कर ली, परन्तु विवाहमुहूर्तके दिन न जाने क्यों शेठ हरलालजी इसकार्यसे विरुद्ध हो गये और फिर उन्होंने अपने पूर्वपुरुषाओंकी आर्षविधिकी अवहेलना करके एक मिथ्यादृष्टिद्वारा उस मंगलकार्यको पूरा कराया । वहां जो सज्जन उपस्थित थे, उन्होंने बहुत समझाया, परन्तु शेठजीने किसीकी भी नहीं सुनी ।" इस प्रकारके समाचार एक सज्जनने हमारेपास लिखके भेजे हैं । इन्हें बांचकर हमको बड़ा दुःख हुआ है । हम नहीं कह सकते कि, धर्मकी इस प्रकार निन्दा करानेवाले और अधर्मका पक्ष करनेवाले शेठ हरलालजी कैसे धर्मके जानकार और धर्मात्मा होंगे?

हमारे एक ग्रेज्युएट मित्रने महासभा और महाविद्यालयके विषयमें एक चिट्ठी लिखकर भेजी है, उसका कुछ अंश हम अपने पाठकोंके जाननेके लिये नकल करते हैं;—"....महासभाके कर्त्ता हर्ता लोग अंगरेजी कालिजहीका आलाप भरते हैं, धार्मिकशिक्षा व शिल्प शिक्षाकी कुछ परवाह नहीं करते । इनमेंसे हर एक **सरसय्यद** होना चाहता है और जातिकी सत्योन्नतिकी ओर कोई भी नहीं देखता । मैं आपसे सत्य कहता हूं कि, सहारनपुरमें महाविद्यालयकी उन्नति कदापि नहीं हो सकेगी, क्योंकि प्रथम तो वहां की बिरादरीमें झगड़ा हो रहा है, दूसरे धार्मिक शिक्षाकी वहां कुछ खबर नहीं ली जाती । कार्य-

कर्ता एक B. Benarsidass हैं, जो School के इच्छुक हैं । बाबू लोगोंको यह भी स्मरण रहै कि, आजकल स्कूलके खर्च कुछ कम नहीं होते है । हवाई गोलोंपर School खोल दिया तो पछतावेंगे। अस्तु जो कुछ हो, अब मैं आपसे यह पूछना चाहता हूं कि, यदि महासभा कौमके रुपयेका व लड़कोंका इस प्रकार नाश करै, तो क्या आपको केवल लेखोंपर ही सन्तुष्ट रहना उचित है? मान्यवर! यदि आपको इस जातिका उद्धार करना है, तो इस महाविद्यालयको इस प्रकार स्थापित करवाइये, जिसमें उत्कृष्ट धार्मिक-शिक्षा व गौण लौकिकशिक्षा दी जावे । जिसमें शिल्पके क्लास भी हों और जैनविज्ञानज्योतिषादिकी शिक्षा भी दी जावे । जितने भी लोग आपके सहमत हों, उनको आगे आना चाहिये। अब सोनेका समय नहीं है।........"

बाबा दुलीचन्दजीका प्रतिष्ठापाठ चल पड़ा। गत वैशाख महीनेमें इलाहाबादमें उक्त प्रतिष्ठापाठसे एक और प्रतिष्ठा हो गई । किसीने सच कहा है कि, **दुनियां झुकती है, झुकानेवाला चाहिये।** बाबाजीके सिवाय करहलके पंडित भादोंलालजी भी इस प्रतिष्ठाके आचार्य बने थे । प्रसिद्ध व्याख्याता पं० लक्ष्मीचन्दजीके उस समय कई दिनतक अच्छे २ व्याख्यान हुए थे ।

सम्पादकके स्थान परिवर्तन तथा प्रेस परिवर्तनके कारण जैनमित्रके समयपर निकलनेमें कुछ देरी हुई थी, उदार पाठक क्षमा करें।

सच्चा-शौच ।

(गताङ्क १२ से आगे ।)

मातपिताके रजवीरजसे,
जो निर्माण हुआ अस्पर्श्य ।
कृमिकुलकलित विनिन्दित जिसका,
है घिनावना अन्तर्दृश्य ॥
सब प्रकारके रोगोंका घर,
रहता है जो सहज स्वभाव ।
उस शरीरको जलसे कैसे,
शुद्ध करोगे मुझे बताव?॥ ८ ॥
जो मैलेसे बना हुआ है,
मैलेहीका है आगार ।
मैला ही झरता है जिसके,
सब द्वारोंसे विविध प्रकार ॥
वार वार क्षालन करते भी,
सदा बहाता है जो स्वेद ।
वह शरीर इस नीर निंद्यसे,
कैसे शुद्ध होय? है खेद ॥ ९ ॥
डली कोयलेकी धोनेसे,
औ मलनेसे वारंवार ।
छोड़ नहीं सकती है कारिख,
यत्न किये भी कोटि प्रकार ॥
शौचादिकसे वैसे ही यह,
जड़शरीर मलपिंड-स्वरूप ।
विमल नहीं हो सकता उलटा,
कर देगा सब जल मलरूप ॥ १० ॥
अशुचि अवनिपर जहां तहां,
अम्बरसे आके रहता है ।
और सभी कूड़े कचरेको,
ले नदियोंमें बहता है ॥

फिर अखीरमें महा अपावन,
उदधिरूप होता भाई।
उस जलसे सोचो समझो तो,
कैसे होवे शुचिताई ॥ ११ ॥
सलिल-शौच जीवोंको बस है,
उससे सब शुचिताई है।
सच पूछो तो बेसमझोंने,
ऐसी विधि बतलाई है ॥
जो शरीरको भी पवित्र नाहिं,
कर सकता, प्यारे भाई ! !
वह जल पाप-कर्ममल कैसे,
नष्ट करेगा? दुखदाई ॥ १२ ॥
गिरि सुमेरु ऐसे भौरोंसे,
सब ओरोंसे घिरा हुआ।
यदि हो संभव अमितदलोंका,
कमल गगनमें खिला हुआ ॥
तो शायद यह मलिन मैलसे,
बनी हुई निंदित काया।
हो सकती है शुद्ध सलिलसे,
सुजनोंने यों बतलाया ॥ १३ ॥
और अधिक कहनेसे क्या है,
किसी तरह भी जलसे मित्र !
निंद्य अपावन मनुजदेह यह,
हो सकती है नहीं पवित्र ॥
यों विचारके ज्ञानी सज्जन,
सलिलशौचका छोड़ घमंड ।
उज्ज्वल सम्यग्ज्ञान सलिलसे,
शुद्ध करैं निजरूप अखंड ॥ १४ ॥

(शेष आगे।)

नाथूराम प्रेमी।

मित्र और मित्रता।

सम्पत्तिके समय जैसी प्रीति रखता है, विपत्तिके समयमें जो वैसी ही प्रीति रखता है, उसे **मित्र** कहते हैं। विना प्रयोजन जो रक्षा करता है, अथवा कराता है, उसे **नित्यमित्र** कहते हैं। जिसके साथ परंपरासे श्लाघ्य-सम्बन्ध चला आता है, उसे **सहजमित्र** कहते हैं। और जो अपनी अच्छी तरहसे उपजीविका चलानेके लिये अथवा अपनी चैनकी गुड्डी उडानेके लिये ही किसीका आश्रय पकड़ता है, उसे **कृत्रिममित्र** कहते हैं। कोई कष्ट आ पड़े तो उसका निवारण करना, धनकी इच्छा नहीं रखना, स्त्रियोंके सम्बंधमें मनको अत्यन्त निर्मल रखना, और किसीपर प्रीति वा क्रोध करते समय उसमें बाधक न बनना, ये मित्रोंके गुण हैं।

जब तक धन उड़ानेको मिलता है, तब तक स्नेह रखना केवल स्वार्थके विषयोंमें ही रात्रिंदिन तत्पर रहना, संकट आनेपर उसकी परवाह न करना, शत्रुओंके साथ सहवास रखना, और मनमें फँसानेकी इच्छा रखके ऊपर नम्रताका वर्ताव रखना, ये मित्रोंके दोष हैं।

स्त्रियोंके साथ व्यवहार रखना, विरुद्ध बोलना, हमेशा कुछ न कुछ मांगते ही रहना, कुछ वस्तु मांगनेपर न देना, रुपया पैसेका लेन देन रखना, कडुवा बोलना, और एक दूसरेके सम्बन्धमें लोगोंकी की हुई चुगलीपर ध्यान देते रहना, ये सब मित्रताके टूटनेके कारण हैं।

दूधकी अपेक्षा अन्य कोई अधिक श्रेष्ठ नहीं है, क्योंकि वह अपनी संगति मात्रसे पानीको अपने सरीखा बना लेता है। इसी प्रकार पानीके समान अन्य कोई मित्र भी नहीं है, क्योंकि दूधकेसाथ समागम होते ही वह उसकी (दूधकी) वृद्धि करता है, और उसपर संकट आते ही अपनेको नष्ट करके उसकी रक्षा करता है। पशुपक्षी भी एक दूसरेका किसी न किसी प्रकारसे उपकार करते रहते हैं, तथा मौका पड़नेपर बदलते नहीं है। परन्तु मनुष्योंमें यह बात नहीं है। एक कथा प्रसिद्ध है कि, एक बड़े भयानक जंगलके एक खूब गहरे कुएमें बन्दर, सांप, सोना और एक **अक्षशालिक** नामका मनुष्य, ये सब गिर पड़े थे। इतनेमें एक **कंकाय** नामके पथिकने आकर उन्हें बाहर निकाला। पश्चात् बन्दरने तो वह सोना जो कुएमें पड़ा था, पथिकको देकर उसके उपकारका बदला चुका दिया, परन्तु **अक्षशालिकने** उस पथिकके साथ **विशाला** नगरीमें जाके, वहां उस सोनेके सम्बन्धसे उस बेचारेपर एक बडी भारी विपत्ति ला पटकी। इसीप्रकारकी विपत्ति **नाडीजंघ** नामक पुरुषको भी गौतमके द्वारा प्राप्त हुई थी, ऐसी एक ऐतिहासिक कथा है *।

नोट-हमारे पाठकोंको यदि यह लेख रुचिकर हुआ, तो नीतिवाक्यामृतके और भी दो चार लेखोंके अनुवादका परिश्रम किया जावेगा।

नाथूराम प्रेमी।

---

* श्रीसोमदेवसूरिकृत नीतिवाक्यामृतके मित्रसमुद्देशका आशय।

तीर्थयात्रा विवरण।

—o—

(लेखक-लाला शम्भुदयालजी-कानपूर)

[गतांककी पूर्ति।]

चंपापुर।

यहांका प्रबंध बहुत अच्छा है। पुजारी भैरोंप्रसाद शीतलप्रसाद हैं, जो कि मन्दिरकी देखभाल और पूजनप्रक्षाल बहुत अच्छी तरहसे करते हैं। मन्दिरकी चढी हुई सामग्री मालीको नहीं मिलती। एक ब्राह्मणके खान्दानमें जाती है। यहांपर शास्त्रोंकी सम्हाल की जिनमें पुराने फटे वेष्टन थे, नये लगा दिये। सिवाय दो तीन शास्त्रोंके सबमें तख्ती लगी हैं। पुजारीने भागलपुरसे तख्ती मंगाकर लगानेका वादा किया है। शास्त्रोंकी आलमारीमें बहुत शील रहती है. क्योंकि आलमारी दीवालमें बनी हुई है। दीवालकी शीलसे दो तीन शास्त्र बिलकुल खराब हो गये हैं। शास्त्रोंके लिये एक काठकी आलमारीकी बहुत जरूरत है। यहांपर पूजनके बर्तन कई जोड़ी हैं, परंतु धोती दुपट्टे केवल दस पांच ही रहते हैं। वह भी मैले और पुराने हैं। इसलिये कमसेकम २५ जोड़े धोती दुपट्टे मौजूद रहने चाहिये। यहांपर सिद्धक्षेत्र है, जैनगजट जरूर आना चाहिये। पुजारीने कहा कि, भागलपुरमें तो विना कीमत जैनगजट आता है, परंतु चंपापुरमें नहीं आता। यहांपर श्री वासुपूज्य स्वामी बारहवें तीर्थंकरके पांचों कल्याणक हुए हैं, इसलिये वासुपूज्य स्वामीका पुराण जरूर रहना चाहिये। जिस शहर वा गांवमें वासुपूज्य-

पुराण हो, वहांके भाईयोंको उचित है कि, एक प्रति नकल कराके चंपापुरके मंदिरमें भिजवा दें। एक पत्र मिती फागुन वदी २ को भैरोंप्रसाद शीतलप्रसाद पुजारीके नाम चंपापुर भेजा गया कि, उन्होंने शास्त्रोंमें तख्ती और धूप लगाई या नहीं, और १ पत्र उसी मितीको बाबू देवकुमारजी रईस, आराको लिखा गया है कि, चम्पापुरमें जैनगजट भेजनेका प्रबंध करें, और आलमारी, और धोती दुपट्टोंका भी प्रबंध करा दें। जबाब आ गया। धूप दे दी, तख्ती लगा दी।

पटना।

यहांपर शहरमें ९ मंदिरोंके दर्शन किये। केवल ४ घर जैनियोंके हैं, और चार ही मनुष्य सामान्यरूप हैं। यहांके मंदिरोंकी अवस्था जो देखी, सो लेखनीमें नहीं आ सकती। पांचों मंदिर ऐसे जीर्ण हो गये हैं कि आज कलमें गिरा चाहते हैं। तमाम छतें चूती हैं। दीवारें फट गई हैं। प्रतिमाओंके ऊपर बरसातका पानी टपकनेसे बहुत मिट्टी चढ़ गई है। प्रतिमा बहुत मनोज्ञ और प्राचीन हैं। मरम्मत मंदिरोंकी बहुत जल्द होनी चाहिये। अगर पांचों मंदिरोंका एक मंदिर हो जाय, तो बहुत ही उत्तम बात है। क्योंकि यहांपर कोई पूजन प्रक्षाल करनेवाला नहीं है। एक मंदिरमें कुछ शास्त्र भी आलमारीमें रक्खे हैं, वे बहुत खराब अवस्थामें हैं। वहांके आदमी अगर रुपयेकी मदत मिले तो मरम्मत करनेको तैयार हैं। पूछनेसे मालूम हुआ कि, पंचायती मंदिरकी मरम्मत सेठ माणिकचंद पानाचंदजी करानेवाले हैं। जो भाई सहायता दें वह पत्रव्यवहार "कन्हैयालाल जैनी, कुतुबफरोश चौक बाजार पटना"से करें। यहांपर गुलजार बागमें दो मंदिर हैं, एक सेठ सुदर्शनका, दूसरेमें प्रतिमाजी विराजमान हैं और धर्मशाला भी है। ये भी बहुत जीर्ण हो गया है। एक ब्राह्मण पुजारी है, जो पूजन प्रक्षाल भी नहीं जानता। एक पत्र फागुन बदी ६ को सेठ माणिकचंद पानाचंदजी बम्बई निवासीको यहांके मंदिरोंके जीर्णोद्धारके विषयमें लिखा है, जबाब नहीं आया।

विहार।

यहांपर एक धर्मशाला है, जो बहुत छोटी है। यात्रियोंको ठहरनेमें बहुत ही तकलीफ होती है। धर्मशालामें एक मंदिर है, जिसमें एक कोठेमें श्वेतांबरी और एक कोठेमें दिगम्बरी प्रतिमा विराजमान हैं। पुजारी ब्राह्मण है, जो पूजन प्रक्षाल कुछ नहीं जानता। अनछने पानीसे प्रक्षाल करता है। मांदिरजीमें सीसा, कंघा, शंख, तास, रक्खे हुए थे। चढ़ावा आधा माली लेता है, आधा पुजारी। एक पूजनकी पुस्तक फटी हुई थी, सो नई पुस्तक पूजनकी दे दी। एक शास्त्र आत्मानुशासनजी हैं, जो श्वेतांबरियोंकी कोठरीमें रक्खे हुए थे, क्योंकि दिगंबरी कोठरीमें शास्त्रजी रखनेके लिये खूंटी नहीं थी। दो खूंटी नई मंगवाकर दिगंबरी कोठरीमें लगवा दी और शास्त्रजीमें पुराना वेठन बदलकर नया वेठन लगा दिया। और शास्त्रजीको श्वेतांबरियोंके कोठेसे उठाकर दिगंबरियोंकी कोठरीकी खूंटीके ऊपर विराजमान कर दिया। यहांपर शास्त्रजी वांचनेको कोई चटाई नहीं थी। २)रु०

चटाइयोंके लिये दामामालीको दे दिये थे और आशा है कि मालीने चटाई खरीदकर मंदिरमें बिछा दी होगी। मंदिरके बाहर धर्मशालामें आलूकी खेती होती है। तमाम धर्मशालामें कूड़ा पड़ा है। बड़े खेदकी बात है कि, बहुतसे यात्री धर्मशालाहीमें दिशा फराकतको जाते हैं और सब धर्मशाला खराब कर देते हैं। यहांपर १ मंदिर शहरमें है। रास्ता खराब है। मंदिरमें कूड़ा रहता है। इसमें भी आलू गोभीकी खेती होती है। मालीको तनख्वाह नहीं दी जाती, इसलिये वह खेती करता है। अगर उसको तनख्वाह दी जावे, तो खेती बंद हो जावे। १ पत्र फागुन वदी ६ को सेठ माणिकचंद पानाचंद बम्बई निवासीको शहरके मंदिरके प्रबंधके लिये लिखा है, परन्तु जबाब नहीं आया। यहांपर लाला सेठलाल अग्रवाल (दिगंबरी) प्रबंधकर्ता हैं।

देहलीमें जैनकन्या पाठशाला।

———:o:———

बहुत दिनोंसे यहांके जैनियोंकी अभिलापा कन्यापाठशाला स्थापित करनेकी थी, परन्तु अध्यापिका न मिलनेसे कुछ न कर सकते थे। बड़े हर्षकी बात है कि, अब हमको एक उत्तम और सुयोग्य जैनी अध्यापिका प्राप्त हो गई है।

आषाढ शुक्ला २ रविवारको सुबहके ८ बजे इस पाठशालाका मुहूर्त हुआ, जिसमें पहले सरस्वतीपूजन होकर मंगलाचरण किया गया। इसके बाद इस उत्सवके सभापति चौधरी उमरावसिंहजी बनाये गये और वैद्य शीतलप्रसादजीने स्त्रीशिक्षापर एक घंटेतक एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया, जिसका अनुमोदन बाबू उल्फतरायजीने किया, और इसी विषय पर एक लेक्चर दिया। इस जलसेमें अनुमान २०० स्त्रीपुरुष होंगे। ३० कन्या पाठशालामें दाखिल हुईं, जिनको पाठशाला तथा कई सज्जनोंकी ओरसे पुस्तकें आदि दी गईं तथा सम्पूर्ण उपस्थित बालकोंको मिठाई बांटी गई। शहरसे बाबू प्यारेलालजी वकील तथा और भी बहुतसे सज्जन पधारे थे, जिनको हम अनेकानेक धन्यवाद देते हैं। इस पाठशालाका सालाना चिट्ठा ४००) चारसौ रुपयेसे अधिक हो गया है और अतैय्या भी बहुत मनुष्योंने दिया है। हमें आशा है कि इसपाठशाला का काम श्रीजीकी कृपासे अच्छी तरह चलेगा। शुभम्।

आपका—**जग्गीमल**—मैनेजर
जैनोपकारक कन्यापाठशाला,
पहाड़ी धीरज—दिल्ली.

श्रवणबेलगुलका इतिहास।

———o———

(२)

(लेखक—नाथूराम प्रेमी, देवरी निवासी।)

इस नगरका नाम श्रवणबेल्लिगोल क्यों पड़ा? इस विषयमें तत्रस्थ लोगोंका ऐसा मत है कि:—

पूर्वकालमें **चामुंडराय** नामक राजाने **गोमटेश्वर** देवकी स्थापना कराई थी। उसने एक बार उक्त दीर्घकाय और भव्यमूर्तिका पंचा-

घृतस्नानपूर्वक षोड़शोपचारसे सर्वांगपूजन किया था, इस कारण उसके हृदयमें कुछेक अभिमानका अंकुर उत्पन्न हुआ कि, मैं बड़ा पराक्रमी हूं। गोमटेश्वरकी मेरे अतिरिक्त अन्य कोई सम्पूर्ण अर्चा नहीं कर सकता। अस्तु। इसके कुछ दिन पीछे चामुंडरायने गोमटेश्वरकी पूजाका फिरसे प्रारंभ कराया। परन्तु अबकी बार एक ऐसा चमत्कार हुआ कि, मूर्तिके शिरोभागपरसे पंचामृतप्रपूरित सैकड़ों कलश खाली कर दिये गये, तौ भी वह सर्वांगस्नात नहीं हुई! इतना ही नहीं किन्तु उस परमपूज्यमूर्तिके नाभिभागसे नीचे एक बिन्दु भी आकर नहीं पड़ा। नहीं कहा जा सकता कि, इसका क्या कारण था। क्या गोमटेश्वरदेवके अन्तःकरणमें राजाका अभिमान नष्ट करनेकी इच्छा उत्पन्न हुई थी? अस्तु। यह अद्भुत चमत्कार देखकर वह नरपति खेद और आश्चर्ययुक्त भावोंमें तल्लीन होकर अपने अपमानजन्य दुःखसे अधोवदन करके बड़े गहनविचारोंमें बैठा था कि, इतनेमें एक गरीब बुढ़िया (वृद्धा स्त्री) पंचामृत द्रव्योंसे भरे हुए 'बेल्लियागोल' नामक छोटेसे चांदीके पात्रको लिये हुए राजाके पास आई, और उसने गोमटेश्वरकी सर्वांग पंचामृतस्नान करानेकी इच्छा राजाके सम्मुख प्रगट करके आज्ञा मिलनेकी प्रार्थना की। यह बुढ़िया और कोई नहीं कोई स्वर्गस्थ देवता थी, जो राजगर्वका परिहार करनेके लिये वृद्धा स्त्रीका रूप धारण करके आई थी। इस वृद्धा स्त्रीकी मनःकामनाको सुनकर महाराज हँसने लगे। क्यों कि, उन्होंने सोचा कि, जिस देवमूर्तिका सर्वांग पंचामृतस्नान करनेको मुझ सरीखा ऐश्वर्यशाली राजा भी समर्थ नहीं हुआ है, यह बुढ़िया इस छोटेसे रौप्यपात्रस्थ पंचामृतसे इस मूर्तिका सर्वांगस्नान क्या करैगी? अन्तमें "देखें क्या होता है?" ऐसा विचार करके महाराजने उसे अभिषेक करनेकी आज्ञा दे दी। राजाज्ञा होते ही उस बुढ़ियाने अपने पात्रस्थ पंचामृतसे देवाधिदेवका शिखसे नखतक सराबोर स्नान करा दिया! यह देखकर तत्रस्थ राजपरिवारादिके समस्त दर्शकगण चकित स्तम्भित हो रहे। वृद्धाका यह अलौकिक कार्य देखके राजाको अपने अभिमानके विषय अतिशय पश्चात्ताप हुआ। इसलिये उसने गोमटेश्वरके सम्मुख शुद्ध अन्तःकरणसे प्रार्थना करके क्षमा मागी और पुनः पूजनका आरंभ किया। देवने भी राजाको गर्वगलित तथा शरणागत जानके उसकी इच्छा भलीभांति पूर्ण की।

उसी दिनसे उस देवस्थानको बेल्लिगोल कहने लगे, और वहां जैनसन्यासियोंकी वस्ती प्रायः अधिक होनेसे तथा जैनधर्म-गुरुओंकी स्नामन (श्रमण) संज्ञा होनेसे अपभ्रंश रूपमें श्रवणबेल्लिगोल ऐसा उस देवस्थानका नाम पड़ गया।

यह गोमटेश्वरकी मूर्ति किस समयमें निर्मित हुई, इसका निश्चय करनेकेलिये कोई प्रशस्त आधार नहीं है। तथापि डाक्टर 'बुइलसन्' साहबने अपने ग्रन्थमें जो कुछ लिखा है, उससे जाना जाता है कि, बेल्लिगोलकी एक पहाड़ी पर जो शिलालेख है, उसमें चामुंडरायने गोमटेश्वरको कुछ जमीन अर्पण करनेका लेख किया

है। यह लेख ईस्वी सन्‌के पूर्व ५० अथवा ६० वें वर्षका लिखा हुआ होना चाहिये। परन्तु महसूर प्रान्तमें इसी ढंग व आकारकी जो अनेक मूर्तियां हैं; उनसे ऐसा भी अनुमान किया जा सकता है कि, यह मूर्ति साधारणतः नवमी शताब्दिमें निर्माण हुई होगी।

इस देवस्थानके पुरातन इतिहाससे जो **स्थलपुराणमें** लिखा है, महसूर-राज्य सम्बन्धी बहुतसा परिचय मिलता है। यह विषय वाचनीय है, अतएव यहां लिखा जाता है:—

दक्षिणमथुराका राजा **चामुंडराय** जैनी था। वह क्षत्रिय कुलके प्रसिद्ध पांडुवंशमें उत्पन्न हुआ था। एक वार वह अपने परिवार सहित राज्यचिन्होंको धारण किये हुए **पोदनापुरके** गोमठेश्वरकी वन्दनाके लिये चला और उस समय मार्गमें मिलनेवाले अन्य १२५४ देवोंका दर्शन करनेका भी उसने निश्चय किया। तदनुसार जब वह अनेक क्षेत्रोंकी वन्दना करके मार्गातिक्रम कर रहा था, उस समय उसने **श्रवणवेल्लिगोलक्षेत्रके** गोमठेश्वरकी एक चमत्कारिक आख्या सुनी; जिससे कि उत्तेजित होकर वह वहां गया। और बड़े उत्साहके साथ उसने गोमठेश्वर भगवान्‌का साभिषेक बहुमूल्य पूजन किया। पश्चात् अपना नाम चिरकाल तक स्थिर रखनेके लिये उसने मुख्य देव (मन्दिर) का और उसके आसपास जो छोटे बड़े देव (मन्दिर) थे, उनका जीर्णोद्धारकार्य कराया। इसके अतिरिक्त उस पवित्रक्षेत्रमें चामुंडराय महाराजने एक **स्वधर्मीयमठ** स्थापित करके **श्रीमत्सिद्धान्ताचार्यको** उस गुरुस्थानके अध्यक्ष नियत कर दिये और उन्हें प्रात्यहिक मासिक व वार्षिक अर्चनविधिसमारंभादिके कार्य सौंप दिये। एक काम और भी अच्छा किया, वह यह कि वहां पर एक सदावर्त (अन्नक्षत्र) स्थापितकरके उसके द्वारा यात्री सज्जनोंको निरंतर भोजन औषधादि पदार्थ मिलनेकी व्यवस्था कर दी गई। और **इंद्रप्रस्थ** (दिल्ली), **कनकाद्रि, सीतापुर, शुद्धापुर, चम्पापुरी; समिधागिरी, उज्जयन्तिगिरी, जैनागार** आदि स्थानोंसे श्रवणवेल्लिगोलक्षेत्रकी वन्दनाको आनेवाले तीनों जातिके यात्रियोंका आदरपूर्वक अतिथि सत्कार होवे, एतदर्थ अपने जातिके लोगोंको वहांपर उस कार्यपर नियुक्त कर दिया और इन सम्पूर्ण देवकार्योंके निर्वाहके लिये उस उदारशीलराजाने उसी समय १,९६,००० एक लाख छयानवे हजार मुद्रा (उस समय जो सिक्का चलता था) वार्षिक आयवाली एक जागीर उस क्षेत्रके लिये लगा दी। इसके पश्चात् कलियुग संवत् ६०५ विभव संवत्सरके चैत्र महीनेमें चारों दिशाओंमें चार **शालाशासन** नामक संस्थाओंकी स्थापना भी इसी नरपतिने की। चांमुडरायके पीछे जो राजा हुए, उन्होंने देवकार्योंकी उक्त व्यवस्था १०९ वर्षतक और भी चलाई।

इसके पश्चात् चामुंडरायके वंशधर और उत्तराधिकारी अनेक राजाओंने चामुंडरायकी दी हुई जागीरें, व अन्य संस्थायें नियमानुसार जारी रखनेके अतिरिक्त गोमठेश्वरकी और भी अनेक मूर्तियां स्थापित करके इस पवित्र क्षेत्रकी उत्तम

व्यवस्था रक्खी। पीछे शक संवत् ७७७ से चामुंडराय राजाके द्वारा स्थापित किया हुआ, वह राज्य हयसाल देशके स्वामी बल्लालवंशीय एक राजाके आधीन हो गया। इस वंशके राजा भी कुलीन क्षत्रिय जातिके जैनी थे। इस वंशमें एक आदित्य नामका राजा हुआ। वह इस गोमटेश्वरक्षेत्रकी महिमा और मूर्तिकी विशालता-भव्यता श्रवण करके प्रसन्न हुआ और क्षेत्रपर आकर उसने पंचामृताभिषेक करनेका एक महोत्सव भी किया। परन्तु चामुंडरायकी दी हुई जो जागीर थी, उसे घटा करके केवल ९६००० वार्षिक आमदनी वाली जागीर शेष रक्खी। और मठके व्यवस्थापकके स्थानमें श्रीसोमनन्द्याचार्यको नियुक्त कर दिया। (शेष आगे।)

आर्यमित्र और जैन।

(२)

जैनमित्र अंक १९ में उपर्युक्त शीर्षकका एक लेख प्रकाशित हुआ था, जिसके उत्तरमें सहयोगी आर्यमित्रने २४ जूनके अंकमें "आर्यमित्र और जैनमित्र" शीर्षक लेख लिखा है। आज उसहीके सम्बन्धमें कुछ लिखनेका विचार है।

हमने अपने लेखमें सहयोगीसे शान्तिकी सीमा न उलंघन करनेकी प्रार्थना की थी, परन्तु खेदके-साथ लिखना पड़ता है कि, सहयोगीने उक्त लेखमें कोई अनुचित कटाक्ष न करनेपर भी 'पंचप्रपंच' शीर्षक लेखमें जैनधर्मको अपना निशाना बनाया है। परन्तु इस वार भी हम सहयोगीके कटाक्षोंकी उपेक्षा करके सरल रीतिसे ही उत्तर देते हैं, और एक वार पुनः प्रार्थना करते हैं कि, हमारा सहयोगी ऐसी कुटिल नीतिसे जरा परहेज रक्खे। विद्वानोंका कार्य पंचप्रपंच लिखनेका नहीं है। अस्तु। अब प्रकृत विषयकी ओर झुकते हैं।

सहयोगी जैनगजटने पूर्व लेखोंका उत्तर देते समय प्रतिमाको ध्यानकी मूर्ति बताया था, जिसके उत्तरमें सहयोगी आर्यमित्र लिखता है कि "ध्यानकी मूर्ति असंभव है किन्तु ध्यानारूढ़ मनुष्याकारकी मूर्ति हो सकती है।" सहयोगीको समझना चाहिये कि, जैसे, किसी मनुष्यने अपने लड़केसे कहा कि 'भीतरसे घीका घड़ा उठा ला' तो इस वाक्यको सुनते ही उसका लड़का भीतरसे घीसे भरा हुआ मिट्टी व पीतल आदिका घड़ा उठा लाता है। वह उस समय हमारे सहयोगीकी तरह भ्रममें नहीं पड़ जाता है कि, घीका घड़ा असंभव है। वह तत्काल समझ जाता है कि 'घीका घड़ा' इस पदका अर्थ 'घीसे भरा हुआ मिट्टी व पीतल आदिका घड़ा' है। इस ही प्रकार 'ध्यानकी मूर्ति' इस पदका अर्थ भी 'ध्यानारूढ़ मनुष्यकी मूर्ति' होता है। फिर सहयोगी लिखता है कि, "जैनगजटका यह लिखना 'कि सर्व तीर्थंकरोंकी मूर्ति एक सी बनाई जाती है' यह भी ठीक नहीं है" सो भी सहयोगीका भ्रम है। क्योंकि अनेक सदृश पदार्थोंमें किसी एक अपेक्षित धर्मकी ही सदृशता होती है सर्वथा सदृशता नहीं होती। अनेक प्रतिमाओंमें ध्यानस्थताकी अपेक्षासे ही सदृशता समझना चाहिये। फिर सहयोगी लिखता है कि 'आज कल जैनमूर्तियोंके नीचे पत्थरमें जो चिन्ह बनाया जाता है वह भी भ्रमसे खाली नहीं है इत्यादि' सो यह भी सहयोगीका भ्रम है। क्योंकि

प्रतिमाओंकी निर्माणविधि प्रतिष्ठातिलक और शिल्पशास्त्रके अनुसार है । इसमें कपोल-कल्पना नहीं चलती है। तीर्थंकरोंकी समस्त विधियाँ प्रतिमाओंके साथ नहीं मिलती हैं, कोई २ मिलती हैं। अर्थात् जिस प्रकार तीर्थंकरकी पूजादिककी विधि है, उसप्रकार तीर्थंकरोंकी पूजा करना उचित है और जो विधि प्रतिमाओंकी पूजा करनेमें बताई है, उस विधिसे प्रतिमाओंकी पूजा करनी चाहिये । दोनों विधियोंकी खिचड़ी पकाना अनुचित है ।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "शरीरसहित और शरीररहित ये दो भेद ईश्वरके माननेसे ईश्वर रागद्वेषरहित नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें सजातीय और स्वगतभेद अवश्य रहेंगे और अनेक ईश्वर होनेसे उनमें परस्पर प्रीति वा राग अवश्य मानने पड़ेंगे।" सहयोगीको विचारना चाहिये कि, उसके इस लेखमें ईश्वरके रागी और द्वेषीपना तो साध्य है और अनेकता उसमें हेतु है। जिस हेतुका साध्यके साथ व्याप्तिका निश्चय होता है, वही हेतु समीचीन होता है । इसलिये सहयोगीसे प्रार्थना है कि, वह पहले अनेकता और रागद्वेषकी व्याप्तिको सिद्ध करै । संसारमें ऐसे अनेक घट-पटादिक पदार्थ हैं, जिनमें अनेकता होनेपर भी रागद्वेष नहीं दीखता, इसलिये अनेकताहेतु व्यभिचारी है ।

फिर आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "जो पूर्व बन्धनमें था, वह मुक्त होकर ईश्वर क्योंकर कहला सकता है ? क्योंकि मुक्तजीवमें पूर्वबन्धकोटिप्रतीत होती है, परन्तु ईश्वर सदैव मुक्त है।" अब यहां विचारना चाहिये कि, सहयोगीने जैनियोंसे जैनसिद्धान्तानुसार ईश्वरका लक्षण पूछा था। और जैनसिद्धान्तोंमें सकल (सशरीर) और निकल (अशरीर) परमात्माओंको ही ईश्वर माना है, जैसा कि १९वें अंकमें कहा गया था। ये समस्त ही परमात्मा (ईश्वर) सादिमुक्त हैं। परन्तु सहयोगी कहता है कि, "सादिमुक्त ईश्वर नहीं कहला सकता, क्योंकि ईश्वर सदैवमुक्त है।" सहयोगीके इस वचनसे हमारे लक्षणमें कोई दोष नहीं आता। किन्तु उसके कहनेसे यह सिद्ध होता है कि, जो सादिमुक्त जीव जैनियोंने ईश्वर शब्दके वाच्य माने हैं, उनको सहयोगी ईश्वर शब्दके वाच्य नहीं मानता, है किसी सदैवमुक्त व्यक्तिविशेषको ईश्वर शब्दका वाच्य मानता है। परन्तु जिस सदैवमुक्त व्यक्तिविशेषको सहयोगीने ईश्वर शब्दका वाच्य माना है, वह कोई पदार्थ ही नहीं है और न उसकी सत्ताका साधक कोई प्रमाण है। तथा ऐसे परिकल्पित ईश्वरका खंडन 'कर्तृत्ववादखंडन' शीर्षक जुदे लेखमें सविस्तर लिखा जा चुका है । सिवाय इसके ईश्वरके अनादिमुक्तत्वमें बाधकप्रमाणका भी सद्भाव है । तदुक्तम्,–ईश्वरो नानादिमुक्तो मुक्तत्वादन्यमुक्तवत् । अर्थात् ईश्वर अनादिमुक्त नहीं है, क्योंकि मुक्त है । जो २ मुक्त होते हैं, वे अनादिमुक्त नहीं होते हैं, जैसे कि, मुक्त जीव । ईश्वर भी मुक्त है, इसलिये वह अनादिमुक्त नहीं है ।

आगे चलकर फिर सहयोगी लिखता है कि, "यदि आप ईश्वरको सादि-मुक्त मानते हो, तो

उसकी मुक्ति सनिमित्त है, या निर्निमित्त? यदि सनिमित्त है, तो उसका निमित्त क्या है? आपके लेखानुसार रागद्वेषका अभाव ही उसका निमित्त सिद्ध होता है और रागद्वेषादिका अभाव अन्तरात्मा होनेके पश्चात् प्रयत्नशैथिल्यसे होता है। अब प्रश्न होता है कि, आत्मा, अन्तरात्मा वा अर्हन्‌को उत्तरोत्तर वृद्धि वा पदोन्नति देनेवाला कौन है? यदि कर्म वा प्रयत्न अथवा कर्मत्याग स्वयम् फलोत्पादक वा उन्नतिसाधक होते हैं, तो वे जड़ हैं, वा चेतन? यदि जड़ हैं, तो वह फलदानमें समर्थ नहीं हो सकते, यदि चेतन हैं, तो आपने जीवसे भिन्न उनको कोई आत्मा क्यों नहीं माना? इसके अतिरिक्त पुद्गल और धर्माऽधर्म आदिको आप स्वयम् अजीव अर्थात् जड़ मानते हैं। बस, जड़ किसीको फल नहीं दे सकता, इससे सिद्ध होता है कि, जो सब जीवोंको कर्म्मोंका फलप्रदान करता है, वह नित्य शुद्धबुद्ध और मुक्तस्वभाव है। वह न कभी बन्धनमें था, न है, और न होगा।" अब यहां विचारना चाहिये कि, मोक्षका लक्षण क्या है? पूर्वाचार्योंने मोक्षका लक्षण इस प्रकार कहा है;–'**निरवशेषनिराकृतकर्ममलकलङ्कस्याशरीरस्यात्मनोऽचिन्त्यस्वाभाविकज्ञानादिगुणमव्याबाधमात्यन्तिकमवस्थान्तरं मोक्षः**' अर्थात् समस्त कर्ममलकलंक और शरीररहित आत्माकी अचिन्त्य स्वाभाविक ज्ञानादिगुणसहित निर्बाध अविनश्वर अवस्थाविशेषको मोक्ष कहते हैं। भावार्थ-मोक्ष आत्मासे कोई भिन्न पदार्थ नहीं है, किन्तु अनादि सन्तानसे कार्यकारणभावको प्राप्त रागद्वेष और कर्मके सम्बन्धसे मलीमस आत्माकी ही रागद्वेषके अभावसे कर्ममलविवर्जित शुद्ध अवस्था है। यदि कोई भिन्न पदार्थ होता, तो उसकी प्राप्तिके लिये अन्य दाताकी अपेक्षा होती। जैसे किसी पहाड़के झरनेमेंसे गरम पानी निकलता है। यद्यपि उस जलका स्वभाव शीत है, किन्तु अग्निके संयोगसे जलमें उष्णता थी; अतः वही जल आगे वहकर जब अग्निसम्बन्धसे रहित हो गया, तब शीतल हो गया। इस ही प्रकार जब तक आत्मा कर्मसे बद्ध था, तब तक अशुद्ध था। और जब बन्धरहित हो गया, तब शुद्ध हो गया। जैसे उस जलको शीतपद देनेवाले किसी अन्य दाताकी आवश्यकता नहीं है, उस ही प्रकार उस आत्माको अर्हन् तथा सिद्धपदकी प्राप्तिमें किसी अन्य दाताकी अपेक्षा नहीं है। जैसे घटाभाव भूतलका धर्म है, उस ही प्रकार रागद्वेषका अभाव आत्माका धर्म है। आत्मा चेतन है, इस कारण उसका वह वीतरागभाव भी चेतन है, और वही वीतरागभाव मोक्षका निमित्त है। सिवाय इसके यह भी नियम नहीं है कि, जड़ पदार्थ फल न दे सकै। क्योंकि मदिरा, चिरायता, संखिया इत्यादि जड़पदार्थ प्रत्यक्षफल देते दिखते हैं। मदिरापीनेवाले पागल होते दिखते हैं, चिरायतेसे ज्वराक्रान्त रोगी निरोग हो जाते है और संखिया खानेसे प्राणान्त हो जाते हैं। इसप्रकार प्रत्यक्ष-फल-दातृत्व-शक्ति देखते हुए भी न मालूम सहयोगी जड़पदार्थोंको क्यों निष्फल मान रहा है।

आगे चलकर सहयोगी भगवान् व्यासका प्रमाण देते हुए कहता है, कि "ईश्वर साम्या-

तिशयविनिर्मुक्त ही होता है, इसलिये अनन्त ईश्वर नहीं हो सकते।" सो सहयोगीका यह लिखना भी भ्रममूलक है। व्यासजीके वचनको शायद वह प्रमाण मानता होगा, परन्तु हम जैन उनके वाक्यको प्रमाण नहीं मानते। हमको ईश्वरका वही लक्षण मान्य है, जो पहले कहा जा चुका है। यह भी एक आश्चर्यकी बात है कि शास्त्रार्थ किया जाय जैनियोंसे, और लक्षण दूषित किया जाय व्यासजीके वाक्यसे। सिवाय इसके जैसे घटत्वजातिकी अपेक्षासे समस्त घट एक हैं, वैसे ही ईश्वरत्वजातिकी अपेक्षासे समस्त ईश्वर एक हैं, इसलिये उपर्युक्त दूषण नहीं आ सकता।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, अपने माने हुए समस्त ग्रन्थोंके नाम लिखो पीछे विचार आरंभ करो। सो ये लिखना उसका टालमटोल करना है। क्योंकि हमारे सम्प्रदायमें हजारों ग्रंथ हैं। उनके लिखनेसे एक बड़ा भारी निबंध बन जायगा। हमने प्रचलित ग्रंथोंमेंसे ३१ ग्रन्थोंके नाम लिख दिये हैं। इनके सिवाय भी जिस ग्रन्थको सहयोगी दिगम्बर-जैन-ऋषिप्रणीत सिद्ध कर देगा, उसको हम प्रमाण मानेंगे। अथवा इस सम्बन्धमें प्रमाण देनेके वास्ते सहयोगीके पास जितने ग्रंथ हैं, उनका नाम वह लिख देवे, तो हम बता देंगे कि अमुक ग्रन्थ हमको मान्य हैं अमुक अमान्य हैं। अन्यथा टालमटोलके लिये कोई इलाज नहीं है।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "तीर्थंकरोंकी प्रतिमाओंका तीर्थंकरोंके साथ किन गुणोंसे सादृश्य है।" सो सहयोगीको समझना चाहिये कि, जिस प्रकार तीर्थंकरोंका आकार ध्यानारूढ़ अवस्थामें है, उसी प्रकार प्रतिमाओंका आकार ध्यानारूढ़-अवस्थामें है। ये ही दोनोंमें सादृश्य है। तीर्थंकरोंमें हमने प्रयोजनभूत जो मुख्य तीन बातें बताई थीं, उनसे तीर्थंकरोंके अनंत-गुणोंका निषेध न समझना चाहिये।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "हमारे सहयोगीने तीर्थंकरोंके उपदेशको श्रवणेन्द्रियका विषय माना है, सो भी ठीक नहीं है। क्योंकि दिगम्बराम्नायमें तीर्थंकरोंकी वाणीको अनक्षरी माना है, इससे तीर्थंकरोंका उपदेश गणधर ऋद्धिका ही विषय था। गणधरोंके अतिरिक्त और कोई भी कर्णेन्द्रियवाला तीर्थंकरोंके उपदेशको नहीं समझ सकता था। हां। गणधरादि मुनियोंके द्वारा समझ सकता है, अतएव गणधरोंका बोधविषय उपदेशको कहना चाहिये।" सो सहयोगीका यह लिखना भी भ्रममूलक है। क्योंकि तीर्थंकरोंकी वाणी तालुकंठ आदि स्थानोंसे नहीं निकलती है, किन्तु सर्वांगसे निकलती है। इस ही कारण उसको अनक्षरी कही है। यह किसी भी जैनशास्त्रमें नहीं लिखा है कि, गणधरोंके अतिरिक्त और कोई भी कर्णेन्द्रियवाला तीर्थंकरोंके उपदेशको नहीं समझ सकता। उपदेशक जो उपदेश देता है, वह शास्त्रके अनुसार ही देता है और उस शास्त्रमें वे ही उपदेश लिखे हुए हैं, जो तीर्थंकरोंने दिये थे। इसलिये उन शास्त्रोंको भी किसी अपेक्षासे तीर्थंकरोंके सदृश कहना अनुचित नहीं है।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकरोंके शरीरके स-

मान नहीं हैं।" इसके सम्बन्धमें सहयोगीने बहुतसी निस्सार युक्तियां दी हैं। जिनका उल्लेख करना व्यर्थ है। इस विषयमें सहयोगीसे प्रार्थना है कि, तीर्थंकरोंकी प्रतिमा सर्वथा तीर्थंकरोंके समान नहीं है, किन्तु जिस प्रकार तीर्थंकरोंका शरीर ध्यानारूढ़ वीतरागभावका द्योतक था, उस ही प्रकार प्रतिमा भी ध्यानारूढ़ अवस्थायुक्त वीतरागभावद्योतक है। तीर्थंकर और तीर्थंकरोंकी प्रतिमामें यही सदृशता है। समस्त मनुष्योंमें ये सदृशता नहीं पाई जाती है, इसलिये वे पूज्य नहीं हैं। और जो मनुष्य वीतरागभावको प्राप्त होकर ग्रहस्थाश्रमको छोड़ मुनि अवस्थाको प्राप्त होते हैं, वे सब पूज्य हैं।

अंतमें सहयोगीसे प्रार्थना है कि, हमारे पास पाक्षिकपत्रमें इतनी जगह नहीं है कि, अनेक विषयोंका युगपत् शास्त्रार्थ चलाया जा सके, इसलिये कृपाकरके उसे आगेसे एक ही विषयपर लेखनीको परिश्रम देना चाहिये। एक विषयका निर्णय हो जानेपर दूसरे विषयको छेड़ना अच्छा होगा।

बावनगजा पहाड़।

मध्यहिन्दुस्थान–भोपावार एजेन्सीमें बड़वानी एक छोटासा संस्थान है, जिसका मुख्य नगर बड़वानी है। यह नगर सतपुड़ा पहाड़की तराईमें है और नर्मदानदी यहांसे ४ मील दूर है। बड़वानीके विषयमें किसी २ का मत है कि, यह प्राचीन सिद्धनगर है, अर्थात् पहले इसे सिद्धनगर कहते थे। हम समझते हैं, यहांसे जैनशास्त्रानुसार अनेक महात्माओंने सिद्धपद प्राप्त किया था, इसलिये इसका नाम सिद्धनगर पड़ा होगा। इस नगरके आसपास जैनियोंके अनेक खंडहर हैं, जिन्हें देखकर जैनियोंके वैभवका समय स्मरण आता है। पश्चिमकी ओर पांच मीलपर सतपुड़ाके बीचमें पर्वतकी एक बाजूपर कुंभकरण और इन्द्रजीतकी दो बड़ी भारी प्रतिमा हैं। इनमेंसे पहली प्रतिमा पर्वतमें ही कोरी गई है, और दूसरी सफेद पाषाणकी है। कुंभकरणकी मूर्ति अनुमान ९० फीट ऊंची है, परन्तु सामान्यतः लोग उसे ५२ गजकी बतलाते हैं। इसी कारणसे यह स्थान बावनगजा अथवा बावनगजा पहाड़के नामसे प्रख्यात है। दूसरी इन्द्रजीतकी प्रतिमा १२ गज ऊंची समझी जाती है। जैनशास्त्रोंमें इस पर्वतको चूलगिरि लिखा है। जैसा कि, हम लोग निर्वाणकांडमें प्रतिदिन पाठ किया करते हैं;—

> **बड़वाणी बडणयरे दक्खिण भायम्मि चूलगिरिसिहरे।**
> **इंदजीद कुंभयणो णिव्वाणगया णमो तेसिं॥**

ऊपर जो दो मूर्तियां बतलाई गईं हैं, जैसा कि लोग कहते हैं, तदनुसार चाहे वे इन्द्रजीत और कुंभकर्णकी ही हों, परन्तु यथार्थमें इन्द्रजीत और कुंभकर्णका मोक्ष चूलगिरिके शिखरपरसे ही हुआ है, जो कि **"चूलगिरिसिहरे"** से प्रगट होता है। यद्यपि वह पर्वत और उसकी तराई सम्पूर्ण ही पूज्य है, क्योंकि वह सब ही निर्वाणभूमि है, परन्तु जहांपर उक्त प्रतिमायें हैं, वह चूलगिरिका शिरोभाग नहीं है। चूलगिरिका शिखर वही है, जहांपर कि वर्तमानमें हम लोग निर्वाणस्थान मानते हैं। यह स्थान

सतपुडाकी सबसे बड़ी चोटीपर है, जो अनुमान १ मील ऊंची है। वहांपर एक जैनमन्दिर है, जिसके द्वारपर एक पाषाणके सिंहासनपर चरणपादुका स्थापित हैं। कुंभकर्ण और इंद्रजीतका निर्वाणस्थल बहुतकरके यहीं होना चाहिये। कुछ दिन पहले इन चरणपादुकाओंको वहांके कुछ हिन्दुओंने गुरुदत्तात्रयके चरण बतलाकर एक उपद्रव मचाया था और इसी कारण कुछ दिन पहले जैनी और हिन्दुओंमें मुकद्दमेंबाजी हुई थी, परन्तु अन्तमें जैनियोंकी ही विजय हुई थी। इस क्षेत्रपर सदासे दिगम्बर जैनियोंका ही सम्पूर्णरूपसे स्वत्व है। हमारे पाठकोंमेंसे अनेक ऐसे होंगे, जिन्होंने इस पवित्रक्षेत्रके साक्षात् दर्शन किये होंगे। अस्तु। आजकल ऐतिहासिक लेखकोंमें इसी पहाड़के विषयमें बहुत चर्चा है। अतएव हमने यहांपर पाठकोंके लिये इसका संक्षिप्तरूपसे परिचय देना उचित समझा।

ता० ९ मईको एडवोकेट ऑफ इंडियामें "एक मार्मिक खंडहर" शीर्षक लेखमें मि०ओझा नामक किसी लेखकने इस पर्वत का बहुत सा विवरण देकर यह लिखा था कि, "बावना गजकी और बारहगजकी प्रतिमाको यहांके लोग कुंभकरण और मेघनाद (इन्द्रजीत)की बतलाते हैं और कहते हैं कि, रामरावणयुद्धसे विरति पाकर ये दोनों उत्तरकी ओर आये थे और बावनगजा पर्वत परसे मोक्षप्राप्त हुए थे। परन्तु हिंदुओंकी रामयण इससे कुछ निराली ही बात कहती है। उसके अनुसार कुंभकरण और मेघनाद पापनिरत राक्षस थे, जो रामरावणयुद्धमें मारे गये थे। यह बड़े आश्चर्यकी बात है कि, ऐसे घोरपातकी पुरुष बहुत प्राचीनकालसे जैनियोंके द्वारा जो कि वनस्पतिपर भी दयाभाव रखते हैं, पूज्य मानी जाती है। तब क्या रावण जैन था? और क्या राम—रावणयुद्ध ब्राह्मण और जैनियोंके विरोधकी वार्ता थी? तथा ब्राह्मण ग्रन्थकारोंने जिनकी घोररूपसे निंदा की है, वे क्या यथार्थमें तीर्थंकरके धर्मके लिये प्राण अर्पण करनेवाले थे?" मि० ओझाके इस लेखके पीछे इस विषयमें अनेक लेख निकल चुके हैं, और आगे भी यह विषय चलेगा, ऐसा जान पड़ता है।

गत २ जुलाईको बम्बईकी मांगरोलजैनसभामें भी इस विषयपर मि० मनसुखलाल मेहताका एक व्याख्यान हुआ था। उसमें उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया था कि. रावण राक्षस नहीं किन्तु जैनी था। वह वैदिक यज्ञोंमें विघ्न करनेवाला था, इस कारण उसे ब्राह्मणोंने राक्षस कहके निंदा की है। २ जब कुंभकरण और इन्द्रजीत राक्षस थे, तो उनकी मूर्ति वेदानुयायियों द्वारा कभी नहीं बनाई जाती। यदि बनाई भी जाती, तो विकरालरूप और निन्दाके लिये बनाई जाती, परन्तु ये मूर्तियां अतिशय शान्त हैं। ३ सीता मनुष्यरूपिणी थी, और रावण भीमकाय राक्षस, तब एक राक्षसका मनुष्यणीपर आसक्त होना असंभावित है। परन्तु जैनरामायणानुसार वह एक राक्षसवंशी मनुष्य था, यह ठीक हो सकता है। इत्यादि अनेक युक्तियां देकर मि० मेहताने अपने व्याख्यानको पूर्ण किया था।

बावनगजाके विषयकी इस ऊहापोहमें तत्त्व

कितना है, और वर्तमानके इतिहास लेखकोंकी युक्तियां और अनुमान कैसे सुदृढ होते हैं, इसकी परीक्षाका भार पाठकोंकी बुद्धिपर छोड़कर हम इस लेखको पूर्ण करते हैं।

बम्बई ता. १७-७-०६. } नाथूराम प्रेमी—

देहलीमें विधवाविवाह।

पाठक! जिस देहलीमें कुछ दिन पहले एक आर्यसमाजीके विधवाविवाहके उत्सवको भी लोग देखनेके लिये तयार न थे, और विवाहके जुलूसको सरेबाजार निकालनेमें जहांके लोग अतिशय विरोधी हुए थे, उसी देहलीमें, प्राचीनकालके उसी इन्द्रप्रस्थमें, और भगवान् शान्ति कुन्थु अर:नाथके उसी पवित्र पुण्यक्षेत्रमें प्यारे पाठको! आज हम सुन रहे हैं कि, एक प्रतिष्ठित जैनीके खान्दानकी विधवा लड़कीका पुनर्विवाह गत आषाढ़ महीनेमें हो गया। कहिये, कैसी भयानक खबर है? हाय! हाय! जिस पवित्र जैनकुलमें सीता, मनोरमा, अंजनासुन्दरी और द्रौपदी जैसी पातिव्रतधर्मकी सीमा बनलानेवाली स्त्रियोंने किसी समयमें जन्म लिया था, आज उसी कुलमें स्त्रियोंके लिये अतिशय घृणा और लज्जा उत्पन्नकरनेवाले कार्यकी व्यवस्था करनेवाले और पातिव्रत धर्मकी जड़को काटनेवाले नराधम उत्पन्न होने लगे हैं। अफसोस! एक वह समय था, जब पतिपारायणा अंजनासुन्दरीके हनुमान जैसा महाबली पुरुपरत्न हुआ था, जिसके कि पड़नेसे एक पाषाणकी शिला टुकड़े २ हो गई थी, और आज वह समय है, जब जैनकुलकी स्त्रियां ऐसे पामर पुत्र जनने लगी हैं; जिनके पदप्रहारसे यह क्षमावती पृथिवी भी आज डोलनेके लिये प्रस्तुत है।

पाठक! इस विवाहसम्बन्धमें जिसे कि व्यभिचार फैलानेकी जड़ कहना चाहिये, हमको जो समाचार मिले हैं, उनका सारांश यह है कि, लाला पारसदासजी देहलीके कोई नामी रहीस हैं। आपकी लाला ईश्वरीप्रसादजी खजांचीसे कुछ रिश्तेदारी है। सुनते है, आपकी लड़की जिसकी उम्र २९ सालके करीब है, एक अर्सेसे विधवा है। गत आषाढ़ महीनेमें सिकन्दराबादके किसी पुरुषके साथ जिसकी उम्र ४० वर्षके अनुमान होगी, उसका पुनर्विवाह कर दिया गया। बारात वगैरह भी आई थी, परन्तु वह बहुत समय तक वहां नहीं ठहरी थी। यह विवाह वहांके कई नामी २ लोगोंकी राय और प्रेरणासे हुआ था। विवाहके पश्चात् बिरादरीमें इस बातका शोरगुल हुआ और आखिर धर्मपुराके मंदिरमें इसके निर्णयके लिये एक पंचायत हुई। उस समय लखनौके लाला अजितप्रसादजी, एम. ए., एल. एल. बी., (जो कि कुछ दिन पहले जैनियोंके महाविद्यालयको मध्यमकालेज बनानेकी राय दे चुके हैं, और जो अम्बालेमें यंगमेन्सएसोसियेशनके सभापति हुए थे, तथा जो हमारे समाजके एक नेता हैं) भी उपस्थित थे। इनके धर्म तथा विचारोंके अनुयायी और भी १०-१५ महाशय थे, जिनमें लाला जिनेश्वरदासजी माइल मुख्य थे। ये सब महाशय विधवाविवाहके पूर्णपक्षपाती थे। इसलिये इन्होंने चाहा कि, इसकी पंचायत ही न होवे,

परन्तु जब कुछ दाल नहीं गली, तब लाला अजितप्रसादजीने खड़े होकर बड़े जोशके साथ विधवाविवाहका अनुमोदन किया, जिसे सुनते ही पंचायतमें कोलाहल मच गया। फल यह हुआ कि, पंचायतने चार महाशयोंको जाति और मंदिरसे खारिज कर दिया। पीछेसे पंचोंने सिकन्दराबादके पंचोंको चिट्ठी लिखी। जिससे कि, वहांकी पंचायतने भी वरपक्षके लोगोंको खारिज कर दिया।

यही इस विवाहकी साररूप कथा है। हमने इस विषयमें सविस्तर समाचार मंगाये हैं, जो आगामी प्रकाशित किये जावेंगे। अभी अपने पाठकोंसे कहना केवल इतना ही है कि, 'अब आपको अपने समाजकी रक्षा करनेमें अच्छीतरहसे सन्नद्ध हो जाना चाहिये। यदि आप असावधानी करेंगे, तो ये नवीन आंखोंवाले कुलनाशक कीड़े जो कि अभी आपको छोटे २ दिखाई देते हैं, आपके समाजकी जड़में लगकर उसे शीघ्र ही नष्ट भ्रष्ट कर देंगे। परन्तु यदि आप अपनी शक्तिको काममें लावेंगे, तो ये आपका कुछ भी नहीं विगाड़ सकेंगे। देहलीकी पंचायतको भी अब अच्छी तरह दृढ़प्रतिज्ञ होकर काम करना चाहिये।

वाचकगण! जिनको हम अंग्रेजी पढ़े हुए महाशयोंमें बुद्धिमान और धर्मज्ञ समझते थे, उन बाबू अजितप्रसादजीके इस कृत्यको सुनकर यदि वह सत्य हो, तो आज हमको यह सन्देह हुआ है कि, महासभासे पृथक् जो जैनयंगमेन्सएसोसियेशनकी स्थापना हुई है, सो क्या ऐसे २ गूढ़ अभिप्रायोंके लिये ही हुई है? एसोसियेशनकी ओरसे क्या हमारे इस सन्देहको दूर करनेके लिये कोई प्रयत्न होगा?

विविध समाचार।

शेठ हीराचन्द गुमानजी धर्मशालाके सुप्रिंटेंडेंट महाशयने हमारे पास एक रिपोर्ट भेजी है, जिससे मालूम हुआ कि, गत अप्रैल, मई और जून इन तीन महीनोंमें उक्त धर्मशालाका १५०० आदमियोंने आश्रय लिया। जिसमें १६१ दिगम्बर-जैनी, ६९ श्वेताम्बरी, और शेष १२७१ हिन्दू थे। हिन्दुओंमें १६७ ऐसे लोग थे, जो व्यापारादिके लिये आफ्रिका आदि दूरदेशोंको गये थे, तथा वहांसे वापिस आये थे।

उक्त धर्मशालामें एक औषधालय भी धर्मार्थ खोला गया है, जिसमें गत चार महीनेमें २०४० रोगियोंने औषधादि लेकर स्वास्थ्यरक्षा की है। रोगियोंमें १३३ जैन और शेष अन्य धर्मावलम्बी थे।

ता० २ जुलाईको हीराबागके व्याख्यान मंदिर Lecture Hall में इन्दौरके प्रसिद्ध श्रेष्ठिवर्य्य हुकमचन्दजीने धर्मोन्नतिपर एक सुन्दर व्याख्यान दिया था। उस दिनकी सभामें सभापतिका स्थान शोलापुरके शेठ हीराचन्द नेमीचन्दजीने शोभित किया था। हमको यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि, जैनियोंमें दो चार पुरुष ऐसे भी हैं, जो धनवान होकरके भी विद्वान् हैं। जैनियोंके लिये यह बड़े अभिमानका विषय है।

दिगम्बरजैनमहाविद्यालय सहारणपुरके लिये

एक उच्चश्रेणीके जैनधर्मशास्त्र, व्याकरण और न्यायशास्त्रोंके पढानेवाले अध्यापककी आवश्यकता है । वेतन फिलहाल पचास रुपये मासिक दिया जावेगा । पत्रव्यवहार बाबू चन्दूलालजी वकील-सहारणपुरके नामसे करना चाहिये ।

आगामी अगस्त महीनेसे वड़ौदाराज्यमें नवीन शिक्षापद्धति जारी होगी । इसके अनुसार वहांकी प्रजाको अपने प्रत्येक बालकको पाठशालामें पढानेको बाध्य होना होगा। राज्यकी ओरसे इस कार्यमें प्रतिवर्ष सवा तीन लाख रुपये अधिक खर्च किये जावेंगे ।

जापाननरेश मिकाडो चाहते हैं कि, जापानमें कोई ऐसा धर्म राष्ट्रधर्म बनाया जावे, जिससे राज्यकी पूर्ण उन्नति हो । सुनते हैं, इसके लिये जापानमें भिन्न २ धर्मके उपदेशक जाकर महाराजको अपने२ धर्मकी खूबियां बतलावेंगे । महाराजका ध्यान मुसलमानधर्मकी ओर झुका हुआ कहा जाता है ।

श्वेताम्बरजैनकान्फरेंसकी ओरसे श्वेताम्बर जैनग्रंथोंकी एक बड़ी भारी सूची तयार हो रही है। कई स्थानोंके भंडारोंकी सूची बन भी चुकी है। खेद है कि, दिगम्बरियोंकी ओरसे जिनवाणीकी सेवाका एक भी प्रयत्न नहीं हो रहा है ।

कालकी आत्मकहानी ।

(मराठी बालबोधके दो लेखोंकी छाया)

अलख अगोचर मेरा रूप ।
मैं हूं एक ब्रह्म अनुरूप ॥
कहते हो गर उसे अनादि ।
तो मेरा भी है नहिं आदि ॥ १

जो कुछ हुआ नजरसे ओट ।
उसपर की मैंने ही चोट ॥
दिखता है यह जो कुछ आज ।
मैं ही इसका करूं अकाज ॥ २

आगे जो कुछ होगा भाई ।
उसकी भी मैं करूं सफाई ॥
सब पर मेरा सम अधिकार ।
झुकके नमन करै संसार ॥ ३

नहिं ऐसा है ठौर विशेष ।
मैं नहिं रहता जहां हमेश ॥
लगै न मुझको एक निमेष ।
सकल सृष्टिमें करूं प्रवेश ॥ ४

वस्तु मात्रमें मेरा ओक ।
तो भी नैन न सकें विलोक ॥
केवल सुन सकते हैं कान ।
मेरे अनुपम नाम विधान ॥ ५

छन, पल, घटिका, वासर, मास ।
वत्सर, युग मम नाम उजास ॥
यह सब दिये तुम्हारे नाम ।
मैं समवर्ती हूं गुमनाम ॥ ६

मेरे आदि अन्तका मान ।
कोई नहिं सकता है जान ॥
मेरा आतुर गमन अबाध्य ।
उसका रोधन महा असाध्य ॥ ७

मुझसे नहीं किसीको रोक ।
मुझे भी कोई सके न टोक ॥

मुझमें समा रहा संसार।
ऐसा है मेरा विस्तार॥ ८

और सूक्ष्म भी ऐसा वेष।
जहां कहीं मैं करूं प्रवेश॥
मेरा अद्भुत अगम शरीर।
समझो उसको 'टेढ़ी खीर'॥ ९

होय किसीका प्रादुर्भाव।
अथवा हो अत्यन्त अभाव॥
रोना-हंसना समझूं पोच।
दोनोंका कुछ मुझे न सोच॥ १०

ऊजड़ हो अथवा आबाद।
होय किसीको हर्षविषाद॥
भले-बुरे सब एक समान।
'बाइस[1] पसेरी सिगरी धान,॥ ११

सगझबूझके योगायोग।
जो करते मेरा उपयोग॥
वह मेरे सच्चे हैं भक्त।
मैं भी उनपर हूं अनुरक्त॥ १२

जिनने मुझे लिया पहिचान।
वे सुकर्ममें रखते ध्यान॥
चाहे मुझे जायँ वे भूल।
पर मैं सदा रहूं अनुकूल॥ १३

जो मुझसे चलते प्रतिकूल।
वही फांकते निश्चय धूल॥
ज्ञानीको वृन्दारकवृक्ष।
अज्ञानी पर है नहिं लक्ष॥ १४

जो मेरा नहिं करते मान।
व्यर्थ जान करते अवसान॥
उन्हें न भूलूं मैं त्रयकाल।
जब तक नहिं कर दूं पामाल॥ १५

इसके लिये पढ़ो इतिहास।
उसमें मेरा पूरा भास॥
बड़े बड़े बलविक्रमवान।
हुए, रहे नहिं नामनिशान॥ १६

नाम उन्हींके हैं अवशेष।
जिनने समझा मुझे विशेष॥
जिसने मुझपर आंख चढ़ाई।
उसकी मैंने धूल उड़ाई॥ १७

हीरा पन्ना मोती लाल।
इनसे मेरा मोल विशाल॥
कदर करें वह जो धीमान।
शाकवणिक क्या समझें मान? १८

हों गरीब चाहे श्रीमन्त।
मूरख, पण्डित, सन्त, असन्त॥
इनका मुझको नहीं विचार।
सबके साथ एक आचार॥ १९

जो मुझसे रहते प्रतिकूल।
क्यों जग हो उनके अनुकूल॥
होते ही उनके अनुकूल।
बज्र होय जूहीका फूल॥ २०

(शेष आगे)

सय्यद अमीरअली-देवरी

१ 'बाइस' शब्दका उच्चारण 'बइस' जैसा होता है.

मुन्शी चम्पतरायजीकी करतूत

येवड़ा ऐब है तुझमें कि तू हर जाई है
न मिलूं फिर न मिलूं अब तो यह ठहराई है

ऐ मैम्बरान महासभा व दीगर साहवान-कौम अब वह वक्त आगया है कि, आप साहवानके रूबरू सब कलई खोलूं और मुन्शी चम्पतरायकी करतूत जाहिर करूं, दर असल ऐसा करते हुये मुझको बहुत तरदुद पेश आता है क्योंकि बाज मेरे दोस्तोंका ख्याल है कि, इस किस्मके लेखोंसे महासभाको नुक्सान पहुंचनेका अन्देशा है लेकिन बाद बहुत गौरके मैंने राय कायम की है कि, जो सफाई मैं इस या आइन्दाके लेखोंके जरियेसे करुंगा उससे महासभाकी नींव और ज्यादा मजबूत होगी, जो गलत फैमी इस वक्त पैदा हो रही है उसका दूर करना बहुतही जरूरी माळूम होता है और कौमके साम्हने असली वाकया जाहिर करना मुझको मेरा फर्ज नजर आता है. ए साहवान ! इस वक्त मुझको बहुत गलत फैमी फैली हुई नजर आती है और जो कालेज कायम करनेके लिये हमारे भाइयोंमें जोश पैदा हुआ था उसका खून होता जाता नजर आता है इस लिये मेरा पूरा फर्ज है कि, कुल मामला साफ करके गलत फैमीको दूर करूं, ताकि कालेज कायम करनेके लिये हमारा जोश कायम रहे बल्कि जोश दूना २ बढै और जो चाल मुन्शी चम्पतरायने चली थी उसकी हमारे भाई हिकारत करें और जैन-कालेज कायम करनेके वास्ते कमर बस्ता रहैं मेरे ख्यालमें मुझको यह मुनासिब माळूम होता है कि, शुरूसे इस मुआमिलेको पकडूं यह सब साहवानको माळूम है कि, बहुत रोजसे जैन कालेजके वास्ते पुकार हो रही है, यानी ऐसा जैन कालेज कि, जिसमें ऐसे बीए. एमे तय्यार हों कि, जो अपने धर्मसे वाकिफ हों और ऐसे पण्डित पैदा हो कि, जो अपने जैन धर्मकी तरक्की करैं इस जैन कालेजके लिये अरसेसे चन्दा सालाना जल्से महासभामें मांगा जाता रहा पारसाल अम्बालेमें जैन कालेजके वास्ते अपील हुई और डेपुटेशन पार्टीभी जैन कालेजके वास्ते रुपया इकठा करके लाई इस साल सालाना जल्से महासभामें २८ माह दिशम्बरको जैन कालेजके लिये अपील हुई और कुछ थोडासा रुपया इकठा हुआ कि, जिससे हम लोगोंकी बहुत दिल शिकनी हुई और खासकर दिल शिकनीकी वजह यह हुई कि, सेठ माणिकचन्द पानाचन्द मुझको और बाबू अर्जुनलाल सेठी और बाबू शीतलप्रसादको बार २ बुलाकर जैन कालेजका जिकर करते थे और मेरे सामने सेठ हीराचन्द नेमीचन्द शोलापुर वालोंसेभी तस्करा करते थे सेठ माणिकचन्दका दिल बढा हुआ माळूम होता था और इससे हम लोगोंको पूरा यकीन था कि, सेठ माणिकचन्द एक माकूल रकम जैन कालेजके वास्ते देंगे या कमसे कम हाईस्कू-

लकी नींव तो जरूर रखेंगे लेकिन जिस वक्त २८ तारीखको जैन कालेजकी अपील हुई तो सेठ माणिकचन्दने सिर्फ एक हजार रुपया दिया और वहभी इस शर्तपर कि, वह कलील रकम सिर्फ संस्कृत तालीममें खर्च की जावै इससे सबकी दिल शिकनी हुई.

खैर कामतो जो होना होता है वही होता है और कोई काम किसीके हाथमें नहीं है अगरचे सेठ माणिकचन्दजीने इससे हम लोगोंको नाउम्मेद किया लेकिन हमारे मदतगार बाबू खूबचन्दजी मेरठवाले आ मौजूद हुये २९ दिशम्बरको मेरे लायक दोस्त बाबू बाबूलाल लाला पन्नालाल नुकड़वालोंकी मौअस्सिर तकरीरोंका ऐसा असर हुआ कि, हरएक मौजूदा भाईकी रग २ में जोशकी बिजली भर गई और रुपया वर्षना शुरू हुआ जिस बाबत बाबू खूबचन्द साहब ठेकेदार दश हजारकी बोली बोलनेको आगे आये तो सेठ माणिकचन्दजीने इजाजत देना पसन्द न किया लेकिन सेठ साहबकी मर्जीके खिलाफ बाबू खूबचन्दसे दश हजारकी बोली बुलवाई गई. इसपर सेठ माणिकचन्दने बाबू अर्जुनलाल सेठी जैपुर निवासीके मुखसे यह कहलवाया कि, अगर महाविद्यालय जयपुर जावैगा तो हम पन्द्रह हजार रुपया देंगे लेकिन बाबू अर्जुनलालने यह अलान कियाही था कि, उनको फौरन रोका गया इससे पहिले रोज जब कि, मैंने सेठ माणिकचन्दजीसे कहा कि, आपने एक हजार रुपया कम दिया तो उन्होंने फर्माया कि, हम तो बनिया हैं हमारे पास रुपया कहा है आपके सहारनपुरका लोग बड़ा रहीस है उनसे रुपया लो ये सेठ साहबकी जवान मुबारिक हुई और २९ दिशम्बरको यह करार पाया कि, हाईस्कूल सहारनपुरमें खोला जावे और यहभी करार पाया कि, महाविद्यालयभी सहारनपुरमें तबदील कर दिया जावै इसपर साहवान मथुरामेंसे बाबू घासीरामने इतराज किया लेकिन बाबूलाल व बाबू सूरजभानुने जबाब देकर सबका इत्मीनान कर दिया बतहरिक सेठ सखोखचन्द रहीस नजीबाबाद व ताईद जुमला साहवान हाजरीने जलसा पास हुआ कि, महाविद्यालय सहारनपुर तबदील कर दिया जावै ३० दिशम्बरको ८ बजे सुबहके वक्त मंडप महासभामें जलसा होना करार पाया ताकि बिरादरी सहारनपुरकी एक कमेटी बनाई जावे जोकि महाविद्यालय और इस्कूलका इन्तजाम सहारनपुरमें करै और वह कमेटी मातहत मेनेजिङ्ग कमेटी महासभाके रहै लेकिन उत्सवकी तय्यारी हो रही थी जलसा न होसका और सेठ माणिकचन्द वगैरहने कहा कि, सहारनपुरवाले अपनी कमेटी कायम कर लें.

चुंनाचे १ जनवरीको सहारनपुरमें कमेटी कायम की गई जिसके ३० मैम्बर चुने गये और बाबू बनारसीदास और बाबू चन्दूलाल सेक्रेटरी व ज्वाइन्ट सेक्रेटरी और बाबू अर्जुनलाल सेठी सुपरिन्डैन्ट महाविद्यालय मुकर्रिर किये गये इस कमेटीमें कोई खास बात करार नहीं पाई सिवाय इसके कि, जैन पाठ-

शाला सहारनपुर महावि० की शाख हो और विरादरी सहारनपुरने इजाजत दी कि, जैन बागमें उसकी कीमती इमारतके जैन कालेजके तसर्रुफमें लाया जावै.

दूसरा कमेटीका जल्सा ७ जनवरीको हुआ उसमें करार पाया कि, माह वैशाखमें जैन कालेजकी बुनियाद जैन बागमें रक्खी जावै और जिस वक्त तक इमारत तय्यार हो उस वक्त तक शहरमें मकान इस्कूलके लिये किरायेपर लेलिया जावै यहभी तजवीज हुआ कि, जैन कालेजमें सिर्फ वह तुलवा तालीम पावैं जो मांस * और शाखसे पहेरेज करते हों इस जल्सेमें वह प्रस्तावभी पास हुआ कि, जिसपर वहुत बड़ी गलत फैमी पैदा हुई कि, अंगरेजीके उस्तादोंकी ४८०) रु० तनख्वाह होगी और संस्कृतके पण्डितोंकी ७५) रु० और मुतफर्रिक खर्चके लिये ९५) रु० होंगे और यहभी करार पाया कि, वसन्तपंचमीके रोज महाविद्यालय मथुरासे लाकर सहारनपुरमें स्थापित किया जावै इसके बाद २१ जनवरी और २४ जनवरीको कमेटीके जल्से हुये लेकिन उनका जिकर करना जरूरी मालूम नहीं होता है.

२८ तारीख जनवरीको महाविद्यालय सहारनपुर लाया गया और धूमधामसे बाजे गाजेके साथ लाकर २९ जनवरीको जैन पाठशालामें महाविद्यालयका मुहूरत किया गया अब सवाल यह पैदा होता है कि, महाविद्यालय ऐसी जल्दी सहारनपुरमें लाना मुनासिब था या नहीं कौन शख्स ऐसी जल्दी कर महाविद्यालयको सहारनपुर लाये और महाविद्यालयको ऐसी जल्दी सहारनपुर लानेसे कोई नुक्सान हुआ या फायदा. मेरा जाती ख्याल यह है कि, महाविद्यालय ऐसी जल्दी सहारनपुर लाना बहुतही जरूरी था और उसको ऐसी जल्दी सहारनपुर लानेसे बहुत फायदा हुआ और जिस गरजसे ऐसी जल्दी लाया गया था वह गरज पूरी हुई. मैंने और चन्द माहवान सहारनपुरने महावि० सहारनपुर जल्द लानेके वास्ते इस वजहसे रायदी कि, अगर सहारनपुर महाविद्यालय जल्दी न आता तो कोई उम्मेद चन्दा इकट्ठा होने या वैशाखमें इस्कूल कायम होनेकी हरगिज न होसकती थी यह करीब २ सब शख्सोंकी राय थी कि, महाविद्यालय सहारनपुर लानेपरही जोश कायम रहैगा अगर जरा देर हुई तो कुछ न हो सकैगा वात पुरानी पड़ जायगी. वाबू चन्दूलाल लाला बद्रीदास वाबू गोवरधनदास वगैरहकीभी यही राय थी.

पहिले जल्सेमें जो कि, १ जनवरीको हुआ था यह राय करार पाई थी कि, जिस वक्त जैन कालेजकी जैन बागमें नीव रक्खी जावै उस वक्त महावि० सहारनपुर लाना

---

* (नोट) यह तजवीद २४ जनवरी १९०६ को व वजह इतराज बाबू खूबचन्द साहब पैटरन इस्कूलके रद्द कर दीगई और करार पाया यह सवाल महासभाके रुवरु पेश किया जावै महासभासे तय किया जावै कि, कौन २ तुलवा जैन कालेजमें तालीम पावेंगे.

चाहिये लेकिन दूसरे जल्सेमें जो ७ जनवरी को हुआ उसमें बाबू प्रभुलालने एक मजबून महाविद्यालयके जल्द सहारनपुर लानेके बारेमें पढा और सब मैम्बरान कमेटी मौजूदाकी राय पुख्ता होगई कि, वसन्त पंचमीको महाविद्यालय सहारनपुरमें कायम किया जावै और उसके दूसरे रोज लाला मित्रसेन और लाला उग्रसेनके यहां डिपुटेशन ले जाया जावै लेकिन अव्वल यह देखना चाहिये कि, ऐसी जल्दी करनेके सिर्फ हमही जिम्मेदार है याकि औरभी हैं दो शख्स और हैं एक बाबू अर्जुनलाल सेटी दूसरे मुन्शी चम्पतराय

बाबू अर्जुनलाल सेठी ७ जनवरीके बाद यहां सहारनपुर आये और उनके आनेकी वजह यह हुई कि, उनसे और मुन्शी मूलचन्दसे बहुत तकरार शुरू हो रही थी और वह तकरार अब हदसे ज्यादा बढ़ गयी थी और बाबू अर्जुनलाल और पण्डितोंसेभी बहुत तकरार हो गयी थी. पस बाबू अर्जुनलाल मथुरासे मेरे पास आये और मुझसे कहा कि, मैं अब मथुरामें नहीं रह सकताहूं पण्डित लोग मुन्शी मूलचन्द और किरोड़ीमल मेरी बेइज्जती करना चाहते हैं जिस कदर जल्दी होसकै महाविद्यालय सहारनपुर लाना चाहिये वरना मैं जयपुर चला जाऊंगा अगर ये हम लोगोंने पहिलेसे पास किया था कि, महाविद्यालय वसन्तपंचमी तक लाया जावै लेकिन मैं यकीन दिला सकताहूं कि, मेरी राय डिगमिगा रही थी कि, ऐसा न हो महाविद्यालय मथुरासे आ जावै और सहारनपुरमें कुछ काम न हो और फिर बड़ी हतक हो लेकिन सेठीजीके जोर दैनेसे और यह यकीन दिलानेसे कि, दुनिया उम्मेदपर कायम है. मेरा शक जाता रहा और मेरी राय मुस्तहकम होगई कि, जरूर महाविद्यालय लाना चाहिये वरना अगर सेठीजी जयपुर चले गये तो औरभी नुक्सान होगा.

अब मुझसे और मुन्शी चम्पतरायसे खतो किताबत शुरू हुई और वहभी मेरे और अर्जुनलाल सेठीके मशविरेमें शामिल हुये चुनाचें जो कुछ कार्रवाई महाविद्यालयके मथुरासे सहारनपुर लानेमें की गई वह सब मुन्शी चम्पतरायके मशविरेसे की गई और जिस तरह वह हिदायत करते रहे मैं तामील करता रहा इसका सबूत सबसे उमदा यह है कि, खुद मुन्शी चम्पतरायके हाथके खतूत की नकले पेश करूं.

मुन्शी चम्पतरायके खतूत जैलमें दर्ज हैं.

(१)	खत	मवर्रिखा	१२	जनवरी	१९०६
(२)	,,	,,	१७	,,	,,
(३)	,,	,,	१८	,,	,,
(४)	,,	,,	२२	,,	,,
(५)	,,	,,	२६	,,	,,
(६)	,,	,,	२७	,,	,,
(७)	,,	,,	११	फरवरी	,,

(नकल १२ जनवरी १९०६ के खतकी)

डियर बाबू साहब जयजिनेन्द्र

चूंकि सेठीजी जयपुरसे मथुरा आगये बई वजह मैंने उनको लिखा है कि, सहारनपुर जावें और महाविद्यालयके बारेमें जो आपने लिखा है और मैंने जवाब दिया है उसके बारेमें आपसे बातचीत करैं, उनकी राय है कि विद्यालय फौरन तबदील किया जावै. मुन्शी मूलचन्दसे और सेठीजीसे अब मुखालफत बहुत होगई है ।

चूंकि सेठजीभी नाराज बेतरह हैं पस आप सेठजीसे खत कितावत करैं और सब नशेब व फराज उनको समझावै. दर असल ये पौधा उन्हींके घरानेका लगाया हुआ है, अगर राजा लक्ष्मणदासजी इस कदर सरपरस्ती न करते तो न यह सभाही कायम रह सकती थी और न यह महाविद्यालय. आपकी तहरीरसे वह खुश व मुत्मय्यन हो जावैंगे । मैं यह चाहता हूं कि, सेठीजीके आनेपर एक कमेटी साहवान बिरादरीकी की जावे और उसमें सब लोग शरीकहों, वहां महाविद्यालयके तबादलेका सवाल उठाया जावै और जो रिजोल्यूशन पंचायतसे पास हो उसमें आप सब नशेब व फराज समझा देवें कि, साहवान बिरादरीको हर तरहकी सरपरस्ती करनी होगी । हमारा ठिकाना जो मथुरामें है कि, जब कोई नहीं बुलावैगा तो मथुरामें सभा करेंगे वोभी महाविद्यालयके तबादलेसे जाता रहैगा । जब रिजोल्यूशन बिरादरीसे मंजूर हो जावे तो प्रेसीडेन्ट जल्सेके दस्तखतसे एक नकल सेठजीको और एक मुझको भेजी जावे, ऐसा होनेपर बिरादरीपर जोर रहेगा और उनको पास होगा। ये सब कार्रवाई नेमीदास, जम्बूपरशाद या लाला बद्रीदासके हाथसे होवै. आप अपनी चिट्ठी रवाना न करैं ।

अगर वसन्तपंचमीतक मुमकिन न हो तो आइन्दा कोई तारीख मुकर्रर कर ली जावे, काम पुख्तगीसे होना चाहिये

चम्पतराय १२-१-०६

(नकल १७ जनवरी सन १९०६ के खतकी)

डियर बाबू साहब जयजिनेन्द्र

आज मुझे आपके दो खत और कापी * रिजोल्यूशन मिली आपको इस कार्रवाहीकी एक नकल मुझको, एक सेठजीको और एक मूलचन्दको रवाना करनी थी, अगर ये कार्रवाई मेरेपास आजाती तो मुझको जिस कदर तरद्दुद पेश हुआ हरगिज पेश नहीं आता। गोकि मुन्शी मूलचन्द मय पण्डितोंके मुखालफत कर रहे हैं, मुझको कई एक चिट्ठियां कानूनी रवाना करी हैं मगरमैं जोरके साथ कार्रवाई करुंगा और देखूंगा कि, कौन रोकता है.

---

* (नोट) कापी रिजोल्यूशन वही है कि, जिसमें बजटका जिक्र है ।

सेठीजीके काबूके लड़के हैं बड़े पण्डित चुन्नीलालजीके नौकर कराये हुये हैं, मैंने चुन्नीलालजीको कलही लिख दिया है कि, बड़े पण्डितजीको लिख देवैं कि, वो जानेमें उज्र न करै, मैंनेभी उनको चिट्ठी लिख दी है कि, वो तय्यार रहैं और मेरी दूसरी चिट्ठी पर फौरन रवाना हो जावें।

किरोड़ीमल और मूलचन्दजीकोभी लिख दिया है कि अब विद्यालय नहीं रुक सकता है सब तय्यार रहैं।

अर्जुनलाल बड़े कामका आदमी है, किरोड़ीमल खुद अलग होना चाहता है, सेठीजी एक आदमी जयपुरका रख लेवें जो अंगरेजी और नागरीका कार आजमूदा होवे. बाबूलाल मेरे ख्यालमें उनका दोस्त है और अच्छा आदमी है २०) रु० तनख्वाह फिलहाल दी जावैगी. सोडावाटरका उबाल मैंने सहारनपुर वालोंको नहीं कहा बल्कि आपको कहा कि, जब कामकी धुन लगती है तो मिस्ल सोडावाटरके करते हैं नहीं तो कुंभकर्णकी नींद सोते हैं, यह अलफाज गैरके वास्ते नहीं बल्कि एक अपने अजीजके वास्ते थे, मगर मेरी उस फिकरेसे तसल्ली हुई है जो आपने लिखा है कि, मेरी वकालतको फरोग होगा कमी न होगी।

डिपुटेशनमें तुलबाभी मय सेठीजीके जावें और लाला उग्रसेनजीके यहां दिखलाया जावे कि, यह फल हम लाये हैं जिसका दरख्त लाला साहबने अपने हाथोंसे लगाया था, कुछ श्लोक वगैरह संस्कृतके या भाषाके बनाये जावें जो भीख मांगनेके मजमूनके हों क्या बेहतर हो कि, जो लाला मित्रसेनके यहांसे मंजूरी इमारत कालेजके बनानेकी हो जावे और लाला मित्रसेन जैनकालेजबिल्डिङ्ग नाम रक्खा जावै।

मुझे जैनबागमें कालेजकी इमारत तामीर होनेमें कोई उज्र नहीं है बल्कि वह जगह बोर्डिङ्गके वास्ते बहुतही मुनासिब है।

चूंकि महाविद्यालयके आनेपर मथुरामें महासभाका दफ्तरभी नहीं रह सकता है बईवजह आइस्ता २ उसकोभी हटाया जावेगा. पण्डितोंके वास्ते उनके रहनेको मकान उनके किरायेसे तलाश कराये जावें. महाविद्यालयके तुलबा धूमधामसे रेलपरसे बाजेके साथ शहरमें लाये जावैं।

सेठीजी माऌम नहीं कहां हैं, उनके नामकी चिट्ठी मैं मथुरा रवाने करताहूं कि, विद्यालय २६ तक वहां पहुंच जावैं

चम्पतराय १७-१-०६

(नकल १८ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

बखिदमत बाबू बनारसीदास व बाबू चन्दूलालजी !

आपकी कमेटीकी * कार्रवाहीकी नकल मैंने खुद मथुराको सेठजीके मुलाहजेको रवाना कर दी है, और सख्त चिट्ठियां पण्डितों,

* (नोट) यह कमेटीकी कार्रवाही वो है जिसमें बजट है

किरोडीमल, मूलचन्द, नीज तुलबा और सेठीजीको भेजी है कि, २७ से कब्ल सब लोग सहारनपुर पहुंच जावें मैं यकीन करता हूं कि, तामील होगी और सेठीजीने हिकमतसे काम लिया तो गड़बड़भी नहीं होगी. अब मुन्शी मूलचन्दने चन्द इतराज किये हैं उनकी रफेदादके वास्ते मैंने आपके रेज्यूलेशनमें एक दफा बतौर जमीमे नम्बर ८ बढ़ाई है आप उसको देख लेवें और उसी तरहपर जैन गजटमें शाये करावें उसमें कोई इतराजका मुकाम नहीं है और चन्दा देनेवालोंको कोई उज्र नहीं रहेगा जिसका दिल जिस मदमें चाहे देवे । मेरे दिलपर उस फिकरेने बहुत असर किया है जो बाबू बनारसीदासने लिखा है कि, बाबू चन्दूलालके वालिदकी राय है कि, बसन्त पंचमीसे पहिले विद्यालय मथुरासे आजावें, पस उन्हींकी सरपरस्ती मुझे काफी है और भगवानने चाहा तो सहारनपुरमें जरूर तरक्की होगी।

बजटमें खर्च महाविद्यालयका ज्यादा होना चाहिये क्योंकि संस्कृतके तुलबाकी बहुत खातिर की जाती है, अलावा खुराकके हाथ खर्चभी दिया जाता है. एक मुनीमके रखनेकीभी जरूरत होगी. अब वह सिर्फ वो चाल सोच रहे हैं कि, **खुर्जेमें जो २६०००) रुपया जमा है उसका सूद रोक दिया जावे, मगर ये चालभी उनकी नहीं चलैगी रुपया मेरे नामसे जमा है मैंही सूद वसूल करताहूं.** अगर जैन गजटमें कापी रिजोल्यूशन भेज दी होवे तौभी व जरिये तार रोकी जावे और इस फिक्रेके शामिल करनेकी ताकीद की जावे.

चम्पतराय १८-१-०६

दफा जमीमा नम्बर ८ की यह है कि, फंडभी तीन प्रकारके होंगे एक महाविद्यालय फंड दूसरा हाईस्कूल फंड तीसरा इमारत फंड. महाविद्यालय फंडमें जो द्रव्य जमा है वह सब संस्कृतकी मजहबी आलादर्जेकी तालीममें जैसा कि, अब खर्च हो रहा है किया जायगा. सहारनपुरकी जैन पाठशाला मय उसके सरमायेके महाविद्यालयकी शाख होगी और जो रुपया एक मुश्त या माहवारी या सालाना वायदोंका वसूल होगा या आइन्दा इस मदमें जमा हो या फीस आदिसे आमदनी हो वो हाईस्कूलमें जमा होगी. इसी प्रकार इमारत फन्डका रुपया तामीर इमारत हाईस्कूल और महाविद्यालयमें खर्च होगा ।

(नकल २२ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

ये दो + चिट्ठियां पण्डितोंकी मुलाहजेके वास्ते रवाना करताहूं । ये दुनियामें जरूर है कि, जो काम करता है वह हर शख्स पूरी २ आजादी चाहता है, मगर बड़े २ मुलाजिमोंकी तकर्ररी मौकूफी वगैरह पूरी कमेटीके अखत्यारमें रखना. मालूम होता है कि, सेठीजीसे और पण्डितोंसे कुछ बिगाड़

+ (नोट) यह चिट्ठियां पं० मुकुन्दझा पं० यमुनादत्तजीकी सेठीजीके खिलाफ है ।

हैं. मैंने पण्डितोंको मुलामीसे चिठ्ठी लिखी है कि, वो फौरन आजावै. तुलवाभी गड़बड़ कर रहे हैं, सेठीजीका जयपुर जाना गजब हो गया उनको इस वख्त मथुराही रहना था. मैंने जयपुरमें उनको चिठ्ठी और तार भेजा है कि, जल्द आकर विद्यालय ले जाओ. फिलहाल पण्डितों और तुलवाकी दिलजोई करना मुनासिब है. यह चिट्ठियां मुझको वापिस कर देना हमको यहांतक तय्यार होना होगा कि, अगर मथुरासे कोईभी न आवे तो अस्सरेनौ विद्यालय जारी करेंगें उस वख्त कामयावी होगी. मुन्शी मूलचन्दका खतभी मुलाहिजा कीजिये.

२२–१–६

(नकल २६ जनवरी १९०६ के खतकी)

डियर बनारसी दासजी !

मैं सख्त अफसोसके साथ इत्तला देताहूं कि, मुझे महाविद्यालयके बारेमें खुदगर्ज लोगोंने इसकदर तकलीफ पहुचाई है कि, मुझे कल रातभर चैन न पड़ा १ मिनटकोभी नीद नहीं आई. आज खबर आई कि २ तुलवा बनारस चले गये. सेठसाहबको वहकाया है और अब वो मुखालफतपर चले हैं । **मैं सबको देखलुंगा** अफसोस! ये खुदगर्ज हमारे कैसे दुश्मन हुये हैं तमाम जोशका खून करते हैं मगर सहारनपुरका जोश हरगिज १ कम न किया जाय, **बल्कि नये सिरेसे हम विद्यालय खोलेंगे और बहुत तुलवा आजांयगे फिर देखेंगे वहां कौन तनख्वाह देता है.** सेठसाहबकी जो चिठ्ठी आई है मैं रवाना करुं तो आपको रंज होगा बईवजह रोकी है. अगर सेठीजी सहारनपुरसे होकर मथुरा जाते तो कोई किस्सा न होता उनकी अदम मौजूदगीसे फतूर वरपा होगया इस कार्रवाहीसे और जोश सहारनपुरमें होना चाहिये ।

चम्पतराय २६–१–०६

(नकल २७ जनवरी १९०६ के पत्रकी)

डियर बाबूसाहव जयजिनेन्द्र

अफसोस है कि, आजके रोज मथुरासे २ तार किरोड़ीमल और सेठीजीके पहुंचे जिनसे जाहिर हुआ कि, मुन्शी मूलचन्दने सख्त मुखालफत विद्यालयके जानेमें करी और सेठजी इलाहाबाद गये हुये थे यकीन है कि, साहवान सहारनपुर नाकाम वापिस हुये होंगे, बस अब तदवीर यह है कि, हम चन्द अशखास मथुराको चलें और इस मामलेको तय करके लावें. **चम्पतराय बनारसीदास पं० चुन्नीलाल बाबूलाल** और **जुगमन्दिरदास** यह अश्खास् वहां पहुचने चाहिये फिर जैसा कुछ होगा फैसला करके आंयगे मेरी रायमें इतबार ४ तारीख फरवरीको यह सब लोग मथुरामें पहुच जावें मैं रुखसतका इन्तजाम इस दरमियानमें कर लूंगा. आप

पं० चुन्नीलाल बाबूलाल जुगमन्दिरदाससे खत किताबत करके तय कर लें। मैं सेठीजीको तार देताहूं कि, वह मथुरामें हमारा इन्तजार करैं और मुझे मंजूरीसे इत्तला दो ताकि, मैं तय्यार रहूं मैंनेभी सबको खत लिखे हैं।

चम्पतराय २७-१-०६

(नकल ११ फरवरी १९०६ के पत्रकी)

(इस पत्रको ध्यानसे पढियेगा)

डियर बाबूसाहब ! जयजिनेन्द्र

खत आपका मिला अहवाल मालूम हुआ, मैं खुद इस बातको तसलीम करताहूं कि, जब महाविद्यालयका मुहूरत हुआ उस वख्तभी जैनकालेज खोला जाना करार दिया था और उसके उसूल हमेशासे ऐसेही रक्खे गये थे कि, जिसमें संस्कृत और इंगलिशकी तालीम हो. डेपुटेशन पार्टीभी कालेजकेही वास्ते अपील पढ़ २ कर रुपया लाई है। मगर आप अपनी कौमकी हालतको नहीं देखते क्या हालत है, लोग मजहबकी आड़में शिकार खेल रहे हैं, इस वख्त आपको मालूम नहीं है कि, क्या २ चेमेगोइयां होरहीं हैं, **इसका इन्तजाम भी तो सरेदस्त हिकमत अमलीसे करना जरूरी है.** अव्वल तो यह शिगोफा है कि, बाज साहबानने जो अपने वायदेमें यह शर्त लगाई है कि अगर सहारनपुरमें कालेज या हाईस्कूल जारी हो तो हम इस कदर रकम देंगे. इसकी बावत् खुद सेठ माणिकचन्दके यहां कमेटी हुई थी, मुखालिफ लोगोंने कहा कि, यह महासभा नहीं है प्रान्तिक सभा है जो सहारनपुरको मखसूस करती है, क्योंकि अभीतक जो रुपया जमा हुआ उसमें किसीकी शर्त नहीं थी कि, अगर फलां मुकाम पर जैनकालेज होगा या हाईस्कूल या महाविद्यालय होगा तो हम इस कदर देवेंगे, मगर मैं खूब जानताहूं कि ये रोड़ा अटकानेवालोंके ख्यालात हैं. मुझे करीब २ तमाम हिन्दके जैनियोंका तजुर्बा है. सहारनपुरके जिलेके मुआफिक न अंगरेजी तालीम कहीं जैनियोंमें है, न इस कदर तालीमकी शायक है, और न इस कदर काम करनेवाले और दातार हैं, फिर इससे उमदा मुकाम और कौन हो सकता है. दूसरी बात उस आपके ७००) रु० के बजटसे उठी है जिसमें महाविद्यालयकेवास्ते सिर्फ ७९) रुपया माहवारीका मुकर्रिर किया था, उससे लोगोंको यह मौका मिला कि, साहब महावि० की तालीम तो खतम हुई अब सिर्फ इंगलिश तालीम होगी और सरमायेका रुपया सब इंगलिश तालीममें खर्च होगा. इस असूलको पकड़कर **गोपाल दासने ऐतराज** मैंनेभी सुना है कि, छापा है. **पस इन लोगोंके मुंह बन्द करनेके वास्ते जरूरी है कि इस वख्त आलान किया जावे** कि, जो रुपया इस वख्त तक जमा है उसका सूद महाविद्यालयकी तालीममें वदस्तूर सर्फ होगा. वो रुपयाही क्या है उसका सूद तो उसको किफायतभी नहीं

करैगा और न उस कदर रुपयासे हाई-स्कूल जारी हो सकता है, फिर हमको उस आलानमें क्या हर्ज माळूम होता है. **यह जरूर है कि, दो फन्ड नहीं रह सकते और न रहेंगे चाहे जब रिजोल्यूशन पास करके मिला देना अपना अखत्यार होगा, मगर सरेदस्त जवान बन्द करनेको यह हिकमत जरूर अमलमें लाने लायक है कि, जिसका मैंने * नोटिसभी भेज दिया है।**

आपने जो मेरेसे सहारनपुरका जमा शुदा नकद सरमाया वापिस तलब किया है यह कार्रवाई महज बेजा है. सहारनपुरसे मिलाही क्या है सब ३४ सौके करीब होगा, मिन् जुमला उसके लाला रूपचन्द साहबने एक हजार रुपया वजह कर लिया है, जो सरासर अमानतमें खयानत हुई है. ९ सदके करीबका हिसाब महासभाके खास इस जल्सेके वजहसे हुआ है कि, बहुतसे नोटिस छापे गये तुलवाकी वर्दी और रेल किराया खतो कितावत वगैरहमें हुआ है और हो रहा है. जो रुपया मेरेपास आया वह फौरन सूदपर लगा दिया है मुबलिग ४००) रु० किरोड़ीमलने भेजा होगा.

चम्पतराय ११-२-०६

१२ जनवरीके खतसे आप साहबानको जाहिर होगा कि, सेठीजीकी राय थी कि, विद्यालय फौरन तबदील किया जावै, और मुन्शी मूलचन्दसे और सेठीजीसे इस समय बहुत मुखालफत होगई थी. मुन्शी चम्पतरायने सेठीजीको लिखा कि, फौरन सहारनपुरको जाओ और वहां बिरादरीकी कमेटी करके इसमें महाविद्यालयके तबादलेका सवाल उठाओ और पंचायतको नशेव व फराज समझाओ और खत लाला बद्रीदास या लाला जम्बूप्रसाद या बाबू नेमीदासके हाथसे भिजवाओ चुनांचे यहां ऐसाही किया गया और ७ जनवरीके प्रस्तावकी नकल मुन्शी चम्पतरायको भेजी गई, जिसको उन्होंने पसन्द किया और यहांतक कहा कि, अगर ये कापी प्रस्ताव की पहिले आजाती तो उनको महावि० को सहारनपुर तबदील करनेमें कोई पशोपेश न होता और मुन्शी चम्पतरायने यह कापी सेठसाहबको भेजी यह उनके १७ जनवरी १८ जनवरीके खतोंमें जाहिर है. मुन्शी चम्पतरायके १८ जनवरी व २२ जनवरीके खतोंसे यहभी साबित होगा कि, पण्डित लोग सेठीजीसे बहुत नाराज थे और मुन्शी चम्पतरायने यह लिखा कि, सेठीजीको हरीमतसे काम लेना चाहिये वरना गड़बड़ होगी और बड़े २ मुलाजिमोंकी तकर्र्री और मौकूफी कमेटीके हाथमें रखना चाहिये. २ चिट्ठियां मुन्शी चम्पतरायने २२ जनवरीके खतके साथ भेजी थीं वह सेठीजीके वर्खिलाफ हैं. मुन्शी चम्पतराय यहांतक तय्यार हुये कि, मथुरावाले महाविद्यालय न जाने देंगे तो नये सिरेसे महाविद्यालय सहारनपुरमें कायम किया जावैगा, यह उनके २२

* क्या वही नोटिस है जो जैनगजट अंक ८ वर्ष ११ में छपा था?

आर २६ जनवरीके खतूतसे जाहिर है.

ए मैम्बरान् महासभा! मुन्शी चम्पतरायके खतोंसे आपको साफ साबित हो जायगा कि, महाविद्यालय मथुरासे सिर्फ मेरी जल्दीकी वजहसे नहीं आया बल्कि बाबू अर्जुनलाल सेठीकी वजहसे और मुन्शी चम्पतराय और दीगर साहबान सहारनपुर वालोंकी सलाहसे. अलबत्ता मेरा यह ख्याल था और अभीतक है कि, सहारनपुरमें जोश कायम रखनेके वास्ते और स्कूल खोलनेके वास्ते महावि० का लाना बहुत जरूरी था और अगर महावि० सहारनपुरमें न आता तो कोई तय्यारी स्कूलकी सहारनपुरमें न हो सकती थी. लेकिन मुझको यहभी इसके साथ ख्याल था कि, अगर बिलफर्ज स्कूल न खुलेगा तो सब इल्जाम मेरी गर्दनपर पड़ेगा, अगर्चे प्रस्तावभी पास होगया था लेकिन मैं बहुत गौरसे शोच रहा था कि, महावि० यहां तबदील कराया जावे या नहीं, परन्तु मुन्शी चम्पतराय और बाबू अर्जुनलालके मेरे साथ होनेसे मेरी हिम्मत बढ़ी और बहुत कुछ खौफ मेरे दिलसे जाता रहा, अब यह देखना है कि, महावि० सहारनपुर जल्दी लानेसे कोई नुक्सान हुआ या फायदा. साफ जाहिर है कि, महावि० सहारनपुर लानेसे बड़ा फायदा हुआ, घर २ से चन्दा लिखवाया गया और ४१ हजारके करीब चन्दा लिखा गया और यहां इस कदर जोश पैदा हुआ कि, अगर बाबू अर्जुनलाल सेठी और बाहर वालोंकी गड़बड़ न होती तो जरूर वैशाख तक स्कूल कायम होजाता, जिस जोशसे यहां काम हुआ सबको मालूम है. सहारनपुर वालोंने तन मन धनसे काम करनेमें कोई दकींका बाकी नहीं छोड़ा बल्कि यहांके रहीस घर २ भीख मांगते फिरे और उनका इरादा था कि, बाहरभी कालेजके लिये भीख मांगनेको जायगे, लेकिन मिस्ल यह होगई कि, कोई जराभी काम न करे और काम दुरुस्त हो जावै तो सब भला २ कहते हैं और अगर काम बिगड़ जावै तो सब भलाई बावजूद सख्त मिहनतके खाकमें मिल जाती है और बुराई पल्ले बंध जाती है.

अब दूसरा सवाल यह पैदा होता है कि, गड़बड़ किसने पैदा की, और काम किसने खराब किया सहारनपुर वालोंने या बाहर वालोंने.

ए साहबान कौम! मैं आपको यकीन दिला सकताहूं कि, सहारनपुर वालोंने कोई काम खराब नहीं किया और न उन्होंने किसी तरहसे गड़बड़ पैदा की. सहारनपुर वालोंने न कभी यह ख्वाहिशकी कि, जो रुपया अभीतक जमा हुआ था उसको सिर्फ अंगरेजी तालीममें खर्च कर लिया जावे, न कभी उनकी यह ख्वाहिश हुई कि, महावि० उजड़ जावै, सहारनपुर वालोंने जिस कदर महावि० का आदर सत्कार किया वैसा कभी मथुरामें न हुआ होगा और उनकी बराबर कोशिश रही कि, ऐसा जैन कालेज तय्यार हो जावे कि, जिसमें अंगरेजी और संस्कृतकी दोनोंकी आलादर्जेकी तालीम हो जावै.

फिर सब गड़बड़ दूसरोंने पैदा की. आपको मुन्शी चम्पतरायके खतूतसे माॡम हुआ होगा कि, महाविद्यालयके सहारनपुर मुन्तकिल करनेके वख्त मथुरावालोंने किस कदर फसाद वरपा किया, यहांतककि मुन्शी चम्पतरायका यह इरादा हुआ कि, सहारनपुरमें नये सिरेसे महाविद्यालय कायम करेंगे, तो फिर क्या आप ख्याल कर सकते हैं कि, महाविद्यालय सहारनपुर आनेपर खुदगर्ज मथुरावाले खामोश रहे होंगे. हरगिज नहीं, मथुरा वालोंने बहुत बुरा माना जिसका पूरा सबूत यह है कि, जब यहांसे लड़के भागे जाते थे तो उस वख्त सेठ द्वारिकादासजीको खत और तार भेजे गये लेकिन उन्होंने कोई जबाब नहीं दिया और बादहूं २४ मार्च १९०६ को छपे हुये कार्ड जारी किये जोकि इस प्रकार थे.

(नकल २४ मार्च १९०६ के छपे कार्डकी यह है)

दफ्तर जैन महासभा मथुरा
ता० २४ मार्च १९०६

(आवश्यकीय सूचना)

प्रिय सभासद ! जयजिनेन्द्र

महासभाके सहारनपुरवाले दशम वार्षिक अधिवेशनके प्रस्ताव नम्बर ६ के अनुसार महाविद्यालय मथुरासे सहारनपुर भेज दिया गया था. वहां जानेसे इसके कामको हानि पहुंची प्रथमाध्यापक इस्तीफा दे गये, सब विद्यार्थी अपने घरोंको चले गये, उनके वापिस आनेकी उम्मेद नहीं है, ऐसी अवस्थामें महाविद्यालयका काम बन्द है यह बहुत शोचनीय विषय है.

मेरी रायमें इसका काम बन्द न होना चाहिये महासभाके वार्षिक जल्सेतक महाविद्यालय वदस्तूर चौरासीपर कायम किया जाय, और बहुत शीघ्र गये हुये विद्यार्थियोंको एकत्रितकर पढ़ाईका काम प्रारम्भ किया जाय, जिससे महाविद्यालय की वार्षिक परीक्षा हो जावै.

आप अपनी सम्मति कृपया तारीख १ अप्रैल सन १९०६ तक भेज दीजिये उस तारीखतक आपकी सम्मति न आई तो आपको इस कार्यमें महमत समझा जावेगा.

द्वारिकादास
सभापति व इन्चार्ज महामन्त्री
दि. जैन महासभा

और फिर २९ मार्च १९०६ को मेरे नाम इस प्रकार हुक्म जारी किया.

(नकल हुक्म यह है)

श्री

सिद्धश्री सहारनपुर शुभस्थान बाबू बनारसीदास योग्य लिखी श्री मथुराजीसे द्वारिकादासकी जुहार बंचना, आगे महाविद्यालय सहारनपुरको तरक्कीके वास्ते भेजा गया था न कि तनज्जुलीको, लेकिन वहां जाकर महाविद्यालयकी तरक्कीके बजाय तनज्जुली हुई यानी तमाम काम खराब होगया इस लिये मुनासिब समझा गया कि, महाविद्यालय वदस्तूर

मथुरामें स्थानभी जम्बूस्वामी महाराजपर कायम कर दिया जावै, इस लिये तुमको लिखा जाता है कि, चिट्ठीके देखते साथ अध्यापक व मुलाजिमान व कोई लड़का रह गया हो रवाने कर दो और जो सामान वहां हो, उसकोभी साथ २ भेज दो और जो रुपया तुमारे लिये वास्ते खर्चके भेजा गया था उसमेंसे जो उठाहो उसका हिसाब और जो कुछ बाकी हो वो मथुराको भेज दो. ताकीद जानो अध्यापक इत्यादिको जल्दी भेज दो ताकि एक तारीखसे महाविद्यालयका काम शुरू हो जावै बाकी खैरियत है.

लिखी द्वारिकादासकी जुहार बंचना
ता. २९-३-१९०६

यहभी माळूम हुआ कि, जो लड़के सहारनपुरसे भागे थे, मथुरामें जमा हैं और वहां पण्डित गौरीलालजी देहलीसे बुलाये गये हैं और मथुरामें अब उन लड़कोंकी पाठशाला कायम होगी. चूंकि मथुरावालोंकी मुराद पूरी न हुई और मेनेजिंगकमेटीसे करार पागया है कि, महाविद्यालय सहारनपुर रहै और मथुरा न रहै. पस ए साहवान! महाविद्यालयको सहारनपुरसे मथुरा वालोंने उजाड़ा और यह सब उनका कसूर है.

मथुरावालोंके साथ २ बाबू अर्जुनलाल सेठीनेभी गड़बड़ की. सेठीजीकी यहां पूरी २ इज्जत की गई, जिस रोज सेठीजी यहां २८ जनवरीको आये तो यहांवालोंका पूरा इरादा था कि, सेठीजीको इष्टेशनपरसे हाथीपर सवार कराकर लावेंगे. चुनांचे लाला आत्मारामजीके हाथीके लिये इन्तजाम किया गया लेकिन किसी वजहसे वो हाथी न आसका. तौभी सेठीजीको लाला रुपचन्दकी बड़ी गाड़ीमें जोकि लाला उग्रसेनकी चौकड़ीमें जुड़ती थी सबसे अगाड़ी सवार कराकर लाये. सेठीजीकी बाज २ शख्सोंने यहां दावत की.

सेठीजीके कहनेसे १८) रु० माहवारका मकान किरायेपर लिया गया, परन्तु यह बात चौधरी खूबचन्दको पसन्द न आई क्योंकि जब कि, वह फिलहाल स्कूल कायम होनेतक अपना मकान मुफ्त देते थे, तो यह १८) रु० माहवारका खर्च सेठीजीने फजूल बांधा.

सेठीजीके कहनेसे कुर्सी और मेजोंके लिये बरेलीको लिखा गया और यहां तिपाइयोंके नमूने तय्यार कराये गये. सेठीजीकी अर्दलीमें रामजीदास चपरासी पाठशालाका किया गया लेकिन न माळूम क्या वजह उनका इससेभी इत्मीनान न हुआ. अव्वल उन्होंने पण्डितोंसे बहुत सख्ती करना शुरू की, उनको महाविद्यालयके मकानसे निकाल दिया कि, शहरमें रहो और उनको हिदायतकी कि, यहां किसी रहीस या किसी दूसरे शख्ससे न मिलो. चुनांचे पण्डित मुकुन्दझाने मुझसे इस अमरकी कई मर्तबा शिकायतकी. मुन्शी चम्पतरायसे रुखसत लेकर पण्डित मुकुन्दझा २१ फरवरीको मकान चले गये और फिर न लौटे. पण्डित यमुनादत्तकोभी सेठीजीसे बहुत दिल शिकनी थी जब कि, मैंने सेठीजीसे कहा कि,

सख्ती न करनी चाहिये तो मुझसे नाराज हुये.

दूसरे सेठीजीने मुझसे कहा कि, कवायद बनाना चाहिये और उनके अखत्यारात मुकर्रिर करना चाहिये, मैंने बारहा सेठीजीसे कहा कि, अभी कवायदका झगड़ा मत उठाओ और जो रुपया हमारा उधारमें सहारनपुरमें पड़ा हुआ है उसको वसूल कर लो, और वैशाखमें स्कूल कायम कर लो तब जो चाहे कवायद बना लेना, लेकिन सेठीजीने न माना और उससे आफत बरपा हुई.

मैं सेठीजीसे बारहा कहता था कि, सबसे बड़े कवायद यह हैं कि, मैं और तुम सरजोड़ कर काम करैं और सहारनपुरसे रुपया वसूल करैं, और फिर जिले सहारनपुरसे रुपया लावैं, स्कूल कायम करैं वादको जो चाहै करना. लेकिन सेठीजीने एक न सुना और मेरी शिकायत बाहरवालोंसे करना शुरू की, आखिरकार एक रोज उन्होंने खानगी कमेटीकी, जिसमें जैलके ६ मैम्बर मौजूद थे.

(१) बाबू चन्दूलाल
(२) बाबू वेनीचन्द
(३) बाबू ऋषभदास
(४) चौधरी उल्फतराय
(५) बाबू अर्जुनलाल
(६) बाबू बनारसीदास

और उन्होंने एलानिया कहा कि, महाविद्यालय बिलकुल मेरे सुपुर्द रहेगा और सहारनपुरवालोंको इससे कोई ताल्लुक न होगा उस वक्त सेठीजीने मुन्शी चम्पतरायकी चिट्ठी दिखलाई कि, महाविद्यालय मेरे ताल्लुक है और मुन्शीजीने हजार रुपयेकी हुंडी मेरे पास भेजी है.

(नकल खतकी यह है)

प्रिय सेठीजी !

मैं १०००) की हुंडी वास्ते खर्च महाविद्यालयके तुमको भेजताहूं ४००) पहले बनारसीदासको भेजे हैं, यह १४००) तुम्हारे नाम लिखे हैं, इसका हिसाब आपको देना होगा. जिसको मुनासिब जानो वहां जमा करो महाविद्यालय बिलकुल तुम्हारी सुपुर्दगीमें है, हिसाब इसका बदस्तूर मथुरामें रक्खा जावेगा, तुम्हारे पासभी रहेगा, तुमको अधिकार है चाहे जिसकी कोठीमें हिसाब खोलो, हिसाब महाविद्यालयका खोला जावे. हुन्डी तुम जिसके नाम बेची कर दोगे उसीको रुपया मिल जावेगा. हुंडी कलकत्तेवाले हरमुखराय अमोलकचन्दपर है बाकी बातोंका उत्तर समय मिलनेपर दूंगा, मेरेपास काम बहुत फुरसत कम है.

चम्पतराय १७–२–०६

आप ख्याल कर सकते हैं कि, सहारनपुरमें जहां कि, स्कूल कायम करनेका जोश फैला हुआ था इस किस्मकी गुफ्तगू और चिट्ठीसे क्या नतीजा पैदा हुआ होगा, इस खानगी कमेटीमें चन्द कवायदात सेठीजीने लिखवाये मैंने तो समझ लिया कि, स्कूल आजही खतम हो लिया, मुझको रातभर मारे

रंजके नीद नहीं आई. अगले रोज मैंने सेठीजीसे साफ कहा कि, मैं स्कूलके कामसे इस्तीफा देताहूं अगर आप मिलजुल कर काम नहीं करते. चुनांचे सेठीजीने कसम खाई कि, आइन्दा मिलजुल कर काम करेंगे जो हुआ उसको भूल जाओ फिर हम दोनों काम करने लगे और सेठीजीके लिखवाये हुये कायदोंको बदल कर वह कवायद पास हुये जोकि इस कमेटीमें २२ फरवरीको पास हुये.

४ मार्चको सेठीजीका खत आया कि, ५ लडके महाविद्यालयके भागे जाते हैं.

(नकल खतकी यह है)

To,

The Secretary Jain Maha-Vidyalay Managing Committee, Saharanpur.

Sir,

I beg to inform you that five students of the Vidyalay have resolved to go this evening to their home. I have tried my best to induce them to stay till Vaisakha but do not agree to it.

I am yours obdtly.

4/3/06. Arjun Lal Sethi.

(हिन्दी तर्जुमा)

बखिदमत सेक्रेटरी मेनेजिंग कमेटी सहारनपुर

गुजारिश यह है कि, महाविद्यालयके ५ लड़कोंने आज शामको अपने २ घर जानेका मुसम्मिम इरादा कर लिया है. मैंने उनको वैशाखतक ठहरनेकी हत्तुल मक्दूर कोशिस की लेकिन वह इसपर रजामन्द नहीं होते.

अर्जुनलाल सेठी ४-३-०६

रामजीदास चपरासी पाठशाला इस खतको लाया था और उसने जबानी कहा कि, कल महाविद्यालयके मकानमें चूहा मर गया था, लड़के वेदिल हो रहे हैं, चुनांचे मैंने एक लडकेको बुलाकर पूंछा तो उसनेभी यही कहा तो मैंने सेठीजीको लिखा.

माईडियर सेठीजी साहब !

खत आपका आया लड़का कहता है मकानमें चूहा मर गया, क्या इसकी इत्तला औरोंको करना आपको मुनासिब नहीं थी? अगर कोई लड़का मर जावेगा तो उसका जुम्मेदार कौन होगा.

बनारसीदास ४-३-०६

इसके जबाबमें सेठीजी लिखते हैं.

यह सब लड़कोंकी वहानेबाजी है आपको इनका हाल मालूम नहीं है, ये लोग जानेका इरादा बहुत दिनोंसे कर रहे हैं. उन्होंने वम्बईतक जानेका इरादा किया है और वहांसे चिठ्ठी मंगवाई है. आप उनसे वायदा करा लीजिये कि, मकान बदलनेपर ये लोग नहीं जांयगे, कभी वायदा नहीं करेंगे.

मैंने ५ लड़कोंको बुलाया तो उनमेंसे उदयलालने कहा कि, सेठीजी कहते हैं कि, तुम यहां मुफ्तके टुकड़े खाते हो, क्या रोटी

हमारे घर नहीं है? उस वख्त बाबू बेनीचन्दभी आगये थे क्योंकि वह लाला जम्बूप्रसादके यहां सुनकर आये थे कि, लड़के भागते हैं, और मुझको खबरदार करने आये थे, उदयलालने यह बात बाबू वेनीचन्दके रूबरू कही कि, सेठीजी हमको कहते हैं कि, मफतके टुकड़े खाते हो, क्या रोटी हमारे घर नहीं है, सामको कमेटी हुई बाबू नेमीदास सभापति चुने गये, बाबू जुगमन्दरदास नजीबाबादवाले, बाबू बाबूलाल, बाबू सूरजभानु पं० चुन्नीलाल, बाबू जुगमन्दरदास इलाहाबाद वालेभी उस वक्त इत्तफाक वक्तसे मौजूद थे लड़के समझानेसे मान गये.

५ तारीखको बाबू बाबूलाल, बाबू जुगमन्दरदासने मुझसे और सेठीजीसे मन्दिरजीमें कसम खिलवाई कि, मिलजुलकर काम करेंगे और एक दूसरेको अपनी दाहिनी कुलत बाजू समझेगा इस कसमके बाद ६ तारीख मार्चको सेठीजी जयपुर चले गये यह कहकर कि, १ हफ्तेके अन्दर लौट आउंगा, और आज आते हैं.

(नकल खत यह है)

Saharanpur,
6th March 1906.

My dear Sir,

I beg to inform you that I am going to leave for Jaipur this noon, I shall stay there for a week or a few days more. I beg you to make arrangements for the superintendance of the boys. I think Master Dwarkaprasad can perform this duty satisfactionly.

I am yours sincly
Arjun Lal Sethi.

(हिन्दीमें तर्जुमा)

मेरे प्यारे जनाबमन्! अर्ज यह है कि, मैं आज दुपहरको जयपुरको जा रहाहूं मैं वहां १ हफ्ते या चन्द रोज अधिक ठहरुंगा, मेरी अर्ज यह है कि, लड़कोंके इन्तजामके वास्ते किसीको सुपरिन्डेन्ट बनाइये, मेरे ख्यालमें मास्टर द्वारिकाप्रसाद इस कामको अच्छी तरह इन्जाम दे सकते हैं.

अर्जुनलाल सेठी

अब सेठीजी कहते हैं कि, सहारनपुरसे महाविद्यालय उठाओ देहली या जयपुर ले जाओ सहारनपुरवालोंको तो सेठीजीने इनाम देदिया अब देहली और जयपुरको देना रहा.

ए मेम्बरान् महासभा! आप देखेंगे अव्वल सेठीजीने मथुरामें गड़बड़ीकी फिर सहारनपुर आकर मुझसे मिले कि, महाविद्यालय फौरन तबदील करो, फिर गड़बड़ करके घर जा बैठे, और अब कहते हैं कि, जयपुर ले जाओ या देहली ले जाओ और एक खतमें लिखते हैं कि, जबतक महाविद्यालयका पूरा इन्तजाम न हो तबतक स्कूल की पुकार न होनी चाहिये.

(नकल खत यह है)

मेरे प्यारे बाबू साहब!

मैं दो तीन रोजके लिये बाहर चला

गया था क्योंकि एक पाठशाला व Boarding स्थापित कराना था सो आपकी कृपासे ये हमारे क्रमानुसार एक Primary School स्थापित होगया, आपको यह तो विदितही होगा कि, Government Universities अनुसार School स्थापित करनेमें अभी उन्नति नहीं हो सकती, संस्कृत शिक्षा और उसके साथ गौणतासे Englisn litrature तथा Technical educatioh सेही भारत सन्तानको लाभ पहुंच सकता है, वरना M. A. B. A. की तो कोई पूछही नहीं—अस्तु

मैंने जो Primary School का Scheme रक्खा है वह इसही ढंगका है आपसेभी मशवरा लेना जरूरी है.

मेरे यहां अनुपस्थित होनेके कारण आपका तार यहांही पड़ा रहा और वह अब पढ़ा गया. लड़कोंके जानेकी बातोंसे बहुतही शोक होता है परन्तु इसमें मैंही क्या कर सक्ताहूं ? ऐसे मुआमिलोंमें तो मुझसे ज्यादा Experience आपको है आप उनको समझाइये. पं० जमुनादत्तसे उपदेश दिलवाइये उनका समझाना बहुत उपयोगी होगा. मुझे खेद है कि, मैं कुछ दिन अभी नहीं आ सक्ता क्योंकि यहांपरभी Reform के कार्य्योंमें आवश्यकता है. आपको पूर्ण उद्योग करना चाहिये परन्तु पहिले महाविद्यालयका सुष्टु प्रबन्ध कर दीजिये, इसमें कमसे कम ९ पण्डित होने चाहिये तथा Scholarships का प्रबन्ध अधिक होना चाहिये साथही कुछ Technical शिक्षाभी प्रारम्भ होनी चाहिये इसहीसे विद्यार्थीगण स्थिर चित्त होकर पढ़ सक्ते हैं तदुपरान्त Jainpandit अवश्य बुलाइये कमसे कम इतनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके पश्चात् Sclool की पुकार होनी चाहिये. मैं अभी यहां काम कर रहाहूं उधरसे आपभी सब चन्दा एकत्र कर लीजिये और विद्यालयको उन्नत दिखलाइये. जब आप आज्ञा देंगे मैंभी हाजिर हो जाउंगा, परन्तु मुझे विशेष चिन्ता महाविद्यालयकी है और उसीकी सेवा करना अपने जीवनका उद्देश्य समझताहूं. आशा है आपकाभी यहही सिद्धान्त होगा.

आपका सेवक

Arjun Lal Sethi

ए साहवान सेठीजीसेभी ज्यादा गड़बड़ मुन्शी चम्पतरायने की. अव्वल आप मुन्शीजीके खतूतसे देखेंगे कि, सब काम उनकी सलाह मशवरेसे हुआ लेकिन उन्होंने २४ फरवरी सन १९०६ को जैनगजटमें नोटिस दिया कि, उन्होंने ७ जनवरीका पास किया हुआ बजट ना मंजूर किया है और कार्रवाईको सहारनपुर भेजा है. ए साहवान यह मुन्शी चम्पतरायका लिखना बिलकुल गलत और झूट है उन्होंने कभी ७ जनवरीकी कार्रवाई वापिस नहीं की और न बजट ना मंजूर किया. बल्कि उनके खतूतसे आपको जाहिर होगा कि, उन्होंने लिखा कि, अगर वो कार्रवाई उनके पास जल्दी भेजदी जाती तो

उनको महाविद्यालयके तबदील करनेमें तरद्दुद पेश न आता

१८ जनवरी सन १९०१ का खत देखिये उन्होंने इस कार्रवाईको मुन्शी मूलचन्द और सेठ द्वारिकादासके पास मुलाहजेको भेजी और खुद उसमें जमीमा नं० ८ बढ़ाया. लेकिन मुन्शीजी (डिप्टी साहब) की हिम्मत्को देखिये कि, जब पंडित गोपालदासने फटकार बतलाई तो फौरन बदल पड़े और २४ फरवरी के जैन गजटमें छपवाया कि, उन्होंने वो कार्रवाई वापिस करदी और बजट ना मंजूर किया है. ऐसा मुन्शीजीका करना कौमको धोका देना है. दूसरोंपर इलजाम डाल कर, आप सुर्खरू बनना है.

ए साहबान मुन्शीजीकी हिम्मत और चालाकीको देखिये मुझको आगे धर दिया और खुद सबकदोश होगये, आप सबको ख्याल होगा कि, बजट मैंने पास करा था और मुन्शीजी बहुत अकल मंद और बड़े कोमके खैरख्वाह हैं कि, उन्होंने उस बजटको ना मंजूर किया लेकिन अब आपको मुन्शीजीकी सब कार्रवाई जाहिर होगई होगी.

दूसरी मुन्शीजीकी कार्रवाई देखिये कि, अव्वल तो उन्होंने मथुरावालोंकी मरजीके बरखिलाफ महाविद्यालय सहारनपुर भिजावाया और सेठ द्वारिकादास और मुन्शी मूलचंदके बरखिलाफ लिखा कि, इन खुद गरजोंने मुझे बड़ा सदमा पहुंचाया है और बहुत गड़बड़ की है. यहभी तजवीज किया कि, पांच शख्स् मथुरा चलें ताकि मथुरावालोंसे लड़ कर महाविद्यालय सहारनपुर लाया जावे यह उनके २६ और २७ जनवरीके खतसे जाहिर है, लेकिन जब सेठ द्वारिकादासने आखें दिखलाई और मुन्शीजीको डर हुआ "कि, अगर मथुरावाले नाराज होगये तो शायद हिंदुस्थानमें और स्थान महासभा का जल्सा करनेको न मिलेगा जैसा कि, उन्होंने २ जनवरीके खतमें इशारा किया था कि, सेठजीके नाराज होनेसे जो हमारा मथुरामें ठिकाना है कि, जब कहीं दूसरी जगह महासभाका जल्सा न होगा तो मथुरामें कर लेंगे जाता रहेगा" तो मुन्शीजीने ३ माहकी रुखसत ली और जनरलसेक्रेटरीका चार्जभी सेठ द्वारिकादासको दिया. अगरचे ज्वाइंटजनरलसेक्रेटरी मौजूद था और उनसे कहा कि, अब आप सभापति और जनरल सेक्रेटरी दोनों होगये हो तो अब महाविद्यालयको सहारनपुरसे मथुरा लाना आसान होगा और मुन्शीजी इलजामसे बरी रहेंगे, शाबास मुन्शीजीकी होशयारीको हकीकतमें सबओवरसीयरसे डिप्टीमजिस्ट्रेट होना तो ऐसेही होशयार शख्सका काम है.

चुनांचे सेठ द्वारिकादासने २४ मार्चको छपे कार्ड जारी किये. फिर मेरे नाम २९ मार्चको हुक्म जारी किया जिनका ऊपर जिकर कर आया हूं.

१४–१५ अप्रेलको फिर मेनेजिंग कमेटीका जल्सा किया. मुन्शी चम्पतरायने तजवीज की और मुन्शी मूलचन्दने ताईद की कि, महाविद्यालय सहारनपुरसे उठ जावे

जैसा कि, * प्रस्तावनंबर १ से यह बात जाहिर होती है.

* प्रस्ताव नं० १ (प्रस्तुतरूप)

मेनेजिंग कमेटी तजवीज करे कि, महाविद्यालयकी संस्कृत शाखा इस समय सहारनपुरमेंही स्थिर रक्खी जावे या किसी अन्य स्थानपर बदली जावै ।

इस प्रस्तावको महामन्त्री डिप्टी चम्पतरायजीने इस सम्मतिके साथ पेश किया कि, महाविद्यालयकी संस्कृत शाखाको इस समय सहारनपुरमें रखनेसे उन्नति नहीं होसक्ती है इससे इसको वहांसे उठाना चाहिये, इसका समर्थन मुन्शी मूलचन्दजी वकीलने किया किन्तु बाबू महावीरप्रशादजी प्रतिनिधि बाबू वद्रीप्रसादजी वकील बिजनौरने इसके विरुद्ध यह सम्मति दी कि, अभी सहारनपुरसे उठाना उचित नहीं है और इसके बहुत कारण बतलाये. इस प्रस्तावपर बहुत बादानुबाद होनेके पश्चात् सबकी सम्मति होनेपर बहु सम्मतिसे इस प्रकार स्वीकृत हुआ.

प्रस्ताव नं० १ (स्वीकृत)

मेनेजिंग कमेटी तजवीज करती है कि, महाविद्यालयकी संस्कृत शाखाको सहारनपुरमेंही स्थिर रक्खा जावे ।

इस प्रस्तावके विरुद्ध केवल ६ सम्मति थीं

डिप्टी चम्पतराय	३
मुन्शी मूलचन्द	१
बाबू अर्जुनलाल सेठी	२
	६

लेकिन अफसोस ! कुछ न हुआ ताज्जुब यहही है कि, अगरचे मेनेजिंग कमेटीका बुलावा सेठ द्वारिकादासने बतौर सेक्रेटरीके दिया. लेकिन प्रोग्रामपर दस्तखत मुन्शी चम्पतरायके बतौर सेक्रेटरीके हैं.

अफसोस ! सेठ द्वारिकादास और मुन्शी चम्पतरायकी गड़बड़ी और साजिशको, वजूद इसके जब कि, यह कौमका उद्धार करनेवाले बनते हैं.

तीसरे मुन्शीजीकी गड़बड़को देखिये कि, जो रुपया २९ दिसम्बरको हाईस्कूल सहारनपुरके लिये जमा हुआ उसमें मुन्शीजीने किस कदर डाकाजनीकी कि, उसके बाद किसी भाईका दिल चन्दा देनेको नहीं कर सकता लेकिन कौमके भाई इतमीनानसे रहैं. मुन्शीजीकी डाकाजनी न चलेगी और जिस फंडमें जो भाई रुपया देगा वोह उसमेंही खर्च किया जावेगा और स्कूलका रुपया मुन्शीजीको उगलना पडेगा.

जिस वक्त यहां बाबू अर्जुनलाल सेठीने रुपयेके लिये हाय २ की कि, कुरसियां बनवावें तिपाई बनवावें मेजें बनवावें उस वक्त यहां करार पाया कि, जो रुपया मुन्शीजीके पास है और २९ दिसम्बरको स्कूलके लिये इकठ्ठा हुआ है उसको मंगवाना चाहिये. मुन्शीजीको लिखा गया तो मुन्शीजी लिखते हैं.

(यह ११ फरवरीके खतमें लिखते हैं)
" आपने जो मेरेसे सहारनपुरका नकद जमा शुदा सरमाया वापिस तलब किया है यह कार्रवाई महज बेजा है. सहारनपुरसे मिलाही

क्या है सब ३४००) रुपयेके करीब होगा, मिनजुमला उसके लाला रूपचन्दजी साहबने १०००) रुपया वजह कर लिया है जो सरासर अमानतमें खयानत हुई है. पांच सदके करीबका हिसाब महासभाके इस जल्सेके कारणसे हुआ है कि, बहुतसे नोटिस छापे गये, तुलवाकी वरदी और किराया रेल- खत ब किताबत वगैरामें हुआ है और होरहा है"

बादहू जब मैंने मुन्शीजीको दबाया तो मुन्शीजी लिखते हैं " अब सहारनपुरमें क्या मदत चलेगी जब कि, आप लिखते हैं कि, सरमाया जो महासभाके वक्त जमा हुआ वोभी हाईस्कूलमें मुन्तकिल कर दो. अगर आपने झगड़ा लगाया तो महाविद्यालय सहारनपुरमें नहीं रह सकता यह १४ फरवरीके खतमें लिखते हैं.

बादहू जब मुन्शीजीको और दबाया तो मुन्शीजी लिखते हैं " आप लिखते है कि, वहुत लोग जल्सेके वक्तका रुपया मांगते हैं मेहरबानी फरमाकर उनकी तहरीर भेज दीजिये ताकि मैं जबाब दूं कि, इसी भरोसेपर महाविद्यालय मथुरा लेनेको गये थे. यहभी उनके १४ फरवरीके खतसे जाहिर है.

इसके बाद जब मैंने मुन्शीजीको और ज्यादा दबाया तो मुन्शीजी २५ फरवरीके खतमें लिखते हैं " कि, हम आपको महाविद्यालयकी मदका सेक्रेटरी तसलीम नहीं कर सकते, वो बिलकुल सेठीजीके ताल्लुक है और उस वक्त तक जरूर रहेगा जिस वक्ततक कि, हाईस्कूल जारी न हो जावै और उसका हिसाब किताब हमारे पास आवेगा और हमारी मंजूरीसे खर्च होगा आप हाईस्कूलकी सेक्रेटरी करें

इस मुन्शीजीकी कार्रवाईसे सहारनपुरमें बहुत गड़बड़ हुई और मुन्शीजीका एतबार उठ गया, अब मुन्शीजीने १५ अप्रेलको मथुरामें पास किया कि, यह रुपया इंतजामिया फंडके घाटेमें लगाया जावे.

वो प्रस्ताव १५ अप्रेलका यह है

यह कमेटी बहु सम्मतिसे तजवीज करती है कि, जो रुपया सहारनपुरके जल्सेमें ता० २७ दिसम्बरके बाद जमा हुआ है वो माहसभाके इंतजामिया * फण्डकी घटी पूरी करके महाविद्यालयके चलते सरमायेमें जमा किया जावै.

इस प्रस्तावके विरुद्ध निचे लिखी ८ सम्मतियां थीं.

बाबू अजितप्रसाद	१
मुन्शी बाबूलाल	२
साहू जुगमन्दरदास	२
बाबू सीतलप्रसाद	२
" चंन्दूलाल	१
	८

* क्या इस गड़बड़के बाद किसी शख्सका रुपया देनेको दिल चाहेगा और क्या स्कूलका रुपया दिया हुआ इसतरह मुन्शी चम्पतराय खर्च कर सकते हैं, और क्या रुपया उनके पास रह सकता है, जबतक कि, वो भाई जिनका रुपया है इजाजत न देंगे, मुन्शी चम्पतराय कभी रुपया इन्तजामिया फंडकी घटी पूरी करनेमें नहीं खर्च कर सकते.

अब ए साहबान कौम देखिये कि जब मथुरावाले और सेठीजी और मुन्शी चम्पतराय यह गड़बड़ कर रहे थे, तो सहारनपुर वालोंने क्या २ कोशिस की, और लड़कोंको भागनेसे किस तरह रोका। लेकिन अफ़शोस यह कसूर करनेवाले सब मुर्खरू हो गये। और सब इल्जाम हम लोगों पर आ पड़ा। लेकिन अब कलई खुल गई, और अब आप साहबान पर मुन्शी चम्पतराय और सेठ द्वारिकादासकी होशयारी और चालाकी जाहिर हो जायगी। और यह माछूम हो जायगा कि, क्या ऐसी ही चालाकीसे कौमकी तरक्की होती है !

बिलाशक। दुनियवी तरक्की चालाकीसे होती है। लेकिन धर्मके मामलेमें हमेशा सच्चा रहना चाहिये, वरना काम कभी फ़तह नहीं हो सकता। और चालाकी, होशयारी सब आखिरकार जाहिर हो जाती है।

जब कि, ४ मार्चको सेठीजीने मेरे पास खत भेजा कि, ५ लड़के भागते हैं, मैंने फ़ौरन कमेटीकी और कमेटीने हर तरह लड़कोंकी दिलजोई की। और कहा कि, तुम्हारे लिये जैनपण्डित शीघ्र मुकर्रिर किया जावेगा। और अगर तुमको प्लेगका खौफ है, तो तुम्हारे लिये बंगला तजवीद हो सकता है। लेकिन लड़के कुछ सेठीजीकी सख्तीसे और कुछ मथुरावालोंकी गड़बड़ीसे घबड़ा रहे थे, परन्तु उन्होंने रहना मंजूर किया। सेठीजीने इस मौकेपर यहभी कहा कि, जो लड़कोंकी डाँक आती है, वह मेरी मार्फत् आती है, जिस खतपर मुझको शक होता है, खोलकर देख लेता हू। चुनांचे सोनपाल विद्यार्थीका खत मैंने खोलकर देखा तो उससे माछूम हुआ कि, बम्बईवाले लड़कोंको बहकाते हैं। ६ तारीखको सेठीजी जयपुरको भाग गये। ७ मार्चको यहां पंचायत हुई, जिसमें लाला जुगमन्दरदासजी सभापति और लाला अजितप्रसाद देहरादूनसे बाबू बेनीचन्दको भेजकर खास तौरसे बुलाये गये। और प्रस्ताव पास किये गये, जिनकी नकलें खास साहबानको भेज दी गई हैं.

सेठीजीके ६ तारीखको भागने पर लड़कोंके फिर पैर उखड़े। और उन्होंने आठ तारीखको दरख्वास्त दी कि, हमको रुखसत मिल जावै।

(नकल अर्जीकी यह है)

दिगम्बर जैन महाविद्यालय
सहारणपुर ८।३।०६

श्रीयुत परमसज्जन बाबू बनारसीदास सा. योग्य, सर्व विद्यार्थियोंका यथायोग्य धर्मस्नेह। उभयत्रशम् ? निवेदन यह है कि,

यहांपर प्लेगका प्रकोप हो रहा है, और वह दिन दिन वृद्धिरूप होता जाता है, अतएव हम सर्व आपसे छुट्टीकी प्रार्थना करते है। क्योंकि इस बीमारीका परिपाक बहुतही कष्टप्रद है। यदि इस समयमें बीमारीका शोर न होता, तो काहेको आपको परिश्रम देनेमें आता। हम मथुरासेभी यही आशा करके यहां आये थे कि, निस्सन्देह सहारनपुरमें हमारे भाग्यका शुभोदय होगा। परन्तु खेद है

कि, यहांपर एक और ही इस बीमारीका बखेड़ा होगया, अस्तु इस समय आपभी विशेष आग्रह न कर हमको छुट्टीकी आज्ञा देवैं। क्योंकि हम तो आपहीके आश्रयपर यहां आये हैं, और न मालूम एक दिन भरमें क्या हानि हो जाय। इस बीमारीका एसाही प्रभाव है।

आशा है कि, सेवकोंकी बात स्वीकार होगी, हम छुट्टी पूर्ण होनेपर शीघ्रही आ जावैंगे। अन्तमें एक यहभी प्रार्थना है कि, इस समय हम सर्व खर्चसे बड़े तंग हैं, अतएव मकान तक जानेका खर्चा अवश्यही दिया जाय। आशा करते हैं कि, हमारा मनोरथ पूर्ण करेंगे। अलमिति।

आपके हितैषी
सर्व छात्रवृन्द।

ए साहवान ! इस अर्जीपर ये रायें हुई।

To,

B. Chandoo Lal for disposal.
Benarsi Dass 8/3/06

I can arrange to change the house. There is no plague at all on my side. I can give the house here. If these boys do not like house on this side as well I can arrange for a Benglow out the city. I don't think it proper to grant leave, this is a mere lame excuse and there is no such plague here. Forwarded for further order to lala Badridass rais so that on the consultation of Mr. Babu Lal, P. Chunni Lal, B. Jugmandar Dass and B. Nemi Dass vice-president, proper order may be passed.

Chandoo Lal. 8/3/06

For favour for orders to Lala Jugmandar Dass President.

Badri Dass 8/3/06

मेरी रायमें इन लड़कोंका उजर बिलकुल गलत है। प्लेग शहरमें नहीं है. अगर उनको मकानका खौफ है, तो दूसरा मकान या बंगला तजवीज किया जावे। यह अर्जी न मंजूर होनी चाहिये। सभापति साहबका हुक्म हासिल किया जावे।

नेमीदास वायस प्रेसीडन्ट
८-३-०६

The house meant for school is in separate quarter and in one end of the city. Students' excuse clearly is a lame one as suggested by B. Nemi Dass and B. Chandoo Lall. If they were afraid of plague, which is thought not in Saharanpur in that locality some other arrangment for their lodging such as Benglow or some neat house in any other part may be made. Hence in order the above circumstances the application is not granted at all. The secretary of the committee may submit the true copy of this application with diferent report and order of it to the secretary Mahasabha Deputy Champat Rai Cawnpur.

Jugmandar Dass 8/3/06

हिन्दीमें तर्जुमा

बखिदमत बाबू चन्दूलालके यह अरजी फैसलेके लिये भेजी जावे ।

बनारसीदास ८।३।०६

मैं मकानकी तबदीलीके वास्ते इन्तजाम कर सकताहूं। मेरी तर्फ बिलकुल प्लेग नहीं है। मैं इधर मकान दे सकताहूं। अगर ये लड़के इधर मकान पसन्द न करें, तो मैं शहरके बाहर बंगलेका इन्तजाम कर सकताहूं। मेरे ख्यालमें छुट्टी देना ठीक नहीं है। ये एक झूंठा बहाना है। यहां इस कदर प्लेग नहीं है। ये अर्जी और हुक्म लेनेके वास्ते लाला बद्रीदासके पास भेज देनी चाहिये। ताकि मुन्शी बाबूलाल, पं० चुन्नीलाल, बाबू जुगमन्दरदास, और बाबू नेमीदास उपसभापति साहबकी रायसे ठीक हुक्म पास हो जावे।

चन्दूलाल ८।३।०६

लाला जुगमन्दरदास सभापतिकी सेवामें हुक्मके वास्ते भेजी जावे।

बद्रीदास ८।३।०६

(नोट) बाबू नेमीदासजी उपसभापति साहबकी राय हिन्दीमें ऊपर दर्ज है ॥

स्कूलका मकान एक अलहदा जगह और शहरके सिरेपर है। विद्यार्थियोंका बहाना बिलकुल झूंठा है। जैसा कि, बाबू नेमीदास, बाबू चन्दूलालने बताया है। अगर वे प्लेगसे डरते हैं, तो (चूंकि सहारनपुरके उस मुहल्लेमें नहीं है) कोई दूसरा इन्तजाम उनके रहनेके वास्ते मिस्ल बंगला या और कोई साफ मकान, किसी दूसरे मुहल्लेमें हो सकता है। इसवास्ते ऊपर लिखे हालतोंके वजहसे उनकी अर्जी नहीं मंजूर की जाती है। कमेटीके सेक्रेटरीको इस अर्जीकी ठीक २ नकल मय मुखूतलिफराय और हुक्मके महासभाके सेक्रेटरी डिप्टी चम्पतरायके पास कानपुर भेज देनी चाहिये।

जुगमन्दिरदास ८।३।०६

ए साहबान इससे पूरे तौरपर आपको मालूम हो जायगा कि, किस तरह मेम्बरान कमेटीने लड़कोंको जानेसे रोका। लेकिन वह कैसे रुक सकते थे। बाबू अर्जुनलाल सेठीको जयपुर तार दिया गया।

नकल तार यह है

Boys going come in immediately with out fail.

(तर्जुमा)

लड़के भागे जाते हैं, जरूर जल्द आओ, वगैर चूके हुये।

और सेठ द्वारिकादासजीको भी तार दियागया.

(नकल तार यह है)

Argun Lal gone to Jaipur mahavidyalay boys are going, what to do wire.

(तर्जुमा यह है)

अर्जुनलाल जयपुर गये, महाविद्यालयके लड़के भागते हैं, बजरिये तार इत्तला दो कि, क्या करना चाहिये।

लेकिन कोई जबाब नहीं आया। मुन्शी चम्पतरायको दरख्वास्तकी नकल भेजी गई, लेकिन कोई जबाब नहीं आया। आखिरकार

जब लड़कोंने नहीं माना, तो उनको ४०) रुपये खर्चके दिये गये, और १९ रोजकी रुखसत उनको ता० १० मार्चसे दी गई। और लड़कोंने इकरार किया कि, २६ मार्च तक आ जांयगे। और २६ मार्चको महावि० खुलैगा, इसका नोटिस जैनगजटको भेजा गया। लेकिन लड़के कैसे आसकते थे सब मथुरा पहुंचे और वहां अब जमा हैं। और वहां पाठशाला कायम करनेकी तय्यारी हो रही है।

ए मैम्बरान महासभा! ऊपरकी कार्रवाईसे आपको सब जाहिर हो जावैगा कि, कुल गड़बड़ मथुरावालोंने, मुन्शीजीने और सेठीजीने की है। और अगर ये लोग गड़बड़ न करते तो जरूर यहां वैशाखतक स्कूल कायम हो जाता। वाज साहवानका ख्याल है कि, ७ जनवरीको जो प्रस्ताव हमने पास किया था कि, हाईस्कूलके दो डिपार्टमेंन्ट होंगे, संस्कृत और अंगरेजी। संस्कृत डिपार्टमेंन्टके उस्तादोंकी तनख्वा ७९) रुपये होगी, अंगरेजीके उस्तादोंकी तनख्वा ४८०) रुपया होगी और मुतफर्रिक खर्च ९९) रुपया होगा। उससे हमारी ये मुराद थी कि, अब तक जो रुपया महाविद्यालयमें जैनकालेजके नामसे जमा हुआ है उसको अंगरेजी तालीममें खर्च कर डालें और संस्कृत तालीम बिलकुल उठ जावे।

ए साहवान! मैं यकीन दिला सकताहूं कि, हमारा हर्गिज ऐसा मन्सा न था और हमको ख्वावमें भी यह ख्याल न था कि, हम महाविद्यालय तोड़ डालें। भला आप ख्याल करें कि, हमारा इसमें क्या हर्ज होता है। अगर कौम दश महाविद्यालय कायम करे हमको ऐन खुशी है। हम तो चाहते हैं कि, जगह २ जैन कालेज और जैनमहाविद्यालय कायम हो जावें और जैन कौममें बड़े २ पण्डित होवें। हम अपने भाइयोंको यकीन दिलाते हैं कि, हमारा मन्सा कभी महाविद्यालयको तोड़ने या उसका रुपया खर्च करनेका नहीं था। बल्कि ७ जनवरीको सबसे कह दिया गया था कि, जो रुपया अब तक महाविद्यालयके फंडमें जमा है, वह सिर्फ संस्कृतकी तालीममें जैसी कि, अब हो रही है खर्च होगा। मुन्शी चम्पतरायका जमीमा नम्बर ८ कि फंड अलहदा २ होंगे पास कर दिया गया था। और हमने जब प्रस्ताव पास कियाँ था कि, स्कूलके दो विभाग होंगे। उस वख्त हमको यह ख्याल न था कि, वाज २ शख्स महज नामके उपर विरोध करेंगे, वरना हम हर्गिज ऐसा नहीं करते। हमने सिर्फ यह सोचा था कि, जैसा अलीगढ़में मुसलमानोंका कालेज M. A. O. यानी Mohamaden Anglo Oriental College है वैसाही जैनियोंका J. A. O. College यानी Jain Anglo Oriental College करेंगे। और चूंकि इसवक्त स्कूलही खुलता है। इसवास्ते इसका नाम J. A. O. High School यानी Jain Anglo Oriental High School रखा था। बाज मेरे दोस्तोंकी और सेठीजीकी राय थी. J. A. O. High School नाम हो।

यानी Jain Anglo Sanskrit High School नाम हो, ये नामभी अच्छा था। और उसमें हमको कोई उजर न था, लेकिन वाज साहबोंने कहा कि, अंगरेजीका नाम बुरा है, और गलतफैमी पैदा करना शुरू की, कि, हमने महाविद्यालयको तोड़ डाला है। और नामके ऊपर झगडा करना शुरु किया। चुनांचे हमने महाविद्यालय नाम कायम रक्खा और स्कूलका नाम रद्द कर दिया। पहिले स्कूलके अंगरेजी और संस्कृत दो सीगे थे। अब महाविद्यालयके अंगरेजी और संस्कृत दो सीगे हो गये।

वजटके बारेमें हमने संस्कृत उस्तादोंकी तनख्वाह वही रक्खी थीजोकि अब है, यानी ७५) रुपये। चूंकि अंगरेजीका माष्टर जो अब है वह स्कूलसे काम कर सकता था, इसवास्ते सिर्फ संस्कृतके दो उस्तादोंकी तनख्वाह ७५) रुपये रक्खी थी, जैसी कि, अब है। और १५) रु० जो अब अंगरेजीके मास्टरको मिलते हैं, उसकी तखफीफ कर दी थी। ४८०) रु० अंगरेजीके माष्टरोंकी तनख्वाह रक्खी थी। और अगर स्कूल होगा तो जरूर इससे ज्यादा तनख्वाह रखनी पड़ेगी। मुतफर्रिक खर्चके ९५) रु० रक्खे थे. यह महज हम लोगोंने खर्चका तखमीना किया था कि, काम चलानेको किस कदर रुपयेकी जरूरत है। और यह सबसे कह दिया गया था कि, अंगरेजीके तालीमके लिये और रुपयेका इन्तजाम करना पड़ैगा। चुनांचे इस वजहसे सहारनपुरसे ४५ हजारका चन्दा लिखा गया और आशा थी। सिवाय इसके हमको वरवक्त अखत्यार है कि, जरूरतके माफिक वजट बढा लेवें। और जिस वक्त मथुरासे लड़के आये और हमको मालूम हुआ कि, लड़के खाना भी महाविद्यालयसे खाते हैं। हमने फौरन आतेही इन्तजाम किया और बजटको बढ़ा दिया जैसा कि, ६ फरवरीकी कार्रवाईमें छपा है। हमारा मतलब तो महज काम करनेसे था।

ए साहवान! आपको यहभी मालूम होगा कि, कालेजके कायम करनेका काम आसान नहीं है। और काम करनेवालोंसे गलती भी होती है, अगर कोई अपनी गलतीपर हट करै तो बुरा है। लेकिन हम हमेशा आमादा रहे कि, अगर हमसे कोई गलती हो तो उसको दुरुस्त करैं। और यह बात आपको हमारे प्रस्तावोंसे मालूम हो सकती है कि, हमने किस तरह इमानदारीसे काम किया। और कभी हमारा मन्सा यह नहीं हुआ कि, हम हट करैं। और जब कभी किसी प्रस्ताव पर उजर किया गया, तो उसको बदल दिया।

अब ए साहवान इस गजबूनको खतम करता हूं. और उम्मेद है कि, इससे बहुत कुछ गलतफैमी दूर हो जायगी। और आप साहवानपर जाहिर हो जायगा कि, जो कुछ गड़बड़ और दिक्कतें पैदा कीं। वह मथुरावालोंने अर्जुनलाल सेठीने, और मुन्शी चम्पतरायने कीं। और अगर यह लोग गड़बड़ न करते, तो महाविद्यालयका पौधा अभीतक मय अपनी अंगरेजी और संस्कृत दोनों शाखाओंके एक सरसब्ज हरा बाग

नजर आता। मुन्शी चम्पतरायकी आखिरी करतूत कि, जिससे उनकी पूरी होशयारी और चालाकी नजर आती है, इस बातसे जाहिर होती है कि, उन्होंने जैनगजट वर्षके ११ अंक ९ में महासभाकी प्रबन्धकारिणीकमेटीके मैम्बरोंके नाम छपवाये, जिनमें मेरे नामके आगे **ज्वाइन्टजनरल सेक्रेटरी तथा सेक्रेटरी महाविद्यालय** छपवाया। जब मुन्शीजी मथुरावालोंमे मिल गये, तो जैनगजट वर्ष ११ के १३ अंकमें भूल संशोधनके नामसे छपवाया कि, जैनगजट अंक ८ वर्ष ११ में बाबू बनारसीदासजीके नामपर मंत्री महाविद्यालयका शब्द भूलसे छप गया है। क्योंकि सभाके समय कोई मंत्री नियत नहीं हुआ था। जनाब प्रेसीडेंट साहब दानवीरने गलतीका सबब पूछा, इसी कारण विज्ञापन दिया जाता है कि, पाठकवृन्द भूल क्षमा करें। चम्पतराय म. मंत्री। इसके बाद १४।१५ अप्रैलको जो मेनेजिङ्ग कमेटी महासभा मथुरापर हुई उसमें प्रस्ताव नम्बर १ मेरे विषयमें पास किया। वह यह है।

चूंकि बाबू बनारसीदासजी पहिलेसे महासभाके ज्वाइन्टजनरलसेक्रेटरी थे, और अब लोकल कमेटी सहारनपुरके सेक्रेटरीका कामभी उनके सुपुर्द कर दिया गया है। और ऐसी सूरतमें मौजूदा हालतमें बाज २ दिक्कतें और मुश्किलें दरपेश हुई हैं। और बाज सूरते कबाहतोंकी पैदा होती जाती हैं। इसलिये फिलहाल यह मुनासिब मालूम होता है कि, बाबू बनारसीदासजी साहबको महासभाके ज्वाइन्टजनरलसेक्रेटरीशिपके बोझका जिम्मेदार न रक्खा जावे।

मुन्शीजीको इतनेपर भी सन्तोष न हुआ। और इधर उधर मेरे बारेमें लिखने लगे। चुनांचे जैनमित्र अंक १४ में आपने देखा होगा। सेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीको मुन्शीजी लिखते हैं कि, "चन्देका रुपया इकट्ठा न होनेके मूल कारण बाबू बनारसीदासही हैं। आप खुदही सेक्रेटरी बन गये, और लोगोंको बुरा भला कहने लगे। समझदार मीटिंगमें आते नहीं, भोले आदमियोंसे जिस प्रकार चाहा पास करा लिया। उनके प्रस्ताव फजूल और अखत्यारसे बाहर थे। इत्यादि

इन लेखोंका जबाब मैं फिर दूंगा। लेकिन यहां सिर्फ मैं इतना अर्ज करताहूं कि, इन लेखोंसे मुन्शीजी सब इलजाम मुझपर डालते हैं और आप सुर्खरु बनते हैं। गोया जो कुछ गड़बड़ अभीतक हुई वह मुन्शी चम्पतराय, बाबू अर्जुनलाल सेठी और मथुरावालोंकी वझेसे नहीं हुई। बल्कि मेरी वझेसे हुई। लेकिन मैं यहां मुन्शीजीको कौमके साम्हने बुलाता हूं। और साबित करें कि, जो कुछ गड़बड़ और दिक्कतें पैदा हुई, वह मेरी वझेसे हुई, और इन तीनोंकी वझेसे नहीं हुई। अगर मुन्शीजी कुछ हिम्मत रखते हैं, तो जरूर मेरे इस मजमूनका जवाब दें, और साबित करें कि, मेरा यह कहना सच है या झूंट। अगर यह तीनों गड़बड़ न करते तो अभीतक सहारनपुरमें जैनमहाविद्यालयका जैन कालेज बन जाता। आ-

खिरमें ए साहबान इतना और जाहिर करना चाहताहूं कि, अब मेरा इन लोगोंके साथ काम करनेको जी नहीं चाहता। क्योंकि अब मुझको इनका बिलकुल एतबार नहीं रहा है। कभी यह मुझसे मिलते हैं। कभी यह दूसरोंसे मिलते हैं। खुद गड़बड़ करते हैं, और दूसरोंपर इलजाम डालते हैं। और एसा करते हुए न इनको इस दुनियाका न दूसरी दुनियाका खोफ मालूम होता है। मैं १० वर्षसे काम कर रहाहूं, और इन लोगोंके साथ इस वझेसे काम किया था। कि, मैं उनको सच्चा कौमका खेरख्वाह समझता था, लेकिन अब उनकी करतूत मुझको माव्हम होगई, और पूरे तोर पर यकीन होगया कि, यह लोग सिर्फ नामके ख्वाह हैं। और ऐसे खुदगर्ज और मान बड़ाईके चाहनेवाले और होशयार लोगोंसे कौमकी तरक्की नहीं हो सकती। और इन लोगोंके साथ काम करना अपने मन, तन और धनको फजूल लगाना है। इन लोगोंकी इस करतूतको देखकर मैंने ३ मार्चके करीब सेठ द्वारिकादासको अपना महासभाके कामोंसे स्तीफा भेजा था। और उस वक्त उसकी नकल जैनगजटमें बा. देवकुंवारके पास छपनेको भेजी थी। मेरे स्तीफेकी नकल यहां दफ्तरके रजिस्टरमें मौजूद है। इस अरसेमें बा. जुगमंदरदास, बा. बाबूलाल, पं० चुन्नीलाल, बा. सूरजभान वगैरा यहां जमा हुए, और पं० चुन्नीलाल और बा. जुगमन्दरदास और बा. बाबूलालसे और मुझसे मेरे दफ्तरमें रातके वक्त गुफ्तगू हुई। और इन लोगोंसे मैंने साफ कहा कि, मैं अब काम करना नहीं चाहता। लेकिन इन लोगोंने मुझको दबाया और मुझको काम करनेके लिये मजबूर किया। अगले रोज सुबहके वक्त मंदरजीमें बा. अर्जुनलालने कसम खाई कि, अब हम तुम स्कूलका काम मिलजुलकर करेंगे। बा. अर्जुनलालकी वझेसे कोई दिक्कतें पेश न आवेगीं। और उसी शामको बा. चन्दूलालके मकानपर कमेटी हुई, जिसमें बा. जुगमदरदासने कहा कि, बनारसीदास और मुन्शी चम्पतरायकी तकरार नहीं हो सकती। और यह वह खत जो मेरेपास मुन्शी चम्पतरायने भेजा कि, हम तुमको महाविद्यालयका सेक्रेटरी तसलीम नहीं करते और सहारनपुरकी कमेटीको महाविद्यालयसे कोई ताल्लुक नहीं है। वह मुन्शी चम्पतरायने मेरेपास मेरी खातरी, हैसियत से भेजा है, न कि, बतोर सेक्रेटरीके। कमेटीको बा. जुगमंदरदास और बा. बाबूलालने यहभी यकीन दिलाया कि, यह चिठ्ठी मुन्शी चम्पतरायको वापिस लेना पडेगी और वापिस करावेंगे। ऐसी २ कारवाई करनेपर और सहारनपुरके जोशको कायम रखनेकी वझेसे मैंने बा. जुगमंदरदासका कहा मान लिया। और बा. देवकुंवारको लिखा कि, यह मेरा स्तीफा जैनगजटमें न छापा जावे। और सेठ द्वारिकादासके पास जो स्तीफा भेजा था, उस्की तरफ ज्यादा ध्यान न दिया। इस अरसेमें मैंने मुन्शी चम्पतरायको भी लिख दिया था कि, मैं आइंदासे आपके साथ

काम करना नहीं चाहता। लेकिन ताज्जुब है कि, मेरा स्तीफा सेठ द्वारिकादास और मुन्शी चम्पतरायने छिपा लिया। और मुन्शी चम्पतरायकी और अपनी सुर्खरुईके लिये वह प्रस्ताव पास किया, जिसका मैंने उपर जिकर किया है। लेकिन मुझे इस प्रस्तावका कोई अफसोस नहीं है। क्योंकि, दुनियांमें ऐसे २ किस्से कहानी सुननेमें आते हैं। जिसमें लोगोंने खुद जाल किये हैं। और खूनका इलजाम दूसरोंपर डालनेके लिये दूसरोंके बदन और कपड़ोंको खून लगा दिया है, ताकि जाहिर होवे कि, कातिल यह दूसरे हैं, न कि, आप। लेकिन यह मेरा पूरा विश्वास है कि, सच कोई चीज है। और मुझको सच पर पूरा विश्वास है। मैं आज सेठ द्वारिकादास और मुन्शी चम्पतरायकी करतूतके ऊपर हंसता हूं कि, क्या आप लोगोंका इतनाही दिल है, और इतनेही दिलवाले कौमकी तरक्की किया करते हैं। कामकी तरक्की करना सिर्फ इसीका नाम नहीं है। कि, प्रेसीडेन्ट या मंत्री बन जाना और अम्बाले या सहारनपुरमें बाजे गाजेके साथ बाजारोंमेंसे निकल जाना। बल्कि यह कि, सच्चे दिलसे काम करें, अपनी सचाईपर कायम रहें अपनी खुदगरजी और मान बड़ाईको छोड़दें। जिस काममें कौमकी बहतरी होवे, उसको करैं। और सबसे ज्यादा यह कि, किसीका दिल न दुखावें और अपने आप सच्चा बना रहे। अगर कोई कसूर करे तो उसको कबूल करे। और अपनी सुरखरुईके लिये दूसरोंपर उसका इलजाम न डाले।

ए साहबान अब बा. अर्जुनलाल सेठीकी मेरेपास जैपुरसे चिट्ठी आई है कि, मेरे कपड़े रवाने कर दो। अफसोस इन लोगोंकी हालतपर, इन्होंने अपनी जिन्दगी दी।

चिट्ठीकी नकल यह है

जयपुर १।६।०६

मान्यवर बाबू साहब

इन दिनोंमें आपका कोई पत्र नहीं आया। आशा है कि, पत्र जरूर भेजवावेंगे। School और विद्यालयका क्या हाल हुआ, कृपया लिखिये। मुझे क्षमा किजिये मैं आपको तकलीफ देताहूं वह यह है कि, महाविद्यालयके मकानमें मेरा Bedding और एक कपड़ोंका ट्रंक रक्खा हुआ है। अलावा इसके हमारी करीब १००० के ; पतितभारत नामका किताबोंका बंडल है। आप मिहरबानी करके Goods से भिजवा देवें, तो बड़ीही कृपा होगी।

उत्तर शीघ्रही प्रदान किजिये

आपका सेवक
Arjunlal Sethy B. A.

आखिरमें उस शेरको फिर दोहराताहूं।

यह बड़ा एब है तुझमें कि तू हरजाई है।
न मिलूं फिर न मिलूं अब तो यह ठहराई है॥

सहारनपुर
११ जून १९०६

बनारसीदास वकील
एम. ए. एल. २ बी.
लेट ज्वाइंट जनरलसेक्रेटरी दि. जैन महासभा

सैकड़ों शास्त्रदान करनेका—

सरल उपाय.

विदित हो कि पूर्वकालमें छापेका प्रचार न होनेके कारण समस्त दानोंमें उत्कृष्ट शास्त्रदान कोई विरला ही धर्मात्मा धनाढ्य कर सक्ता था. परन्तु इस समय छापेके प्रभावसे शास्त्रदान करनेका (ज्ञानविस्तारका) वह साधन हो गया है कि जिसको साधारण भाई भी इस दानके पुण्यको प्राप्त कर सक्ता है। भाइयो! आज हमारे भारतवर्षमे जो लाखों ईशाई हो गये हैं वे एकमात्र शास्त्रदानके प्रभावसे ही हो गये हैं। यदि इसीप्रकार हमारे समीचीन उद्देशपूर्ण अहिंसाधर्मके प्रतिपादन करनेवाले शास्त्रोंका प्रचार होता तो क्या यह पवित्र धर्म ऐसी अवनतदशाको पहुचता ?

खैर जो कुछ हुआ सो हुआ–अब उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है-इसकारण हम शास्त्रदान करनेका एक सरल उपाय बताते है कि, आप नीचें लिखे जैन ग्रंथोंमेसे किसी एककी छपाईकी लागतके रुपये हमारे-पास भेज देंगे तो हम आपके रुपयोंसे उस ग्रंथकी १००० प्रति छापकर तैयार करेंगे उनमेसे २५० प्रति तो हम रुपयोंके व्याजमे दान करनेके लिये आपको भेज देंगे. और शेष ७५० प्रति वेंचकर आपके रुपये आपको भेज देंगे. अथवा आपकी आज्ञा होगी तो प्रतिवर्ष दूसरा तीसरा ग्रंथ छपाकर उनकी भी अढाइसौ २ प्रति आपको शास्त्रदानार्थ भेजी जाया करेंगी.

इस विषयमे कुछ पछना हो तो पत्रद्वारा पूछ सक्ते है.

छपनेके लिये तयार ग्रंथ ये हैं:—

नामग्रन्थ.	अनुमानसे छपाई खर्च.
मनोरमा उपन्यास जैनेन्द्रकिशोरकृत	२००)
वृंदावनविलास कविवर वृंदावनकृत	३००)
वृंदावनकृत चौवीसीपाठ अतिशुद्ध	३५०)
वृंदावनकृत तीसचौवीसीपाठ अतिशुद्ध	५००)
तत्त्वार्थसूत्र-बालबोधिनी पदपदकी भाषाटीकासहित विद्यार्थिओमें पढाने व भाइोमें बांचनेलायक	२५०)
जैनबालबोधक दूसरा भाग	२५०)
जैनबालबोधक तीसरा भाग	३५०)
शाकटायनव्याकरण प्रक्रियासंग्रह	६००)
जैनस्त्रीशिक्षा प्रथम भाग	६०)
जैनस्त्रीशिक्षा द्वितीय भाग	१००)

पत्र भेजनेका पता—पन्नालाल जैन,
पो. गिरगांव-मुंबई.

ओंनमः सिद्धेभ्यः

अध्यात्म तथा भक्तिरसका भंडार.

भाषासाहित्यका शृंगार.

बनारसीविलास।

और

ग्रंथकर्ता कविवर बनारसीदासजीका वृहत्

जीवनचरित्र।

छपगया! सुन्दर जिल्दसहित तैयार हो गया!!

बहुत थोडे लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने आगरा निवासी स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजीका नाम न सुना हो आपकी कविता ऐसी मनोरम और चित्ताकर्षक है कि एकवार पढकर फिर छोडनेको जी नहीं चाहता. निरन्तर पढते रहना ही सुहाता है। भाषासाहित्यमे आपसरीखी सुंदर रसालंकारादि काव्यके अंगोंसे परिपूर्ण कविता बहुत थोडी है। जिन्होने नाटकसमयसारग्रंथकी अध्यात्मरसमे सराबोर कविताका पाठ किया है, वे जानते है कि, आप कैसे प्रतिभाशाली कवि थे। आपके बनाये हुए कई ग्रन्थ हैं. उनमेसे अभीतक नाटकसमयसारके सिवाय और कोई भी ग्रंथ मुद्रित नही हुआ था। इसलिये हमने बडे परिश्रम और अर्थव्ययसे आपका यह दूसरा ग्रंथ **बनारसीविलास** छपाके तैयार किया है। यह ग्रन्थ बनारसीदासजीकृत जिनसहस्रनाम, सूक्तमुक्तावली (संस्कृत सहित), ज्ञानबावनी, वेदनिर्णयपंचासिका, अध्यात्मफाग, परमार्थवचनिका, उपादान निमित्तकी चिट्ठी, अध्यातमपदसंग्रह आदि—

५९ ग्रंथरत्नोंका—

संग्रह है। इस संग्रहसमूहको ही **बनारसीविलास** कहते है। बनारसीदासजी सरीखे प्रसिद्ध कविवरकी कविताकी प्रशंसा करना एक प्रकारसे व्यर्थ ही है, परन्तु हम अपने ग्राहकोंसे इस विषयमें इतना कहे विना नही रह सक्ते कि, यदि आपको अध्यात्म, भक्ति और विविधप्रकार उपदेशयुक्त वैराग्यादि रसोंके अपूर्व

आनंदका अनुभव करना है, तो एक बार इस ग्रन्थसरोवरमें अवश्य ही गोता लगाइये। कदाचित आपने **ब्रह्मविलास** मगाकर पढा होगा. परन्तु इसके पढनेसे जो आनंद होगा वह एक भिन्न ही प्रकारका होगा।

इस ग्रन्थके प्रारभमें ११३ पृष्ठोंमें ग्रन्थकर्ता कविवर बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र दिया गया है। हिन्दीमें इतना बडा और इतना विश्वस्त जीवनचरित्र आजतक किसी भी कविका प्रकाशित नहीं हुआ है। इसे पढकर पाठक अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इससे ग्रन्थकर्ता और उनके समयका इतिहास ही नहीं विदित होता है. परन्तु अनेक अनुकरणीय शिक्षायें भी प्राप्त होती हैं। प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायनिरत जैनीभाइयोंको इस ग्रन्थका संग्रह अवश्य करना चाहिये। जगत्प्रसिद्ध निर्णयसागरके सुंदर टाईपमें चारों तरफ वेल लगाकर बडी सुंदरतासे इसकी तयारी हुई है, लगभग ४०० पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ १॥) रक्खा है. डांकखर्च ≈) जुदा पडैगा।

ब्रह्मविलास।

इसमें ६७ उत्तमोत्तम रत्न(विषय) हैं, इसको भैया भगवतीदासजीने विद्वानोंके कंठमें धारण करने योग्य एक मोहनमाला वनाई (गूंथी) है. जिसका नाम उन्होंने **ब्रह्मविलास** रक्खा है। अनेक महाशय इसे **भगवतीविलास** भी कहते हैं। यह ग्रन्थ दोहे चौपाई पद्धरिछन्द, छप्पय, सवैया, कवित्त आदिमें ऐसा उत्तम है कि, इसके प्रत्येक अक्षरसे जिनमतका रहस्य व उत्तमोत्तम उपदेश प्रगट होते हैं। इसको हमने जैनकवि भाई नाथूराम प्रेमीसे शुधवाकर जहांतक हमसे बना शुद्धतापूर्वक छपाकर तैयार किया है. यह ग्रन्थ चिकने कागजोंपर सुन्दर टाइपमें चारोंतरफ बेल लगाकर बहुत ही सुन्दर छपवाया गया है। पृष्टसंख्या ३०६ हैं। मूल्य रेशमी कपडे और कयाट्रिशकी जिल्द सहित १॥) रु० रक्खा है. वी. पी. मंगानेसे डांकव्यय ≈) जुदा पडैगा. जो महाशय एकसाथ ५ प्रति लेंगे, उनको १ प्रति विनामूल्य मिलैगी।

सनातनजैनग्रन्थमाला।

प्रथम गुच्छक।

अर्थात्

जैनधर्मके उत्तमोत्तम १४ संस्कृत ग्रन्थोंका रेशमी गुटका।

मूल्य सिर्फ १) रुपया।

इस गुटकेमें रत्नकरंडश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, आत्मानुशासन, समाधिशतक, नयविवरण, युक्त्यनुशासन, तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसार, अध्यात्मतरगिणी (समयसारकलशे) बृहत्स्वयंभूस्तोत्र, आप्तपरीक्षा, परीक्षामुख, आलापपद्धति ये १३ मूल ग्रन्थ और आप्तमीमांसा (देवागमस्तोत्र) सटीक इस प्रकार १४ ग्रन्थ छपाये हैं। यह गुटका पाठ करनेवालोंके सुभीतेके लिये बडा उपयोगी है। परदेशमें इस एक ही गुटकेसे बहुत काम निकल सक्ते हैं.

स्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षा।

विद्वद्वर्य पं० जयचंद्रजीकृत मनोहर भाषा टीका और संस्कृत छायासहित।

यह ग्रंथ अतिशय प्राचीन है. इसमें बालक, वृद्ध, युवा स्त्री जैन अजैन सबके पढने सुनने मनन करने योग्य जिनधर्मसंबधी समस्त विषय हैं। परंतु मुख्यतासे वैराग्यका उपदेश है जिसमें बारह भावना (अनुप्रेक्षा) का बडे विस्तारसे वर्णन है श्रावकधर्म और मुनिधर्मका वर्णन अपूर्व है। इस ग्रन्थकी मूल गाथा अतिशय प्रिय और सरल है. तिसपर भी गाथाके नीचे संस्कृतमें पदपदका अनुवाद (छाया) है. फिर बचनिका (भाषाटीका) है. निर्णयसागरकी टाईप और छापा तो जगत्प्रसिद्ध है ही मूल्य रेशमी कपडेकी पक्की और पक्की जिल्दका १॥) रु० और कच्ची जिल्दका १।) है. डांकव्यय ।) पडैगा. ये ग्रन्थ बहुतसे छपनेसे पहिले ही बिक गये हैं हमारेपास थोडीसी प्रति रही हैं जिनको चाहिये मँगालेवैं. विलम्ब करेंगे वे पछतावैंगे।

सुकुमाल उपन्यास।

सुकुमाल चरित्रको प्रायः सब ही जैनी जानते हैं, यह एकबार जैनबोधक मासिकपत्रमें छपकर पृथक् भी प्रकाशित हो चुका है, परन्तु इसकी कथा इतनी मनोहर है कि. वह १) रु. मूल्य होने पर भी हाथों हाथ विक गया।

उसकी भाषा ढूंढाडी थी; जिसको सब देशके जैनी भाई नहीं समझ सक्ते थे। इसकारण हमने प्रसिद्ध लेखक आरानिवासी श्रीयुत बाबू **जैनेन्द्रकिशोर**जी मन्त्री आरानागरी प्रचारिणी सभामे उपन्यासके ढंगमें उपन्यासकी मनोहर भाषामे लिखवाकर छपाया है मूल्य ।≈) डांकखर्च जुदा।

सूक्तमुक्तावली।

संस्कृत और भाषा कवित्त सहित।

इसको **सिंदूरप्रकर** भी कहते हैं. यह सोमप्रभाचार्यविरचित संस्कृतके उत्तमोत्तम छंदोंमे उपदेशमय काव्यग्रंथ है, इसमें धर्माधिकार, पूजाधिकार, गुरुअधिकार, जिनमताधिकार, संघाधिकार, अहिंसाधिकार, सत्यवचनाधिकार, अदत्तादानाधिकार, शीलाधिकार. परिग्रहाधिकार. क्रोधाधिकार, मानाधिकार, मायाधिकार, लोभाधिकार, सज्जनाधिकार, गुणिसंगाधिकार, इन्द्रियाधिकार, कमलाधिकार, दानाधिकार. तपप्रभावाधिकार, भावनाधिकार, वैराग्याधिकार, उपदेशगाथा इसप्रकार २३ विषयोंके चार २ काव्य हैं. और उसपर चार २ कवित्त वा सवैया कविवर बनारसीदासजीने बनाये हैं. इसके भी कवित्त और श्लोक कंठाग्र करनेवाले सभामे बहुत ही सुंदर व्याख्यान दे सक्ते है। मूल्य ।) डांकखर्च जुदा.

उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला.

यह सचमुच उपदेशरूपी रत्नोंकी माला ही है। इसके कर्ता आचार्य नेमिचन्द्रजी भंडारीने बडी सुन्दरतासे इस मालाकी रचना की है। मूल गाथा और मराठी तथा हिन्दी भाषाटीकासहित इस पुस्तकका मूल्य ॥) से घटाकर ।≈) कर दिया है। इसमें समंयगुरुका खंडन बहुत ही उत्तम रीतिसे किया गया है।

नित्यनियम पूजा बडी।

संस्कृत और भाषा।

जिसमें सिद्धोंकी द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनों हैं, तथा द्यानतरायजीकृत देवगुरुशास्त्रकी भाषा पूजा तथा बीस विहरमानकी भाषा पूजा और लघु अभिषेक, शान्तिपाठ, विसर्जन, अन्तकी स्तुति भी संग्रहीत है. बडे २ अक्षरोंमें बेलदार निर्णयसागरमें पुष्ट कागजोंपर बहुत शुद्ध छपाया है. मूल्य ।~)

क्यों साहब ?

क्या आपको अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करनी है? यदि करनी हो तो नीचे लिखे सुरमोंमेंसे एक दो शीशी अवश्य मगाइये, और एक महीने लगाकर देखिये.

काला सुरमा नं० १ यह सुरमा हमेशह नेत्रोंमे लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है. मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥)

काला सुरमा नं० २ इस सुरमेको प्रातःकाल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १)

सफेद सुरमा नं० ४ इस सुरमेको सबेरे और शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठंडा सुरमा लगाया जावे. तो धुंद जाला दृष्टिमन्दता रतौंधा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा सुरमेको मधुमे मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला शीघ्र ही कट जाता है. परंतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिला हुवा होगा तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) रुपया. जिनकी आंखे गर्मीसे लाल रहती हैं उनको यह लाभदायक नहीं है।

नयनामृत अर्क नं० ८ इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है. मूल्य एक शीशीका... ... ।)

तरल सुरमा (अर्क) नं० ९ यह अर्क दिनमें दो बार लगानेसे नं. २ के समान गुण करता है. दुखती आंखोंकेलिये तो यह रामबाण ही है. खासकर यह सुरमा विधवा स्त्रियों और वृद्ध पुरुषोंकेलिये बनाया गया है. मूल्य १ शीशीका ... ... ॥)

इनके सिवाय नीचें लिखे जैनग्रंथ भी हमारेपास मिलते हैं.

संस्कृत जैनग्रंथ.

पंचाध्यायी (अलभ्य ग्रंथ) ॥)
क्षत्रचूडामणि काव्य (अर्थन्यास-नीतिका अपूर्व ग्रन्थ) १)
गद्यचिन्तामणि काव्य, (वादीभसिंह सूरिविरचित कादंबरीको मात करनेवाला अपूर्व गद्य ग्रंथ) २)
जीवन्धरचम्पू महाकवि हरिचंद्र-विरचित (गद्यपद्यमय) १)
नीतिवाक्यामृत (गद्य) सोमदेवकृत १)
न्यायदीपिका मूल ॥)
परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला टीकासह॥)
कातन्त्ररूपमाला व्याकरण १)
सर्वार्थसिद्धि पूज्यपादस्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्रकी संस्कृत टीका २॥)
सूक्तमुक्तावली (सिंदूरप्रकर) बना-रसीदासजीकृत कवित्तोंसहित ।)
धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य मूल १)
चन्द्रप्रभचरित ,, ,, ॥)
वाग्भट्टालंकार सटीक ॥)
द्विसंधान महाकाव्य सटीक महाकवि धनंजयकृत
नेमनिर्वाण महाकाव्य मूल ॥=)
यशस्तिलकचंपू सटीक पूर्वखंड ३॥)
यशस्तिलकचंपू सटीक उत्तरखंड २॥)
सुभाषितरत्नसंदोह अमितगत्याचार्य-विरचित ॥)
स्याद्वादमंजरी मूल (न्याय) २)
ताजिकसार हरिभद्रसूरिकृत सटीक॥)
अमरकोषमूल अनुक्रमणिकासहित ।-)
गणरत्नमहोदधि वर्धमानकविकृत स्व-कृत टीकासहित (व्याकरण) १॥)
शृंगारवैराग्यतरंगिणी सटीक ≡)

भाषाटीकासहित जैनग्रंथ.

जैनविवाहपद्धति भाषाटीकासहित ॥)
भक्तामरमूल हिंदी अर्थ और गुजराती पद्यसहित कपडेकी जिल्द ।)
आत्मानुशासन टोडरमलजीकृत ३)
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला हिंदी मराठी अर्थसहित ।≈)
द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह दूसरीबार छपा ≈)
रत्नकरंडश्रावकाचार अन्वयार्थसहित दूसरी बार नई तर्जका छपा है ।-)
धनंजयनाममाला संस्कृतका जैनकोष भाषाटीकासहित ।)
जैनधर्मामृतसार दूसरा भाग हिंदी मराठी अर्थसहित १)
धर्मपरीक्षा भाषाटीकासहित १॥)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित १)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नाथूराम प्रेमीकृत अन्वय और भाषाटीकासहित १)
पंचास्तिकाय संस्कृत छाया, अन्वय तथा संस्कृतटीका और भाषाटी-कासहित १॥)
द्वादशानुप्रेक्षा शुभचन्द्राचार्यकृत सं-स्कृत और जयचन्द्रजीकृत भाषा-टीकासहित ।≈)
वर्षप्रबोध ज्योतिष भाषाटीकासह ॥)
अमरकोष भाषाटीकासहित १॥)
अष्टांगहृदय वैद्यक जैनाचार्य वाग्भ-ट्टकृत, भाषाटीकासहित ८)

केवल हिन्दीभाषा वचनिकामय ग्रन्थ.

सुकुमाल उपन्यास ।≈)
मोक्षमार्गप्रकाशजी ३)
जैनबालगुटका ≡)

जैनबालबोधक प्रथमभाग पन्नाला-लकृत ।)
जैनबालबोधक पूर्वार्ध ,, ≡)॥
हिंदीकी पहिली पुस्तक ,, =)॥
हिंदीकी दूसरी पुस्तक ,, ।)
हिंदीकी तीसरी पुस्तक ,, ।≈)
स्त्रीशिक्षा प्रथम भाग ,, =)
स्त्रीशिक्षा दूसरा भाग ,, ≡)
नारीधर्मप्रकाश ,, ≡)
अंकगणित प्रथम भाग ,, ।)
कातन्त्रपंचसन्धी भाषाटीकासहित,,≈)
बालबोध व्याकरण संस्कृतका हिंदीमें प्रथमभाग ,, ।≈)
बालबोधव्याकरण दूसराभाग (छपता है) ,, ।≈)
दंपतिसुखसाधन प्रथमभाग ≈)
जैनतीर्थयात्रादर्पण जिल्दबंधा ॥)
पद्मपुराण बडा २३००० श्लोक ६)

छन्दोबद्धजैनग्रन्थ.

बनारसीविलास और बनारसीदास-जीका सविस्तर जीवनचरित्र १॥)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास) १॥)
श्रीपालचरित्र जिल्दसहित १॥)
जिनदत्तचरित्र जिल्दबंध १।)
पार्श्वपुराणजी जिल्दसहित १।)
नाटकसमयसार बनारसीदासकृत॥≈)
सहस्रनाम भाषा ,, -)
इष्टछत्तीसी बम्बईकी छपी सार्थ)॥
दर्शनपाठ संस्कृत दौलतदर्शन व बुधजनकृतस्तुतिसहित -)
छहढाला दौलतरामजीकृत -)
भक्तामरभाषा और संस्कृत -)॥
पंचमंगल रूपचंदजीकृत बंबईका छपा असली शुद्धपाठ -॥
दौलतविलास अब नहीं मिलता.

सूचना—ये सब ग्रंथ—भाई बद्रीप्रसाद जैन पोष्ट बनारससिटीके पास भी मिलते हैं।

मिलनेका पता—**पन्नालाल जैन,**
मालिक—**जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय,**
पो० गिरगांव-बंबई.

नये ढंगकी विनामूल्य पाकेट साइजकी

(सन् १९०७ व वीर सं. २४३३ की पंचाग व रेलवे गाइडसहित)

ज्ञानवर्धक डायरी ।

इसमें देशी कला, व्यापारादिके प्रसिद्धस्थान, तार, पोष्ट, कोर्ट आदिके कायदे व उत्तमोत्तम शिक्षायें भी रहेंगी । जो महाशय हमारे कारखानेसे निदान १० आनेकी निम्नलिखित स्याही खरीदेंगे, उनकी सेवामें यह सुंदर जिल्दबद्ध सर्वोपयोगी डायरी विनामूल्य अर्पण की जायगी । यह नियम अक्टूबरतकके लिये है, पश्चात् हम जिम्मेवार नहीं हैं । क्योंकि ग्राहकोंकी मांग धडाधड़ आरही है ।

जो स्याहीके ग्राहक नहीं हैं, उन्हें एक प्रति ९ आनेमें, व ९ प्रतिके ग्राहकोंको एक डायरी मुफ्त दी जायगी ।

ब्ल्यूब्लाक स्याहीका दर ।

२१ औंस स्याही होनेका पुड़ाकी	‌-।-
९ ,, ,, ,, ,,	६-
मामूली दो दवात ,, ,, ,,	‌६।

काली (वही खाताकी) स्याहीका दर ब्लूब्लाकसे द्विगुण है ।

शिक्षासागर–(सन् १९०६ का रो. ना.) करीब ६०० पृष्ठकी पुस्तककी. ६=॥

व्याख्याननिबंध—(व्याख्यान देनेकी रीति) की० ६-।

तीर्थयात्रा (यात्राकी उपयोगी बातों सहित सम्पूर्ण जैनतीर्थक्षेत्रोंका वर्णन है) की० ६=॥

इसके अतिरिक्त हमारे औषधालयमें परमोपयोगी तत्काल गुणदायक पवित्र और शुद्ध हरेक रोगकी दवा स्वल्पमूल्यमें मिलती हैं । गरीबोंको व धर्मार्थबांटनेवालोंको केवल पोष्टादि खर्च, व दवाकी लागत मात्र खर्चसे भेजते हैं । एक वार मँगाके अनुभव अवश्य लीजिये ।

पता–आर. यल. जैन–
स्वदशोपकारक कार्यालय.
खंडवा (सी. पी.).

श्री सम्मेदशिखरजीकी उपरैली वीसपंथी कोठी ।

सर्व भाइयोंको विदित हो कि, श्री शिखरजीकी वीसपंथी कोठीका कार्य जो सरकारकी ओरसे नियत रिसीवरके हाथमें था, उसका चार्ज मैंने ता. ९ मईको ले लिया है । और कोठीके सर्व प्रबन्धकेलिये शाह डाह्याभाई शिवलालको मुनीम–कोठी नियत किया है । अतः आयन्दा कोठीसम्बधी सर्वपत्रादि व रुपयादि जिसको भेजना हो, वह इस पतेसे भेजा करैं । "शाह डाह्याभाई शिवलाल–मेनेजर उपरैली कोठी मधुवन–पोष्ट पारसनाथ–जिल्हा हजारीबाग ।"

बोरसद } **चुन्नीलाल प्रेमानंद, मंत्री–**
प्रबन्धकारिणीसभा, वीसपंथीकोठी,

क्षमावणीके कार्ड ।

गतवर्ष अनेक भाइयोंने क्षमावणीके कार्ड मंगाये थे, परंतु समय न रहनेसे भाइयोंकी आज्ञापालन नहिं कर सका । इस कारण सूचना दी जाती है कि, जिनको क्षमावणीके कार्ड चाहिये भादों सुदी पंचमीसे पहिले २ हमारेपास फरमायस भेजैंगे तो हम कार्ड छपाकर भेज देंगे । विना नामके छपे कार्ड ।) सैकड़े नाम लिखावेंगे, तो ।) आने अधिक लगेंगे ।

पन्नालाल जैन,
पो० गिरगांव–बम्बई.

श्री

जिन धर्माभिमानी भाइयोंके लिये

सशास्त्र तयार किया हुआ

वज्रांग भैरव।

अर्थात्

बल, आरोग्य, पुष्टि और कान्ति बढ़ानेवाला पाक।

—:o:—

कोकण प्रान्तकी अनेक वनस्पतियोंके अर्ककी पुटें देकर और स्वदेशी शक्करका मिश्रण करके यह वज्रांगभैरव तयार किया गया है। यह भैरव महौषधि होकर भी अत्यन्त स्वादिष्ट है। इसके खानेसे वात, पित्त और कफ इन त्रिदोषोंके मिश्रणसे होनेवाले सम्पूर्ण रोग जो कि, आगे लिखे गये हैं, नष्ट होकर मनुष्योंका कल्याण होता है।

इसके सेवनसे नपुंसकत्व, स्वप्नजन्य व इतर धातुपात, उष्णता, इन्द्रियशैथिल्य, कडकी, गर्भसम्बन्धी उत्पन्न हुए विकार, मूत्रकृच्छ, धातुदौर्बल्य, स्त्रियोंका प्रदर, हृदयसम्बन्धी रोग, हाथपांव व नेत्रादिकोंमें दाहका होना, क्षय, पांडुरोग, (मुलांची खर), जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, बवासीर, वातरोग, निद्रानाश, पित्तविकार, प्रसूतिरोगादि अनेक विकार दूर होकर शरीर निरोगी, मजबूत और सतेज होता है। पाचनशक्ति व स्मरणशक्ति खूब बढ़कर तथा धातु व रक्तकी वृद्धि होकर स्तंभन होने लगता है। शक्तिको उत्पन्न करके उत्साहकी वृद्धि करता है। दूध व भारी अन्न अच्छी तरहसे पचने लगता है। इस औषधिका गुण एक सप्ताहके सेवनसे जान पड़ता है।

यदि नवीन रोग होगा, तो १४ दिवसकी खुराकवाले एक डिब्बेके सेवनसे गुण मालूम होने लगेगा, परन्तु यदि पुराना रोग होगा तो ३९ रोजके सेवनसे फायदा होगा। चौदा दिनके खाने योग्य एक डिब्बेका दो रुपया। एकट्ठा साढ़ेचार रुपयाका भैरव लेनेवालेको ३९ दिनके खानेयोग्य डिब्बा दिया जावेगा। अर्थात् ९) का भैरव ४॥) में दिया जावेगा। जिन्हें नमूनेके लिये मंगाना हो, वे १।) का म० आ० करके भेजदें। चौदह दिनका आधा डब्बा पेड पोष्ट करके भेज दिया जावेगा। पत्र पहुंचते ही व्ही० पी० के द्वारा भैरव भेजा जावेगा। डांक व पेकिंगका खर्च ग्राहकके जिम्मे होगा। चिट्ठी स्पष्ट बालबोध अक्षरोंमें आना चाहिये। अनुपानपत्र डिब्बेके साथ भेजा जावेगा।

मिलनेका पता—

एल. के. आर,
श्रीमदर्हत्प्रासादिक कम्पनी.
पो० निपाणी, जिला बेलगांव.

सूचना।

जैनमित्रसम्बन्धी सब प्रकारके लेख और संवाद तथा दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईके सम्बन्धकी चिट्ठियां हिसाब किताब नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये। लेख समयपर और स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ही तरफ लिखकर भेजना चाहिये।

गोपालदास बरैया—
मोरेना (ग्वालियर)

Registered No. 251

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम् ।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम् ॥

—अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

सप्तम वर्ष । भाद्रपद कृष्णा १ श्रीवीर सं० २४३२ । अंक २०

विषयानुक्रमणिका ।

चिट्ठी पत्री भेजनेका पता—

मैनेजर, जैनमित्र, सोलापूर.

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया ।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना ।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई.

श्री

जिन धर्माभिमानी भाइयोंके लिये सशास्त्र तयार किया हुआ

वज्रांग भैरव ।

अर्थात्

बल, आरोग्य, पुष्टि और कान्ति वढ़ानेवाला पाक ।

—:o:—

कोकण प्रान्तकी अनेक वनस्पतियोंके अर्ककी पुटें देकर और स्वदेशी शक्करका मिश्रण करके यह वज्रांगभैरव तयार किया गया है । यह भैरव महौषधि होकर भी अत्यन्त स्वादिष्ट है । इसके खानेसे वात, पित्त और कफ इन त्रिदोषोंके मिश्रणसे होनेवाले सम्पूर्ण रोग जो कि, आगे लिखे गये हैं, नष्ट होकर मनुष्योंका कल्याण होता है ।

इसके सेवनसे नपुंसकत्व, स्वप्नजन्य व इतर धातुपात, उष्णता, इन्द्रियशैथिल्य, कडकी, गर्भसम्बन्धी उत्पन्न हुए विकार, मूत्रकृच्छ्र, धातुदौर्बल्य, स्त्रियोंका प्रदर, हृदयसम्बन्धी रोग, हाथपांव व नेत्रादिकोंमें दाहका होना, क्षय, पांडुरोग, (मुलांची खर), जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, बवासीर, वातरोग, निद्रानाश, पित्तविकार, प्रसूतिरोगादि अनेक विकार दूर होकर शरीर निरोगी, मजबूत और सतेज होता है । पाचनशक्ति व स्मरणशक्ति खूब बढ़कर तथा धातु व रक्तकी वृद्धि होकर स्तंभन होने लगता है । शक्तिको उत्पन्न करके उत्साहकी वृद्धि करता है । दूध व भारी अन्न अच्छी तरहसे पचने लगता है । इस औषधिका गुण एक सप्ताहके सेवनसे जान पड़ता है ।

यदि नवीन रोग होगा, तो १४ दिवसकी खुराकवाले एक डिब्बेके सेवनसे गुण मालूम होने लगेगा, परन्तु यदि पुराना रोग होगा तो ३५ रोजके सेवनसे फायदा होगा । चौदा दिनके खाने योग्य एक डिब्बेका दो रुपया । एकट्ठा साढ़ेचार रुपयाका भैरव लेनेवालेको ३५ दिनके खानेयोग्य डिब्बा दिया जावेगा । अर्थात् ५) का भैरव ४।।) में दिया जावेगा । जिन्हें नमूनेके लिये मंगाना हो, वे १।) का म० आ० करके भेजदें। चौदह दिनका आधा डब्बा पेड पोष्ट करके भेज दिया जावेगा । पत्र पहुंचते ही व्ही० पी० के द्वारा भैरव भेजा जावेगा । डांक व पेकिंगका खर्च ग्राहकके जिम्मे होगा । चिठ्ठी स्पष्ट बालबोध अक्षरोंमें आना चाहिये। अनुपानपत्र डिब्बेके साथ भेजा जावेगा ।

मिलनेका पता—

एल. के. आर,
श्रीमदर्हत्प्रासादिक कम्पनी,
पो० निपाणी, जिला बेलगांव.

क्षमावणीके कार्ड ।

गतवर्ष अनेक भाइयोंने क्षमावणीके कार्ड मंगाये थे, परंतु समय न रहनेसे भाइयोंकी आज्ञापालन नहिं कर सका । इस कारण सूचना दी जाती है कि, जिनको क्षमावणीके कार्ड चाहिये भादों सुदी पंचमीसे पहिले २ हमारेपास फरमायस भेजेंगे तो हम कार्ड छपाकर भेज देंगे । विना नामके छपे कार्ड ।) सैकडे नाम लिखावेंगे, तो ।) आने अधिक लगेंगे ।

पन्नालाल जैन,
पो० गिरगांव-बम्बई.

आनंदका अनुभव करना है, तो एक बार इस ग्रन्थसरोवरमें अवश्य ही गोता लगाइये। कदाचित आपने **ब्रह्मविलास** मंगाकर पढा होगा. परन्तु इसके पढनेसे जो आनंद होगा वह एक भिन्न ही प्रकारका होगा।

इस ग्रन्थके प्रारंभमें ११३ पृष्ठोंमें ग्रन्थकर्ता कविवर बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र दिया गया है। हिन्दीमें इतना बडा और इतना विश्वस्त जीवनचरित्र आजतक किसी भी कविका प्रकाशित नहीं हुआ है। इसे पढकर पाठक अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इससे ग्रन्थकर्ता और उनके समयका इतिहास ही नहीं विदित होता है, परन्तु अनेक अनुकरणीय शिक्षायें भी प्राप्त होती हैं। प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायनिरत जैनीभाइयोंको इस ग्रन्थका संग्रह अवश्य करना चाहिये। जगत्प्रसिद्ध निर्णयसागरके सुंदर टाईपमें चारों तरफ बेल लगाकर बडी सुंदरतासे इसकी तयारी हुई है, लगभग ४०० पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ १॥) रक्खा है. डांकखर्च ≶) जुदा पडेगा।

ब्रह्मविलास।

इसमें ६७ उत्तमोत्तम रत्न(विषय) हैं, इसको भैया भगवतीदासजीने विद्वानोंके कंठमें धारण करने योग्य एक मोहनमाला बनाई (गुंथी) है. जिसका नाम उन्होंने **ब्रह्मविलास** रक्खा है। अनेक महाशय इसे **भगवतीविलास** भी कहते हैं। यह ग्रन्थ दोहे चौपाई पद्धरिछन्द, छप्पय, सवैया, कवित्त आदिमें ऐसा उत्तम है कि, इसके प्रत्येक अक्षरसे जिनमतका रहस्य व उत्तमोत्तम उपदेश प्रगट होते हैं। इसको हमने जैनकवि भाई नाथूराम प्रेमीसे शुधवाकर जहांतक हमसे बना शुद्धतापूर्वक छपाकर तैयार किया है. यह ग्रन्थ चिकने कागजोंपर सुन्दर टाइपमें चारोंतरफ बेल लगाकर बहुत ही सुन्दर छपवाया गया है। पृष्ठसंख्या ३०६ है। मूल्य रेशमी कपडे और क्याटिशकी जिल्द सहित १॥) रु० रक्खा है. वी. पी. मंगानेसे डांकव्यय ≶) जुदा पडेगा. जो महाशय एकसाथ ५ प्रति लेंगे, उनको १ प्रति विनामूल्य मिलैगी।

सनातनजैनग्रन्थमाला।

प्रथम गुच्छक।

अर्थात्

जैनधर्मके उत्तमोत्तम १४ संस्कृत ग्रन्थोंका रेशमी गुटका।

मूल्य सिर्फ १) रुपया।

इस गुटकेमें रत्नकरंडश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, आत्मानुशासन, समाधिशतक, नयविवरण, युक्त्यनुशासन, तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसार, अध्यात्मतरंगणी (समयसारकलशे) बृहत्स्वयंभूस्तोत्र, आप्तपरीक्षा, परीक्षामुख, आलापपद्धति ये १३ मूल ग्रन्थ और आप्तमीमांसा (देवागमस्तोत्र) सटीक इस प्रकार १४ ग्रन्थ छपाये हैं। यह गुटका पाठ करनेवालोंके सुभीतेके लिये बडा उपयोगी है। परदेशमें इस एक ही गुटकेसे बडे२ काम निकल सके हैं.

स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

विद्वद्वर्य पं० जयचंद्रजीकृत मनोहर भाषा टीका और संस्कृत छायासहित।

यह ग्रंथ अतिशय प्राचीन है. इसमें बालक, वृद्ध, युवा स्त्री जैन अजैन सबके पढने सुनने मनन करने योग्य जिनधर्मसंबधी समस्त विषय हैं। परंतु मुख्यतासे बैराग्यका उपदेश है जिसमें बारह भावना (अनुप्रेक्षा) का बडे विस्तारसे वर्णन है श्रावकधर्म और मुनिधर्मका वर्णन अपूर्व है। इस ग्रन्थकी मूल गाथा अतिशय प्रिय और सरल है. तिसपर भी गाथाके नीचें संस्कृतमें पदपदका अनुवाद (छाया) है. फिर बचनिका (भाषाटीका) है. निर्णयसागरकी टाईप और छापा तो जगत्प्रसिद्ध है ही मूल्य रेशमी कपडेकी पक्की और पक्की जिल्दका १॥) रु० और कच्ची जिल्दका १।) है. डांकव्यय ।) पडैगा. ये ग्रन्थ बहुतसे छपनेसे पहिले ही बिक गये हैं हमारेपास थोडीसी प्रति रही हैं जिनको चाहिये मँगालेवें. विलम्ब करेंगे वे पछतावैंगे।

सुकमाल उपन्यास।

सुकुमाल चरित्रको प्रायः सब ही जैनी जानते हैं, वह एकबार जैनबोधक मासिकपत्रमें छपकर पृथक् भी प्रकाशित हो चुका है, परन्तु इसकी कथा इतनी मनोहर है कि, वह १) रु. मूल्य होने पर भी हाथों हाथ विक गया।

उसकी भाषा ढूंढाड़ी थी; जिसको सब देशके जैनी भाई नहीं समझ सक्ते थे। इसकारण हमने प्रसिद्ध लेखक आरानिवासी श्रीयुत बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी मन्त्री आरानागरी प्रचारिणी सभासे उपन्यासके ढंगमें उपन्यासकी मनोहर भाषामें लिखवाकर छपाया है मूल्य ।≈) डांकखर्च जुदा।

सूक्तमुक्तावली।

संस्कृत और भाषा कवित्त सहित।

इसको सिंदूरप्रकर भी कहते हैं. यह सोमप्रभाचार्यविरचित संस्कृतके उत्तमोत्तम छंदोंमें उपदेशमय काव्यग्रंथ है, इसमें धर्माधिकार, पूजाधिकार, गुरुअधिकार, जिनमताधिकार, संघाधिकार, अहिंसाधिकार, सत्यवचनाधिकार, अदत्तादानाधिकार, शीलाधिकार, परिग्रहाधिकार, क्रोधाधिकार, मानाधिकार, मायाधिकार, लोभाधिकार, सज्जनाधिकार, गुणिसंगाधिकार, इन्द्रियाधिकार, कमलाधिकार, दानाधिकार, तपप्रभावाधिकार, भावनाधिकार, वैराग्याधिकार, उपदेशगाथा इसप्रकार २३ विषयोंके चार २ काव्य हैं. और उस पर चार २ कवित्त वा सवैया कविवर बनारसीदासजीने बनाये हैं. इसके सौ कवित्त और श्लोक कंटाग्र करनेवाले सभामें बहुत ही सुंदर व्याख्यान दे सक्ते हैं। मूल्य ।) डांकखर्च जुदा.

उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला.

यह सचमुच उपदेशरूपी रत्नोंकी माला ही है। इसके कर्ता आचार्य नेमिचन्द्रजी भंडारीने बड़ी सुन्दरतासे इस मालाकी रचना की है। मूल गाथा और मराठी तथा हिन्दी भाषाटीकासहित इस पुस्तकका मूल्य ॥) से घटाकर ।≈) कर दिया है। इसमें सग्रंथगुरुका खंडन बहुत ही उत्तम रीतिसे किया गया है।

नित्यनियम पूजा बड़ी।

संस्कृत और भाषा।

जिसमें सिद्धोंकी द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनों हैं, तथा द्यानतरायजीकृत देवगुरुशास्त्रकी भाषा पूजा तथा वीस विहरमानकी भाषा पूजा और लघु अभिषेक, शान्तिपाठ, विसर्जन, अन्तकी स्तुति भी संग्रहीत हैं. बड़े २ अक्षरोंमें बेलदार निर्णयसागरमें पुष्ट कागजोंपर बहुत शुद्ध छपाया हैं. मूल्य ।-)

क्यों साहब ?

क्या आपको अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करनी है? यदि करनी हो तो नीचे लिखे सुरमोंमेंसे एक दो शीशी अवश्य मंगाइये, और एक महीने लगाकर देखिये.

काला सुरमा नं० १ यह सुरमा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है. मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥)

काला सुरमा नं० २ इस सुरमेको प्रातःकाल और सांत समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १)

सफेद सुरमा नं० ४ इस सुरमेको सवेरे और शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठंडा सुरमा लगाया जावे, तो धुन्द नजला दृष्टिमन्दता रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा सुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला शीघ्र ही कट जाता है. परंतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिला हुवा होगा तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) रुपया. जिनकी आंखें गर्मीसे लाल रहती हैं उनको यह लाभदायक नहीं है।

नयनामृत अर्क नं० ८ इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है. मूल्य एक शीशीका... ... ।)

तरल सुरमा (अर्क) नं० ९ यह अर्क दिनमें दो बार लगानेसे नं. २ के समान गुण करता है. दुखती आंखोंकेलिये तो यह रामबाण ही है. खासकर यह सुरमा विधवा स्त्रियों और वृद्ध पुरुषोंकेलिये बनाया गया है. मूल्य १ शीशीका ... ... ॥)

इनके सिवाय नीचें लिखे जैनग्रंथ भी हमारेपास मिलते हैं.

संस्कृत जैनग्रंथ.

पंचाध्यायी (अलभ्य ग्रंथ) ॥)
क्षत्रचूडामणि काव्य (अर्थन्यास-नीतिका अपूर्व ग्रन्थ) १)
गद्यचिन्तामणि काव्य, (वादीभसिंह सूरिविरचित कादंबरीको मात करनेवाला अपूर्व गद्य ग्रंथ) २)
जीवन्धरचम्पू महाकवि हरिचंद्र-विरचित (गद्यपद्यमय) १)
नीतिवाक्यामृत (गद्य) सोमदेवकृत १)
न्यायदीपिका मूल ।॥)
परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला टीकासह॥)
कातन्त्ररूपमाला व्याकरण १)
सर्वार्थसिद्धि पूज्यपादस्वामीकृत तत्त्वार्थसूत्रकी संस्कृत टीका २॥)
सूक्तमुक्तावली (सिंदूरप्रकर) बनारसीदासजीकृत कवित्तोंसहित ।)
धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्य मूल १)
चन्द्रप्रभचरित ,, ,, ।॥)
वाग्भट्टालंकार सटीक ॥)
द्विसंधान महाकाव्य सटीक महाकवि धनजयकृत
नेमिनिर्वाण महाकाव्य मूल ॥=)
यशस्तिलकचंपू सटीक पूर्वखंड ३॥)
यशस्तिलकचंपू सटीक उत्तरखंड२॥)
सुभाषितरत्नसंदोह अमितगत्याचार्य-विरचित ।॥)
स्याद्वादमंजरी मूल (न्याय) २)
ताजिकसार हरिभद्रसूरिकृत सटीक॥)
अमरकोषमूल अनुक्रमणिकासहित ।-)
गणरत्नमहोदधि वर्धमानकविकृत स्वकृत टीकासहित (व्याकरण) १॥)
शृंगारवैराग्यतरंगिणी सटीक ≥)

भाषाटीकासहित जैनग्रंथ.

जैनविवाहपद्धति भाषाटीकासहित ।॥)
भक्तामरमूल हिंदी अर्थ और गुजराती पद्यसहित कपड़ेकी जिल्द ।)
आत्मानुशासन टोडरमलजीकृत ३)
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला हिंदी मराठी अर्थसहित ।=)
द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह दूसरीबार छपा।=)
रत्नकरंडश्रावकाचार अन्वयार्थसहित दूसरी बार नई तर्जका छपा है ।-)
धनंजयनाममाला संस्कृतका जैनकोष भाषाटीकासहित ।)
जैनधर्मामृतसार दूसरा भाग हिंदी मराठी अर्थसहित १
धर्मपरीक्षा भाषाटीकासहित १॥)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित १)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नाथूराम प्रेमीकृत अन्वय और भाषाटीकासहित १।)
पंचास्तिकाय संस्कृत छाया, अन्वय तथा संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित १॥)
द्वादशानुप्रेक्षा शुभचन्द्राचार्यकृत संस्कृत और जयचंद्रजीकृत भाषाटीकासहित ।=)
वर्षप्रबोध ज्योतिष भाषाटीकासह ।॥)
अमरकोष भाषाटीकासहित १॥)
अष्टांगहृदय वैद्यक जैनाचार्य वाग्भट्टकृत, भाषाटीकासहित ८)

केवल हिन्दीभाषा वचनिकामय ग्रन्थ.

सुकुमाल उपन्यास ।=)
मोक्षमार्गप्रकाशजी ३)
जैनबालगुटका ≥)
जैनबालबोधक प्रथमभाग पन्नालालकृत ।)
जैनबालबोधक पूर्वार्ध ,, -)॥
हिंदीकी पहिली पुस्तक ,, =)॥
हिंदीकी दूसरी पुस्तक ,, ।)
हिंदीकी तीसरी पुस्तक ,, ।=)
स्त्रीशिक्षा प्रथम भाग ,, =)
स्त्रीशिक्षा दूसरा भाग ,, ≡)
नारीधर्मप्रकाश ,, ≡)
अंकगणित प्रथम भाग ,, ।)
कातंत्रपंचसन्धी भाषाटीकासहित,,=)
बालबोध व्याकरण संस्कृतका हिंदीमें प्रथमभाग ,, ।=।
बालबोधव्याकरण दूसराभाग (छपता है) ,, ।=)
दंपतिसुखसाधन प्रथमभाग ≠)
जैनतीर्थयात्रादर्पण जिल्दबंधा ।॥)
पद्मपुराण बडा २३००० श्लोक ६)

छन्दोबद्ध जैनग्रन्थ.

बनारसीविलास और बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र १॥)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास) १॥)
श्रीपालचरित्र जिल्दसहित १॥)
जिनदत्तचरित्र जिल्दबंध १।)
पार्श्वपुराणजी जिल्दसहित १।)
नाटक समयसार बनारसीदासकृत॥=)
सहस्रनाम भाषा ,, -)
इष्टछत्तीसी बम्बईकी छपी सार्थ)॥
दर्शनपाठ संस्कृत दौलतदर्शन व बुधजनकृतस्तुतिसहित -)
छहढाला दौलतरामजीकृत -)
भक्तामरभाषा और संस्कृत -)॥
पंचमंगल रूपचंदजीकृत बंबईका छपा असली शुद्धपाठ -॥
दौलतविलास अब नहीं मिलता.

सूचना—ये सब ग्रंथ—भाई बद्रीप्रसाद जैन पोष्ट बनारससिटीके पास भी मिलते हैं।

मिलनेका पता—**पन्नालाल जैन**,
मालिक—जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालय,
पो० गिरगांव-बंबई.

श्रीवीतरागाय नमः

भाद्रपद कृष्णा १
श्रीवीर संवत्
२४३२।

वर्ष ७.
अंक-
२०।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

सहयोगी जैनगजट अब एक नये उपसम्पादकके हाथमें आया है। उपसम्पादक महाशयने सहयोगीको सिरपर धारण करते ही उसकी शोभा बढ़ानी प्रारंभ कर दी है। निन्दा और दुर्जन जैसे गंभीर और गौरवयुक्त लेखोंसे अब सहयोगीका कलेवर भरने लगा है। उपसम्पादक महाशय जैनमित्रमें महासभासम्बन्धी कठोर किन्तु सच्ची समालोचना पढ़ते २ ऊब उठे थे। जान पड़ता है, इसी कारण आपको यह उपसम्पादकीका कार्य सहसा अपने सिरपर धारण करना पड़ा है। नये पदकी प्राप्तिमें आपने अपने एक मित्रको लिखा भी है, कि "उपसम्पादकीमें मेरा नाम प्रकाशित हो चुका है। देखें अब जैनमित्रसे कैसी बनती है।" पाठक इसीसे उपसम्पादक महाशयके गंभीरहृदयका और उज्ज्वल परिणामोंका विचार कर सकते हैं।

उपसम्पादक महाशय इस तरह ललकार कर साम्हने आते हैं। अच्छी बात है, आइये। परन्तु कृपाकरके जो कुछ लिखिये, स्पष्ट शब्दोंमें लिखिये। यों छुपे २ तानें मारना और गालियां देना स्वच्छहृदयवाले सच्चे लेखकोंका काम नहीं है। किसीको दुर्जन अथवा सज्जन कहकर अपनी वाणीको पवित्र कर लेना आज कलका सामान्यकर्म है। परन्तु सहेतुक वचनोंसे श्रोताओं और पाठकोंको प्रसन्न करना किसी विरले पुरुषसिंहका ही कृत्य है। आप निन्दापर व्याख्यान लिखनेका परिश्रम न करें, क्योंकि आपमें निन्दाका सिद्धान्त समझनेकी शक्ति नहीं है। निन्दा असत्यवचनोंके भेदमें है, कषायोंका भेद नहीं है। और न उसके शुभकृत और अशुभकृत भेद हो सकते हैं। शुभकृत निन्दाको निन्दा संज्ञा ही नहीं है। आप चाहेंगे, तो आपकी निन्दाकी सैद्धान्तिकमीमांसा कर दी जावेगी। यहां निवेदन आपसे केवल इतना ही है कि, निन्दा करने वालोंकी समालोचना मैदानमें आकर कीजिये।

और उनके लेखोंका हेतुपूर्वक खंडन कीजिये । व्यर्थ गाल बजाकर हँसी करानेसे कुछ लाभ नहीं है ।

बड़े दुःखकी बात है कि, आजतक जैनमित्रमें जितने लेख निकले, उनका सिवाय इसके कि, बड़े कठोर लेख लिखे जाते हैं, किसीकी ओरसे किसी भी प्रकारका उत्तर न दिया गया । बड़े २ धुरंधर लेखक और समालोचक बैठे रहे, किसीने विद्यालय और कालेज विषयक लेखोंके हेतुओंपर एक अक्षर भी नहीं लिखा, और महासभाकी जो २ पोलें खोली गईं, उसके सच्चे शुभचिन्तकोंने (क्योंकि, हम उसके अशुभचिन्तक और निन्दक ठहराये जाते हैं,) उनके एकके ढकनेका भी प्रयत्न नहीं किया । बड़े दुःखकी बात है कि, तौ भी हम दुर्जन और निन्दकोंकी श्रेणीमें परिगणित किये जाते हैं । कैसा अन्याय है ?

अच्छा उपसम्पादकजी ! जैनमित्र तो निन्दक और दुर्जनके पदको पा चुका । परन्तु अब आप तो प्रशंसक और सज्जन हैं । कीजिये, महासभाकी खूब प्रशंसा । देखें, आपके खुशामदी प्रयत्नसे कहां तक सफलता होती है । जैनमित्रकी जो कुछ इच्छा है, सो तो वह करेगा ही । वह आप जैसा मित्र नहीं बनना चाहता । मित्रका (सूर्यका) स्वभाव सब वस्तुओंको यथावत् प्रकाशकरनेका है, उल्लू बनकर अंधेर मचानेका नहीं है । इसलिये वह आपकी निन्दा! निन्दा! की चिल्लाहट सुनकर बगुलोंको हंस बतानेवालोंके धोखेमें नहीं पड़ने देगा ।

सहयोगी जिनविजयके सम्पादक मि. छंट्टू, एम्. ए, ने हमको एक चिट्ठी लिखकर यह प्रकाशित करनेका अनुरोध किया है कि, "जैनमित्रके ११ वें अंककी टिप्पणियोंसे जिनविजयका एक नोट नकल किया गया है । उसमें जो यह वाक्य लिखा है कि 'महाविद्यालयके फंडमेंसे अब केवल आधा रुपया संस्कृतविद्यालयके लिये खर्च किया जावेगा । बाबू बनारसीदासजीके पत्रसे ऐसा ही प्रतीत होता है ।' सो इसका अभिप्राय ऐसा नहीं है कि, बाबू बनारसीदासजीने मुझे कोई पत्र लिखा है । किन्तु यह है कि, उनके पत्रकसे अर्थात् लेखसे जो कि प्रकाशित हो चुका है, ऐसा प्रगट होता है । पाठकगण भ्रममें न पड़े ।"

जापानसम्राट् मिकाडो युद्धसे अवकाश पाकर अब एक राजकीयधर्म स्थापन करनेके प्रयत्नमें लगे हुए हैं । उनको अपने २ धर्मका महत्व समझानेके लिये मुसलमान, आर्यसमाज, ब्रह्मसमाजादि अनेक धर्मोंके अनुयायियोंकी ओरसे अनेक विद्वान् और व्याख्याता जापान जानेकी तयारीमें हैं । श्वेताम्बरी भाइयोंमें भी इसका आन्दोलन हो रहा है । परन्तु हमारे दिगम्बरीय समाजमें इसकी चर्चा भी नहीं है । हमको पूर्णतः आशा है कि, जापान जैसे स्वतंत्रप्रकृति देशको यदि जैनधर्मके तत्त्व और महत्व समझाये जावें, तो वह अवश्य ही इस पवित्र धर्मका जो कि किसी समयमें जगज्जयी क्षत्रियोंका धर्म रहा है, अनुयायी हो जावे । इसलिये हमारी ओरसे अवश्य ही किसी विद्वान्के जापान

भेजनेका प्रयत्न होना चाहिये। बौद्धधर्म और जैनधर्म बहुतकाल तक हिन्दुस्थानमें एकसाथ रहे हैं। और दोनोंके सामान्य विषयोंमें बहुत कुछ साम्य है। इसलिये जापानके बौद्धोंको जैनधर्मका रहस्य समझानेमें विशेष कठिनता न होगी। विद्वानोंके जानेसे और वहां व्याख्यान देनेसे और कुछ नहीं होगा, यदि वहांके सौ दो सौ मनुष्य ही अहिंसा-धर्मको मानकर मांसभक्षण जैसे अघोरकृत्य छोड़ देंगे, तो हमको अनन्त पुण्यका बंध होगा। कोई धनाढ्य महाशय इस पुण्यफलको विचारकर यदि इस कार्यमें कुछ द्रव्य लगावें, तो बहुत अच्छा हो।

सहयोगी जिनविजयके द्वारा यह जानके हमको बड़ा दुःख हुआ कि, जो श्रवणवेलगुल किसी समय जैनियोंका विद्यापीठ रहा है, और जिसे हमारे श्रद्धालु जैनी भाई आज भी तीर्थ मानके बन्दनाको जाते हैं, उसी प्रसिद्ध नगरकी जैनपाठशालामें अब मिथ्यात्वको बढ़ानेवाले अन्यमतके ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं। श्रवणवेलगुलमें प्रायः जैनियोंकी ही वस्ती है, पाठशालाके अध्यापक पं० दौर्वलिजिनदास जैनी हैं, और उसमें पढ़नेवाले सम्पूर्ण विद्यार्थी भी जैनी हैं, परन्तु ग्रन्थ पढ़ाये जाते हैं, अजैनी! यह कैसे आश्चर्यकी बात है! उक्त पाठशालाको महसूर दरबारसे ३०) मासिक सहायता मिलती है, यह बात हम बहुत दिनसे जानते हैं। परन्तु यह ज्ञात नहीं था कि, उसके बदलेमें श्रवणवेलगुलके जैनी-भाई अपना सर्वस्व-जैनत्व भी खो रहे हैं। जहांतक अनुमान होता है, यह अन्याय तत्रस्थ जैनियोंकी निर्बलता और राज्यके संकीर्ण-हृदय अफसरोंके पक्षपातसे होता होगा, राज्यकी ओरसे नहीं। क्योंकि महसूर राज्य जैनियोंका सदासे पक्षपाती है। अतएव महसूरप्रान्तके जैनियों और विशेषकरके श्रवणवेलगुलवासि-योंको चाहिये कि, इस विषयका आन्दोलन करके और राज्यसे प्रार्थना करके जैनग्रन्थ पढ़ानेका स्वत्व फिरसे प्राप्त कर लेवें। उनके लिये जयपुरकी जैनपाठशाला जिसे जयपुर राज्यसे ५०) मासिक सहायता मिलती है, इस विषयमें उदाहरण है। उक्त पाठशालामें जैनग्रन्थ स्वतंत्रतासे पढ़ाये जाते हैं। और यदि उनके आन्दोलनका कुछ फल न हो, अर्थात् महसूर राज्य जैनग्रन्थ पढ़ानेकी आज्ञा न देवे, तो उस ३०) रु० की सहायतापर लात मारके चन्देसे पाठशाला चलानेका उद्योग करना चाहिये। परमपूज्यस्थान श्रवणवेलगुलकी पाठशालाके लिये तीस रुपया मासिक सहायता देनेके लिये एक नहीं दश धर्मात्मा तयार हो सकते हैं, केवल प्रयत्नकी आवश्यकता है। सहयोगी कानड़ी-जिनविज-यको इस विषयमें दो चार लेख लिखकर अपने प्रान्तवासियोंको जगाना चाहिये।

श्रवणवेलगुलका इतिहास।

(३)

(लेखक-नाथूराम प्रेमी, देवरी निवासी।)

इसके पश्चात् इसी घरानेके एक अमलकीर्ति नामके राजाने उस जागीरको और भी घटाकर केवल ५०००) वार्षिकपर पहुंचा दी। यह जागीर ४५वर्ष तक इसी परिमाणसे लगी रही। पश्चात् अंगो-

राज राजाने भी इसे ९६ वर्ष चलाई और श्रीप्रभाचन्द्रसिद्धान्ताचार्यको मठाधिपतिके स्थानपर नियत किया। इसके पीछे प्रताप नामक राजाने गुणचन्द्राचार्यको नियुक्त करके उपर्युक्त जागीर और भी ३४ वर्ष तक चलाई। तथा उदयादित्य, वीर, गंगाजय इन तीन राजाओंने भी पूर्व व्यवस्थाको प्रचलित रक्खी। परन्तु इनके पीछे जो बट्टवर्धन नामक राजा हुआ, उसने उस ९ हजार वार्षिक आयवाली जागीरको पुनः बढ़ाकर पचास हजारकी कर दी और शुभचन्द्राचार्यको मठाधिपति बनाया। इस राजाकी एक जीवनघटना कुछ विलक्षण और स्मरण रखने योग्य है।

बट्टवर्धन राजाने रक्खी हुई अनेक कुलटा स्त्रियोंके आग्रहसे तथा रामानुजाचार्यके उपदेशसे स्वधर्मकुलाचार छोड़ दिया और वैष्णवधर्म स्वीकार करके उसने अपना नाम विष्णुवर्धन रख लिया। पीछे जैनधर्मका तिरस्कार करनेवाला वह एक कट्टरशत्रु बन बैठा। उसने जैनधर्ममान्यदेवताओंकी सम्पूर्ण जागीरें खालसा करके ७९० जैन बस्तियोंको (मन्दिरोंको) तोड़के धराशायी कर दीं और चोन्निगनारायण, कीर्तिनारायण, विजयनारायण, वरिनारायण और लक्ष्मीनारायण ऐसे पांच नारायणोंकी अनुक्रमसे बेल्लूर, तलकाद, विजयपुर, गदग और हरदनहल्ली इन पांचों स्थानोंमें स्थापना करके जैनमन्दिरोंकी खालसा की हुई जागीरें उक्त नारायणमंदिरोंको लगा दीं। इसप्रकार जैनधर्मका उच्छेद और रामानुजधर्मकी स्थापना, जितनी उससे हो सकी, सीमातिग परिश्रम करके की। राजा विष्णुवर्धनके ये कृत्य बहुत दिन तक इसी क्रमसे चलते रहे परन्तु अन्तमें उनके अन्त होनेका भी समय आ गया।

एक दिन अचानक ऐसी अभूतपूर्व आश्चर्यकारक घटना हुई कि, एकाएक वहांकी पृथ्वी फटी और उसमें सबका सब बेल्लूरप्रान्त विलीन हो गया। कहते हैं, इसका कारण और कुछ नहीं, राजाका देवद्रोह ही था। पुराणान्तरोंमें भी देवद्रोहके विषयमें यही बात कही है। बेल्लूरके लुप्त हो जानेका समाचार सुनकर विष्णुवर्धन राजाने अनेक उच्च राज्यकर्मचारी और सुचतुर पुरुष एकत्र किये और उन्हें इस आकस्मिक महारिष्ट घटनाके कार्यकारणका विचार करनेका भार सोंपा। उस समय उन सबोंने एकमत होकर राजासे स्पष्ट कह दिया कि, महाराज इसमें कुछ संदह नहीं है, कि यह आपका जैनदेवद्रोह ही फलित हुआ है।

इसके अनन्तर राजाने जैनियोंको छोड़कर शेष सब जातियोंके लोगोंको आज्ञा दी कि, सब लोग अपने २ धर्मके अनुसार इस अरिष्टकी शान्तिके लिये उपाय करें। इस कार्यमें जो कुछ द्रव्यव्यय होगा, वह खजानेसे दे दिया जावेगा। परन्तु उक्त शान्तिविधानोंसे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। सर्वत्र यही ध्वनि सुनाई पड़ने लगी कि, जैनियोंके अतिरिक्त अन्य किसीसे यह अरिष्ट नष्ट नहीं होगा। परन्तु राजाने धर्मत्याग करनेके कारण जैनियोंसे पुनः सहानुभूति चाहना उचित नहीं समझी। और इस अभिमानमें आकर उसने अपना अमितद्रव्य व्यय करके अगणित उपायोंकी योजना की। परन्तु जब किसीसे भी कुछ

सिद्धि नहीं हुई, सब प्रयत्न निष्फल हुए, तब विष्णुवर्धन अतिशय हताश होकर बैठ रहा। उस समय नागरिक लोगोंने उसके पास आकर प्रार्थना की कि, आप श्रवणबेलिगोल जाकर जिनदेवसे तथा जैनाचार्यसे अपने किये हुए अपराधकी अनन्यभावसे क्षमा मांगिये और इस महा अरिष्टसे अपनी प्यारी प्रजाको मुक्त कराइये। तब राजा उपायान्तरकी अप्राप्तिमें लोगोंकी उक्त प्रार्थनापर ध्यान देकर वेल्लिगोल क्षेत्रको गया। और देवदर्शन करके आचार्य महाराजके निकट जाकर उपस्थित अरिष्टसे मुक्त होनेके लिये प्रार्थना करने लगा। तब प्रत्यक्ष राजाकी प्रार्थना और महस्त्रावधि लोगोंकी पुकार-की ओर लक्ष्य देकर आचार्यमहाशय दयार्द्र अन्तःकरणसे अरिष्टशमन करनेके लिये उपाय करनेको उद्यत हो गये। परन्तु इसके पर्याय उन्होंने राजासे एक ऐसा शिलालेख लिखवा लिया कि, "मैं आगामी कालमें जैनधर्मका अनिष्ट चिंतवन कभी नहीं करूंगा। और जैन-देवोंकी स्थापना तथा जैनमन्दिरोंका प्रबन्धादि पूर्वानुसार करके इस पवित्रक्षेत्रकी तुष्टिके लिये (१२०००) की आयवाली जागीर समर्पण कर दूंगा।" इसके प्रश्चात् आचार्यने अपने सहधर्मी लोगोंको अरिष्ट शमन करनेके लिये अनेक धर्म-प्रणीत उपाय समझाये। और आपने स्वयं १०८ कुष्मांड मंत्रित करके प्रतिदिन एक एकके नियमसे ९४ कुष्मांड उस भयानक विवर-स्थानमें डाले। कहते हैं कि, ९४ कुष्मांड पूरे होनेके साथ ही वह सम्पूर्ण प्रदेश जो कि अदृश्य हो गया था, दृष्टिगोचर होने लगा और राजाको इस घटनाका पूर्णविश्वास हो गया। इसलिये आचार्य महाराजसे उसने जो प्रतिज्ञायें की थीं, वे सब पूर्ण कर दीं और सर्वत्र यह आज्ञा प्रचलित कर दी कि, जैनधर्मी और रामानुजी ये दोनों परस्पर सख्यभावसे रहें, विरोधभाव सर्वथा न रक्खें। देवस्थानोंके पूजन अर्चनादि नैमित्तिक कृत्योंमें यदि वैष्णवपंथवाले लोग कुछ विरोध अथवा उपद्रव करेंगे, तो उनका प्रत्येक बारके अपराधमें एक फनाम (उस समयका सिक्का) दंड किया जावेगा। और इसी प्रकार वैष्णव धर्मकार्योंमें जैनियोंकी ओरसे विरोध होनेसे उन्हें भी उपर्युक्त दंडका भागी होना पड़ेगा। इस प्रकार विष्णुवर्धन राजाकी ओरसे इस देवस्थानको बारह हजार रुपये वार्षिककी जागीर नियत हो गई, और धर्माध्यक्षका आसन श्रीचारुकीर्ती पंडिताचार्यने सुशोभित किया।

कालकी आत्मकहानी।

(गतांककी पूर्ति।)

यदि समुद्र मानों संसार।
तो मैं उसकी लहर अपार॥
कोइ न मेरा पावे पार।
केवल गया ब्रह्मसे हार॥ २१॥
मृगशिशु पड़ै सिंहमुखबीच।
तो निश्चय हो उसकी मीच॥
वैसा ही है मेरा हाल।
मुझको समझो जगका काल॥ २२॥
निर्गुण सगुण, निबल बलवान।
बाल तरुण सब एक समान॥

नीच, कुलीन, पतित वृषवान* ।
हो सबका मुझमें अवसान ॥ २३ ॥
महिमें मनुज, सिंह, गज, बाज ।
नभमें खग, रवि, ग्रह, द्विजराज ॥
जलमें नक्र, चक्र, सरताज ।
पर मेरा सब जगमें राज ॥ २४ ॥
अनिल, अनल, सूरज, निशिराज ।
कइ लोकोंमें इनका राज ॥
तौ भी कतिपय ऐसे देश ।
जिनमें इनका नहीं प्रवेश ॥ २५ ॥
पर देखो कर दिलमें दौर ।
खाली मुझसे तनिक न ठौर ॥
आतप शीत और दिनरात ।
इनने खाई मुझसे मात ॥ २६ ॥
ग्रीस, मिसर, टर्की, ईरान ।
किया इन्होंने मेरा मान ॥
मैंने भी उनको सिरमौर ।
बना दिया था करिये गौर ॥ २७ ॥
मेरा जबसे छोड़ा ध्यान ।
अधःपतन है हुआ निदान ॥
अमरीका जापान युरोप ।
इनकी देखो बढती ओप ॥ २८ ॥
अमरबेलसी इनकी वृद्धि ।
सब कामोंमें होती सिद्धि ॥
जब ये देंगे मुझे बिसार ।
तब निश्चय होंगे निस्सार ॥ २९ ॥
देखो छोटा सा जापान ।
बड़ों बड़ोंके काटे कान ॥

उसने समझा मेरा मोल ।
मैंने दी इज्जत जी खोल ॥ ३० ॥
भारतका जब मुझपर ख्याल ।
था, तब वह भी मालामाल ॥
जबसे छोड़ा मेरा ख्याल ।
तबसे ही है यह पामाल ॥ ३१ ॥
गर अब भी मेरा सम्मान ।
करै बंदे तो इसका मान ॥
कह देता हूं मैं ललकार ।
मुझ बिन सभी यत्न बेकार ॥ ३२ ॥
भारतवासी ऐसे ढीठ ।
'हवाके रुखको दीजै पीठ,' ॥
झूठी यह करके कहनूति ।
मनमानी करते करतूति ॥ ३३ ॥
मैं उनके आया हूं हाथ ।
अब भी मुझे झुकावें माथ ॥
करें काम गर मुझको देख ।
मारे कौन 'रेख पर मेख,' ॥ ३४ ॥
अगला पिछला बैर बिसार ।
करें काम मिल सोच विचार ॥
यदि हिम्मत अबकी दी हार ।
तो कर दूंगा मैं संगसार* ॥ ३५ ॥
यों है मेरी आत्मकहानी ॥
समझें कोई विरले ज्ञानी ॥
करके अब मैं अदब सलाम ।
करता हूं बस खतम कलाम ॥ ३६ ॥

सय्यद अमीरअली (मीर)
देवरी (सागर)।

* धर्मवान्

* विनष्ट

धन।

—:०:—

दुन्दुभिस्तु सुतरामचेतनस्तन्मुखादपि 'धनं धनं धनम्'।
इत्थमेव निनदः प्रवर्तते किं पुनर्यदि जनः सचेतनः॥१

भावार्थ—दुन्दुभी (वाद्यविशेष) सर्वथा अचेतन है, परन्तु उसके मुखसे भी "धन! धन! धन!" इस प्रकारके शब्द निकलते रहते हैं। फिर यदि सचेतन मनुष्य "धन" "धन" की रट लगाये रहें तो इसमें क्या आश्चर्य है!

गङ्गां च धारयति मूर्ध्नि सदा कपाली—
सा तस्य चुम्बति मुखं न कदाचिदेव॥
रत्नाकरं प्रति चुचुम्ब सहस्रवक्त्रैः—
र्गङ्गादयो युवतयः सधनानुकूलाः॥ २॥

भावार्थ—महादेवजी गंगाको हमेशा अपने सिरपर धारण किये रहते हैं, तौ भी वह उनका कभी मुख-चुम्बन नहीं करती। परन्तु रत्नाकरके (समुद्रके) पास पहुंचते ही उसका हजार मुखोंसे चुम्बन करती है। इससे स्पष्ट है कि गंगादिक स्त्रियां भी धनवानोंके अनुकूल रहती हैं। सारांश, महादेवजी नग्न और निर्धन हैं। इसलिये गंगा उनमें अनुरक्त न होकर धनवान् समुद्रमें जो कि रत्नोंकी खानि है, प्रेम करती है।

धनमर्जय काकुत्स्थ धनमूलमिदं जगत्।
अन्तरं नैव पश्यामि निर्धनस्य मृतस्य च॥३॥

भावार्थ—हे रामचन्द्र! धन कमाओ! क्योंकि यह संसार धनमूलक है अर्थात् संसारकी जड़ धन ही है। मैं निर्धनपुरुष और मुर्देमें कुछ भी अन्तर नहीं देखता।

कुत आगत्य घटते विघट्य क नु याति च।
न लक्ष्यते गतिः सम्यग्घनस्य च धनस्य च॥४॥

भावार्थ—कहांसे आके प्राप्त होता है, और नष्ट होकर कहां चला जाता है, इस प्रकार घन (बादल) और धन दोनोंकी गति कुछ समझमें नहीं आती।

बधिरयति कर्णविवरं वाचं मूकयति नयनमन्धयति।
विकृतयति गात्रयष्टिं सम्पद्रोगोऽयमद्भुतो राजन्॥५॥

भावार्थ—कानोंको बहिरा कर देता है, मुंहको गूंगा बना देता है। नेत्रोंको अन्धा कर देता है और शरीरयष्टिको विकृत कर देता है। हे राजन्! यह धनका रोग बड़ा अद्भुत है। सारांश यह है कि, धनी लोग धनमें मत्त होकर किसीकी सुनते नहीं हैं, बोलते नहीं हैं, कुछ देखते नहीं हैं और खूब खा पीके अपने शरीरको तुंदल (स्थूल) बना लेते हैं।

अहो कनकमाहात्म्यं वक्तुं केनापि शक्यते।
नामसाम्यादहो चित्रं धत्तूरोपि मदप्रदः॥ ६॥

भावार्थ—कनककी (सोनेकी—धनकी) महिमाको कौन वर्णन कर सकता है? देखो! केवल एकसा नाम होनेके कारण ही धतूरा मनुष्योंको पागल कर देता है। संस्कृतमें धतूरेको कनक भी कहते हैं। इसपर कवि उत्प्रेक्षा करता है कि, सोना (कनक) तो उन्मत्त करनेवाला है ही, परन्तु उसके नामकी समतासे धतूरेको भी वह गुण प्राप्त हो गया है।

हेतुप्रमाणयुक्तं वाक्यं न श्रूयते दरिद्रस्य।
अप्यतिपरुषमसत्यं पूज्यं वाक्यं समृद्धस्य॥ ७॥

भावार्थ—दरिद्रोंके हेतु और प्रमाणोंसे युक्त भी वचन नहीं सुने जाते। परन्तु धनियोंके अत्यन्त कठोर और असत्य वचन भी पूज्य समझे जाते हैं।

लक्ष्मीवन्तो न जानन्ति प्रायेण परवेदनाम् ।
शेषे धराभराक्रान्ते शेते नारायणः सुखम् ॥८॥

भावार्थ—लक्ष्मीवान् पुरुष प्रायः दूसरोंके कष्टको नहीं जानते। देखो। पृथ्वीके भारसे दुःखी होते हुए बेचारे शेषनागपर नारायण सुखसे शयन करते हैं । नारायण लक्ष्मीवान् हैं (लक्ष्मी उनकी स्त्री है)इसलिये वे शेषनागके कष्टको नहीं जानते ।

दायादाः स्पृहयन्ति तस्करगणाः मुष्णान्ति भूमीभुजो ।
दूरेषच्छलमाकलय्य हुतभुग्भस्मी करोति क्षणात् ॥
अम्भःप्लावयते क्षितौ विनिहितं यक्षा हरन्ति ध्रुवं ।
दुर्वृत्तास्तनया नयन्ति निधनं धिग्धिग्धनं तद्बहु ॥

भावार्थ—दायाद (भाई भतीजे) जिसे चाहते हैं, चोर मूस ले जाते हैं, राजा छीन लेता है, अग्नि भस्म कर देती है, पानी बहा ले जाता है, जमीनमेंसे यक्ष हरण कर ले जाते है, और दुराचारी पुत्र जिसे नष्ट कर डालते हैं, ऐसे धनको धिक्कार है। धिक्कार है।

महासभाका पुनः संस्कार ।

प्रियपाठकगण ! इधर कई महिनोंके आन्दोलनसे महासभा और उसके कार्यकर्त्ताओंके अन्तर्हस्य आप लोगोंपर भलीभांति प्रगट हो चुके हैं। महासभाको जो श्रीभारतवर्षीय दिगम्बर-जैनधर्मसंरक्षणी महासभाके नामसे स्थापन हुई थी, और जिसके स्थापन करनेका बड़ा अच्छा अभिप्राय था, जो कि उसके नामसे स्पष्ट प्रगट होता है, ऐसा कौन धर्मद्रोही और जातिका कलंक होगा, जो उन्नतावस्थामें न देखना चाहता हो । और ऐसा कौन नीचातिनीच स्वार्थी होगा, जो उसकी बढ़ती हुई बेलको काटनेका प्रयत्न करेगा । परन्तु समयके फेरसे महासभाको उसके कार्यकर्त्ताओंकी अदूरदर्शिता और क्षुद्रताके कारण ऐसी बुरी पोशाक पहिनाई गई कि, उसके सच्चे भक्तोंको भी उससे घृणा और उदासीनता उत्पन्न होने लगी और उन्हें पोशाक पहिनानेवालोंके विरुद्ध खड़ा होकर आन्दोलन करना पड़ा । यद्यपि अपनी परम पूजनीया महासभाकी ऐसी आशाप्रद और उन्नतशील अवस्थाको इस प्रकार दुर्दशाग्रस्त देखकर हृदयके टुकड़े टुकड़े होते थे, परन्तु लाचार आन्दोलनके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं सूझता था ।

हर्षका विषय है कि, वह आन्दोलन निष्फल नहीं हुआ। उससे जैनीमात्र पर महासभाके कार्यकर्त्ताओंका आन्तरिकरहस्य विदित हो गया। और अब समय अनुकूल आया है । यदि वे लोग जो महासभाको अपनी समझते हैं, और उससे अपनी और अपने धर्मकी उन्नति करना चाहते हैं, चाहेंगे, तो महासभाको अपना यथार्थरूप प्राप्त हो सकता है । और उसके भक्तोंकी उसपर ज्योंकी त्यों अकाट्य श्रद्धा फिरसे उद्भूत हो सकती है ।

महासभाके कर्तागणोंमें यदि कुछ भी धार्मिक सामाजिक प्रेम, तथा श्रद्धा और भक्तिका लेश अवशेष है, और वे नितान्त कुटिलमति नहीं है, तथा वे महासभाके सेवक केवल नामके लिये नहीं, वरन कुछ जैनियोंकी सच्ची उन्नति

करने के अभिप्रायसे बने हैं, तो उन्हें भी इस समय चाहिये कि, महासभाका पुनःसंस्कार करनेमें विलम्ब न करें, और अब उसे एक अच्छी विश्वासपात्र संस्था बनानेका उद्योग करें। वे देखेंगे कि, उनके ऐसे निष्कपट उद्योगसे महासभा सर्वसाधरणके चित्तों पर ऐसा अधिकार जमावेगी कि, एक दिन वह जो चाहेगी सो अपने भक्तोंसे करा सकेगी, इस योग्य हो जावेगी।

आज इस लेखमें महासभाके पुनः संस्कारके विषयमें थोड़ी सी सम्मतियां लिखी जाती हैं। पाठकगण उनपर विचार करें और यदि योग्य हों, तो महासभाके कार्यकर्त्तागण उन सबको अथवा उनके कुछ अंशोंको कार्यमें परिणित करनेकी उदारता दिखलावें।

आजकल हमारे विज्ञ उद्योगियोंने जैनियोंमें दो महासभा कायम कर रक्खी हैं। एक महासभाको तो सर्वसाधारण जानते ही हैं, किन्तु दूसरी महासभाको बहुत थोड़े महाशय जानते होंगे। क्योंकि उसने अपने मुखपर यंगमेन्स एसोसियेशनका बुर्का डाल रक्खा है। इन दोनों ही महासभाओंने जैनियोंमें धार्मिक और लौकिक उन्नति करनेका बीड़ा उठा रक्खा है और दोनों ही प्रत्येक प्रान्तमें अपनी २ प्रान्तिक सभायें नियत कर रही हैं। जब कि इन दोनों ही सभाओंके उद्देश्य एकसे हैं, तो इन दोनोंको भिन्न २ रखनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। और इसी लिये या तो ये दोनों सभा एक कर दी जांय और या एकके जिम्मे लौकिकोन्नतिका भार और दूसरीके जिम्मे धार्मिकोन्नतिका भार सोंपा जाय।

१ अबकी बार महासभाका जल्सा सहारनपुरमें बड़ी धूमधामसे हुआ था, और मान्यवर लाला खूबचंदजी रईसने दिल खोलकर महासभाका स्वागत किया था। यद्यपि इस धूमधामके स्वामतसे उस समय महासभाका गौरव कुछ बढ़ा हुआ दिखता था, परन्तु जो वास्तवमें विचारा जाय तो उस धूमधामसे महासभाको एक प्रकारसे हानि भी पहुंची है। वह यह कि, दूसरी जगहके भाइयोंके दिलोंमें जो महासभाको आगामी वर्षोंमें अपने यहां बुलानेका उत्साह था, उसका घात हो गया। अब वे विचारते हैं कि जो सहारनपुरकी सी धूमधाम हो सके, तो महासभाको बुलावें। सो "न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचैगी"। और ऐसा ही प्रत्यक्ष दीखता है। क्योंकि अभी तक कहींके भाइयोंने महासभाका निमंत्रण नहीं किया है। यदि कोई ऐसा विचार करै कि, जो दूसरी जगहका निमंत्रण नहीं आवै, तो मथुरामें जल्सा करना चाहिये। सोभी ठीक नहीं हैं क्योंकि महासभाके जल्से अनेक स्थानोंमें होनेकी आवश्यकता है। इसलिये प्रत्येक अधिवेशनमें आगामी वर्षके अधिवेशनका स्थान और काल पहलेहीसे नियत हो जाना चाहिये। और यदि कोई निमंत्रण नहीं करै, तो महासभाके स्वतःके प्रबन्धसे किसी तीर्थक्षेत्रके वार्षिकोत्सवपर महासभाका आगामी अधिवेशन नियत करना चाहिये। भोजनादिकका प्रबन्ध दर्शकगण स्वयं करैं और मंडप बनानेका खर्च महासभाके प्रबन्ध खातेसे किया जाय। इस वर्ष यदि महासभाका अधिवेशन सोनागिरके वार्षिकोत्सवपर किया जाय, तो हमारी सम्मतिमें बहुत

उपयोगी होगा । सोनागिर एक ऐसा उत्तम तीर्थ है कि, वहां पर बुन्देलखंड, मालवा, और आगरा तीनों प्रान्तोंके लोग सहज ही एकत्र हो सकते हैं । स्टेशनका मुकाम होनेसे आनेवालोंको बहुत सुभीता भी रहता है ।

२ लाला जियारामजी एम्. ए., प्रोफेसर, लाहौर, अथवा सेठ हीराचंदजी नेमिचंदजी शोलापुर इस वर्ष सभापति नियत किये जायँ ।

महामंत्री और सभापतिसाहबको उचित है कि, सोनागिरक्षेत्रके प्रबंधकर्त्ताओंसे पत्रव्यवहार करके महासभाके खर्चेसें शीघ्र ही इसका प्रबन्ध करें।

३ अबके महासभाके अधिवेशनपर सबसे पहले एक सबजैक्टकमेटीद्वारा महासभाकी नियमावलीका संशोधन कराया जाय । नियमावलीके पास होनेके पश्चात् नवीन प्रबन्धकारिणी सभा और कार्याध्यक्ष नियत किये जांय । हमारी सम्मतिमें यदि निम्नलिखित कार्याध्यक्ष नियत किये जांय, तो बहुत उचित होगा ।

१ शेठ हीराचंद नेमिचंदजी शोलापुर, सभापति ।
२ अनेक शेठ, उपसभापति ।
३ लाला जियारामजी, लाहौर—महामंत्री ।
४ मि ए. बी. लट्ठे, कुरुंदवाड, सहायक महामंत्री.
५ पं० धन्नालालजी काशलीवाल, मंत्री. विद्यावि०
६ बाबू अर्जुनलालजी सेठी, बी. ए. जयपुर—उपमंत्री विद्याविभाग, (इस विभागमें परीक्षालय, पुस्तकालयादि विद्यासम्बन्धी कार्य रहेंगे ।)
७ बाबू जुगलकिशोरजी व बाबू सूरजभानजी वकील, देवबंद—मंत्री उपदेशकभंडार ।

४ जैनगजटकेलिये ५०००) की पूंजीसे एक स्वतंत्र प्रेस खोला जाय । यदि प्रेसके लिये महासभामें रुपयोंकी गुंजाइश न हो. तो एक जैनप्रेसकंपनी खोली जाय, जिसका कैपिटेल ५०००) का रक्खा जाय । प्रत्येक शेअरके १००) के हिसाबसे पचास शेअर बेचे जायँ । जैनगजट एक अच्छा गौरवशाली और सद्यः समाचारप्रचारक सर्वप्रिय पत्र बनाया जाय ।

५ समस्त भारतवर्षकी पांच प्रांतिकसभा नियत की जांय । एक दक्षिण प्रांतिक सभा दूसरी पश्चिमप्रांतिकसभा तीसरी उत्तरप्रांतिकसभा चौथी पूर्वप्रांतिकसभा और पाचवीं मध्यप्रांतिकसभा । और प्रत्येक प्रांतिकसभाकी हद्द तथा हैडक्वार्टर नियत किये जांय । प्रत्येक प्रांतिकसभा अपने २ प्रांतमें लोकलसभा नियत करै ।

६ विद्याशालाओंके चार विभाग किये जांय । एक लोकल सभाओंके आधीन बालबोधपाटशालायें (जिनमें बालबोधपरीक्षा तककी पढाई होय) और प्रवेशिका पाठशालायें (जिनमें बालबोध और प्रवेशिका दोनों परीक्षाओंकी पढाई होय) खोली जांय । प्रांतिक सभाओंके आधीन विद्यालय (जिनमें प्रवेशिका और पंडित इन दो परीक्षाओंकी पढाई होय) स्थापन किये जांय और महासभाके आधीन एक महाविद्यालय (जिसमें प्रवेशिका पडित और शास्त्रीय इन तीनों परीक्षाओंकी पढाई होय) रहै । महाविद्यालयका स्थान काशी नियत किया जाय । और यदि स्याद्वादपाठशालाके अधिकारी गण महाविद्यालयके क्रम—नियमको स्वीकार करैं, तो दोनों एक कर दिये

जांय । अन्यथा महाविद्यालय भिन्न स्थापन किया जाय । प्रवेशिकापाठशाला विद्यालय और महाविद्यालयका निरीक्षण और परीक्षा महासभाके परीक्षालय द्वारा ली जाय और बालबोध पाठशालाओंका निरीक्षण और परीक्षा प्रांतिकपरीक्षालय (जो प्रांतिकसभाओंके आधीन स्थापित किये जांय) द्वारा ली जाय । अथवा महासभाके परीक्षालयके द्वारा ही कोई स्वतंत्र प्रबन्ध किया जाय ।

७ महाविद्यालयके भंडारका ट्रस्टडीड और भंडारका व्याज खर्च करनेके नियम रजिस्टर कराये जांय । पांच हजार या इससे अधिक रकम देनेवाले ट्रस्टी नियत किये जांय और ट्रस्टियोंकी तरफसे ग्यारह महाशयोंकी एक प्रबन्धकारिणीसभा नियत की जाय, जिसमें चार धनाढ्य, चार संस्कृत जैनधर्मशास्त्रके ज्ञाता और तीन धर्मज्ञ अंगरेजी विद्वान् नियत किये जांय, और विद्याविभागका समस्त प्रबन्ध इस ही प्रबन्धकारिणी सभा द्वारा किया जाय ।

आशा है कि, महासभाके नेतागण इस छोटेसे लेखपर विचार करेंगे और यदि अनुचित प्रतीत हो, तो युक्तिपूर्वक इसकी समालोचना करेंगे ।

विविध समाचार ।

कलकतेके प्रसिद्ध जौहरी लाभचन्द मोतीचन्दजी (जैनी) मान्यवर लार्ड मिन्टोके जौहरी नियत हुए हैं । हर्षकी बात है ।

ग्वालियरमें ता० २३ जूनको श्वेताम्बरीय जैनी भाइयोंकी एक जैनयगमेन्स सुसाइटी स्थापित हुई है । उसके ३५ मेम्बर हो चुके हैं ।

ब्यावरमें शेठ गाढमलगुमानमलजी और हमारी जातिके प्रसिद्ध शेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी एक कपडेकी मिल खोलना चाहते हैं । अन्य धनवानोंको भी इस ओर ध्यान देना चाहिये । आजकल देशी कपडेके व्यापारमें अच्छा नफा मिलनेके सिवाय देशका उपकार भी होता है ।

बम्बई हीराबागके व्याख्यानमंदिरमें गत ता. १९ जुलाईको अजमेरके प्रसिद्ध शेठ नेमीचन्दजी सोनीका एक प्रभावशाली व्याख्यान हुआ था । उसमें आपने यह वतलाया था कि. आजकलका जमाना तरक्कीका है, और तदनुसार हमको अपने समाजमें विद्या फैलानेकी चेष्टा करनी चाहिये । संस्कृत विद्याकी ओर आपका विशेष झुकाव था ।

ता० २२ जुलाईको बम्बईमें फतहपुरिया ब्राह्मणोंकी एक सभा हुई थी । उसमें उन्होंने यह निश्चय किया कि, हम लोगोंमें विलायती शक्करका वर्ताव अब सर्वथा नहीं होगा ।

सतनामें गत आषाढ सुदी ८ से १३ तक वहांके लाला द्वारकादासजीकी ओरसे शान्तिविधान किया गया था । रीवांनिवासी पंडित फूलचन्दजीके द्वारा शांतिविधानकी क्रिया बडे आनन्दके साथ हुई । तेरसको बडी धूमधामके साथ जलयात्रा हुई ।

ब्यावरसे श्रीयुत बाबू छगनमलजी सरावगीने एक पत्र लिखकर सूचित किया है कि, जैनियोंकी ओरसे कोई विद्वान जापानको जावे, तो मैं उनके साथ अपना द्रव्य लगाकर जानेको तयार हूं । इस विषयका खूब आन्दोलन करना चाहिये ।

अहमदाबादमें गोस्वामी श्रीमधुसूदनलालजीकी अध्यक्षतामें एक बडी भारी सभा हुई थी । उसमें धर्म भ्रष्ट करनेवाली विदेशी शक्करका सब लोगोंने एक दम त्याग कर दिया ।

कटनी मुडवारेकी जैन पाठशालामें सुनते हैं(८०००) के अनुमान चन्दा एकत्र हो गया है।

हर्षका विषय है कि, जयपुर जैनमहापाठशालाके दो विद्यार्थी इस वर्ष वहांकी राजकीय यूनिवर्सिटीकी साहित्यशास्त्री परीक्षामें उतीर्ण हुए हैं। एक विद्यार्थीका नाम भूरामल लुहाडिया और दूसरेका बालचन्द सेठी है। और एक छोगालाल बज नामका विद्यार्थी प्रवेशिका परीक्षा देनेवाले सम्पूर्ण विद्यार्थियोंमें प्रथम रहा है। महापाठशालाके प्रबन्धकर्त्ताओंको बधाई और अध्यापक महाशयोंको धन्यवाद है।

नुकड जिला सहारनपुरके आर्यसमाजियोंने एक ब्राह्मणविधवाका पुनर्विवाह कर डाला है। इस पर वहांके जैनी पंचोंने यह निश्चय किया है कि, हम लोग आर्यसमाजियोंसे भाजी आदि न लेंगे। जो इस नियमका उल्लंघन करेगा, वह जातिसे खारिज कर दिया जावेगा। नुकड़के भाइयोंने बड़ा अच्छा यत्न किया है।

खंडवामें अष्टान्हिका महोत्सव प्रतिवर्ष धूमधामसे होता है। इस वर्ष भी हुआ और कुछ विशेषतासे हुआ। अबकी बार वहांकी पाठशालाके पं० रामलालजी, मालवा प्रान्तिकसभाके उपदेशक पं० कस्तूरचन्दजी, और मध्यप्रान्तिकसभाके आ० उ० पं० रामभाऊजी आदि सज्जनोंके अनेक व्याख्यान हुए, जिनसे श्रोताओंके चित्त पर सविशेष प्रभाव पडा। पूर्णिमाके दिन भगवान्‌को गजारूढ कराके जलयात्रा की गई। अनुमान 1000 के सज्जन इस महोत्सवके दर्शक थे। सनावद मलकापुर आदि स्थानोंके जैनी भाई ३00 के अनुमान सम्मिलित हुए थे। खंडवा सभाकी ओरसे दोनों प्रान्तके उपदेशक फंडमें ग्यारह २ रुपये प्रदान किये गये।

अलीगढ़के लाला कुन्दनलालजीका गतमासमें स्वर्गवास हो गया। आप बड़े धर्मात्मा और सज्जन पुरुष थे। आप कविता अच्छी करते थे। आपके बनाये हुए भजन बहुत अच्छे होते थे। आपकी मृत्युसे हमको शोक हुआ है।

उलूक ।

('नोऽप्युलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा मित्रस्य किं दूषणम्')

कुछ दिन हुए एक उल्लूको,
कइ बगुलोंने उलझाया ।
झूठी सच्ची कितनी ही,
बातें दे देकर बहकाया ॥
कपटकीर्ति नहिं जानी उनकी,
देख साधु सद्ध्यानीसे ।
धोखेकी टट्टीमें उल्लू,
फँसा खूब नादानीसे ॥ १ ॥
कहा उन्होंने सुनो यार तुम,
सब प्रकारसे लायक हो ।
दीर्घकाय बलवान और सब,
परवालोंके नायक हो ॥
जातिधर्मके कामोंमें भी,
चतुर और उत्साही हो ।
नाना बोली बोल सको तुम,
काव्यजलधि अवगाही हो ॥ २ ॥
हो समर्थ यों सभी तरहसे,
चाहे जो कर सकते हो ।
छलबल और खुशामदसे तुम,
जग–जन–मन हर सकते हो ॥
मगर एक अफसोस बड़ा है,
पड़े हुए अंधेरेमें ।
खोते हो जीवनको अपने,
ऊजड़ घरके डेरेमें ॥ ३ ॥
इस हालतसे यार तुम्हें, गर
छुट्टी बिलकुल मिल जावे,
तौ न सिर्फ सुख हो तुमहीको,
बल्कि सभीकी बन आवे ॥
अवनतिप्राय 'पक्षिपरिषद्' यह,
तुमसे परिचालक पाके ।
हो जावे स्वातंत्र्यपूर्ण बल-
वान सुधारकता लाके ॥ ४ ॥
इससे भाई प्रतीकार कुछ,
इसका अब करना चाहिये ।
आप विपदसे छूट जातिकी,
सेवा भी करना चाहिये ॥
'निंदाकर' 'दुर्जन' प्रचंड जो,
'मित्र' जगतका कहलाता ।
वही एक तव पथका कंटक,
सब प्रकार दुखका दाता ॥ ५ ॥
किसी तरह कर सको अगर,
उसके प्रकाशको तमोमयी ।
तो अपने 'पौ बारह' समझो,
'पक्षिसभा' हो जगज्जयी ॥
हम सब भी साहाय्य करेंगे ।
समझो नहीं बिलग हमको ।
बहुत हुआ अब देर करो मत,
कार्यक्षेत्रमें आधमको ॥ ६ ॥
बगुलोंकी ये बातें सुन,
'उल्लूकिशोर' भी फड़क उठा ।
गया भूल अपने पौरुषको,
तेजीसे यों कड़क उठा ॥
आप लोग जो कहते हैं,
रंचक उसमें सन्देह नहीं ।
मैं भी ऊब उठा हूं जीमें,
'अब गम खाया जाय नहीं' ॥ ७ ॥
'देखो अब कैसी बनती है,
मेरी और मित्रजीकी'
'इसपर ही सिर घुटवाया है,'
करूं हवस पूरी जीकी ॥
किन्तु प्रथम ही झपाझपीके,
एक यत्न करना होगा ।

---

१ यह कविता लेखकके विशेष आग्रहसे छापि जाति है । **संपादक.**

अपनी बोली बोल बोल,
  बदनाम उसे करना होगा ॥ ८ ॥
इस प्रयत्नसे 'मित्र' सभीकी,
  नजरोंसे गिर जावेगा।
पूछेगा नहिं उसे कोई,
  पर अपना बल बढ़ जावेगा ॥
पीछे उसे पराजित करना,
  बात न कुछ होगी भारी।
कठिन नहीं होगा स्वतंत्रता,
  पा लेना भी सुखकारी ॥ ९ ॥
जोशीली बातें सुन बगुले,
  मन ही मनमें खुशी हुए।
पीठ ठोक लम्बी जुहारुकर,
  पक्षिसभासे बिदा हुए ॥
उल्लू भी फिर 'सम्पादक' बन–
  गया 'मित्र' की निन्दाको।
अब देखिये स्वांग वह क्या क्या।
  लाता है आइन्दाको ॥ १० ॥
देखा! पाठक! उल्लूका,
  साहस कैसा है बढ़ा चढ़ा।
'थामूंगा पैरोंपर गर,
  आकाश टूटके कहीं पड़ा' ॥
लोक हास्यका भय नहिं उसको,
  जो चाहे सो बकता है।
'अपना टेंट देखता नहिं,
  औरोंकी जाली तकता है' ॥११॥
जगत्प्रकाशक 'मित्र' मित्रको,
  दुर्जन कहके खिलता है।
पर यह नहीं जानता मुझको,
  पापोंका फल मिलता है ॥

जिससे दिनमें भी दिखता नहिं,
  ऊजड़ घरमें पड़ा रहै।
जब कि जगतमें जीवोंका
  सुखकलरव अतिशय बढ़ा रहै ॥१२॥
'मित्र' प्रभाके सम्मुख उसकी,
  आंखें नहीं उघरती हैं।
निष्कलंक चारित्र मित्रका,
  हाय! देख नहिं सकती हैं ॥
इस ही से उस पूज्यदेवको,
  'दुर्जन' 'निंदक' कह कहके।
अपनी हँसी कराता उल्लू,
  मार शेखियां रह रहके ॥ १३ ॥
अंधेरेका जीव निशाचर,
  अंधेरेमें चोट करै।
उजियालेमें घबड़ाता है,
  उजियालेपर ओट करै ॥
नहीं जानता है यह उल्लू,
  आखिर उजियाला होगा।
उज्जलका उज्जल होगा औ,
  कालेका काला होगा ॥ १४ ॥
मित्रमहोदय तेरी गीदड़–
  भभकी सुन नहिं चौंकेंगे।
व्यर्थ वितंडा करनेको भी,
  नहिं तेरे सम्मुख होंगे ॥
सम बलवालोंमें होता है,
  वैरनीतिविद् यों कहते।
'नहि गोमायुरुतानि केशरी,
  घनध्वनिं अनुहुंकुरुते' ॥१५॥

ता० ३०–७–०६. **शंकरलाल जैन–उज्जैन।**

Registered No. 238.

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम् ।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम् ॥

अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष । भाद्रपद शुक्ला १ श्रीवीर सं० २४३२। अं० २१

विषयानुक्रमणिका।

चिट्ठी पत्री भेजनेका पता—

मैनेजर, जैनमित्र—शोलापूर ।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य ≈) दो आना।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है ।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है ।

३ वारतक ≈) पंक्ति ।
६ " " ‑)॥ पंक्ति ।
१२ " " —) पंक्ति ।

और विज्ञापनकी बंटवाई इस प्रकार—

३ मासे तककी ३) रु. ।
६ " " ५) रु. ।
१ तोले तककी ८) रु. ।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट आना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—
जैनमित्र—शोलापुर ।

श्रीवीतरागाय नमः

भाद्रपद शुक्ला १ श्रीवीर संवत् २४३२।

वर्ष ७. अंक- २१।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

जैनी लोग भारतवर्षके प्रसिद्ध व्यापारी हैं। यहांका एकतृतीयांश व्यापार जैनियोंके हाथमें है। ऐसा अनेक विद्वानोंका मत है। परन्तु हम देखते हैं कि, अब हम लोगोंका व्यापार इतना बड़ा नहीं रहा है, दिनपर दिन घटता ही जाता है। और इस नवीन प्रकारकी उन्नतिके समयमें जब कि प्रत्येक व्यापार हाथोंकी अपेक्षा न रखके कलोंके स्वाधीन होता जाता है, हम अपने पुरानी टेकके पाले रहेंगे तो आश्चर्य नहीं कि थोड़े दिनोंमें इससे भी हाथ धो बैठें। और विदेशी मालको अपने देशमें बेचकर कमीशन खानेके सिवाय हम कुछ नहीं कर सकें। प्यारे भाइयो! अब सोनेका समय नहीं है। अभी आपके पास धन हैं, उसे केवल हुंडी चिट्ठीके व्यापारमें न लगाकर नयी २ कलों और कारखानोंके खोलनेमें लगाइये जिससे, आपको लाभ हो और आपके देशका कल्याण हो। इस वर्ष अहमदाबादके स्वदेशी मिल और कारखानेवालोंने जो नफा उठाया है, वैसा नफा उन्हें कभी नहीं मिला। अब स्वदेशी द्रव्योंका व्यवहार बढ़ रहा है। व्यापारी लोग अब जितना चाहें उतना माल तयार करें, देशमें उसके लेनेवाले मिल सकते हैं।

बड़े २ कल और कारखाने जो कि बहुद्रव्यसाध्य हैं, अर्थात जिनमें बहुत बड़ी पूंजीकी आवश्यकता होती है, उन्हें यदि अनेक व्यापारी मिलकर और कम्पनियां बनाकर खोलें, तो आसनीसे खोल सकते हैं। जैसे कि ब्यावरमें गाडमल गुमानमलजी और सेठ हरमुखराय अमोलचन्दजीने मिलकर मिल खोलनेका विचार किया है। अन्य बेंकर और सराफोंको चाहिये कि, उनका अनुकरण करें और देशके व्यापारको बढ़ावें।

हमारे देशमें सूदखोरीका व्यापार बहुत बढ़ गया है, और वह भी हमारे जैनियोंमें अधिकतर देखनेमें आता है। हमारी सराफोंकी दूकानें जैनसमाजमें ऐसी हैं, जिनमें केवल सूदखोरी होती है, अर्थात् जो केवल व्याजकी कमाईसे चलती हैं। देशकी दुर्दशा होनेका और देशी व्यापारके डूब जानेका यह भी एक प्रबल कारण है। जिन लोगोंकी आदत सूदखोरीकी पड़ गई है, और जो आठ आने सैकड़े व्याज मिल जानेसे ही अपनेको व्यापारियोंके शिरोमणि समझ बैठते हैं, वे देशकी उन्नतिके अन्यान्य कल कारखाने खोलनेमें अथवा बड़े २ व्यापार करनेमें अपना द्रव्य कभी नहीं लगा सकते। और इन कार्योंके बिना देशकी उन्नति नहीं हो सकती।

सूदखोरीकी आदत बहुत बुरी है, इससे आलस्य, कायरता, कंजूसी, तथा पुरुषार्थहीनताकी वृद्धि होती है। और देशके व्यापारकी जड़में कुल्हाड़ा मारा जाता है। जो लोग व्याज खाते हैं, वे अपनी रकम किसी बड़े व्यापारमें लगानेकी हिम्मत नहीं कर सकते। चटसे हिसाब लगानेको बैठ जाते हैं कि, इसमें व्याजकी परतल कितनी बैठती है। और इसलिये जहां उन्हें आठ आनेका व्याज मिल जाता है, वहीं संतोष करके बैठ जाते हैं और किसी अच्छे व्यापारमें हाथ नहीं लगाते। इससे यह होता है कि, विदेशी यूरोपादिक देशोंके लोग यहां आ आके अपने २ व्यापार फैलाते हैं और उनमें करोड़ों रुपया पैदा करके ले जाते हैं। और हमारे यहांके सूदखोर उसी आठ आनेको ताक २ के रहा करते हैं।

इस व्याजके लालचसे हमारे देशके कई करोड़ रुपये प्रॉमिसरी नोटोंमें फंसे हुए पड़े हैं। जिनसे बहुत बड़े २ व्यापारके कार्य हो सकते हैं, परन्तु वे सब थोड़े व्याजके मुनाफेपर गवर्णमेण्टके सुपुर्द हैं। और गवर्णमेंट भी अपने स्वार्थसे नहीं चूकती, उन रुपयोंसे बहुत बड़े २ काम चलाया करती है। यदि अब हमारे देशके लोगोंमें विशेषकर व्यापारप्रिय हमारी जैन जातिमें कुछ अपने देशके हितका विचार उत्पन्न हो और वे ऐसे द्रव्यको जो थोड़ेसे व्याजके लोभमें यत्र तत्र पड़ा हुआ है, निकालके यूरोप अमेरिका जापानादि देशके व्यापारियोंके समान बड़े २ कारखानोंमें लगावें, तो देशका कल्याण हो सकता है।

मुसलमानधर्ममें व्याज खानेको हराममें गिना है, सो शायद इसी कारणसे गिना है कि, मुसलमान भाइयोंमें यह सूदखोरीकी आदत न पड़ जावे और वे निरुद्यमी, आलसी और कायर न बन जावें। आजकल हमारे देशका व्यापार गिर रहा है, और विदेशी लोग हमारे देशके धनको जोंककी तरह खींच रहे हैं। सो हमको भी अब इस सूदखोरीको हराम समझ लेना चाहिये, और अपने धनसे खूब कल कारखाने खोलके स्वदेशी आन्दोलनमें सहायता पहुंचाना चाहिये। हमारे जैनियोंमें बहुत बड़े २ धनी हैं,

परन्तु खेदकी बात है, कि उनका ध्यान इस और बहुत कम है।

प्यारे पाठको! हमारे दशलाक्षणिक पर्वके दिन आ गये हैं। इन दिनोंमें आप सम्पूर्ण गृहकार्य छोड़कर मन्दिरजीमें अवश्य ही अपने साधर्मी भाइयोंके साथ मिलकर बैठेंगे, और नाना प्रकारकी धर्मचरचायें करेंगे। क्या उन धर्मचरचाओंमें आप इस अवनतिप्राय जैनधर्मकी उन्नति करनेके विषयकी चरचा करके हमारे उत्तप्त हृदयको कुछ शीतल करेंगे?

प्राचीन भंडारों और पुस्तकालयोंमें पड़ी हुई, गलती सड़ती और दीमकका भक्ष्य बनती हुई, जिनवाणी माता, सरस्वती देवीका उद्धार कैसे हो? धर्म, न्याय, काव्य, व्याकरण, ज्योतिष, वैद्यकादि जैन विद्याओंका जो कि लुप्तप्राय हो गई हैं, प्रत्येक जैनीके घरमें फिरसे निवास कैसे हो? और जैनधर्मपर बौद्ध नास्तिकादि कहकर जो आवरण डाले गये है, वे सर्वथा हमसे पृथक् होकर हमारे पवित्र धर्मकल्पद्रुमकी छायामें कोट्यावधि मनुष्य बैठकर पूर्वकालकी नाई शान्तिलाभ कैसे करें? इन तीन महामंत्रोंका निरन्तर जाप करके हमको चाहिये कि, अपने इन पवित्र दशदिनोंको शान्तितापूर्वक व्यतीत करें, यही हमारा कल्याण है।

इस अंकमें मेरठके मान्यवर लाला जगारमलजी पेन्शनर डिपुटी कलेक्टरकी चिट्ठी छपी है। पाठकोंको विचारना चाहिये कि, एक वृद्ध अनुभवी ओहदेदारकी कालेजके विषयमें क्या सम्मति है। जो लोग इसके विरुद्ध कालेज बनानेके लिये गला फाड़ रहे हैं, और उसके प्रपंचमें पड़कर अन्य विद्यालयादि बने बनाये कार्यों पर हड़ताल फेरना चाहते हैं, उन्हें अब भी अपने मन्तव्यकी आलोचना करना चाहिये। हम आशा करते हैं कि, हमारी जातिके अन्य गण्यमाण्य ग्रेज्युएट तथा ओहदेदार महाशय इस विषयमें इसी प्रकार अपनी २ सम्मतियां प्रकाशित करानेका परिश्रम करेंगे। जिससे यह व्यर्थका झगड़ा शान्त हो जावे और लोग अन्यान्य आवश्यक कार्योंमें एकत्र होकर दत्तचित्त हो जावें।

"एक सच्चा प्रेमी—जैनी" की सहीकी एक चिट्ठी गिरनार क्षेत्रके विषयमें हमारे पास आई है। परन्तु लेखकका नाम ज्ञात हुए विना चिट्ठी प्रकाशित करनी हमारे नियमसे विरुद्ध है। लेखक महाशयको चाहिये कि, अपना नाम हमपर प्रगट कर देवें। वे चाहेंगे तो उनका नाम जैनमित्रमे प्रकाशित नहीं किया जावेगा।

दशलाक्षणिक पर्वका शुभागमन।

(लेखक—बुद्धमल पाटणी-सिवनी निवासी।)

प्रिय विद्वज्जनो! अत्यन्त हर्षका स्थल है कि, अपनेको एक अद्वितीय धार्मिक अतिथिके सत्कार करनेका अवसर प्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं किन्तु ऋतुराज भी स्वदलसहित पर्वराजके सत्कार करनेको पुरःसर हो गया है।

देखिये तो सही, इसके साजबाजसे आपको स्वयम् ही प्रतीति हो जावेगी। मेघपटलरूपी मृदंग चारों ओर अपनी ध्वनि फैला रहे हैं। शीतल समीर अपने बारीक स्वरसे सारंगी सितारका निरस्कार कर रही है। तडिल्लता अपनी अनवस्थित अलौकिक छटा दर्शा रही है। भक्तिभारसे नम्रीभूत बादल कभी अविच्छिन्न झड़ी लगाते हैं और कभी रिमझिम २ बरसते हुए नर्तकीके किंकिणीनादको लज्जास्पद करते हैं। विटप पत्रावली और वल्लरीसहित डहडहे हो रहे हैं। छोटे मोटे सभी पौधे आगन्तुक महोदयके सत्कारार्थ हरे भरे खड़े हुए हैं। मोर चहुओर शोर मचा रहे हैं। इसप्रकार वर्षाऋतु पर्वराजके स्वागतकी धूम हो रही है। प्रिय पाठको! जिस प्रकार हम अपने अतिथिका आगमन श्रवणकर पुलकितशरीर और हर्षितवदन हो उनके सत्कारार्थ प्रस्थान करते हैं और सन्मानपूर्वक उसे गृह लाकर यथोचित प्राहुणिकक्रिया करते और अपना अहोभाग्य मानते हैं, उसीप्रकार इस पारमार्थिक मार्गदर्शक पर्वराजका हमें सत्कार करना परम आवश्यक है। साधर्मी सज्जनो! जिस प्रकार त्रिभुवनपति तीर्थंकर परमभट्टारकके गर्भावतरणके छह मास पूर्व ही चतुर्निकायके देव पंच प्रकारके रत्नोंकी वर्षा तथा अन्यान्य चमत्कृति कर संसारको एक अद्वितीय धर्मचक्रीके आगमनका समय प्रगट करते और भक्तिभावमें भींजे रहते थे, उसी प्रकार हमें भी व्यापारादि आरंभोंको संकोच कर पर्युषणको धर्मध्यानपूर्वक निर्विघ्न समाप्त करनेकी चेष्टा करना चाहिये।

प्रिय भ्रातृगणो! क्या आपको प्रगट नहीं है कि, वर्षमें ये दशदिवस कितने बहुमुल्य हैं? जिस प्रकार स्वाति नक्षत्रमें सीपमें पड़ा हुआ जलबिन्दु उत्कृष्ट मोतीरूप परिणम जाता है, उसी प्रकार इस पर्वमें उपार्जित पुण्य स्वर्ग तथा उत्तरोत्तर अपवर्गके मिष्ट फलका दायक होता है। ये विश्वासपात्र सुगुरुओंके अमोघ वचन हैं।

आपको भलेप्रकार प्रगट है कि, ये दशलाक्षणिक पर्व उत्तम क्षमादि दशधर्मोंका आश्रय लेकर ही प्रचलित है और ये ही दिन मुख्यतया इसके समीचीन साधनार्थ कहे गये हैं। भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रधानभूत व्रतरत्नोंकी वसुन्धरा है, अतएव षोडशकारण-दशलाक्षण-रत्नत्रय-पुष्पांजलि आदि मद्रलोंके परिशीलनार्थ ये ही शुभदिवस हैं। इसलिये अपनेको यथाशक्ति इनमेंसे किसी व्रतरत्नसे अवश्य २ मण्डित होना चाहिये। सुसमयमें बोया हुआ बीज उत्तम फलका दाता होता है।

सद्गृहस्थो! हमारे इस समय क्या २ मुख्य कर्तव्य हैं, इस बातका विचार अत्यन्त आवश्यक है। कारण इसी सामग्रीसे अभ्यागतका सन्मान हमें करना होगा। अतएव मैं भी कुछ इस विषयमें लिखना योग्य समझता हूं।

(१) प्रथमही प्रातःकाल यथोचित शुद्धिपूर्वक जिनाभिषेक करना चाहिये। तदनन्तर नित्यपूजनके सिवाय उपर्युक्त व्रतोंकी पूजन कर उनकी जयमाल कण्ठमें धारण करना चाहिये।

(२) प्रत्येक दिवस तत्वार्थसूत्र मोक्षशास्त्रका सार्थ एक २ अध्याय सुनना चाहिये। उसके दशाध्यायका सामान्य पाठ भी करना

चाहिये। तथा उत्तम क्षमादि दश धर्मोंके व्याख्यान सुनना और क्रमशः एक २ धर्मकी भावना भाना चाहिये।

(३) सामायिक–अलोचनपाठ–जाप्यादिक एकाग्रचित्तसे करना चाहिये और द्वादश अनुप्रेक्षाओंका मनन करना चाहिये।

(४) दशों दिवस उत्तमक्षमा, कोमलता, सरलता, सत्य, शौच, दान (चार प्रकारका), अपरिग्रह और परमब्रह्मचर्य्यरूप परिणाम रखना चाहिये।

(५) यथाशक्ति उपवास तथा एक भुक्त (एक बार आहार) करना चाहिये।

(६) आलस्य–तन्द्राको दूरकर प्रसन्न चित्तसे संसारिक प्रपंचोंसे पराङ्मुख हो शास्त्रामृतका आस्वादन करना चाहिये।

(७) अढ़ाईद्वीप–तेरहद्वीप सोलह कारण दशलाक्षण, पंच मेरु, रत्नत्रयादिके मनोज्ञमण्डल मांड़कर पूजनविधान भी करना चाहिये और संगीत नृत्यादिमें अपने परिणामोंको भक्तिके मार्गमें लगाना चाहिये।

(८) अन्यान्य प्रकारके धर्मप्रभावनाद्योतक शुभकृत्य करना आवश्यक है।

इस प्रकार धर्मवात्सल्यसम्पन्न भव्यात्माओंको प्रवर्तना परम शर्मप्रद है। परन्तु इस प्रसङ्गपर विद्योन्नति और जात्युन्नतिपर भी पूर्ण ध्यान रखना चाहिये।

विद्योन्नतिकी बहुत आवश्यकता है। जिस जैन समाजके ग्रन्थोंको अवलोकनकर अन्यमतावलम्बी भी चकितस्तम्भित तथा मदमर्दित होते हैं और इस सनातनधर्मकी उत्कृष्टता और उज्ज्वलताको पूज्यदृष्टिसे देखते हैं, उन सत्यार्थ आप्तप्रणीत आगमोंका अभ्यास विना पाठशालाके किस प्रकार नहीं हो सकता इसलिये सन्मार्गी सज्जनोंको अपनी सन्तानको विद्वान बनानेकी चेष्टा करना चाहिये।

जात्युन्नतिमें जैनसमाजकी फैली हुई फूटको निर्मूल करना चाहिये। और परस्पर मैत्रीभावका वर्ताव होना चाहिये। इसके अतिरिक्त फिजूलखर्ची आदिक भी निषेध करना चाहिये। प्रिय वाचकवृन्द ! इस महत्पर्वका कृत्य यथाशक्ति दर्शाया गया है। इस बहुमूल्य समयको व्यर्थ व्यतीत नहीं करना चाहिये। प्रायः उपवासवाले सज्जन धर्मध्यानमें दत्तचित्त न होकर प्रातःकालकी बाट देखते हुए खुर्राटे लगाया करते हैं। तथा जिन मन्दिरोंमें जातिसम्बन्धी वितंडावाद भी होने लगता है, सो ऐसा नहीं करना चाहिये।

उन महाशयोंसे निवेदन है, जो अंग्रेजी दफ्तरोंमें नौकर हैं कि, वे बने जिस प्रकार दशदिनोंकी छुट्टी लेकर धर्मध्यान करें और पुण्यसंचय करें। कारण प्रथम तो मनुष्यभव श्रावक कुलकी प्राप्ति ही दुर्लभ है। उसमें भी दशलाक्षणिक जैसे पवित्र दिवसोंकी उपलब्धि तो अत्यन्त ही दुर्लभ है। इसलिये सर्व साधर्मी बन्धुवर्ग परलोकसहचारी, कल्याणकारी धर्मधन उपार्जन करें। किसीका कथन है;—

एकमेवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यत्तुगच्छाति।

अर्थात् एक धर्ममित्र ही साथ जानेवाला सहचारी है। अन्य सब शरीरके साथ नष्ट हो जाते हैं, यहांके यहीं रह जाते हैं। इस

लिये यह दशधा धर्म अपनेको सदाकाल हृदयमें धारण करना चाहिये। इस लोक परलोकमें जीव इसीसे सुखका भागी होता है। ये धर्म मतमतान्तरको भी मान्य हैं। कर्मकीटसे मलीन हुए आत्माको दैदीप्यमान करनेकेलिये यह अलौलिक सलिल है। भवभवकी कामनासिद्धिके हेतु यही एक कल्पवृक्ष है। यह अमूल्य घड़ी गये पीछे हाथ नहीं आवेगी। व्रतकथाकोषादि ग्रन्थोंमें इन व्रतोंके धारी परम्परासे मोक्षलक्ष्मीके वल्लभ हुए इस प्रकार वर्णन किया है। अतएव परिपक्क श्रद्धासे इस व्रतको पालन करनेका प्रयत्न करना चाहिये।

अन्तमें यही प्रार्थना है कि, प्रिय सज्जनो! दशलाक्षणिक पर्वराजकी राजधानीमें वर्षोंके संचित विरोधविषको वमनकर साधर्मियोंसे कृत अपराधोंकी क्षमा करावें, स्वयं क्षमाप्रदान करें और सब मिलकर एकता लताके मनोहर वितानमें विश्राम करें। अन्यथा बिजलीके समान परिवर्तनशील संसारमें हमने अनादि कालसे चक्रमण किया और अनन्तकालतक करते रहेंगे। अतएव मोहनिद्रासे सचेत हो, हमें इस दुर्लभ धर्मपथप्रदर्शक दशलाक्षणिक पर्वका मनवचनकायसे सन्मान करना परम आवश्यक है। विद्वद्वरेषु किमधिकम्।

श्रवणबेलगुलका इतिहास।

(४)

(लेखक—नाथूराम प्रेमी, देवरी निवासी।)

इस राजाके पश्चात्—कुछ दिनोंमें, उस समयके दिल्ली निवासी लोगोंने दक्षिणहिन्दुस्थानपर चढ़ाई करके जो देश हस्तगत किया उसमें महसूर प्रान्त भी उनके अधिकारमें आया और उन्होंने यह प्रान्त राज्यव्यवस्थाके सम्बन्धसे अनागोंदी नामक प्रान्तके राजघरानेके साथ जोड़कर उक्त घरानेको मांडलिक बना लिया। उस समय राज्यविप्लव होकर विधर्मी राजाका राज्य होनेसे पूर्व धर्मवालोंके मन्दिरादिकोंकी जागीरें बन्द हो गईं। यह घटना शाके १२५९ में हुई। पश्चात् जिस घरानेमें यह प्रान्त चला गया, उसका अधिष्ठाता बुक्कराय नामक राजा अपने प्राप्त किये हुए नवीन प्रान्तका निरीक्षण करता हुआ बेल्गिोल क्षेत्रमें भी आया। यह राजा जैनी था। क्षेत्रस्थ देव मन्दिरादिक देखकर अत्यन्त संतुष्ट हुआ और उसी समय उसने तीन हजार रुपया वार्षिक पारितोषिक उक्त क्षेत्रके लिये नियत कर दिया। इसके अनन्तर बुक्करायके पुत्र संगमराय और पौत्र हरिहररायने अपने जीवनमें उक्त पारितोषिक यथापूर्व जारी रक्खा। हरिहररायके समयमें मठकी व्यवस्था श्रीचारुकीर्तिपंडिताचार्यके अधिकारमें रही। पश्चात् हरिहररायके प्रतापरामदेवराय नामक पुत्रसे लगाकर प्रतापदेवराय, मल्लिकाइमराय आदि ग्यारह पुरुषोंतक देवस्थानकी जागीर यथापूर्व नियत रही। और इसके पश्चात् शाके १६३१ पर्यंत कृष्णराय, श्रीरंगनाथ आदि जो ग्यारह राजा हुए उन्होंने उक्त जागीरको दश हजार तक बढ़ाई।

शकसंवत् १६३२ में वडियर नामका

राजा महसूर प्रान्तको स्वतंत्ररीतिसे अपने अधिकारमें करके वहांका स्वतंत्र राजा हो गया और उसने अपनी राजधानीका मुख्यनगर **श्रीरंगपट्टण** बनाया। इसने आठ वर्षतक राज्य किया। देवस्थानोंकी जागीरें ज्यों की त्यों स्थिर रक्खीं। इसीका "वडियर" यह नाम इसके पीछे महसूरके जो तद्वंशीय राजे हुए, उनके पीछे एक उपपदकी नाईं लगाया जाने लगा। उसके पुत्र **चामरायवडियरने** शकसंवत् १५४० में सिंहासनपर आरूढ होकर बारह वर्ष राज्य किया। पश्चात् (द्वितीय) **चामराय वडियरने** शक सं० १५५० में राज्याधिकार पाके २ वर्ष राज्य किया। इसके पीछे **इमादिराज** नामक राजाने दो वर्ष राज्य करनेके पश्चात् **कंठीरवनरसराजने** शक सं० १५६२से लगाकर बारह वर्ष राज्य किया। इतिहाससे निश्चय होता है कि, इस राजाके राज्यकालके अन्ततक गोमटेश्वरके मन्दिरको **हरिहरराय** राजाके वक्तसे जो एक हजार रुपयेकी जागीर चली आती थी, वह बराबर जारी रही। पीछे १५८२ में **दोड्ड** (बड़े) **देवराजनें** सिंहासनपर आसीन होकर १४ वर्ष पर्यन्त राज्योपभोग किया। यह गोमटेश्वरकी महिमा श्रवण करके शकसंवत १५९५ में वहां देवदर्शनके लिये गया और वहां इसने अनेक लोकोपयोगी समुचित और उत्तम २ कार्य किये, जो बहुत कालतक उसका स्मरण करावेंगे। तथा अर्चनादि विधियोंमें बहुतसा द्रव्य व्यय किया। इतना ही नहीं किन्तु उसने पूर्वकी जागीर ज्यों की त्यों स्थिर रखके **श्रीचारुकीर्ति-पंडिताचार्यके** मठकेलिये एक "**मदनें**" नामका गांव और भी लगा दिया। पीछे शकसंवत् १५९७ में **चिक्क** (छोटा) **देवराज** राज्यका स्वामी हुआ। इसने **कोपल** प्रान्तको अपने अधिकारमें करके ३१ वर्ष राज्य किया। इसने भी **वेल्गिोलक्षेत्रकी** यात्रा की। देवमूर्तिका मस्तकाभिषेक करके वहांपर **कल्याणी** नामका एक छोटासा तालाब,उसके निकट अतिशय ऊंचा और दर्शनीय मन्दिर, और मन्दिरका प्राकार बनवाकर उसने अनेक जीर्ण मन्दिरोंका जीर्णोद्धार भी कराया। इसके **कंठीरव** नामक पुत्रने १६२७ में राज्याधिकारी होकर ८ वर्ष राज्य किया। इसके राज्यकालके अंततक **दोड्डदेवराजकी** दी हुई जागीर नियत थी। उसके पीछे **दोड्ड कृष्णराज** नामक राजा १६३६ में सिंहासनारूढ हुआ और उसने १३ वर्ष राज्य किया। इसने एकवार **वेल्गिोलक्षेत्रके** दर्शनोंको जाकर देवकी मस्तकाभिषेकादि अर्चनविधि शास्त्रानुसार की, कई मन्दिरोंका जीर्णोद्धार किया और **कलाल** नामक एक ग्राम जागीरमें और बढ़ा दिया। इस राजाके पीछे शक सं० १६५४से१६५८ पर्यन्त एक **चामराय** नामक अन्यकुलोत्पन्न राजाके राज्य करनेके पश्चात् १६५८ में **वडियर** कुलोत्पन्न **इमादिकृष्णराय** नामक राजा हुआ। इसने तीस वर्ष राज्य किया। पश्चात् **चामराय** नामक राजा हुआ, जिसके समयमें **हैदरअलीका** उदय हुआ।

यहांतक अर्थात् शक संवत १७०२ पर्यन्त **श्रवणबेलगुलके** देवस्थानोंकी व मठोंकी जागीरें बराबर नियत रहीं। परन्तु उंमी वर्षके

अन्तमे टीपू सुलतानने सम्पूर्ण देवमन्दिरोंकी जागीरें जप्त कर डालीं। समय बुरा आ गया। राजाओंके हृदयमें देवद्रव्योंका भय नहीं रहा।

समाप्त।

एक अनुभवीकी चिट्ठी।

मान्यवर श्री गोपालदासजी। जुहार।

आपके जैनमित्रमें मैंने जैनकालिज वा जैन स्कूलके विषयमें जो लेख प्रकाशित हुए, सब पढ़े उनसे मेरा चित्त चकित हो रहा है कि, कैसे कैसे विद्वानोंमें कैसे २ हास्यनीय झगड़े, हो रहे हैं। हाय। इस कालमें जैनियोंका वात्सल्य कहां जाता रहा? जब कि इस कार्यके कार्याधीशोंके मनोंमें फूट पड़ गई, तो क्या कोई कह सकता है कि इस कार्यमें कुछ सिद्धि हो सकेगी? कदापि नहीं। जो रुपया अब तक एकत्र हुआ है, वह सब इसी प्रकारसे अट्टे बट्टे हो जावेगा। जैसे ३४००) रुपया जो सहारनपुरमें एकत्र हुआ था, हो गया।

अब मैं यह पूछता हूं कि, जैनियोंका कालिज वा स्कूल बनानेका क्या अभिप्राय है? यही है न, कि जैनियोंके बालकोंको जैनधर्मके ग्रंथ भी पढाये जावें? जिससे उनका विश्वास जैनधर्ममें बचेपनसे पक्का हो जावे। अंगरेजी संस्कृत पढानेके लिये तो वर्तमानमें जगह जगह बहुतसे स्कूल वा कालिज बने हुए है, नये कालिज वा स्कूल बनानेकी कुछ आवश्यकता नहीं हैं। अब केवल नामवरीके लिये जैन कालिजकी आवश्यकता है। सो उसके बनानेको लाखों रुपया चाहिये, वह कहांसे आवें? अब-तक बरसोंमें केवल २६०००) रुपया इकट्ठा हुआ है, जो मुन्शी चम्पतरायजीने खुरजेमें जमा करा रक्खा है। इतनी ओछी पूंजीमें कालिज बनानेकी लड़ाई लड़ना बच्चोंका खेल नहीं तो क्या है? मेरी समझमें नहीं आता कि, ये सब महाशय पंचायती रुपयोंपर क्यों लड़े मरते हैं? अब मैं सब जैनी भाइयोंकी सम्मतिकेलिये एक सुगम उपाय बतलाता हूं। जिससे इसी थोड़ेसे रुपयेमें वह मनोर्थ सिद्ध हो जावे, जो लाखों रुपये लगाकर कालिज बनानेसे होता। जैन कालिज किस जगह बनाया जावे, इसमें भी झगड़ा है। कोई मथुरा कोई जयपुर कोई दिल्ली कोई सहारनपुर और कोइ बनारसकी राय देता है। जो उपायमें बतलाता हूं, उससे यह झगड़ा भी चुक जावेगा।

वह उपाय यह है कि, मेरठमें एक कालिज Divisional डिविजनल कालिजके नामसे बना हुआ है, जिसमें बी. ए. तक पढ़ाई होती है। यह कालिज चंदेसे बना है, और मेरठकी आब हवाकी तारीफ तमाम हिंदुस्थानमें है। इस कालिजके प्रिंसिपल साहब इस बातपर राजी है कि, कालिजके कम्पोंड यानीं अहातेमें जैनी साहबान अपना जैनबोर्डिंगहौस अपनी पसंदकी मुताबिक बना लेवैं। इस बोर्डिंगहौसका मोहतमिम वा सुपरिंटेंडेन्ट जैनी पंडित होगा। जिसको जैन पंचायत पसंद करेगी। और जैनी विद्यार्थियोंके वास्ते एक घंटा जैनशास्त्र पढ़नेका दिया जावेगा। इंट्रैंस चाहे जिस स्कूलमें रहकर पास कर लेवैं। उसके पश्चात् जो एफ. ए. अथवा बी. ए.

पास करनेकी इच्छा हो, तो मेरठ कालिजमें चले आवें। और जैनबोर्डिंगहौसमें सुखसे रहें। जैनियोंकी सेकंडलेंग्वेज संस्कृत होगी। और जब एफ. ए. बी. ए. तक संस्कृत पढ लेवेंगे, तो उनको जैनशासन समझ लेनेका बोध स्वयं हो जावेगा। जितना रुपया कालिजके नामसे अब जमा है, उसीमें यह सब काररवाई हो जावेगी और जैनी लौकिक और पारमार्थिक दोनों विद्याओंमें निपुण हो जावेंगे।

मेरठ। } आपका दास—
२१ जुलाई स.१९०६. } उजागरमल-पेनशनर डिपुटी कलेक्टर।

आराकी चिट्ठी।

भाईसाहब। जयजिनेन्द्रकी।

आराकी बीबी वसन्तीकुंवरने मरते वक्त एक बिलके साथ गहनेका सन्दूक और रुपयोंका चिट्ठा बाबू जयबहादुरलाल रईसके हवाले किया। बिलमें जैनधर्मके वास्ते एक हजार रुपया लिखा हुआ था। वह अब यों बांटा गया है:—

खैरात—१००) एक सौ रुपये।

शिखरजी—१००) एक सौ रुपये।

आरा नागरीप्रचारिणीसभा—२००) दो सौ।

शोक है कि, बाकी छः सौ रुपये अपने यार दोस्तोंमें बांट दिये हैं। बाबूसाहबको ऐसा करना उचित नहीं था। हमें शक है कि ऊपरकी लिखी हुई रकम भी ठीक तरहसे खर्च नहीं होगी। शोक है कि, धर्मका कोई पूछनेवाला नहीं रहा, नहीं तो ऐसा अधर्म नहीं होने पाता। आप मिहरबानी करके पंचायती मन्दिरको अथवा तीर्थ-क्षेत्र कमेटीको रुपये दिलवानेके लिये लेख लिखिये और इसे भी छाप दीजिये। इसके बारेमें जो खबर होगी, भेजा करूंगा।

आप जैनगजटसे पूछिये कि, वह इतनी मशहूर बात अपने कलेवरमें क्यों नहीं छापता है।

१९।७।०६. } एक जैनी।
आरा। }

मनोविनोद।

(१)

"संसार स्वप्नवत् है।"

एक आदमीको जिसके पास कुछ काम नहीं था, उसकी स्त्री प्रतिदिन धमकाके कहती थी कि तू खाली क्यों बैठा रहता है? कोई नौकरी या और काम अपने लिये क्यों नहीं ढूंढ़ता? एक दिन जब उसका लड़का बहुत बीमार था, वह घरसे काम ढूंढनेको निकला। इस अर्सेमें उसका लड़का मर गया। तब लोग उसको ढूंढने लगे, परन्तु उसका कहीं पता न लगा। शामको वह घर आया और उसकी स्त्रीने उसे धमकाके कहा कि तू कैसा कठोर है, मरता हुआ लड़का छोड़के तू घरसे चला गया। उसने कहा कि, एक वार मैंने स्वप्नमें देखा कि मेरे सात लड़के हैं और मैं उनके साथ बड़े आनन्दसे रहता हूं। परन्तु जब मैं नींदसे जागा तो जाना कि, यह तो निरा स्वप्न था। इसलिये मैंने अपने सात लड़कोंसे अलग होनेका कुछ भी दुःख न माना। अब मैं एक लड़केके लिये क्यों रोऊं?

(२)

"मलिनवासना।"

एक धींवरी मछली बेचकर घरको आती थी, रास्तेमें सांझ हो गई, इसलिये रातको वह एक मालीके घर ठहर गई। मालीसे जहांतक हो सका, उसकी खातिर की, परन्तु धींवरीको नींद न आई। आखिर सोचते २ नींद न आनेका कारण उसे यह मालूम हुआ कि, वहांपर फूलोंकी एक टोकरी रक्खी है, और फूलोंकी सुगन्धसे उसे नींद नहीं आती है। यह देख उसने मछलीकी टोकरीपर पानी छिड़का और उस पानीको नाकपर लगाया, जिससे मछलीकी दुर्गन्ध बनी रहै। इससे उसको तुरन्त नींद आ गई। इसी प्रकार संसारबद्ध लोगोंका मन होता है। जब तक उन्हें मलिन अवस्था नहीं मिलती, तब तक चैन नहीं मिलता।

दृष्टांतसमुच्चय।

स्त्रीशिक्षा।

(१)

[लेखक—एम. आर. दोसी, बम्बई और बुद्धूलाल श्रावक, देवरी (सागर)]

प्रिय तरुण जैनबन्धुओ! बाल्यावस्था पूर्ण होकर हमारा अत्यन्त रमणीय युवाकाल वर्तमान है और इंद्रियोंकी पूर्ण प्रबलता उपस्थित है। युवा अवस्थाको यदि हम आयुष्यरूप दिनका प्रभातकाल कहें, तो कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। सवेरेकी शीतल सुखकर वायुके वहनेसे हमारे अन्तःकरण रूप कुसुम (फूल) अभी २ खिलने लगे हैं। हमारे अन्तःकरणरूप भूतलपर ज्ञानसूर्यकी कोमल किरणें स्पष्ट रीतिसे प्रतिबिम्बित होने लगी हैं। रोम २ से शारीरिक और मानसिक शक्तियोंकी प्रबलता उछलने लगी है। भौरोंकी नाईं उद्योगपरायण होकर ज्ञानरूप मधुरस ग्रहण करनेके लिये यह समय हमें अतिशय सुखदायी और योग्य है। प्रत्येक विषयका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये हमारी इच्छा होती है, उसे पूर्ण करनेके लिये हमें इससे अच्छा और कोई समय नहीं मिलेगा। अतएव प्यारे भाइयो और बहिनो! इस अमूल्य समयमें परम भट्टारक भगवान् ऋषभदेवका निम्नलिखित उपदेश जो कि उन्होंने अपनी कन्याओंको दिया था, सब प्रकारसे विचारणीय और वर्तनीय है;—

इत्याक्रीड्य क्षणं भूयोऽप्येवमाख्यद्गिरां पतिः।
युवां युवजरत्यौस्थः शीलेन विनयेन च॥ ९६॥
इदं वपुर्वयश्चेदमिदं शीलमनीदृशम्।
विद्यया चेद्विभूष्येत सफलं जन्मवामिदम्॥ ९७॥
विद्यावान् पुरुषो लोके सम्मतिं याति कोविदैः।
नारी च तद्वती धत्ते स्त्रीसृष्टेरग्रिमं पदम्॥ ९८॥
विद्या बन्धुश्च मित्रं च विद्या कल्याणकारकम्।
सहयायि धनं विद्या विद्या सर्वार्थसाधनी॥ १०१॥
तद्विद्याग्रहणं यत्नं पुत्रिके कुरुतं युवाम्।
तत्संग्रहणकालोऽयं युवयोर्वर्ततेऽधुना॥ १०२॥

महापुराण—पर्व १६।

इस प्रकार क्षणभर विनोदभाषण करनेके पीछे विद्याधिपति ऋषभदेवजी अपनी दोनों ब्राह्मी और (सुन्दरी) पुत्रियोंसे कहने लगे कि, तुम दोनो तरुण होनेपर भी विनय और शीलमें वृद्धा स्त्रीके समान हो। ९६। यह तुम्हारा सुन्दर शरीर, यह वय वैसे ही यह उपमारहित शील यदि विद्यासे भूषित हो, तुम्हारा यह जन्म सफल होगा है। ९७।

कारण इस संसारमें जो विद्यावान् पुरुष हैं, वे ही कोविद पुरुषोंमें सन्मान पाते हैं, और शिक्षित स्त्री, स्त्रीसमाजमें प्रतिष्ठा पाती है। ९९। विद्या ही बंधु, विद्या ही मित्र, विद्या ही कल्याण-कारिणी और, विद्या ही सदैव साथ रहनेवाला धन है। अधिक क्या कहें, सम्पूर्ण प्रकारकी इष्ट सामग्रीकी प्राप्तिका सत्य साधन विद्या ही है। १०१। इसलिये पुत्रियो! तुम दोनों विद्या सीखनेका प्रयत्न करो। तुम्हारी यह अवस्था विद्या सीखने योग्य है। १०२।

संसाररूप रथके स्त्रीपुरुष दोनों पहिये हैं। दोनोंके संतुल्य रहने तक गाड़ी भले प्रकार चल सकती है। परन्तु स्त्रीरूप चक्र ज्ञानसंस्कारसे निर्बल होनेके कारण हमारा यह संसाररथ योग्य रीतिसे मार्गक्रमण नहीं कर सकता। स्त्री-पुरुषकी सहायतासे संसारकी सब बातें निर्विघ्न चलती जान पडती हैं। आयुष्यकी किसी भी दशामें इन दोनोंकी जंजीर कभी नहीं छूट सकती। एकके न होनेपर दूसरा प्रायः निरुपयोगी और निःप्रयोजन हो जाता है। सांसारिक सुख और भोगविलास परस्पर अवलम्बित हैं। केवल मनुष्यमात्रकी यह दशा नहीं है, वरन पशुपक्षी वनस्पति आदि जितने सजीव पदार्थ हैं, सभीमें यह प्रभाव विद्यमान है।

स्त्रीपुरुष दोनों एक शरीरके अवयव हैं, फिर ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो शरीरके दो भागोंमेंसे एकको अच्छा रखकर दूसरेको बुरा रक्खेगा, एकका आदर करके दूसरेका अनादर करेगा, एकको छोटा और दूसरेको बड़ा रक्खेगा, एकको वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित करके दूसरेको बिलकुल फटेहाल और बेडौल रक्खेगा, वा आधा स्वच्छ रखके आधेको मलिन रक्खेगा, आधेको न्यायमार्गपर आरूढ़ करके आधेको कुमार्गमें लगावेगा।

हाथ, पांव, मुंह, आंखें, नाक, कान आदि अवयव स्त्रीपुरुषके एक होते हैं। ज्ञानेन्द्रिय आदिमें भी कुछ भेद नहीं है। सुख दुःख हानि लाभ पीड़ा आदिका भी दोनोंपर एकसा प्रभाव पड़ता है। रोगादिकी औषधियों वा पौष्टिक पदार्थोंका दोनोंको एकसा परिणाम मिलता है। दोनोंके शरीरमें एक ही रीतिपर एक ही सा रक्त संचालित होता है, और जहां कहीं पुरुषोंके साथ स्त्रियोंको शिक्षा दी जाती है, वहां वे पुरुषोंसे पीछे नहीं रहतीं। हमारे प्राचीन ग्रन्थोंमें इसकी जगह २ साक्षी मिलती है। परन्तु इतनेपर भी हमारे न्यायपरायण बंधुओंने स्त्रीशिक्षणपर ऐसी निर्दयताकी कुठार क्यों चलाई है, सो मालूम नहीं होता। विस्तारभयसे हम उनके इस अन्यायका वर्णन न करके स्त्रीशिक्षाके लाभ किंवा स्त्रियोंको शिक्षा देना चाहिये, या नहीं? इसकी थोड़ीसी विवेचना करेंगे। समाजके आदिस्थान स्त्रीजातिकी शिक्षापर हमारी जैनजाति उदासीन है, यह बड़े खेदकी बात है।

स्त्रीशिक्षासे यह उद्देश्य है कि, हम अपना विशालचित्त करके उसपर ज्ञानकी मनोहर ज्योतिका सम्पादन करें। धर्मनीति आदि अमूल्य रत्नोंपर अपना जीवन स्तंभित करें। अपने

अलौकिक बुद्धिकौशल्यसे अपनी संततिको योग्य बुद्धि देकर देशका कल्याण करें और अन्तमें आत्महित करके मनुष्यजन्म सफल करें ।

पतिकी गरीब दशा होनेपर भी अशिक्षित स्त्रीके शरीरपर सेर सवा सेर सोना होना चाहिये; जिससे जातिभाइयोंमें सदा प्रशंसा होती रहे। नहीं तो नित्य किल किल करके बिचारे पतिके प्राण चूसती हैं । पति क्षणमात्र भी सुखसे नहीं रह सकते । बीबी साहिबाकी दंत कटाकटके मारे भरपेट भोजन नहीं हो सकते । घुस फुस, तड़फड़, लड़के बच्चोंपर घूसेबाजी, वासनवर्तनोंकी पटकाझटकीका काम जारी रहता है। सारांश, दिनभर श्रम करनेके सिवाय हमारे पूर्वज ग्रंथकारों द्वारा लिखा हुआ सांसारिक सुख उन्हें स्वप्नमें भी प्राप्त नहीं होता । यह सब अविद्याका परिणाम है ।

बचपनमें बच्चोंका जितना निकट सम्बन्ध मातासे है, उतना अन्य किसीसे नहीं है । यदि माता सुशिक्षिता पापभीरु और धर्म-परायणा हुई, तो संतान भी उसके अनुकरणशील होते हैं। परन्तु वर्तमान माताओंको धार्मिक नैतिक वैद्यक आदिका ज्ञान न होनेसे उनके अल्पवयस्क बालक कुछ और ही प्रकारकी प्रवृत्ति करने लग जाते हैं। केवल इतना ही नहीं है, वरन वे ज्ञान-शून्य मातायें बालकोंको कुमार्ग पर चलते देख प्रसन्न चित्त होतीं और उनका उत्साह बढ़ाती हैं। (उदाहरण शालाको न जानेमें और बापकी मूछें उखाड़नेमें समझ लीजिये।) स्पार्टन लोगोंमें पुरुषोंकी नाईं स्त्रियोंको हर प्रकारकी शिक्षा दी जानेकी परिपाटी होनेसे उनका और उनकी संतानका जितना गौरव है, उतना अन्य किसी राष्ट्रमें दृष्टि नहीं पड़ता । यह स्त्रीशिक्षणका ही महत्व है । बेकन साहिब कहते हैं कि, **बालकोंकी शिक्षा माताके द्वारा होती है, इसलिये उसे प्रथम-गुरु कहना चाहिये** । बालकोंके स्वच्छ और कोमल अन्तःकरणपर जिस प्रकारका भला बुरा अंकुर जमाया जावे, जमकर वृद्धिको प्राप्त होता है, और बड़े होनेपर वे मूलके अनुयायी होते हैं। इसलिये उनकी सम्हालके समय उनके हृदयपर उत्तम २ पौधे लगानेके लिये माताको सुशिक्षित होना चाहिये । शिक्षणके सम्बन्धमें विचार करनेसे जान पड़ता है कि, शिक्षा बालककी अपेक्षा कन्याको अत्यावश्यक है । क्योंकि अपत्यसंगोपनकी[1] यथार्थ जबाबदारी माता ही पर है। माताकी प्रकृतिके स्वभावके वा आचरणके असर बच्चोंकी प्रकृतिपर गर्भ ही मे होने लगते हैं। स्त्री वा संतानके उपयोगमें आनेवाले पदार्थोंकी पूर्ति तो पिता करता है, तथा बच्चोंको दुःखी देखकर थोड़ी चिन्ता करता, बाहरसे थका हुआ आनेपर कभी २ उनपर प्यार करता और आनन्द मानता है । परन्तु पिताके इस उपकारकी आवश्यकता नहीं है । स्वावलम्बी होनेतक प्राणप्रिय सन्तानका सम्पूर्ण भार स्त्रीहीके सिरपर रहता है। और वही उस भारको ले चलनेमें समर्थ है। पुरुषसे दो दिन भी उसका निर्वाह नहीं हो सकता । फिर जिस स्त्रीपर अपत्य-संगोपनकी इतनी जिम्मेदारी है, उसे अक्षर-शत्रु रखना अत्यन्त हानिकारक है, यह बात हर कोई मनुष्य स्वीकार किये विना नहीं

१ संतानपालन ।

रह सकता। जन्मसे पांच वर्षका होने तक बालकके शुद्ध अन्तःकरणपर धर्मनीतिके सुन्दर चित्र खींचनेवाली चित्रकारिणी माता कीर्तिकुशल और चतुर होनी चाहिये। सुशिक्षित और सन्तान पालनेकी रीतोंमें कुशल माता मिलनेपर मनुष्यको अपना अहोभाग्य मानना चाहिये।

अमेरिकाके प्रसिद्ध प्रेसीडेंट एदमयाने एक जगह कहा है कि, आजपर्यन्त इस भूतलपर जितने नररत्न उदय हुए हैं, उनका मूल कारण केवल उनकी सुशील माताएं हैं। 'यथा बीजं तथाङ्कुरः।' अथवा 'यदन्नं भक्षयेन्नित्यं जायते तादृशी प्रजा।' (like father like son) इस उक्तिका भावार्थ यह है कि, बालक अपनी शारीरिक और मानसिक सम्पत्ति मातापिताके शरीर और मनसे प्राप्त करते हैं। जिस समय बालक गर्भमें आता है, उस समय गर्भिणीको सुशील स्त्रीपुरुषोंके मनोहर चरित्र किंवा कथाएं पढ़नेको देकर उसका चित्त प्रसन्न रखना चाहिये, जिससे उस चरित्रनायकके सद्गुणोंका गर्भपर असर हो। यह बड़े २ विद्वान डाक्टरोंका मन्तव्य है। और जब बालकके गर्भमें आते ही शिक्षाकी इतनी आवश्यकता है, तो जन्मसे स्वावलम्बी होनेपर्यन्त शिक्षक माताको विशेष सुशिक्षित होना ही चाहिये।

बांधवो! प्रारंभीय महा-पुराणके श्लोकोंसे सिद्ध होता है कि, प्राचीन कालमें स्त्रियोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी थी। जैनस्त्रियां विद्वान थीं, इतना ही नहीं है, वरन उनके चरित्र वांचने और जाननेके योग्य हैं। अथवा उन्होंने पढ़ने योग्य उत्तम ग्रंथ रचे हैं। सीता, अनन्तमती, चेलिनी, अंजना, रुक्मणी, अनुसूया, रत्नप्रभा, पद्मावती, आदि जैनस्त्रीरत्न अति दीप्तिवान् हुए हैं। मंदोदरीने राम और रावण राजाके संग्रामके समय अपूर्व नीतिपूर्ण उपदेश किया था। वैसे ही मदनावलीने वनवासी श्रीपाल राजाको शास्त्रविहित कथा सुनाकर प्रफुल्लित किया था। हमारे समान अन्य धर्मोंमें भी जीजाबाई, झांसीकी वीरा लक्ष्मीबाई, राज्यकार्य कुशल अहल्याबाई आदि विद्वान स्त्रियां हुई हैं। हमारी अर्जिकाओंकी पद्धति दूरदर्शिता व स्त्रीशिक्षाप्रसारकी द्योतक ही है। स्त्रियोंका मन अधिक कोमल और उनकी इज्जत अत्यन्त नाजुक होती है। इसलिये उनपर पुरुषकी अपेक्षा स्त्रीके उपदेशका प्रभाव अच्छा पड़ता है। यह भले प्रकार समझ लिया है कि, हमारे पूर्वजोंने स्त्रीशिक्षणका भार अर्जिकाओंके ऊपर ही रक्खा था, और अब भी यह काम स्त्रीके हाथमें शीघ्र सिद्ध होता है। यह अनुभूत नियम है कि, स्वतः सद्गुणी व नीतिवान उपदेशकका सुननेवालोंपर अच्छा असर होता है। अस्तु यह तो पुरानी बात हुई, परन्तु अर्वाचीन कालमें हमारी जैन स्त्रियोंको शिक्षा देनेकी परिपाटी क्यों बन्द गई, इसका विचार तो करो। हिंदुस्थानमें मुसलमान लोगोंके आनेके पहले किसी प्रकार स्त्रीशिक्षणका प्रचार था, परन्तु उन लोगोंके घोर अत्याचारोंसे इस देशकी स्वस्थता जाती रही। शत्रुकी दुष्टवासनाओंसे स्त्रियोंकी इज्जत बचानेके लिय उन्हें सुरक्षित स्थानोंमें छिपाकर लोग भागने लगे। उनके भयसे उन्हें खुलेवाला यहां वहां चलने फिरने नहीं देते थे। शत्रु अन्य स्थानको

चला गया, तो भी बाहर निकालनेमें भय खाते थे। एकके पश्चात् दूसरा शत्रू आवेगा, अथवा गया हुआ फिर न आवेगा, इसका कुछ भी ठिकाना नहीं था। जान पड़ता है, कि इसी असुरक्षितपनेके कारण पर्दाप्रणालीकी उत्पत्ति हुई है।

क्रमशः

देहलीकी चिट्ठी।

सम्पादक महाशय! विधवाविवाहके बारेमें जो देहलीकी बिरादरीने लड़कीके पिता लाला पारसदासको बिरादरीसे खारिज किया था, उसको लाला मुन्नूलालजी चौधरीने जो बिरादरीमें मुख्य समझे जाते हैं और जिन्हें चौधरीका पद मिला हुआ है, अथवा जो पहले आर्यसमाजीकी विधवा बरातको देख भी नहीं सके थे, बल्कि नौबत फौजदारीतक पहुंची थी, उन्होंने ही दशपन्द्रह आदमियोंकी कमेटी करके उन लाला पारसदासको अपने दशघरोंके थोकमें शामिल कर लिया और उसी दिनसे चौधरीसाहब उनको बिरादरीमें शामिल करनेकी कोशिश करते रहे। जिसका नतीजा यह हुआ कि, लाला जौहरीमल साहब खजानची व रईस देहलीके परलोक हो जानेकी उठावनेमें लाला ईश्वरीप्रसाद साहब जो कि लाला पारसदासके समुर हैं, उनको अपनी गाड़ीमें सवार कराके उठावनीमें लेगये और लाये। इस अनुचित कार्यका बिरादरीमें बहुत शोक हो रहा है। इत्यलम्

देहली. ता० ६-५-०६ } खैरख्वाह बिरादरी— एक जैनी

नोट—देहलीके भाइयोंको इस चिट्ठीपर ध्यान देना चाहिये। बिरादरीके मामलोंमें इतनी शिथिलता कहीं नहीं देखी जाती! धनवानोंके संकोचमें पड़कर बिरादरीको लोग नष्ट किये डालते हैं, यह बड़े दुःखकी बात है! सम्पादक-

विविध समाचार।

बम्बईकी दिगम्बर जैन लोकलसभामें गत श्रावणशुक्ला १४को वैद्यराज और वैद्यरत्न पंडित कन्हैयालालजीका एक व्याख्यान हुआ था, जिसका विषय अकाल-मृत्यु था। आपने जैनधर्मके अविरुद्ध वैद्यक शास्त्रोंके प्रमाणों और विस्तृत विवेचनाओंसे अपने विषयको समझाकर श्रोताओंको निश्चय करा दिया कि, यद्यपि मृत्यु होनेमें मुख्य कारण आयुकर्मका नष्ट होना ही है, तथापि रोगादिक नैमित्तिक कारणोंकी प्राप्तिमें आयुकर्म क्षीण होकर अकालमृत्यु हो जाती है। इसलिये केवल भाग्यके भरोसे न रहकर रोगादिकोंके नष्ट करनेके लिये उपचार भी करना चाहिये। उक्त सभामें सभापतिका स्थान शेठ सुखानन्दजीने शोभित किया था।

बाम्बे यूनीवर्सिटीके द्वारा प्रतिवर्ष अनेक तमगे और पारितोषिक वितरण किये जाते हैं। उनमें एक माणिकभाई लींबजीभाईका भी तमगा है। अबकी वार यूनीवर्सिटीने उस तमगेके (मेडलके) लिये "जैनधर्मका साहित्य और उसका इतिहास" यह विषय चुना है। इस विषयको लिखकर वही विद्वान् पारितोषिक पा सकेगा, जो बाम्बे यूनीवर्सिटीका ग्रेज्युएट हो और उसको ग्रेज्युएट हुए कमसेकम पांच वर्ष बीत चुके हों। यदि इस तमगेको प्राप्त करनेके लिये कोई हमारे सहधर्मी भाई प्रयत्न करें, तो उन्हें संसारमें जैन साहित्यका मुख उज्ज्वल करनेका महत्पुण्य मिल सकता है। अन्यथा दूसरोंके द्वारा ऐसे विषयका न लिखा जाना ही अच्छा है। जैनियोंके

विषयको जो जैनी लिख सकता है, वह दूसरे कदापि नहीं लिख सकते ।

पंढरपुरकी कुन्दकुन्दान्वयी जैन पाठशालासे विद्योन्नतिके विषयमें बहुत कुछ आशा थी । परन्तु सुना गया है कि, पाठशालाका प्रबन्ध ठीक नहीं है । प्रबन्धकर्त्ता महाशय अध्यापकोंके साथ बहुत कड़ा वर्ताव करते हैं, इस कारण अध्यापक लोग महीने दो महीनेसे अधिक नहीं टिकने पाते । हम आशा करते हैं कि, पाठशालाका यह अप्रबन्ध आगे नहीं सुन पड़ेगा ।

ग्वालियरमें सेंधिया सरकारने सिंहके बच्चे पाल रक्खे हैं । जिस समय उन्हें देखनेकेलिये युवराज (प्रिन्स आफ वेल्स) गये, उस समय एक बकरा उनके सम्मुख पिंजरेमें सिंहके बच्चोंके आगे डाला गया । उसकी दशा देखकर युवराजको अतिशय दया आई, इसलिये उन्होंने तत्काल ही एक अफसरके द्वारा उस बकरेको बचा लिया और जन्मभर उसके खानेपीनेका बन्दोबस्त करके उसके प्राणोंकी रक्षा की । क्या ही अच्छा हो, यदि हमारे युवराजके समान सम्पूर्ण राजाओंके हृदयमें दयाका निवास हो जावे, और वे शिकार जैसे घोरपातक करना छोड़ देवें ।

गत १९०५ ईस्वीके एक वर्षमें इग्लेंडके लोगोंने अपने मृत्युपत्रोंमें जो द्रव्य धर्मकार्योंमें दिया था, उसकी सूची इस प्रकार है;—

औषधालयोंके लिये	९७३२८९	पौंड
परदेशोंमें धर्मोपदेशके लिये	२१६०००	पौंड
अनाथ बालकोंकी रक्षाके०	१९६०००	पौंड
विद्यालय पाठशालाओंके०	११७०००	पौंड
स्वदेशमें धर्मोपदेशके लिये	११२०००	पौंड

जिस देशमें इस प्रकार दान किया जाता है, वहांके धर्मकार्योंकी व्यवस्था कितनी अच्छी न होगी ?

ऐसा सिद्ध हुआ है कि, अमेरिका आदि देशोंसे हिन्दुस्थानमें जो सिगरेट और चुरुट आते हैं, वे बहुत घटिया तम्बाकूमें अनेक जहरीली और अपवित्र चीजें मिलाकर बनाये जाते हैं, जो मनुष्योंकी तन्दुरुस्तीको बिगाड़ देते हैं । चुरुट सिगरेट पीनेवाले बाबुओंको सचेत होना चाहिये ।

विलायती मक्खन और जमाये हुए दूधके गंदेपनकी बात पार्लीमेंटतक पहुंची है । वहांके डाक्टरोंने जांच करके बतलाया है कि, दूधके असली तत्त्वोंको निकालकर उसके बचे हुए अंशको जमाते हैं, और फिर उसे भड़कदार बनानेके लिये कुछ रंग मिलाये जाते हैं । कहते हैं कि उसमें डामरतकका मेल किया जाता है ! जिससे मनुष्यके स्वास्थ्यको बहुत हानि पहुंचती है, और फिर बच्चोंकेलिये तो यह जहर है । इसी प्रकार विलायती मक्खनमें मक्खनका तत्त्व तो नामको नहीं है, चर्बी अथवा अन्य ऐसी ही कई गंदी चीजोंसे वह तयार किया जाता है । हमारा हिन्दुस्थान घी दूध और मक्खनका घर है । तो भी आजकलके नये रोशनी वाले लोग बेशरम होकर विलायतकी

ऐसी अपवित्र चीजोंको वर्तावमें लाने लगे हैं, यह बड़े दुःखकी बात है ।

उपवासादि करनेमें अकसर लोगोंको पित्त गिरने लगते हैं, और बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती है । ऐसे लोगोंको चाहिये कि, उपवासके पहले दिन संध्याको छटाकभर गुड़का शरबत बनाकर पी लिया करें । पित्तका प्रकोप फिर नहीं होगा ।

नजीबाबाद (बिजनौर) में एक **मोरिसशक्करप्रचारनिषेधक** सभा है । उसके मंत्री मुंशी श्रीप्रसादने इस अभिप्रायका एक नोटिस निकाला है कि, जो महाशय देसी पवित्र शक्कर मिश्री और उसके बने हुए मालकी तथा विदेशी अपवित्र शक्कर मिश्री वगैरहके जांचनेकी सबसे अच्छी युक्ति अथवा पहिचान बतावेंगे, उन्हें उक्त सभाकी ओरसे धन्यवादके अतिरिक्त ५०, पारितोषिक भी दिया जावेगा । आजकल इस पहिचानकी सचमुच बड़ी भारी जरूरत है । भाइयोंको इस विषयमें अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिये ।

सनातनजैन नामक एक मासिकपत्र राजकोटसे गुजरातीमें प्रकाशित होता है । इसके सम्पादक मि० मनसुखलाल रवजीभाई मेहता हैं । आपका उद्देश्य यह है कि, जैनियोंके दिगम्बर, श्वेताम्बरादि सम्पूर्ण सम्प्रदायोंमें एकताका संचार होकर जैनधर्मके अपूर्व तत्त्वज्ञानका संसारमें प्रसार हो । और विद्वान समाजको निष्पक्षतासे अपने २ विचारोंके प्रचार करनेका मौका मिले । अभीतक सनातनजैनके जितने अंक निकले हैं, उनमें आप अपने उद्देश्य पर बराबर दृढ़ रहे हैं । आपकी लेख लिखनेकी शैली भी अच्छी है । उदार भाइयोंको इस पत्रके ग्राहक होकर सम्पादकका उत्साह बढ़ाना चाहिये ।

ॐ

शुभ समाचार.

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

अगर ध्यानसे विचार किया जाय तो धर्म अर्थ काम मोक्षका ठीक उपाय शरीरकी तन्दुरुस्ती ही है, आजकल शरीरको नीरोग बनानेकेलिये बहुतसे उपाय चल रहे हैं । परन्तु पुरानी देशी वैद्यककी दवाइयोंके बराबर कोई भी गुणकारी तथा भारतवासियोंके मिजाजके मुआफिक नहीं है, क्योंकि हमारे पुराने आचार्योंके जितने काम हैं सब अच्छे हैं । इस ही वास्ते वैद्यक भी सबसे अच्छा है । अबतक बहुतसे आदमी भूलसे इसको बुरा समझते थे परन्तु जब बड़े २ बुद्धिमान् डाक्टरोंने इसकी तारीफ की और इस ही को सबका मूलकारण बतलाया तब तो इसकी भी उन्नति होने लगी, इधर उधर बड़े २ औषधालय और विद्यालय खुलने लगे । अबतक जैनियोंमें कोइ बड़ा औषधालय नहीं था इसलिये हमने मुरादाबादसे यहां आकर दानवीर सेठ **माणकचंद हीराचंदजी जे. पी.** जौहरी मुम्बईकी मददसे एक बड़ा औषधालय खोला है । उक्त सेठजीके हाथसे खुलनेके कारण इसकी दिनरात उन्नति होती जाती है क्योंकि मंगलमय सेठजीके द्वारा खुले हुये सब ही काम उन्नत हो रहे हैं । यहां गरीबोंको मुफ्त और अमीरोंसे वाजवी मूल्य लेकर दवा दी जाती है, बाहरके भाइयोंके आरामकेलिये भी हमने बहुत रोगोंकी परिणाम ये सूचीपत्र बनाया है और शुद्ध दवा बनाकर तय्यार की है । आजकल नोटिसोंका विश्वास नहीं होता परन्तु हमने ऐसा नहीं किया जिसमें जितना गुण है उतना ही लिखा है जिस रोगकी जैसी हालत होती है वहही लिखी है । दूसरे हम दवा भेजते समय भी रोगीको साफ लिख देते हैं कि आराम होगा या नहीं. य इतना आराम होगा. तीसरे हमारी औषधियां शास्त्रोक्त रीतिसे व पवित्र क्रियासे तैयार कीहुई है और ये काम केवल लोभकेलिये ही नहीं है । किंतु धर्म यश लाभ तीनोंके वास्ते किया है । इसवास्ते दवाइयोंकी कीमत भी औरोंसे कम रक्खी है । सर्व साधारणके उपकारके लिये और हरवक्त शुद्ध दवा तय्यार मिलनेके वास्ते ही ये सब काम हैं और धर्मार्थ बांटनेवालोंको कमीशन भी २५) रु. सैंकड़ा देते हैं और बांटनेवालोंको ५) ही रुपयेमें खांसी बुखार दस्त हैजा सिरदर्द उदरविकार आदि रातदिन तकलीफ देनेवाले अनेक रोगोंकी १५ दवाइयें भेजते हैं जिससे १ माससें १०० या १५० रोगियोंको आराम करके यश तथा धर्मलाभ करसक्ते हैं । धनवान् धर्मात्मा भाइयोंको इधर ध्यान देना चाहिये और एकबार औषधियोंकी परीक्षा कर सदैवकेलिये लाभ उठाना चाहिये ।

जैनी भाइयोंका हितैषी.

वैद्यराज कन्हैयालाल जैन,

ठि०—स्वदेशी पवित्र औषधालय, दाउजीके मंदिरके पास.

पो० कालबादेवी (मुंबई.)

थोड़ीसी दवाइयां गुणसहित यहां लिखते हैं सेवनविधि दवाईके साथ भेजेंगे।

नारायण तैल.

ये वात हरनेवाला बहुत अच्छा तेल है शास्त्रमें इसकी तारीफ इसप्रकार है।

'नारायणं भजत रे जठरेण युक्ता
नारायणं भजत रे पवनेन युक्ताः।
नारायणं भजत रे भवभीतियुक्ता
नारायणात् परतरं नहि किंचिदस्ति॥'

अर्थात् पेटका रोगी नारायण चूर्ण खाओ, वायका रोगी नारायण तैल मलो, संसारसे डरा हुआ नारायणका भजन करो, इस ही लिये हमने इसे तय्यार किया है, बहुतसे इस ही को महानारायण भी कहते हैं। इससे लकवा, फालीज गठिया वगैरह वायुके सब रोग नष्ट होते हैं, ताकत और कांति बढती है. मूल्य ८ तोलेका १) रु.

उपदंशघ्नघृत अर्थात् गरमीकी दवा।

यह हर रोज तीन बार चार२ रत्ती खाया जाता है। इससे दसदिनमें उपदंश नष्ट होता है। घाव फुंसी सूख जाते हैं और न मुंह आता है न दस्त न कै आती है। एक रोगीके आराम होने लायक घृतका मूल्य १।)

सूजाककी दवा।

ये एक अर्क और वटी है, इसको खानेसे पीव खून लाल पेशाब आना बंद होकर जलन जाती रहती है नये रोगको ७ दिनमें पुराने रोगको १ मासमें नष्ट करती है। मूल्य ७ दिनकी खुराकका १)

प्रमेहकी दवा।

शास्त्रमतानुसार नया प्रमेह नष्ट हो सक्ता है, पुराना नहीं। इसकी सैकड़ों दवा नोटिसोंमें बडी २ तारीफसे छपती हैं परन्तु आराम नहीं होता है। हमने इसकी जो दवा बनाई है सो बतौर नमूने ७ दिन खानेकी ॥) मात्रमें देते हैं यदि नया प्रमेह होगा तो एक महीनेमें आराम हो जायगा पुराने रोगियोंको निरन्तर सेवन करनेसे यह दवा रोगके बलको घटाकर शरीरको बलवान् करैगी।

नपुंसकताकी दवा।

इसकी दवाई अत्युत्तम है, रोगियोंको गुप्त विषय लिखना चाहिये और पत्रव्यवहार करके इलाज कराना चाहिये, आराम अवश्य हो जायगा।

मृगीकी दवा।

इसकी अत्युत्तम औषधि हमारे अनुभवमें कई बार आचुकी है। असमर्थोंको डांकखर्च मात्र लेकर भेजी जाती है, धनिकोंसे मूल्य एक १ मासकी औषधिका २) रु. लिया जाता है'। इसके रोगीको अवश्य पत्रव्यवहार कर लाभ उठाना चाहिये।

आंखोंके लिये अत्युत्तम सुरमा।

इससे आंखोंकी ज्योति बढती है और आखोंकी ताकत बढाकर वृद्धावस्थातक आंखको कमजोर नहीं होने देता है। मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) रु. मात्र।

बवासीरकी दवा।

इसके सेवनसे खूनी बवासीरका दौरा रुक जाता है और रोगीको बहुत आराम पहुंचता है ताकत बनी रहती है, नईको जड़से भी आराम हो जाता है। मूल्य ८ दिनकी दवा १) रु.

बादी बवासीरकी दवाई ८ दिनकी खुराकका ॥) यह भी नई होगी तो जा सक्ती है, पुरानेरोगकी ताकत इस दवाके सेवनसे बहुत घट जाती है ।

शुद्धरीतिसे बनाया हुआ अर्क कपूर

अर्थात्

हैजेकी पवित्र दवाई

अन्यान्य अर्क कपूरोंमें प्रायः शराब पड़ती है परन्तु हमने इसे नयी रीतिसे बनाया है इसको हैजेमें आध २ घंटे बाद चार २ बूंद सौंफके अर्कमें या लौंगके पानीमें देनेसे फीसदी ७९ मनुष्य बचते हैं ये जगत्प्रसिद्ध हैजेकी दवा है। और ग्रहणी, आम, शिरदर्दको भी आराम करता है मूल्य एक शीशी जिससे दश रोगीको आराम हो १) है। जिनको कपूरका त्याग हो उनके लिये हैजानाशक वटी है जिसका मूल्य ।॥) है ।

लवंगादि वटी ।

'कासान्निहन्ति गुटिका घटिकाष्टकान्ते' अर्थात् इस गोलीसे ८ घडीमें खांसीको आराम पड़जाता है, ये अत्युत्तम तय्यार की गई है मूल्य≡) तोला मुफत वांटने योग्य है ।

प्रदरकी दवा ।

प्रमेहकी तरह स्त्रियोंका पुराना प्रदर भी नहीं जाता है हमने लाल तथा सुफेद प्रदरकी दवा तय्यार की है नमूनेके वास्ते १ सप्ताहकी ॥) में देते हैं नया जाता रहता है । पुरानेका जोर दब जाता है ।

मोमका तैल ।

ये वातके दरदको १ फुरैरी लगा देनेसे खो देता है तत्काल फल दिखाता है मूल २) तोला।

शुद्ध रीतीसे बनाये हुए साफ क्षार.

ये क्षार वायुको नष्ट करते हैं उदरविकार हरते हैं अनुपानसे तिल्ली जिगर वायगोला खांसी वगैरहको खोते हैं भूंख बढ़ाकर दस्त साफ करते हैं। मूल्य भी कम है। आकका क्षार ॥) तोला. मूलीका ॥) ढाकका ॥) चिरचटेका ।≈) और भी बहुत तय्यार हैं ।

कर्पूरतैल ।

ये एक उत्तम तैल है शिरके दर्दको लगाते ही आराम करके तरावट करता है मूल्य १ शीशी ॥)

शीतज्वरारि रस ।

ये तिजारी चौथय्या वगैरह जाड़ा देकर आनेवाले बुखारको एक ही दिनमें रोक देता है। वांटने लायक है और एक ही दिनमें तजुर्वा दिखाता है मूल्य १ शीशीका १) रु.

मालतीवसन्त ।

जीर्णज्वर राजयक्ष्मा फेफड़ेके रोगोंकी जगत्प्रसिद्ध दवा है मूल्य २०) रु. तोला.

पर्पटीरसः ।

मट्ठेके साथ सेवन करनेसे पुरानी संग्रहणी दस्तको बहुत आराम करता है मूल्य ३) तोला।

पाचनचूर्ण ।

यह बहुत स्वादिष्ट है भोजन पचानेवाला, जायका साफ करनेवाला है मूल्य ≈) तो.

दांतोंका मंजन नं. १

हररोज मलनेसे दांत साफ, मुंह सुगंधित और साफ होता है एक मासके लायक १ डिब्बी ।)

दांतका मंजन नं. २

यह बूढोंके लायक है। दांतकी चीस खून पीपको बंदकर दांत दृढ करता है मू. १ डिब्बी ॥)

दादकी दवा ।

इससे दाद जाता रहता है जलन वगैरह नहीं होती मूल्य ।) डब्बी

ॐ

सैकड़ों शास्त्रदान करनेका—

सरल उपाय.

विदित हो कि पूर्वकालमें छापेका प्रचार न होनेके कारण समस्त दानोंमें उत्कृष्ट शास्त्रदान कोई विरला ही धर्मात्मा धनाढ्य कर सक्ता था. परन्तु इस समय छापेके प्रभावसे शास्त्रदान करनेका (ज्ञानविस्तारका) वह साधन हो गया है कि जिसको साधारण भाई भी इस दानके पुण्यको प्राप्त कर सक्ता है। भाइयो! आज हमारे भारतवर्षमें जो लाखों ईशाई हो गये हैं वे एकमात्र शास्त्रदानके प्रभावसे ही हो गये हैं। यदि इसीप्रकार हमारे समीचीन उद्देशपूर्ण अहिंसाधर्मके प्रतिपादन करनेवाले शास्त्रोंका प्रचार होता तो क्या यह पवित्र धर्म ऐसी अवनतदशाको पहुंचता?

खैर जो कुछ हुआ सो हुआ-अब उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है-इसकारण हम शास्त्रदान करनेका एक सरल उपाय बताते हैं कि, आप नीचे लिखे जैन ग्रंथोंमेंसे किसी एककी छपाईकी लागतके रुपये हमारे-पास भेज देंगे तो हम आपके रुपयोंसे उस ग्रंथकी १००० प्रति छापकर तैयार करेंगे उनमेंसे २५० प्रति तो हम रुपयोंके व्याजमें दान करनेके लिये आपको भेज देंगे. और शेष ७५० प्रति बेंचकर आपके रुपये आपको भेज देंगे. अथवा आपकी आज्ञा होगी तो प्रतिवर्ष दूसरा तीसरा ग्रंथ छपाकर उनकी भी अढाइसौ २ प्रति आपको शास्त्रदानार्थ भेजी जाया करेंगी.

इस विषयमें कुछ पूछना हो तो पत्रद्वारा पूछ सक्ते हैं.

छपनेके लिये तैयार ग्रंथ ये हैं:—

नामग्रन्थ.	अनुमानसे छपाई खर्च.
मनोरमा उपन्यास जैनेन्द्रकिशोरकृत	२००)
वृंदावनविलास कविवर वृंदावनकृत	३००)
वृंदावनकृत चौवीसीपाठ अतिशुद्ध	३५०)
वृंदावनकृत तीसचौबीसीपाठ अतिशुद्ध	५००)
तत्त्वार्थसूत्र-बालबोधिनी पदपदकी भाषाटीकासहित विद्यार्थिओंमें पढाने व भादोंमें बांचनेलायक	२५०)
जैनबालबोधक दूसरा भाग	२५०)
जैनबालबोधक तीसरा भाग	३५०)
शाकटायनव्याकरण प्रक्रियासंग्रह	८००)
जैनस्त्रीशिक्षा प्रथम भाग	६०)
जैनस्त्रीशिक्षा द्वितीय भाग	१००)

पत्र भेजनेका पता—पन्नालाल जैन,

पो. गिरगांव-मुंबई.

ओंनमःसिद्धेभ्यः

अध्यात्म तथा भक्तिरसका भंडार.

भाषासाहित्यका शृंगार.

बनारसीविलास।

और

ग्रंथकर्ता कविवर बनारसीदासजीका वृहत्

जीवनचरित्र।

छपगया! सुन्दर जिल्दसहित तैयार हो गया!!

बहुत थोडे लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने आगरा निवासी स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजीका नाम न सुना हो आपकी कविता ऐसी मनोरम और चित्ताकर्षक है कि, एकवार पढकर फिर छोडनेको जी नहीं चाहता. निरंतर पढते रहना ही सुहाता है। भाषासाहित्यमें आपसरीखी सुंदर रसालंकारादि काव्यके अंगोंसे परिपूर्ण कविता बहुत थोडी है। जिन्होंने नाटकसमयसारग्रंथकी अध्यात्मरससे सराबोर कविताका पाठ किया है, वे जानते हैं कि, आप कैसे प्रतिभाशाली कवि थे। आपके बनाये हुए कई ग्रन्थ हैं, उनमेंसे अभीतक नाटकसमयसारके सिवाय और कोई भी ग्रंथ मुद्रित नहीं हुआ था। इसलिये हमने बडे परिश्रम और अर्थव्ययसे आपका यह दूसरा ग्रंथ **बनारसीविलास** छपाके तैयार किया है। यह ग्रन्थ बनारसीदासजीकृत जिनसहस्रनाम, सूक्तमुक्तावली (संस्कृत सहित), ज्ञानबावनी, वेदनिर्णयपंचासिका, अध्यात्मफाग, परमार्थवचनिका, उपादान निमित्तकी चिठ्ठी, अध्यातमपदसंग्रह आदि—

५९ ग्रंथरत्नोंका—

संग्रह है। इस संग्रहसमूहको ही **बनारसीविलास** कहते हैं। बनारसीदासजी सरीखे प्रसिद्ध कविवरकी कविताकी प्रशंसा करना एक प्रकारसे व्यर्थ ही है, परन्तु हम अपने ग्राहकोंसे इस विषयमें इतना कहे विना नहीं रह सक्ते कि, यदि आपको अध्यात्म, भक्ति और विविधप्रकार उपदेशयुक्त वैराग्यादि रसोंके अपूर्व

आनंदका अनुभव करना है, तो एक बार इस ग्रन्थसरोवरमें अवश्य ही गोता लगाइये। कदाचित आपने **ब्रह्मविलास** मगाकर पढा होगा. परन्तु इसके पढनेसे जो आनंद होगा वह एक भिन्न ही प्रकारका होगा।

इस ग्रन्थके प्रारंभमें ११३ पृष्ठोंमें ग्रन्थकर्ता कविवर बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र दिया गया है। हिन्दीमें इतना बडा और इतना विश्वस्त जीवनचरित्र आजतक किसी भी कविका प्रकाशित नहीं हुआ है। इसे पढकर पाठक अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इससे ग्रन्थकर्ता और उनके समयका इतिहास ही नहीं विदित होता है, परन्तु अनेक अनुकरणीय शिक्षायें भी प्राप्त होती हैं। प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायनिरत जैनीभाइयोंको इस ग्रन्थका संग्रह अवश्य करना चाहिये। जगत्प्रसिद्ध निर्णयसागरके सुंदर टाईपमें चारों तरफ बेल लगाकर बडी सुंदरतासे इसकी तयारी हुई है, लगभग ४०० पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ १॥) रक्खा है. डांकखर्च ≈) जुदा पड़ैगा।

ब्रह्मविलास।

इसमें ६७ उत्तमोत्तम रत्न(विषय) हैं, इसको भैया भगवतीदासजीने विद्वानोंके कंठमें धारण करने योग्य एक मोहनमाला बनाई (गुंथी) है. जिसका नाम उन्होंने **ब्रह्मविलास** रक्खा है। अनेक महाशय इसे **भगवतीविलास** भी कहते हैं। यह ग्रन्थ दोहे चौपाई पद्धरिछन्द, छप्पय, सवैया, कवित्त आदिमें ऐसा उत्तम है कि, इसके प्रत्येक अक्षरसे जिनमतका रहस्य व उत्तमोत्तम उपदेश प्रगट होते हैं। इसको हमने जैनकवि भाई नाथूराम प्रेमीसे शुधवाकर जहांतक हमसे बना शुद्धतापूर्वक छपाकर तैयार किया है. यह ग्रन्थ चिकने कागजोंपर सुन्दर टाइपमें चारोंतरफ बेल लगाकर बहुत ही सुन्दर छपवाया गया है। पृष्ठसंख्या ३०६ है। मूल्य रेशमी कपडे और क्याट्रिशकी जिल्द सहित १॥) रु० रक्खा है. वी. पी. मंगानेसे डांकव्यय ≈) जुदा पडैगा. जो महाशय एकसाथ ५ प्रति लेंगे, उनको १ प्रति विनामूल्य मिलैगी।

सनातनजैनग्रन्थमाला।

प्रथम गुच्छक।

अर्थात्

जैनधर्मके उत्तमोत्तम १४ संस्कृत ग्रन्थोंका रेशमी गुटका।

मूल्य सिर्फ १) रुपया।

इस गुटकेमें रत्नकरंडश्रावकाचार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, आत्मानुशासन, समाधिशतक, नयविवरण, युक्त्यनुशासन, तत्त्वार्थसूत्र, तत्त्वार्थसार, अध्यात्मतरंगणी (समयसारकलशे) बृहत्स्वयंभूस्तोत्र, आप्तपरीक्षा, परीक्षामुख, आलापपद्धति ये १३ मूल ग्रन्थ और आप्तमीमांसा (देवागमस्तोत्र) सटीक इस प्रकार १४ ग्रन्थ छपाये हैं। यह गुटका पाठ करनेवालोंके सुभीतेके लिये बडा उपयोगी है। परदेशमें इस एक ही गुटकेसे बडे२ काम निकल सक्ते हैं.

स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

विद्वद्वर्य पं० जयचंद्रजीकृत मनोहर भाषा टीका और संस्कृत छायासहित।

यह ग्रंथ अतिशय प्राचीन है. इसमें बालक, वृद्ध, युवा स्त्री जैन अजैन सबके पढने सुनने मनन करनेयोग्य जिनधर्मसंबंधी समस्त विषय हैं। परंतु मुख्यतासे वैराग्यका उपदेश है जिसमें बारह भावना (अनुप्रेक्षा) का बडे विस्तारसे बर्णन है श्रावकधर्म और मुनिधर्मका वर्णन अपूर्व है। इस ग्रन्थकी मूल गाथा अतिशय प्रिय और सरल है. तिसपर भी गाथाके नीचें संस्कृतमें पदपदका अनुवाद (छाया) है. फिर बचनिका (भाषाटीका) है. निर्णयसागरकी टाईप और छापा तो जगत्प्रसिद्ध है ही मूल्य रेशमी कपडेकी पक्की और पक्की जिल्दका १॥) रु० और कच्ची जिल्दका १) है. डांकव्यय ।) पडैगा. ये ग्रन्थ बहुतसे छपनेसे पहिले ही बिक गये हैं हमारेपास थोडीसी प्रति रही हैं जिनको चाहिये मँगालेवैं. विलम्ब करैंगे वे पछतावैंगे।

सुकुमाल उपन्यास।

सुकुमाल चरित्रको प्रायः सब ही जैनी जानते हैं, यह एकबार जैनबोधक मासिकपत्रमें छपकर पृथक् भी प्रकाशित हो चुका है, परन्तु इसकी कथा इतनी मनोहर है कि, वह १) रु. मूल्य होने पर भी हाथों हाथ बिक गया।

उसकी भाषा ढूंढाड़ी थी; जिसको सब देशके जैनी भाई नहीं समझ सक्ते थे। इसकारण हमने प्रसिद्ध लेखक आरानिवासी श्रीयुत बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी मन्त्री आरानागरी प्रचारिणी सभासे उपन्यासके ढंगमें उपन्यासकी मनोहर भाषामें लिखवाकर छपाया है मूल्य ।≈) डांकखर्च जुदा।

सूक्तमुक्तावली।

संस्कृत और भाषा कवित्त सहित।

इसको सिंदूरप्रकर भी कहते हैं. यह सोमप्रभाचार्यविरचित संस्कृतके उत्तमोत्तम छंदोंमें उपदेशमय काव्यग्रंथ है, इसमें धर्माधिकार, पूजाधिकार, गुरुअधिकार, जिनमताधिकार, संघाधिकार, अहिंसाधिकार, सत्यवचनाधिकार, अदत्तादानाधिकार, शीलाधिकार, परिग्रहाधिकार, क्रोधाधिकार, मानाधिकार, मायाधिकार, लोभाधिकार, सज्जनाधिकार, गुणिसंगाधिकार, इन्द्रियाधिकार, कमलाधिकार, दाताधिकार, तपप्रभावाधिकार, भावनाधिकार, वैराग्याधिकार, उपदेशगाथा इसप्रकार २३ विषयोंके चार २ काव्य हैं. और उसपर चार २ कवित्त वा सवैया कविवर बनारसीदासजीने बनाये हैं. इसके सौ कवित्त और श्लोक कंठाग्र करनेवाले सभामें बहुत ही सुंदर व्याख्यान दे सक्ते हैं। मूल्य ।) डांकखर्च जुदा.

उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला.

यह सचमुच उपदेशरूपी रत्नोंकी माला ही है। इसके कर्त्ता आचार्य नेमिचन्द्रजी भंडारीने बड़ी सुन्दरतासे इस मालाकी रचना की है। मूल गाथा और मराठी तथा हिन्दी भाषाटीकासहित इस पुस्तकका मूल्य ॥) से घटाकर ।≈) कर दिया है। इसमें सग्रंथगुरुका खंडन बहुत ही उत्तम रीतिसे किया गया है।

नित्यनियम पूजा बड़ी।

संस्कृत और भाषा।

जिसमें सिद्धोंकी द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनों हैं, तथा द्यानतरायजीकृत देवगुरुशास्त्रकी भाषा पूजा तथा बीस बिहरमानकी भाषा पूजा और लघु अभिषेक, शान्तिपाठ, विसर्जन, अन्तकी स्तुति भी संग्रहीत हैं. बड़े २ अक्षरोंमें बेलदार निर्णयसागरमें पुष्ट कागजोंपर बहुत शुद्ध छपाया हैं. मूल्य ।–)

क्यों साहब ?

क्या आपको अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करनी है? यदि करनी हो तो नीचे लिखे सुरमोंमेंसे एक दो शीशी अवश्य मंगाइये, और एक महीने लगाकर देखिये.

काला सुरमा नं० १ यह सुरमा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है. मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥)

काला सुरमा नं० २ इस सुरमेको प्रातःकाल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १)

सफेद सुरमा नं० ४ इस सुरमेंको सवेरे और शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठंडा सुरमा लगाया जावे, तो धुंद नजला दृष्टिमन्दता रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा सुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षनकका फूला शीघ्र ही कट जाता है. परंतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिला हुवा होगा तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) रुपया. जिनकी आंखें गर्मीसे लाल रहती हैं उनको यह लाभदायक नहीं है।

नयनामृत अर्क नं० ८ इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है. मूल्य एक शीशीका... ... ।)

तरल सुरमा (अर्क) नं० ९ यह अर्क दिनमें दो बार लगानेसे नं. २ के समान गुण करता है. दुखती आंखोंकेलिये तो वह रामबाण ही है. खासकर यह सुरमा विधवा स्त्रियों और वृद्ध पुरुषोंकेलिये बनाया गया है. मूल्य १ शीशीका ... ... ॥)

श्री

जिन धर्माभिमानी भाइयोंके लिये

सशास्त्र तयार किया हुआ

वज्रांग भैरव।

अर्थात्

बल, आरोग्य, पुष्टि और कान्ति बढ़ानेवाला पाक।

——:o:——

कोकण प्रान्तकी अनेक वनस्पतियोंके अर्ककी पुटं देकर और स्वदेशी शक्करका मिश्रण करके यह वज्रांगभैरव तयार किया गया है। यह भैरव महौषधि होकर भी अत्यन्त स्वादिष्ट है। इसके खानेसे वात, पित्त और कफ इन त्रिदोषोंके मिश्रणसे होनेवाले सम्पूर्ण रोग जो कि, आगे लिखे गये हैं, नष्ट होकर मनुष्योंका कल्याण होता है।

इसके सेवनसे नपुंसकत्व, स्वप्नजन्य व इतर धातुपात, उष्णता, इन्द्रियशैथिल्य, कडकी, गर्भसम्बन्धी उत्पन्न हुए विकार, मूत्रकृच्छ, धातुदौर्बल्य, स्त्रियोंका प्रदर, हृदयसम्बन्धी रोग, हाथपांव व नेत्रादिकोंमें दाहका होना, क्षय, पांडुरोग, (मुलांची खर), जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, बवासीर, वातरोग, निद्रानाश, पित्तविकार, प्रसूतिरोगादि अनेक विकार दूर होकर शरीर निरोगी, मजबूत और सतेज होता है। पाचनशक्ति व स्मरणशक्ति खूब बढ़कर तथा धातु व रक्तकी वृद्धि होकर स्तंभन होने लगता है। शक्तिको उत्पन्न करके उत्साहकी वृद्धि करता है। दूध व भारी अन्न अच्छी तरहसे पचने लगता है। इस औषधिका गुण एक सप्ताहके सेवनसे जान पड़ता है।

यदि नवीन रोग होगा, तो १४ दिवसकी खुराकवाले एक डिब्बेके सेवनसे गुण मालूम होने लगेगा, परन्तु यदि पुराना रोग होगा तो ३५ रोजके सेवनसे फायदा होगा। चौदा दिनके खाने योग्य एक डिब्बेका दो रुपया। एकट्ठा साढ़ेचार रुपयाका भैरव लेनेवालेको ३५ दिनके खानेयोग्य डिब्बा दिया जावेगा। अर्थात् ५) का भैरव ४॥) में दिया जावेगा। जिन्हें नमूनेके लिये मंगाना हो, वे १।) का म० आ० करके भेजदें। चौदह दिनका आधा डब्बा पेड पोष्ट करके भेज दिया जावेगा। पत्र पहुंचते ही व्ही० पी० के द्वारा भैरव भेजा जावेगा। डांक व पेकिंगका खर्च ग्राहकके जिम्मे होगा। चिट्ठी स्पष्ट बालबोध अक्षरोंमें आना चाहिये। अनुपानपत्र डिब्बेके साथ भेजा जावेगा।

मिलनेका पता—

एल. के. आर,
श्रीमदर्हत्प्रासादिक कम्पनी,
पो० निपाणी, जिला बेलगांव.

——

एजंटोंकी जरूरत।

यदि विना पूंजी अधिक लाभ उठाना चाहो, तो हमारी स्याही व डायरी आदिके लिये एजेंट होनेमें शीघ्रता कीजिये।

पता—एल. के. आर.
स्वदेशोपकारक कार्यालय—खंडवा.

——

विज्ञापन १

"भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्रकमेटीके सर्व सभासदों सर्व तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ताओं तथा अन्य सर्व महाशयोंको विदित किया जाता है कि तारीख १ अगस्त १९०६ को तीर्थक्षेत्रकमेटीका दफ्तर हीराबाग धर्मशालामें रखा गया है। बाबू बुधमल पाटणी जो कि संस्कृत और अंग्रेजी विद्यामें बहुत निपुण हैं, तथा धर्मके रोचक हैं, प्रबन्धकर्त्ता (मेनेजर) नियत किये गये हैं। इस लिये तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी सर्व पत्रव्यवहार वा रुपया आदि नीचे लिखे पतेमे भेजना चाहिये।

हीराबाग धर्मशाला. पो. गिरगांव बम्बई. } जौहरी माणिकचंद हीराचन्द्-महामन्त्री. भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र-कमेटी.

विज्ञापन २

जैनकन्या पाठशालाओंके लिये देवनागरी पढ़ी अध्यापिकाओंकी आवश्यकता है। यह ऐसी स्त्रियां होनी चाहियें कि, जो जैनशास्त्र पढ़ा सकें, यदि वह इस समय जैनशास्त्र पढ़ानेकी योग्यता न रखती हों, तो उनको २ वर्षतक शास्त्रोंके पढ़नेके लिये पहिलेवर्ष ४ से ७ रु० तक मासिक पारितोषिक और दूसरे वर्ष ६ रु० से १० रु० तक मासिक योग्यतानुसार मिल सकता है। पर शिक्षा पानेके पश्चात् उनको अध्यापिकाका काम उनकी योग्यतानुसार मासिक वेतनपर किसी जैनी पाठशालामें कमसे कम ३ वर्षतक करना पड़ेगा। जिन जैनी हिंदू स्त्रियोंको यह स्वीकार हो, वह प्रार्थनापत्र निम्नलिखित पतेसे भेजें, और ब्यौरेवार वृत्तांत पत्रद्वारा ज्ञात हो सकते हैं। आशा है कि, जैनी भाई जिनको स्त्रीशिक्षासे प्रेम हो इस काममें प्रयत्न करेंगे तो बहुत शीघ्र अध्यापिका मिल जावेंगी।

कर्नेलगंज, अलाहाबाद. } कृतिप्रसाद बी. ए., सेक्रेटरी, स्त्रीशिक्षा विभाग।

ग्राहकोंसे प्रार्थना।

यह अंक आपको दशलाक्षणपर्वके उन पवित्र दिनोंमें मिलेगा, जिनमें आप रात्रिदिन धर्मकार्यमें ही दत्तचित्त रहते हैं। जैनमित्र धर्मकार्योंका सेवक है, इसलिये उन दिनों इसपर भी आप ख्याल रक्खें, तो बड़ी कृपा हो। यदि आप अपने भाइयोंसे प्रेरणा करके एक २ दो २ नवीन ग्राहक बनाकर और भेज देवें, तो इसकी खूब उन्नति हो सकती है, आशा है, आप जरूर एक २ ग्राहक बनाकर भेजेंगे।

मेनेजर जैनमित्र, शोलापुर।

संवाददाताओंकी जरूरत।

हम चाहते हैं कि, जैनमित्रमें चारों ओरके ताजे समाचार छपे जाया करें, जिनसे जैनधर्मका कुछ सम्बन्ध हो, अथवा जो सर्वसाधारणको कुछ लाभ पहुंचाया करें। अभीतक स्थान न रहनेसे ऐसे समाचारोंपर ध्यान नहीं दिया जाता था, परन्तु अब इसपर विशेष ध्यान दिया जावेगा। संवाददाताओंसे प्रार्थना है कि, वे समयपर समाचार भेजा करें।

सम्पादक जैनमित्र-मोरेना (ग्वालियर)।

Registered No. B. 288.

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम्।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्॥
अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। आश्विन कृष्णा १ श्रीवीर सं० २४३२। अं० २२

विषयानुक्रमणिका।

चिट्ठी पत्री भेजनेका पता—
मैनेजर, जैनमित्र—मोरेना (ग्वालियर)।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य ≈) दो आना।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई।

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्यय सहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा० स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

४ विज्ञापनकी छपाई इसप्रकार ली जाती है।

३ वारतक ≈) पंक्ति।

६ " " -)॥ पंक्ति।

१२ " " —) पंक्ति।

और विज्ञापनकी बंटवाई इस प्रकार—

३ मासे तककी ३) रु.।

६ " " ५) रु.।

१ तोले तककी ८) रु.।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट आना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,

मोरेना (ग्वालियर)।

श्रीवीतरागाय नमः

आश्विन कृष्णा १
श्रीवीर संवत्
२४३२।

वर्ष ७.
अंक-
२२।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमतु मे।
मेत्ती मे सव्व भूदेसु वैरं मज्झ ण केणवि ॥

प्रिय पाठकगण! सोलह कारण, पुष्पांजलि, दशलाक्षणिक और रत्नत्रयादि सम्पूर्ण पर्व शांतिताके साथ पालन करके आज हम सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करनेके लिये उपस्थित हैं। यह दिवस जीवमात्रके लिये अतिशय हितकारी है, क्योंकि इससे वर्षभरके वैरभावोंकी उपशान्ति होकर मित्रभावोंकी वृद्धि होती है। जबतक परमसुख-शान्तिकर स्वस्वरूपकी प्राप्ति नहीं हुई है, और जबतक संसारके दुर्निवार दुःखरूप जालसे छुटकारा नहीं मिला है, तबतक बहुत विचारपूर्वक चलनेपर भी एक दूसरेके कुछ न कुछ अपराध बना ही करते हैं। यह मांगलिक दिवस स्वच्छहृदयसे उन्हीं अपराधोंकी क्षमा मांगने और क्षमा करनेके लिये है। हम भी इसी संसारके एक छोटेसे जीव हैं, और जातिधर्मकी सेवा करने जैसा गहनकार्य हमने स्वीकार किया है, तब इस वर्षभरके लम्बे सफरमें हमसे अपराधोंका बनना बहुत संभव है, इस लिये हम अपने प्यारे पाठकों, सहयोगियों और ग्राहक अनुग्राहकोंके हृदयसे लगकर उनकी क्षमा मांगते हैं और स्वयं क्षमाभावोंका अवलम्बन करते हैं। तथास्तु, एवमस्तु।

जैनमित्रके गत १८-१९ अंककी टिप्पणियोंमें एक ग्रेज्युएटमित्रकी चिट्ठीका कुछ अंश नकल किया गया है। उसमें जो कुछ आक्षेप थे, उनके उत्तरस्वरूप एक लेख बाबू चन्दूलालजी वकीलका, हमारे पास आया है। जिसका सारांश यह है कि, "(१) सहारणपुरकी बिरादरी सामाजिक तथा धार्मिक कार्योंमें एकचित्त है, महाविद्यालयके साथ उसकी पूरी २ सहानुभूति है। झगडेकी जो बात है, वह केवल एक घरानेमें है, समाजसे उसका कोई सरोकार नहीं है। (२) महाविद्यालयमें पूर्व क्रमसे धार्मिक शिक्षा दी जाती है। वर्तमानमें २७ विद्यार्थी परीक्षालयके नियत क्रमानु-

सार शिक्षा पा रहे हैं, संस्कृतके साथ २ अंग्रेजीकी भी स्वल्पशिक्षा दी जाती है। अध्यापकजीके लिये बहुत शीघ्र एक योग्य विद्वानकी नियुक्तिका प्रबंध हो रहा है। (३) बाबू बनारसीदासजी जो कि स्कूलके चाहनेवाले थे, स्वयं कार्यसे स्तीफा दे चुके हैं। अब विद्यालयका काम लोकल कमेटीके द्वारा बहुमतसे सम्पादन होता है। इस प्रकार ग्रेज्युएट महाशयोंके जो आक्षेप थे, उनका यह समाधान है।"

भारतवर्षके प्रत्येक भाषासाहित्यमें जैनाचार्यों और जैन कवियोंकी कृतियोंको देखकर विद्वानोंकी जैनसाहित्यपर दिन पर दिन श्रद्धा बढ़ रही है। गुजराती भाषामें **श्रीनेमिविजय**जीका बनाया हुआ **शीलवती** नामका एक रासा है, जो कि विक्रम संवत् १७०० के लगभग बनाया गया है। उसका साहित्य इतना अच्छा है कि, इस वर्ष बाम्बे यूनिवर्सिटीकी एम. ए. परीक्षामें उक्त ग्रन्थ भरती किया गया है। और श्रीमान् **गायकवाड़ सरकार**के शिक्षाखातेकी ओरसे वह मुद्रित हुआ है।

तंजौरके **मि० कुप्पूस्वामी शास्त्री** जैनी न होकर भी जैनधर्मके ग्रन्थोंसे सविशेष प्रेम रखते हैं, और जैनियोंके काव्यग्रंथोंका तो जितना परिचय आपको है, शायद किसी जैनीको भी न होगा। आप एक सरस्वती विलास सीरीज नामकी ग्रन्थमाला निकालते हैं। अबतक उसमें ४ ग्रन्थ निकले हैं, जिनमेंसे गद्यचिन्तामणि, क्षत्रचूडामणि और जीवंधरचम्पू ये तीन ग्रन्थ जैनियोंके हैं। ये तीनों ही जैनियोंके अपूर्व काव्य हैं। पहले दो श्रीमद्वादीभसिंहसूरिके और तीसरा महाकवि श्रीहरिश्चन्द्रका बनाया हुआ है, परन्तु तीनोंका कथाप्रबन्ध एक ही है अर्थात् तीनोंमें जीवंधरस्वामीका चरित्र है। एक ही चरित्रपर कविगण अपने काव्यचातुर्यसे न्यारे २ रसोंका रंग किस प्रकारसे चढ़ाते हैं, यह बात इन तीनों ग्रन्थोंके पाठसे विदित हो जाती है। सम्पादक महाशयने इन ग्रन्थोंकी भूमिका, कवियोंका परिचय और टिप्पणियां जैसी योग्यता और निष्पक्षतासे लिखी हैं, वे एक बार ही श्लाघनीय हैं। हम आपके इस परिश्रमके अतिशय आभारी हैं। आशा है कि, आगे आपकी सीरीजसे हमको और भी अनेक अलभ्य ग्रन्थोंके दर्शन होंगे।

जब भिन्नधर्मी विद्वानोंके द्वारा हमारे साहित्यका इस प्रकार आदर और उद्धार हो रहा है, तब इसके विरुद्ध जैनियोंके द्वारा जैनसाहित्यका अनादर और अनुद्धार देखकर हमको बड़ा दुःख होता है। जयपुरके मि० जैनवैद्य उनमेंसे एक हैं। आप हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक और हितैषी गिने जाते हैं। आपके द्वारा हिन्दीका एक **समालोचक** नामका मासिकपत्र प्रकाशित होता है, जिसमें साहित्यकी आलोचना तथा अन्यान्य विषयोंके अच्छे २ लेख निकलते हैं। इसके सिवाय संस्कृत कविपंचक जैसे साहित्य विषयक ग्रन्थ भी आपके द्वारा प्रकाशित होते रहते हैं। मि० जैनवैद्य जैनी हैं, जैनधर्मके हितैषी हैं और समालोचक उनका पत्र है। वे चाहें तो अपने

सबके जैन समाज और जैन साहित्यको बहुत कुछ लाभ पहुंचा सकते हैं। परन्तु खेद है कि, इस ओर आपका ध्यान नहीं है। महाकवि धनंजय, हरिश्चन्द्र, वादीभसिंहसूरि, सोमदेवसूरि जैसे प्रसिद्ध जैनकवियों और उनके द्विःसंधान, धर्मशर्माभ्युदय, गद्यचिंतामणि यशस्तिलक जैसे महाकाव्योंके विषयमें (जिन्हें देखकर भिन्नधर्मी विद्वान् भी चकित स्तंभित होते हैं) आपने अपने पत्रमें एक अक्षर भी प्रकाशित नहीं किया और न किसी जैनग्रन्थकी आपके द्वारा समालोचना हुई। प्रातःस्मरणीय पंडित टोडरमल्लजी, पं० जयचन्द्रजी और दीवान अमरचन्द्रजी जैसे पुरुषरत्नोंका जीवनचरित्र जाननेके लिये जैनसमाज तृषित आकुलित हो रहा है, पर जैनवैद्यजीके जयपुरमें रहते हुए भी उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं होती, यह दुर्भाग्य की बात नहीं तो और क्या है?

प्रिय जैनवैद्यजी! जैनियोंका पूज्य साहित्य इस प्रकार अवहेलनाके योग्य नहीं है। आप यदि उसे अपना समझके देखेंगे, तो उसमें आपको वह आनन्द प्राप्त होगा, जो आपके पंचकवियोंके काव्योंमें भी शायद न मिले। और इस विषयमें हाथ डालनेसे न केवल जैनसमाज ही प्रसन्न होगा, परंतु सर्वसाधारण भी एक नवीन साहित्यको पाकर आपकी प्रशंसा करेंगे। सो आप और कुछ नहीं तो केवल जैन साहित्यको ही कुछ सहायता पहुंचाकर हमें सुखी कीजिये।

खजराहेके प्राचीन जैनमन्दिर।

(१)

(लेखक—नाथूराम प्रेमी देवरी निवासी।)

बुंदेलखंड प्रान्तान्तर्गत छतरपुर राज्यमें खजराहा नामका एक छोटासा ग्राम है, जिसकी आबादी अनुमान २००० मनुष्योंकी है। प्राचीनकालमें यह स्थान बहुत प्रसिद्ध रहा होगा, परन्तु वर्तमानमें पड़ती पर है। तौ भी प्राचीन कारीगरीके प्रदर्शनके लिये यह अब भी बहुत प्रख्यात है।

पूर्वकालमें खजराहा महाराज चन्देलकी राजधानीका मुख्य शहर था, और कुछ समय पीछे जगवंती प्रान्तकी जिसको कि अब बुंदेलखंड कहते हैं, राजधानी बन गया था। खजराहेका यथार्थ नाम खजरावतिका है, जो कि यहां मिले हुए शिलालेखोंसे साबित होता है। सिवाय इसके एक दंतकथा ऐसी प्रसिद्ध है कि, खजराहेके कोटके मुख्यद्वारपर खजूरके दो झाड़ होनेके कारण इसका खजराहा नाम पड़ा है। परन्तु वर्तमानमें इस ग्रामके आसपास न तो कोई कोट है, और न कहीं खजूरके वृक्ष दिखाई देते हैं। तौ भी अनुमान होता है कि, प्राचीनकालमें यह नगर अवश्य ही कोटबंधीमें होगा।

यहांके प्राचीन मन्दिरोंमें जैन, ब्राह्मण, और बौद्धोंकी मूर्तियां वर्तमानमें देखी जाती हैं। एक अंग्रेजी लेखक कहता है कि;—

"This group of Medi-oval Jain and Brahmanical temples is one of the finest collections to be found in

India ... ... It is said that there are not other structures in India to surpass and few to equal these beautiful fanes in forms and ornamentation."

अर्थात् "इस प्रकारके जैनी और ब्राह्मणोंके मन्दिरोंका गोलार्द्ध भारतवर्षकी मनोहर वस्तुओंमेंसे एक है.... ....लोगोंका कथन है कि हिंदुस्थानमें इस प्रकारके सुन्दर आकृति और चित्रामादियुक्त मन्दिरोंसे बढ़ियां कोई इमारतें नहीं हैं और हों भी तो इनके सदृश बहुत कम" इनमेंसे अनेक मंदिर इस ढंगसे बनाये गये हैं, कि अब तक वे ज्योंके त्यों खड़े हैं, और कारीगरोंकी शिल्पशास्त्रज्ञताको अपने उच्च शिखरोंके द्वारा संसारको हाथ उठाके बतला रहे हैं। सम्पूर्ण मन्दिरोंकी भीतें नीचेसे ऊपरतक भीतर और बाहर दोनों तरफ अतिशय मनोहारी कारीगरीके चित्रोंसे सुशोभित हो रहीं हैं। बाहरकी भीतोंपर कहीं २ वीभत्स और लज्जाकर चित्र बने हुए हैं। परन्तु इन पवित्र स्थानोंपर ये क्यों बनाये गये, इसका कारण कुछ समझमें नहीं आता। होलीके त्योहारपर यहां हिन्दूलोगोंका बड़ाभारी समूह एकत्र होता है, और एक बड़ाभारी मेला भरता है। जिससे यह स्थान एक यात्राका धाम बन गया है। बहुत दूर २ के लोग यहां आकर इकट्ठे होते हैं।

खजराहेमें अनेक उपयोगी शिलालेख प्राप्त हुए हैं, जिनके अन्वेषणसे जाना जाता है कि, महाराज चन्देलका राज्यकाल जब कि ठीक मध्याह्नके समयमें था, तब अर्थात ईसाकी नवमी और दशवीं शताब्दिके बीचमें इन मन्दिरोंकी रचना हुई थी। ये सम्पूर्ण मन्दिर एक स्थानमें नहीं हैं। कोई ग्राममें और कोई बाहर जहांतहां बिखरे हुए हैं। ग्रामकी पश्चिम तथा उत्तर दिशामें ब्राह्मणोंके और दक्षिण दिशामें प्रायः जैनियोंके मंदिर हैं। परन्तु सम्पूर्ण मन्दिर एक ही समयके बने हुए जान पड़ते हैं।

हालमें छोटे बड़े सब मिलाकर २९ मंदिर हैं। उनमेंसे मुख्य २ मन्दिरोंके नाम ये हैं।

जैनसाम्प्रदायिक—पार्श्वनाथ, घंटाई (इसमंदिरके ऊपर घंटाकी सांकलका चिन्ह है, इस लिये इसका यह नाम पड़ा है) आदिनाथ, जिननाथ, सेतनाथ (शान्तिनाथ)।

वैष्णवसाम्प्र०—जगदम्बादेवी, रामचन्द्र, बाहर, लक्ष्मण, हनुमान, ब्रह्मा।

शैवसाम्प्र०—चौसठ योगिनी, गणेश, कणदर्य महादेव, मृतंग महादेव।

उपर्युक्ततीनों सम्प्रदायोंके मन्दिर शिल्पचातुर्यमें, सुन्दरतामें, सुदृढ़तामें, और बाह्यदर्शनमें एक दूसरेसे इस प्रकार मिलते हुए हैं कि, मूर्तियोंके देखे विना यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि, कौन मन्दिर किस सम्प्रदायका है। इस परसे कोई २ लोग यह अनुमान करते हैं कि, इन मन्दिरोंका निर्माता राजा तीनों सम्प्रदायोंको एक ही विशालदृष्टिसे देखता था, परन्तु हमारी समझमें राजा चन्देल जो कि इन मन्दिरोंका बनवानेवाला कहा जाता है, परम जैनी था। उसने केवल जैनधर्मकी प्रभावनाके लिये ही ये मन्दिर बनवाये थे। परन्तु पीछेसे धर्मविप्लव होनेसे अन्यधर्मियोंने उनपर अपना अधिकार जमाकर अपनी मूर्तियां स्थापित कर दी

हैं, ऐसा जान पड़ता है। राजा चन्देल जैनी था। इसके अनेकानेक प्रमाण मिलते हैं। सुनते हैं, खजराहेके आसपास जैनियोंकी हजारहां खंडित प्रतिमायें पड़ी हैं, जिनपर लिखा हुआ है कि, राजा चन्देलने प्रतिष्ठा कराई। आल्हामें भी गाया जाता है "पारस[1] पूजा रे चन्देलके, ऐसी सुनी न दूजी ठौर" अर्थात् पार्श्वनाथकी पूजा राजा चन्देलके अद्वितीय प्रभावनासे होती थी। अस्तु।

खजराहेके अनेक मन्दिरोंमें जैसे कि, जैनियोंके मन्दिरोंमें रहते हैं तीन तीन मंडप हैं; अर्ध मंडप, मंडप और महामंडप। इन तीनों मंडपोंके जुदे २ गुम्बज हैं। महामंडप (गर्भगृह) में वेदीकी नाई चारों ओर प्रदक्षिणा करनेके लिये खुला स्थान है। यह आकार अवचलगढ़के मन्दिरोंसे मिलता हुआ है। इन मंडपोंकी छतों पर निकाले हुए नकशीके कामको देखकर भारत वर्षकी भूत और वर्तमान स्थिति मिलान करने वालोंका चित्त क्षणभरके लिये स्तब्ध हो जाता है। रंचमात्र भी कहीं स्थान मिला है, कि कारीगरोंने वहांपर अपना अपूर्व शिल्पचातुर्य दिखलाये विना नहीं छोड़ा है। ये तीनों मंडप जैनियोंके मंडपोंके समान गर्भगृहके अतिरिक्त खंभोंसे जूदे किये गये हैं। इन खंभों पर निकाले हुए सुन्दरचित्र दर्शकोंको मुग्ध कर लेते हैं।

यहांके एक मन्दिरमें महादेवका लिंग है, जिसकी मुटाई अनुमान ४॥ फीट है। होलीके मेलेमें इकट्ठे होनेवाले लोग इसी लिंगकी पूजा करते हैं। वर्तमानमें अनेक मन्दिरोंमें हिन्दुओंकी मूर्तियां देखी जाती हैं। एक मन्दिरमें गौतम बुद्धकी साधुवेशवाली मूर्ति स्थापित है। परन्तु इन सम्पूर्ण मन्दिरोंको बारीकीके साथ देखनेसे यह स्पष्ट हुए विना नहीं रहता है कि, इनके मूल निर्मापक जैनी ही थे। भीतर बाहिर सब ओरसे यहांका दृश्य आबूपर्वतके मन्दिरोंसे बहुत कुछ मिलता हुआ है। अन्तर केवल इतना ही है कि, आबूके मन्दिरोंका शिल्पकार्य संगमर्मर पर है, और खजराहेका साधे पत्थरपर है। मंडपका दिखाव आबू सरीखा ही है।

खजराहेके जैनमन्दिरोंकी संख्या वर्तमानमें ७ है। इन सात मन्दिरोंमेंसे जिननाथका मन्दिर चित्तको सविशेष आकर्षित करता है।

इसमें भी अन्य मन्दिरोंकी नाई तीन मंडप हैं। खंभों और भीतोंपर नानाप्रकारके चित्र निकाले गये हैं। कहते हैं कि, खजराहेमें सबसे प्राचीन मंदिर चौसठ जोगनियोंका है, जो कि ईसाकी नवमी सदीके पूर्वमें बना था। इस मंदिरके चारों ओर छोटी २ चौसठ मंड़ियां हैं। ये प्रत्येक मंड़िया पृथक २ मंदिर हैं, ऐसा अनुमान होता है। जैनियोंके मंदिरोंमें इसी प्रकारकी छोटी २ मंडियें बनाई गई हैं, जिन्हें बावनजंजाली मन्दिर कहते हैं। एक अंग्रेज लेखक इस विषयमें कहता है कि, "This arrangement which is so esential Jain, leaves little or no doubt that temples originally belonged to that religion.' अर्थात् इस प्रकारकी रचना जो मुख्यतया जैनकी है निश्चय करती है कि आदिमें ये मन्दिर जैन मतके थे।

(शेष आगे

---

1 आल्हा गानेवाले पारसका अर्थ पारस पत्थर करते हैं, जिसके स्पर्शसे लोहा सोना हो जाता है।

गरम पानी ।

हमारे धर्मके प्रत्येक अनुष्ठानमें विज्ञानके सूक्ष्मसे सूक्ष्मतत्त्व छुपे हुए हैं । इसलिये धर्मके प्रत्येक अनुष्ठानसे न केवल परलोक ही सुधरता है, वरन आचरण करनेवालोंको अनेक ऐहिक सुखोंकी प्राप्ति भी हो सकती है । आजकलके वैज्ञानिकोंकी शोधसे यह बात दिन पर दिन स्पष्ट होती जाती है । अब हमारे पूर्वाचार्योंके अगाध ज्ञानका परिचय मिलने लगा है, और वह दिन शीघ्र ही आनेवाला है, जब हम लोग अपने धर्मके प्रत्येक विषयको वैज्ञानिक-संसारका श्रद्धाभाजन बना हुआ देखेंगे ।

हमारे यहां प्रासुक पानी पीनेका विधान है । पानीको प्रासुक करनेकी मुख्यविधि गरम करना है, अर्थात्, पानीको औंटा लेनेसे वह प्रासुक हो जाता है । ठंडे पानीमें असंख्य जीव रहते हैं, जो सूक्ष्मदर्शक (माइक्रोसकोप) यंत्रसे देखे जा सकते हैं । प्रासुक करनेसे पानी अचित् अर्थात् उन जीवोंसे रहित हो जाता है, इसलिये वह अहिंसाका कारण है । और अहिंसा धर्मका लक्षण है । इसलिये प्रासुक जलका सेवन करना हमारा धर्म है । इस सिद्धान्तको जैनीमात्र जानते हैं, परन्तु गरम पानीके सेवनसे ऐहिक उपकार क्या २ होते हैं, इसपर किसीका भी लक्ष्य नहीं है ।

हमारे देशमें जो मलेरिया; अजीर्ण, हैजा (विशूचिका), कृमिरोग, अनेक प्रकारके ज्वर और उदरामयादि अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं, उनका कारण प्रायः बुरे पानीका व्यवहार है । डाक्टरोंकी राय है कि, यदि लोग बुरे पानीका व्यवहार छोड़ दें तो उन्हें इन रोगोंमें फँसना ही न पड़े । परन्तु सर्वदा सर्वस्थानोंमें अच्छा जल नहीं मिल सकता, और केवल बाहरी निर्मलता स्वच्छतासे अच्छे जलकी पहिचान भी नहीं हो सकती । क्योंकि कोई २ स्वच्छ पानीमें भी ऐसे भारी पदार्थोंका मेल रहता है, जो शरीरको बहुत हानि पहुंचानेवाले होते हैं । ऐसी अवस्थामें पानीको गरम करके काममें लानेसे किसी प्रकारका भय नहीं रहता । पानीको औंटानेसे उसमें मिले हुए सम्पूर्ण हानिकर पदार्थ जलकर नलीमें रह जाते हैं, और फिर वह पानी किसी प्रकारका अपकार नहीं कर सकता ।

जब कभी छोटे २ ग्रामोंमें हैजा आदि संक्रामक रोग होते हैं, तब वहां वालोंको बड़ी भारी विपत्ति झेलना पड़ती है । क्योंकि वे न तो स्वयं बुद्धिवान् होते हैं, कि रोगोंका कुछ प्रतीकार कर सकें, और न वहां डाक्टर, और वैद्य समय पर मिल सकते हैं । इसलिये यदि ग्रामीण लोग औंटाये हुए पानी पीनेके लाभ समझकर उसका वर्ताव करने लगें, तो इन बड़ी भारी विपत्तियोंसे सर्वथा बच सकते हैं, अर्थात् उनके यहां ऊपर कहे हुए रोगोंका प्रादुर्भाव ही नहीं होगा, जिनकी कि उत्पत्ति बुरे पानीके पीनेसे होती है और वे सुखसे रह सकेंगे ।

उष्णजल एक अपूर्व औषधि है, जो विना टके पैसेके हरजगह मिल सकती है । उष्णजलमें अनेक गुण हैं, उनमेंसे थोड़ेसे गुण हम अपने पाठकोंके जाननेके लिये बंगलाबंगवासीसे नकल करते हैं, जो कलकत्तेके एक सुप्रसिद्ध

डाक्टरके लिखे हुए हैं। पाठकोंको चाहिये कि, सबकी परीक्षा करके देखें, और अपने समाजमें प्रासुक जलपानकी प्रथाको उत्तेजन देकर ऐहिक और पारलौकिक दोनों सुखोंका लाभ करें।

१ खाली पेटमें गरम पानी पीनेसे अम्लपित्तजनित छातीकी दाह और खट्टी डकारें आना बन्द हो जाती हैं।

२ गरम पानी आमाशय वा अन्नपचनेके स्थान (Stomach) में जमे हुए कफको जो कि दूर कर देता है, जिससे खाया हुआ पदार्थ शीघ्र हजम हो जाता है। अन्नका परिपाक नहीं होने देता।

३ पाचन नहीं होनेसे जो एक प्रकारका विषैला पदार्थ उत्पन्न होता है। वह गरम पानी पीनेसे मलद्वार होकर निकल जाता है। गरम पानीसे कोष्ठ साफ रहता है।

४ गरम पानी आमाशय और पक्वाशयमेंसे यकृत् आदि स्थानोंमें जाकर पित्त निकालनेकी क्रियाको बढ़ाता है।

५ जो लोग सूखी खांसीसे दुःख भोगते हैं अर्थात् जिन लोगोंके खांसनेमें कफ वगैरह कुछ नहीं निकलता है, वे यदि सोते समय एक गिलास गरम पानीमें (दो अंगुलियोंसे जितना लिया जा सके, उतना) सैंधा नमक डालकर पान किया करें, तो उन्हें बहुत कुछ लाभ हो सकता है। स्वास रोगमें भी इस प्रयोगसे लाभ होता है।

६ गरम पानी पीनेसे शरीरके वात (वायु) आदि रोगोंके विष घुलकर निकल जाते हैं।

७ खाली पेटमें गरमपानी पीनेसे मूत्रनिःसरण क्रिया बढ़ती है। जिसको मूत्र (पेशाब) कम आता है, उसका मूत्र प्रायः लाल, पीला, और क्षार (खार) युक्त हुआ करता है, और ऐसी दशामें पेशाब करते समय जलन मालूम पड़ती है। सो इस रोगमें गरम पानी बहुत लाभकारी होता है।

८ ठंडे पानीके बदले गरम पानी पीनेसे तोंद (मेद) बढ़नेका रोग चला जाता है।

९ गरम पानीके साथ थोड़ासा सोडा पीनेसे यकृतके लीवरके भीतर पित्त जमकर पत्थर नहीं होने पाता। पित्त रुक जानेसे जो यकृतशूल होता है, गरम पानी वारंवार पीनेसे उसको बहुत लाभ होता है।

१० ज्वरमें, विशूचिका रोगमें (हैजेमें), और रक्तस्रावमें नमकमिश्रित गरम पानी पीनेसे रोगी नीरोग हो जाता है। यह पानी एक छटाक पानीमें दो रत्ती नमक मिलानेसे तयार होता है। इसके पीनेसे अथवा पिचकारीसे अभ्यन्तरमें प्रयोग करनेसे मृतप्राय रोगी भी जी सकता है।

११ वमन (कै) रोकनेके लिये थोड़ासा अत्यन्त गरम पानी पिलाना चाहिये। रोगी जितना गरम सहन कर सकै, ऐसा एक एक चमचा पानी पिलानेसे वमन रोगमें आशातीत लाभ होता है।

१२ पसीना निकलनेकी क्रिया बढ़ानेमें मूत्रस्थानकी जलनमें और ज्वरमें गरम पानीसे बहुत लाभ होता है।

१३ गरम पानीकी भाफ, अथवा नीम और निसिन्दाके पत्ते डालकर पकाये हुए पानीकी भाफ

वातरोगमें तथा रक्तविकारमें (खून फिसादमें) विशेष लाभकारी होती है। हमने अनेक वातरोगोंमें नीम और निसिन्दाकी भापसे खूब लाभ उठाया है। गरम पानीकी भाप किसी प्रकारसे गलेके भीतर प्रवेश कराई जा सके, तो स्वरभेदादि अनेक प्रकारके गलरोग आराम हो जाते हैं।

चंदावाड़ी–बम्बई.) सज्जनोंका सेवक––
८–७–०६.) नाथूराम प्रेमी-देवरी निवासी।

दैव और पौरुष।

प्रिय वाचकवृन्द! इस अपार संसारमें जितने कार्य होते हैं, उन सबके दो कारण होते हैं, एक अन्तरङ्ग कारण और द्वितीय बहिरङ्ग। इन दोनोंके सद्भावसे ही कार्यकी सिद्धि होती है। यदि इनमेंसे किसी एकका भी अभाव हो, तो कार्य सिद्ध होना नितान्त असम्भव है। जैसे;– घटरूप कार्यका उपादान कारण मृत्तिका (मिट्टी) और निमित्तकारण कुलाल (कुम्हार), चक्र चीवरादिक हैं। सो इनमेंसे उपादान कारण मृत्तिकाके होते हुए भी निमित्त कारण कुलालादिकके अभाव होनेसे घटोत्पत्ति कदापि नहीं हो सकती। इसी तरह बाह्यसामग्री कुलालादिकके होते हुए भी उपादान कारण मृत्तिकाके अभावमें भी घटोत्पत्ति नहीं होती। यद्यपि मृत्तिकाके अभावमें भी सुवर्णादिकका घट बन सकता है, परन्तु वहांपर सुवर्णीय घटको सुवर्ण ही उपादान कारण माना है। ठीक इसी तरह हमारे शुभाशुभमें भी उक्त दोनों प्रकारके कारण उपस्थित हैं। अन्तरङ्ग कारण तो कर्मोंका क्षय उपशम क्षयोपशमादिक हैं और बाह्यकारण पौरुष है। इन दोनोंमेंसे किसी एकका अभाव होनेसे शुभाशुभका यथेष्ट फल नहीं मिल सकता। जबतक हमारे लाभान्तराय कर्मका क्षयोपशम नहीं होगा, भोगोपभोगकी सामग्री कभी नहीं मिल सकेगी। अथवा जब तक ज्ञानावरणकर्मका क्षयोपशम नहीं होगा, तब तक ज्ञानवृद्धि कभी नहीं हो सकेगी। यही कारण है कि, पाठशाला स्कूल तथा कालजोंमें सम्पूर्ण विद्यार्थियोंकी बाह्य–सामग्री सदृश होनेपर भी कोई तो विद्वान् हो जाता है, अथवा परीक्षोत्तीर्ण हो जाता है, और कोई नहीं होता। इससे सिद्ध होता है, कि, जबतक अन्तरङ्ग कारण न होगा, कार्य-सिद्धि कभी नहीं हो सकेगी। इसी तरह परमकल्याण-स्वरूप जो मोक्ष है, सो भी विना सम्यग्दर्शनादित्रय अन्तरङ्ग कारणके नहीं हो सकती। यदि अन्तरंग कारणके विना भी मोक्ष हो जाय, अथवा सांसारिक सभी कार्य सिद्ध हो जावें, तो सम्पूर्ण जीवोंको मोक्ष होनी चाहिये। क्योंकि पौरुष सम्पूर्ण जीवोंके विद्यमान है। और सम्पूर्ण जीवोंके सर्व कार्य सिद्ध होने चाहिये। परन्तु संसारमें ऐसा नहीं देखा जाता। हम हमेशा देखते हैं कि, किसीके पौरुष कम है और उसके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण होते हैं, परन्तु जिसके पौरुष विद्यमान है, उसके मनोरथ किञ्चिन्मात्र भी सिद्ध नहीं होते। कहा भी है;—

पौरुषादेव सिद्धिश्चेत्
पौरुषं दैवतः कथम्।

पौरुषाचेदमोघं स्यात्
सर्व प्राणिषु पौरुषम् ॥ १ ॥

भावार्थ—यदि पौरुषसे ही सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि मानी जाय, तो पौरुष भी दैवसे ही क्यों सफल होता है? अर्थात् कर्मका क्षयोपशम होनेपर भी विना किये किसी कार्यकी सिद्धि नहीं होती। अथवा पांच व्यापारी सदृश ही व्यापार करते हैं, परन्तु किसीको हानि और किसीको लाभ होता है। इससे जान पड़ता है कि, पौरुष भी दैवाधीन है। यदि पौरुषसे ही अमोघ कार्यकी सिद्धि हो, तो पौरुष सम्पूर्ण प्राणियोंके विद्यमान है। सबहीकी कार्यसिद्धि होना चाहिये।

पाठकगण! उक्त कथनसे यद्यपि ऐसी प्रतीति होती है कि विना दैवके कुछ भी नहीं हो सकता, परन्तु विना पौरुषके भी यह सब व्यर्थ होता है। ऊपर जितने दृष्टान्त दिये गये हैं, उन सबमें यदि पौरुष न हो, तो भी किसी कार्यकी सिद्धि नहीं हो सकती। जैसे—लाभान्तराय कर्मके क्षयोपशमसे भौगिक सामग्री भोजनादिक तयार होते हुए भी जबतक कवलको हाथसे उठाकर मुखमें न रक्खेंगे, तथा चर्वणादिक क्रिया न करेंगे, तबतक हमारा तृप्तिरूप कार्य कभी सिद्ध नहीं हो सकेगा। अथवा जबतक हम विद्योपार्जनका बाह्यसाधन पठन पाठनादिक न करेंगे, तबतक ज्ञानावरणीय कर्मका क्षयोपशम होते हुए भी ज्ञानप्राप्ति नहीं कर सकते। इसीतरह जबतक हम अर्थोपार्जनादिकमें उद्यत नहीं होंगे, कभी उस कार्यकी सिद्धि नहीं हो सकेगी। इससे स्पष्ट होता है कि, विना पौरुषके किसी भी कार्यकी सिद्धि नहीं हो सकती। तदुक्तम्;—

दैवादेवार्थसिद्धिश्चेद्दैवं पौरुषतः कथम्।
दैवतश्चेदनिर्मोक्षः पौरुषं निष्फलं भवेत्॥१॥

भावार्थ—यदि दैवसे ही अर्थसिद्धि मानी जाय, तो दैवकी सिद्धि पौरुषसे क्यों होती है? क्यों कि दैव अर्थात् कर्मोंकी सिद्धि मनोवचनकायके व्यापार वा शुभाशुभ पुरुषप्राय रागादिकोंसे ही होती है। यदि दैवकी सिद्धि कारणभूत अन्य दैवसे मानी जाय, तो असिद्ध हो जाय। क्योंकि कार्यभूत दैव और कारणभूत दैवकी सन्ततिके विच्छेद करनेका कोई उपाय नहीं है। तथा दैवकी सिद्धि अन्य दैवसे उसकी अन्यसे, उसकी अन्यसे इस रीतिसे अनवस्था दोष होगा और व्रत तप दान पूजनादिक पौरुष भी निष्फल होंगे।

उक्त कथनसे विदित हुआ कि, दैवाधीन पौरुष है और पौरुषाधीन दैव है, और कार्यसिद्धि उभयाधीन है। ऐसे समयपर अपने इष्ट कार्यकी सिद्धिके लिये पुरुषार्थ करना या दैवके भरोसे बैठे रहना, ऐसा प्रश्न उपस्थित होता है। क्योंकि यदि पुरुषार्थ करते हैं, और दैव अनुकूल नहीं है, तो भी कार्यकी सिद्धि नहीं होगी। और यदि पुरुषार्थ नहीं करते, तो कार्यसिद्धि होना नितान्त असम्भव है। सो इसका उत्तर उक्त कथनसे ही ध्वनित होता है। क्योंकि पूर्वमें लिखा जा चुका है कि, पौरुष बाह्यकारण है और दैव अन्तरङ्गकारण है और अन्तरङ्गकारण कर्मोंका क्षयोपशमादिक है, जोकि हम लोगोंके अप्रत्यक्ष है। इसलिये हम नहीं जान सकते कि

उसकी उपस्थिति है अथवा नहीं है । ऐसी अवस्थामें अनेक वार ऐसा होता है कि, अन्तरङ्ग कारण रहते हुए भी पुरुषार्थ विना हमारा अन्तरङ्ग कारण भी निष्फल जाता है और कोई कार्य सिद्ध नहीं होता । तीर्थंकरो को देखिये । जिस समयमें उन्होंने तीर्थंकरप्रकृतिका बंध किया है, उसी-समय यह निश्चय हो चुका था कि, ये अवश्य ही मुक्त होंगे । परन्तु ऐसा निश्चय होनेपर भी यदि वे बाह्यसाधनरूप तप धारण न करें, तो क्या कभी मुक्त हो सकते हैं ? अथवा यों कहिये कि, यदि त्रयोदशगुणस्थानवर्त्ती अर्हन् भी निखिलकर्म-क्षयके बाह्यकारणरूप योगनिरोधको नहीं करेंगे तो क्या कभी मुक्त हो सकेंगे ? अथवा जिस जीवके आयुकर्मका बंध किसी भी त्रिभागमें न बँधकर केवल अन्तसमयमें बँधा है, वहांपर क्या नहीं कह सकते कि, योग्यता होनेपर भी केवल बाह्यकारणका अभाव होनेसे ही त्रिभागमें आयुबंधका अभाव हुआ है ? यदि बाह्यसाधन मुख्य न माना जाय, तो सदश सम्यग्दृष्टी वा निखिल संसारी जीवोंकी स्थिति सदश ही होनी चाहिये । लाभान्तराय कर्मका क्षयोपशम् होते हुए अन्नकवल स्वयं उदरमें पहुंच जाना चाहिये । सिला हुआ अंगरखा शरीरमें स्वयं पहन जाना चाहिये । इत्यादि । परन्तु लोकमें ऐसा कभी नहीं देखा जाता है । प्रत्युत लोकमें तो;—

काकतालीयवत्प्राप्तं दृष्ट्वापि निधिमग्रतः ।
न स्वयं दैवमादत्ते पुरुषार्थमपेक्षते ॥ १ ॥

भावार्थ—लाभान्तराय कर्मके क्षयोपशमसे प्राप्त हुई निधिको सन्मुख देखता हुआ भी जब-तक पुरुषार्थ नहीं करेगा, क्या उसका दैव स्वयं ग्रहण कर सकेगा ? फिर यदि दैवकी ही ओर विचार किया जाय, तो स्पष्ट विदित होगा कि, वह स्वयं पुरुषार्थस्वरूप है । यथा;—

पूर्वजन्मकृतं कर्म तद्दैवमिति कथ्यते ।
तस्मात्पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति ॥

भावार्थ—जो शुभाशुभकर्म पूर्वमें अथवा पूर्वजन्ममें किये है, उन्हींको दैव कहते हैं । अर्थात् पूर्वकृत शुभाशुभ कर्मोंके द्वारा आते हुए पुद्गलवर्गणा जो कि आत्माके साथ संबधित होकर कर्मरूप परिणत हुए हैं, उन्हींको दैव (कर्म) कहते हैं । और उसका भी फल तभी होता है कि, जब वह स्वयं फल देनेके सन्मुख उद्यत हो । अन्यथा आत्मामें उसका सद्भाव होते हुए भी वह किञ्चिन्मात्र भी अपना फल नहीं दे सकता । इस लिये पुरुषार्थके विना दैवकी सिद्धि होना भी अत्यन्त असम्भव है ।

कल्पना कीजिये कि, पुरुषार्थ मुख्यरूप नहीं किन्तु गौणरूप है । तो क्या कुम्भकार शिवकस्थ मृत्पिण्डसे यथेष्ट भाण्ड (वर्तन) बना सकेगा? क्योंकि दैवप्रधानीके मतमें जो भाण्ड जिस समयमें बननेवाला होगा, वही बनेगा । अथवा कृषिक (किसान) यदि दैवके ही भरोसे रहेगा, खेतमें अन्नादिक न वोयेगा, तो क्या फिर अन्नोत्पत्ति हो सकती है ? तिलोंमें तैल विद्य-मान रहते हुए भी क्या कोई विना कुछ किये उसे निकाल सकता है ? तथा च;—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति
कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि सुप्तस्य सिंहस्य
प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

सम्पूर्ण कार्य उद्यम अर्थात् पौरुषसे ही सिद्ध होते हैं, केवल मनोरथमात्रसे कभी सिद्ध नहीं हो सकते। क्या सोते हुए सिंहके मुखमें हरिण स्वयं प्रवेश करते हैं? नहीं। इस लिये पुरुषार्थ करना चाहिये। पुरुषार्थ करनेसे छोटा प्राणी भी एक बड़ा कार्य कर सकता है, देखिये;—

योजनानां सहस्रं तु शनैःगच्छेत् पिपीलिका
न गच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति

पिपीलिका (चिउंटी) धीरे धीरे चलकर भी हजारों योजन पहुंच जाती है। परन्तु गमनाभावमें अर्थात् गमन नहीं करे, तो गरुड़ पक्षी भी कि, जिसकी शक्ति गमन करनेमें अपूर्व है एक पैर भी आगे नहीं चल सकता। इसलिये इस जीवको पुरुषार्थ करनेमें हरसमय उद्यत रहना चाहिये। न जाने किस समय अन्तरङ्ग कारण मिल जाय, और इसके इष्ट कार्यकी सिद्धि हो जाय। अन्यथा यदि अन्तरङ्ग कारण एकबार भी प्राप्त होकर नष्ट हो जायगा, तो पुनः उसका मिलना नितान्त दुर्लभ हो जायगा।

जो जीव पुरुषार्थको लात मारकर केवल दैवके भरोसे रहते हैं, उनकी कार्य-सिद्धि तो दूर रहो, वे अपने पदस्थसे च्युत होते हुए क्षुद्र जीवोंसे भी निंद्य होते हैं। देखिये;—

विहाय पौरुषं यो हि दैवमेवावलम्बते।
प्रासादसिंहवत्तस्य मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः॥

जो पौरुषको छोड़कर केवल दैवका आलम्बन करते हैं, वे उस निरुद्यमी सिंहके समान हैं कि, जो राजप्रासाद (राजमहल)के ऊपर बना हुआ रहता है और कौवे उसके मस्तकपर आकर बैठते हैं।

उपर्युक्त कथनसे स्पष्ट विदित होता है कि, अप्रत्यक्षभूत अन्तरङ्ग कारणको गौण करके प्रत्यक्षभूत पुरुषार्थरूप कारणका सहारा अवश्य लेना चाहिये। क्षायोपशमिक लब्धिकी मन्दतामें पौरुषप्रधान कारणसे जो कार्य सिद्ध होता है, वह पुरुषार्थप्रधान ही कहा जाता है। संसारमें निखिल जीवोंका प्रयास भी ऐसा ही देखा जाता है। यदि ऐसे प्रयासका सद्भाव न होता, तो किन किन पदार्थोंसे किन किन कार्योंकी निष्पत्ति होती है, यह ज्ञान हमको होना नहीं चाहिये था। तथा ओदनादि पदार्थोंके भक्षणसे ही क्षुधाशान्ति होती है देखनेसे नहीं। अथवा वस्त्रोंके पहनने ओढ़नेसे ही शीतनिवारण होता है। इत्यादि ज्ञान भी नहीं होना चाहिये। और न इनमें इसतरह प्रवृत्ति होना चाहिये। इससे संसारके यावत् व्यवहार बंद हो जायगे। मजदूर जबतक कुछ कार्य न करेगा क्या कोई उसे मजदूरीके पैसे देगा? इसलिये प्रत्येक जनको उचित है कि, जितना उससे हो सके ऐहिक और पारमार्थिकके लिये उद्यम करै। क्योंकि;—

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवो हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं विहाय कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः॥

भावार्थ—उद्योग करनेवाले पुरुषसिंहको लक्ष्मी प्राप्त होती है। 'दैव दैव' ऐसा कहनेवाले तो केवल कापुरुष (कातर वा आलसी) ही हैं। इसलिये दैवका भरोसा छोड़कर स्वशक्त्यनुसार पौरुष करना चाहिये। यदि यत्न करते

हुए भी कार्यसिद्ध न हो, तो उसका कोई दोष नहीं हैं । उसका दैव ही विमुख है । इत्यलम् ।

बम्बई } लालाराम—
२६-८-०६ } चावली (आगरा) निवासी ।

सेठजीका सुविचार ।

जैनमित्रके पाठकमहाशयोंको विदित है कि—गतवर्ष जेठ सुदी १० के दिन श्रीसुपार्श्व-पार्श्वभगवान्‌की जन्मपुरी संस्कृतविद्याध्ययनके अद्वितीयस्थान **काशीनगरीमें** (बनारसमें) ९ विद्यार्थियोंको भरती करके **स्याद्वादपाठशाला** नामकी एक जैनपाठशाला स्थापन हुई थी, जिसको आज १९ मास हो गये । उसमें आज २०।२२ सर्वदेशीय जैनी विद्यार्थी संस्कृत विद्याका अध्ययन कर रहे हैं । वार्षिक परीक्षा भी हो गई है, जिसका फल शीघ्र ही निकलनेवाला है । उसको देखनेसे जैनसमाजके विद्वान्‌मात्रको मानना पड़ैगा कि, वास्तवमें थोड़ेसे खर्चेमें संस्कृत विद्याध्ययनका स्थान **स्याद्वादपाठशाला काशी** ही है ।

जगत्प्रसिद्ध दानवीर श्रेष्ठिवर्य माणिकचंद हीराचंदजी जे. पी. तो इस पाठशालाके कार्यसे इतने प्रसन्न हुए हैं कि, उन्होंने शीघ्र ही इसकी मासिकचंदेकी नीमको स्थायीचंदसे पुष्ट करके इसको चिरस्थायी करनेका दृढ संकल्प कर लिया है । जिसके लिये फिलहाल इसकी नीम पक्की करनेके लिये १९ महाशयोंसे एक एक हजार रुपयोंकी सहायता देनेके लिये जैनगजट अंक ३१ में एक अपील की गई है । जो महाशय इन १९ महाशयोंमें अपना नाम लिखाकर स्याद्वाद पाठशाला काशीकी नीम रक्खेंगे, उन महाशयोंका नाम समस्त जैन अखबारोंमें कीर्तित करनेके अतिरिक्त स्याद्वादपाठशालाके विस्तृत मकानमें एक पत्थरपर खुदवाकर लगा दिया जायगा, जिससे पाठशालाके साथ २ उनका नाम भी स्थायी होगा ।

इन १९ धर्मात्मा महाशयोंमें फिलहाल ४ नाम स्वीकृत हुए हैं । प्रथम ही रायबहादुर सेठ मूलचंदजी नेमीचंदजी अजमेरवालोंका, दूसरे रायबहादुर सेठ चंपालालजी नयेनगरवालोंका, तीसरा आपका और चौथा पाठशालाके कर्ता धर्ता मंत्री बाबू देवकुमारजी आरेवालोंका । इनके सिवाय दो तीन नाम मुम्बईके और दो तीन नाम शोलापुरके करनेके लिये सेठजी पत्रद्वारा प्रार्थना करते रहते हैं । शेष नाम उत्तर हिन्दुस्थानके धर्मात्मा उदार महाशयोंके भरती होना चाहिये । बुंदेलखंडमेंसे कमसे कम तीन चार नाम होने चाहिये । प्रथम तो स्याद्वाद पाठशालाके आदि प्रोत्साहक लाला मूलचंदजी जमींदार बरवासागर—दूसरे सहायक बमराना निवासी श्रेष्ठिवर्य वृन्दलाल चंद्रभानजी और तीसरा नाम खुरई निवासी श्रीमंत सेट मोहनलालजी साहबका होना चाहिये । क्योंकि आपसे पाठशाला स्थापन करनेसे पहिले प्रार्थना की गई थी, तब आपने स्वीकार किया था कि बंबई सभा और महासभासे विरुद्ध न होगी तो हम इस पाठशालामें अवश्य ही मदद करैंगे, तथा एतद्देशीय धर्मात्मा भाइयोंसे भी पूरी २ मदद करवावेंगे । सो अब आपको अपनी इच्छा-

नुसार पाठशालाकी कार्रवाई देखकर १०००) की सहायता अवश्य करनी चाहिये।

इनके सिवाय उत्तर हिन्दुस्थानमें खुर्जा फिरोजाबादके रानीवाले सेठोंको तथा संस्कृतकी उन्नतिके वांछक सेठ पंडित मेवारामजीको तो अवश्य ही सहायता देना चाहिये। सहारनपुरके श्रेष्ठिवर्य रूपचंदजी साहबके तो सुपुत्र प्रकाशचंद्रजी इस पाटशालामें पढ़ रहे हैं, सो सहायता देंगे ही। परन्तु इसके सिवाय उत्तर हिन्दुस्थानमें ऐसे २ धनाढ्य महाशय है कि, जिनके लिये उत्तम कार्यके लिये एक हजार रुपये देना हाथका मैल छुटाना है। यदि उत्तर हिंदुस्थानके धर्मात्मा धनाढ्य महाशयगण पाठशालाके कार्यपर जरा भी विचार करेंगे, तो कई पंद्रह हजार रुपये उधरसे हो सकते हैं। जब सहारनपुरके अधिवेशनपर बातकी बातमें ४० हजार रुपये हो गये, तो क्या स्याद्वादपाठशालाके लिये तिहाई चौथाई भी नहिं होंगे? अवश्य होंगे। आशा है कि हमारे धनिकगण जगत्प्रसिद्ध दानवीर सेठजीकी अपीलपर अवश्य ही विचार करेंगे।

गिरगांव-मुंबई। } भाइयोंका दास—
पन्नालाल जैन,

सलाहकी बात।

बुद्धिमान श्रीमान, प्रकाशक जैनमित्रके।
पंडित वर गोपालदास, शुद्ध चरित्रके।
जैजिनेन्द्र स्वीकार करहु, करि कृपा दासपर।
निम्नलिखित जो लेख, प्रकाशिय ताहि छापिकर॥
यह भांति विनययुत प्रार्थना, भूल क्षमा करि दीजिये।
जो त्रुटी होय या लेखमें, ताहि पूर्ण करि लीजिये॥

प्यारे पाठक! आज जात्युन्नतिके विषयमें जो विचार मुझ तुच्छबुद्धिके हृदयमें उत्पन्न हुए हैं, उनके प्रकाशित करनेकी लालसासे यह लेख आप लोगोंकी सेवामें समर्पण करता हूं। आशा है कि, आप लोग अवलोकन कर मुझे कृतार्थ करेंगे।

उन्नति होनेके दो उपाय हैं। प्रथम तो जिन २ गोत्रोंकी कच्ची व पक्की रसोई एक है, उन २ में यदि विवाह आदि सम्बन्ध भी होने लगें तो अनेक लाभ हो सकते हैं। प्रथम तो कन्याविक्रय व बदलामट्टी आदि कुरीतियां जो दिन बदिन बढ़ रही हैं यदि बिलकुल बंद न हों, तो कम तो अवश्य ही हो जायं। दूसरे उचित अवस्थाके पुत्र तथा पुत्रियोंके यथावसर मिलनेसे बालविवाह और वृद्धविवाहकी प्रथाका बंद होना भी संभव है। तीसरे आजकल हम देखते हैं कि, कितने ही जैनी बांधव ऐसे हैं कि, बेचारोंके कई २ लड़के हैं परन्तु उनका विवाह न होनेसे न तो आगामी नाम चलनेहीकी कोई आशा है और न उनके आचरण ही ठीक कर सकते हैं। बस वह इन्हीं विचारोंमें पड़े हर समय शोकातुर रह कर श्रेष्टकर्मोंसे भी वंचित रहते हैं। अब अनव्याहोंकी दशापर ध्यान दीजिये। वे दुर छिपकर नीच जातिकी कुलटास्त्रियोंसे व्यभिचार कर अपना धन धर्म और अमूल्यवीर्यको तो नष्ट करते ही हैं, परन्तु खेद इस बातका है कि, उनका कर्म प्रकट होनेपर वे पालन पोषण किये हुए युवापुत्र सहजमें विराने बन जाते हैं। और फिर तो वे निडर होकर मन माने कुकर्म करते हैं। प्यारे पाठको! उन बेचारोंका कुछ भी अपराध नहीं है। क्योंकि न तो वह इतना रुपया ही रखते हैं, जो हजार

व बारहसौ रुपया देकर लड़की मोल ले सकें और न उनके कोई बहिन तथा भानजी ही है जो बदला चुका सकें। और न ब्रह्मचर्य्य धारण करनेकी शक्ति ही उन बेचारोंमें है, जो ब्रह्मचारी बन संसारका कुछ उपकार ही करें। फिर ऐसी दशामें सिवाय उक्त कुकर्मके कौन ऐसा सरल उपाय है कि, जिसके करनेमें वे उद्यमी हों। इन सब कुरीतियोंके निवारणार्थ यही एक उपाय मेरी समझमें आता है कि, उपर्युक्त कथनपर ध्यान देकर सर्व सज्जन महाशय यथाशक्ति परिश्रम कर सफलता प्राप्त करें।

दूसरा उपाय यह है कि, जहां बिंबप्रतिष्ठा आदि कार्य होनेकी आवश्यकता न हो, न किये जायं। क्योंकि हर मंदिरमें कमसे कम १० प्रतिमा तो अवश्य होती हैं और मंदिर भी अधिक तर कई २ एक ग्राममें होते हैं। और बहुधा ऐसा देखने और सुननेमें आता है कि, कहीं २ पूजाकी कौन कहै प्रक्षालन भी कई २ दिनतक नहीं होता। यदि ऐसी जगहोंसे जहां प्रतिमाजीकी आवश्यकता हो, प्रतिमाजी पहुंचाकर विराजमान कर दी जाया करें, तो क्या आनंदकी बात न हो? परन्तु हमारे धनाढ्य महाशय ऐसा कब होने देते हैं? वह तो बिना हानि लाभ सोचे ही सिर्फ नेकनामीके लिये कार्य करनेपर आरूढ़ हो जाते हैं और नेकनामीके स्थानमें बदनामी भी उठा लेते हैं। आचार्योंके कथनानुसार न तो प्रतिष्ठाकी आवश्यकता ही समझी जाती है और न प्रतिष्ठाकी आवश्यक सामग्री धन तथा प्रतिष्ठाकारक आदि जैसे होने चाहिये होते हैं। फिर ऐसी दशामें प्रतिष्ठा कराना ऐसा है कि, जैसे अत्यंत भूखे मनुष्यको कपड़ा तथा गहने आदि देकर उसके दुःखको दूर करनेकी इच्छा करना। इसके सिवाय प्रतिष्ठामें जितनी प्रतिमाजी प्रतिष्ठित की जाती हैं, उनका भार प्रतिष्ठाकारक ही पर होनेसे उस पापके भागी भी वही होते हैं; जो उनके यथोचित सत्कार न होनेमें संचय होता है। सबसे अधिक हानि यह है कि, प्रतिष्ठा करानेमें प्रतिष्ठाकारक महाशयका तो सिर्फ दस या बीस हजार रुपया ही खर्च होता है, पर इस जैन जातिसे कमसेकम एक लाख रुपया निकल जाता है। क्योंकि कोई २ भाई गहना व वर्तनतक गिरवी रखकर मेलेके लिये उद्यमी होते हैं। जो इस प्रकार भी मेलेमें नहीं पहुंच सकते, वे तो अपने जन्मको निरर्थक ही समझते हैं। अब रुपयेकी दशापर ध्यान देनेसे और भी अफसोस होता है कि, इतनी मिहनत व कष्टसे पैदा किये हुए रुपयेमेंसे कुछ तो टिकट यानी रेलवे किराये द्वारा सरकारी खजानेमें जमा होता है, और बहुतसा रुपया अन्य सौदागरोंकी इक्कागाड़ी आदि किराये व चोरी आदि द्वारा शूद्र लोगोंमें पहुंचता है। और उससे मांसभक्षण व वेश्यासेवन आदि अनेक कुकर्म होते हैं। अब देखिये पाठक! इस जातिको निर्धन करनेका कैसा सरल उपाय हमारे धनाढ्य तथा प्रतिष्ठाकारक महाशयोंने सोचा है? वे प्रकटमें अपनेको धर्मात्मा कहलाते हैं, पर वास्तवमें धर्मात्माओंके यह कर्म नहीं है। यदि धन खर्च करनेकी इच्छा तथा नाम व यश फैलानेकी उत्कंठा व जात्युन्नतिकी कांक्षा व पूर्व जन्ममें इंद्रादिक श्रेष्ठपद पानेकी आकांक्षा आपके मनमें है, तो जिस धनसे आप प्रतिष्ठा-

कराना चाहते हैं। उसीसे खरीदी हुई जायदादकी आमदनी तथा उसीके व्याजके मुनाफेसे अपनी द्रव्य व सामग्रीसे पूजन होनेका प्रबंध श्रीमंदिरजीमें कर दीजिये, वा जीर्णमंदिरोंका पुनरुद्धार कराइये, अथवा औषधालय वा विद्यालय वा अनाथालय खोलकर दुखियोंका उपकार करते हुए अपनी मिहनतसे कमाये हुए धनको सफल कीजिये। और अपने धनको भी घरमें रखे हुए सदाके लिये अपने नाम और यशको इस संसारमें विस्तरितकर अमर कर दीजियेगा। जैसा कि इस पदसे प्रकट होता है;—

"कीरतिवंत मृतक जीवित हैं, अपयशवंत जिया न जिया रे" अत्र पाठक महाशय स्वयं पक्षपातकी एनक नेत्रोंसे दूर कर न्यायचक्षुसे देख सकते हैं कि, यह लेख सत्य है व असत्य।

जातिहितैषी—

बबूलाल ना. मु.—घिरोर (मैनपुरी)।

नोट—आगामी समयके लिये मन्दिरकी पूजादिका प्रबन्ध मन्दिरनिर्माताको करना ही चाहिये, और जीर्णोद्धार औषधालय, अनाथालयादिमें यथाशक्ति द्रव्य लगाना भी उसका कर्तव्य है। परन्तु इसके लिये प्रतिष्ठा जैसे पुण्यकार्यके रोकनेका प्रयत्न करना अच्छा नहीं है! लेखमें प्रतिष्ठा कार्यपर इतनी अश्रद्धा उभाड़नेकी जरूरत नहीं थी। हां! धनवान् लोग शास्त्रानुसार आचारविचारोंसे प्रतिष्ठा नहीं कराते, यह उनकी भूल अवश्य सुधारनेके योग्य है।

सम्पादक।

भूल किसकी है ?

१ सितम्बरके जैनगजटमें विधवाविवाह और देहलीकी पंचायत शीर्षक लेखमें बाबू अजितप्रसादजीने हमारे उस लेखको असत्य बतलानेका प्रयत्न किया है, जो जैनमित्रके अंक १८-१९ में छपा है। बाबूसाहब विधवाविवाहके पक्षमें नहीं है, और देहलीमें आपने उसका अनुमोदन नहीं किया, यह जानकर हमको हर्ष हुआ है और आप जैसे बुद्धिमानसे हमको ऐसी आशा भी थी। परन्तु दुःख इस बातका है कि, आपने सम्पादक जैनमित्रको गालियां देनेवाला और कोसनेवाला बतलाया है। आपने यह ख्याल नहीं किया कि, उस लेखमें जो कुछ लिखा गया है, संवाददाताओंकी चिट्ठियोंपरसे लिखा है। यदि किसी प्रकारसे आप झूठा सिद्ध कर सकते हैं, तो उन चिट्ठियोंके लिखनेवालोंको कर सकते हैं, न कि सम्पादक जैनमित्रको। जैनमित्रको तो स्वयं इस विषयमें शंका थी, जो कि "बाबूसाहबको हम धर्मज्ञ और बुद्धिमान समझते थे, परन्तु अब उनके इस कृत्यको सुनकर यदि वह सत्य हो तो।" इस वाक्यसे प्रतिध्वनित होती है। यदि चिट्ठियोंके विषयमें आपको शंका है, तो हम उन्हें आगामी अंकमें अक्षरशः प्रकाशित करके आपका भ्रम मिटा सकते हैं॥ परन्तु उसमें जैनमित्र किसी प्रकार दोषी नहीं ठहर सकता, यह निश्चय है। आप वहांकी पंचायतमें क्या कहना चाहते थे, आपकी क्या मंशा थी, विधवाविवाह शब्दसे आपका क्या प्रयोजन था, सो तो आप जाने अथवा सर्वज्ञ देव जाने। परन्तु जैनमित्र इससे प्रसन्न अवश्य है कि, आप विधवाविवाहके पक्षपाती नहीं हैं। और वह यंगमेन्स एसोसियेशनसे भी यही सुनना चाहता था, जो एसोसियेशनके ३ नवम्बर १९०१ के प्रस्तावमें

लिखा है। यह आपकी भूल है, जो जैनमित्रके लेखको आप गाली गलौंज समझते हैं। जैनमित्रका अभिप्राय सिवाय सद्धर्मकी प्रवृत्तिके और असदाचारके खंडनके दूसरी ओर कदापि नहीं जाता।

विविध समाचार।

बम्बईके प्रसिद्ध शेठ प्रेमचन्द रायचन्दजीका गत ३१ अगस्तको देहान्त हो गया। आप बम्बईके नामी व्यापारी और जैनसमाजके एक उदाररत्न थे। आपने कलकत्ता यूनीवर्सिटीमें तीन लाख रुपया देकर अपना नाम अमर कर लिया है। उस रुपयेके व्याजसे प्रतिवर्ष एक विद्यार्थीको बड़ी भारी स्कालर्शिप मिलती है। इस स्कालर्शिपको जो विद्यार्थी प्राप्त करता है, वह "शेठ प्रेमचन्द रायचन्द स्कालर" कहलाता है। आपकी मृत्युसे सर्वसाधारणको शोक हुआ है।

बम्बईमें श्रीदशलाक्षणिक पर्व बड़े आनन्दसे व्यतीत हुआ। श्रीयुत पंडित धन्नालालजी काशलीवाल, लखनौके बाबू शीतलप्रसादजी, और संस्कृत विद्यालयके विद्यार्थी पं० लालाराम वंशीधरादि विद्वानोंके समागमसे शास्त्रसभामें अपूर्व धर्मामृतकी वर्षा होती थी। त्रयोदशीको एक सभा की गई थी, जिसमें यज्ञोपवीत संस्कारके विषयमें व्याख्यान और वादानुवाद हुए थे। आगामी चतुर्दशीकी सभामें इस विषयपर फिर भी एक व्याख्यान होगा।

इन्दौरके हुकमचन्दजैनबोर्डिंगस्कूलके अध्यापक पं० गौरीलालजी नियुक्त हुए हैं, जो कि पहले दिल्लीकी पाठशालामें अध्यापक थे। आप जैनधर्मके एक अच्छे विद्वान, और सज्जन पुरुष हैं।

निहटौर जिला बिजनौरमें एक तांबेके पात्रमें रक्खी हुई, अनेक जैनप्रतिमायें जमीनके नीचेसे प्राप्त हुई हैं।

बम्बईमें इस वर्ष जयपुर जिलेके श्री मूलचन्दजी त्यागी आये हुए हैं। आपने दशलाक्षणीके पूरे दश उपवास किये हैं।

उदयपुरा (भूपाल) में विदेशीशक्कर पंचायतके द्वारा बिलकुल उठा दी गई है। वहांके शेठ कालूराम रामलालजीके प्रयत्नसे २०० गांवोंके लोगोंने विदेशी शक्करका सर्वथा परित्याग कर दिया है। धन्यवाद है।

अहमदाबादके सहयोगी 'जैन' पर वहांके एक ढूंढकपत्रके सम्पादकने मानहानिका एक मुकद्दमा दायर किया है।

अमृतसरके लाला मोतीलाल फग्गूमलजी स्वदेशी काश्मीरी केशर सम्पूर्ण जैनी भाइयोंको विना किसी धोखेके भेज सकते हैं। यह केशर अपने देशमें उत्पन्न हुई होनेके सिवाय विदेशी केशरसे उत्तम सस्ती और पवित्र है। २८) रु० पौंडके अनुमान इसका भाव है। धर्माभिमानी और स्वदेशाभिमानी भाइयोंको अब विदेशी अपवित्र केशरका वर्ताव सर्वथा छोड़ देना चाहिये।

ॐ

शुभ समाचार.

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

अगर ध्यानसे विचार किया जाय तो धर्म अर्थ काम मोक्षका ठीक उपाय शरीरकी तन्दुरुस्ती ही है, आजकल शरीरको नीरोग बनानेकेलिये बहुतसे उपाय चल रहे हैं। परन्तु पुरानी देशी वैद्यककी दवाइयोंके बराबर कोई भी गुणकारी तथा भारतवासियोंके मिजाजके मुआफिक नहीं है, क्योंकि हमारे पुराने आचार्योंके जितने काम हैं सब अच्छे हैं। इस ही वास्ते वैद्यक भी सबमें अच्छा है। अबतक बहुतसे आदमी भूलसे इसको बुरा समझते थे परन्तु जब बड़े २ बुद्धिमान् डाक्टरोंने इसकी तारीफ की और इस ही को सबका मूलकारण बतलाया तब तो इसकी भी उन्नति होने लगी, इधर उधर बड़े २ औषधालय और विद्यालय खुलने लगे। अबतक जैनियोंमें कोई बड़ा औषधालय नहीं था इसलिये हमने मुरादाबादसे यहां आकर दानवीर सेठ **माणकचंद हीराचंदजी जे. पी.** जौहरी मुम्बईकी मददसे एक बड़ा औषधालय खोला है। उक्त सेठजीके हाथसे खुलनेके कारण इसकी दिनरात उन्नति होती जाती है क्योंकि मंगलमय सेठजीके द्वारा खुले हुये सब ही काम उन्नत हो रहे हैं। यहां गरीबोंको मुफ्त और अमीरोंसे वाजबी मूल्य लेकर दवा दी जाती है, बाहरके भाइयोंके आरामकेलिये भी हमने बहुत लोगोंकी प्रेरणासे ये सूचीपत्र बनाया है और शुद्ध दवा बनाकर तय्यार की हैं। आजकल नोटिसोंका विश्वास नहीं होता परन्तु हमने ऐसा नहीं किया जिसमें जितना गुण है उतना ही लिखा है जिस रोगकी जैसी हालत होती है वहही लिखी है। दूसरे हम दवा भेजते समय भी रोगीको साफ लिख देते हैं कि आराम होगा या नहीं, या इतना आराम होगा. तीसरे हमारी औषधियां शास्त्रोक्त रीतिसे व पवित्र क्रियासे तैयार कीहुई हैं चौथे ये काम केवल लोभकेलिये ही नहीं है। किंतु धर्म यश लाभ तीनोंके वास्ते किया है। इसवास्ते दवाइयोंकी कीमत भी औरोंसे कम रक्खी है। सर्व साधारणके उपकारके लिये और हरवक्त शुद्ध दवा तय्यार मिलनेके वास्ते ही ये सब काम हैं और धर्मार्थ बांटनेवालोंको कमीशन भी २५) रु. सैंकड़ा देते हैं और बांटनेवालोंको ५) ही रुपयेमें खांसी बुखार दस्त हैजा सिरदर्द उदरविकार आदि रातदिन तकलीफ देनेवाले अनेक रोगोंकी १५ दवाइयें भेजते हैं जिससे १ माससें १०० या १५० रोगियोंको आराम करके यश तथा धर्मलाभ करसक्ते हैं। धनवान् धर्मात्मा भाइयोंको इधर ध्यान देना चाहिये और एकबार औषधियोंकी परीक्षा कर सदैवकेलिये लाभ उठाना चाहिये।

जैनी भाइयोंका हितैषी,

वैद्यराज कन्हैयालाल जैन,

ठि०—स्वदेशी पवित्र औषधालय, दाऊजीके मंदिरके पास.

पो० **कालबादेवी** (मुंबई.)

थोड़ीसी दवाइयां गुणसहित यहां लिखते हैं सेवनविधि दवाईके साथ भेजेंगे।

नारायण तैल.

ये वात हरनेवाला बहुत अच्छा तेल है शास्त्रमें इसकी तारीफ इसप्रकार है।

'नारायणं भजत रे जठरेण युक्ता
नारायणं भजत रे पवनेन युक्ताः।
नारायणं भजत रे भवभीतियुक्ता
नारायणात् परतरं नहि किंचिदस्ति॥'

अर्थात् पेटका रोगी नारायण चूर्ण खाओ, वायका रोगी नारायण तैल मलो, संसारसे डरा हुआ नारायणका भजन करो, इस ही लिये हमने इसे तय्यार किया है, बहुतसे इस ही को महानारायण भी कहते हैं। इससे लकवा, फालीज गठिया वगैरह वायुके सब रोग नष्ट होते हैं, ताकत और कांति बढती है. मूल्य ८ तोलेका १) रु.

उपदंशघ्नघृत अर्थात् गरमीकी दवा।

यह हर रोज तीन बार चार२ रत्ती खाया जाता है। इससे दसदिनमें उपदंश नष्ट होता है। घाव फुंसी सूख जाते हैं और न मुंह आता है न दस्त न कै आती है। एक रोगीके आराम होने लायक घृतका मूल्य १।)

सूजाककी दवा।

ये एक अर्क और वटी है, इसको खानेसे पीव खून लाल पेशाब आना बंद होकर जलन जाती रहती ह नये रोगको ७ दिनमें पुराने रोगको १ मासमें नष्ट करती है। मूल्य ७ दिनकी खुराकका १)

प्रमेहकी दवा।

शास्त्रमतानुसार नया प्रमेह नष्ट हो सक्ता है, पुराना नहीं। इसकी सैकड़ों दवा नोटिसोंमें बडी २ तारीफसे छपती हैं परन्तु आराम नहीं होता है। हमने इसकी जो दवा बनाई है सो बतौर नमूने ७ दिन खानेकी ॥) मात्रमें देते हैं यदि नया प्रमेह होगा तो एक महीनेमें आराम हो जायगा पुराने रोगियोंको निरन्तर सेवन करनेसे यह दवा रोगके बलको घटाकर शरीरको बलवान् करैगी।

नपुंसकताकी दवा।

इसकी दवाई अत्युत्तम है, रोगियोंको गुप्त विषय लिखना चाहिये और पत्रव्यवहार करके इलाज कराना चाहिये, आराम अवश्य हो जायगा।

मृगीकी दवा।

इसकी अत्युत्तम औषधि हमारे अनुभवमें कई बार आचुकी है। असमर्थोंको डांकखर्च मात्र लेकर भेजी जाती है, धनिकोंसे मूल्य एक १ मासकी औषधिका २) रु. लिया जाता है। इसके रोगीको अवश्य पत्रव्यवहार कर लाभ उठाना चाहिये।

आंखोंके लिये अत्युत्तम सुरमा।

इससे आंखोंकी ज्योति बढती है और आंखोंकी ताकत बढाकर वृद्धावस्थातक आंखको कमजोर नहीं होने देता है। मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) रु. मात्र।

बवासीरकी दवा।

इसके सेवनसे खूनी बवासीरका दौरा रुक जाता है और रोगीको बहुत आराम पहुंचता है ताकत बनी रहती है, नईको जड़से भी आराम हो जाता है। मूल्य ८ दिनकी दवा १) रु.

बादी बवासीरकी दवाई ८ दिनकी खुराकका ॥) यह भी नई होगी तो जा सक्ती है, पुरानेरोगकी ताकत इस दवाके सेवनसे बहुत घट जाती है।

शुद्धरीतिसे बनाया हुआ अर्क कपूर अर्थात्

हैजेकी पवित्र दवाई

अन्यान्य अर्क कपूरोंमें प्रायः शराब पड़ती है परन्तु हमने इसे नयी रीतिसे बनाया है इसका हैजेमें आध २ घंटे बाद चार २ बूंद सौंफके अर्कमें या लौंगके पानीमें देनेसे फीसदी ७५ मनुष्य बचते हैं ये जगत्प्रसिद्ध हैजेकी दवा है। और ग्रहणी, आम, शिरदर्दको भी आराम करता है मूल्य एक शीशी जिसमें दश रोगीको आराम हो १) है। जिनको कपूरका त्याग हो उनके लिये हैजानाशक वटी है जिसका मूल्य ॥।) है।

लवंगादि वटी।

'कासान्निहन्ति गुटिका घटिकाष्टकान्ते' अर्थात् इस गोलीसे ८ घड़ीमें खांसीको आराम पड़जाता है, ये अत्युत्तम तय्यार की गई है मूल्य=) तो. ला मुफत बांटने योग्य है।

प्रदरकी दवा।

प्रमेहकी तरह स्त्रियोंका पुराना प्रदर भी नहीं जाता है हमने लाल तथा सुफेद प्रदरकी दवा तय्यार की है नमूनेके वास्ते १ सप्ताहकी ॥) में देते हैं नया जाता रहता है। पुरानेका जोर दब जाता है।

सोमका तैल।

ये वातके दरदको १ फुरैरी लगा देनेसे खो देता है तत्काल फल दिखाता है मूल २) तोला।

शुद्ध रीतीसे बनाये हुए साफ क्षार.

ये क्षार वायुको नष्ट करते हैं उदरविकार हरते हैं अनुपानसे तिल्ली जिगर वायगोला खांसी वगैरहको खोते हैं भूख बढ़ाकर दस्त साफ करते हैं। मूल्य भी कम है। आकका क्षार ॥) तोला. मूलीका ॥) ढाकका ॥) चिरचटेका ।=) और भी बहुत तय्यार हैं।

कर्पूरतैल।

ये एक उत्तम तैल है शिरके दर्दको लगाते ही आराम करके तरावट करता है मूल्य १ शीशी ॥)

शीतज्वरारि रस।

ये तिजारी चौथय्या वगैरह जाड़ा देकर आनेवाले बुखारको एक ही दिनमें रोक देता है। बांटने लायक है और एक ही दिनमें तजुर्बा दिखाता है मूल्य १ शीशीका १) रु.

मालतीवसन्त।

जीर्णज्वर राजयक्ष्मा फेफडेके रोगोंकी जगत्प्रसिद्ध दवा है मूल्य २०) रु. तोला.

पर्पटीरसः।

मट्ठेके साथ सेवन करनेसे पुरानी संग्रहणी दस्तको बहुत आराम करता है मूल्य ३) तोला।

पाचनचूर्ण।

यह बहुत स्वादिष्ट है भोजन पचानेवाला, जायका साफ करनेवाला है मूल्य =) तो.

दांतोंका मंजन नं. १

हररोज मलनेसे दांत साफ, मुंह सुगंधित और साफ होता है एक मासके लायक १ डिब्बी।)

दांतका मंजन नं. २

यह बूढ़ोंके लायक है। दांतकी चीस खून पीपको बंदकर दांत दृढ़ करता है मू. १ डिब्बी ॥)

दादकी दवा।

इससे दाद जाता रहता है जलन वगैरह नहीं होती मूल्य।) डब्बी

श्री

जिन धर्माभिमानी भाइयोंके लिये

सशास्त्र तयार किया हुआ

वज्रांग भैरव ।

अर्थात्

बल, आरोग्य, पुष्टि और कान्ति बढ़ानेवाला पाक ।

—:o:—

कोकण प्रान्तकी अनेक वनस्पतियोंके अर्ककी पुटें देकर और स्वदेशी शक्करका मिश्रण करके यह वज्रांगभैरव तयार किया गया है । यह भैरव महौषधि होकर भी अत्यन्त स्वादिष्ट है । इसके खानेसे वात, पित्त और कफ इन त्रिदोषोंके मिश्रणसे होनेवाले सम्पूर्ण रोग जो कि, आगे लिखे गये हैं, नष्ट होकर मनुष्योंका कल्याण होता है ।

इसके सेवनसे नपुंसकत्व, स्वप्नजन्य व इतर धातुपात, उष्णता, इन्द्रियशैथिल्य, कडकी, गर्भसम्बन्धी उत्पन्न हुए विकार, मूत्रकृच्छ, धातुदौर्बल्य, स्त्रियोंका प्रदर, हृदयसम्बन्धी रोग, हाथपांव व नेत्रादिकोंमें दाहका होना, क्षय, पांडुरोग, (मुलांची खर), जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, बवासीर, वातरोग, निद्रानाश, पित्तविकार, प्रसूतिरोगादि अनेक विकार दूर होकर शरीर निरोगी, मजबूत और सतेज होता है । पाचनशक्ति व स्मरणशक्ति खूब बढ़कर तथा धातु व रक्तकी वृद्धि होकर स्तंभन होने लगता है । शक्तिको उत्पन्न करके उत्साहकी वृद्धि करता है । दूध व भारी अन्न अच्छी तरहसे पचने लगता है । इस औषधिका गुण एक सप्ताहके सेवनसे जान पड़ता है ।

यदि नेवाने रोग होगा, तो १४ दिवसकी खुराकवाले एक डिब्बेके सेवनसे गुण मालूम होने लगेगा, परन्तु यदि पुराना रोग होगा तो ३५ रोजके सेवनसे फायदा होगा । चौदा दिनके खाने योग्य एक डिब्बेका दो रुपया । एकद्वा साढ़ेचार रुपयाका भैरव लेनेवालेको ३५ दिनके खानेयोग्य डिब्बा दिया जावेगा । अर्थात् ५) का भैरव ४॥) में दिया जावेगा । जिन्हें नमूनेके लिये मंगाना हो, वे १।) का म० आ० करके भेजदें। चौदह दिनका आधा डब्बा पेड पोष्ट करके भेज दिया जावेगा । पत्र पहुंचते ही व्ही० पी० के द्वारा भैरव भेजा जावेगा । डांक व पेकिंगका खर्च ग्राहकके जिम्मे होगा । चिट्ठी स्पष्ट बालबोध अक्षरोंमें आना चाहिये। अनुपानपत्र डिब्बेके साथ भेजा जावेगा ।

मिलनेका पता—

एल. के. आर,

श्रीमदर्हत्प्रासादिक कम्पनी,

पो० निपाणी, जिला बेलगांव.

एजंटोंकी जरूरत ।

यदि विना पूंजी अधिक लाभ उठाना चाहो, तो हमारी स्याही व डायरी आदिके लिये एजेंट होनेमें शीघ्रता कीजिये ।

पता—आर. एल. जैन.

स्वदेशोपकारक कार्यालय—खंडवा.

विराट उपहार।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ।

विनामूल्य जैनमित्र।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया कार्तिक सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे।

१ **स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा**–वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता।

२ **परीक्षामुख**–यह जैनियोंका सर्व साधारणमें प्रसिद्ध संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य इसका ॥) है।

३ **पंचाध्यायी**—यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बड़े परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढ़नेवाले विद्वान् कहते हैं, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढ़ा, उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ **इन्ट्रोडक्शन टू जैनिज्म** Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० ष्टे, एम. ए. ने बड़ी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ **जैनधर्मपर व्याख्यान**–मि० आपटे, बी. ए. का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमें मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है अथवा सवातीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढ़नेको मिलेगा। अर्थात् आमके आम और गुठलीके दाम मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढ़ें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढ़नेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पड़ेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डाक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढ़ें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढ़नेवालोंकी संख्या बढ़े, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है। इसमें हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है। उपहारके सब ग्रन्थ तयार हैं।

जैनजातिका हितैषी—

नाथारंगजी गांधी,

शोलापुर.

संवाददाताओंकी जरूरत।

हम चाहते हैं कि, जैनमित्रमें चारों ओरके ताजे समाचार छापे जाया करें, जिनसे जैनधर्मका कुछ सम्बन्ध हो, अथवा जो सर्वसाधारणको कुछ लाभ पहुंचाया करें। अभीतक स्थान न रहनेसे ऐसे समाचारोंपर ध्यान नहीं दिया जाता था, परन्तु अब इसपर विशेष ध्यान दिया जावेगा। संवाददाताओंसे प्रार्थना है कि वे समयपर समाचार भेजा करें।

सम्पादक जैनमित्र–मोरेना (ग्वालियर).

Registered No. B. 288.

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम्।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्॥
अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। आश्विन शुक्ला १ श्रीवीर सं० २४३२। अं० २३

विषयानुक्रमणिका।

चिट्ठी पत्री भेजनेका पता—
मैनेजर, जैनमित्र—मोरेना (ग्वालियर)।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई।

श्रीवीतरागाय नमः

आश्विन शुक्ला १
श्रीवीर संवत्
२४३२।

वर्ष ७.
अंक-
२३।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते॥ १॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

दशहरा बिलकुल निकट आ गया है। पाठकोंको विदित है कि, इस तिथिको अनेक देशीराज्योंमें भैंसे बकरे आदि निरपराधी जीवोंका हनन करके घोर हत्याकांड उपस्थित किया जाता है। न जाने कैसे समयमें और किसके द्वारा इस अमानुषी कर्मका प्रचार हुआ है कि, इस सभ्यताके समयमें भी लोगोंके हृदयमें उससे घृणा उत्पन्न नहीं होती। मूर्ख लोग धर्मके नाममें अब भी इस पैशाचिक कर्मको करते हुए लज्जित नहीं होते। गतवर्षोंमें इस हत्याकांडको निर्मूल करनेकेलिये बम्बई सभा तथा अन्य अहिंसाधर्मी सज्जनोंके द्वारा प्रयत्न हुए थे, और दक्षिण तथा काठियावाडके अनेक राज्योंमें यह हिंसककर्म बन्द हो गया था। परन्तु इस वर्ष कहींसे भी इस विषयके प्रयत्न करनेवालोंके समाचार नहीं मिले हैं। आजकलका समय अहिंसाधर्मके प्रचारके लिये बहुत कुछ अनुकूल है। यदि अच्छे वक्ता उपदेशक और प्रेरणा करनेवाले हों, तो लोगोंके हृदयपर अहिंसातत्त्वका अच्छा प्रभाव पड सकता है, और यह दशहरेका हतनकार्य सर्वथा सर्वस्थानोंमें बन्द हो सकता है। परन्तु दुःख है कि, हमारे अहिंसाधर्मोपासक समाजका इस ओर ध्यान नहीं है।

उपदेशकोंके द्वारा कितना कार्य होता है, इसके लिये हमको क्रिश्चियन लोगोंका उदाहरण बस है। हमारे भारतवर्षके छोटेसे छोटे धर्मके तात्त्विक विचारोंकी जो बराबरी नहीं कर सकता, बल्कि कहना चाहिये कि, जिस धर्ममें तत्त्वविचारोंका अंश भी नहीं है, ऐसे तुच्छातितुच्छ क्रिश्चियन धर्मका आज संसारमें जो डंका बज रहा है, इसका कारण केवल उनके उपदेशक अर्थात् पादरी लोग हैं। "संडेस्ट्रांड" नामक मासिकपत्रके द्वारा विदित हुआ है कि, पांच करोड़

मनुष्योंको क्रिश्चियन बनानेके लिये १९४६० पादरी नियत हैं, जिनका वार्षिक खर्च पांच लाख रुपये है। परन्तु क्रिश्चियन धर्मोपासकोंको इसमें भी संतोष नहीं है। वे अब इस प्रयत्नमें लगे हुए हैं कि, यह संख्या बढ़ाकर पैंतीस गुणी की जावे अर्थात् नौ लाख पादरी इस कार्यकेलिये नियत किये जावें! अब कहिये, क्रिश्चियनधर्मका प्रसार क्यों नहीं हो?

क्रिश्चियन बौद्धादिकोंको छोड़ दीजिये। आज हमारे भारतवर्षके वैष्णव, आर्यसमाज, ब्रह्मसमाजादि सब ही धर्मवालोंका ध्यान उपदेशकोंकी ओर आकर्षित हुआ है। प्रायः सब ही धर्मवालोंके वक्ता और उपदेशकोंको हम दौरा करते हुए और धार्मिक आन्दोलन करते हुए देखते हैं। जिनके यहां उपदेशक नहीं हैं, उनके यहां आचार्य, साधु अथवा संन्यासी-सम्प्रदाय हैं, जिनसे कि अनायास ही उपदेश मिला करता है, और लोगोंमें धार्मिक जागृति बनी रहती है। परन्तु हमारे सम्प्रदायमें न तो उपदेशक हैं, और न साधु आचार्यादि धर्माधिकारी हैं, जो कुछ उपदेशादि दिया करें। कुछ वर्षों पहले लोगोंका ध्यान उपदेशकोंकी ओर हुआ था, और उससे कुछ जागृति भी हुई थी। परन्तु अब उसकी सफाई है। महासभामें नाममात्रको एक दो उपदेशक रहते हैं, जो उपदेशकभंडारके अस्तित्वको रक्खे हुए हैं। बम्बई प्रान्तिकसभा और पंजाब प्रान्तिकसभा इस विषयमें सर्वथा शान्त हैं। न जाने क्या भवितव्य है।

महासभामें अथवा अन्य प्रान्तिकसभाओंमें उपदेशकोंकी संख्या शायद इसलिये नहीं बढ़ाई जाती है कि, उनके उपदेशकभंडारोंमें रुपयोंकी त्रुटि है। परन्तु यह विचार ठीक नहीं है। उपदेशकोंकी संख्याके बढ़ाये विना न तो सभाकी ख्याति हो सकती है और न लोगोंपर उस सभाका कुछ असर हो सकता है। सभाओंकेलिये एक उपदेशक ही ऐसा द्वार है, जिससे कि उसके सम्पूर्ण खाते रुपयोंसे तर रह सकते हैं। उपदेशकोंके बढ़ानेके लिये रुपयोंकी अवश्यकता नहीं है, उनके द्वारा उनके खर्चसे कई गुना द्रव्य एकत्र हो सकता है। इसलिये हमको चाहिये कि, अपने समाजको सचेत करनेवाले उपदेशकोंकी संख्या बढ़ावें और सभ्य संसारमें अपने धर्मके अपूर्व रहस्योंको प्रगट करके अहिंसाका डंका बजावें। यदि हमारे धर्मात्माओंकी दृष्टि उपदेशकभंडारकी ओर अब भी नहीं जावेगी, तो नहीं कह सकते कि, इस अवनतिप्राय जैनधर्मकी जो ऋषिमुनियोंके उपदेशसे चिरविरही हो रहा है, क्या दशा होगी।

वर्हाड़ और मध्यप्रान्तिक जैनसभाकी ओरसे डेढ़वर्ष हुए **श्रीजैनभाग्योदय** मासिकपत्रका उदय होता है। इसके सम्पादक श्रीयुत जयकुमार देवीदास चवरे, बी. ए. बी. एल. हैं। जिस समय यह पत्र निकला था, हमने इसके मनोरम नाम और विद्वान् ग्रेज्युएट सम्पादकपर रीझकर लिखा था कि, यह पत्र अच्छा होगा। परन्तु आज दुःखके साथ लिखना

पड़ता है कि, इससे मासिकपत्रोंकी एक संख्या बढ़नेके सिवाय जैनियोंका कुछ भी भाग्योदय नहीं हुआ। इस समय हमारे साम्हने इसका भाद्रपद शुक्लाका ६ठा अंक है। इसमें वैशाखमासतकके समाचार छपे हुए हैं। एक भी लेख अथवा नोट ऐसा नहीं है, जिसके पढ़नेमें कुछ चित्त लगै। अंकके १८ पेज बड़े २ फूल और लाइनें डालकर बड़ी कठिनाईसे पूरे किये गये हैं। चवरे महाशय हमारे मित्र हैं। हम उन्हें विद्वान् और अच्छे लेखक समझते हैं। इसलिये मित्रभावसे उन्हें सूचना कर देना हमारा कर्तव्य है कि, ऐसे निकम्मे पत्रके टाइटलपर वे अपना नाम लिखकर हँसी न करावें। यदि उन्हें अपना विद्वान् नाम पत्रपर रखना है, तो अपनी योग्यताके अनुसार सच्चे हृदयसे उसका सम्पादन करके जातिको कुछ लाभ पहुंचावें, और पत्रका जैनभाग्योदय नाम सार्थक करें। महीनेभरमें दो फार्मके एक पत्रका सम्पादन करना कोई बड़ी बात नहीं है।

हमारा सहयोगी जैनगजटभी बड़ा समयसूचक है। प्रत्येक मौकेको वह बहुत पहलेसे चेत लेता है। गतवर्ष आसोजके महिनेमें एक लेख निकला था "**श्री दशलाक्षणिक महापर्व आ गया**"। इस वर्ष एक सितम्बर (आसोज वदी) के अंकमें एक दो नोटिस भी इसी प्रकारके निकले हैं। दशलक्षणके दिनोंमें अनेक स्थानोंमें महाविद्यालयके लिये गोलक रक्खी जाती है, और उससे महाविद्यालयभंडारमें थोड़ा बहुत रुपया आ जाता है। इसी गोलकके लिये जैनगजटमें एक विज्ञापन मुद्रित हुआ है कि, सर्व भाइयोंको अपने २ यहां गोलक रखनी चाहिये। सर्व भाई स्मरण रक्खें चाहे नहीं, पर सहयोगीने तो अगामी भाद्रपदके लिये सूचना दे दी। आगे आसोजमें मौकेसे फिर स्मरण कर लेगा।

हमारे बहुतसे पाठक जानते हैं कि, अजमेरमें एक जैनविद्यालयभंडार है, जो चैत सुदी ३ सं० १९४८ में नयेनगरकी प्रतिष्ठापर स्थापित हुआ था। इसके अध्यक्ष, जयपुरके गण्यमान्य चान्दमलजी सोगाणी मुन्तजिम सायरात और कोषाध्यक्ष लाला छोगालालजी अजमेरा हैं। कोषाध्यक्ष महाशयने कृपाकरके आज १४ वर्षके बाद विद्यालयका हिसाब छपा करके हमारे पास भेजा है। ५०९९।=)॥ इस भंडारमें मूल्य द्रव्य जमा हुआ है और २०३६॥=) अब तक व्याजका आया है। इसमेंसे १५१२—)॥ विद्यार्थियोंको पारितोषिक मासिकवजीफा तथा खैरीजमें खर्च हुआ है। शेष ५९८२=)। रोकड़ बाकी निकलता है। जैनमित्रकी पिछली वर्षोंमें इसके विषयमें बहुत कुछ लिखा जा चुका है, परन्तु फल कुछ भी नहीं हुआ है। अब भी फल पानेकी आशा नहीं है। तो भी कर्तव्यके अनुरोधसे लिखे विना जी नहीं मानता। इस भंडारमें सम्पूर्ण जैनी भाइयोंका द्रव्य एकत्र हुआ है, इसलिये उसपर सबका समान अधिकार है। परन्तु अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष महाशय सम्पूर्ण जैनियोंके स्वत्वपर लात मारकर यह आग्रह किये बैठे हैं कि, यदि अजमेरमें विद्यालय जारी

किया जावे, तो यह रुपया हम उसमें लगा सकते हैं, अन्यत्र नहीं। इसी आग्रहमें विद्यालयका रुपया आज १४ वर्षसे अलग ही पड़ा है। अस्तु. ऐसा ही सही। विद्यालयके द्रव्यपर वे ही अपना अधिकार रक्खें। परन्तु कृपाकरके जो कुछ व्याजकी आय होती है, वही स्याद्वाद-पाठशाला काशी अथवा महाविद्यालयमें प्रतिवर्ष अर्पण कर दिया करें। क्योंकि दोनों ही जगह सहायताकी बड़ी भारी आवश्यकता है। जो पारितोषिक अथवा मासिक अनियमितरूपसे व्यय होता है, वह इस प्रकारसे व्यय किया जावेगा, तो जैनी भाई जिनका वह रुपया है, यही समझकर संतोष कर लेंगे कि, हमारा रुपया एक स्थानमें जमा रहकर एक सर्वदेशीय कार्यमें लग रहा है। हम आशा करते हैं कि, लाला चान्दमलजी साहब हमारी इन थोड़ीसी पंक्तियोंपर दृष्टिपात करेंगे।

शोलापुरकी जैनपाठशाला उत्तमपद्धतिसे चल रही है। इसके व्यवस्थापक मान्यवर शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीने पाठशालाकी २२ वें वर्षकी रिपोर्ट हमारे पास भेजी है। इससे प्रगट होता है कि, गतवर्ष पाठशालाके ध्रुव फंडमें दश हजार रुपये थे। उनमें इस वर्ष ३५०) की वृद्धि हुई है। दूसरे खातोंमें ३२२३॥।-) जमा हैं। व्याजसे तथा लोगोंकी सहायतासे इसवर्ष १०६१॥।) एकत्र हुए हैं, जिसमेंसे ७११॥) खर्च हुए हैं। इस पाठशालाको सरकारी शिक्षाविभागकी ओरसे ५०) रु० वार्षिक सहायता मिलती है और सरकारी डिपुटीइन्स्पेक्टर इसका निरीक्षण भी करते हैं। इस वर्षकी परीक्षामें ३२ विद्यार्थियोंमेंसे २० उत्तीर्ण हुए हैं। महासभाके परीक्षालयकी ओरसे इस वर्ष परीक्षा नहीं ली गई इसलिये व्यवस्थापकमहाशयने द्रव्यसंग्रह और तत्त्वार्थसूत्रमें स्वयं परीक्षा ली थी। जिसमें ७ मेंसे ५ विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए थे। पाठशालामें संस्कृतके साथ साथ अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है। एक विद्यार्थी वैद्यकशास्त्र माधवनिदान और वाग्भटका अभ्यास करता है। इस प्रकार पाठशालाकी व्यवस्था सब प्रकारसे उत्तम कही जा सकती है।

अन्यत्र आराकी एक चिट्ठी छापी गई है। उसमे आरा जैसे धनाढ्य जैनियोंके मुख्य स्थानके धर्मायतनों और धर्मद्रव्योंकी दुर्दशा जानकर हमको अतिशय खेद हुआ है। वहांके प्रतिष्ठित रईस और विद्वान् बाबू देवकुमारादि सज्जनोंको चाहिये कि, प्रयत्न करके वहां अवश्य ही एक प्रबन्धकारिणी कमेटी स्थापित करें, जो वहांके सम्पूर्ण धर्मकार्योंकी देखरेख रक्खै।

खजराहेके प्राचीन जैनमन्दिर.

(२)

(लेखक—नाथूराम प्रेमी, देवरी निवासी)

प्राचीनतामें दूसरा नंबर घंटाई मंदिरका है। इस मंदिरके खंभोंपर घंटेकी संकलोंका आकार उकीरा गया है, इसीसे इसका नाम घंटाई पड़ गया है। वर्तमानमें खंभोंके सिवाय इस मंदिरके अन्य सब भाग कालके प्रवाहमें

१ शा. सुखलाल केवलदासके गुजराती लेखकी छाया।

पड़कर धराशायी हो गये हैं, और दिन पर दिन होते ही जाते हैं। जनरल कनिंगहामने जिस समय पहले पहल इन मन्दिरोंका अवलोकन किया था, उस समय उस मंदिरके पास ही उन्हें एक बौद्धधर्मसम्बन्धी मूर्ति मिली थी, जिससे उन्होंने उक्त मंदिरको बौद्धोंका विहार अथवा स्थान मान लिया था। परन्तु जब जनरल कनिंगहामनें इस मंदिरको दूसरी वार देखा, और विशेष अनुसंधान किया, तो मंदिरके निकट जैनियोंकी अनेक मूर्तियां उन्हें मिली। जिनमेंसे ग्यारह मूर्तियोंका निरीक्षण करनेसे घंटाई मंदिरका मूल निर्मापक जैनी था, इसका निर्णय अच्छी तरहसे हो गया। एक अंग्रेज लेखक कहता है कि;—

Moreover we have many examples of decidely Jaina structures so closely resembling the Ghantai as to leave no doubt that it, too, was built by the Jains. For instance, at Gyaraspore near Bhilsa, there are similar groups or columns known as Ath-Kambha, Charkambha Hindola etc. They are more modern than the Ghantai. Another example is to be found at Eran on south bank of Bina river. The temples at that place date from the time of Samudra Gupt and Budha Gupt 200 & 300 A. D respectively."

General Cunningham C. S., I. C. E. in his report writes—" The following account of these brief records will be sufficient to show that none of the standing temples are of older date than the great Jaina temple of Ghantai."

अर्थात् "इसके सिवाय जैनियोंके प्रामाणिक मन्दिरोंके हमें बहुतसे उदाहरण मिलते हैं, जो घंटाईके मन्दिरसे घनिष्ट समानता रखते हैं। इससे हमें पूर्ण निश्चय होता है कि, यह भी जैनियोंका बनाया हुआ है। ग्यारसपुरमें जो कि भेलसाके समीप है, इसी प्रकारके मन्दिरोंका समूह अथवा श्रेणी पाई जाती है। जो कि आठखम्भा, चारखम्भा, हिन्डोला आदि नामोंसे प्रख्यात है। वे घंटाईके मन्दिरसे बहुतकुछ अर्वाचीन मालूम होते हैं। दूसरा दृष्टान्त बीना नदीके दक्षिण तटपर ईरनमें दृष्टिगत होता है। उस स्थानके जिनायतन समुद्रगुप्त और बुधगुप्तके समयवर्ती अर्थात् २०० और ३०० ई० के बने हुए हैं।

जनरल कनिंगहाम सी. एस. आइ. सी. ई. अपनी रिपोर्टमें लिखते हैं कि, "इन संक्षिप्त उल्लेखोंका निम्नलिखित वर्णन ही इस बातको दर्शानेमें बस होगा कि, घंटाईके बड़े जैनमन्दिरसे वर्तमानके मन्दिरोंमें कोई भी मन्दिर अधिक प्राचीन समयका नहीं है।"

मि० फर्ग्युसनका भी यही मत था कि, घंटाई मन्दिर जैनियोंका होना चाहिये।

इन सम्पूर्ण मंदिरोंके आसपास मैदानमें अनेक प्रतिमा पड़ी हुई हैं, जिनकी संख्या अनुमान १०००के होगी। इन मूर्तियोंका बहुभाग खंडित है, और जहांतक जाना जाता है, इन मूर्तियोंकी सार संभाल करनेवाला भी वहां कोई नहीं है। इन मूर्तियोंमें एक शान्तिनाथकी मूर्ति है, जिसकी उंचाई जनरल

कनिंगहामने १४ फीट मापी थी। इस प्रतिमाके नीचे निम्नलिखित लेख है;—

"संवत् १०८९ श्रीमन्त आचार्य ....पुत्रश्री ठाकुर....श्री....देवधर्म........ सुत श्री....सीवी....श्रीचन्द्रदेवह....श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमाकारि।

शान्तिनाथकी मूर्तिको यहांके लोग शेतनाथकी मूर्ति कहते हैं। दूसरी एक प्रतिमा संभवनाथकी है, जिसके लेखका अर्थ जनरल कनिंगहाम इस प्रकार करते हैं;—

संवत् १२१५ माघ वदी ५ श्रीमन्मदनदेव वर्माके प्रतापी राज्यमें श्रेष्ठी देदुने अपने पुत्र पाटीलाके साथ यह मूर्ति स्थापित की, पश्चात् उसके पुत्र महगजा, महचन्द्र, शनिचन्द्र, उदयचन्द्र तथाजीतचन्द्रने इस मूर्तिकी पूजा की।

ऐसे २ वहांपर छोटे बड़े २५ लेख मिलते हैं, जिनसे कि, इतिहासका बहुत कुछ परिचय मिलता है।

यहांपर यह कह देना भी उचित होगा कि, अन्यायी और धर्मांध हुए मुसलमान राजाओंने खजराहेके मंदिरोंको नष्टभ्रष्ट करनेमें कुछ भी बाकी नहीं रक्खा है, और जहां तक उनके हाथ और हथौड़े पहुंच सके हैं, उतनी उंचाई तकका शिल्पकार्य उन्होंने नष्ट कर दिया है। और इसी प्रकार सैकड़ों मूर्तियोंको उनके निर्दयी हाथोंने सदाके लिये बेडौल कर डाला है।

हर्षकी बात है कि, गवर्णमेंटके अनुमोदनसे छतरपुर दरबारकी ओरसे यहांके मन्दिरोंकी मरम्मतका काम आरंभ हो गया है, और पन्ना दरबारकी ओरसे एक अंग्रेज इंजीनियर देखरेखके लिये नियुक्त किया गया है। गवर्णमेंट और दोनों दरबारोंके हम इस विषयमें अतिशय कृतज्ञ हैं।

खजराहेके मन्दिर हमारे (दिगम्बरजैनियोंके) हैं, और उनका संसारमें जब तक अस्तित्व है, हमारे धर्मका और हमारे पूर्व पुरुषाओंका गौरव संसारमें अटल है। परन्तु बड़े दुःखकी बात है कि, हम लोग यह देखते हुए भी लज्जित नहीं होते कि, हमारे पुरुषाओंकी ऐसी श्रेष्ठ कृतियोंकी कैसी दुर्दशा हो रही है। मंदिरोंका जीर्णोद्धार कराना तो दूर रहा, हम लोग इतना भी नहीं कर सकते कि, वहां पड़ी हुई सैकड़ों प्रतिमाओंको कुछ ठिकानेसे स्थापित कर दें। जहां तहां उनका अनादर हो रहा है, उनकी रक्षा करनेवाला वहां कोई नहीं है।

लालच।

एक नाई एक पेड़के नीचे होके कहीं को जाता था। इतनेमें कहींसे आवाज आई, कि "तू सोनेसे भरे हुए सात घड़े लेगा?" नाईने चारों तरफ देखा, कोई नहीं दिखलाई दिया, परन्तु घड़ोंका नाम सुनके उसके मनमें लालच उपजी और उसने जोरसे कहा "हां सोनेके सात घड़े मैं लूंगा" इतनेमें दूसरी आवाज आई कि तू अपने घर जा, मैंने सात सोनेके घड़े तेरे घर पहुंचा दिये हैं। नाई यह देखनेको कि यह बात कहांतक सच है दौड़ता हुआ अपने घर पहुंचा और उसे यह देखके आश्चर्य हुआ कि वे सातों घड़े साम्हने रक्खे हैं। उसने जब उनको खोलके देखा, तो छह घड़े सोनेसे भरे थे

और सातवां घड़ा आधा भरा हुआ था । इस घड़ेको देख नाईके मनमें चिन्ता उपजी कि, सातवां घड़ा जबतक न भरेगा तबतक मुझे पूरा सुख न मिलेगा । इस लिये उसने अपने सब सोने और चांदीके जेवरको बेचके अशरफियां मोल लीं और उनको उस घड़ेमें डाला, परन्तु घड़ा न भरा । फिर उसने सब खर्च घटा दिये और भूखा रहकर रुपया इकट्ठा किया और उस रुपयेसे अशरफियां मोल लेके घड़ेमें डालीं । वह घड़ा फिर भी न भरा । वह नाई राजाकी नौकरी करता था और राजा उससे खुश था । उसने राजासे विनती करके कहा कि मेरा खर्च नहीं चलता है, तो राजाने उसकी तनख्वाह दूनी कर दी । नाईने वह भी सब जमा की और अशरफियां लेकर फिर उस घड़ेमें डालीं । घड़ा फिर भी न भरा और ज्योंका त्यों रहा । इसके पीछे नाई घर घर भीख मांगने लगा और जो कुछ उसको काम करनेसे और भीख मांगनेसे मिलता था, सब उसी घड़ेमें डालता जाता था । परन्तु घड़ा फिर भी वैसा का वैसा ही रहता था । एक दिन राजाने उस नाईसे कहा कि, तू इतना दुःखी और उदास क्यों हो गया है ? जबतक तेरी तनख्वाह आधी थी, तू खुश और तन्दुरुस्त रहता था, परन्तु जबसे तेरी तनख्वाह बढ़ाई गई है, तू दुःखी होता जाता है । कहीं तुझे सात घड़े तो नहीं मिल गये ? नाई इस बातको सुनके चकित हो गया और बोला कि महाराज! आपसे किसने कहा ? राजा बोला, तू नहीं जानता है ? ये लक्षण उसीके होते हैं, जिसको यक्ष अपने सात घड़े देता है । उस यक्षने मुझसे भी उन सात घड़ोंको लेनेके लिये कहा था । मैंने उससे यही पूछा कि, घड़े खर्च करनेके लिये हैं कि जमा करनेके लिये ? ज्योंही यक्षने यह सुना, विना कुछ बोले वहांसे भाग गया । तू यह नहीं जानता कि कोई उस धनको खर्च नहीं कर सकता है, उससे केवल और धनके समेटनेकी इच्छा बढ़ती है । अभी जा और उन घड़ोंको फेर दे ।

लालच बुरी बला है । जिन्होंने रुपया कमाके सद्व्यय करना नहीं सीखा, उनकी यही दशा होती है; इससे तो रुपयेका न होना अच्छा है निष्फल चिन्ता तो नहीं रहती ।

"दृष्टान्तसमुच्चय ।"

स्वदेशवस्तुप्रचार ।

देशोन्नति किस प्रकार होवे,
किया गया जब यह सुविचार ।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥
अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी.
आस्ट्रेलिया और जपान ।
जिनकी उन्नतिको इस जगमें,
छोटे बड़े सभी रहे मान ।
कैसे हुई तरक्की उनकी,
जब इस ओर लगाया ध्यान ।
हुआ उन्हें मालूम साफ यह,
जिन्हें जरा भी है कुछ ज्ञान ॥
देशी चीजें लाये काममें,
उन्हीं का सबने किया व्यापार ।

निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ १ ॥

ऐ भारतके सुपात्र पुत्रो !,
जरा तो हिम्मत दिखलाओ।
भारतकी इस हीन दशा पर,
कुछ तो आप तरस खाओ ॥
बहुत दिनों गफलतमें सोये,
अब तो होशमें आ जाओ।
किश्ती बीचों बीच डूब रहि,
इसे किनारे पहुंचाओ ॥
देशभक्तिका सहारा देकर,
शीघ्र लगाओ परली पार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ २ ॥

अगर मुल्कसे कुछ भी हित है,
अगर पुरुष कहलाना है।
अगर नीमवहशीका धब्बा,
अपने सिरसे हटाना है।
अगर बुजुर्गोंकी शोहरतको,
पहिलीसी चमकाना है।
राम लक्ष्मण, हरिश्चन्द्र सी,
इज्जत फिर भी पाना है ॥
तो ऐस बनो देशभक्त जो,
देख चकित होवे संसार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ३ ॥

देशी चीजें माखन, मिश्री,
दधि, घी, मनसे टार दिये।
कडुवातेल फतीलसाज औ,
देशी रंग बिसार दिये ॥
देशी कपडे, खाने, पीने,
गैर देश पर वार दिये।
खांड दवाई तककी खातिर,
बाहर हाथ पसार दिये ॥
एक चीज हो तो बतलाऊं,
सबका कैसे होय शुमार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ४ ॥

सिगरेट, चुरट, तेल मिट्टीका,
शुगर स्पिरिट, वाईन, शराब।
सोडावाटर, जिंजर, लेमोनेड,
बिस्कुट, बीफ औ मटन, कबाब।
जिनके इस्तेमालमे होता,
मुल्क हमारा बहुत खराब।
फिर भी हम उनको ही लें,
औ बने फिरैं बे मुल्क नबाब।
अकिलमंद समझैं हैं मुल्कके,
लिये बुरे हैं ये आसार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ५ ॥

देशहितैषी सज्जन पुरुषो !,
अब तो गफलतको छोडो।
अय्याशी, सुस्ती, खुदगरजी,
पक्षपातसे मुह मोड़ो ॥
जो भट्टीरस्में पड़ गइ हैं,
उनको मिल करके तोड़ो।
जो आपसमें नफाक पड़ रहे,
उन्हें छोड़ रिश्ता जोड़ो ॥
करके मेल जोल आपसमें,
अपने देशका करो सुधार।

निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ६ ॥

अगर मुल्कसे प्लेग वगैरह,
रोग भगाना चहते हो।
जिनसे सुख पहुंचे ऐसे,
सामान बनाना चहते हो ॥
मुफलिस और तंगदस्तोंको,
सुखी बनाना चहते हो।
बुरे दुष्ट रस्तेको छोड़,
सन्मार्ग चलाना चहते हो ॥
तो कर लो यह अहद देशकी,
चीज खरीदेंगे हर बार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ७ ॥

देखिये कौन २ करते हैं,
भारतकी दुर्दशा पै ध्यान।
देखिये कौन २ सुनते हैं,
मेरी अर्जको धरके कान ॥
देखिये कौन २ करते हैं,
देश पै तन, मन, धन कुर्बान।
देखिये कौन २ निकलै हैं,
जैसे हैं अहले जापान ॥
जिन्होंने अपने देश पै हीरा,
लाल सभी कुछ दिया है वार।
निश्चय हुआ बड़ा जरिया है,
देशी चीजोंका परचार ॥ ८ ॥

देशका सेवक;—
हीरालाल गुप्त, रुड़की।

पुस्तकसमालोचन।

स्वदेशीवस्तुप्रचार नं० १—रुड़कीके बाबू हीरालालजी गुप्त लिखित। मूल्य दो आना सौका १०) रु०। इस पुस्तकमें स्वदेशीवस्तुप्रचारकी आवश्यकता बतलाकर देशी और विलायती शक्करका मुकाबिला किया गया है। और यह उपदेश किया गया है कि, धर्म, धन और शरीर नष्ट करनेवाली विदेशी खांडका परित्याग करके स्वदेशी और पवित्र पुष्टकर शक्करका वर्ताव करना चाहिये। बड़े परिश्रम और युक्तिपूर्णतासे यह पुस्तक लिखी गई है। प्रत्येक धर्मात्माको इसकी सौ सौ दो सौ प्रतियां खरीदकर विनामूल्य वितरण करना चाहिये। बाबू हीरालालजीके अनुरोधसे उक्त पुस्तकमेंकी एक लावनी इस अंकमें मुद्रित की गई है।

दशलक्षणधर्मका स्वरूप—अमृतसरके रईस लाला उम्मेदसिंह मुसद्दीलालजी जिनवाणीके बड़े भक्त हैं। आप प्रतिवर्ष हजार पांचसौ रुपयेकी धर्मपुस्तकें विनामूल्य वितरण करते हैं। पुस्तकें प्रायः भोले भाइयोंके लिये सरल उपदेशमय होती हैं। आप शायद स्थानकवासी जैनी हैं, परन्तु प्रायः आप सब ही जैनियोंमें सर्वमान्य पुस्तकें वितरण करते हैं। यह पुस्तक आपहीके द्वारा वितरण होती है। इसमें दशलक्षण धर्मका संक्षिप्तस्वरूप और पं० द्यानतरायजी कृत दशलक्षणकी जयमाल है। जिन भाइयोंको आवश्यक हो, उक्त महाशयसे मंगा लेवें। लाला सा० यदि ऐसी छोटी २ पुस्तकोंके बदले कोई प्राचीन सामान्यउपदेशयुक्त आर्षग्रन्थोंका सरलभाषा

कराके उद्धार किया करें, तो बहुत अच्छा हो।

बालबोधव्याकरण दूसरा भाग—पं० पन्नालालजी बाकलीवाल बम्बई लिखित । मूल्य छह आना । इसका प्रथम भाग पहले मुद्रित हो चुका है; यह दूसरा भाग है । जैन परीक्षालयके पठनक्रममें यह पुस्तक स्वीकार हो चुकी है । हिन्दी पढ़नेवाले विद्यार्थी इसको पढ़कर संस्कृतमें व्युत्पत्ति प्राप्त कर सकते हैं । कर्त्ता महाशयने बड़े अच्छे क्रमसे इस पुस्तकका संग्रह किया है ।

मिलनेका पता—

शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी—बम्बई ।

श्रीमहावीरचरित्र—रचयिता, पोपटलाल केवलचंद शाह—राजकोट। मूल्य २॥ आना । यह पुस्तक गुजराती भाषामें हैं । श्वेताम्बर-सम्प्रदायके अनुसार इसमें भगवान् महावीरका चरित्र लिखा गया है । इसके दूसरे सर्गमें वही एक गर्भसे दूसरे गर्भमें महावीरको ले जानेवाली बात लिखी है ।

दिवसानुष्ठान ।

(श्रीमत्सोमदेवसूरिकृत नीतिवाक्यामृतके एक समुद्देशका भावार्थ ।)

ब्राह्ममुहूर्तमें अर्थात् दो घड़ी रात रहे उठकर आज क्या क्या कार्य करना है स्वस्थचित्त होकर उनका विचार करना चाहिये । क्योंकि उस समय सुखनिद्रा लेनेके कारण मन प्रसन्न रहता है, और उसमें सम्पूर्ण बुद्धियां यथार्थ रूपसे अपना फल देती हैं ।

सूर्योदयके समय अथवा सूर्यास्तके समय निद्रा लेनेसे धर्मकार्योंके करनेका समय नष्ट हो जाता है, इसलिये सूर्योदयके पहले उठना चाहिये और संध्यासे ही सो नहीं जाना चाहिये। ये दोनों ही समय सन्ध्यावन्दनादि धर्मकार्योंके करनेके हैं ।

प्रातःकाल शय्यासे उठते ही घृतमें अथवा दर्पणमें (शीसेमें) अपना मुख देखना चाहिये । उस समय नपुंसक (हीजड़े) लंगड़े, अंधे आदि अपांगोंका और रजस्वला स्त्रीका मुख नहीं देखना चाहिये ।

दोनों संध्याओंको अर्थात् प्रातःकाल और संध्याको अपना मुख धोकर व हाथ पैर धोकर जो जाप करता है, उसपर उसके इष्टदेवता अनुग्रह करते हैं ।

जो प्रतिदिन दन्तधावन (दांतवण) नहीं करता है, उसके मुखकी शुद्धि नहीं होती, उसके मुखसे दुर्गन्ध निकला करती है ।

कोई आवश्यकीय कार्य हो, तो भी शौच, मुखमार्जन, स्नानादि शरीररक्षाके कार्योंको नहीं छोड़ना चाहिये । शरीररक्षासे अधिक आवश्यकीय कोई कृत्य नहीं है ।

"समुद्रकी लहरोंके बन्द होनेपर स्नान करूंगा," ऐसा कहनेवाले आलसीको युगके युग वीत जावेंगे, तौ भी स्नान करनेका समय नहीं मिलेगा ।

मल, मूत्र, वीर्य, व अपानवायुके वेगको कभी नहीं रोकना चाहिये । और इसी प्रकार व्यायाम (कसरत), निद्रा, स्नान, भोजन और स्वच्छन्दविहारादिका समय भी कभी टालना नहीं चाहिये ।

वीर्य, मल, मूत्र और अधोवायुके रोकनेसे

अश्मरी (पथरी), भगंदर, बात, गुल्म, बवासीर (अर्श) आदि रोग उत्पन्न होते हैं।

जब तक दुर्गन्धि और मलिनता सर्वथा नष्ट न हो जावे, तबतक मृत्तिकादि (मिट्टी आदिसे) गुदप्रक्षालनदि शौच करना चाहिये।

बाहरसे आने पर आचमन किये विना घरमें प्रवेश नहीं करना चाहिये।

प्रातःकाल कसरत करना रसायन है। परन्तु जो अतिशय दुर्बल हो, जिसको अजीर्ण हो गया हो, जो वृद्ध हो, जिसकी प्रकृति वातप्रधान हो, और जो रूक्ष (लूखे) भोजन करता हो, उसे कसरत नहीं करना चाहिये।

शरीरमें आयास (परिश्रम) उत्पन्न करनेवाली क्रियाको व्यायाम कहते हैं। आचार्योंका मत है कि, शरीरमें पसीना आनेतक कसरत करना चाहिये।

नाना प्रकारके शस्त्रोंके और घोड़ा आदि वाहनोंकी सवारीके अभ्याससे कसरतको सफल करना चाहिये।

शक्तिसे अधिक कसरत करनेसे शरीरपर क्या क्या आपदायें नहीं आती? अर्थात् अधिक कसरत करनेसे नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

जो कसरत नहीं करता, उस पुरुषकी जठराग्नि कैसे तेज रह सकती है? और जठराग्नि तेज नहीं है, तो उसमें उत्साह, तथा देहकी दृढ़ता कहांसे आ सकती है।

इन्द्रिय आत्मा और मनकी सूक्ष्मावस्थाको निद्रा कहते हैं। जितनी निद्रा लेनी आवश्यक है, उतनी निद्रा लेनेसे खाये हुए भोजनका पचन होता है और सम्पूर्ण इन्द्रियां प्रसन्न होतीं हैं। क्योंकि अच्छी तरहसे बनाया हुआ और ढका हुआ वर्तन ही अन्नको पूर्णरूपसे परिपक्व करता है।[१]

धर्म, काम, अर्थ और अशुद्ध दुर्जनोंका स्पर्श ये स्नान करनेके कारण हैं और थकावट, पसीना और आलस्य मिटाना ये स्नान करनेके फल हैं।

उस स्नानको जलचरोंका ही स्नान समझना चाहिये, जिसमें देव, गुरु और धर्मकी उपासना नहीं होती है। अर्थात् स्नान करना देवगुरु शास्त्रकी उपासनासे ही सफल होता है।

जिस समय भूख अथवा प्यास लगी हो, उस समय अभ्यंगस्नान नहीं करना चाहिये।[२]

धूपसे व्याकुल हुए पुरुषको जलमें डूबकर स्नान करनेसे दृष्टिमान्द्य (कम दिखना) और शिरोरोग उत्पन्न होता है। (शेष आगे।)

आराकी चिट्ठीका उत्तर और आराके मन्दिरोंकी दशा।

बसन्तीकुंअरका एक बन्द सन्दूक बाबू मनमनदास जैनी (बसन्तीके भासुर और घरके प्रधान स्वामी) बाबू पन्नालाल जैनी (मु०क बहनोई) बाबू विशुनचन्द उर्फ छोटनलाल जैनी (मु० के भाई) ने बाबू जयबहादुरलालजीकी

---

१ सुघटितमपिहितं च भाजनं साधयत्यन्नानि।

२ " हस्तपादमर्दनमुत्साहवर्द्धनमायुष्यं त्रिपुष्कर कृतकर्मकृत्या (?) पुष्पलीगुह्ये रोमावहरणे दशमेऽह्नि नित्यं स्नानम्। द्वितीयकमुत्सादनं तृतीयकमायुष्यं चतुर्थकं प्रत्यायुष्यं इत्यहीनं सेवेत। " इन वाक्योंका भाव समझमें नहीं आया।

कोठीपर रखकर उक्त बाबू साहबसे मकरीबागमें जाकर (जहां कि प्लेगके कारण ठहरे हुए थे) कहा कि, जब हम लोग एकट्ठे हों, आप सन्दूकको देना और इसकी कुंजी मुसम्मात शिवरतन कुंअर (मु०की गोतनी)के पास रख दी गई है। जब दो वर्ष वीत गये और कोई बात आपसमें तै न पा सकी, बाबू साहबने बुलवाकर सबसे कहा कि, आप लोग तै करें, अन्यथा मैं इसे साहब जजके यहां भेज दूंगा और इसका निबटेरा वहां ही हो जायगा। इसपर हम लोगोंने आपसमें तै कर लिया और उस सन्दूकको बाबू साहबके यहांसे ले आये। इसमें बाबू साहबपर हजार रुपैया गोलमाल करनेका आक्षेप अयोग्य है। क्योंकि, उन्हें इसमें हस्तक्षेप करनेका न कोई अधिकार ही था और न कोई प्रत्यक्ष प्रयोजन ही था। दोस्तोंमें वांटने तथा खैरात शिखरजी और नागरीप्रचारणीकी बात विलकुल असत्य है।

भाईसाहब! बिल कहां था और उसके कोन२ गवाह थे? यदि थे, तो कहां रह गये? इस दो वर्षके अन्दर उन लोगोंने बाबूसाहबको सूचना क्यों नहीं दी? आप जैनी भाईयोंसे क्यों नहीं पूछते?

जिन२को उक्त मुसम्मातका चीज मिला, वे सबके सब जैनी हैं। न बाबूसाहब जैनधर्मावलम्बी और न बसन्ती, शिवरतन, बाबू मनमनदास पन्नालाल, सुपारसदास या छोटनलालके रिश्तेदार। अतएव उनके इसमें वादविवाद करनेका प्रयोजन ही क्या?

भाई। पंचायती मंदिरमें लिखनेकी खूब कही। मैं आपको मुंशी तभी समझूंगा, जब आप उसका सुधार करेंगे। आप तो पवलिगमें न ठहरे, अतएव उस मंदिरकी आमदनी खर्चका हिसाब अवश्य मालूम होगा। खर्च क्या होता है, रुपैये सब हैं कहां, क्या होते हैं, किस काममें लायें जाते हैं। जैनधर्मके निमित्त उदारहृदय जैनी भाइयोंके चढाये हुए रुपैये सब क्या हुए, किसके पेटमें गये, कौन २ धर्मके कार्य होते हैं। जरा कृपाकर इन सबकों जैनमित्रमें छपवाइये। मसाढके मंदिरका भी ध्यान कीजिये। मासिक २९०) से अधिक की आमदनी क्या होती है और कहां है? आप नहीं जानते कि, वहां १००) से अधिक खर्च नहीं होता। मुसम्मात कौड़ीबहूके मंदिरकी क्या हालत है? शायद प्रक्षालतक नहीं होता और चिराग भी नहीं जलाया जाता। उसके हजारों रुपये कहां हैं? आप जैनी भाई मिलकर उसके वास्ते क्या करते हैं? श्रीचन्द्रप्रभके मंदिरका कलश बिजलीसे गिरे ३ वर्ष हो गये, आप लोग एकसे एक धनाढ्य हैं, क्यों नहीं बनवाते? अथवा धर्मसे निकाले हुए रुपयेसे या पंचायती मंदिरके फंडसे क्यों नहीं बनवा देते? बाबू हर्षचन्द्जीके मंदिरकी अवस्था शोचनीय है। उसके विषयमें कोई उपाय क्यों नहीं सोचते या करते? बाबू गुल्लूलालजीके निकाले हुए चार हजारके लगभग रुपैये क्या हुए? मुसम्मात गोविन्दाकुंअर काशीमें अपने कुल स्टेटको बजरिये बिल जैनधर्मके लिये छोड़ गई, उन सब स्टेटोंको हस्तगत क्यों नहीं करते? भाईजी। यदि आप लोगोंसे ज्यादे न हो सके, तो बसन्ताघाट ही मुसम्मात टूकटूक कुंअरके मंदिरमें बनवा दीजिये, जिससे आमद-

नीकी एक सूरत हो जाय । हा धिक्! शोक है कि, आपने सत्यको छोड़ असत्यपर कमर बांधी है ।

क्या ही हर्ष होता, यदि यहांके मंदिरोंका इन्तजाम और आयव्ययका जांच बम्बईके भाइयोंके हस्तगत होता, अथवा एक ट्रस्टकमैटी (जिसमें भिन्न धर्मावलम्बी भी रहते) के आधीन रहता। भाईजी! यदि देखभाल होने लगेगी, तो सब पोल खुल जायगी। शिखरजीका सा हाल होगा। जो हुआ सो हुआ, जो गया सो गया। अब संतोष कीजिये। वह मौका फिर हाथ लगना टेड़ी खीर है।

यदि यहांके कुल जैनमंदिरोंके आय तथा जैनमहानुभावोंके जैनधर्मके वास्ते निकाले हुए रुपैयोंका सूद इकट्ठा किया जाय, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि, प्रतिवर्ष हजारों रुपये कन्यापाठशाला, धर्मशाला, टूटे फूटे मंदिरोंकी मरम्मत इत्यादि उत्तम २ धर्मके कार्योंमें खर्च हो सकते हैं। परन्तु पेट पूजा और मंदिरोंमें महापूजासे बचने पावें, तब न।

तीर्थक्षेत्रकमेटी तथा महासभाको उचित है कि, यहांकी सामाजिक धार्मिकदशापर ध्यान देकर सुधारका प्रयत्न करै।

चौक-आरा }
२९-८-०६. } एक जैनी।

खुली चिट्ठी।

विद्वच्छिरोमणि श्रीयुक्त पंडित गोपालदासजी!

जैनगजटके दुर्जन और निन्दावाले लेखोंमें जब आपपर अत्यन्त अविचारितरम्य और जी दुखानेवाले असत् कटाक्ष किये गये थे, तब मैंने आपको एक प्रार्थनापत्र लिखा था और उसे जैनमित्रमें छापनेकी भी प्रार्थना की थी। परन्तु शायद स्वप्रशंसाजनक समझके न तो उसे आपने प्रकाशित किया और न उसपर कुछ ध्यान ही दिया। इसलिये मैं आज यह पत्र फिरसे लिखता हूं। आशा है कि आप इसपर विचार करेंगे और प्रकाशित भी कर देंगे।

"वादे वादे जायते तत्त्वबोधः" वादविवाद करते करते ही यथार्थ ज्ञान होता है। यह विद्वानोंका वाक्य है और कदाचित् आप इसीके अनुगामी हैं। परन्तु समय ऐसा आ गया है और विवाद करनेवाले ऐसे महापुरुष मिलते हैं कि, अब उनकी बातें सुननेको भी जी नहीं चाहता उत्तर देना तो दूर रहा। जितनी बातें कही जावें यदि उनमेंसे कोई आधी चौथाईका ही उत्तर देवे, और युक्तिपूर्वक न्यायमार्गसे शिष्टवचनोंमें देवे, तो कहनेवालेको फिर भी कुछ समझानेकी इच्छा होती है। परन्तु जहां युक्तिशून्य शब्दाडम्बर मात्र मूलविषयको छोड़कर स्वच्छन्दतापूर्वक प्रलाप किया जाता है, और मर्यादा छोड़ दी जाती है, वहां दुःखके साथ मौनावलम्बनके सिवाय बुद्धिमानोंको दूसरा मार्ग नहीं है। क्योंकि **"ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि च तं नरं न रञ्जयति"** लेशमात्र ज्ञानको प्राप्त होकर अपनेको सर्वगुणसम्पन्न धुरंधर पंडित माननेवालेको ब्रह्मा भी रंजायमान करनेको समर्थ नहीं है।

आजकल जैनगजटमें अनेक दुष्ट लेख छपने लगे हैं जिनका उद्देश आपके शान्तचित्तको

विचलित कर जैन समाजको असत्य श्रद्धान करानेका है जिनको बांचकर कदाचित् आप मेरे सुयोग्य मित्र बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी उपसम्पा- जैनगजटसे विवाद करनेको उद्यत हुए होंगे, परन्तु ऐसा करना सर्वथा अनुचित है। क्योंकि बाबू साहबने जिस पत्रमें यह लिखा था कि, "अब जैनगजटमें मेरा नाम जाहिर कर दिया गया, देखें जैनमित्रसे हमसे कैसी बनती है।" उसके उत्तरमें मैंने लिखा था कि, "जैनमित्रका जबाब आप कदापि नहिं दे सकते।" इसके उत्तरमें सुयोग्य मित्रने अपने इस नादान मित्रको लिखा था कि "सो मैं (तो) क्या संसारमें कोई नहीं दे सकता है, क्योंकि '**भण्डपण्डितयोर्मध्ये वरं भण्डो न पण्डितः**' खैर अब तो हम चौड़े आ गये हैं, देखें किस कल उंट बैठता है।" सो मेरी समझमें यह वाक्य बहुत उचित है। हमारे मित्रवर्य बाबू साहबकी सम्मति आपको भी माननी चाहिये और अपनी **जैनसिद्धान्तदर्पण** जैसे गंभीर लेखोंकी लिखनेवाली पवित्र लेखनीको ऐसे अपदार्थ मूर्खोंपर चलाकर कलंकित न करनी चाहिये। आप विद्वान हैं। जो विद्वान हैं, वे आपके लेखोंके गौरवको जानते हैं। जिन्होंने आपके दर्शन किये हैं, वे आपके लोकोत्तर सदाचरणोंको जानते हैं। अतएव आपको इस विडम्बनामें कदापि नहिं पड़ना चाहिये। लोग चाहे आपको कटुकभाषी कहें, वा निन्दक कहें, अथवा मेरे सुयोग्य मित्र जैसे सत्यवक्ता अत्यन्त गर्हणीय शब्दोंमें आपका निरादर करें, परन्तु आप अपने सत्यमार्गको न छोड़िये। और न इन निःसार युक्तिरहित लेखोंका आप कुछ उत्तर दीजिये। क्योंकि;—

प्रतिवाचमदत्तकेशवः शपमानाय चेदिभुभुजे।
अनुहुंकुरुतेघनध्वनिंनहिगोमायुरुतानिकेशरी।

अर्थात्—"गाली देत हुए चन्देरीके राजा शिशुपालको श्रीकृष्णने कुछ भी उत्तर नहीं दिया क्योंकि सिंह घनकी गर्जनाको सुनकर हुंकार करता है न कि गीदड़ोंकी चिल्लाहट पर।" और यदि ये लोग वितंडा करके आपको कुछ नीचा दिखानेका प्रयत्न करें, तो आप चुप रहिये। आप उनके उत्तरमें इस सिंहोक्तिको स्मरण करके संतोष कर लिया कीजिये कि,—

गच्छ शूकर भद्रं ते वद सिंहो मया जितः।
पण्डिता एव जानन्ति सिंहशूकरयोर्बलम्॥

अर्थात् "हे बराहजी! आपका कल्याण हो। आप जाइये और अपने मित्रोंसे कह दीजियेगा कि, मैंने सिंहको परास्त कर दिया। परन्तु पंडितलोग सिंह और शूकर दोनोंके बलको भली भांति जानते हैं। इत्यलम् विद्वद्वरेषु।

बम्बई।
ता. १२-९-६.

आपका दास, और उपसम्पादक जै० ग० का नादानमित्र—
वही **पन्नालाल जैन**।

दि० जै० प्रान्तिक सभा बम्बईके अधिवेशनकी चरचा।

श्रीयुत सम्पादक महाशय!

जैनमित्रके १४ वें अंकसे विदित हुआ है, कि दि० जै० प्रा० सभा बम्बईका अधिवेशन श्रीगजपंथाजी (नासिकके निकट) तीर्थपर सं० १९६३ माघशुक्ला १३ से १५ तक होनेका प्रस्ताव पास हुआ है। अधिवेशनका समय पास आ रहा है, अतएव आपकी ओरसे

इस विषयमें आन्दोलन होना चाहिये । मेरी समझमें हालमें इतने कार्य होने चाहिये ।

१ अधिवेशनके समय कौन २ प्रस्ताव पेश करने योग्य हैं, प्रत्येक ग्रामके भाइयोंको स्वतंत्र अथवा अपनी २ पंचायती द्वारा निर्णय करके भेजना चाहिये ।

२ श्रीगजपंथाजी क्षेत्रके निकट मशरूल अथवा नासिकमें जैनी भाइयोंकी संख्या बिलकुल नहीं है, परन्तु सिद्धक्षेत्र तथा वार्षिक मेलेका समय होनेसे वहां हजारों मनुष्य यात्राके लिये पधारेंगे, इसलिये उनका यथोचित प्रबन्ध आदरसत्कार करनेके लिये एक स्वागत मंडळी (Reception Committee) बनाना चाहिये । इस मंडलीका सभासद होनेकी जिनमहाशयोंको इच्छा हो, वे अपने नाम तथा पते "दफ्तर-महामंत्री-मोरेना" अथवा " सभापतिसाहब-हीराबाग-बम्बई "के पास कृपाकरके लिख भेजें ।

३ प्रत्येक ग्रामके भाई अपने २ प्रस्ताव पेश करनेके लिये और उनमें अपनी २ सम्मति देनेके लिये दो अथवा अधिक प्रतिनिधि (Delegates) सर्व सम्मतिसे करके भेजें। प्रतिनिधियोंके फार्म सभाके दफ्तरसे भेजें जावेंगे। उनमें प्रतिनिधियोंके नाम लिखकर भेजना चाहिये ।

४ इस अधिवेशनमें सभापति कौन सज्जन बनाये जावेंगे, इसमें भी सब भाइयोंकी सम्मति आना चाहिये । मेरी समझमें श्रीयुक्त अण्णापा बाबाजी लट्ठे, एम. ए. कुरुंदवाड, श्रेष्ठिवर्य्य हुकमचन्दजी—इन्दौर, शेठ रामचन्द हेमचन्द हसवड, श्रीयुक्त अण्णापा फड़यापा चौगुले, बी. ए. बी. एल.—बेलगांव और मुंशी चम्पतरायजी डि० म०—कानपुर, इन पांच महाशयोंमेंसे किसी एकको सभापतिका पद देना चाहिये ।

१४-९-०६. } भवदीय-कृपैषी
हीराबाग, बम्बई। } दोसी माणिकचन्द पानाचन्द।

विविधसमाचार।

भोपालमें विलायती खांडका बजार गिर गया। वहांके हिन्दूभाइयोंने तो परित्याग किया ही था, परन्तु मुसलमान भाइयोंने भी अब त्यागना शुरू किया है । जैनी सज्जनोंने इस अपवित्र चीजको अपनी विरादरीसे सर्वथा निकाल दी। अनंतरामजी और कालूराम फतहचन्दजी जैनी हलवाइयोंने विदेशी शक्कर गलाना छोड़ दिया है, और हलवाई भी छोड़ रहे हैं ।

विलायती शक्करसे लोगोंको इतनी घृणा उत्पन्न हुई है कि, जगह २ इसके लिये सभायें होकर लोग इसका परित्याग कर रहे हैं । देशी समाचारपत्र इन खबरोंसे भरे हुए पड़े हैं । यदि उन समाचारोंका संग्रह किया जाय, तो एक बड़ा पोथा बन सकता है ।

अभी तक विलायतीशक्कर और केशरकी अपवित्रता लोगोंपर विदित हुई थी, परन्तु अब एक ऐसी बात विदित हुई है कि, जिसे सुनकर चौंकना पड़ता है । वह बात यह है कि, कपड़ेको भड़कीला, चमकदार और चित्ताकर्षक बनानेके लिये हमारे देशके कपड़ोंपर जो मांडी तथा अरंडीका तैल लगाया जाता है, उसकी जगह विलायतके प्रायः सभी कपड़ोंपर सुअर और गायकी चर्बी लगाकर भड़क लाई जाती हैं। "काटन एन्ड दि काटन फाइबर" और "काटन स्पीनिंग एन्ड वीविंग" नामक पुस्तकोंमें इसके लिये स्पष्ट शब्दोंमें लिखा हुआ है । यह जानकर हमको निश्चय है कि, जो अहिंसाधर्मके

पालनेवाले हैं, और जो धर्मको कुछ वस्तु समझते हैं, वे हमारे देशके धन और धर्मको लूटनेवाले इन विलायती कपड़ोंका अब स्पर्श भी नहीं करेंगे और देशी वस्त्रोंका वर्ताव करना सीखकर देशके उद्धारमें सहायक होंगे ।

गतांकमें स्वर्गीय शेठ प्रेमचन्द रायचन्दजीकी मृत्युके विषयमें लिखा जा चुका है । उन्होंने अपने जीवनमें जो दान किया है, उसका पूरा परिचय नहीं दिया जा सका था । यहां उस दानकी सूची प्रकाशित की जाती है । जिसे सुनकर उस विस्तृतहृदय पुरुषकी उदारतासे चकित होना पड़ता है । भारतवर्षमें शायद ही ऐसा कोई दूसरा दानी निकले ।

१	कलकत्ता यूनीवर्सिटीमें	४२५०००)
२	बम्बई यूनीवर्सिटीमें	६२५०००)
३	रायचन्द दीपचन्द भोजनालयमें	५०००००)
४	ट्रेनिंगकालेज अहमदाबादमें	८००००)
५	सूरत धर्मशालामें	६५०००)
६	माहीमकी कन्याशालामें	६००००)
७	स्काटिश अनाथालयमें	५००००)
८	जूनागढ़ धर्मशालामें	४००००)
९	राय० दीप० लायब्रेरी भरोंचमें	३००००)
१०	राय०दीप०कन्याशाला सूरतमें	२००००)
११	गुजरात वर्नाक्यूलर सुसाइटीमें	२००००)
१२	आनंद धर्मशालामें	२००००)
१३	सूरत स्वामिवत्सलमें	१००००)
१४	अलकजेंडर कन्याशालामें	१००००)
१५	लायब्रेरी मीटिंग भड़ोंचमें	५६०००)
१६	अनाथ जैनियोंकी सहायतामें	२५००००)
१७	जैनियोंकी भोजनशालामें	१५००००)
१८	नौकरोंको इनआम आदिमें	१९००००)
१९	जैनमन्दिरोंके जीर्णोद्धारमें	१००००००)
२०	श्वेताम्बरजैनकान्फरेंसमें	१२५०००)
२१	गुजरात काठियावाड़के ७६ गावोंमें धर्मशाला बनवानेके लिये	६०००००)

दक्षिण, गुजरात, वऱ्हाड़, मध्यप्रदेश, राजपूताना आदि भारतवर्षके प्रायः सभी प्रान्तोंके अनेक जिनमंदिरोंमें एक विचित्र बात यह देखी गई है कि, उनमें **श्रीजीवराज पापड़ीवाल** नामक किसी उदारपुरुषकी प्रतिष्ठा कराई हुई विक्रम संवत १५४८ की प्रतिमायें मिलती हैं । उनपर प्रतिष्ठाकारक आचार्यका नाम भी लिखा रहता है । ऐसी प्रतिमा प्रायः संगमर्मरकी देखी गई हैं । पापड़ीवाल यह एक गोत्र खंडेलवाल जैनियोंके ८४ गोत्रोंमें हैं । परन्तु यह मालूम नहीं है कि, जीवराजजी पापड़ीवाल कहां हुए और उन्होंने इतनी प्रतिमाओंको जगह २ किस प्रकार और किस उद्देश्यसे पहुंचाई । क्या उन्होंने संघ निकाला था, जिसमें जगह २ यात्रा करके ये प्रतिमा स्थापित कराई थीं ? इत्यादि सम्पूर्ण ऐतिहासिक बातोंका शोध करके जो कोई लेखक एक सर्वोत्तम लेख लिखेगा, उसको दानवीर शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीने २५) पारितोषिक देना स्वीकार किया है । आशा है कि उत्साही लेखक इस विषयमें प्रयत्न करेंगे । जो महाशय लेख नहीं लिख सकते हैं. और उन्हें इस विषयका कुछ ज्ञान है, तो उन्हें वह बात अवश्य प्रकाशित करना चाहिये, जिससे दूसरे लेखकोंको सहायता मिले ।

विराट उपहार।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ।

विनामूल्य जैनमित्र।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया कार्तिक सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे।

१ **स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा**-वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतछाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता।

२ **परीक्षामुख**-यह जैनियोंका सर्व साधारणमें प्रसिद्ध संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य इसका ॥) है।

३ **पंचाध्यायी**—यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बड़े परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढ़नेवाले विद्वान् कहते हैं, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ **इन्ट्रोडक्शन टू जैनिस्म** Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लहे, एम. ए. ने बड़ी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ **जैनधर्मपर व्याख्यान**-मि० आपटे, बी. ए. का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमें मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढ़नेको मिलेगा। अर्थात् आमके आम और गुठलीके दाम मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढ़ें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढ़नेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पड़ेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डाक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढ़ें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढ़नेवालोंकी संख्या बढ़े, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है। इसमें हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है। उपहारके सब ग्रन्थ तयार हैं।

जैनजातिका हितैषी—

नाथारंगजी गांधी,

शोलापुर.

संवाददाताओंकी जरूरत।

हम चाहते हैं कि, जैनमित्रमें चारों ओरके ताजे समाचार छपे जाया करें, जिनसे जैनधर्मका कुछ सम्बन्ध हो, अथवा जो सर्वसाधारणको कुछ लाभ पहुंचाया करें। अभीतक स्थान न रहनेसे ऐसे समाचारोंपर ध्यान नहीं दिया जाता था, परन्तु अब इसपर विशेष ध्यान दिया जावेगा। संवाददाताओंसे प्रार्थना है कि वे समयपर समाचार भेजा करें।

सम्पादक जैनमित्र—मोरेना (ग्वालियर).

Registered No. B. 288.

ॐ

जैनमित्र.

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

अत्यन्तनिशितधारं दुरासदं जिनवरस्य नयचक्रम्।
खण्डयति धार्यमाणं मूर्धानं झटिति दुर्विदग्धानाम्॥

अमृतचन्द्रसूरिः

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

सप्तम वर्ष। कार्तिक कृष्णा १ श्रीवीर सं० २४३२। अं० २४

विषयानुक्रमणिका।

चिट्ठी पत्री भेजनेका पता—

मैनेजर, जैनमित्र—मोरेना (ग्वालियर)।

वार्षिक मूल्य २) दो रुपया।] [एक अंकका मूल्य =) दो आना।

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई।

श्रीवीतरागाय नमः

कार्तिक कृष्णा १
श्रीवीर संवत्
२४३२।

वर्ष ७.
अंक—
२४।

जैनमित्र.

जिनस्तु मित्रं सर्वेषामिति शास्त्रेषु गीयते।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्रमितीष्यते ॥ १ ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां।

दीपमालिका निकट आ रही है। इस त्योहारपर हमारी व्यापारी जातिकी प्रत्येक दूकानपर नवीन बही खाते प्रारंभ किये जाते हैं। लक्ष्मीपूजन तथा शारदापूजनके साथ एक प्रकारसे इन बही खातोंकी भी पूजा होती है। परन्तु शोककी बात है कि अनेक दूकानोंपर ये बही खाते चमड़ेके पुट्ठके बंधे हुए काममें लाये जाते हैं। उत्तरप्रान्तकी अपेक्षा दक्षिण तथा गुजरातमें इसका विशेषतासे प्रचार है। वैश्य जातिमें और वह भी जैनियोंमें चमड़े जैसी घृणित वस्तुका आदर होना बड़ी लज्जाकी बात है। जो जैनी एक छोटीसी चिउंटीको भी कष्ट देना नहीं चाहते हैं, और जो भोजनमें एक बाल निकल आनेपर भी भोजन छोड़ देते हैं, उन्हीं जैनियोंकी दूकानोंके बही खातोंके पुट्ठोंके लिये सैकड़ों गौएं काटी जाती हैं, और वे ही जैनी उन चमड़ेके पुट्ठोंको दिनभर हाथमें लिये हुए पान सुपारी खाते हुए मूंछोंपर ताव दिया करते हैं, इसका विचार करनेसे बड़ा दुःख होता है। गतवर्षके आन्दोलनसे सैकड़ों दूकानोंपर कपड़ेके पुट्ठके मजबूत बही खाते काममें आने लगे हैं। परन्तु जब तक यह सर्वथा बन्द न हो जावें, तब तक जैनियोंके घरका एक बड़ा भारी लांछन दूर न होगा। आशा है कि हमारे दयालु पाठक अपने २ यहांके जैनियों तथा अन्य धर्मियोंमें भी इसकी चर्चा करके चमड़ेके बही खातोंको उठा देनेका अवश्य ही प्रयत्न करेंगे।

हमने अनेक स्थानोंमें देखा है कि दीपमालिकाके दिन जैनियोंकी दूकानोंपर अन्यधर्मी ब्राह्मण आकर लक्ष्मीपूजन कराते हैं, और कल्दारदेवकी पूजा करके दक्षिणा ले जाते हैं। सौमेंसे कहीं एक दूकानपर भी आर्षपद्धतिके अनुसार पूजा नहीं होती, यह बड़े दुःखकी बात है। यथार्थमें दीपमालिकाके दिन मोक्षलक्ष्मीके तथा शारदाके (सरस्वतीके) पूजनका विधान

है, परन्तु उसको भूलकर लोग टकापूजक बन रहे हैं। धर्मात्मा भाइयोंको चाहिये कि, अपने २ यहां इस त्योहारपर अपनी आर्षपद्धतिके अनुसार पूजादिक मंगलकार्य करें, और मिथ्यात्वको छोड़नेका प्रयत्न करें।

दो वर्षसे अधिक हो गये, बम्बई प्रान्तिक सभाका अधिवेशन नहीं हुआ। शोलापुरके अधिवेशनके पश्चात् कई वार इसके प्रयत्न हुए परन्तु कारणवश सफलता नहीं हुई। आज कल करते २ दो वर्ष बीत गये। इधर अधिवेशन न होनेसे सभाके सभ्यगण और कार्यकर्तागण प्रायः सभी ढीले हो रहे हैं। उपदेशकके न होनेसे दक्षिण गुजरातादि प्रान्त भी अचेत सो रहे हैं, सो अबके श्रीगजपंथजी पर होनेवाले अधिवेशनमें हमको गत अधिवेशनोंकी नाई खूब जोशसे आन्दोलन करना होगा और सोते हुए तथा निरुत्साही भाईयोंकी रगोंमें बिजली दौड़ा देनी होगी। दो वर्षके आलस्यमें जितनी निरुत्साहता बढ़ी है, उसको निकालकर नवीन चिरकालीन उत्साह बढ़ाना होगा। हम आशा करते हैं कि, हमारी कीर्तिशालिनी बम्बई प्रान्तिकसभाके सभासदगण हमको इस कार्यमें तन मन धनसे मदद देंगे, और यह अधिवेशन जिस प्रकारसे अभूतपूर्व हो, वही प्रयत्न करनेकी सम्मतियां देंगे।

बम्बई प्रान्तिकसभाके आकलूज, कुंथलगिरि, शोलापुरादि स्थानोंमें जितने अधिवेशन हुए हैं, वे प्रायः एक शोलापुर प्रान्तमें ही हुए हैं, जिससे उक्त प्रान्तके भाइयोंको इस सभासे खूब परिचय हो गया है। परन्तु अबका अधिवेशन जो श्री गजपंथजी पर होगा, यही सोचके निश्चित किया गया है कि, दूसरे प्रान्तके भाइयोंका भी इससे परिचय बढ़े। गजपंथजी हमारा परमपूज्य निर्वाणक्षेत्र है, इसलिये यों तो वहांपर सब ही स्थानोंके भाई आवेंगे, और निर्वाणक्षेत्रकी यात्रा तथा सभाका अधिवेशन इसप्रकार "एक पंथ दो काज" साधेंगे, परन्तु खानदेश तथा बऱ्हाड़ादिके धर्मात्मा सज्जन और भी अधिकतासे सम्मिलित होंगे, जिससे उक्त दोनों प्रान्तोंमें खूब ही धर्मकी जागृति होनेकी संभावना है। इसलिये नांदगांव, आदि नगरोंके समीपस्थ भाइयोंसे हम आशा करते हैं कि, वे इस अधिवेशनपर तनमनसे परिश्रम करके हमको अवश्यही सफल मनोरथ करेंगे। गजपंथजीके अधिवेशनपर गुजरात, मालवा, और दक्षिण, आदि चारों ओरके यात्री भी थोड़े खर्चमें सरलतासे एकत्र हो सकेंगे।

इस अधिवेशनमें जो कुछ द्रव्यव्यय होगा, वह प्रान्तिकसभा अपने प्रबंधखातेसे ही खर्च करना चाहती है, इस विषयमें किसीसे चन्दा करनेकी उसकी इच्छा नहीं है। अधिवेशनपर भी वह अपना किसी प्रकारका चन्दा नहीं खोलेगी। अपने भाइयोंमें केवल धार्मिक और जातीयजोश बढ़ानेके लिये यह अधिवेशन होगा। इसलिये इसमें प्रत्येक जैनीको योग देना चाहिये।

मुंशीजीका भ्रम।

—:o:—

जैनगजट अंक ३४ में "जैनमित्रमें मेरी करतूत" शीर्षक लेख मुंशी चम्पतरायजीकी ओरसे प्रकाशित हुआ है। जिसमें मुंशीजीने सम्पादक जैनमित्रको भला बुरा बनानेके लिये खूब ही अंकांडतांडव किया है और अपने जले हुए दिलके उबाल निकाले हैं। मुंशीजीकी और मुंशीजीके मित्रोंकी करतूतें सबपर अच्छी तरहसे प्रगट हो चुकीं हैं, उनका बांधा हुआ कालेजसम्बन्धी चक्रव्यूह प्रायः छिन्न भिन्न हो चुका है; इसलिये अब हम नहीं चाहते थे कि उनके विषयमें फिर कुछ लिखें। परन्तु मुंशीजीको चैन न पड़ी, अपने मित्रोंके आग्रहसे उन्होंने "चोरी और सिरजोरी"वाली कहावत सिद्ध करते हुए अपनेको सत्यवक्ता और परमहितैषी सिद्ध करनेका और जैनमित्रको बुरा बनानेका प्रयत्न किया है, इसलिये लाचार होकर कर्तव्यके अनुरोधसे हमें उस घृणित लेखकी आलोचना करनी पड़ती है, पाठकगण क्षमा करें।

सब जानते हैं कि, जैनमित्रमें "मुंशीचम्पतरायकी करतूत" वाला लेख मुंशीजीके खैरख्वाह और सहायक बाबू बनारसीदासजीकी ओरसे था, सम्पादकीय लेखनीने उसमें कुछ भी आक्षेप नहीं किया था। परन्तु न मालूम मुंशीजी उसपर यह क्यों लिखते हैं कि "इन चिट्ठियोंको पाकर बरैयाजी ऐसे प्रसन्न हुए हैं कि जैसे उनके हाथमें मेरी गर्दन आ गई है" लेख लिखा बाबूजीने और उपालंभ दिया जावे सम्पादकको! इसे क्या कहना चाहिये?

पाठकगणोंसे यह बात छुपी नहीं है कि, वर्तमान कार्योंकी समालोचना करना पत्रसम्पादकका मुख्य कर्तव्य है। किसीके गुणोंकी प्रशंसा करने तथा किसी दोषकी अधमता दिखानेको ही समालोचना कहते हैं। अतः यदि संपादक जैनमित्रने उक्त लक्षणलक्षित ही समालोचना की है, तो उसने अपने कर्तव्यका पालन किया है। परन्तु मुंशीजी दोषोंकी अधमतादिखानेरूप समालोचनाको निंदा शब्दका वाच्य बनाते हैं। क्योंकि ये समालोचना उनके उस कार्यकी की गई थी कि, जिसने जैनसमाजके धार्मिक कार्यमें द्रव्य देनेवाले दाताओंके अभिप्रायोंका खून किया था। इस ही समालोचनाको आप चलते हुए काममें रोड़ा अटकानेकी पदवीसे भूषित करते हैं। क्या निष्पक्ष बुद्धिमत्ता इसहीका नाम है? हमारी समालोचनाका कारण आप बतलाते हैं कि, "जबसे मथुराके शास्त्रार्थमें पंडित मेवारामजीसे परास्त हुए हैं, तबसे मेरे कामोंकी निंदामें आप बीसों लेख लिख चुके हैं।" भला इस झूठाका भी कुछ ठिकाना है? इस बातको सब कोई जानते हैं कि, मथुरामें पं० मेवारामजी और नरसिंहदासजीमें शास्त्रार्थ हुआ था। फिर भला जब हमसे शास्त्रार्थ ही नहीं हुआ, तो हम परास्त कैसे हुए? अजब शेखचिल्लीकी कहानी है कि, दोका शास्त्रार्थ होवे और तीसरा परास्त हो जावे। मुंशीजीने अपने उसी लेखमें आगे चलकर स्वयं स्वीकार किया है कि, "यह शास्त्रार्थ मेवारामजी और नरसिंहदासजीमें हुआ था" फिर यह अपनी माको आप ही वन्ध्या कहना नहीं तो और क्या है? इसके सिवाय यह भी कहना भूल

है कि, "गोपालदासजी नरसिंहदासजीके सहायक थे" क्योंकि उस शास्त्रार्थमें वादी प्रतिवादीके सिवाय दूसरेको बोलनेका अधिकार ही नहीं था।

आगे चलकर मुंशीजी फरमाते हैं कि, "जब आप महाविद्यालयके मंत्री रहे, तब कोई लेख विरुद्ध नहीं छपे, जब पृथक् हुए तब इसकी जड़ खोदनेकी फिक्र करते रहे हैं। बरैयाजी तीनमें न तेरहमें आप क्यों दूसरोंके कामको नहीं देख सकते? क्यों कभी महासभाको नोटिस देते है, कभी महाविद्यालयपर वज्रपातका लेख लिखते हैं। यों ही बैठे २ भाड़ फोड़ा करते हैं। क्या श्रीमानको और कोई काम नहीं है? आप सच्चे हितैषी तो तब कहे जाते कि, यदि हमसे कोई काम नहीं हुआ था, तो आप ही कोई बड़ा काम करके दिखाते, जिससे सारी जैनजाति आपकी चिरकृतज्ञ होती। कैसे शोक तथा आश्चर्यकी बात है कि, जिस सभाके आप महामंत्री हैं, उसके सभापति साहब तो हमारेसे सहानुभूति प्रगट करें, तथा हमारा उत्साह बढ़ावें और आपके लेखोंकी निंदा करें, परन्तु आप सदैव विपरीतताका राग गावें अपनी खिचड़ी अलग पकावें।" परन्तु यह लिखना सर्वथा अविचारितरम्य है। जब तक महाविद्यालयका मंत्रीपन हमारे पास रहा है, तब तक आपकी कालेज बनानेकी पालिसी आपहीके पेटमें थी, उसे कोई जानता नहीं था और महाविद्यालयका कार्य भी उन दिनों जैसा चाहिये, वैसा होता था, परन्तु जब महाविद्यालयकी दशा बिगड़ी और आपका कालेजी चक्र चला, तब हमने कर्तव्यका पालन करके उसकी आलोचना की। मुंशीजी साहब! महासभा आपकी और आपके घरवालोंकी मिल्कियत नहीं है। यह जैनसमाजकी साधारण पूंजी है। महासभा और महाविद्यालयके सम्बन्धमें दिगम्बर जैनीके एक छोटेसे बालकको भी सब कुछ पूछनेका अधिकार है, फिर हम तो एक पत्रके संपादक हैं, सब कुछ लिखकर पूछ सकते हैं। आपकी "तीनमें न तेरहमें की टेटें" कुछ फलवती नहीं हो सकती। जिस महाविद्यालयका अंकुरारोपण जैनियोंकी डूबी हुई धार्मिक विद्याकी उद्धार करनेकी मंगलकामनासे हमने अपने हाथसे किया था, उस पूज्य धार्मिकविद्यालयकी पूंजीको अंग्रेजी शिक्षामें व्यय होते देखकर हम कैसे चुप रह सकते थे। क्या बाबू बनारसीदासजीने ७००) रुपयेके बजटमें ७९) रखकर महाविद्यालयपर वज्रपात नहीं किया था? और यदि ऐसा न था तो वह ७००) का बजट पीछेसे क्यों खारिज किया गया? आपका यह लिखना कि, **महाविद्यालयभंडारका रुपया जैन कालिजके लिये ही हुआ था बड़ी ही धृष्टताका है।** जैनगजटमें आपने स्वयं प्रकाशित किया है कि, "आजतक महाविद्यालयभंडारमें जो रुपया एकत्र हुआ है, वह धार्मिकविद्याभंडारका है और

१ महासभाको जो नोटिस दिया गया था, वह सम्पादक जैनमित्रका नहीं किन्तु उन दक्षिणी महाशयका लिखा हुआ है, जिनसे आपने कहा था कि, तुम आरावालोंके मुकद्दमेंमें कभी कामयाब नहीं होगे, तुम्हें क्षमा मांगकर मुकद्दमा उठा लेना चाहिये। परन्तु आपकी बात उलटी हुई, आरावाले हार गये! आप इतनेसे ही समझ जाइये कि, वे कौन हैं।

आगेसे जो धार्मिकविद्याभंडारमें देगा, वह धार्मिकविद्याभंडारमें जमा होगा और जो अंग्रेजी विद्याभंडारमें देगा, वह अंग्रेजीविद्याभंडारमें जमा होगा।" अफसोस है कि आप ऐसी परस्पर विरुद्ध और धोखे देनेवाली बातें लिखकर भी सच्चों और हितैषियोंके सरदार बनना चाहते हैं। "श्रीमान्‌को और कोई काम ही नहीं है" यह खूब ही कही। महात्मन्! क्या एक पाक्षिकपत्रके सम्पादनका कार्य और हमारी मोरेनाकी दूकानकी मैनेजरी आप ही आ करके कर जाते हैं। जैनफिलोसोफीके लेखोंको भी क्या कोई आप ही जैसा बुद्धिमान् लिख जाता होगा? हमने जैनसमाजके साथ क्या किया और क्या नहीं किया, सो जैनसमाज जानती है, आपके समान प्रशंसाका राग गानेकी हमको आवश्यकता नहीं है। सभापति साहबकी सहानुभूति आपके कार्यसे है, और मेरेसे नहीं है, इससे न तो आपको सर्टिफिकट मिल सकता है, और न मेरे कार्य निंद्य ठहर सकते हैं। यह कोई आवश्यक नहीं है कि, सभापतिकी जिसमें सहानुभूति हो वही कार्य करना चाहिये दूसरा नहीं; प्रत्येक व्यक्तिको अपने २ विचारोंपर स्वतंत्र अधिकार है। धनाढ्योंकी हांमें हां मिलानेवाले आप जैसे बहुत हैं, जिन्होंने अपनी स्वतंत्रता बेच डाली है। परन्तु मेरी स्वतंत्रता मेरेपास है, उसमें किसीका इजारा नहीं है। आप भले ही चापलूसीको अच्छी समझें, परन्तु मैं तो इसे विद्वत्ताका लाञ्छन समझता हूं। शेठ माणिकचन्दजी मेरे विचारोंसे सहानुभूति नहीं रक्खें और आपके विचारोंसे रक्खें, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। वे एक सीधे साधे सज्जनपुरुष हैं। उनकी सहानुभूति सबहीसे रहती है। आपके चापलूसी चक्रने अभी उनपर हाथ फेरकर सहानुभूति प्राप्त की है, परन्तु अन्तमें वे भी आपके कालेजी चक्रको बुरा कहेंगे। आशा है कि, आप अभी वह समय नहीं भूले होंगे जिसमें आप तीर्थक्षेत्रकमेटीकी, सम्मेदशिखरजीके सीढियोंके मुकद्दमेंकी, तथा आरावालोंके मुकद्दमेंकी जड़ काटनेको तयार हुए थे, और हमारे सभापति सा० आपसे विरुद्ध हुए थे।

आगे मुंशीजी कहते हैं कि, "केवल हमसे बरैयाजी रुष्ट होते, तो संतोष हो जाता, स्याद्वादपाठशाला जिसका पौधा बम्बई प्रान्तिकसभाके प्रेसीडेंट साहबके करकमलोंसे लगाया गया, आप उसको भी नहीं देख सक्ते, बाबा दुलीचन्दजी जो निःस्वार्थ जातिकी सेवा कर रहे हैं, वह भी आपकी लेखनीसे नहीं बचे हैं, इसका विचार पाठक खुद करें कि बरैयाजी जातिसेवक हैं या शुभकार्योंके विध्वंसक" परन्तु मुंशीजी इतना निष्प्रयोजन बकनेके साथ २ दुलीचन्दजी और स्याद्वादपाठशालासम्बन्धनीय हमारी समालोचनाका कारण भी लिख देते, तो अच्छा होता, हमको कुछ लिखनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। परन्तु सिवाय लोगोंको धोखा देनेके और दूसरोंको भला बुरा कहकर आप सत्यघोष बननेके मुंशीजी कुछ लिखना जानते ही नहीं, तब कहांसे लिखें? अस्तु हम पाठकोंको समझाये देते हैं कि, बाबा दुलीचन्दजी हमारे कैसे निःस्वार्थ सेवक हैं। आपने हमारे एक पूज्यऋषिके बनाये हुए प्रतिष्ठापाठको अपनी लेखनीरूपी बसूलेसे छील डालकर

अपने और अपने भक्तोंके ढंगका बनाया है और यह प्रसिद्ध किया है कि, यह मेरा नहीं किन्तु प्राचीन आचार्यका बनाया हुआ है। परन्तु आप यह पूछनेपर कुछ उत्तर नहीं देते हैं कि, उस प्रतिष्ठापाठकी मूल प्रति कहां है, जिसको आप शुद्धाम्नायका बतलाते हैं। क्योंकि वह किसी सौ दो सौ वर्षकी लिखी हुई प्राचीन प्रतिपरसे ही लिखा गया होगा। और भी आपने अनेक ग्रन्थोंपर ऐसी ही कृपा की है, जिसकी समालोचना जैनमित्रमें समय समयपर हुआ करती है और आगे भी होगी। यदि मुंशीजी दुलीचन्दजीके भक्त बनना चाहते हैं, तो उन्हें चाहिये कि, अपने उक्त श्रद्धेय महात्मासे उस प्रतिष्ठापाठकी असली प्रति सबपर प्रगट करावें और अपनी भक्तिको सार्थक करें। अब स्याद्वादपाठशालाकी सुनिये। जैनियोंमें धार्मिकविद्याका प्रचार करानेके लिये अनेक धर्मात्माओंकी सहायतासे कई उद्योगी भाइयोंने काशीमें स्याद्वादपाठशालाकी स्थापना की थी। परन्तु उसमें कुछ भोले भाइयोंके आग्रहसे क्वीन्स कालेजका क्रम नियत कर दिया गया था। जैनमित्रमें इसीके विरुद्ध आन्दोलन हुआ था और उस समय जो योग्य समझे गये, उन शब्दोंमें भिन्न धर्मके ग्रन्थोंका खंडन करके जैनधर्मके ग्रन्थ भरती करनेका हमने अनुरोध किया था। बस इसीपर मुंशीजी साहब हमको धर्मकार्यका विध्वंसक बतलाते हैं, और आप क्वीन्सकालेजकी पढ़ाईको ठीक समझकर शुभचिन्तक बननेका दावा करते हैं! यदि आपको भिन्न धर्मकी पढ़ाई ही इष्ट थी, तो स्याद्वादपाठशाला खोलनेकी क्या आवश्यकता थी? कालेजमें ही भरती करके अन्यमतकी खूब विद्या पढवाते; भोले भाइयोंको धोखा देकर धर्मकी आड़में शिकार करनेकी क्या आवश्यकता थी? भिन्नधर्मकी पढाईके पहले जैनधर्मकी पढ़ाई क्यों मुख्य है, इस विषयके अनेक लेख जैनमित्रमें निकल चुके हैं, यहां उनका पुनरुल्लेख करनेको स्थान नहीं है।

आगे मुंशीजी फरमाते हैं कि, "मथुराके शास्त्रार्थमें जो भाई शरीक थे, वे अच्छी तरहसे जानते हैं कि, पंडित मेवारामजीने उस अकलंकप्रतिष्ठापाठको हर प्रकारसे फर्जी अकलंकदेवका बनाया हुआ साबित कर दिया था। भला जिसमें तर्पण, आचमन, गोमयशुद्धि, श्राद्ध आदिका करना जैनियोंको बतलाया, उसको कब जैनीमात्र ऋषिवाक्य प्रमाण कर सकते हैं। चूंकि मैंने उस शास्त्रार्थका फल प्रगट किया था, इसीसे बरैयाजी नाराज हैं। जैसा कि उनकी चिट्ठीसे प्रगट होता है। मैं यह भी कहता हूं कि, मेवारामजी अब भी मौजूद हैं कि बरैयाजी फिर कोई समय नियत करके शास्त्रार्थ कर लेवें। पहले तो आपने पं० नरसिंहदासजीहीकी आड़ ली थी, अबकी वार खुल्लमखुल्ला मुकाबिलेमें आकर निर्णय करा लेवें।" देखिये! मुंशीजी कैसे "द्वाभ्याम् त्रितीयो" बनकर अनधिकारचर्चा करनेको तयार हुए हैं! जिस विषयको आप नहीं जानते हैं, उसमें भी पैर फैलाते हैं! मानों आपके बचनोंसे ही सब कुछ हो जावेगा। परन्तु कृपानाथ! यह न समझिये कि मथुराके मेलेमें

१ मुंशीजी गोमयको हमेशा गोपम लिखा करते हैं।
२ क्योंकि आप बड़े भारी विद्वान् थे न?

धन और अधिकारके अभिमानसे किसीकी न सुनकर नरसिंहदासजीकी हारकी तालियां पीटकर "कुल्हियामें गुड़ फोड़कर पक्षपात और हठाग्रहके आश्रयसे आप और आपके मेवारामजी दिग्विजयी हो गये। यदि आपको, मेवारामजीको अथवा इस कुपक्षके पक्षपाती किसी और दूसरेको शास्त्रार्थ करनेको हौसला है, तो हम हर प्रकारसे शास्त्रार्थ करनको तयार हैं। परन्तु इतना याद रखिये कि, शास्त्रार्थ मुंहजवानी न होगा, जिससे कि आपको कहे हुए वाक्य पलटनेका मौका मिलै, और आपके भक्तजनोंको हां में हां मिलानेका। शास्त्रार्थ होगा लिखित और हमारा उत्तर छपेगा जैनमित्रमें और आपका जैनगजटमें। बस इनशर्तोंपर शास्त्रार्थ करनेकी इच्छा हो, तो शीघ्र ही सूचना दीजिये। आपकी धमकी मात्रसे कुछ नहीं होगा, और न आपकी घुड़कियोंसे जैनधर्मको हानि पहुंचानेवाले कार्योंकी समालोचना बन्द होगी।

मेरा कार्ड प्रकाशित करके उससे आपने यह बतलानेका प्रयत्न किया है कि, हमसे आपसे शास्त्रार्थके कारण शत्रुता हो गई है, परन्तु यह आपकी भूल है। क्योंकि एक तो मुझसे शास्त्रार्थ नहीं हुआ था, दूसरे आप उस विषयमें निरेकोरे हैं अतः धार्मिक विषयोंमें आपकी राय न तो प्रमाणभूत हो सकती है और न उससे सिवाय इसके कि आप उस विषयसे अनभिज्ञ हैं हमको हर्षविषाद हो सकता है। उस कार्डका असली अभिप्राय आपने छुपाया है। वह यह है कि, जिस समय महाविद्यालयमें "धार्मिकविद्या पढ़ाई जावे अथवा राज्यविद्या?" इसका निर्णय करनेके लिये कमेटी हुई थी, उस समय यह तय हुआ था कि, धार्मिकविद्या मुख्यतासे पढ़ाई जावे। परन्तु आपके राज्यविद्याके पक्षपाती मंडलने पीछेसे बहुत कुछ गुलशोर मचाया था, जिसके विपक्षमें पड़कर मैंनें एक व्याख्यानमें धार्मिकविद्याकी पुष्टि करके आपके पक्षका शतशः खंडन किया था। बस लोग मेरे अनुकूल हो गये, और आपने समझ लिया कि, गोपालदास ही हमारे अभिप्रायोंका प्रतिपक्षी है, और यही हमारे मार्गका कांटा है, इसको किसी तरहसे नीचा दिखलाना चाहिये। इसीकी सिद्धिके लिये आपने बहुत दिन पीछे मौका पाकर वह बे सिर पैरका कार्ड जारी किया था, जिसे हमने विषका बीज बतलाया है। इसके पहले आपने जब जब धार्मिक विद्याकी गौणताका आन्दोलन किया, तब तब मैं आपके प्रतिकूल प्रयत्न करता रहा हूं। और आपकी धार्मिकविद्याकी अरुचि और राज्यविद्याकी परमभक्तिके कारण ही आखिर मुझे महाविद्यालयके मंत्रित्वसे स्तीफा देना पड़ा था। शास्त्रार्थमें आपने हमारे आचार्योंकी जिस प्रकार अविनयकी है, हम अब भी कहते हैं कि, आपको उसका प्रायश्चित्त करना ही चाहिये। बस यही विरोधकी जड़ है। हमसे आपका कोई स्वार्थिक वैर विरोध नहीं है, जिससे कि हम आपके विपक्षमें रहते हैं, किन्तु पारमार्थिक है। और यदि वह पारमार्थिक वैर नहीं होता तो, आप हमारी धर्मविद्याका खून न जाने कब कर डालते, जैसी कि आपकी इच्छा है। सो महात्मन्! शास्त्रार्थ फिरसे हो जानेसे ही आप हमारे

सफली नहीं हो जावेंगे, किन्तु तब होंगे जब आपके हृदयमें धर्मविद्याकी भक्ति उत्पन्न हो जावेगी।

"महाविद्यालयका रुपया कालिजके उद्देशोंसे ही जमा हुआ है" यह बिना सिरपैरकी बात केवल बातोंसे ही सिद्ध न होगी, इसके लिये प्रमाणोंकी आवश्यकता होगी। क्योंकि अभी विद्यालयमें द्रव्य देनेवाले और उसकी नीव जमानेवाले मौजूद हैं, आपकी यह धोखेबाजी चल जाना जरा टेढ़ी खीर है।

आगे मुंशीजी लिखते हैं कि, बिना राजविद्याके उन्नति कदापि नहीं होगी" सो हम भी निरन्तर कहा करते हैं। हमने अंग्रेजी पढ़ानेका किसी समय निषेध नहीं किया। यदि खंडन किया है तो, उसकी प्रणालीका किया है। इसका सविस्तर निरूपण जैनमित्रके ११ वें अंकमें किया जा चुका है। परन्तु आज तक उसका न तो किसीने उत्तर दिया और न हमारी युक्तियोंका खंडन किया। अब भी हम कहते हैं कि, यदि किसीकी शक्ति हो तो वह हमारे उस लेखका करै, व्यर्थ वितंडासे कुछ लाभ नहीं है। पंडित मोतीलालजी और प्यारेलालजी के वाक्य श्री नेमिचन्द्रसिद्धान्तचक्रवर्तिके वाक्योंसे अधिकमान्य नहीं हो सकते, जिन्होंने अन्यधर्मग्रन्थोंके पढ़ानेके लिये लिखा है कि,—

आभीय मासुरक्खा
भारहरामायणादि उवएसा।
तुच्छा असाहणीया
सुय अण्णाणेतिणंवेति।

फिर यदि वे इस बातको सिद्ध कर सकते हैं, तो आप उनसे हमारी युक्तियोंका खंडन करवाइये।

आगे कातंत्ररूपमालाकी घृणित और तुच्छ बात लिखकर मुंशीजीने अपनी आन्तरिक योग्यताका परिचय दिया है। मुंशीजीको और इस निंद्यबातके कहनेवाले प्यारेलालजीको चश्मा लगाकर देखना चाहिये कि, कातंत्ररूपमालाका प्रकाशक कौन है? उसपर स्पष्ट लिखा हुआ है कि, "हीराचन्दनेमिचन्द्रश्रेष्ठिना प्रकाशितम्।" उक्त ग्रन्थ एक कमेटीकी ओरसे उपर्युक्त शेठजीने ही छपवाया था, उससे मेरा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। यदि मुंशीजी अथवा प्यारेलालजी मेरी जाति खाससे उसका कोई सम्बन्ध सिद्ध कर देंगे, तो मैं उन्हें एक हजार रुपया इनाम दूंगा, अन्यथा उन्हें ऐसी गर्हणीय बात लिखनेके बदले लज्जित होना चाहिये और क्षमा मांगना चाहिये।

आगे मुंशीजीने महाविद्यालयकी उन्नति न होनेका मूल कारण हमको और हमारे अनुमोदित परीक्षालयको बनाया है। और साथ ही साथ बतलाया है कि, खुर्जा और जयपुरकी पाठशालाओंमे विद्यार्थी धड़ाधड़ पास होते रहे, और हमारे परीक्षालयके सर्टिफिकटोंका गौरव नहीं हुआ। परन्तु यह नहीं बतलाया कि, खुर्जा और जयपुरकी धड़ाधड़ीमें १०-२०-२५ कितने लड़के पास हुए और उनके सर्टिफिकटोंका गौरव

१ पंडित मोतीलालजी जिस जयपुरके राजकीय कोर्सको पढ़ानेके लिये लाचार कहते हैं, उसी कोर्समें जैनियोंके काव्य, व्याकरण, न्याय और धर्मशास्त्र भरती हैं, जरा जयपुरका राजकीय कोर्स मंगाके देखिये। पंडित प्यारेलालजीने संस्कृतमें किसी यूनीवर्सिटीकी पढ़ाई पढ़ी है, यह आज आपहीके मुखसे सुना है, हम तो उन्हें संस्कृतसे निरे कोरे समझते हैं। हां! भाषाके पंडित हैं। परन्तु आपने अपनी बात पुष्ट करनेको संस्कृतज्ञ बना दिया!

हमारे परीक्षालयके प्रशंसापत्रोंसे कहांपर अधिक हुआ ? और वे विद्यार्थी धार्मिकविषयोंमें हमारे विद्यार्थियोंसे कितने अधिक विद्वान् हो गये। बिना ऐसे प्रमाणोंके दिये आपकी बातोंका कुछ असर नहीं होगा । हम नहीं जानते थे कि, आप जैनपरीक्षालयके भी ऐसे कट्टर शत्रु हैं। शायद इसी कारण आपने जैन परीक्षालयकी वर्तमान दुर्दशा कर रक्खी है ।

अन्तमें इस वादविवादको चलते अब बहुत दिन हो गये । जो कुछ सच और झूठ है, वह स्पष्ट हो गया । इस लिये हम इस विषयको समाप्त करते हुए अपने विद्वान् पाठकों और महासभाके सभासदोंसे प्रार्थना करते हैं कि, आप लोग सोनागिरके वार्षिक मेलेपर अथवा आगरा व कानपुरमें होनेवाले बिम्बप्रतिष्ठाके उत्सवपर महासभाका आगामी अधिवेशन करके जैनियोंमें धार्मिकविद्याके प्रचारका प्रयत्न करें और कालेजीअशान्तिकी इतिश्री करें।

दिवसानुष्ठान ।

(२)

भोजन ।

जिस समय भूख लगे, वही भोजन करनेका समय है । बिना भूखके अमृतपान भी विषके समान है । उदराग्निको वज्राग्नि करते हुए भोजनकी आदिमें पुष्ट पदार्थोंका सेवन करना चाहिये । भूख लगनेपर अन्न नहीं खाकर दुग्धादिक बहनेवाले पदार्थोंके पीनेसे उदराग्नि नष्ट हो जाती है । अतिशय श्रमके कारण प्यास लगनेपर उसकी उपशान्तिके लिये मिश्री आदिका शरबत पीनेके सिवाय कोई अच्छा उपाय नहीं है[1] । एक ही बारमें अधिक जलपान करनेसे जठराग्नि नष्ट हो जाती है । क्षुधाका समय निकल जानेपर अन्न खाया नहीं जाता और उससे शरीर निर्बल हो जाता है । अग्निके बुझ जानेपर उसमें ईंधन डालनेसे भला क्या लाभ हो सकता है ? जो परिमित खाता है, वह बहुत खाता है, अर्थात् जो एक ही बार नहीं खाकर कई बारमें थोड़ा २ अन्न खाता है, वह बहुत अन्न पचा सकता है । भोजन अधिक, असुखकर, इच्छासे विरुद्ध, प्रकृतिसे विरुद्ध, अपरीक्षित (विष आदि दूषित) अपक्व (कच्चा), चलितरस, और बेसमय कभी नहीं करना चाहिये । भोजन करते समय उपवासयुक्तको, प्रतिकूलको, क्षुधातुरको और अतिशय क्रूरपुरुषको अपने पास नहीं रहने देना चाहिये । पंक्तिवाले जब जीमने लग जाँय, तब अपनी थालीमें या पत्तलमें भोजन परोसवाना चाहिये और भोजन इतना करना चाहिये कि, जिससे दूसरे वक्त वा दूसरेदिन तीव्रभूख लग आवे और अग्नि मंद न हो । भोजन कितना करना चाहिये, इसका कुछ सिद्धान्त नहीं है । जिससे अग्नि शान्ति हो जाय, उतनेहीको भोजन कहते हैं । अतिशय भोजन करनेवाला शरीर और अग्निको नष्ट करता है । जलती हुई जठराग्नि थोड़े भोजनसे बलको नष्ट करती है और अधिक भोजन करनेसे अन्नका परिपाक दुःखसे होता है । श्रमसे पीड़ित पुरुषको जल पीने वा भोजन करनेसे ज्वर आने लगता

---

१ परमसिद्धमासेवेत्तरं भुञ्जानोभिर्वृद्धिं च लभते ।

है।[1] जिसे शीघ्र ही कै (उलटी) होनेवाली हो, जिसका चित्त अस्वस्थ हो, और जिसकी प्यास न बुझी हो, उसको भोजन न करना चाहिये। भोजनके पश्चात् तत्काल ही कसरत करने अथवा मैथुन करनेसे रोग उत्पन्न होते हैं। विष हो, परन्तु यदि वह जन्मकालसे पचता आता हो, तो उसे पथ्य समझना चाहिये। पथ्य पदार्थोंका चाहे वे अनभ्यस्त ही क्यों न हों, सेवन करना उचित है। परन्तु अभ्यस्त भी अपथ्य पदार्थोंका सेवन नहीं करना चाहिये। मेरे लिये सब ही पदार्थ पथ्य हैं, मैं सब कुछ पचा सकता हूं, ऐसा समझकर बलिष्ट पुरुषको भी विष नहीं खाना चाहिये। विषतंत्रको अच्छी तरहसे जाननेवाला अर्थात् विषशोधनादि क्रियाओंकी शिक्षा पाया हुए पुरुष भी कदाचित् विषहीसे मरता है। अतिथि (मुनि और अर्यिका) अभ्यागत और अपने आश्रित जनोंका विभाग करके पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिये। (शेष आगे)

झूठा उपालंभ।

जैनमित्रके सम्पादक मोरेनामें रहते हैं, मैं (मैनेजर) शोलापुरमें रहता हूं और जैनमित्र बम्बईमें छपकर वहींसे रवाने होता है। प्रत्येक पक्षकी अष्टमी नवमीको मजमून प्रेसमे जाता है और वह छपकर जैनमित्र द्वितिया तृतियाको रवाने होता है। मैं ग्राहकोंके एड्रेसोंकी (ठिकानोंकी) चिटें काटकूटकर उसके पांचसात दिन पहले भेज देता हूं। प्रेसके मैनेजर चिटें लगवाकर रवाना कर देते हैं। ऐसी अवस्थामें हजार चिटोंमेंसे कहीं एक स्थानके ग्राहकोंको सम्पादक अथवा मैनेजरकी इच्छानुसार अंक नहीं भेजा जाना, एक असंभव बात है। परन्तु तौ भी जैनगजटके अंक ३४ में उसके सुयोग्य उपसम्पादकने जैनमित्रके सम्पादकपर अपने ओछे हृदयसे यह घृणित दोष लगाया है कि, वीसवां अंक जिसमें कि, उलूक नामकी कविता छपी है, उनके पास भेजा ही नहीं गया और तो क्या आराभरमें नहीं भेजा गया। अस्तु यदि मान भी लिया जावे कि, आपकेपास जान बूझके नहीं भेजना था, तो क्या सम्पादक इतना नहीं सोच सकते थे कि, यह किसी न किसी तरहसे तो उनके पास पहुंच ही जावेगा? फिर आपके पास और आरामें न भेजनेसे लाभ ही क्या था? क्या जैनमित्र सम्पादक आप जैसे डरपोंक मनुष्य हैं, जो भयके मारे जराजरासे मामलोंमें झूठ बोलते हैं और छुपछुपके स्वांग बनाते हैं। जरा पं० पन्नालालजीकी चिट्ठी पढ़िये, जिसमें आपकी चिट्ठियोंका उल्लेख किया गया है। क्या अब उससे भी आपके ताल ठोककर साम्हने आनेकी बात साबित नहीं होती है? फिर इतनी सी बातसे डरकर "देखें अब जैनमित्रसे कैसी बनती है" इसका अभिप्राय आप क्यों बदलते हैं? महाशय। जैनमित्र आफिससे ऐसी भौंडी पालिसी कभी नहीं हो सकती, जैसी आप रखते हैं। यहां तो जो कुछ होता है, सब खुलेवाला होता है। अंक न आनेकी आपके क्लर्कने जो चिट्ठी लिखी थी, उसके उत्तररूपमें २० वां अंक आपके यहां पुनः भेजा गया है। आप चाहें, तो

---

[1] छर्दिवेवनजिघत्सुर्न प्रस्नोत्तुमिच्छुर्नासमञ्जसमनाः नवापनीपः (?) पिपासोद्रिक्तमश्नीयात्।

मैं इसके उचित सुबूत भी पेश कर सकता हूं। और उसके साथ यह भी बतलाऊंगा कि, जैनगजटके आफिसमें कितनी अंधाधुंधी चलती है।

शोलापुर। } आपका हितैषी—
मौजीलाल-मैनेजर जैनमित्र।

विविधसमाचार।

चीनसरकार १० वर्षमें अपने राज्यमें अफीमकी आमदरफ्त बिलकुल बन्द करना चाहती है। हिन्दुस्थानसे चीनको प्रतिवर्ष कई करोडकी अफीम भेजी जाती है, जिससे हिन्दुस्थानमें अफीमका एक प्रधान व्यापार समझा जाता है। परन्तु अब थोड़े दिनोंमें इसकी समाप्ति समझिये। अफीमके व्यापारियोंको सचेत होना चाहिये।

स्याद्वाद पाठशाला काशीके चिट्ठेमें शेठ हुकमचन्दजी इन्दौर, शेठ हरीभाई देवकरण शोलापुर, शेठ रावजी सांकलचन्दजी शोलापुर, और लाला रूपचन्दजी रहीस सहारणपुर इन चार महाशयोंने एक एक हजार रुपया देना स्वीकार किया है। चार हजार रुपया पहले हो चुके थे, अब केवल सात हजारकी कमी है, धर्मात्माओंको ध्यान देना चाहिये।

कानपुरकी जैनसभाकी ओरसे शास्त्रोंके वेष्ठन मंगानेपर सब जगह भेजे जाते हैं। चार महीनेमें कहां २ कितने वेष्ठन भेजे गये हैं, इसकी फेहरिस्त हमको मिली है, जो स्थानाभावसे नहीं छापी जा सकती। परन्तु सभाको हम मुक्तकंठसे धन्यवाद देते हैं कि, वह सरस्वती की एक आवश्यक सेवा कर रही है। सभाने ११ जगह १६२ वेष्ठन भेजें हैं।

मंरेना (ग्वालियर)—यहांके अनेक मुखियाओंकी कोशिशसे भादों वदी ४ को एक आम पंचायती हुई, जिसमें पं० गोपालदासजी बरैयाने विलायती शक्करकी अपवित्रतापर एक जोशदार व्याख्यान दिया। व्याख्यानका श्रोताओंके हृदयपर इतना असर हुआ और विदेशी शक्करसे इतनी घृणा हुई कि, उसी दिन सब भाइयोंने उसके न खानेकी प्रतिज्ञा कर ली। परन्तु बाजारमें हलवाइयों और व्यापारियोंकेपास माल बहुत था, बाजारकी सफाई तत्काल न हो सकेगी: इसलिये मौजूदा माल निकाल देनेके लिये सबको भादों सुदी १५ तककी मियाद दी गई थी। हर्षका विषय है कि, मियादके भीतर ही सब लोगोंने माल निकाल दिया। आसोज वदी २ को इसी विषयमें फिर पंचायत हुई। सबसे दरयाफ्त किया गया, तो सिवाय दो चार दूकानदारोंके और किसीके यहां माल नहीं निकला। जिनके पास ज्यादा था, उन्होंने उसी समय दिशावरोंको भेज दिया और जिनके पास थोड़ा था, उन्होंने उसी समय सरेबाजार चौराहों पर फेंक दिया। अब यहां पर विदेशी खांडका नामनिशान भी नहीं है। इस प्रबन्धको देखकर सबलगढ़ वगैरह आसपासके ग्रामोंमें भी विदेशी शक्कर उठा दी गई है। मुन्नीलाल क्लर्क।

झांसी—सदरबाजार—यहांके प्रतिष्ठित रहीस लाला गंगासहायजीके उद्योगसे १८ सितम्बरकी

संस्थाको एक बड़ी भारी सभा हुई, जिसमें ब्राह्मण, जैनादि सब ही धर्मवाले शामिल थे। सभामें उक्त महाशयने विदेशी शक्करके त्यागके विषयमें एक उत्तेजना भरी स्पीच दी। उसे सुनकर सब ही भाइयोंनें विदेशी चीनीका परित्याग कर दिया, बाजारके पांच हल्वाइयोंने भी उसी दिनसे विलायती चीज न गलानेका प्रण किया और हस्ताक्षर कर दिये कि, यदि अब हमारे यहां कोई विलायती शक्करका गलाना साबित करेगा, तो हम ५१) दंड देंगे। फिर उसी समय ५१) का चन्दा करके बाजारमें जितनी तयार मिठाई थी, वह खरीद करके भिक्षुकोंको बांट दी गई। हम उद्योगी लालासाहबको कोटिशः धन्यवाद देते हैं। भवनमलाल जैन।

निमाड़—मंडलेश्वर—२, ३ सितम्बरको जैनी भाइयोंकी एक सभा हुई। चौधरी गुलाबरावजीने मोरिस शक्करकी अपवित्रता, अनुपकारिता, और देशघाततापर व्याख्यान दिया। जिससे सर्व जैनी पोरवाड़ भाइयोंने इसकी न खानेकी और न बेचनेकी प्रतिज्ञा की। जैनी हलवाइयोंने भी इसके न गलानेका प्रण किया है। सबके हस्ताक्षर पूर्वक यह करार पाया है कि, पहली वार प्रतिज्ञाका भंग सुबूत होनेपर ५) दंड लिया जावेगा और दूसरी वार होनेपर जातिच्युत किया जावेगा। जिनके यहां विलायती माल था, वह खरीदकर अन्यत्र भेज दिया गया है। यहांके नारमदेव, ब्राह्मण, दक्षिणीब्राह्मण, और राजपूतोंने भी यही प्रतिज्ञा कर ली है। दुलीचन्दसा।

नागपूर—कामठी—आसोज वदी ७ को पंचायती मंदिरमेंसे चन्द्रप्रभभगवानकी एक स्फटिक मणिकी प्रतिमा १ अंगुलकी मय चांदीके सिंहासन १० तोलेके जिसपर सोनेका पानी चढ़ा हुआ था, चोरी गई है। एक सिंहासन जर्मन सिल्वरका भी चोरी गया है। यहां आसोज वदी १ को शाहगढ़का रहनेवाला भगवानदास नामका गोलापूरव यात्राके लिये ठहरा था। मंदिरके पुजारी पन्नालालके साथ वह उसी रातको प्रतिमा वगैरह लेकर गायब हो गया है। जिन भाइयोंको इनका कुछ पता लगे, हमको सूचित करनेकी कृपा करें।

बुद्धूलाल बालचन्द।

राजपूताना-भरतपुर-यहांके रायबहादुर श्रीमान् लाला घमंडीलालजी सा० सुप्रिंटेंडेंट इम्पीरियल सर्विस टिरांसपोर्टकोरने डेढ़ वर्ष हुए एक श्री जिनमंदिर तयार करवाया है। उसका सामान्य उत्सव तो पहले हो चुका था, परन्तु लाला सा० ने अपनी आन्तरिक भक्तिके उद्रेकसे आसोज वदीसे ६ से ८ तक रथयात्रा महोत्सव बड़ी धूमधामसे किया। इस उत्सवमें तीन चार हजार सज्जन एकत्र हुए थे। मथुराके सेठ द्वारकादासजी सा० भी तशरीफ लाये थे। श्रीजीका रथ बड़े जुलूसके साथ निकाला गया था, इस उत्सवमें एक खूबी यह हुई कि, तीनों दिन महासभाके उपदेशक हकीम कल्याणरायजीके तथा अन्यान्य सज्जनोंके व्याख्यान हुए, जिसे सुनकर अन्यमतावलम्बी महाशय भी प्रसन्न हुए। रियासतके बड़े २ अफसर लोग व्याख्यान सभामें तशरीफ लाये थे, और व्याख्यान सुनकर प्रसन्न हुए थे। रायबहादुर महाशयकी धर्मप्रीति देखकर हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।

मेवरचन्द गोधा-खजांची।

विराट् उपहार।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ।

विनामूल्य जैनमित्र।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया कार्तिक सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे।

१ **स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा**–वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतछाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता।

२ **परीक्षामुख**–यह जैनियोंका सर्व साधारणमें प्रसिद्ध संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य इसका ॥) है।

३ **पंचाध्यायी**—यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बड़े परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढ़नेवाले विद्वान् कहते हैं, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढ़ा, उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ **इन्ट्रोडक्शन टू जैनिस्म** Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लट्ठे, एम. ए. ने बड़ी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ **जैनधर्मपर व्याख्यान**–मि० आपटे, बी. ए. का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमें मिल सकता है। इसका मूल्य।) है

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढ़नेको मिलेगा। अर्थात् **आमके आम और गुठलीके दाम** मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढ़ें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमें ग्रन्थोंके पढ़नेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पड़ेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डांक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढ़ें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढ़नेवालोंकी संख्या बढ़े, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है। इसमें हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है। उपहारके सब ग्रन्थ तयार हैं।

नाथारंगजी गांधी, शोलापूर.

मथुरामें होनेवाली स्पेशल मीटिंगके लिये

एक प्रस्ताव।

तारीख ३ अकतूबरसे १० अकतूबरतक होनेवाले श्रीजम्बूस्वामीके वार्षिक मेलेपर ता. ८ और ९ अकतूबरको **महाविद्यालय, उपदेशकभंडार** आदिके प्रबंधमें जो त्रुटियां हो गई हैं, उनका ठीक प्रबंध करनेके लिये महासभाके मेम्बरोंकी एक **'स्पेशलमीटिंग'** होगी उसके लिये हमारे पास भी महामंत्री साहबकी तरफसे छपा हुआ एक आमन्त्रणका कार्ड आया है परन्तु खेद है कि मैं कार्यबाहुल्यके कारण वहां नहीं जा सकता। इसलिये मैं अपना प्रस्ताव मन्त्रीसाहबके पास भेजनेके सिवाय इस पत्रमें भी छपा देता हूं जिससे महासभाके समस्त सभासदोंको सूचित होजाय।

सहारनपुर जानेके कारण महाविद्यालयके प्रबंधमें जो जो त्रुटियें हुई हैं, उनपर यदि सम्यक् विचार किया जायगा तो सबको विदित हो जायगा कि योग्यस्थानके न मिलनेके कारण ही सब त्रुटियें हुई हैं। अर्थात् अंगरेजी स्कूल वा अंगरेजी कालेजके लिये सहारनपुर योग्य स्थान कदाचित् हो सकता है, परन्तु

संस्कृत विद्याकी उन्नतिके लिये सिवाय काशीके इस भारत वर्षमें दूसरास्थान ही नहीं हैं। यदि महाविद्यालय वा महासभाके कर्ता हर्ता व संरक्षक कार्याध्यक्षोंको संस्कृत वा धार्मिक विद्याकी उन्नति करना इष्ट है, तो इसके लिये काशी स्थान कैसा है सो अवश्य ही विचार करना चाहिये। क्योंकि संस्कृतके जितने विद्वान् व उच्चकक्षाके विद्यार्थी हैं, वे काशीको ही उत्तम समझते हैं तथा जिनमहाशयोंनें काशी देखी है और विद्यार्थियोंकी विद्यानुरागतापर विचार किया है, वे महाशय अवश्य ही संस्कृतमहाविद्यालयके लिये काशीको ही योग्य स्थान बतलाते हैं और बतावैंगे। और फिर भी संदेह हो तो महासभाके कार्याध्यक्षोमेंसे जो सभासद काशीस्थानके कट्टर विरोधी हैं उनमेंसे दो चार महाशयोंको सिर्फ १५ दिनके लिये काशी भेजकर फिर उनसे इस विषयमें सम्मति लेना चाहिये, मुझे पूर्णतया विश्वास है कि वे महाशय काशीके लिये सम्मति दिये बिना न रहैंगे। अथवा जिन २ लडकोंने महाविद्यालय, जयपुरपाठशाला, वा खुर्जेविद्यालय आदिमें एक वर्ष पहिले संस्कृत पढना शुरू किया है उनके साथ एक वर्ष पहिले स्याद्वादपाठशाला काशीमें पढना प्रारंभ किया हो उस लडकेके साथ शास्त्रार्थ कराकर देखैंगे तो आपको स्पष्ट हो जायगा कि, काशीमें ही पूर्ण योग्यता संस्कृतविद्याध्ययन की है। काशीमें विद्वानोंके वेतनका खर्च बहुत ही कम है। तीर्थ स्थानके सिवाय आव हवा भी अच्छी है। इस कारण इस स्पेशलकमेटीमें स्थान निर्णयके विषयमें विचार अवश्य ही होना चाहिये।

जितना चंदा महाविद्यालयका अब है, काशीमें विद्यालय रखनेमें उतना चंदा बहुत है। इसके पश्चात् अंगरेजी कालेजके लिये चाहे जितना चंदा करें वा चाहे जो स्थान नियत करें, उसके लिये किसीको उजर नहिं होगा, परन्तु संस्कृतविद्या और १ घंटे अंगरेजी पढानेके लिये १०० विद्यार्थियोंके लिये प्रबंध एक जुदी ही विद्वानोंकी कमेटीके सुपुर्द करके स्याद्वादपाठशाला काशीको ही महाविद्यालय बना देना चाहिये। मैं जानता हूं कि "**नगारेकी आवाजोंमें तूतीकी कोई नहिं सुनेगा**" परन्तु याद रहै कि स्याद्वादपाठशालाका उत्तम फल देखकर आज नहीं तो दो वर्ष पीछें अवश्य ही महाविद्यालयको काशी ले जाना होगा।

जैनसमाजका हितैषी दास—
पन्नालाल बाकलीवाल।